दृक्सिद्धं निरयणञ्च चित्रापक्षीयमुत्तमम् । "विद्यापीठस्य पञ्चाङ्गम्" भूमौ विजयतेतराम्॥

ISSN 2229-3450

दृक्सिद्ध निरयण भारतीय

राजा-रवि
विक्रम संवत्-२०८२
शक-संवत्-१९४७

मन्त्री-रवि
भा०गणराज्य-संवत् ७८-७९
ईशवीय-सन् २०२५-२०२६

विद्यापीठ – पञ्चाङ्गः

श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय

(केन्द्रीय-विश्वविद्यालय)

बी–4, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली – 110016

वर्ष : 43

संवत्सर - सिद्धार्थ

मूल्य रू. 100/–



पञ्चाङ्ग–प्रवर्तक
स्व. म.म.पं. कल्याणदत्त शर्मा
"राष्ट्रपति–सम्मानित"

प्रधान–सम्पादक
प्रो. मुरलीमनोहर पाठक
कुलपति

सम्पादक :
प्रो. प्रेमकुमार शर्मा
आचार्य, ज्योतिष–विभाग

प्रो. बिहारीलाल शर्मा
आचार्य, ज्योतिष–विभाग

प्रो. दिवाकर दत्त शर्मा
आचार्य एवं अध्यक्ष, ज्योतिष–विभाग

सम्पादक मण्डल

1. प्रो. विनोद कुमार शर्मा	– आचार्य, ज्योतिष–विभाग	2. प्रो. नीलम ठगेला	– आचार्य, ज्योतिष–विभाग
3. प्रो. परमानन्द भारद्वाज	– आचार्य, ज्योतिष–विभाग	4. प्रो. सुशील कुमार	– आचार्य, ज्योतिष–विभाग
5. प्रो. फणीन्द्र कुमार चौधरी	– आचार्य, ज्योतिष–विभाग	6. प्रो. रश्मि चतुर्वेदी	– आचार्य, ज्योतिष–विभाग
7. डॉ. रत्न लाल	– सह आचार्य ज्योतिष–विभाग	8. डॉ. खेमराज रेगमी	– सहायक आचार्य, अतिथि
9. डॉ. वृजमोहन	– सहायक आचार्य, अतिथि	10. डॉ. होमेशदत्त	– सहायक आचार्य, अतिथि

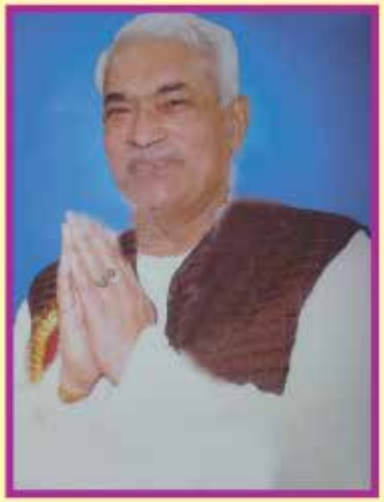

प्रेरणास्रोत
स्व. प्रो. शुकदेव चतुर्वेदी
"राष्ट्रपति–सम्मानित"

श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय

(केन्द्रीय–विश्वविद्यालय)
बी–4, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली–110 016

श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली - ११००१६

संक्षिप्त-परिचय

भारत की राजधानी दिल्ली में एक अन्तर्राष्ट्रिय संस्कृत-संस्थान के अभाव की पूर्ति के लिए स्वर्गीय ''प्रधानमन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्री जी'' की प्रेरणा से अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन ने विजयदशमी विक्रम-संवत् २०२० को संस्कृत विद्यापीठ की स्थापना की। उस समय इस विद्यापीठ का नाम अखिल भारतीय संस्कृत विद्यापीठ रखा गया और भारत के तत्कालीन प्रधानमन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्री जी ने इसके शासन निकाय की अध्यक्षता स्वीकार की। स्वर्गीय श्री शास्त्री जी की प्रेरणा एवं उनकी संस्कृत तथा भारतीय संस्कृति में अगाध निष्ठा से विद्यापीठ की समस्त प्रवृत्तियों को बड़ा बल मिला और अपनी स्थापना के दो-तीन वर्षों में ही इस विद्यापीठ ने देश के संस्कृत-शिक्षण-संस्थानों में अपना विशिष्ट स्थान बना लिया।

उनके निधन के उपरान्त विद्यापीठ की स्थापना में उनके महनीय योगदान और इस संस्था के साथ शास्त्री जी के ऐतिहासिक सम्बन्धों को ध्यान में रखते हुए दिनांक ०२ अक्टूबर १९६६ ई0 को भारत की तत्कालीन प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने भारत सरकार द्वारा इसका अधिग्रहण करके इसका नाम श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ रखने की घोषणा की। श्रीमती इन्दिरा गांधी ने स्वयं विद्यापीठ के सभापति पद को स्वीकार किया। उनके सभापतित्व तथा तत्कालीन दिल्ली के उपराज्यपाल डॉ. आदित्य नाथ झा के कार्यवाहक सभापतित्व में इस विद्यापीठ ने प्रगति का एक महत्त्वपूर्ण दौर पूरा किया।

प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी की घोषणा के अनुसार भारत सरकार ने शिक्षा मन्त्रालय में स्वायत्तसंस्था के रूप में ०१ अप्रैल १९६७ को विद्यापीठ का अधिग्रहण कर इसके संचालन के लिए एक सभा नियुक्त की। दिनांक २१ दिसम्बर १९७० ई. से इस विद्यापीठ का प्रबन्ध 'राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान' के अन्तर्गत दिया गया। तब से इस विद्यापीठ का नाम 'श्री लाल बहादुर शास्त्री केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ' रखा गया।

भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय, शिक्षा विभाग की अधिसूचना सं. F.२/४५ U.३ दिनांक १६ नवम्बर १९८७ द्वारा इस विद्यापीठ को ''मानित-विश्वविद्यालय'' का स्तर प्रदान किया गया।

इसके संचालन के लिए श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ नाम से एक स्वायत्त समिति का पंजीकरण कर इसकी व्यवस्था उक्त समिति को स्थानान्तरित की गयी। मानित-विश्वविद्यालय के रूप में इसका उद्घाटन भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति महामहिम रामास्वामी वैंकटरामन् द्वारा २३ फरवरी १९९१ को किया गया।

भारत सरकार द्वारा जारी अधिसूचना सं. F. No. 4-4/2018-Skt-II दिनाङ्क १७.०४.२०२० के अनुसार श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ (मानित-विश्वविद्यालय) को श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय (केन्द्रीय-विश्वविद्यालय) घोषित किया गया। श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय द्वारा जारी अधिसूचना सं. F.No.1(149)/ LBSV/Admn/2019-20/20 दिनाङ्क ३०.०४.२०२० के अनुसार केन्द्रीय विश्वविद्यालय के रूप में कार्य प्रारम्भ किया गया। विद्यापीठ के संस्थापक कुलपति **पद्मश्री श्रद्धेय डॉ. मण्डन मिश्र जी** ने अप्रतिम समर्पण भाव से इस कल्पवृक्ष का आरोपण किया, वर्तमान में इसके **कुलाध्यक्ष महामहिम राष्ट्रपति श्रीमति द्रौपदी मुर्मू जी** के मार्गदर्शन में एवं **कुलाधिपति डॉ. हरिगौतम जी** के कुशल नेतृत्व में यह विश्वविद्यालय पल्लवित, पुष्पित एवं फलीभूत हो रहा है।

वर्तमान में यह विश्वविद्यालय शास्त्री, शिक्षा-शास्त्री, आचार्य, शिक्षाचार्य, विशिष्टाचार्य, विद्यावारिधि एवं विद्या-वाचस्पति उपाधियों के लिए अध्ययन-अध्यापन, प्रशिक्षण एवं शोध कार्य की व्यवस्था कर रहा है।

विश्वविद्यालय ने अब तक १३० उच्चकोटि के प्रकाशन राष्ट्र को समर्पित किए हैं। वर्तमान में ५०० विद्यार्थी विभिन्न विभागों में शोध के लिए पंजीकृत हैं, जिनमें ७५ छात्र ज्योतिष शास्त्र के विविध विषयों पर शोधकार्य कर रहे हैं। विश्वविद्यालय के प्राध्यापकों एवं शोधकर्ताओं के शोधात्मक आलेख त्रैमासिक शोध पत्रिका **''शोधप्रभा''** में भी प्रकाशित किये जाते हैं ।

प्रस्तावना

भारतीय ज्योतिष-शास्त्र की एक प्रमुख विशेषता है, कि यह प्रत्यक्ष शास्त्र है। सौरमण्डलीय ग्रहों की गति, स्थिति, उदय, अस्त, मार्गत्व, वक्रत्व, ग्रहण एवं चन्द्रकलाओं की ह्रास-वृद्धि आदि कुछ ऐसी घटनायें हैं, जो हजारों-हजारों वर्षों से इसकी प्रत्यक्षता की गवाही दे रही हैं। ज्योतिष-शास्त्र में प्रत्यक्षता का अर्थ होता है- **''गणितागत परिणाम का ज्यों का त्यों दिखलाई देना।''** उदाहरणार्थ जिस समय गणित से पूर्णिमा आए और उस समय चन्द्रमा का परिपूर्ण बिम्ब दिखलाई दे अथवा जिस समय सूर्य या चन्द्रमा का ग्रहण गणित से निकाला जाए और उसी समय सूर्य या चन्द्रमा का ग्रहण पड़े अथवा गणित से ग्रहों के उदयास्त का जो समय बतलाया जाए, उसी समय ग्रहों का उदयास्त हो, इस प्रकार के गणितागत परिणामों का यथावत् घटित होना प्रत्यक्षता कही जाती है।

'प्रत्यक्षं ज्योतिषं शास्त्रम्' की उद्घोषणा करने वाले वसिष्ठ एवं पराशर प्रभृति महर्षियों ने इस प्रकार के सत्यों एवं सिद्धांतों को दो प्रकार से ज्ञात किया था। १-अन्तर्दृष्टि (Intuition) एवं, २-पर्यवेक्षण (Observation)। अन्तर्दृष्टि या दिव्यदृष्टि एक ऐसी वैयक्तिक क्षमता है, जिसके द्वारा विचार-तरंगों में आन्दोलित तथ्यों को यथावत् आत्मसात् किया जा सकता है। तथ्य एवं सत्य दोनों को जानने की यह एक सयुक्तिक विधा है। क्योंकि यह विचारणीय पदार्थ के विहित गुण-दोषों का ही विवेचन नहीं करती, वरन् यह सर्वथा उदासीन या तटस्थ रहकर उसके सम्पूर्ण स्वरूप का यथावत् अवलोकन भी करती है। इसलिए अन्तर्दृष्टि अभिज्ञान (Intuitive Cognition) में सदैव एक मौलिक प्रकार की निश्चिन्तता एवं विश्वसनीयता पाई जाती है।

हमारे महर्षियों ने इसके साथ-साथ पर्यवेक्षण का सतत उपयोग किया था। वे अकेली-अकेली एवं सामूहिक घटनाओं को बार-बार घटित होने वाली ग्रहों की गतिविधियों के प्रकाश में ध्यानपूर्वक देखते थे और ग्रहों की गतिविधियों की आवृत्ति के साथ-साथ उनकी जनसमुदाय पर पड़ने वाली शारीरिक एवं मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रियाओं का अवलोकन करते थे। इस प्रकार सैंकड़ों वर्षों के पर्यवेक्षण ने क्रान्तिद्रष्टा ऋषियों को समाहित कर दिया, कि राशिचक्र की राशिविशेष में ग्रहविशेष की विशिष्ट गतिविधि का तत्काल जन्म लेने वाले एवं जीवित मानवों पर एक सविशेष प्रकार का प्रभाव पड़ता है।

इस प्रकार की अन्तर्दृष्टि एवं पर्यवेक्षण की विधियों में ग्रह-नक्षत्रों की समस्त गतिविधियों एवं उनके मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का एकत्र संकलित स्वरूप भारतीय ज्योतिषशास्त्र है। यदि संक्षेप में कहा जाए तो यह शास्त्र उन सत्यों एवं सिद्धांतों का ज्ञानकोष है - जिनके द्वारा ग्रह-नक्षत्रों की समस्त गतिविधियों एवं उनके समस्त परिणामों को जाना जा सकता है। भारतीय ज्योतिष-शास्त्र के मनीषियों की यह सर्वसम्मत मान्यता है, कि जीवन में घटित होने वाली समस्त घटनायें ग्रह-नक्षत्रों की गतिविधियों के साथ सापेक्षता रखती हैं।

ग्रहों की गति एवं स्थिति को काल कहते हैं। चूँकि यह शास्त्र ग्रहों की गतिविधि अर्थात् काल तथा जीवन में घटित होने वाली घटना अर्थात् उसका परिणाम इन दोनों के बारे में सांगोपांग विवेचन करता है, अतः यह कालविज्ञान कहलाता है। काल के विविध मानों में तिथि, नक्षत्र, योग, करण एवं वार - ये पाँच अंग प्रधान होते हैं, जिन्हें पञ्चाङ्ग कहते हैं। इनकी जानकारी के बिना न तो श्रौत एवं स्मार्त्त कर्मों का विधान किया जा सकता है और न ही नित्य, नैमित्तिक एवं प्रायश्चित्त कर्मों का अनुष्ठान किया जा सकता है। सभी प्रकार के व्रत, पर्व एवं उत्सवों की जानकारी हमें पञ्चाङ्ग से ही मिलती है। अतः समस्त धार्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक कार्यों के यथासमय सम्पादन में पञ्चाङ्ग हमारी सर्वाधिक सहायता करता है।

पञ्चाङ्ग में तिथ्यादि के मानों को अप्रत्यक्ष या अदृश्य कहकर उनकी स्थूल गणना, मकरन्द एवं ग्रहलाघव आदि की सारिणियों से करने के आग्रह और प्रमाण के लिए सूर्य-सिद्धांत का उल्लेख किया जाता है, जबकि सूर्य सिद्धान्तकार दृक्तुल्यता के समर्थक हैं, यथा -

तत्तद्गतिवशान्नित्यं यथा दृक्तुल्यतां ग्रहाः।
प्रयान्ति तत्प्रवक्ष्यामि स्फुटीकरणमादरात्॥

इसके साथ-साथ सिद्धान्त ग्रन्थों के प्रणेता प्रायः सभी आचार्यों ने दृक्तुल्य ग्रहों के द्वारा तिथ्यादि आनयन को व्रत-पर्व, एवं उत्सवों के लिए उपयोगी माना है।

यथा - **यस्मिन् पक्षे यत्र काले येन दृग्गणितैक्यकम्।**
दृश्यते तेन पक्षेण कुर्यात्तिथ्यादिनिर्णयम् ॥ - वशिष्ठ
यात्राविवाहोत्सवजातकादौ खेटैः स्फुटैरेव फलस्फुटत्वम्।
स्यात्प्रोच्यते तेन नभश्चराणां स्फुटक्रिया दृग्गणितैक्यकृद्या॥

-भास्कराचार्य

तेभ्यः स्याद् ग्रहणादिदृक्सममियं प्रोक्ता मया सा तिथिः।
ग्राह्या मंगलधर्मनिर्णयविधावेषा यतो दृक्समा॥ -तिथिचिन्तामणि

मानव संसाधन विकास मन्त्रालय, भारत सरकार एवं राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के द्वारा प्रवर्तित शास्त्रचूड़ामणि योजना में राष्ट्रपति-सम्मानित ज्योतिष यन्त्रालय जयपुर के भूतपूर्व अध्यक्ष स्व. म.म. पं० कल्याणदत्त शर्मा जी की सेवायें इस विद्यापीठ को प्राप्त हुईं । श्री शर्मा जी वेधशाला एवं भारतीय गणित के प्रमुख विद्वान् थे। उनके अहर्निश चिन्तन एवं प्रयत्न से विद्यापीठ-पञ्चाङ्ग का श्रीगणेश हुआ।

श्री शर्मा जी को भी इस कार्य को आगे बढ़ाने के लिए एक कर्मठ एवं शास्त्रीय परम्परा में निष्णात प्रो. ओंकारनाथ चतुर्वेदी जी का पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ। परिणाम स्वरूप इन दोनों विद्वानों ने सन् १९८२ ई. के ग्रीष्मावकाश में अथक परिश्रम से वि. सम्वत् २०४० के पञ्चाङ्ग-गणित का कार्य सम्पन्न करके इसे सम्पादन के लिए तत्कालीन ज्योतिष- विभागाध्यक्ष प्रो. शुकदेव चतुर्वेदी जी को सौंपा। प्रो. चतुर्वेदी जी ने शीघ्र ही इसका सम्पादन करके विद्यापीठ पञ्चाङ्ग के प्रकाशनार्थ पञ्चाङ्ग गोष्ठी का प्रस्ताव विद्यापीठ के संस्थापक कुलपति एवं तत्कालीन प्राचार्य श्रद्धेय पद्मश्री डॉ. मण्डन मिश्र जी को प्रस्तुत किया।

दिनांक ०५ अक्टूबर १९८२ को विद्यापीठ में सम्पन्न पञ्चाङ्गगोष्ठी के अनुसार इस पञ्चाङ्ग का निर्माण ग्रीन्विच से पूर्वी रेखांश ७७°-१२', उत्तरी अक्षांश २८°-३८' अर्थात् भारत की राजधानी दिल्ली को आधार मानकर चित्रापक्षीय एवं निरयण पद्धति से किया गया है। इस पञ्चाङ्ग में दैनिक स्पष्टग्रह, दैनिक लग्नसारिणी, जन्म-पत्री एवं वर्षफल के निर्माण की सुगम सारिणियाँ, उत्तरी भारत के प्रमुख नगरों की लग्न सारिणियाँ, व्रत-पर्व एवं उत्सवों की वर्गीकृत सूची, मांगलिक मुहूर्तों की तालिका, राहुकाल, लोकभविष्य एवं मेलापक जैसे लोकोपयोगी विषयों का समावेश किया गया है, जो एक प्रमुख पञ्चाङ्ग के लिए आवश्यक होते हैं।

वि. संवत् २०८२ के विद्यापीठ-पञ्चाङ्ग के व्रत-पर्व एवं उत्सवों का ज्योतिष एवं धर्मशास्त्रीय नियमों के आधार पर निर्णय करने के लिए एक कार्यशाला का आयोजन दिनाङ्क १०, ११ एवं १२ सितम्बर, २०२४ को विश्वविद्यालय में किया गया, जिसमें श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के ज्योतिष-विभागाध्यक्षचर प्रो. ओंकारनाथ चतुर्वेदी, कामेश्वर सिंह दरभङ्गा संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभङ्गा, बिहार के कुलपतिचर प्रो. रामचन्द्र झा तथा केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय श्री रणवीर परिसर, जम्मू के निदेशकचर प्रो. वासुदेव शर्मा एवं ज्योतिष-विभागीय प्राध्यापकों प्रो. प्रेम कुमार शर्मा, प्रो. विनोद कुमार शर्मा, प्रो. नीलम ठगेला, प्रो. दिवाकर दत्त शर्मा, प्रो. परमानन्द भारद्वाज, प्रो. सुशील कुमार, प्रो. फणीन्द्र कुमार चौधरी, प्रो. रश्मि चतुर्वेदी, डॉ. रतन लाल, डॉ. खेमराज रेग्मी, डॉ. बृजमोहन, डॉ. होमेश दत्त एवं धर्मशास्त्र विभाग के प्रो. यशवीर सिंह, प्रो. सुधांशु भूषण पण्डा, डॉ. हिमांशु शेखर त्रिपाठी एवं डॉ. मीनाक्षी मिश्र ने भाग लिया। इसका सम्पादन ज्योतिष-विभागाध्यक्ष, प्रो. दिवाकर दत्त शर्मा द्वारा ज्योतिष विभागीय विद्वानों के सहयोग से किया गया, पञ्चाङ्ग के प्रकाशनार्थ वित्ताधिकारी श्री संतोष कुमार श्रीवास्तव एवं उपकुलसचिव वित्तविभाग श्री अजय कुमार टण्डन का प्राशासनिक कार्यों में अद्वितीय सहयोग रहा है। मैं इन सभी महानुभावों को धन्यवाद देता हूँ। विद्यापीठ-पञ्चाङ्ग का यह तैतालिसवाँ अंक विज्ञजनों के हाथों में समर्पित करते हुए मैं अपार हर्ष का अनुभव कर रहा हूँ। आशा है आपका आशीर्वाद एवं परामर्श हमारे इस प्रयास को और अधिक उपयोगी बनाने में सहायक होगा।

वसन्त पञ्चमी, रविवार
दिनाङ्क ०२ फरवरी २०२५ ई.

प्रो. मुरलीमनोहर पाठक
कुलपति
प्रधान-सम्पादक

♦ विद्यापीठ पञ्चाङ्ग ♦

संक्षिप्त-परिचय	१
प्रस्तावना	२-३
विद्यापीठ-पञ्चाङ्ग की विषय सूची	४
अथ सन्ध्योपासनाविधिः	५-११
संवत्सरादि फल	१२-२३
शनि की साढ़ेसाती व ढ़ैय्या का फल	२३-२६
आय-व्यय बोधक चक्र	२६
मेषादि द्वादश राशियों का मासिक फल	२७-४२
वि. संवत् २०८२ के व्रत-पर्व एवं उत्सव	४३-५१
वि. सं. २०८२ के वर्गीकृत व्रत-पर्वों की सूची	५२-५३
ग्रहों के राशि एवं नक्षत्रचार वि. सं.२०८२	५४-५५
ग्रहों के वक्रत्व-मार्गत्व एवं उदयास्त	५६
सर्वार्थसिद्धि-गुरुपुष्य-रविपुष्य-त्रिपुष्कर द्विपुष्कर, सिद्धियोग	५७-६०
अमृतयोग एवं रवियोग	६०-६३
वि.सं. २०८२ दैनिक राहुकाल सारिणी	६४-६७
क्रांति-चर-वेलान्तर-स्पष्टान्तर सारिणी	६८-७१
वि. संवत् २०८२ के ग्रहण का विवरण	७२-७४
संदिग्ध व्रत-पर्व निर्णय वि. संवत् २०८२	७५-८०
विवाह में अष्टकूट विचार एवं परिहार	८१-९०
चमत्कारिक यन्त्र-मन्त्र एवं तन्त्रों द्वारा कार्यसिद्धि	९१-९५
हवन में अग्निवास विचार, हवन में ग्रह मुख विचार	९५
वि.सं. २०८२ के माङ्गलिक मुहूर्त्तों के लिए कालशुद्धि	९६
विक्रम-संवत् २०८२ के विवाहादि मुहूर्त्त	९७-११०
विक्रम-संवत् २०८२ का पञ्चाङ्ग	१११-१३४
वि० संवत् २०८२ के दैनिक स्पष्ट ग्रह	१३५-१४६

♦ विषय-सूची ♦

दैनिक लग्न सारिणी	१४७-१५३
षड्वर्ग-चक्र	१५४-१५५
विंशोत्तरीदशा सारिणी	१५६
विंशोत्तरी-दशान्तर्दशा-चक्र	१५७
नवीन-प्राचीन वर्ष-प्रवेश सारिणी	१५८
मुद्दादशा, योगिनीमुद्दादशा, त्रिराशिपति-चक्र	१५८
वर्षफल निर्माण-विधि	१५९
लग्नसारिणी अक्षांश	१६०-१६५
दशमलग्नसारिणी	१६६
ग्रहमैत्री-चक्र, सिद्धयादियोग-चक्र	१६७
अन्धाक्षादिसंज्ञा, शिववास	१६७
विविध मुहूर्तों का विचार	१६८
गर्भाधान, पुंसवन-सीमन्त, स्तनपान का मुहूर्त्त	१६८
जलपूजन, जातकर्म-नामकरण, निष्क्रमण तथा भूमि पर प्रथमोपवेशन के मुहूर्त्त-विचार	१६९
अन्नप्राशन, कर्णवेध तथा मुण्डन संस्कार का विचार	१७०
नासिकाछेदन, अक्षरारम्भ, विद्यारम्भमुहूर्त्त का विचार, उपनयन मुहूर्त्त का विचार	१७१
विवाह मुहूर्त्तोपयोगी त्रिबलशुद्धि	१७२
वधूप्रवेश तथा द्विरागमन-मुहूर्त्त का विचार	१७३
जन्माक्षर-चक्र	१७४-१७६
मेलापक-सारिणी	१७७-१८०
मंगलीदोष-विचार, मंगलीदोष-परिहार	१८१
विवाहादि कार्यों में सूर्य, चन्द्र व गुरु का अष्टक-वर्ग, यात्रा मुहूर्त्त विचार,	१८२
चन्द्रवास का विचार, योगिनीवासचक्र	१८३

♦ विक्रम संवत् २०८२ ♦

दिक्शूल, नक्षत्र-शूल,लग्न-विचार व यात्रा, प्रस्थान-विचार, राहुमुखज्ञान, गृहारम्भ विचार,	१८४
चौघड़िया मुहूर्त्त-चक्र	१८५
चैत्रादि मासानुसार गृहारम्भ फल, वत्स-चक्र, कुआं खोदने या नल लगाने का मुहूर्त्त	१८६
द्वारस्थापन विचार, जीर्ण-नूतन गृह प्रवेश-मुहूर्त्त, कुम्भ-चक्र व दूकान (विपणि) मुहूर्त्त	१८७
व्यापार प्रारम्भ, नौकरी, मुकदमा, मशीनरी चालू करने, पशुक्रय, मन्दिर निर्माण व जलाशयारामसुरप्रतिष्ठा मुहूर्त्त, चुल्लिचक्र विचार, हल प्रवहण मुहूर्त्त, बीजवपन मुहूर्त्त, राहु नक्षत्र से बीजोप्ति चक्र, औषधसेवन मुहूर्त्त, वाहन आरोहण मुहूर्त्त	१८९
वास्तु मुहूर्त्त विचार	१९०-१९६
जन्मोत्सव पूजा विधि	१९६-१९८
ग्रहों के दान समय, जपसंख्या, जपनीय मन्त्र एवं हवन-समिधा ज्ञानार्थ-चक्र	१९९
भारत के प्रमुख नगरों के पलभा, अक्षांश, रेखांश एवं देशान्तर, लग्नसाधन के लिए पलभा से चरखण्ड तथा स्वदेशीय उदयमान बनाने की विधि	२००-२०१
लघुरित्थ सारिणी	२०२-२०३
अभीष्ट स्थान के सूर्योदय तथा इष्टकाल बनाने की विधि	२०४-२०५
विभिन्न अंगों पर पल्ली (छिपकली/किरली) गिरने का फल एवं उपचार, छींक विचार	२०६
गण्ड-मूलादि जन्म विचार	२०७
जन्मकुण्डली एवं वर्ष कुण्डली में द्वादशभावस्थसूर्यादि ग्रहों का फल	२०८

अथ सन्ध्योपासनाविधिः

पवित्रीकरणम्

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा इत्यस्य वामदेव ऋषिः

गायत्रीच्छन्दः विष्णुर्देवता हृदि पवित्रकरणे विनियोगः।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थाङ्गतोऽपि वा।

यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥ सर्वं शुचिः॥

आचमनम्

ॐ ऋग्वेदाय नमः स्वाहा । ॐ यजुर्वेदाय नमः स्वाहा।

ॐ सामवेदाय नमः स्वाहा। ॐ अथर्ववेदाय नमः ॥ (हस्तौ प्रक्षाल्य)

आसनशुद्धिः

ॐ पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसनपवित्र-करणे विनियोगः।

ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।

त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्॥

पवित्रीधारणम्

ॐ पवित्रेस्थ इत्यस्य परमेष्ठी प्रजापतिर्ऋषिः भूरिक् अत्यष्टिच्छन्दः आपो देवता पवित्रधारणे विनियोगः।

ॐपवित्रेंस्थोव्वैष्णव्योसवितुर्व्वः प्रसवऽउत्पुनाम्यच्छिद्रेणपवित्रेंणसूर्य्यस्य रश्मिभिः॥ तस्यंतेपवित्रपतेपवित्रंपूतस्ययत्कामः पुनेतच्छकेयम्॥

शिखाबन्धनम्

ॐ मानस्तोक इति मन्त्रस्य कुत्स ऋषिः जगतीच्छन्दः एकरुद्रो देवता शिखाबन्धने विनियोगः।

ॐमानंस्तोकेतनंयेमानऽआयुंषिमानोगोषुमानोऽअश्वेंषुरीरिषः॥

मानोंव्वीरानुंद्रभामिनोंवधीर्हविष्मंन्तः सदमित्त्वांहवामहे॥

चिद्रूपिणि महामाये दिव्यतेजः समन्विते।

तिष्ठ देवि शिखामध्ये तेजोवृद्धिं कुरुष्व मे॥

स्नाने दाने जपे होमे सन्ध्यायां देवतार्चने।

शिखाग्रन्थिं विना कर्म न कुर्याद् वै कदाचन॥

भस्माभिमन्त्रणम्

ॐ त्र्यम्बकमित्यस्य वसिष्ठ ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः त्र्यम्बको रुद्रो देवता भस्माभिमन्त्रणे विनियोगः।

ॐ त्र्यंम्बकंञ्यजामहेसुगन्धिम्पुंष्टिवर्द्धनम्॥

उर्व्वारुकमिंवबन्धंनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतांत्॥

भस्मधारणम्

ॐ त्र्यायुषमित्यस्य नारायण ऋषिः उष्णिक् छन्दः आशीर्देवता भस्मधारणे विनियोगः।

ॐ त्र्यायुषञ्जमदंग्नेः कश्यपंस्यत्र्यायुषम् ॥

यद्देवेषुंत्र्यायुषन्तन्नोंऽअस्तुत्र्यायुषम्॥

ॐ अग्निरिति भस्म। ॐ वायुरिति भस्म। ॐ जलमिति भस्म। ॐ स्थलमिति भस्म। ॐ व्योमेति भस्म। ॐ सर्वꣳहवा इदं भस्म। ॐ मन एतानि चक्षूंषि भस्मानि॥

(इति भस्मानि अवधार्य हस्तौ प्रक्षालयेत्)

आचमनम्

ॐ ऋतञ्चेति माधुश्छन्दसोऽघमर्षण ऋषिरनुष्टुप् छन्दो भाववृतं दैवतम् अपामुपस्पर्शने विनियोगः।

ॐ ऋ॒तञ्चसत्यञ्चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत।
ततो रात्र्यजायत। ततः समुद्रोअर्णवः।
समुद्रादर्णवादधिसंवत्सरोअजायत।
अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्यमिषतो वशी।
सूर्याच्च॒न्द्रमसौधातायथापूर्वमकल्पयत्।
दिवञ्चपृथिवीञ्चान्तरिक्षमथो स्वः॥

प्राणायामः

ॐ प्रणवस्य परब्रह्मर्षिः देवीगायत्रीच्छन्दः परमात्मा देवता प्रणायामे विनियोग: सप्तव्याहृतीनां क्रमेण विश्वामित्रजमदग्निभरद्वाजगौतमात्रिवसिष् ठकश्यपा ऋषयः गायत्र्युष्णिग् अनुष्टुब्बृहतीपङ्क्तित्रिष्टुब्जगत्यश्छन्दांसि अग्नि-वाय्वादित्यबृहस्पतिवरुणेन्द्र-विष्णवो देवताः प्राणायामे विनियोग: तत्स-वितुरित्यस्य विश्वामित्र ऋषिः गायत्रीच्छन्दः सविता देवता प्रणायामे विनियोग: आपोज्योतिरित्यस्य प्रजापतिऋषिः यजुश्छन्दः ब्रह्माग्निवायुसूर्या देवताः प्राणायामे विनियोगः।

(पूरक-कुम्भक-रेचक- पूर्वकं त्रिवारं प्राणायामम् आचरेत्)

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम्।

ॐ तत्सं॒वि॒तुर्व्वरे॑ण्यु॒म्भर्गो॑दे॒वस्यं॑धीमहि॥ धि॒यो॒यो नं॑: प्र॒चो॒दया॑त्॥

ॐ आपोज्योतीरसोऽमृतं ब्रह्मभूर्भुवः स्वरोम्॥ (हस्तौ प्रक्षाल्य)

सन्ध्यासङ्कल्पः

ॐ तिथिर्विष्णुस्तथा वारो नक्षत्रं विष्णुरेव च ।
योगश्च करणं विष्णुः सर्वं विष्णुमयं जगत्॥

हरिः ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुराणपुरुषोत्तमस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीये परार्द्धे श्रीश्वेत-वाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भूर्लोके जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे आर्यवर्तैकदेशान्तर्गते पुण्यप्रदेशे (इन्द्रप्रस्थक्षेत्रे) ..तमे श्रीशालिवाहनशके तमे विक्रमाब्दे षष्ट्यब्दानां मध्ये अस्मिन् वर्तमाने ....नामधेयसंवत्सरे, श्रीसूर्ये ..... अयने, ..ऋतौ, मासानामुत्तमे ..... मासे शुभे, ...पक्षे, अद्य शुभपुण्यतिथौ,.... वासरे, ..नक्षत्रे, .योगे, ..करणे, ...राशिस्थिते श्रीसूर्ये, ...राशिस्थिते श्रीचन्द्रे, ..राशिस्थिते श्रीदेवराजगुरौ, शेषेषु ग्रहेषु यथायथं राशिस्थानस्थितेषु सत्सु, एवं ग्रहगणगुणविशेषेण विशिष्टायां वेलायां शुभपुण्यतिथौ, ... गोत्रोत्पन्नः ...शर्माऽहम् ममोपात्तदुरितक्षयपूर्वकं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं ब्रह्मवर्चसः सिध्यर्थञ्च प्रातः / मध्याह्नम् / सायम् सन्ध्योपासनं करिष्ये।

ॐ इन्द्राय नमः। ॐ अग्नये नमः। ॐ यमाय नमः। ॐ निर्ऋतये नमः।

दिग्रक्षणम्

प्राच्यां दिशि। आग्नेय्यां दिशि। दक्षिणायां दिशि। नैर्ऋत्यां दिशि। पश्चिमायां दिशि। वायव्यां दिशि। उत्तरस्यां दिशि। ऐशान्यां दिशि। ऊर्ध्वायां दिशि। अधोदिशि।

कुबेरो रक्षतु। ईशानो रक्षतु। ब्रह्मा रक्षतु। अनन्तो रक्षतु। इन्द्रो रक्षतु। अग्नी रक्षतु। यमो रक्षतु। निर्ऋती रक्षतु। वरुणो रक्षतु। ॐ वरुणाय नमः। वायू रक्षतु। ॐ वायवे नमः। ॐ कुबेराय नमः। ॐ ईशानाय नमः। ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ अनन्ताय नमः।

अम्बुप्राशनम्

प्रातः

ॐ सूर्यश्चमेति नारायण ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः सूर्यो देवता अम्बुप्राशने विनियोगः।

ॐ सूर्यश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षन्ताम्। यद्रात्र्या पापमकार्षं मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेणशिश्ना रात्रिस्तदवलुम्पतु। यत्किञ्चदुरितम्मयि इदमहमापोऽमृतयोनौ सूर्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा॥ (वारत्रयम् आचमनं कुर्यात्)

मध्याह्नम्

ॐ आपः पुनन्त्विति ब्रह्मा ऋषिः गायत्रीच्छन्दः आपो देवता अम्बुप्राशने विनियोगः।

ॐ आपः पुनन्तु पृथिवीं पृथिवी पुनातु माम्।
पुनन्तु ब्रह्मणस्पतिर्ब्रह्मपूता पुनातु माम्।
यदुच्छिष्टमभोज्यञ्च यद्वा दुश्चरितं मम।
सर्वं पुनन्तु मामापोऽसताञ्च प्रतिग्रहं स्वाहा॥

सायम्

ॐ अग्निश्चमेति रुद्र ऋषिः प्रकृतिश्छन्दोऽग्निर्देवता अम्बुप्राशने विनियोगः।

ॐ अग्निश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षन्ताम्।
यदह्ना पापमकार्षं मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेणशिश्ना अहस्तदवलुम्पतु। यत्किञ्च दुरितम्मयि इदमहमापोऽमृतयोनौ सूर्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा॥

मार्जनम्

ॐ आपोहिष्ठेत्यादित्र्यृचस्य सिन्धुद्वीप ऋषिः गायत्रीच्छन्दः आपो देवता मार्जने विनियोगः।

ॐ आपो हि ष्ठा मयो भुवः। ॐ ता नऽऊर्जे दधातन। ॐ महेरणाय चक्षसे। ॐ यो वः शिवतमो रसः। ॐ तस्य भाजयते ह नः। ॐ उशतीरिव मातरः। ॐतस्माऽअरङ्गमामवः।ॐयस्यक्षयायजिन्वथ।ॐआपोजनयथाचनः॥

अभिमन्त्रणम्

ॐ द्रुपदादिवेत्यस्य कोकिलो राजपुत्र ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः आपो देवता शिरस्स्येके विनियोगः।

ॐ द्रुपदादिवमुमुचानः स्विन्नः स्नातो मलादिव।
पूतम्पवित्रेणेवाज्यमापः शुन्धन्तुमैनसः॥

अघमर्षणम्

ॐ अघमर्षणसूक्तस्याघमर्षण ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः भाववृतो देवता अघमर्षणे विनियोगः।

ॐऋतञ्चसत्यञ्चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत।
ततो रात्र्यजायत। ततः समुद्रो अर्णवः ।
समुद्रादर्णवादधिसंवत्सरो अजायत ।
अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्यमिषतो वशी ।
सूर्याच्चन्द्रमसौधातायथापूर्वमकल्पयत् ।
दिवञ्च पृथिवीञ्चान्तरिक्षमथो स्वः ॥

आचमनम्

ॐ अन्तश्चरसीति तिरश्चीन ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः आपो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः।

ॐ अन्तश्चरसि भूतेषु गुहायां विश्वतोमुखः।
त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कार आपो ज्योती रसोऽमृतम्॥

सूर्यार्घ्यविधिः

ॐ कारस्य ब्रह्मा ऋषिः देवीगायत्रीच्छन्दः परमात्मा देवता भूर्भुवः स्वरिति महाव्याहृतीनां परमेष्ठी प्रजापतिर्ऋषिः गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांसि अग्निवायुसूर्या देवताः तत्सवितुरित्यस्य विश्वामित्र ऋषिः गायत्रीच्छन्दः सविता देवता सूर्यार्घ्यदाने विनियोगः।

ॐ भूर्भुवःस्वः॥ तत्सवितुर्वरेण्यम्भर्गोदेवस्यधीमहि॥
धियोयोनः प्रचोदयात्॥
ॐ एहि सूर्य सहस्रांशो तेजो राशे जगत्पते।
अनुकम्पय मां भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकर॥

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मस्वरूपिणे/ विष्णुस्वरूपिणे/ रुद्रस्वरूपिणे सवित्रे श्रीसूर्यनारायणाय इदम् अर्घ्यं दत्तम्, न मम॥

सूर्योपस्थानम्

ॐ उद्वयमित्यस्य प्रस्कण्व ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः सूर्यो देवता उदुत्यमित्यस्य प्रस्कण्व ऋषिः निचृद्गायत्रीच्छन्दः सूर्यो देवता चित्रमित्यस्य कौत्स ऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः सूर्यो देवता तच्चक्षुरित्यस्य दध्यङथर्वण ऋषिः उष्णिक्छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः।

ॐ उद्वयन्तमंसस्परिस्वः पश्यंन्तऽउत्तरम् ॥
देवन्देवत्रासूर्य्यमगंन्मज्योतिरुत्तमम्॥
उदुत्यञ्जातवेंदसन्देवंव्वंहन्तिकेतवंः॥ दृशेविश्वांयसूर्य्यम्॥
चित्रन्देवानामुदंगादनींकञ्चक्षुंर्मित्रस्यवर्ष्णरुंणस्यागग्नेः॥
आप्राद्यावांपृथिवीऽअन्तरिंक्षꣳ सूर्य्यऽआत्माजगंतस्तस्थुषंश्च ॥
तच्चक्षुंर्देवहिंतम्पुरस्तांच्छुक्रमुच्चंरत् ॥

पश्येंमशरदंः शतञ्जीवेंमशरदंः शतꣳ शृणुंयामशरदंः शतम्प्रब्रंवामशरदंः शतमंदींनाः स्यामशरदंः शतम्भूयंश्चशरदंः शतात्॥

अङ्गप्रोक्षणम्

ॐ भूः पुनातु शिरसि। ॐ भुवः पुनातु नेत्रयोः।
ॐ स्वः पुनातु कण्ठे। ॐ महः पुनातु हृदि।
ॐ जनः पुनातु नाभौ। ॐ तपः पुनातु पादयोः।
ॐ सत्यं पुनातु पुनः शिरसि॥

करन्यासः

ॐ भूः अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ भुवः तर्जनीभ्यां नमः।
ॐ स्वः मध्यमाभ्यां नमः। ॐ तत्सवितुर्वरेण्यम् अनामिकाभ्यां नमः।
ॐ भर्गोदेवस्य धीमहि कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
ॐ धियो योनः प्रचोदयात् करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः॥

अङ्गन्यासः

ॐ भूः हृदयाय नमः। ॐ भुवः शिरसे स्वाहा।
ॐ स्वः शिखायै वषट्। ॐ तत्सवितुर्वरेण्यम् कवचाय हुम्।
ॐ भर्गोदेवस्य धीमहि नेत्रत्रयाय वौषट्।
ॐ धियो योनः प्रचोदयात् अस्त्राय फट्॥

गायत्रीध्यानम्

ॐमुक्ताविद्रुमहेमनीलधवलच्छायैर्मुखैस्त्रीक्षणैः
युक्तामिन्दुकलानिबद्धमुकुटां तत्त्वात्मवर्णात्मिकाम्।
गायत्रीं वरदाभयाङ्कुशकशाः शुभ्रं कपालं गुणं
शङ्खं चक्रमथारविन्दयुगलं हस्तैर्वहन्तीं भजे॥

बहुरूपिणि गायत्रि दिव्ये सन्ध्ये सरस्वति।
अजरे अमरे देवि ब्रह्मयोने नमोऽस्तु ते॥

प्रातः

ॐ ब्रह्माणी चतुराननाक्षवलयं कुम्भं करैः स्रुक्स्रुवौ
बिभ्राणारुणकान्तिरिन्दुवदना ऋग्रूपिणी बालिका।
हंसारोहणकेलिरम्बरमणेर्बिम्बाञ्चिता भूषिता

गायत्री हृदि भाविता भवतु नः सम्पत्समृद्ध्यै सदा॥

मध्याह्नम्

ॐ ध्येया सा च सरस्वती भगवती पीताम्बराऽलङ्कृता
श्यामातन्विजयादिभिः परिलसद्गात्राञ्चिता वैष्णवी।
ताक्ष्र्यस्था मणिनूपुराङ्गददश-ग्रैवेयभूषोज्ज्वला
हस्तालम्बित-शङ्ख-चक्र-सुगदा भूत्यै श्रियै चास्तु नः॥

सायम्

ॐ रुद्राणी नवयौवना त्रिनयना वैयाघ्रचर्माम्बरा
खट्वाङ्ग-त्रिशिखाक्ष-सूत्रवलया ध्येया यजूरूपिणी।
विद्युद्दाम-जटा-कलाप-विलसद्-बालेन्दु-मौलिर्मुदा
सावित्री वृषवाहना शिततनूर्भूत्यै श्रियै चास्तु नः॥

गायत्र्यावाहनम्

ॐ तेजोसीती धामनमासीत्यस्य च परमेष्ठी प्रजापतिर्ऋषिः यजुस्त्रिष्टुबुष्णिहौ छन्दसी आज्यं देवता गायत्र्यावाहने विनियोगः।

ॐ तेजोऽसिशुक्रमंस्यमृतंमसिधामनामांसिप्रियन्देवानामनांधृष्टन्देवय जनंमसि ॥

ॐ गायत्रीं त्र्यक्षरां बालां साक्षसूत्रकमण्डलुम् ।
रक्तवस्त्रां चतुर्हस्तां हंसवाहनसंस्थिताम् ॥
ऋग्वेदस्य कृतोत्सङ्गां सर्वदेवनमस्कृताम्।
ब्रह्माणीं ब्रह्मदैवत्यां ब्रह्मलोकनिवासिनीम्॥
आवाहयाम्यहं देवीमायान्तीं सूर्यमण्डलात् ।
आगच्छ वरदे देवि त्र्यक्षरे ब्रह्मवादिनि ॥
गायत्रि छन्दसां मातर्ब्रह्मयोने नमोऽस्तु ते ॥

गायत्र्युपस्थानम्

ॐ गायत्र्यसीति तुरीयपदस्य विवस्वान् ऋषिः स्वराणमहापङ्क्तिश्छन्दः परमात्मा देवता गायत्र्युपस्थाने विनियोगः।

ॐ गायत्र्यस्येकपदीद्विपदीत्रिपदीचतुष्पद्यपदसि ।
न हि पद्यसे नमस्ते तुरीयाय दर्शताय पदाय परो रजसे सावदो मा प्रापत्॥

ब्रह्मशापविमोचनम्

ॐ अस्य श्रीब्रह्मशापविमोचनमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः गायत्रीच्छन्दः भुक्तिमुक्तिप्रदा ब्रह्मशापविमोचनी गायत्री शक्तिर्देवता ब्रह्मशापविमोचने विनियोगः।

ॐ गायत्रीम्ब्रह्मेत्युपासीत यद्रूपं ब्रह्मविदो विदुः।
तां पश्यन्ति धीराः सुमनसो वाचमग्रतः॥
ॐ वेदान्तनाथाय विद्महे हिरण्यगर्भाय धीमहि।
तन्नो ब्रह्म प्रचोदयात्॥
ॐ देवि! गायत्रि! त्वं ब्रह्मशापाद्विमुक्ता भव।।

वसिष्ठशापविमोचनम्

ॐ अस्य श्रीवसिष्ठशापविमोचनमन्त्रस्य निग्रहानुग्रहकर्ता वसिष्ठऋषिः गायत्रीच्छन्दः वसिष्ठानुगृहीता गायत्री शक्तिर्देवता विश्वोद्भवा वसिष्ठशापविमोचने विनियोगः।

ॐ सोऽहमर्कमयं ज्योतिरात्मज्योतिरहं शिवः।
आत्मज्योतिरहं शुक्रः सर्वज्योतिरसोऽस्म्यहम्॥
(योनिमुद्रां प्रदर्श्य त्रिवारं गायत्रीं जपेत्)
ॐ देवि! गायत्रि! त्वं वसिष्ठशापाद्विमुक्ता भव॥

विश्वामित्रशापविमोचनम्

ॐ अस्य श्रीविश्वामित्रशापविमोचनमन्त्रस्य नूतनसृष्टिकर्ता विश्वामित्र ऋषिः गायत्रीच्छन्दः विश्वामित्रानुगृहीता गायत्रीशक्तिर्देवता वाग्देहा विश्वामित्रशाप-विमोचने विनियोगः।

ॐ गायत्रीं भजाम्यग्निमुखीं विश्वगर्भा यदुद्भवाः।
देवाश्चक्रिरे विश्वसृष्टिं तां कल्याणीमिष्टकरीं प्रपद्ये॥
ॐ देवि! गायत्रि! त्वं विश्वामित्रशापाद्विमुक्ता भव॥

शुक्रशापविमोचनम्

ॐ अस्य श्रीशुक्रशापविमोचनमन्त्रस्य श्रीशुक्रऋषिः अनुष्टुप् छन्दः देवी गायत्री देवता शुक्रशापविमोचने विनियोगः।

ॐ सोऽहमर्कमयं ज्योतिरर्कज्योतिरहं शिवः।
आत्मज्योतिरहं शुक्रः सर्वज्योतिरसोऽस्म्यहम्॥
ॐ देवि! गायत्रि! त्वं शुक्रशापाद्विमुक्ता भव।
ॐ अहो देवि महा देवि सन्ध्ये विद्ये सरस्वति।
अजरे अमरे चैव ब्रह्मयोने नमोऽस्तु ते॥
ॐ देवि! गायत्रि! त्वं ब्रह्मशापाद्विमुक्ता भव॥
वसिष्ठशापाद्विमुक्ता भव॥ विश्वामित्रशापाद्विमुक्ता भव॥
शुक्रशापाद्विमुक्ता भव॥

चतुर्विंशतिमुद्राप्रदर्शनम्

ॐ सुमुखं सम्पुटं चैव विततं विस्तृतं तथा।
द्विमुखं त्रिमुखं चैव चतुः पञ्चमुखं तथा॥
षण्मुखाधोमुखञ्चैव व्यापकाञ्जलिकं तथा।
शकटं यमपाशं च ग्रथितञ्चोन्मुखोन्मुखम्॥
प्रलम्बं मुष्टिकञ्चैव मत्स्यः कूर्मो वराहकः।
सिंहाक्रान्तं महाक्रान्तं मुद्गरं पल्लवं तथा॥
चतुर्विंशतिरेतास्तु मुद्रा आदौ प्रकीर्तिताः॥

गायत्रीमन्त्रजपः

ॐ कारस्य ब्रह्मा ऋषिः गायत्रीच्छन्दः परमात्मा देवता भूर्भुवः स्वरिति महाव्याहृतीनां परमेष्ठी प्रजापतिर्ऋषिः गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांसि अग्नि-वायुसूर्या देवताः तत्सवितुरित्यस्य विश्वामित्र ऋषिः सविता देवता गायत्री छन्दः सर्वपापक्षयार्थे गायत्रीमन्त्रजपे विनियोगः।

मालाप्रार्थना

ॐ मां माले महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणि।
चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव॥
अविघ्नं कुरु माले त्वं गृह्णामि दक्षिणे करे।
जपकाले च सिद्ध्यर्थं प्रसीद मम सिद्धये॥

ॐ अक्षमालाधिपतये सुसिद्धिं देहि देहि सर्वमन्त्रार्थसाधिन साधय साधय सर्वसिद्धिं परिकल्पय परिकल्पय मे स्वाहा॥

गायत्रीमन्त्रः

ॐ भूर्भुवः स्वः॥ तत्सवितुर्वरेण्यम्भर्गोदेवस्यधीमहि॥
धियोयोनः प्रचोदयात्॥ जपान्ते.....
ॐ गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरि॥
ॐ यदक्षरं पदं भ्रष्टं मात्राहीनं च यद् भवेत्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देवि काश्यपप्रियवादिनि।

जपान्तेऽष्टौ मुद्राः

ॐ सुरभिर्ज्ञानवैराज्ञे योनिः शङ्खोऽथ पङ्कजम्।
लिङ्गं निर्वाणकं चैव जपान्तेऽष्टौ प्रदर्शयेत्॥

सूर्यप्रदक्षिणा

विश्वतश्चक्षुरिति भौवन ऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः विश्वकर्मा देवता श्रीसूर्य-प्रदक्षिणायां विनियोगः।

ॐविश्वतश्चक्षुरुतद्विश्वतोमुखोद्विश्वतोबाहुरुतद्द्विश्वतस्पात्॥

सम्बाहुभ्यान्धमतिसम्पतंत्रैर्द्यावाभूमीजनयन्देवऽएकः॥

ॐ एकचक्रो रथो यस्य दिव्यः कनकभूषितः।

स मे भवतु सुप्रीतः पद्महस्तो दिवाकरः॥

जपसमर्पणम्

ॐ देवागातुविद इत्यस्य मनसस्पतिर्ऋषिः वातो देवता विराट् छन्दः जपनिवेदने विनियोगः।

ॐ देवांगातुविदोगातुंवित्त्वागातुमित॥

मनंसस्पतऽइमन्देवयज्ञंस्वाहाव्वातेधाः॥

हस्ते जलमादाय

अनेन कृतेन यथाशक्ति गायत्रीमन्त्रजपाख्येन कर्मणा भगवान् सविता श्रीसूर्यनारायणः प्रीयताम्।

गायत्रीविसर्जनम्

ॐ उत्तरे शिखरे इत्यस्य वामदेव ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः सन्ध्या देवता गायत्रीविसर्जने विनियोगः।

ॐ उत्तरे शिखरे देवि भूम्यां पर्वतमस्तके।

ब्राह्मणेभ्योऽभ्यनुज्ञाता गच्छ देवि यथासुखम्॥

विसर्जिता वेदमातर्द्विजानां पापनाशिनि।

सर्वकामप्रदे नित्ये गच्छ देवि नमोऽस्तु ते॥

अभिवादनम्

....प्रवरान्वितः.....वाजसनेयिशाखाध्यायी.....गोत्रोत्पन्नः शुक्ल-यजुर्वेदान्तर्गत माध्यन्दिन- वाजशनेयिशाखाध्यायी...शर्माऽहम्, भो वैश्वानर! अभिवादये। भो सूर्यचन्द्रमसौ ! अभिवादये । भो गायत्रि! सावित्रि! सरस्वति! अभिवादये। भो। आचार्य! अभिवादये। भो मातापितरौ! अभिवादये। भो मातापितरौ! अभिवादये। भो गुरो! अभिवादये॥

आकाशात्पतितं तोयं यथा गच्छति सागरम् ।

सर्वदेवनमस्कारः केशवं प्रति गच्छति॥

हस्ते जलमादाय

अनेन कृतेन प्रातः/मध्याह्नम्/ सायम् सन्ध्योपासनाख्येन कर्मणा भगवान्सविता श्रीसूर्यनारायणः प्रीयताम्।

ॐ तत्सत् श्रीब्रह्मार्पणमस्तु।

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु।

न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥

ॐ अच्युताय नमः। ॐ गयाय नमः। ॐ गदाधराय नमः। पुण्डरीकाक्षाय नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः। श्रीविष्णुस्मरणात् परिपूर्णोऽस्तु। अस्तु परिपूर्णः॥

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते ।

पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

सुशान्तिर्भवतु सर्वारिष्टसर्वोपद्रवशान्तिरस्तु॥

इति सन्ध्योपासनाविधिः

डॉ.खेमराज रेग्मी

सहायक आचार्य (अतिथि), ज्योतिष-विभाग

॥ श्रीमङ्गलमूर्त्तये नमः ॥

॥ श्रीवाग्देवतायै नमः ॥

"सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च" - (शु.य.सं.- ७.४२)

सोमसूर्यानिलाकल्पामकल्पामिन्दुशेखराम्।
पञ्चबिन्दुं हरेः शक्तिं पञ्चकृत्यकरीं नुमः॥
पञ्चदेवात्मको भूत्वा पञ्चशक्तिसमन्वितः।
पञ्चसृष्टिमधिष्ठाय प्रपञ्चरहितोऽवतु ॥
प्राप्ते नूतनवत्सरे प्रतिगृहे कुर्याद् ध्वजारोपणम्
स्नानं मङ्गलमाचरेद्द्विजवरैः सार्धं सुपूजोत्सवम् ।
देवानां गुरुयोषिताञ्च विभवाऽलङ्कारवस्त्रादिभिः
सम्पूज्यो गणकः फलञ्च शृणुयात्तस्माच्च लाभप्रदम्॥
पारिभद्रस्य पत्राणि कोमलानि विशेषतः।
सुपुष्पाणि समानीय चूर्णं कृत्वा विधानतः॥
मरीचिहिङ्गुलवणजीरकेण च संयुतम्।
अजमोदायुतं कृत्वा भक्षयेद् रोगशान्तये॥

संवत्सरादिफलश्रवणमाहात्म्यम्-

राज्यं स्यादचलं नृपश्रवणतो मन्त्रीश्रवात् कौशलं,
धान्येशाद् विमला स्थिरा च सुरसावाणी भवेन्मेघपात्।
धर्मे बुद्धिरधिष्ठिता रसपतेर्दीर्घायुषत्वं भवेत्,
सस्येशाद् विमलामतिः शुभकरी राजा बलिः श्रूयताम्॥

अथ कल्पादितो गतवर्षाणि १९७२९४९१२६ सृष्टितो गताब्दाः १९५५८८५१२६ कृतयुगप्रमाणं १७२८००० अस्मिन् युगे श्रीविष्णुमत्स्यकच्छपवराहनृसिंहावताराः । त्रेतायुगप्रमाणं १२९६००० युगेऽस्मिन् श्रीवामनपरशुराम-रामचन्द्रावताराः। द्वापरयुगप्रमाणं ८६४००० अस्मिन् युगे कृष्णबलरामावतारौ। कलियुगप्रमाणं ४३२००० तन्मध्येऽहिंसाव्रती श्री बुद्धावतारोऽभवत्। साम्प्रतं गतकलिवर्षाणि ५१२५ भोग्यवर्षाणि ४२६८७५ । कलियुगस्य ८२१ वर्षावशेषकाले कल्क्यवतारः स्यात्।

कार्तिकशुक्लनवम्यां बुधवासरे मध्याह्ने श्रवणनक्षत्रे धृतियोगे कृतयुगोत्पत्तिः। तत्र पापं ० पुण्यं २०। वैशाखशुक्लतृतीयायां गुरोर्दिने रोहिणीनक्षत्रे द्वितीयप्रहरे धृतियोगे त्रेतायुगोत्पत्तिः। तत्र पापं ५ पुण्यं १५। माघकृष्णामावस्यायां शुक्रे धनिष्ठानक्षत्रे वरीयान्योगे निशायां द्वापरयुगोत्पत्तिः। तत्र पापं १० पुण्यं १०। भाद्रपदकृष्णत्रयोदश्यां रवौ सार्पभे व्यतीपातयोगे निशीथे कलियुगोत्पत्तिः। तत्र पापं १५ पुण्यं ५।

श्रीरामरावणयुद्धतो गता वत्सराः ८८०१६६ । श्रीकृष्णावतारतो गताब्दाः ५२६० । महाभारतयुद्धतो गताब्दाः ५१२५ । श्रीमहावीर (जैन) निर्वाणसंवत् २५५२ । श्रीबुद्धसंवत् २६४८-२६४९। श्रीमन्नृपतिवीर-विक्रमादित्यराज्यात् संवत् २०८२ । श्रीशालिवाहनराज्यात् संवत् १९४७, श्रीलक्ष्मणसंवत् ९१६-९१७। अंग्रेजीसंवत् २०२५-२०२६ ई. सन्, फसली सन् १४३२-१४३३। तत्र बार्हस्पत्यमानेन प्रभवादिषष्ट्यब्दानां मध्ये "सिद्धार्थ" नामसंवत्सरः। तत्र मेषाऽर्कसमये गतमासादिः ००/२९/३२/५५ भोग्यमासादिः ११/००/२७/०५ सङ्कल्पादौ वर्षान्तं यावत् "सिद्धार्थ" नाम संवत्सरः प्रयोक्तव्यः। आश्विनदेवदैवतं युगम्। वर्षनाम 'कार्तिक' इति। मेघनाम 'संवर्तः'। रोहिणीनिवासः 'तटे'। समयनिवासः 'रजकगृहे'। भारतीयगणराज्य- संवत् ७८-७९।

आकाशस्थ ग्रहमन्त्रिपरिषद्

(विभागाधिकारियों के नाम तथा उनके शुभाशुभ फल)

सिद्धार्थ संज्ञक संवत्सर का फल -

तोयपूर्णो भवेन्मेघो बहुसस्या वसुन्धरा ।
सुखिनः पार्थिवाः सर्वे सिद्धार्थे श्रृणु सुन्दरी ॥

सिद्धार्थ नामक संवत्सर में मेघ जल से पूर्ण रहेंगे तथा पृथ्वी बहुत धान्य से युक्त रहेगी अर्थात अन्न का उत्पादन अधिक होगा। हे पार्वती ! सिद्धार्थ संवत्सर में सभी भूपति सुखी रहेंगे।

सिद्धार्थवत्सरे भूपा ज्ञानवैराग्यभागिनः ।
सम्पूर्णा वसुधा भाति बहुसस्यार्घवृष्टिभिः ॥

सिद्धार्थ नामक संवत्सर में राजा ज्ञान, वैराग्य के प्रकाश से युक्त रहते हैं तथा सम्पूर्ण पृथ्वी अधिक अन्न से सम्पन्न और सुन्दर दिखती है।

जलपूर्णास्तथा मेघा शस्यापूर्णा च मेदिनी।
निष्ठुराः पार्थिवाः देवि सिद्धार्थाब्दे वरानने॥

सिद्धार्थ संवत्सर में जलपूर्ण मेघ, शस्यपूर्ण पृथिवी एवं दयाहीन नृपवर्ग होते हैं।

सिद्धार्थवत्सरे भूयोज्ञानवैराग्ययुक्प्रजाः।
सकलावसुधाभातिबहुसस्यार्घवृष्टिभिः॥

सिद्धार्थ नामक संवत्सर में प्रजा बहुत ज्ञान और वैराग्य के भाव से युक्त होती है। सम्पूर्ण पृथ्वी पर अच्छी वर्षा होने से धन - धान्यों के पर्याप्त उत्पादन एवं धान्यों के मूल्यों में कमी से जनता प्रसन्न एवं सुखी रहती है।

पंचद्वाभ्यां सुभिक्षम् ।

बृहज्ज्योतिषसार ग्रन्थ के अनुसार नव सिद्धार्थ संवत्सर में सुभिक्ष रहेगा।

सिद्धार्थीवत्सरे भूपाश्चान्योन्यं स्नेहकांक्षिणः ।
संपूर्णसस्यां वसुधां दुदुहुर्गा यथा तथा॥

सिद्धार्थी नामक संवत्सर में राजा लोग परस्पर स्नेहाभिलाषी, सम्पूर्ण भूमि सस्ययुक्त तथा उत्तम दूध देने वाली गायों के सदृश उत्तम अन्न उपजाने वाले कृषक होते हैं- **सिद्धार्थसंज्ञे बहवो गुणाश्च।**

सिद्धार्थ संज्ञक संवत्सर में बहुत गुण सम्पत्ति आदि की प्राप्ति होती है।

राजा सूर्य का फल -

सूर्ये नृपे स्वल्पजलाश्च मेघाः स्वल्पं धान्यमल्पफलाश्चवृक्षाः।
स्वल्पं पयो गोषु जनेषु पीडा चौराग्निबाधा निधनं नृपाणम्॥

यदि संवत्सर का राजा सूर्य हो तो अल्प वर्षा होती है तथा अन्न और फलों का उत्पादन कम होता है।कम दूध देने वाली गाएं,जनता दुःखी, चोर तथा अग्नि के भय से युक्त तथा राजाओं की मृत्यु या मृत्यु तुल्य पीड़ा होती है- **खलु दुःखप्रदो रविः।**

यदि संवत्सर का राजा सूर्य हो तो निश्चित रूप से संवत्सर दुःख देने वाला होता है।

अब्देश्वरश्च भूपो वा सस्येशो वा दिवाकरः ।
तस्मिन्नब्दे नृपक्रोधः स्वल्पसस्यार्धवृष्टिकृत्॥

यदि वर्ष का राजा सूर्य हो तो राजा लोग क्रोध से युक्त रहते हैं तथा अन्न की कम उत्पत्ति एवं कम वृष्टि होती है।

धर्मांशौ विविधैर्ज्वरार्कदहनैराकम्पितं क्ष्मातलं
मेघा यान्ति च लाघवं प्रतिदिशं वज्राभिघातो भवेत्।

राजादेशविवादतः परिजनैर्मोहात्
प्रकम्पायितश्चौरव्याघ्रभुजंगमैरुपहता पृथ्वी च वर्षाधिपे॥

यदि संवत्सर का राजा सूर्य हो तो अनेक प्रकार के ज्वर एवं सूर्य के प्रचण्ड ताप से पृथ्वी में कम्पन होता है।मेघ कम होते हैं परिणामस्वरूप अल्पवृष्टि होती है तथा प्रत्येक दिशा में विद्युत्पात की सम्भावना बनी रहती है। देश विवाद एवं परिजनों के मोहवश राजा भयभीत रहते हैं तथा चौरभय,व्याघ्रभय एवं सर्पभय अर्थात् हिंसक जीव-जन्तुओं एवं चोरों के आतंक से जनता ग्रस्त और त्रस्त रहती है

मन्त्री सूर्य का फल -

नृपभयं गदतोऽपि हि तस्करात्प्रचुरधान्यधनानिमहीतले।
रसचयं हि समर्घतमं तदा रविरमात्यपदं हि समागतः॥

यदि वर्ष का मन्त्री सूर्य हो तो जनता राजाओं, रोगों तथा चोरों के आतंक से भयभीत रहती है। पृथ्वी पर प्रचुर अन्न की पैदावार होने से रसपदार्थों के मूल्यों में कमी होती है।

आदित्ये बहुवित्तनाशपरो लोकाञ्चरव्यापिता
मेघानां जलहानिरेव महती शस्यस्य नाशो द्रुतम् ।
भूपालाः वसुसाभिपालनपरिव्यग्राः सदा निर्जिताः
सर्पश्वापदवेष्टिता च जनता लोकाः विनाशकुलाः॥

यदि संवत्सर का मन्त्री सूर्य हो तो बहुत ज्यादा धन की हानि होती है। जनता ज्वरभय, वर्षा की कमी एवं अधिक मात्रा में धान्यादि के विनाश से आक्रांत और दुःखी रहती है।निर्जित नृपवर्ग पृथिवी पालन में व्यग्र अर्थात् संलग्न रहता है। जनता सर्पादि हिंसक प्राणियों के आतंक, विविध दुर्घटनाओं के कारण व्याकुल, दुःखी एवं परेशान रहती है।

सूर्ये मन्त्रिगते देवि पीडा भवति दारुणा ।
प्रचुरं धनधान्यानि विप्रपीडा महद्भयम् ॥
रसो महर्घतां याति शिरोवर्तिस्तथैव च ।
देवार्चनमकुर्वन्ति अल्पशस्या च मेदिनी ॥

यदि संवत्सर का मन्त्री सूर्य हो तो प्रजा को अत्यधिक पीड़ा एवं कष्ट की प्राप्ति होती है तथा धन-धान्यों का प्राचुर्य बना रहता है। ब्राह्मण संज्ञक अर्थात् सत्कर्मों में संलग्न जनता पीड़ित एवं बहुत ज्यादा भय युक्त रहती है। इसके अतिरिक्त जनता को रस पदार्थों के मूल्यों में वृद्धि, देवार्चन में अनास्था तथा पृथ्वी पर धान्यों के कम उत्पादन आदि अशुभ फलों की प्राप्ति होती है

सस्येश बुध का फल -

जलधरा जलराशिमुचो भृशं सुखसमृद्धियुतं निरुपद्रवम् ।
द्विजगणः स्तुतिपाठकरः सदा प्रथमसस्यपतौ सति बोधने ॥

यदि वर्ष का सस्येश बुध हो तो देश में मेघों द्वारा अधिक वर्षा होती है। जनता सुखी एवं समृद्ध तथा उपद्रव विहीन रहती है ।द्विज लोग शान्ति पूर्वक हमेशा पूजा -पाठ में संलग्न रहते हैं ।

धान्येश चन्द्र का फल-

चन्द्रे धान्यधिपे जाते तोयपूर्णा वसुन्धरा।
वर्द्धन्ते सर्वसस्यानि राजते विविधोत्सवैः ॥

यदि धान्येश चन्द्र हो तो समस्त वसुन्धरा जल से परिपूर्ण रहती है। सभी धान्यों, फसलों,सस्यों में वृद्धि होती है तथा राष्ट्रीय एवं वैश्विक-स्तर पर विविध उत्सवों का सफल आयोजन किया जाता है।

मेघेश सूर्य का फल -

रवौ मेघाधिपे जाते स्वल्पतोयप्रदा घनाः ।
स्वल्पं धान्यं भवेल्लोके भयं च भूतले सदा ॥

यदि मेघेश सूर्य हो तो बादल कम वर्षा करने वाले होते हैं। पृथ्वी पर धान्य-फसलों का पृथ्वी पर कम उत्पादन होने से जनता भयाक्रांत रहती है।

रसेश शुक्र का फल -

भृगुसुते रसनायकतां गते जनपदा जलतोषितमानसाः ।
सुखसुभिक्षप्रमोदवती धरा धरणिपा नरपालनतत्पराः।

यदि संवत्सर में रसेश शुक्र हो तो जनपदों में रहने वाली जनता पर्याप्त वृष्टि होने से मानसिक रूप से संतुष्ट एवं प्रसन्न रहती है। पृथ्वी पर समस्त प्रजा धन -धान्यों से सम्पन्न,सुखी और प्रसन्न रहती है तथा राजा लोग प्रजा के पालन में तत्पर रहते हैं

नीरसेश बुध का फल -

चित्रवस्त्रादिकं चौव शंखचन्दनपूर्वकम् ।
अर्घवृद्धिः प्रजायेत नीरसेशो बुधो यदि ॥

संवत्सर में यदि नीरसेश बुध हो तो चित्र, वस्त्र, चन्दन, शंख आदि पदार्थों के मूल्यों में वृद्धि होती है।

फलेश शनि का फल-

यदि शनि फलपः कलहो मवेज्जनितपुष्पगणास्तरवः सदा।
द्विजभयं नरतस्करजं तदा जनपदा जनराशिसमाकुला॥

फलेश शनि हो तो जनता में फल, पुष्प तथा वृक्षों आदि के लिए परस्पर लड़ाई -झगड़े होते हैं। मनुष्यों तथा चोरों के कारण द्विजाति को कष्ट एवं भय होता है। जनपदों में जनसमूह व्याकुल और परेशान रहता है।

धनेश मंगल का फल -

असित मौल्यकरो धरणीसुतः शरदि ताम्रकरस्तुषधान्यहृत् ।
सकलदेशगताश्चलिता नरा नरपतिर्जनशोकविधायकः ॥

यदि धनेश मंगल हो तो काले पदार्थों के मूल्यों में वृद्धि होती है। शरद् ऋतु में सूखे तथा भूसी युक्त अन्नों का विनाश होता है।सभी देशों के लोगों में अशान्ति तथा शासक लोग जनता को कष्ट, पीड़ा देने वाले होते हैं।

दुर्गेश शनि का फल -

रविसुते गढपालिनि विग्रहो सकलदेशगताश्चलिता जनाः।
विविधवैरिविशेषितनागराः कृषिधनं न लभेद्भुवि कश्चन॥

यदि दुर्गेश शनि हो तो सभी देशों के लोगों में विग्रह तथा व्यग्रता का भाव बना रहता है। नागरिकों में विविध वैर भाव उत्पन्न होता है। पृथ्वी के कुछ भागों पर कृषि -धान्यों का अभाव बना रहता है।

कार्तिक नामक वर्ष का फल -

शकटानलोपजीवकगोपीडा व्याधिशस्त्रकोपश्च ।
वृद्धिस्तु रक्तपीतककुसुमानां कार्तिके वर्षे ॥

कार्तिक नामक वर्ष में गाड़ी और अग्नि से आजीविका चलाने वाले (लोहार,सोनार आदि) तथा गायों को पीड़ा होती है। जनता क्षुद्रों , रोगों और शस्त्रों के भय से प्रचुर आतंकित और भयभीत रहती है तथा पर्याप्त वृष्टि होती है। कार्तिक नामक वर्ष में धरा नाना विध फूलों की सुन्दर फसलों से शोभायमान और सुगन्धित होती है अर्थात् विशेष रूप से पृथ्वी पर लाल और पीले फूलों के उत्पादन की वृद्धि होती है।

गर्ग-

कार्तिकः प्रचुरातंकः क्षुच्छस्त्राग्निभयप्रदः।
गोशाकटिकपीडां च करोत्येवमवृष्टिदः॥

कार्तिक नामक वर्ष (कृतिका, रोहिणी) में रथ, अग्नि तथा गायों से आजीविका चलाने वालों को पीड़ा होती है।भूख, शस्त्र और अग्नि का

भय जनवर्ग को होता है तथा लाल और पीले रंग के फूलों की वृद्धि होती है अर्थात् पुष्पों से आजीविका चलाने वाले सुखी रहते हैं।

पीडास्यात्कार्तिकेवर्षे रथगोऽग्न्युपजीविनाम् ।

क्षुच्छशस्त्राग्निभयंवृद्धिः पुष्पकौसुम्भजीविनाम् ॥

कार्तिक नामक वर्ष (कृतिका, रोहिणी) में रथ, अग्नि तथा गायों के पालन से आजीविका चलाने वाले लोगों को कष्ट होता है। जनवर्ग में भूख, शस्त्र और अग्नि का भय बना रहता है। पुष्पों से जीविका चलाने वाले सुखी एवं प्रसन्न रहते हैं।

पापबुद्धिः रतालोका भवन्ति कार्तिके सदा।

देवता नैव मन्यन्ते राज्यं च तस्करैहृतम॥

कार्तिक नामक वर्ष में सभी लोग पापबुद्धि होने के कारण पापकार्यों में संलग्न रहते हैं। देवताओं को नहीं मानते हैं अर्थात् प्रजा में नास्तिकता का भाव प्रबल रहता है। राज्यों में तस्करों की बहुलता होने से जनता चोरी की घटनाओं से त्रस्त रहेगी

रोहिणी वास-

विक्रम संवत् २०८२ में मेष संक्रान्ति का प्रवेश स्वाति नक्षत्र में होने से रोहिणी वास सन्धि में तथा अन्य मत से तट पर रहेगा।

रोहिणी वास का फल -

खण्डवृष्टिश्च सन्धिषु/ सन्धि भे खण्डवृष्टिः स्याद्/ सन्धि गतादलवृष्टिदा।

रोहिणी वास सन्धि में होने पर सम्पूर्ण संवत् खण्ड वृष्टि अर्थात् असमान वर्षा होती है। परिणामस्वरूप कुछ क्षेत्रों, प्रदेशों में अत्यधिक वर्षा के कारण बाढ़,भूस्खलन,बादल -विस्फोट और विद्युत् पात आदि से भाई जन,धन एवं फसलों आदि की हानि तथा कुछ स्थानों में बहुत कम वर्षा तथा सूखा पड़ने से सभी अनाजों ,फसलों, धान्यों एवं जल की कमी तथा अनाजों के मूल्यों में वृद्धि के कारण प्रजा दुःखी रहेगी तथा कुछ स्थलों विशेष पर खण्ड वृष्टि होने से सभी धान्यों का पर्याप्त उत्पादन होता है। यथा-

सन्धिसंस्थं यदाब्राह्मभंजायते । खण्डवृष्टिस्तदासर्वधान्याप्तयः।

अन्य मत -

तटे वृष्टिः सुशोभना। सुवृष्टिस्तटभे सति।

तटगता यदि सा शुभवृष्टिदा भवति।

नवीन संवत्सर २०८२ में तट पर रोहिणी वास होने से उत्तम, उपयोगी एवं अच्छी वर्षा होने के योग बनते हैं। फलस्वरूप अन्न -धन की वृद्धि होती है। यथा -

यदिविधिधिष्ण्यपतततिटस्थम् ।

शुभजलवृष्टिर्धनकणवृद्धिः ॥

संवत् (समय) का वास -

विक्रम संवत् २०८२ में रोहिणी वास सन्धि में होने से संवत् का वास वैश्य (वणिज) के घर में अन्य मत से रोहिणी का वास तट पर होने से संवत् का वास धोबी (रजक) के घर में रहेगा।

सम्वत् (समय) वास का फल -

विक्रम संवत् २०८२ का वास वैश्य (वणिज्) के घर में होने से सर्वत्र उपयोगी एवं अनुकूल वर्षा के अभाव तथा विपरीत जलवायु के कारण सभी प्रकार के खाद्यान्नों, फसलों की कमी एवं मूल्यों में वृद्धि होने से व्यावसायिक लोग लाभान्वित होते हैं। यथा -

सर्वधान्यं महर्घं स्याद्वणिग्वेश्मनि संस्थिते॥

अन्य मत से नव विक्रम संवत २०८२ में समय का वास धोबी के घर में होने से बावली, कुएं, तालाब, नदी, नाले और वन आदि जल से परिपूर्ण रहते हैं। यथा -

वापीकूपतडागानि नदीनदवनानि च ।
जलपूर्णानि दृश्यते वासो रजकवेश्मनि ॥

संवत् का वाहन -

संवत् २०८२ का राजा सूर्य होने के कारण इस संवत्सर का वाहन हाथी (गज) होगा। यथा - **रविशुक्रे गजारूढे।**

अन्य कुछ विद्वान आचार्यों के मत से संवत् का वाहन अश्व होगा।

संवत् वाहन का फल -

जिस संवत् का वाहन हाथी होता है उस संवत् में सुभिक्ष तथा प्रजा को सुख की प्राप्ति होती है तथा वर्षाकाल में अच्छी वर्षा होने से समस्त प्राणी प्रसन्न और सुखी रहते हैं। यथा -

गजारुढो वत्सरश्च सुभिक्षं च प्रजासुखम् ।
वर्षाकाले सुवृष्टिश्च सुखिनः सर्वजन्तवः ॥

सुबुध्नादि द्वादश नागों में नाग विचार -

विक्रम संवत् २०८२ में सुबुध्नादि द्वादश नागों में से वासुकी नामक नाग होता है।

वासुकी नाग का फल -

जिस संवत् में वासुकी नामक नाग का उद्भव होता है उस संवत्सर में फसलों के अच्छे उत्पादन योग्य उत्तम वृष्टि होती है।

वासुकी सस्यकर्ता च बहुवृष्टिकरः शुभः ।

अर्थात् प्रभूत मात्रा में खाद्यान्नों एवं फसलों योग्य अच्छी वर्षा होने से जनता के लिए यह संवत्सर शुभ सिद्ध होता है।

उदेति यत्र वत्सरेसवासुकिर्भुजंगमः ।
प्रभूतधान्यदायकः सुवृष्टिकारकस्तथा॥

चतुर्मेघ विचार एवं फल -

संवर्त्तो बहुतोयदः/संवर्त्तो जलपूरितः

सिद्धार्थ नामक नव विक्रम संवत् २०८२ में आवर्तकादि चतुर्मेघों में से संवर्त्त नामक मेघ होने से सम्पूर्ण वर्ष पर्यन्त धान्यों एवं फसलों के अच्छे उत्पादन में वृद्धि प्रदायक अतिवृष्टि होती है तथा पृथ्वी जल से परिपूर्ण एवं आकाश बादलों से घिरा हुआ रहता है।यथा -

संवर्त्तके महावृष्टिः शस्यवृद्धिकरी शुभा।
जलपूर्णा मही नित्यं जलदैर्वेष्टितं नभः ॥

नवमेघ विचार एवं फल -

संवत् २०८२ में नील नामक मेघ होने से शीघ्र वर्षा होती है। यथा-

नीलः क्षिप्रं तु वर्षति।

यदि संवत्सर में नील नामक मेघ हो तो गायें अच्छी मात्रा में दूध देती हैं। अच्छी वर्षा होने से रूई,कपास आदि की फसलों का बहुत ज्यादा उत्पादन होता है तथा समस्त मनुष्य सन्तुष्ट रहते हैं। यथा -

सत्पयोदिशति गोकुलपूर्णा वस्त्रताखिलमहीपरिपूर्णा ।
नीलनाम्नि जलदे जलवृष्टिर्जायते सकल मानवतुष्टिः ।

विक्रम शुभ सम्वत् २०८२ की वर्ष प्रवेशकालीन एवं जगत्-लग्न कुण्डलियाँ-

नववर्षप्रवेश-कुण्डली

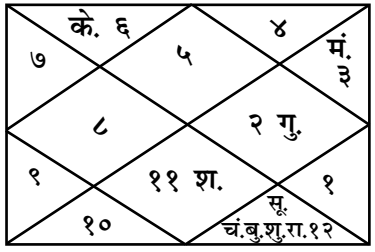

२९ मार्च, सन् २०२५ ई0,
१६ घं. २८ मि. (भा.मा.स.)

जगल्लग्न-कुण्डली

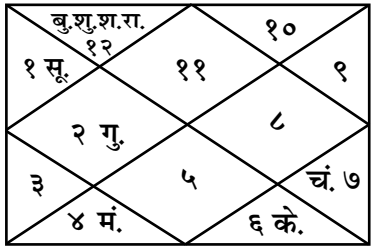

१३ अप्रैल, सन् २०२५ ई0,
२७ घं. २१ मि. (भा.मा.स.)

गत कालयुक्त नामक विक्रम संवत् २०८१ की समाप्ति के अनन्तर सिद्धार्थ नामक विक्रम संवत् २०८२ का प्रवेश २९ मार्च, २०२५ ई. शनिवार तदनुसार चैत्र कृष्णपक्ष अमावस्या अर्थात् चैत्र मास १६ प्रविष्टे को सायं ०४ घं. २८ मि. पर उत्तराभाद्रपद नक्षत्र, ब्रह्म नामक योग, मीन राशिस्थ चन्द्र के समय स्थिर संज्ञक सिंह लग्न में होगा, किन्तु वासान्तिक नवरात्रों का शुभारम्भ अग्रिम दिन ३० मार्च, २०२६ ई. को प्रातः सूर्योदय काल से होगा। इस नव सिद्धार्थ नामक संवत्सर में वासान्तिक (चैत्र) नवरात्र ३० मार्च, २०२५ ई. से ०६ अप्रैल, २०२५ ई. तक रहेंगे। शास्त्रानुसार इस सिद्धार्थ नामक संवत्सर में श्रीराम नवमी का पर्व ०६ अप्रैल, २०२५ ई. रविवार को मनाया जाएगा।

नवरात्र के प्रथम दिन अर्थात् नवसंवत्सर चैत्र शुक्ल पक्ष प्रतिपदा के दिन किसी योग्य विद्वान द्वारा विधिपूर्वक घटस्थापन, सम्वत्सर पूजन एवं श्री गणेश, विष्णु, शिव और देवी दुर्गा पूजन करने का शास्त्रों में विशेष महात्म्य प्रतिपादित है। इस दिन सम्पूर्ण अग्रिम नवीन सम्वत्सर के मंगलमय यापन हेतु विद्वान् ब्राह्मणों का विधिपूर्वक पूजन एवं सम्मान कर, उन्हें विविध प्रकार के दानों से सन्तुष्ट एवं प्रसन्न कर, नानाविध पक्वान्नों, फलों और मिठाईयों आदि का भोजन करवाकर उनके मुखारविन्द से परिवार के समस्त सदस्यों को संवत् का नाम, संवत् का वास, राजा और मन्त्री आदि का फल श्रवण करने का विधान भी शास्त्रोल्लिखित है, जो बुद्धिमान व्यक्ति चैत्र शुक्ल पक्ष प्रतिपदा को सम्वत्सर का पवित्र फल सुनता है वह धनाढ्य और बहुत अन्न वाला होता है तथा वर्ष भर के लिए उसके शरीर की समस्त पीड़ाएँ (व्याधियाँ) नष्ट हो जाती हैं। शाके को सुनने से मनुष्य को पुण्य प्राप्त होता है, सम्वत्सर से सम्पत्तिवान् होता है, संवत् के राजा का फल सुनने से राजकुल में विजय होती है, मन्त्री का फल बुद्धि देता है, धनाधिप से धान्य, रसाधिप से रस तथा सस्येश से समस्त सुख मिलते हैं। अतः सिद्धिदायक सम्वत्सर के फल को अवश्य सुनना चाहिए।

नव विक्रम संवत् २०८२ में ग्रहों की आकाशीय परिषद् के दस पदाधिकारों में से अतिविशिष्ट महत्त्वपूर्ण राजा,मन्त्री तथा मेघेश के पदों के नेतृत्व का अधिकार प्रचण्ड, क्रूर, तेजस्वी, अग्नि तत्त्व प्रधान भुवन भास्कर जगत् के प्राणभूत राजा सूर्य ग्रह को प्राप्त हैं। इसके अतिरिक्त नव संवत्सर में फलेश एवं दुर्गेश ०२ महत्त्वपूर्ण पदों के नेतृत्व का अधिकार नैसर्गिक रूप से पापी एवं इस वर्ष के राजा, मन्त्री तथा मेघेश सूर्य के परम शत्रु शनि को प्राप्त है तथा धनेश के पद का अधिकार सेनापति भौम ग्रह को, सस्येश (फसलों) और नीरसेश (धातुओं) पदों के नेतृत्व का अधिकार सौम्य ग्रह बुध को रसेश पद के नेतृत्व का अधिकार शुक्र ग्रह को प्राप्त हुआ है।

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट है कि नव विक्रम संवत् २०८२ में ग्रह परिषद् के दस पदाधिकारों में से राजा और मन्त्री सहित मुख्य ०६ पदों के नेतृत्व का अधिकार क्रूर ग्रहों को तथा ०४ मुख्य पदों के नेतृत्व का अधिकार सौम्य ग्रहों को प्राप्त हुआ है। सिद्धार्थ नामक वर्तमान संवत्सर में ग्रह परिषद् के गुरु सबसे शुभ बृहस्पति ग्रह को किसी भी पद के नेतृत्व का अधिकार प्राप्त नहीं हुआ है।

नव सिद्धार्थ नामक विक्रम संवत् २०८२ में राजा, मन्त्री तथा मेघेश (वर्षाधिपति) जैसे ०३ महत्वपूर्ण पदों के नेतृत्व का अधिकार एक ही ग्रह ग्रहों के राजा सूर्य को प्राप्त होने से समाज में क्रोध, अहम, गुस्सा, उत्तेजना,उग्रता एवं आवेश के कारण अधिकतम उपद्रव एवं हिंसक घटनाएं घटित होंगी। राष्ट्र में कट्टरवाद, साम्प्रदायिक दंगे, लड़ाई-झगड़े एवं उपद्रव आदि घटनाएं अधिक मात्रा में घटित होंगी। जनता राज-भय, धार्मिक कट्टरवाद, साम्प्रदायिक दंगे, उपद्रव, मंहगाई आदि से त्रस्त एवं ग्रस्त रहेगी। राजा और मन्त्री सूर्य होने के कारण सरकार के विविध कठोर व जटिल नियमों के चलते सामान्य जनता में भय एवं असन्तोष का वातावरण बना रहेगा।राष्ट्र के विभिन्न राजनेताओं और राजनीतिक दलों में परस्पर टकराव, विरोध उत्पन्न होगा तथा कहीं-कहीं गठबंधनों का टूटना और नए गठबंधनों का बनना आदि प्रक्रियाएं चलती रहेंगी। कठोर सरकारी नीतियों एवं गतिविधियों,चोर-लुटेरों, गम्भीर रोगों, दंगों, आवश्यक वस्तुओं के मूल्यों में वृद्धि तथा राजदण्ड भय आदि के कारण प्रजा में भय, असन्तोष, विघटन, अविश्वास, विक्षोभ, आन्दोलन और बदले की भावनाएं जागृत होंगी।

फलेश एवं दुर्गेश ०२ महत्वपूर्ण पदों के नेतृत्व का अधिकार नैसर्गिक पापी शनि ग्रह को प्राप्त होने के कारण विषम एवं अनुपयोगी वर्षा होने, से कहीं अत्यधिक वर्षा से बाढ़ादि का प्रकोप एवं कहीं अल्प वर्षा के कारण कृषि, धान्यादि फसलों एवं फूलों आदि के उत्पादन में कमी रहेगी। प्राकृतिक प्रकोपों,आतंकी घटनाओं या युद्धादि घटनाओं के कारण लोग किसी विशेष स्थान से दूसरे स्थान पर पलायन करने के लिए विवश हो जाएंगे । सेनापति (दुर्गेश) का पद शनि के पास होने से इस वर्ष मुस्लिम एवं एशियाई देशों में आन्तरिक दंगे, लड़ाई-झगड़े, मार-पीट, आन्दोलन, धरने, टकराव, तोड़-फोड़ व उपद्रव अधिक होंगे। सिद्धार्थ संवत्सर में धनेश का पद क्रूर एवं उग्र ग्रह भौम को प्राप्त होने से इस वर्ष आर्थिक क्षेत्रों में अस्थिरता बनी रहेगी। सामान्यतया इस वर्ष सरकारी तन्त्र ,नीतियों एवं योजनाओं से अधिक अमीर लोग एवं अधिक गरीब लोग लाभान्वित होंगे तथा मध्यमवर्गीय लोग सरकारी तन्त्र से भयग्रस्त एवं निराश होंगे अर्थात् साधारण जनता एवं व्यावसायिक लोग सरकारी कठोर एवं पेचीदा नीतियों के बवंडर में फंसकर पीड़ित और परेशान हो जाएंगे। प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से सरकार द्वारा लगाए गए विविध करों (टैक्सों) से आम जनता परेशान और दु:खी रहेगी।

नव सम्वत्सर में सस्येश और नीरसेश महत्वपूर्ण पदों के नेतृत्व का अधिकार सौम्य ग्रह बुध को प्राप्त होने से इस वर्ष अध्ययन,अध्यापन,उच्च शिक्षा विशेषकर तकनीकी, प्रशासनिक, प्रबन्धन एवं व्यावसायिक शिक्षा आदि विभिन्न क्षेत्रों में लोगों का रुझान बढ़ेगा तथा सोना, चांदी, तांबा, पीतल, कांसा आदि विभिन्न धातुओं एवं हीरा, पन्ना, पुखराज, माणिक, मूंगा एवं मोती आदि रत्नों के मूल्यों में वृद्धि - ह्रास के बावजूद सामान्य रूप से तेजी बनी रहेगी।

नव सिद्धार्थ नामक वत्सर में धान्येश पद का अधिकार सौम्य ग्रह चन्द्र को प्राप्त होने से इस वर्ष अनुकूल एवं पर्याप्त मात्रा में वर्षा होने से गेहूं,चना, चावल, ईख और कपास आदि फसलों का उत्पादन अधिक मात्रा में होगा। जनसंख्या में विशेष वृद्धि होगी तथा शंख, सीप, कौड़ी, मोती तथा विभिन्न द्रव्यों के आयात - निर्यात आदि व्यापार में संलग्न लोग लाभान्वित होंगे।रसेश शुक्र के कारण विभिन्न सौन्दर्य प्रसाधनों तथा विभिन्न उपभोग्य वस्तुओं के उत्पादन में विशेष वृद्धि होगी। भूमि,भवन, वाहन,महलों एवं धातुओं, आभूषणों,वस्त्रों के निर्माण तथा कल-पुर्जे , कृषि,धान्यों, फसलों, अन्नों,फलों, फूलों और अनाज आदि विभिन्न क्षेत्रों से सम्बन्धित व्यापारी जनसमूह लाभान्वित होगा।

धान्येश चन्द्र एवं सस्येश बुध होने से इस वर्ष जनता उदर, स्नायु, वात,पित,कफ, रक्तचाप, मधुमेह एवं मनोरोग आदि विभिन्न गम्भीर एवं जटिल शारीरिक एवं मानसिक साध्य एवं असाध्य रोगों से त्रस्त एवं ग्रस्त

रहेगी। छोटे व्यापारी लोग विभिन्न आर्थिक उलझनों,सरकारी नियमों व नियन्त्रणों के चलते परेशान एवं निराश रहेंगे अर्थात् इस वर्ष धनेश मंगल के होने से आर्थिक क्षेत्रों में असन्तुलन,असमंजस,भय और अस्थिरता बनी रहेगी। विविध सरकारी योजनाओं से अधिक गरीब एवं अमीर लोग लाभ में रहेंगे, किन्तु मध्यमवर्गीय प्रजा सरकारी तन्त्र से भयभीत एवं निराश रहेगी तथा सरकार द्वारा प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से लगाए गए विविध करों की अधिकता सामान्य जनता कोनव सम्वत्सर में सस्येश और नीरसेश २ महत्वपूर्ण पदों के नेतृत्व का अधिकार सौम्य ग्रह बुध को प्राप्त होने से इस वर्ष अध्ययन,अध्यापन,उच्च शिक्षा विशेषकर तकनीकी, प्रशासनिक, प्रबन्धन एवं व्यावसायिक शिक्षा आदि विभिन्न क्षेत्रों में लोगों का रुझान बढ़ेगा तथा सोना, चांदी, तांबा,पीतल,कांसा आदि विभिन्न धातुओं एवं हीरा, पन्ना, पुखराज, माणिक, मूंगा एवं मोती आदि रत्नों के मूल्यों में वृद्धि - ह्रास के बावजूद सामान्य रूप से तेजी बनी रहेगी।

नव सिद्धार्थ नामक वत्सर में धान्येश पद का अधिकार सौम्य ग्रह चन्द्र को प्राप्त होने से इस वर्ष अनुकूल एवं पर्याप्त मात्रा में वर्षा होने से गेहूं,चना, चावल,ईख और कपास आदि फसलों का उत्पादन अधिक मात्रा में होगा। जनसंख्या में विशेष वृद्धि होगी तथा शंख, सीप, कौड़ी, मोती तथा विभिन्न द्रव्यों के आयात - निर्यात आदि व्यापार में संलग्न लोग लाभान्वित होंगे।रसेश शुक्र के कारण विभिन्न सौन्दर्य प्रसाधनों तथा विभिन्न उपभोग्य वस्तुओं के उत्पादन में विशेष वृद्धि होगी। भूमि,भवन, वाहन,महलों एवं धातुओं, आभूषणों,वस्त्रों के निर्माण तथा कल-पुर्जे , कृषि,धान्यों, फसलों, अन्नों,फलों, फूलों और अनाज आदि विभिन्न क्षेत्रों से सम्बन्धित व्यापारी जनसमूह लाभान्वित होगा।

धान्येश चन्द्र एवं सस्येश बुध होने से इस वर्ष जनता उदर, स्नायु, वात, पित, कफ, रक्तचाप, मधुमेह एवं मनोरोग आदि विभिन्न गम्भीर एवं जटिल शारीरिक एवं मानसिक साध्य एवं असाध्य रोगों से त्रस्त एवं ग्रस्त रहेगी। छोटे व्यापारी लोग विभिन्न आर्थिक उलझनों,सरकारी नियमों व नियन्त्रणों के चलते परेशान एवं निराश रहेंगे अर्थात् इस वर्ष धनेश मंगल के होने से रहेगी।देश की आम जनता एवं सामान्य व्यापारी लोग सरकार की कठोर नीतियों व जटिल नियमों के चलते परेशान व दुखी रहेगी। सिद्धार्थ नामक संवत्सर में मन्त्री पद सूर्य को प्राप्त होने से सरकार की कठोर नीतियों/गतिविधियों के कारण प्रजा में भय एवं असन्तोष का वातावरण बना रहेगा परन्तु सिद्धार्थी नामक संवत्सर के प्रभावस्वरूप सामान्य जनता ज्ञान, वैराग्य आदि विविध विषयों में विशेष रूप से रूचि एवं जिज्ञासा रखेगी तथा देश में धार्मिक आयोजनों को बाहुल्य रूप से सुसम्पन्न किया जाएगा। प्रतिकूल जल-वायु के वावजूद फसलों का अच्छी मात्रा में उत्पादन होगा किन्तु विभिन्न राष्ट्रों के मध्य निरन्तर युद्धजन्य स्थितियां बनी रहेंगी। भारत में विभिन्न राजनीतिक दलों द्वारा अनर्गल , राष्ट्र विरोधी एवं विभाजनकारी भाषणों तथा एक -दूसरे पर आरोप -प्रत्यारोप द्वारा विषाक्त राजनैतिक वातावरण बना रहेगा।

नव विक्रम सम्वत्सर वर्ष २०८२ का प्रवेश चौत्र अमावस्या की समाप्ति २९ मार्च, २०२५ ई. को सायं ०४ बजकर २८ मिनट पर उत्तराभाद्रपद नक्षत्र,ब्रह्म योग,मीन राशिस्थ चन्द्र के समय स्थिर संज्ञक सिंह लग्न में होगा। नव वर्ष प्रवेश कुण्डली में मित्र राशिस्थ लग्नेश सूर्य अष्टम भाव में चन्द्र , उच्च राशिस्थ शुक्र, नीच राशिस्थ बुध तथा राहु के साथ बैठ कर पंचग्रही योग बना रहा है, किन्तु गोचर में इसी रात्रि को शनि ग्रह के मीन राशि में प्रवेश करते ही षड़ग्रही योग बन जाएगा। चन्द्र ग्रह शीघ्र गति के कारण अगले ही दिन अर्थात् ३० मार्च, २०२५ को मेष राशि में प्रवेश करने के वावजूद भी १३ अप्रैल, २०२५ तक मीन राशिस्थ लग्नेश सूर्य के साथ उच्चस्थ शुक्र, नीचस्थ बुध, शनि और राहु की स्थिति होने से अष्टम भाव में पंचग्रही योग बना रहेगा। नूतन वर्ष प्रवेश के समय तथा वर्ष प्रवेश के दिन उपरोक्त ग्रहस्थिति राष्ट्रीय और वैश्विक-पटल पर

तनाव पूर्ण एवं असमंजसपूर्ण वातावरण का संकेत दे रही है। विश्व के शक्तिशाली राष्ट्रों (अमरीका, रूस, फ्रांस, जर्मनी, भारत आदि) के समक्ष इस्लामिक कट्टरवाद,आतंकी संगठनों, हिजबुल हूती एवं राष्ट्र विद्रोहियों का बढ़ता प्रभाव मुख्य मुद्दा बन कर उद्वेलित करता रहेगा। अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का स्वामी शुक्र उच्च स्थिति में है, किन्तु अष्टम भाव में पंचग्रही तदुपरान्त षड़ग्रही योग बनने से भारत सहित विश्व के अधिकांश देशों की शक्ति एवं ध्यान प्राकृतिक आपदाओं एवं अघोषित युद्धों से निबटने में लगेगी। विविध देश सम्भावित युद्ध को रोकने हेतु भारत के साथ मैत्री और संवाद के लिए उत्सुक रहेंगे।दशम भाव में गुरु ग्रह की शत्रु राशिगत स्थिति होने से विश्व में विषाक्त गुटबाजी एवं युद्धमय वातावरण के बीच वैश्विक-राजनैतिक पटल पर भारत देश की प्रतिष्ठा बढ़ेगी। विश्व के प्रमुख राष्ट्र तथा युद्धरत राष्ट्र भारत से मैत्री बढ़ाने और संवाद करने के लिए उत्सुक रहेंगे। विश्व शान्ति एवं विकास के लिए किए गए भारत देश के प्रयासों की वैश्विक-पटल पर सार्वभौमिक प्रशंसा होगी। भारत के पड़ोसी देशों में अशान्ति, अराजकता तथा अस्थिरता के कारण भारत की पड़ोसी देशों के साथ विदेश नीति में असमंजस की स्थिति बनी रहेगी अर्थात् कभी शान्ति हेतु संवाद, वार्ताएं और कभी आतंकी घटनाएं और कभी सेना द्वारा आक्रमण आदि घटनाएं परिस्थितियों को तनावपूर्ण एवं युद्धजन्य बना देंगी।

सिंहलग्ने दक्षिणस्यां दंष्ट्राभयमुदीर्यते।
धान्ये समर्घतामासषट्कंयावद्धनंमहत्॥
पश्चिमायां धातुवस्तुफलादीनां महर्घता।
उत्तरस्यां महावृष्टिः सुखं राज्ये प्रजासु च॥

अर्थात् नव सिद्धार्थ नामक संवत्सर का सिंह लग्न में वर्ष प्रवेश होने से दक्षिण दिशा में बाढ़ादि प्राकृतिक प्रकोपों से जन-धन अर्थात् धान्यादि फसलों की हानि होगी। पश्चिम भागों में सभी प्रकार की धातुएं, हीरे जवाहरात एवं फल महंगे होंगे तथा पूर्व भाग में कृषि आदि का उत्पादन कम होगा। उत्तरी क्षेत्रों में अच्छी वर्षा होने से जनता समृद्ध और सुखी रहेगी। राष्ट्र के मध्य क्षेत्रों के राजनेताओं के मध्य विग्रह की स्थितियां बनी रहेंगी - **मध्यदेशे राजयुद्धं मासपंचकमुद्धृतम्॥**

कुछ देशों एवं प्रदेशों में छत्रभंग तथा जन आन्दोलन की स्थितियां वर्ष भर बनी रहेंगी।

नव सिद्धार्थ संवत् २०८२ में में वर्ष प्रवेश एवं जगत् लग्न दोनों कुण्डलियों में मीन राशिस्थ शनि ग्रह होने से सामान्य रूप से इस वर्ष सर्वत्र दुर्भिक्ष की स्थिति रहेगी। जनता दु:खी रहेगी तथा पशुओं की हानि होगी। महंगाई तथा अन्न और फसलों की हानि होगी। यथा -

शनौ गते मीनराशौ दुर्भिक्षं च समं भवेत् ।
मानवानां भवेत्पीडा पशूनां चौव नाशनम् ।
महर्घं जायते सस्यं धान्यानां च क्षयं भवेत् ॥

नव संवत्सर के आरम्भ से १३ मई, २०२५ तक गुरु ग्रह की वृष राशि में स्थिति होने से अल्पवृष्टि, जनता को कष्ट तथा विग्रह आदि फलों की प्राप्ति होती है। यथा -

वृषे गुरौ स्वल्पवृष्टिश्च प्रजापीडा च विग्रहः ॥

किन्तु संवत् २०८२ में १४ मई,२०२५ से १७ अक्टूबर,२०२५ तक तथा पुनः ०५ दिसम्बर,२०२५ से संवतान्त अर्थात् १९ मार्च, २०२६ तक गुरु ग्रह की मिथुन राशि में तथा १८ अक्टूबर ,२०२५ से ०५ दिसम्बर, २०२५ तक कर्क राशि में स्थिति रहेगी। मिथुन एवं कर्क राशि में गुरु ग्रह की स्थिति के समय जनता को अनावृष्टि, प्रजा की हानि, दुर्भिक्ष-अकाल, देशभंग, महंगाई आदि अशुभ फलों की प्राप्ति होती है। यथा -

अनावृष्टिः प्रजानाशो रौरवं मिथुने गुरौ।
कर्के गुरावनावृष्टिर्देशभंगो महर्घता

जगत् लग्न कुण्डली के आधार पर फल -

सिद्धार्थी नामक विक्रम संवत् २०८२ में जगत् लग्न कुण्डली में स्थिर संज्ञक कुम्भ लग्न का उदय हुआ है।वर्ष- लग्नेश शनि की द्वितीय भाव में बुध, शुक्र और राहु के साथ युति चतुर्ग्रही योग बना रही है। युद्ध प्रिय क्रूर ग्रह भौम नीचराशिगत छठे भाव में स्थित होकर शत्रु दृष्टि से द्वादश भाव और लग्न को देख रहा है। ग्रहस्थिति के अनुसार इस वर्ष विश्व में इस्लामिक कट्टरवाद, उग्रवादी संगठन,हमास, हूती, हिजबुल,आई. एस. आदि संगठनों से सम्बद्ध उग्रवाद, आतंकवाद विचारधारा के संपोषक राष्ट्र व अन्य उग्रवादी संगठन वर्तमान वैश्विक व्यवस्था को चुनौती देते रहेंगे। विषाक्त भौगोलिक एवं राजनीतिक वातावरण पूरे विश्व को युद्ध हेतु प्रेरित एवं उत्तेजित करेगा फलस्वरूप अमेरिका, भारत, जर्मनी, फ्रांस, इजराइल, इटली, ब्रिटेन आदि विभिन्न विकसित राष्ट्र इसका राजनीतिक एवं सैन्य प्रतिकार करेंगे। किन्तु तथापि आतंकी तत्त्वों के पोषक इस्लामिक कट्टरवाद राष्ट्र विकासशील देशों के सभ्य समाज और मानवता को नीच, विरूद्ध एवं शत्रुघाती दृष्टि के कारण परेशान एवं दुखी करते रहेंगे।

गुरु ग्रह की वृष (ईरान देश की प्रभाव राशि)शत्रु राशिगत स्थिति रहने से विश्व - राजनीति में ईरान देश विश्व-यद्ध का केन्द्र बिन्दु बन सकता है। ईरान राष्ट्र द्वारा अपने सभी प्रोक्सी संगठनों को इजराइल के विरुद्ध उतार देने से किसी भी समय विश्व -युद्ध सम्भावित है। जगत् लग्न कुण्डली के अष्टम भाव में केतु ग्रह की स्थिति तथा उस पर पापी शनि और सौम्य गुरु की पूर्ण दृष्टि के प्रभाववश इस्लामिक उग्रवाद, आतंकवाद एवं कट्टरवाद की साम्प्रदायिक चुनौतियां एक नया आयाम ग्रहण कर लेंगी जिसके प्रतिकार के लिए विकसित एवं विकासशील समृद्ध देशों द्वारा वैश्विक -स्तर पर आवश्यक रणनीति बनाने के प्रयास किए जा सकते हैं। जगत् लग्न कुण्डली के धन भाव में चतुर्ग्रही योग होने से यूरोपीय देशों में मुद्रा अवमूल्यन तथा वैश्विक मांग में कमी के कारण आर्थिक मन्दी का वातावरण बन जाएगा। इसके विपरीत विश्व के अधि कांश देश प्रतिद्वन्दिता एवं एक - दूसरे से आगे बढ़ने की होड़ एवं अपना प्रभुत्व बरकरार रखने के लिए गोपनीय रूप से अपनी सैन्य शक्ति तथा अत्याधुनिक तकनीक से लैस संहारक हथियारों के निर्माण एवं संग्रह में प्रयत्नशील रहेंगे

जगत् लग्न कुण्डली से व्यक्तिगत फलविचार भी किया जाता है। इस सम्बन्ध में कहा गया है कि यदि व्यक्ति के जन्मलग्न या जन्मराशि से जगतलग्न जिस भाव पर आए यदि वह भाव शुभ ग्रह या भावेश से युक्त एवं दृष्ट हो तो उस भाव के फल की वृद्धि होती है तथा पापग्रह की दृष्टि या युति हो तो उस भाव के फल की हानि होती है, किन्तु जिस संवत् में व्यक्ति के जन्मलग्न, जन्मराशि, वर्षलग्न से जगत्-लग्न ८वें या १२वें भावों में होता है, वह संवत् उस व्यक्ति विशेष के लिए शुभ नहीं होता है। इसी प्रकार ग्राम, शहर, प्रान्त, राज्य और देश के शुभाशुभ फल का विचार भी किया जा सकता है।

जन्मलग्न से द्वादश भावों में जगत् लग्न का सामान्य फल -

१. प्रथम भाव में शरीर सुख
२. द्वितीय भाव में धनागम
३. तृतीयभाव में कुटुम्ब-वृद्धि व पारिवारिक सुख
४. चतुर्थ भाव में मित्र-सुख, बन्धुसुख
५. पञ्चम भाव में संतति सुख
६. षष्ठ भाव में शत्रु पराजय
७. सप्तम भाव में स्त्री सुख
८. अष्टम भाव में रोगभय, मृत्युभय
९. नवम भाव में धर्म-कर्म में प्रवृत्ति
१०. दशम भाव में धन, पद व सम्मान प्राप्ति
११. एकादश भाव में लाभ व सुख-साधनों की प्राप्ति

१२. द्वादश भाव में कष्ट व आर्थिक संकट

शनि पाया (पाद) विचार -

शनिदेव के राशि प्रवेश के समय यदि चन्द्रमा १, ६, ११भाव में हो तो स्वर्ण-पाद, यदि २, ५, ९ भाव में हो तो रजत -पाद, यदि ३, ७, १० भाव में हो ताम्र -पाद तथा यदि चन्द्र ४, ८, १२ भाव में हो तो लौह-पाद होता है।

शनि पाया फल विचार -

उपरोक्त पाया विचार के आधार पर नव संवत् २०८२ में मेषादि द्वादश राशियों पर सुवर्णादि पाया निम्न प्रकार से रहेगा। यथा -

१. मेष, सिंह तथा धनु राशियों पर लौह-पाद अशुभ फलदायक रहेगा।
२. मिथुन,कन्या तथा मकर राशियों पर ताम्र का पाया,यह शुभ फलदायक रहेगा।
३. वृष, तुला तथा मीन राशियों पर सुवर्ण -पाद मिश्रित फलदायक रहेगा।
४. कर्क, वृश्चिक तथा कुम्भ राशियों पर रजत-पाद शुभ फलदायक रहेगा

शनि की साढ़ेसाती एवं ढैय्या का फल-

गोचर में जब शनि जिस जातक की जन्मराशि से बारहवीं राशि में प्रवेश करता है तब तत्सम्बन्धी जातक को साढ़ेसाती प्रारम्भ होती है। शनि मध्यमगति से एक राशि में ढाई वर्ष रहता है। वास्तव में जब शनि जातक की राशि पर या उसकी राशि से अग्रिम या पृष्ठस्थ राशियों पर गोचरीय भ्रमण करता है तब जातक पर शनि का शुभ और अशुभ प्रभाव भारी मात्रा में पड़ता है। शनि मध्यममान से एक राशि में अढ़ाई वर्ष रहता है। इस प्रकार जातक की राशि और उसकी राशि से पृष्ठीय तथा अग्रिम निकटस्थ राशियों में शनि स्थिति का प्रभाव अधि कतम साढ़े सात वर्ष तक रहता है। शनि का साढ़ेसात वर्ष तक प्रभाव होने के कारण ही इसे शनि की साढ़ेसाती कहते हैं। संस्कृत में इसे बृहत्-कल्याणी, मराठी में बड़ी पनोति कहते हैं। जन्मराशि से गोचरीय भ्रमण में बारहवां शनि शिर पर, जन्मराशि का शनि हृदय या छाती पर तथा दूसरा शनि पांवों पर आया हुआ कहा जाता है। इन राशियों का शनि अत्यन्त दुष्ट एवं नीच लोगों से नाना प्रकार का कष्ट-पीड़ा एवं क्लेशदायक, पुत्र और पशुओं को पीड़ादायक, वाहनादि की हानि, रोग, मृत्यु, विदेशगमन, धन समृद्धि का विनाश, पति-पत्नी के परस्पर सुख का अभाव, राजभय, बन्धन और अन्यसुखों का अभाव करने वाला होता है।

द्वादशे जन्मगे राशौ द्वितीये च शनैश्चरः ।
सार्धानि सप्तवर्षाणि तदा दुःखैर्युतो भवेत् ॥

शनि ग्रह जब जिस जातक की जन्मराशि से चौथी या आठवीं राशि में गोचरीय भ्रमण से प्रवेश करता है तब तत्सम्बन्धी जातक को शनि की क्रमशः चतुर्थस्थ एवं अष्टमस्थ ढैय्या प्रारम्भ होती है। इस प्रकार की शनि स्थिति का अशुभ प्रभाव भी जातक पर भारी मात्रा में पड़ता है। संस्कृत में इसे लघुकल्याणी तथा गुजराती व मराठी में छोटी पनोति कहते हैं। राशि से चौथी एवं आठवीं राशि में गोचरीयभ्रमण करने वाला शनि व्याधि, रोग, कष्ट, दुःख, पीड़ा, परेशानी, मृत्यु, अग्नि और शस्त्रभय, प्रदेशगमन, क्लेश एवं चिन्ता तथा भाई-बन्धुओं के साथ विरोध उत्पन्न करने वाला होता है।

लघुकल्याणी प्रददाति वै रविसुतो राशेश्चतुर्थाष्टमे,
व्याधिं बन्धुविरोधं विदेशगमनं, क्लेशं च चिन्ताधिकम् ॥

शास्त्रों में तथा लोकव्यवहार में शनि की साढ़ेसाती एवं ढैय्या का फल बहुत ही दुःखदायक एवं अनिष्टकारी माना गया है परन्तु यह सत्य नहीं है। शनि जातक की जन्मकुण्डली में अपनी विशेष स्थिति, दृष्टि, युति एवं अन्य ग्रहों से सम्बन्ध के आधार पर ही अच्छा और बुरा फल देता है।

जातक की जन्मकुण्डली में शनि और चन्द्रमा यदि पापयुक्त, पापदृष्ट या पापकर्त्री योग में न हो तथा शनि अपनी मित्रराशि, स्वराशि मूलत्रिकोण राशि या उच्चराशि का होकर प्रशस्त ३, ६, ११ भावों में स्थित हो तथा महादशा, अन्तर्दशा, प्रत्यन्तर्दशा, गोचर एवं अन्य शुभ योगकारक ग्रहों के आधर पर श्रेष्ठ समय चल रहा हो तो साढ़ेसाती एवं ढैय्या का अशुभ एवं अनिष्टकारी प्रभाव या तो होता ही नहीं है या बिल्कुल न्यूनतम होता है। शनि केन्द्रेश, त्रिकोणेश आदि के आधार पर शुभ या राजयोग कारक होकर शुभ भावों में स्थित हो या उसका अन्य उच्चादि राशियों में स्थित राजयोग कारक, शुभ एवं मित्र ग्रहों के साथ शुभ सम्बन्ध हो तथा गोचर में भी शुभप्रभाव युक्त हो तो साढ़ेसाती या ढैय्या जातक को विपुल धन-धान्य, राजसी सुख एवं मान-सम्मान, ख्याति, पद-प्रतिष्ठा, वैभव सब कुछ प्रदान करने वाली होती है।

वर्तमान विक्रमी संवत् २०८२ के प्रवेश के दिन अर्थात् गत विक्रमी संवत् २०८१ के अन्तिम दिन २९ मार्च,२०२५ ई. शनिवार को रात्रि ०९ घं.४४ मि. पर शनिदेव मीन राशि में प्रवेश करेंगे। आगामी वि. संवत् २०८२ में शनिदेव मीन राशि के पूर्वाभाद्रपद और उत्तराभाद्रपद नक्षत्र में संचार करेंगे। शनिदेव संवत् के प्रारम्भ अर्थात् २९ मार्च,२०२५ ई. से मार्गी गति से ,१३ जुलाई,२०२५ ई. से वक्री गति से तथा २८ नवम्बर, २०२५ ई. से पुनः मार्गी होकर सिद्धार्थ नामक संवत् की समाप्ति पर्यन्त मीन राशि में संचरण करेंगे

नव विक्रम सम्वत् २०८२ में मीन राशिस्थ शनिदेव के कारण कुम्भ, मीन और मेष राशि वाले जातक-जातिकाओं पर शनि की साढ़ेसाती तथा कर्क और वृश्चिक राशि वाले जातक-जातिकाओं पर शनि ढ़ैय्या का शुभाशुभ प्रभाव रहेगा। मीन राशिस्थ शनि-साढ़ेसाती एवं ढ़ैय्या फल विचार-

(क) नव विक्रम सम्वत् २०८२ में कुम्भ शशि वाले जातकों को साढ़ेसाती पाँव पर उतरती हुई अर्थात् अन्तिम चरण में होगी।

(ख) मीन राशि वालों को शनि साढ़ेसाती हृदय पर स्थित अर्थात् मध्यावस्था में होगी।

(ग) मेष राशि वालों को शनि साढ़ेसाती सिर पर चढ़ती हुई अर्थात् प्रारम्भिक अवस्था में होगी।

गोचर में वक्री ग्रहों के फल के विषय में लिखा गया है-

''क्रूरा वक्रा महाक्रूराः, सौम्या वक्रा महाशुभाः॥''

अर्थात् शनि-भौमादि क्रूरग्रह वक्री होने पर महाक्रूर होने के कारण अधिकतम अशुभ फल तथा गुरु-शुक्र आदि सौम्य ग्रह वक्री होने पर महाशुभ होने के कारण अधिकतम शुभ फल देते हैं। यथा-

वक्रिणस्तु महावीर्याः शुभा राज्यप्रदा ग्रहाः।
पापा व्यसनिनां पुंसां कुर्वन्ति च वृथाटनम्॥

अर्थात् शुभ ग्रह वक्री होकर अति बलवान् हो जाते हैं तथा जातक को राज्य सुख देते हैं। इसके विपरीत पापग्रह वक्री होने पर जातक को व्यसनी (दुःखदाई) और वृथा (व्यर्थ) घूमने वाला (आवारा) बना देते हैं।

अतः नव संवत् २०८२ में जब शनि देव वक्री गति से संचरण करेंगे तब शनि के अशुभ प्रभाव से प्रभावित जातक और जातिकाओं को मानसिक, शारीरिक, आर्थिक, सामाजिक, व्यापारिक, पारिवारिक आदि विविध प्रकार की समस्याओं, संकटों, दुःखों, कष्टों और पीड़ाओं से ग्रस्त और त्रस्त होना पड़ेगा तथा समाज में राजनैतिक टकराव, अव्यवस्था, अत्यधिक महंगाई, गंभीर रोग, संक्रमण रोग, महामारी, भय, दुःख, उपद्रव, हिंसक घटनाएं, आतंक, अस्थिरता, असन्तोष, बाढ़, सूखा, भूकम्प, भूस्खलन, दुर्भिक्ष, अकाल आदि विविध प्रकार के प्राकृतिक प्रकोपों का भय एवं असुरक्षा का वातावरण बनेगा।

परन्तु शनि साढ़ेसाती एवं ढ़ैय्या के शुभाशुभ प्रभाव की मात्रा जातक की जन्मकुण्डली में शनि की स्थिति पर निर्भर होती है। यदि जन्मकुण्डली में शनि नीच राशि, शत्रुराशि, अस्त, वक्री, पापाक्रान्त, पाप ग्रहों से युत या दृष्ट हो तो शनि की साढ़ेसाती एवं ढ़ैय्या का बुरा प्रभाव जातक पर अधिकतम होगा, इसके विपरीत यदि जन्मकुण्डली में शनि अपनी उच्च राशि, मूलत्रिकोण राशि, स्वराशि, मित्रराशि, मार्गी, शुभाक्रान्त, शुभग्रहों से युत या दृष्ट आदि शुभ स्थिति में हो तो शनि की साढ़ेसाती एवं ढ़ैय्या का अशुभ प्रभाव जातक पर नहीं पड़ेगा या न्यूनतम ही पड़ेगा किन्तु यदि शनि योगकारक आदि होकर षोडशवर्ग, अष्टकवर्ग एवं षड्बल आदि के आधार पर बली सिद्ध हो तो शनि की साढ़ेसाती एवं ढ़ैय्या में जातक को अप्रत्याशित सफलता और सम्पन्नता आदि अनेक शुभफलों की प्राप्ति होती है। जिन जातकों की जन्मकुण्डली में शनि पाप स्थिति या सम्बन्ध में होता है उन्हें शनि की साढ़ेसाती एवं ढ़ैय्या में मानसिक व्यथा, रोग-पीड़ा, दु:ख-कष्ट, गृह-क्लेश, चोर-भय, अग्निभय, जलभय, राजभय, राजदण्ड, पदच्युति एवं अवनति आदि अशुभफलों की प्राप्ति होती है।

गोचर में शनि ग्रह का सामान्य फल -

गोचर में शनि के परिवर्तन के आधार पर मेषादि द्वादश राशियों के जातकों को भिन्न-भिन्न शुभाशुभ फल की प्राप्ति होती है।

यदि गोचर में शनि किसी जातक की जन्मराशि अर्थात् जन्म राशि से प्रथम स्थान में हो तो मानसिक व्यथा एवं स्थान -हानि, द्वितीय में कलह -क्लेश, तृतीय में पराक्रम एवं सुख में वृद्धि, चतुर्थ में शत्रु वृद्धि, पंचम में सन्तान से पीड़ा,षष्ठ में सुख संसाधनों की वृद्धि,सप्तम में रोग व शत्रु -भय, अष्टम में दु:ख पीड़ा,नवम में सुख,दशम में निर्धनता, एकादश में धन-लाभ तथा द्वादश स्थान पर हो तो अनेक प्रकार के अनर्थों एवं अशुभ फलों की प्राप्ति होती है। यथा -

भ्रशं क्लेशं च शत्रुप्रवृद्धिं पुत्रसौख्यं सौख्यवृद्धिं च दोषम।
पीडा सौख्यं निर्धनत्वं धनाप्तिं नानानर्थं भानुसूनु - स्तनोति ।

शनि के अशुभ प्रभाव से बचने के लिए शास्त्रों में प्रतिपादित उपायों को विधिपूर्वक सम्पन्न करने या करवाने से निश्चित रुप से लाभ होता है।

(१) शनिवासरी अमावस्या को सायंकाल में सूर्यास्त के बाद शनि पूजन, मन्त्र जाप एवं स्तोत्र पाठ करना चाहिए।

(२) प्रत्येक शनिवार को सायंकाल में शनि के बीजमन्त्रों, पौराणिक मन्त्रों या वैदिक मन्त्रों का संकल्पपूर्वक जाप करना चाहिए।

(३) शनिवार को सुन्दरकाण्ड का पाठ करना या सुनना चाहिए।

(४) शनिवार सायंकाल को पीपल वृक्ष के पास या शनि मन्दिर में तेल का दीपक जलाना चाहिए।

(५) प्रतिदिन या शनिवार को प्रात:काल में भगवान शिव का पूजन करके, पीपल वृक्ष के समीप शनि स्तोत्र का पाठ करके कच्ची लस्सी में काले तिल डालकर वृक्षमूल में लस्सी चढ़ानी चाहिए।

(६) शनिवार का व्रत रखना चाहिए।

(७) काले घोड़े की नाल या नाव के तल में लगी हुई कील से निर्मित अँगूठी या शनियन्त्र या नीलम रत्न जड़ित मुद्रिका को विधि पूर्वक शुभ मुहूर्त में निर्माण करवाकर शुभमुहूर्त में शनिवार को विधियुक्त पूजा करके धारण करना चाहिए।

(८) शनिवार को बन्दरों को गुड़ और चना खिलाना चाहिए।

(९) शनिवार को पक्षियों को सप्तधान्य डालना श्रेयस्कर है।

(१०) शनिवार को सप्तधान्यादि का या काले पदार्थों, काले वस्त्रों आदि का दान करना चाहिए।

(११) शनि साढ़ेसाती, ढैय्या एवं शनि पाया के अधिकतम अशुभ फल की शान्ति के लिए बीज मन्त्रों, वैदिक मन्त्रों या महामृत्युञ्जय

आदि मन्त्रों का पर्याप्त संख्या में जाप एवं हवन करना चाहिए।

(१२) छायापात्र दान, तुलादान, भूदान, स्वर्णदान आदि का दान करना चाहिए।

(१३) तेल में मुख देखकर उस तेल में उड़द की दाल के नानाविध मीठे और नमकीन पक्वान्न बनाकर गरीबों, मजदूरों, कुष्ठरोगियों आदि को खिलाने चाहिए, इसके अतिरिक्त काले कुत्ते, भैंसे या साँड आदि को खिलाना भी श्रेयस्कर रहेंगें।

शनि जन्य अरिष्ट दोषों के शमनार्थ प्रदत्त उपायों को किसी विशेष शुभ-मुहूर्त में शनिवार से प्रारम्भ करके प्रतिदिन या प्रत्येक शनिवार को करना चाहिए तथा विशेष उपायों को शनैश्चरी अमावस्या को करना या करवाना चाहिए। उपरोक्त किसी भी उपाय को करने से निश्चित रूप से शनि-जनित अरिष्टों की शान्ति होती है।

आय-व्यय चक्र द्वारा शुभाशुभ फल -

संवत् में लाभ-हानि का ज्ञान करने हेतु आय-व्यय चक्र -

आय-व्यय चक्र (विंशोत्तरी मतानुसार)

(सम्वत्सर २०८२ का राजा-सूर्य)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
आय	१४	०८	१४	०८	११	१४	०८	१४	११	०५	०५	११
व्यय	११	०५	०२	१४	११	०२	०५	११	०२	०५	०५	०२

आगामी सम्वत्सर में जातक से सम्बन्धित शुभाशुभ फल ज्ञात करने हेतु आय-व्यय बोधक चक्र में जातक की राशि के लाभ-हानि अंकों के योग में से एक घटाकर शेष को ८ से भाग दें। भाग देने पर यदि शेष १, २, ६, ७ बचे तो अभीष्ट सम्वत् में जातक को उत्तम लाभ होगा। शेष ३, ४, ५ या ८ हो तो लाभ से अधिक व्यय होने से परेशानियाँ बढ़ती हैं। अर्थात् शेष ०१ में लाभ, ०२ में सौख्य, ०३ में क्लेश, ०४ में रोग, ०५ में मिथ्या अपवाद, ०६ में सम्मान, ०७ में विजय, ०८ या ० में हानि समझनी चाहिए।

यथोक्तम् - **लाभव्ययौ समौ कृत्वा एकहीनं तु कारयेत्।**
अष्टभिस्तु हरेद्भागं शेषाङ्के फलमादिशेत्॥
लाभं सौख्यं तथा क्लेशं रोगं लोकापवादनम्।
सम्मानं विजयं हानिं कथितं पूर्वसूरिभिः॥

राशि स्वामी के ध्रुवाङ्कों द्वारा संवत् २०८२ में लाभ-व्यय ज्ञान -

संवत् में जिस जातक से सम्बन्धित लाभ-व्यय ज्ञान अपेक्षित हो सर्वप्रथम उस जातक की राशि स्वामी के ध्रुवाङ्कों में अभीष्ट वर्ष के राजा के ध्रुवाङ्कों को जोड़ देते हैं। योगफल को ३ से गुणाकर, गुणनफल में ५ जोड़कर १५ से भाग देने पर जो शेष बचे वह लाभ होता है। लब्धि को ३ से गुणा करने पर गुणनफल में ५ जोड़ने तथा योगफल में १५ से भाग देने पर जो शेष रहे वह खर्च जानना चाहिए। सम्वत् २०८२ में मेषादि द्वादश राशियों के जातकों हेतु लाभ-हानि की मात्रा का समानुपातीय ज्ञान ध्रुवाङ्क चक्र द्वारा स्पष्ट है।

लाभ-हानि चक्र (ध्रुवाङ्कों के आधार पर)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
आय	०२	११	१४	०८	११	१४	११	०२	०५	०८	०८	०५
व्यय	१४	०५	०२	०२	११	०२	०५	१४	०५	१४	१४	०५

इतीदं वत्सरफलं वत्सरादि - तिथौ शुभम् ।
यः श्रृणोति नरो भक्त्या स सुखी वत्सरं भवेत्॥

प्रो. विनोद कुमार शर्मा
आचार्य, ज्योतिष-विभाग

विक्रम संवत् २०८२ सन् २०२५-२०२६ ई. में मेषादि द्वादश राशियों का मासिक-फल

मेष (ARIES) चु, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ ।

यह वर्ष आपके लिए मिश्रित फलदायक रहेगा, सम्पूर्ण वर्ष राशीश मंगल मार्गी अवस्था में संचरण करेगा, वर्षारम्भ में राशीश मंगल ३ अप्रैल से राशि से चतुर्थ स्थान में अपनी नीच राशि कर्क पर रहेगा, फलस्वरुप भूमि -भवन- वाहनआदि का सौख्य न्यून रहेगा वर्षारम्भ में पञ्चमेश सूर्य मेष राशि पर उच्चावस्था में रहेगा, अतः सन्तान पक्ष से सौख्य कार्यक्षेत्र में उन्नति एवं समाज में अग्रणी रहेंगे राजकीय पक्ष से मान सम्मान लाभ प्राप्ति एवं वर्षों से लम्बित कार्य पूर्ण होंगे। ७ जून से राशीश मंगल, राशि से पञ्चम स्थान में सिंह राशि में प्रवेश करेगा, फलस्वरुप राजनीतिक गतिविधियों में सहभागिता रहेगी एवं प्रबन्धन के क्षेत्र में रूचि बढ़ेगी। २८ जुलाई को राशीश मंगल राशि से षष्ठ स्थान में कन्या राशि में प्रवेश करेगा और केतु से युक्त रहेगा, अतः शत्रुपक्ष के षड्यंत्रों का सामना करना पड़ेगा, स्वास्थ्य भी अनुकूल नहीं रहेगा, पित्तदोष, उदरपीड़ा, रक्तविकार, संक्रामक रोगों से स्वास्थ्य शिथिल रहेगा।१३सितम्बर, से मंगल तुला राशि में प्रवेश करेगा, विवाह योग्य जातकों के सुयोग बनेंगे, कार्य क्षेत्र में नवीन अनुबन्ध हस्ताक्षरित होंगे। २८ अक्टूबर से मंगल अपनी दूसरी राशि वृश्चिक में प्रवेश करेगा,यह समय किञ्चित संघर्षपूर्ण रहेगा,७ दिसम्बर से मंगल भाग्य स्थान में रहेगा, भाग्येश-द्वादशेश गुरु के, चतुर्थ स्थान में उच्चावस्था में वक्री होने से भाग्य साथ नहीं दे पायेगा, १६ जनवरी २०२६ से मंगल अपनी राशि से दशम स्थान में मकर राशि पर उच्चावस्था में रहेगा, अतः कार्यक्षेत्र एवं रोजगार में प्रगति एवं उन्नति प्रदान करेगा। ११ फ़रवरी से वर्षान्त तक मंगल के एकादश स्थान में रहने से कार्य व्यवसाय सम्बन्धी लम्बित मनोकामनाएं सम्पूर्ण होने के सुयोग बनेंगे। अनिष्ट प्रभाव से बचाव हेतु हनुमदुपासना श्रेयस्कर रहेगी, सप्तधान्य का दान भी लाभप्रद रहेगा।

चैत्र शुक्ल पक्ष- वैशाख (दि. ३० मार्च से १२ मई २०२५ ई० तक)

यह समय आपके लिए मिश्रित फलदायक रहेगा मासारम्भ में राशीश मंगल अपनी नीच राशि कर्क में स्थित रहेगा, फलस्वरुप गृह निर्माण -भूमि एवं मातृ पक्ष से असन्तुष्टि व मानसिक कष्ट रहेगा, पूर्व नियोजित कार्य लम्बित होने से मन खिन्न रहेगा, समाज में मान-सम्मान निज बन्धुओ से सम्बन्ध प्रभावित होंगे मित्रवर्ग अनुकूल नहीं रहेगा, मासान्त में पुत्र के सहयोग से परिस्थितियों अनुकूल होंगी स्वास्थ्य भी किन्चित नरम रहेगा शिरशूल, कोष्ठबद्धता व संक्रमणजन्य अस्थाई रोगों से स्वास्थ्यरक्षा अपेक्षित होगी। ५, ६, ७, १५, १६, १७, २५, २६ अप्रैल एवं ३, ४ मई के दिन आपके अनुकूल नहीं रहेंगे।

ज्येष्ठ-आषाढ़ (१३ मई से १० जुलाई २०२५ ई. तक)

यह मास आपके लिए मिश्रित फलदायक रहेगा । रोजगार एवं कार्यक्षेत्र में कठिन प्रतिस्पर्धा के कारण परिश्रम की अधिकता रहेगी। आर्थिक, मानसिक व शारीरिक समस्याएँ किञ्चित विचलित करेंगी, लेकिन लाभ के मार्ग बने रहेंगें। माता का स्वास्थ्य शिथिल रहेगा। शत्रुवर्ग की प्रबलता मानसिक कष्ट का कारण बनेगी समीप-दूर की यात्राएँ लाभप्रद रहेगी। ज्वर, संक्रमण, उदर पीड़ा, कफ-पित्त दोष से कष्ट रहेगा तथापि धनागम के मार्ग प्रशस्त रहेंगे। १३, १४, २०, २१, ३०, ३१ मई ९, १०, १८, १९, २७, २८ जून एवं ६, ७, ८ जुलाई के दिन आपके अनुकूल नहीं रहेंगे।

श्रावण -भाद्रपद (११ जुलाई से ७ सितम्बर २०२५ ई. तक)

यह समय आपके लिए मिश्रित फलदायक रहेगा। शत्रु पक्ष से कष्ट कार्य व्यवसायर में कठिन प्रतिस्पर्धा रहेगी, लाभ प्राप्ति हेतु कठोर परिश्रम की अधिकता रहेगी, पति/पत्नी से मतभेद होने के कारण मन व्यथित रहेगा, नवीन रोजगार की योजनाएं लम्बित रहेगा, मानसिक कष्ट व शारीरिक कष्ट से मन शिथिल रहेगा, संक्रमणजन्य अस्थाई रोगों, उदर -पीड़ा आंत्रशोध, शिरशूल एवं रक्तचाप से स्वास्थ्य रक्षा अपेक्षित रहेगी। १५, १६, १७, २४, २५ जुलाई एवं ३, ४, १२, १३, २१, २२ अगस्त के दिन आपके अनुकूल नहीं रहेंगे।

आश्विन-कार्तिक (८ सितम्बर से ५ नवम्बर २०२५ ई. तक)

यह समय आपके लिए मिश्रित फलदायक रहेगा उत्तरार्ध में व्यवसाय एवं

कार्य क्षेत्र में नवीन अनुबन्ध हो सकते हैं,साझेदारी के कार्य से धन लाभ के मार्ग प्रशस्त होंगे, दूर समीप की यात्राएं रोजगार के नवीन अवसर प्रदान करेंगी, पति/पत्नी से वैचारिक मतभेद के कारणअनबन रह सकती है जिससे दाम्पत्य सुख में न्यूनता रहेगी, समय के उत्तरार्ध में राशीश मंगल के अष्टम स्थान में होने से कार्य क्षेत्र व व्यवसाय में स्थिति संघर्ष पूर्ण रहेगी, लाभ मार्ग अवरुद्ध होने से मन खिन्न रहेगा, वृथा परिश्रम व अनावश्यक व्यय से सन्ताप होगा। कार्य-व्यवसाय में दूर समीप की यात्राएं परिवर्तनदायक रहेंगी देश-विदेश की यात्राओं में व्ययाधिक्य होगा किन्तु धनागम के मार्ग भी प्रशस्त होंगे। ८, ९, १०, १७, १८, २७, २८ सितम्बर ६, ७, १४, १५, २४, २५ अक्टूबर एवं २, ३, नवम्बर के दिन आपके अनुकूल नहीं रहेंगे।

मार्गशीर्ष पौष (६ नवम्बर २०२५ ई. से ३ जनवरी २०२६ ई. तक)

यह समय आपके लिए मिश्रित फलदायक रहेगा मासारम्भ में आकस्मिक विदेश यात्राओं से व्यय में वृद्धि होगी, आय के साधनों में विलम्ब व अवरोध रह सकता है यदा कदा बढ़ाएं समस्याएं उत्पन्न होगी लाभकारी योजनाएं लम्बित रहेगी किन्तु समय के उत्तरार्ध में आकस्मिक भाग्योदय व लाभ प्राप्त होगा कार्य क्षेत्र में सफलता वह उन्नति के मार्ग प्रशस्त रहेंगे परिवार के सहयोग से घर में शान्ति व सन्तुष्टि का वातावरण बनेगा धार्मिक अनुष्ठानों एवं शोभायात्राओं में सहभागिता बढ़ेगी आध्यात्मिक रुचि में वृद्धि होगी। कार्य व्यवसाय व व्यापार में नवीन योजनाएं सफलता प्राप्त होगी, जिसके कारण आर्थिक- सामाजिक व मानसिक सुरक्षा प्राप्त होगी। १०, ११, १२, २०, २१, २२, २९, ३० नवम्बर एवं ७, ८, ९, १७, १८, २७, २८ दिसम्बर के दिन आपके अनुकूल नहीं रहेंगे।

माघ-फाल्गुन-चैत्र कृष्ण पक्ष (४ जनवरी से १९ मार्च २०२६ ई. तक)

यह समय आपके लिए अनुकूल फलदायक रहेगा। मकर राशि पर दशम स्थान में राशीश,मंगल अपनी उच्च अवस्था में रहेगा फलस्वरुप कार्य- व्यवसाय के क्षेत्र में अनेक लाभकारी योजनाएं क्रियान्वित होंगी निर्माण कार्यों में पूंजी निवेश से उत्तम लाभ प्राप्त होगा आर्थिक व भौतिक सफलता से मन प्रसन्न रहेगा, रोजगार -परक अनेक नवीन योजनाएं क्रियान्वित होंगी, धनागम के मार्ग प्रशस्त रहेंगे देश-विदेश से धन प्राप्ति के सुअवसर प्राप्त होंगे, समाज सेवा से मान सम्मान प्राप्त होगा, राजनीतिक क्षेत्र में भी रुचि बढ़ेगी। वर्षों से लम्बित योजनाएं क्रियान्वित होंगी, आर्थिक व सामाजिक सुरक्षा से संतोष रहेगा। ४, ५, १३, १४, १५, २३, २४, ३१ जनवरी १, १०, ११, १९, २०, २८ फरवरी एवं १, ९, १०, १८ मार्च के दिन आपके अनुकूल नहीं रहेंगे।

वृष (TAURUS) ई, उ, ए, ओ, वा, वि, वू, वे, वो।

यह वर्ष आपके लिए मिश्रित फलदायक रहेगा वर्षारम्भ में राशीश शुक्र मीन राशि में राशि से एकादश स्थान में १३अप्रैल तक वक्री होकर संचरण करेगा, और भाग्येश-दशमेश शनि, लाभ स्थान में सम्पूर्ण वर्ष संचरण करेगा, अतः कार्य क्षेत्र-रोजगार में अपार सफलता प्राप्त होगी, वर्षों से लम्बित नवीन रोजगार की योजनाएं क्रियान्वित होंगीं, समाज में मान- सम्मान, यश, प्रतिष्ठा से हर्षोल्लास का वातावरण रहेगा व्यापार में सफलता धनागम व लाभ प्राप्ति के मार्ग प्रशस्त रहेंगे, भूमि-भवन-वाहन के सुख में वृद्धि होगी, ३१ अगस्त से राशीश शुक्र राशि से तृतीय स्थान में लाभेश -अष्टमेश उच्चस्थ गुरु से युति करेगा, फलस्वरुप देश-विदेश की यात्राएं होंगी, अनार्जित धन सम्बन्धी झगड़ा -विवाद से मानसिक तनाव रहेगा कार्य क्षेत्र में विघ्नता धन हानि से आय-व्यय का सन्तुलन प्रभावित होगा, वर्षान्त में आर्थिक, मानसिक, एवं शारीरिक कष्ट रहेगा, अमलाधिक्य, मधुमेह, नेत्र-कण्ठ-कर्ण-नासिकादि अस्थाई रोगों से स्वास्थ्यरक्षा आवश्यक होगी। अरिष्ट परिहार हेतु मां भगवती की आराधना एवं शिवोपासना श्रेयस्कर रहेगी।

चैत्र शुक्ल पक्ष- वैशाख (दि. ३० मार्च से १२ मई २०२५ ई. तक)

यह समय आपके लिए मिश्रित फलदायक रहेगा मासारम्भ में राशीश शुक्र एकादश स्थान में वक्री रहेगा, अतः मनोवांछित सफलता एवं लाभमार्ग अवरुद्ध रहेंगे, किन्तु भाग्येश-कर्मेश शनि के लाभ स्थान में युति के कारण परिस्थितियों अनुकूल होने लगेंगी, उत्तरार्द्ध में राशीश शुक्र राशि से द्वादश स्थान में संचार करेगा, अतः स्वास्थ्य नरम रहेगा नेत्रपीड़ा, चर्मरोग मूत्राधिक्य, टॉन्सिल्स अमलाधिक्यादि समस्याओं से स्वास्थ्य शिथिल रहेगा। ८, ९, १८, १९, २७, २८ अप्रैल एव ५, ६, ७ मई के दिन आपके अनुकूल नहीं रहेंगे।

ज्येष्ठ-आषाढ़ (१३ मई से १० जुलाई २०२५ ई. तक)

यह समय आपके लिए मिश्रित फलदायक रहेगा, मासारम्भ में वृथाभ्रमण, कार्य व्यवसाय हेतु लिए गए ऋण की चिन्ता व्ययाधिकय से मन संतप्त रहेगा, किन्तु उत्तरार्ध में परिस्थितियों परिवर्तित होगी, धीरे-धीरे कार्य-क्षेत्र व व्यापार में उत्तम लाभ प्राप्त होने लगेगें, भविष्य की नवीन योजनाएं कार्यरूप लेंगी, लाभ मार्ग प्रशस्त होंगे, धन सञ्चय से मन प्रसन्न रहेगा, परिवार में शान्ति एवं सहयोग का वातावरण रहेगा, परिवार-कुटुम्ब में सद्भाव रहेगा। १५, १६, १७, २४, २५ मई १, २, ३, ११, १२, १३, २०, २१, २९, ३० जून एवं ९, १० जुलाई के के दिन आपके अनुकूल नहीं रहेंगे।

श्रावण-भाद्रपद (११ जुलाई से ७ सितम्बर २०२५ ई. तक)

यह समय आपके लिए मिश्रित फलदायक रहेगा मासारम्भ में पराक्रम एवं साहस में न्यूनता रहेगी अतः कार्य सिद्धि में अनेक अवरोध होने के कारण मन अस्थिर रहेगा, लाभमार्ग लम्बित रहेंगे भ्रातृपक्ष से असहयोग रहेगा, उत्तरार्द्ध में पूर्व-निर्धारित भूमि-भवन-वाहन सम्बन्धी योजनाएं क्रियान्वित होंगी, भौतिक सुख-संसाधनों का सौख्य रहेगा, मातृपक्ष से पुश्तैनी सम्पत्ति का लाभ मिलेगा। १८, १९, २६,२७ जुलाई ५, ६, ७, १४, १५, २३, २४ अगस्त एवं २, ३ सितम्बर के दिन आपके अनुकूल नहीं रहेंगे।

आश्विन-कार्तिक (८ सितम्बर से ४ नवम्बर २०२५ ई. तक)

यह समय आपके लिए मिश्रित फलदायक रहेगा मांसारंभ में भूमि भवन वाहन का सुख प्राप्त होगा बन्धु बन्धुओ से सहयोग रहेगा, समाज में सेवा भावऔर सक्रियता से यश और मान-सम्मान की प्राप्ति होगी, मातृ पक्ष से सहयोग रहेगा, सन्तान पक्ष की उच्चशिक्षा एवं रोजगार सम्बन्धी चिन्ता रहेगी,पति-पत्नी से सम्बन्ध मधुर रहेंगे, संक्रमणजन्य रोग एवं ज्वर से शरीर कष्ट में रहेगा। मासान्त में प्रबन्धन के क्षेत्र में सफलता से मन प्रसन्न रहेगा। ११, १२, १९, २०, २१, २९, ३० सितम्बर ८, ९, १६, १७, १८, २६, २७, २८ अक्टूबर एवं ४ नवम्बर के दिन आपके अनुकूल नहीं रहेंगे।

मार्गशीर्ष पौष (५ नवम्बर २०२५ ई. से ३ जनवरी २०२६ ई. तक)

यह समय आपके लिए मिश्रित फलदायक रहेगा मासारम्भ में सन्तान पक्ष से चिन्ता रहेगी उच्च शिक्षा एवं रोजगार सम्बन्धी अड़चनों के पश्चात भी मनोवांछित कार्य सिद्धि में सफलता प्राप्त करेंगे, कार्य व्यवसाय में कठिन प्रतियोगिता का सामना करना पड़ेगा, शत्रुपक्ष के षडयंत्रों से कुछ कठिनाइयां तो आएंगीं, किन्तु अन्त में सफलता प्राप्त करेंगे।अनावश्यक वाद विवाद से बचना ही उचित रहेगा। ५, १३, १४, २३ नवम्बर एवं १, २, १०, ११, १९, २०, २१, २९, ३० दिसम्बर के दिन आपके अनुकूल नहीं रहेंगे।

माघ-फाल्गुन-चैत्र कृष्ण पक्ष (४ जनवरी से १९ मार्च २०२६ ई. तक)

यह समय आपके लिए मिश्रित फलदायक रहेगा मासारम्भ में वैचारिक मतभेद के कारण पति या पत्नी में मनमुटाव रहेगा, दाम्पत्य सुख न्यून रहेगा, कार्य व्यवसाय में किए गए कुछ नवीन अनुबन्ध हस्ताक्षरित होंगे, विदेश से व्यापार का सम्बन्ध बनेगा एवं विदेशगमन के अवसर भी प्राप्त होंगे, पूर्वविचारित योजनाएं किञ्चित कठिनाइयों के पश्चात क्रियान्वित होंगी, धनागम के स्त्रोत प्रशस्त होंगे। ६, ७, १६, १७, २५, २६ जनवरी २, ३, ४, १२, १३, १४, २१, २२ एवं २, ३, ११, १२, १३ फरवरी एवं मार्च के दिन आपके अनुकूल नहीं रहेंगे।

मिथुन (GEMINI) क, कि, कु, घ, ङ, छ, के, को, ह

यह वर्ष आपको मिश्रित फल प्रदान करने वाला है वर्षारम्भ में राशीश बुध अपनी नीच राशि मीन में रहेगा अतः स्वास्थ्य एवं कारोबार की स्थिति प्रतिकूल ही रहेगी अनावश्यक खर्चों के कारण आर्थिक सन्तुलन प्रभावित रहेगा बनते कार्य बिगड़ेंगे बन्धु बान्धवों का व्यवहार भी परायों जैसा रहेगा, राशीश बुध, १८ जुलाई से ११ अगस्त तक कर्क राशि में १० नवम्बर से २९ नवम्बर तक वृश्चिक राशि में और २६ फरवरी से १९ मार्च तक कुम्भ राशि में वक्री रहेगा, १५ सितम्बर से ३ अक्टूबर तक राशीश बुध अपनी उच्चराशि में संचरण करेगा, फलस्वरुप भूमि-भवन-वाहन सम्बन्धी सौख्य रहेगा, सम्पूर्ण वर्ष अष्टमेश नवमेश शनि राहु से युक्त होकर राशि के दशम स्थान में संचरण करेगा अतः कार्य क्षेत्र व व्यापार में अड़चनें, कठिनाइयां व वातावरण प्रतिकूल रहेगा, सम्पूर्ण वर्ष सप्तमेश दशमेश गुरु के धन स्थान में उच्चस्थ होने से किञ्चित राहत रहेगी। व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति रहेगी, ग्रीवा-कन्धों में पीड़ा, उदर-विकार, संक्रमणजन्य अस्थाई रोगों से शिथिल रहेगा। अरिष्टपरिहार हेतु गणेश अर्चना एवं शिवोपासना श्रेयस्कर रहेगी।

चैत्र शुक्ल पक्ष-वैशाख (दि. ३० मार्च से १२ मई २०२५ ई० तक)

यह समय आपके लिए मिश्रित फल प्रदान करने वाला रहेगा,मासारम्भ में बुध अपनी नीच राशि में संचरण करने के कारण कार्य व्यवसाय में अपेक्षित उन्नति नहीं मिलेगी, साधारण लाभांश से मन व्यथित रहेगा, नवीन रोजगार सम्बन्धी कार्य लम्बित रहेंगे,मन अशांत रहेगा मासान्त में स्थिति कुछ अनुकूल बनेगी,वर्षों से लम्बित कार्य क्रियान्वित होंगे मित्र वर्ग के सहयोग से धनागम के अनेक मार्ग प्रशस्त होंगे भौतिक सुख संसाधनों में वृद्धि होगी, मनोकामनाएं पूर्ण होने से मन संतुष्ट रहेगा। १, २, १०, ११, १२, २०, २१, २२, २९, ३० अप्रैल एवं ८, ९ मई के दिन आपके अनुकूल नहीं रहेंगे।

ज्येष्ठ-आषाढ़ (१३ मई से १० जुलाई २०२५ ई. तक)

यह समय आपके लिए मिश्रित फलदायक रहेगा मासारंम में स्वास्थ्य शिथिल रहेगा, कार्य क्षेत्र एवं व्यापार की दृष्टि से यात्राएं अधिक होगी वृथाभ्रमण व लाभांश,अल्प ही रहेगा व्ययाधिक्य से आर्थिक सन्तुलन प्रभावित रहेगा उत्तरार्ध में बुध के इसी राशि पर संचरण करने से परिवारजनों व मित्रों के सहयोग से सभी बिगड़े एवं लम्बित कार्य पूर्ण होंगें व्यवसाय व रोजगार सम्बन्धी क्षेत्र में आय के अनेक संसाधनों से लाभ में वृद्धि होगी स्त्री पक्ष व सन्तान के लिए भी यह समय अनुकूल रहेगा। १८, १९, २६, २७ मई ४, ५, १४, १५, २२, २३ जून एवं १, २, ३ जुलाई के दिन आपके अनुकूल नहीं रहेंगे।

श्रावण -भाद्रपद (११ जुलाई से ७ सितम्बर २०२५ ई. तक)

यह समय आपके लिए मिश्रित फलदायक रहेगा मासारम्भ में निकटजनों के सहयोग से कार्य व्यवसाय के क्षेत्र में लम्बित कार्य धीरे-धीरे सम्पूर्ण होते रहेंगे। परिवारजनों के सहयोग से कार्यों को सम्पन्न करने में मदद मिलेगी। आर्थिक स्थिति अनुकूल रहेगी, नवीन फलदायी योजना में धन निवेश करने का शुभ अवसर प्राप्त होगा, भूमि भवन सम्बन्धी निर्माण कार्यों को पूर्ण करने में सफलता प्राप्त होगी आय के संसाधनों में वृद्धि होगी। ११, १२, २०, २१, २८, २९ जुलाई, ८, ९, १६, १७, २५, २६, २७ अगस्त एवं ४, ५ सितम्बर के दिन आपके अनुकूल नहीं रहेंगे।

आश्विन-कार्तिक (८ सितम्बर से ४ नवम्बर २०२५ ई. तक)

यह समय आपके लिए मिश्रित फलदायक रहेगा कार्यक्षेत्र व व्यवसाय में मित्रों एवं परिवार के सहयोग से सफलता प्राप्त होगी भ्रातृ पक्ष से सहयोग रहेगा, भूमि-भवन-वाहन सम्बन्धी कार्यों में वर्षों से चले आ रहे विवाद व झगड़े समाप्त होंगे, पुरुषार्थ में वृद्धि से लाभ प्राप्ति के अनेक सुअवसर प्राप्त होंगे, सन्तानपक्ष से सौख्य व सन्तुष्टि रहेगी मासान्त में उदरपीड़ा, वातपित्तकफ, संक्रमणजन्य अस्थाई रोगों से शारीरिक कष्ट रहेगा १३, १४, २२, २३ सितम्बर एवं १, २, ३, १०, ११, १९, २०, २९, ३० अक्टूबर के दिन आपके अनुकूल नहीं रहेंगे।

मार्गशीर्ष पौष (५ नवम्बर २०२५ ई. से ३ जनवरी २०२६ ई. तक)

यह समय आपको मिश्रित फल प्रदान करने वाला रहेगा मासारम्भ में स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं, पित्तकफवायुविकार से शरीर शिथिल रहेगा,ज्वर, स्पांडलाइटिस, संक्रमणजन्य रोगों से कष्ट रहेगा।शत्रु पक्ष प्रबल होकर कार्य क्षेत्र में कठिन प्रतियोगिताएं एवं समस्याएं उत्पन्न कर सकता है, कठिन परिश्रम अपेक्षित रहेगा। मासान्त में व्यवसाय की स्थिति संभलेगी, नवीन रोजगार सम्बन्धी अनुबन्ध हस्ताक्षरित होंगे। ६, ७, १५, १६, १७, २५, २६ नवम्बर, ३, ४, १२, १३, २२, २३, ३१ दिसम्बर एवं १ जनवरी के दिन आपके अनुकूल नहीं रहेंगे।

माघ-फाल्गुन-चैत्र कृष्ण पक्ष (५ जनवरी से १९ मार्च २०२६ ई. तक)

यह समय आपको मिश्रितफल प्रदान करने वाला है मासारम्भ में कार्यक्षेत्र व व्यवसाय में साधारण लाभ प्राप्ति होगी, नवीन रोजगार की योजनाएं लम्बित होगी, वृथाभ्रमण अपव्यय में वृद्धि करेंगे। राशीश बुध के राशि से अष्टम स्थान में संचरण करने से धनाभाव के कारण परिवार में कलहपूर्ण वातावरण रहेगा, आकस्मिक हानि मानसिक तनाव देगी। आय-व्यय का सन्तुलन प्रभावित रहेगा, उत्तरार्ध में आर्थिक, शारीरिक एवं मानसिक चिन्ताएं विचलित करेगी किन्तु व्यावसायिक गतिविधियां प्रभावित नहीं होगी, मित्रों के सहयोग से समस्याओं का समाधान निकालने में सक्षम रहेंगे, धर्म-कर्म में रुचि बढ़ेगी,धार्मिक कृत्यों एवं अनुष्ठानों में सन्तुष्टि प्राप्त होगी, कार्य व्यवसाय हेतु देश-विदेश की लाभप्रद यात्राएं होंगी। १, ८, ९, १०, १८, १९, २०,

२७, २८ जनवरी ५, ६, १५, १६, २३, २४, २५ फरवरी एवं ४, ५, १४, १५ मार्च के दिन आपके अनुकूल नहीं रहेंगे

कर्क (CANCER) ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे,डो

यह वर्षआपके लिए मिश्रित फलदायक रहेगा, वर्षारम्भ में धनेश सूर्य,अपनी उच्च राशि मेष में राशि से दशम स्थान में संचरण करेगा, यह समय कार्यक्षेत्र में सफलता एवं लाभ मार्ग प्रशस्त करेगा, धनागम के अनेक स्त्रोत बनेंगे, वित्त व्यवस्था सुदृढ़ होगी, षष्ठेश- भाग्येश गुरु, आरम्भ में लाभ स्थान में संचरण करेगा, पुनःअतिचार करता हुआ १४मई को मिथुनराशि पर संचार करते हुए १८ अक्टूबर को अपनी उच्च राशि कर्क में सम्पूर्ण वर्ष संचरण करेगा, कर्क राशि में ही गुरु ११ नवम्बर २०२५ से ११ मार्च २०२६ तक वक्री गति से संचरण करेगा,अतःभाग्य शुभाशुभ मिश्रित फल प्रदान करेगा, सम्पूर्ण वर्ष शनि एवं राहु की युति भाग्य स्थान में रहेगी, शनि की विशेष तृतीय दृष्टि लाभ स्थान पर पूर्ण दृष्टि तृतीय स्थान पर एवं विशेष दशम दृष्टि छठे स्थान पर रहेगी, फलस्वरुप लाभकार्य अवरुद्ध एवं लम्बित रहेंगे। आलस्य की अधिकता हानिप्रद रहेगी, स्वास्थ्य किञ्चित शिथिल रहेगा एवं शत्रुओं के षड्यंत्रों से मानसिक एवं आर्थिक कष्ट रहेगा, दशमेश एवं पञ्चमेश मंगल ३ अप्रैल से ७ जून तक कर्क राशि पर स्थित रहेगा अतः यह समय कार्य व्यवसाय आदि के लिए लाभप्रद रहेगा,लाभेश एवं चतुर्थेश शुक्र २१ अगस्त से १५ सितम्बर तक कर्क राशि पर स्थित रहेगा,अतः भूमि-भवन-वाहन सम्बन्धी मनोवांछित फल प्राप्त होंगे। अरिष्टनिवारण हेतु शनि का दान (काला वस्त्र, लौहपात्र) एवं दीपप्रज्जवलन श्रेयस्कर रहेगा।

चैत्र शुक्ल पक्ष- वैशाख (दि. ३० मार्च से १२ मई २०२५ ई. तक)

यह समय आपके लिए उत्तम फलदायक रहेगा कार्यक्षेत्र में सफलता, लाभ के संसाधनों में वृद्धि, व्यवसाय में उन्नति व सन्तुष्टि रहेगी, उच्चपदासीन प्रतिष्ठित लोगों के सम्पर्क से अनेक रोजगार परक नवीन योजनाएं कार्यान्वित होगीं, धनागम के स्रोत विकसित होंगे सन्तान व परिवारजनों से सन्तुष्टि रहेगी, पत्नी पति से सम्बन्ध मधुर रहेंगे, मान सम्मान में वृद्धि, समाज में अग्रणी रहेंगे। ३, ४, १३, १४, २३, २४ अप्रैल एवं १, २, १०, ११, १२ मई के दिन आपके अनुकूल नहीं रहेंगे।

ज्येष्ठ-आषाढ़ (१३ मई से १० जुलाई २०२५ ई. तक)

यह समय आपके लिए मिश्रित फलदायक रहेगा मासारम्भ में भौतिक सुख संसाधनों पर व्यय की अधिकता रहेगी, वृथाभ्रमण एवं दूर- पास की यात्राएं मानसिक कष्ट प्रदान करेंगीं कार्यक्षेत्र में लाभ के मार्ग अवरुद्ध रहेंगे एवं नवीन क्रियान्वित योजनाओं के लाभांश लम्बित रहेंगे,आय-व्यय का असन्तुलन वित्त-व्यवस्था को प्रभावित करेगा,मन संतप्त रहेगा,मासान्त में परिस्थितियां बदलेंगी स्वास्थ्य लाभ होगा, कार्यक्षेत्र में सफलता मिलेगी, देश-विदेश में व्यवसाय के अवसर प्राप्त होंगे। २०, २१, २८, २९ मई, ६, ७, ८, १६, १७, २४, २५, २६ जून एवं ४,५,जुलाई के दिन आपके अनुकूल नहीं रहेंगे।

श्रावण -भाद्रपद (११ जुलाई से ७ सितम्बर २०२५ ई. तक)

यह समय आपके लिए उत्तम फलदायक रहेगा, मासारम्भ में कार्यक्षेत्र व व्यवसाय में धनलाभ, इच्छित कार्यसिद्धि मिलेगी, विदेशगमन के शुभ अवसर प्राप्त होंगे, उच्चपदासीन अधिकारियों से सम्पर्क सूत्र बनेंगे और अवरूद्ध कार्य सिद्ध होंगे,परिवार व कुटुम्ब में मान सम्मान प्राप्त होगा, स्वजनों में ईर्ष्या के पात्र बनेंगे, भौतिक सुखसंसाधनों में वृद्धि होगी,पति-पत्नी के सम्बन्ध सौहार्दपूर्ण रहेंगे धनसञ्चय के अनेक अवसर प्राप्त होने से मनोबल उच्च रहेगा, मासान्त में पराक्रम में न्यूनता रहेगी, आलस्य की अधिकता के कारण कार्य क्षेत्र में शिथिलता रहेगी, भ्रातृ पक्ष से सहयोग रहेगा। १३, १४, २२, २३, ३१ जुलाई, १, २, १०, ११, १८, १९, २०, २८, २९ अगस्त एवं ६, ७, ८ सितम्बर के दिन आपके अनुकूल नहीं रहेंगे।

आश्विन-कार्तिक (८ सितम्बर से ४ नवम्बर २०२५ ई. तक)

यह समय आपके लिए मिश्रित फलदायक रहेगा मासारम्भ में मातृपक्ष से सहयोग रहेगा, नवीन भूमि-भवन-वाहन का सौख्य रहेगा, कार्यस्थल के निर्माण का भी अवसर प्राप्त होगा, बन्धु बान्धवों से सम्मान प्राप्ति एवं सहयोग रहेगा। मासान्त में सन्तान पक्ष की शिक्षा-दीक्षा के सुअवसर प्राप्त होंगे, कार्यक्षेत्र में प्रबन्धन के प्रशिक्षण से वित्तीय व्यवस्था उत्तम होगी। सन्तान की रोजगारपरक योजनाएं क्रियान्वित होंगी। १५, १६, २४, २५, २६ सितम्बर ४, ५, १२, १३, २१, २२, २३, ३१ अक्टूबर एवं १, नवम्बर के दिन आपके अनुकूल नहीं रहेंगे।

मार्गशीर्ष पौष (६ नवम्बर २०२५ ई. से ३ जनवरी २०२६ ई. तक)

यह समय आपके लिए मिश्रित फलदायक रहेगा, मासारम्भ में स्वास्थ्य किंञ्चित शिथिल रहेगा, न्यूनाधिक्य रक्तचाप, अवसाद, नेत्ररोग, श्वसनतंत्र एवं संक्रमणजन्य अस्थाई रोगों से स्वास्थ्य रक्षा अपेक्षित रहेंगी। व्यवसाय में शत्रुपक्ष के षड्यंत्रों से मानसिक कष्ट रहेगा। किन्तु मासान्त में कार्यक्षेत्र एवं रोजगार सम्बन्धी नवीन अनुबन्ध हस्ताक्षरित होंगे। आशातीत सफलता प्राप्त होगी, पति पत्नी से सम्बन्ध मधुर रहेंगे। ८, ९, १८, १९, २७, २८ नवम्बर, ५, ६, १४, १५, १६, २४, २५ दिसम्बर एवं २, ३, जनवरी के दिन आपके अनुकूल नहीं रहेंगे।

माघ-फाल्गुन-चैत्र कृष्ण पक्ष (४ जनवरी से १९ मार्च २०२६ ई. तक)

यह समय आपके लिए किंञ्चित संघर्ष पूर्ण रहेगा, पिता-पुत्र में विरोध रहेगा, पति-पत्नी से भी सम्बन्ध कटु रहेंगे क्रोधाधिक्य से बनते कार्यों में अवरोध उत्पन्न होगा, राजकीय पक्ष से समस्याएं होगी, कार्यक्षेत्र में असफलता, लाभमार्ग में अवरोध से मन संतप्त रहेगा, सञ्चित धन की हानि, आकस्मिक व्यय, वित्तीय-व्यवस्था को प्रभावित करेगी, मासान्त में देश-विदेश की समीप-दूर की यात्राएं लाभप्रद सिद्ध होंगीं, धर्म-कर्म में रुचि रहेगी,तीर्थाटन के अवसर प्राप्त होंगे आध्यात्मिक आयोजनों में सक्रियता रहेगी। ११, १२, २१, २२, २९, ३० जनवरी, ७, ८, ९, १७, १८, २६, २७ फरवरी एवं ६, ७, ८, १६, १७ मार्च के दिन आपके अनुकूल नहीं रहेंगे।

सिंह (LEO) म, मि, मु, मे, मो, टा, टि, टू, टे।

यह वर्ष आपके लिए मिश्रित फलदायक रहेगा। वर्षारम्भ में राशीश सूर्य अपनी उच्चराशि मेष में भाग्य स्थान में संचरण करेगा। अतः प्रशासन एवं उच्चाधिकारियों के सहयोग से कार्यक्षेत्र एवं रोजगार सम्बन्धी लाभ प्राप्त होंगे, किन्तु भाग्येश मंगल के राशि से द्वादश स्थान में नीचस्थ होने से बनते कार्यों में विघ्न, संघर्ष एवं कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा, भूमि-भवन-वाहन सम्बन्धी योजनाएं लम्बित रहेगीं ७ जून के बाद ही परिस्थितियां परिवर्तित होंगी। राशि से पञ्चमेश-अष्टमेश गुरु १४ मई से मिथुन राशि में एकादश स्थान में रहेगा। फलस्वरुप सन्तान पक्ष की शिक्षा दीक्षा हेतु विदेश गमन के लिए सुअवसर प्राप्त होंगे होंगे। कार्य क्षेत्र व व्यवसाय में अनार्जित धन लाभ के मार्ग प्रशस्त होंगे। विदेश गमन के योग भी बनेंगे, १८ अक्टूबर से गुरू अपनी उच्चराशि कर्क में राशि से द्वादश स्थान में संचरण करते हुए ११ नवम्बर से वर्षान्त तक वक्री रहेगा, यह समय संघर्षपूर्ण रहेगा।षष्ठेश-सप्तमेश शनि राहु से युति करते हुए राशि से अष्टम स्थान में संचरण करेगा और अपनी तृतीय विशेष दृष्टि, दशम स्थान पर, पूर्ण दृष्टि द्वितीय स्थान पर, एवं विशेष दशम दृष्टि पञ्चम स्थान पर डालेगा यह समय संघर्ष पूर्ण रहेगा, राशीश सूर्य से शत्रु सम्बन्ध के कारण पति-पत्नी में अलगाव कार्य-व्यवसाय में असफलता, परिवार-कुटुम्ब में कलह, पिता-पुत्र में वैमनस्य, आकस्मिक धनहानि, सन्तान पक्ष से असहयोग जैसी समस्याओं से मन खिन्न रहेगा। अरिष्ट परिहार हेतु विष्णुसहस्त्रनाम पाठ एवं शनि का दान (काला वस्त्र, लौहपात्र) श्रेयस्कर रहेगा।

चैत्र शुक्ल पक्ष- वैशाख (दि. ३० मार्च से १२ मई २०२५ ई. तक)

यह समय आपके लिए मिश्रित फल प्रदान करने वाला रहेगा कार्य क्षेत्र में व्यवसाय में कठिन परिश्रम के बाद भी अल्प लाभ प्राप्त होगा, शनि की तृतीय विशेष दृष्टि बनते हुए कार्यों में व्यवधान उत्पन्न करेगी जिससे आय के साधन संकुचित होंगे, लाभांश विलम्ब से प्राप्त होंगे, रोजगार सम्बन्धी आर्थिक स्थिति प्रतिकूल रहेगी, प्रभावशाली लोगों के सहयोग से लम्बित कार्य सम्पूर्ण होते-होते व्यवधान उत्पन्न होंगे। मातृपक्ष से अनबन व असहयोग रहेगा, सम्पत्ति में भूमि- भवन -वाहन सम्बन्धी समस्याएं उत्पन्न होगी पूर्ण नियोजित कार्य लम्बित होकर मानसिक कष्ट पहुंचाएंगे। ५, ६, ७, १५, १६, १७, २५, २६ अप्रैल एवं ३, ४ मई के दिन आपके अनुकूल नहीं रहेंगे।

ज्येष्ठ-आषाढ़ (१३ मई से १० जुलाई २०२५ ई. तक)

यह समय आपके लिए मिश्रित फलदायक रहेगा, मासारम्भ में कार्यक्षेत्र व व्यवसाय में मनोनुकूल सफलता मिलेगी। देश-विदेश के लोगों से सम्पर्क बनेगा। प्रतिष्ठित जनों से सम्पर्क से पूर्व लम्बित नवीन कार्य की योजना क्रियान्वित होगी, लाभ के अवसरों एवं, भौतिक सुख संसाधनों में वृद्धि होगी। रोजगार परक योजनाएं फलीभूत होंगी किन्तु उत्तरार्ध में शारीरिक कष्ट, वृथाभ्रमण, ऊर्जाक्षय, आय-व्यय में

असन्तुलन से मन खिन्न रहेगा। १३, १४, २०, २१, ३०, ३१ मई ९, १०, १८, १९, २७, २८ जून एवं ६,७, ८ जुलाई के दिन आपके अनुकूल नहीं रहेंगे।

श्रावण-भाद्रपद (११ जुलाई से ७ सितम्बर २०२५ ई. तक)

यह समय आपके लिए अपेक्षाकृत संघर्ष पूर्ण रहेगा राशि सूर्य पर अष्टमस्थ शनि की पूर्ण दृष्टि के कारण पारिवारिक व आर्थिक स्थिति में उतार-चढ़ाव का सामना करना पड़ेगा। परिवार कुटुम्ब में विवादित प्रसंगों के कारण अंतर्विरोध उत्पन्न होगा, पूर्व विचारित कार्यों में असफलता हाथ लगेगी, सन्तान की शिक्षा पर व्यय की अधिकता से मन खिन्न रहेगा, व्यवसाय में आकस्मिक हानि से आय के स्त्रोत संकुचित होने लगेगें। पति-पत्नी में मतभेद से दाम्पत्य सुख न्यून रहेगा। १५, १६, १७, २४, २५ जुलाई एवं ३, ४, १२, १३, २१, २२ अगस्त के दिन आपके अनुकूल नहीं रहेंगे।

आश्विन-कार्तिक (८ सितम्बर से ५ नवम्बर २०२५ ई. तक)

यह समय आपके लिए मिश्रित फलदायक रहेगा, मासारम्भ में कार्य क्षेत्र व व्यापार में सक्रियता एवं उत्साह में वृद्धि रहेगी, लाभांश प्राप्ति के पूर्वानुबन्धो को पूर्ण करने हेतु किए गए प्रयास एवं प्रयत्न सफल होंगे, छोटे भाई का सहयोग प्राप्त होगा। माता का भी पुश्तैनी सम्पत्ति एवं भूमि भवन वाहन सम्बन्धी कठिनाईयां होते हुए भी किञ्चित विलम्ब से सफलता प्राप्त होगी, बन्धु बान्धवों में, यश, मान-सम्मान में वृद्धि रहेगी। ८, ९, १०, १७, १८, २७, २८ सितम्बर ६, ७, १४, १५, २४, २५ अक्टूबर एवं २, ३, नवम्बर के दिन आपके अनुकूल नहीं रहेंगे।

मार्गशीर्ष पौष (६ नवम्बर २०२५ ई. से ३ जनवरी २०२६ ई. तक)

यह समय आपके लिए मिश्रित फलदायक रहेगा, मासारम्भ में सन्तान पक्ष से चिन्ता, शिक्षा में व्यवधान, शारीरिक एवं मानसिक कष्ट रहेगा कार्य क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा से कठोर परिश्रम की अपेक्षा रहेगी, शत्रु पक्ष की योजनाएं विफल रहेंगीं, सेवारत व्यक्तियों के स्थानान्तरण के कारण लाभकारी परिवर्तन के योग बनेंगे।, उत्तरार्द्ध में स्वास्थ्य शिथिल रहेगा, उदर-विकार,निम्नोच्च रक्तचाप, हृदयशूल से स्वास्थ्य रक्षा आवश्यक होगी। १०, ११, १२, २०, २१, २२, २९, ३० नवम्बर एवं ७, ८, ९, १७, १८, २७, २८ दिसम्बर के दिन आपके अनुकूल नहीं रहेंगे।

माघ-फाल्गुन-चैत्र कृष्ण पक्ष (४ जनवरी से १९ मार्च २०२६ ई. तक)

यह समय अपेक्षाकृत आपके लिए संघर्ष पूर्ण ही रहेगा, षष्ठेश- सप्तमेश शनि के राशि से अष्टम स्थान में होने से पति -पत्नी से अकारण वाद-विवाद व लड़ाई-झगड़े से मानसिक कष्ट रहेगा दाम्पत्य सुख में न्यूनता रहेगी, अलगाव की स्थिति भी बन सकती है कार्यक्षेत्र एवं व्यवसाय से जुड़े अनुबन्धों को पूर्ण न कर पाने की स्थिति में वित्तीय समस्याओं व न्यायालय आदि विवादों की स्थिति बन सकती है आकस्मिक पास-दूर की यात्राएं धनहानि के साथ-साथ शारीरिक एवं मानसिक कष्ट का कारण बनेगी। ४, ५, १३, १४, १५, २३, २४, ३१ जनवरी १, १०, ११, १९, २०, २८ फरवरी एवं १, ९, १०, १८ मार्च के दिन आपके अनुकूल नहीं रहेंगे।

कन्या (VIRGO) टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो

यह वर्ष आपके लिए मिश्रित फलदायक रहेगा, वर्षारम्भ मे राशीश बुध अपनी नीच राशि मीन में, वक्री गति से संचरण करता हुआ शनि से युति करेगा, अतः स्वास्थ्य, दाम्पत्य एवं कार्य क्षेत्र के लिए यह समय अनुकूल नहीं रहेगा, ७ मई से २३ मई तक राशीश बुध राशि से अष्टम स्थान में अपनी शत्रु राशि मेष में संचरण करेगा, अत यह समय कठिन एवं संघर्ष पूर्ण रहेगा, अभीष्ट सिद्धि व कार्य क्षेत्र में अनेक व्यवधान उत्पन्न होंगे, स्वास्थ्य भी शिथिल रहेगा, वृथाभ्रमण व अनापेक्षित यात्राएं मानसिक एवं आर्थिक कष्ट देगी, परिवार एवं दाम्पत्य सौख्य की भी न्यूनता रहेगी, ६ जून से राशीश बुध अपनी दूसरी राशि मिथुन में दशम स्थान में रहेगा यह समय कार्य व्यवसाय में उन्नति प्रदान करेगा, रोजगार सम्बन्धी नवीन योजनाएं क्रियान्वित होंगी, उत्साह व पराक्रम में वृद्धि रहेगी, कार्यक्षेत्र में अभ्युदय के योग बनेंगे एवं लाभ के अवसरों में वृद्धि होगी, स्वजनों में मान सम्मान की प्राप्ति होगी।सम्पूर्ण वर्ष केतु कन्या राशि पर ही संचरण करेगा अतः उतार चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी, इस वर्ष १८ जुलाई से ११ अगस्त तक कर्क राशि में १० नवम्बर से २९ नवम्बर तक वृश्चिक राशि और २६ फरवरी से वर्षान्त तक कुम्भ राशि में राशीश बुध वक्र गति से संचरण करेगा अरिष्ट परिहार हेतु गणेश अर्चना एवं शिवोपासना श्रेयस्कर रहेगी।

चैत्र शुक्ल पक्ष-वैशाख (दि. ३० मार्च से १२ मई २०२५ ई. तक)

यह समय आपके लिए मिश्रित फलदायक रहेगा। मासारम्भ में स्वास्थ्य किञ्चित शिथिल रहेगा, उदर-पीड़ा, वातपित्त कफ, विषमज्वर एवं मौसमी संक्रमण से शारीरिक कष्ट रहेगा राशीश बुध के नीच राशि में वक्री संचरण से, कार्यक्षेत्र में बनते कार्यों में व्यवधान एवं व्यवसाय में अल्प लाभांश से हृदय विचलित रहेगा गृह दायित्वों में अधिक व्यय के कारण आर्थिक स्थिति संतोषजनक नहीं रहेगी। अनावश्यक विवादों के कारण मानसिक तनाव रहेगा। शत्रुपक्ष से कठिन प्रतियोगिताओं का सामना करना पड़ेगा। शत्रुपक्ष प्रबल होकर लाभ मार्गों को प्रभावित करेगा मासान्त में निकटजनों के सहयोग से एवं दूर समीप की यात्राओं से आवश्यक कार्य सम्पन्न होने लगेगें। ८, ९, १८, १९, २७, २८ अप्रैल एव ५, ६, ७ मई के दिन आपके अनुकूल नहीं रहेंगे।

ज्येष्ठ-आषाढ़ (१३ मई से १० जुलाई २०२५ ई. तक)

यह समय अपेक्षाकृत उत्तम फलदायक रहेगा, मित्रों बन्धु बान्धवों के सहयोग से कार्यक्षेत्र व व्यवसाय में सफलता प्राप्त होगी, लाभमार्ग में वृद्धि,धनागम के अनेक योग बनेंगे, मनोवांछित फल मिलने से मन प्रसन्न रहेगा, धनसञ्चय से आर्थिक स्थिति मजबूत बनेगी, कई नवीन रोजगार परक योजनाएं फलीभूत होंगी, समाज में मान सम्मान की प्राप्ति एवं वर्षों से लम्बित मनोकामनाएं पूर्ण होंगी, परिवार के लिए भी यह समय अनुकूल रहेगा। १५, १६, १७, २४, २५ मई, १, २, ३, ११, १२, १३, २०, २१, २९, ३० जून एवं ९, १० जुलाई के के दिन आपके अनुकूल नहीं रहेंगे।

श्रावण-भाद्रपद (११ जुलाई से ७ सितम्बर २०२५ ई. तक)

यह समय आपके लिए उत्तम फलदायक रहेगा, कार्य-व्यवसाय में नवीन रोजगार की लम्बित योजनाएं क्रियान्वित होंगी,कार्य क्षेत्र में वृद्धि हेतु विदेशगमन भी लाभप्रद रहेगा भूमि भवन से सम्बन्धित कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। नवीन अनुबन्ध लाभकारी सिद्ध होगें, सन्तान व पत्नी की ओर से भी हर्ष व सन्तुष्टि रहेगी। भौतिक सुख संसाधनों में वृद्धि होगी, वर्षों से इच्छित मनोकामना पूर्ण होगी। मनोरंजन पर व्ययाधिक्य होगा और स्वास्थ्य भी उत्तम रहेगा। १८, १९, २६, २७ जुलाई ५, ६, ७, १४, १५, २३, २४ अगस्त एवं २, ३, सितम्बर के दिन आपके अनुकूल नहीं रहेंगे।

आश्विन-कार्तिक (८ सितम्बर से ५ नवम्बर २०२५ ई. तक)

यह समय आपके लिए उत्तम फलदायक रहेगा। राशीश स्वोच्च राशि कन्या में संचरण करेगा, अतः अनेक रुके हुए कार्य सिद्ध होंगे, व्यापार एवं कार्य क्षेत्र में आशानुकूल परिवर्तन होगा। लाभ के अनेक मार्ग प्रशस्त होंगे व्यावसायिक क्षेत्र में प्रचुर मात्रा में धनागम एवं आय के विभिन्न स्रोतों में वृद्धि होगी। व्यय की मात्रा में कमी आएगी और उचित स्थान पर ही होगा, शत्रुपक्ष भी परास्त होगा, धन सञ्चय से मन प्रसन्न रहेगा, स्वास्थ्य भी उत्तम रहेगा, पारिवारिक सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टि से यह समय उत्तम रहेगा, परिवार एवं कुटुम्ब में मांगलिक कार्यों के आयोजनों से वातावरण हर्षित रहेगा। ११, १२, १९, २०, २१, २९, ३० सितम्बर ८, ९, १६, १७, १८, २६, २७, २८ अक्टूबर एवं ४ नवम्बर के दिन आपके अनुकूल नहीं रहेंगे।

मार्गशीर्ष पौष (६ नवम्बर २०२५ ई. से ३ जनवरी २०२६ ई. तक)

यह समय आपके लिए अनुकूल फलदायक रहेगा भातृपक्ष से सहयोग रहेगा, कार्यक्षेत्र एवं व्यवसाय में पराक्रम वह उत्साह बना रहेगा भूमि-भवन-वाहन सम्बन्धी योजनाएं फलीभूत होंगी, कार्यक्षेत्र में मातृपक्ष से सहभागिता लाभप्रद रहेगी, पैतृक-सम्पत्ति के विवाद का अंत होकर अंश प्राप्त होगा, रोजगार में उन्नति एवं धनागम के मार्ग प्रशस्त होंगे पत्नी/पति व सन्तान पक्ष से सन्तोष रहेगा। ५, १३, १४,२३ नवम्बर एवं १, २, १०, ११, १९, २०, २१, २९, ३० दिसम्बर के दिन आपके अनुकूल नहीं रहेंगे।

माघ-फाल्गुन-चैत्र कृष्ण पक्ष (४ जनवरी से १९ मार्च २०२६ ई. तक)

यह समय आपके लिए मिश्रित फलदायक रहेगा कार्यक्षेत्र व व्यवसाय में साझेदारी के नवीन अनुबन्ध हस्ताक्षरित होगें, धनागम के नए-नए स्रोतों से लाभ मार्ग प्रशस्त होंगे, सन्तान की शिक्षा- दीक्षा के लिए व्ययाधिक्य होगा, किन्तु उपलब्धियों से मन प्रसन्न रहेगा। मासान्त में शत्रु पक्ष के षडयन्त्रों से विचलित रहेंगे, स्वास्थ्य भी थोड़ा नरम रहेगा। उदर-पीड़ा, स्पॉन्डिलाइटिस, विषमज्वर एवं मौसमी संक्रमणों के कारण शारीरिक कष्ट रहेगा आलस्य की भी अधिकता रहेगी। ६, ७, १६, १७, २५, २६ जनवरी २, ३, ४, १२, १३, १४, २१, २२, २, ३, ११, १२, १३ फरवरी एवं मार्च के दिन आपके अनुकूल नहीं रहेंगे।

तुला (LIBRA) रा, री, रू, रे, रो, ता, ति, तू, ते।

यह वर्ष आपके लिए मिश्रित फलदायक रहेगा। वर्षारम्भ में राशीश शुक्र मीन राशि पर राशि से षष्ठ स्थान पर वक्री रहेगा फलस्वरुप यह समय शारीरिक एवं मानसिक कष्टदायक रहेगा, ३१ मई को राशीश शुक्र सप्तम स्थान में सञ्चरण करेगा और राशि को पूर्ण दृष्टि से देखेगा अतः पति-पत्नी में सामंजस्य और वैचारिक मतैक्य के कारण दाम्पत्य सुख में वृद्धि रहेगी, सम्पूर्ण वर्ष चतुर्थेश-पञ्चमेश शनि, राशि से छठे स्थान पर मीन राशि में संचरण करेगा अतः भूमि-भवन-वाहन सम्बन्धी समस्याएं होते हुए भी गृहप्रवेश का सौख्य मिलेगा, मातृ पक्ष से सहयोग रहेगा सन्तान की उच्चशिक्षा के योग बनेंगे, २१ अगस्त से राशीश शुक्र दशम स्थान में स्थित उच्च के गुरु के साथ युति करेगा, तृतीयेश-षष्ठेश गुरु दशम स्थान में कार्य व्यवसाय को उन्नति प्रदान करेगा, फलस्वरुप कार्य क्षेत्र में पराक्रम व कार्यशैली से उत्साह बना रहेगा व्यापार में लाभ के स्रोत बने रहेंगे। लगातार लाभ प्राप्ति से कार्य क्षेत्र में आर्थिक एवं मानसिक सन्तुष्टि एवं स्थिरता रहेगी। देश-विदेश में पर्यटन के सुअवसर प्राप्त होंगे। अरिष्ट परिहार हेतु मां भगवती की आराधना श्रेयस्कर रहेगी।

चैत्र शुक्ल पक्ष- वैशाख (दि. ३० मार्च से १२ मई २०२५ ई. तक)

यह समय आपके लिए संघर्षपूर्ण रहेगा मासारम्भ में राशीश,राशि से छठे स्थान में मीन राशि पर उच्च अवस्था में रहेगा किन्तु वक्री होने के कारण स्वास्थ्य शिथिल रहेगा, कण्ठ, नासिका, चक्षुरोग कष्ट प्रदान करेंगे। कार्य-व्यवसाय व रोजगार के क्षेत्र में वृथा दौड़-धूप रहेगी, अनायास व्यवधान उत्पन्न होंगे। कार्य क्षेत्र में कठिन प्रतियोगिता एवं शत्रु पक्ष के षडयंत्रों के कारण मानसिक तनाव रहेगा, लाभाँश हेतु कठोर परिश्रम अपेक्षित रहेगा। १, २, १०, ११, १२, २०, २१, २२, २९, ३० अप्रैल एवं ८, ९, मई के दिन आपके अनुकूल नहीं रहेंगे।

ज्येष्ठ-आषाढ़ (१३ मई से १० जुलाई २०२५ ई. तक)

यह समय आपके लिए मिश्रित फलदायक रहेगा, मासारम्भ में राशीश शुक्र सप्तम स्थान से राशि को पूर्ण दृष्टि से देखेगा, अतः पति-पत्नी में सामंजस्य एवं स्नेह रहेगा व दाम्पत्य सुख में वृद्धि होगी। कार्य व्यवसाय में विदेशी कंपनियों के साथ मनोनुकूल अनुबन्ध हस्ताक्षरित होंगे, रोजगार सम्बन्धी नवीन योजनाएं क्रियान्वित होंगी। उतरार्द्ध में लाभांश लम्बित होने से तनाव रहेगा। १८, १९, २६, २७, मई ४,५, १४, १५, २२, २३ जून एवं १, २, ३, जुलाई के दिन आपके अनुकूल नहीं रहेंगे।

श्रावण-भाद्रपद (११ जुलाई से ७ सितम्बर २०२५ ई. तक)

यह समय आपके लिए मिश्रित फलदायक रहेगा मासारम्भ में व्यवसाय एवं कार्यक्षेत्र में हुए अनुबन्धों में किंञ्चित व्यवधान पड़ेंगे व लाभांश लम्बित होगा अन्य कार्य योजनाओं में धन निवेश सोच विचार कर करें उत्तरार्द्ध में समय अनुकूल रहेगा,लम्बित धन की प्राप्ति होगी लाभमार्ग प्रशस्त होंगे धर्म-कर्म आध्यात्म में रुचि बढ़ेगी, शोभा यात्राओं व तीर्थ यात्राओं का सुअवसर प्राप्त होगा, देश-विदेश की यात्राएं कार्य व्यवसाय के लिए हितकारी रहेगी, लिए गए निर्णयों पर संतोष रहेगा। ११, १२, २०, २१, २८, २९ जुलाई, ८, ९, १६, १७, २५, २६, २७, अगस्त एवं ४,५, सितम्बर के दिन आपके अनुकूल नहीं रहेंगे।

आश्विन-कार्तिक (८ सितम्बर से ५ नवम्बर २०२५ ई. तक)

यह समय आपके लिए मिश्रित फलदायक रहेगा कार्य क्षेत्र में उत्तम लाभ प्राप्ति धनागम में वृद्धि व नवीन योजनाओं के क्रियान्वयन से मन प्रसन्न रहेगा। व्यवसाय की नवीन योजनाएं फलीभूत होगी धन सञ्चय से आर्थिक स्थिरता रहेगी,मनोवांछित वातावरण एवं भौतिक सुख- सुविधाओं का सौख्य रहेगा। उत्तरार्द्ध में राशीश शुक्र अपनी नीच राशि कन्या में राशि से द्वादश स्थान में संचरण करेगा, अतः आर्थिक, मानसिक एवं शारीरिक समस्याएं उत्पन्न होगी, आय-व्यय का सन्तुलन प्रभावित होगा, भौतिक संसाधनों पर व्यय नियन्त्रित करना पड़ेगा, नेत्ररोग, उदर-पीड़ा, प्रमेह आदि रोगों से स्वास्थ्य रक्षा आवश्यक होगी। १३, १४, २२, २३, सितम्बर एवं १, २, ३, १०, ११, १९, २०, २९, ३०, अक्टूबर के दिन आपके अनुकूल नहीं रहेंगे।

मार्गशीर्ष पौष (६ नवम्बर २०२५ ई. से ३ जनवरी २०२६ ई. तक)

यह समय आपके लिए उत्तम फलदायक रहेगा। मासारम्भ में शारीरिक एवं व्यवहारिक कर्तव्यों को सम्पन्न करने में सफल रहेंगे, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा,कार्यक्षेत्र में किए गए प्रयास उत्तम लाभ प्रदान करेंगे, धनागम में वृद्धि व नवीन योजनाओं के

क्रियान्वयन से मन प्रसन्न रहेगा, रोजगार के विस्तार सम्बन्धी योजनाएं फलीभूत होगी, धन सञ्चय से आर्थिक स्थिरता रहेगी, पराक्रम व कार्यशैली में वृद्धि से उत्साह बना रहेगा आय-व्यय का सन्तुलन व्यवस्थित रहेगा, लाभांश के लम्बित कार्य सिद्ध होंगे, प्रतिष्ठित जनों से सम्पर्क बढ़ेगा, मान-सम्मान में वृद्धि होगी, परिवार मैं मांगलिक कार्यों का आयोजन होगा। कुटुम्ब में परस्पर स्नेह और सौहार्द का वातावरण रहेगा। ६, ७, १५, १६, १७, २५, २६, नवम्बर ३, ४, १२, १३, २२, २३, ३१, दिसम्बर एवं १ जनवरी के दिन आपके अनुकूल नहीं रहेंगे।

माघ-फाल्गुन-चैत्र कृष्ण पक्ष (४ जनवरी से १९ मार्च २०२६ ई. तक)

यह समय आपके लिए उत्तम फल प्रदान करने वाला रहेगा, मित्र-बन्धु बान्धवों के सहयोग से व्यवसाय एवं व्यापार में लाभ और उन्नति के योग प्रशस्त होंगे, रोजगार की नवीन योजनाएं क्रियान्वित होंगी कार्य क्षेत्र में उत्तरोत्तर सफलता व धनागम से मन प्रसन्न रहेगा स्त्री पक्ष से भी सन्तुष्टि रहेगी, पूर्व नियोजित भूमि-भवन-वाहन सम्बन्धी योजनाएं क्रियान्वित होंगी, नवीन कार्यस्थल निर्माण से आत्मबल उच्च रहेगा। मातृपक्ष व भ्रातृपक्ष से प्रेम व सौहार्द रहेगा। १, ८, ९, १०, १८, १९, २०, २७, २८ जनवरी ५, ६, १५, १६, २३, २४, २५ फरवरी एवं ४, ५, १४, १५ मार्च के दिन आपके अनुकूल नहीं रहेंगे

वृश्चिक (SCORPIO) तो, न, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू।

यह वर्ष आपके लिए मिश्रित फलदायक रहेगा वर्षारम्भ में राशीश मंगल कर्क राशि में भाग्य स्थान में नीच अवस्था में रहेगा। फलस्वरुप क्रोधाधिक्य, वाद-विवाद, भ्रातृ पक्ष से असहयोग, बन्धु बान्धवों से मनमुटाव शिरशूल नीचोच्च रक्तचाप, मांसपेशियों में पीड़ा, उदर-विकार संधिवातादि समस्याओं से शरीर शिथिल रहेगा। वहीं द्वितीयेश-पञ्चमेश गुरु अपनी उच्च राशि कर्क में राशि से नवम स्थान, भाग्य स्थान में संचरण करेगा। फलस्वरूप उच्च का गुरु धनागम एवं लाभ के मार्ग प्रशस्त करेगा। परिवार कुटुम्ब में मांगलिक कार्य एवं धार्मिक अनुष्ठानों से मन प्रसन्न रहेगा, सन्तान पक्ष की शिक्षा एवं रोजगार सम्बन्धी योजनाएं फलीभूत होंगी। विदेश में शिक्षा हेतु समीप -दूर की यात्राएं शुभफलप्रद होंगी। ७ जून से राशीश मंगल, दशम स्थान में सिंह राशि पर रहेगा, अतः उच्च प्रतिष्ठित अधिकारियों के सम्पर्क से मान सम्मान में वृद्धि, कार्य क्षेत्र में सफलता व्यवसाय में उन्नति एवं नवीन रोजगारों के अवसर प्राप्त होंगे शिक्षा के क्षेत्र में सफलता प्राप्ति के योग बनेंगे, वर्षों से लम्बित कार्यक्षेत्र की योजनाएं, क्रियान्वित होंगी, २८ जुलाई से मंगल एकादश स्थान में कन्या राशि में संचार करेगा, फलस्वरुप लाभ प्राप्ति के मनोवांछित फल, भौतिक सुख-सुविधाओं का सौख्य एवं धनवृद्धि के मार्ग प्रशस्त होंगे। १३ सितम्बर से राशीश मंगल राशि से द्वादश स्थान में तुला राशि में संचार करेगा। व्ययाधिक्य, वृथाभ्रमण एवं अनावश्यक यात्राओं से मन खिन्न रहेगा, पति पत्नी से वैचारिक मतभेद के कारण अनबन रहेगी २७ अक्टूबर से राशीश मंगल, वृश्चिक राशि में स्थित रहेगा, यह समय शारीरिक मानसिक एवं आर्थिक रूप से उत्तम फल देने वाला रहेगा। ७ दिसम्बर से मंगल राशि से द्वितीय स्थान धनु राशि में संचरण करेगा। यह समय कार्य व्यवसाय से उत्तम लाभ प्राप्ति प्रदान करने वाला रहेगा। धनवृद्धि व नवीन योजनाओं के क्रियान्वयन से मन प्रसन्न रहेगा। रोजगार की नवीन योजनाएं फलीभूत होंगी धनसञ्चय से आर्थिक स्थिरता रहेगी आय-व्यय का सन्तुलन व्यवस्थित रहेगा। १६ जनवरी से राशीश मंगल अपनी उच्च राशि मकर में तृतीय स्थान में संचरण करेगा अतः भ्रातृपक्ष से सहयोग, पराक्रम एवं उत्साह में वृद्धि रहेगी। २३ फरवरी को राशीश मंगल चतुर्थ स्थान में राहु से युति करेगा फलस्वरुप भूमि-भवन-वाहन सम्बन्धी योजनाएं लम्बित रहेगी। मातृपक्ष से पुश्तैनी सम्पत्ति हेतु विरोध रहेगा। अरिष्ट परिहार हेतु हनुमदुपासना श्रेयस्कर रहेगी, शनि का दान (काला वस्त्र, लौहपात्र) लाभप्रद रहेगा।

चैत्र शुक्ल पक्ष-वैशाख (दि. ३० मार्च से १२ मई २०२५ ई. तक)

यह समय आपके लिए उत्तम फलदायक रहेगा। मासारम्भ में नीचस्थ मंगल भाग्य स्थान में कर्क राशि में उच्चस्थ मित्र गुरु से युति करेगा। गुरु की विशेष दृष्टि, राशि व पञ्चम स्थान पर भी रहेगी। अतः स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, सन्तान पक्ष से सौख्य, परिवार में मांगलिक कार्यों का आयोजन होगा, समाज के कल्याणकारी कार्यों में

अग्रणी रहेंगे, धार्मिक एवं आध्यात्मिक कार्यों में अभिरुचि बढ़ेगी। अनुष्ठानों एवं शोभा यात्राओं में सहभागिता रहेगी। भ्रातृ पक्ष से सहयोग रहेगा। ३, ४, १३, १४, २३, २४, अप्रैल १, २, १०, ११, १२, मई के दिन आपके अनुकूल नहीं रहेंगे।

ज्येष्ठ -आषाढ़ (१३ मई से १० जुलाई २०२५ ई. तक)

यह समय आपके लिए उत्तम फलदायक रहेगा, मासारम्भ में शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, सामाजिक सौख्य रहेगा। राजकीय स्तर पर मान-सम्मान यश प्राप्त होगा और उन्नति के अनेक मार्ग प्रशस्त होंगे, द्रव्य सञ्चय एवं धनागम के मार्ग उत्तरोत्तर विकसित होंगे कार्य व्यवसाय सम्बन्धी अनेक योजनाएं क्रियान्वित होंगी, आय के विभिन्न स्रोतों से धनागम बना रहेगा। मनोवांछित फल प्राप्ति से मन प्रसन्न रहेगा। २०, २१, २८, २९, मई, ६, ७, ८, १६, १७, २४, २५, २६ जून एवं ४, ५, जुलाई के दिन आपके अनुकूल नहीं रहेंगे।

श्रावण -भाद्रपद (११ जुलाई से ७ सितम्बर २०२५ ई. तक)

यह समय आपके लिए मिश्रित फलदायक रहेगा मासारम्भ में व्यय की अधिकता रहेगी। कार्य व्यवसाय सम्बन्धी छोटी-बड़ी आकस्मिक यात्राएं करनी पड सकती है। जिससे स्वास्थ्य भी प्रभावित होगा।उत्तरार्द्ध में बनते कार्यों में विघ्न बाधाओं की स्थिति रहेगी जिससे मन खिन्न रहेगा। कार्य क्षेत्र व रोजगार सम्बन्धी वाद विवादों से उत्पन्न कठिनाइयां विचलित करेंगी। वातावरण प्रतिकूल रहेगा। १३, १४, २२, २३, ३१, जुलाई १, २, १०, ११, १८, १९, २०, २८, २९, अगस्त एवं ६, ७, ८, सितम्बर के दिन आपके अनुकूल नहीं रहेंगे।

आश्विन-कार्तिक (८ सितम्बर से ५ नवम्बर २०२५ ई. तक)

यह समय आपके लिए पूर्वापेक्षा शुभ फलदायक रहेगा। मासारम्भ में पूर्व लम्बित समस्याओं का समाधान होगा। उचित दिशा में किया गया परिश्रम आपके लाभांश में वृद्धि करेगा। कार्य क्षेत्र व व्यापार में सफलता मिलेगी, भौतिक सुख सुविधाओं की पूर्ति होगी, धनागम के अनेक मार्ग प्रशस्त होंगे, कुटुम्ब परिवार में सुख व सौहार्द का वातावरण बना रहेगा। धन सञ्चय से मन प्रसन्न रहेगा। १५, १६, २४, २५, २६ सितम्बर ४,५, १२, १३, २१, २२, २३, ३१ अक्टूबर एवं, १ नवम्बर के दिन आपके अनुकूल नहीं रहेंगे।

मार्गशीर्ष पौष (६ नवम्बर २०२५ ई. से ३ जनवरी २०२६ ई. तक)

यह समय आपके लिए अनुकूल फलदायक रहेगा मासारम्भ में धनागम के नवीन मार्ग प्रशस्त होंगे। सञ्चित धन में वृद्धि होगी, पिता द्वारा पूर्व में किया गया निवेश द्विगुणित होने से परिवार में उत्साह का वातावरण रहेगा, कार्य क्षेत्र व व्यवसाय में कठिन प्रतियोगिता के उपरान्त भी उपलब्धियों से मन में उत्साह बना रहेगा उत्तरार्द्ध में रोजगार सम्बन्धी अनुकूल सफलता मिलेगी। लाभ के अवसर बनेंगे मान सम्मान में वृद्धि होगी। आय के विभिन्न साधनों से धनागम होगा। धन सञ्चय से मनोबल उच्च रहेगा। ८, ९, १८, १९, २७, २८, नवम्बर ५, ६, १४, १५, १६, २४, २५ दिसम्बर एवं २, ३, जनवरी के दिन आपके अनुकूल नहीं रहेंगे।

माघ-फाल्गुन-चैत्र कृष्ण पक्ष (४ जनवरी से १९ मार्च २०२६ ई. तक)

यह समय आपके लिए उत्तम फलदायक रहेगा, मासारम्भ में राशीश मंगल के अपनी उच्चराशि,मकर में होने से, कार्य क्षेत्र व व्यापार में धन लाभ उत्साह व पराक्रम के बल पर असंभव कार्यों को भी संभव कर पाने में सफल रहेंगे। भ्रातृपक्ष से सहयोग, बन्धु -बान्धवों में मान सम्मान प्राप्त होगा, भ्रमण व पर्यटन के सुअवसर प्राप्त होंगे, रोजगार की नवीन योजनाओं के फलीभूत होने के परिणामस्वरूप निरंतर लाभ प्राप्ति से स्फूर्ति व ऊर्जा में वृद्धि रहेगी भूमि-भवन-वाहन का सौख्य रहेगा, मातृपक्ष से पुश्तैनी सम्पत्ति का लाभ प्राप्त होगा। ११, १२, २१, २२, २९, ३०,जनवरी ७, ८, ९, १७, १८, २६, २७ फरवरी एवं ६, ७, ८, १६, १७, मार्च के दिन आपके अनुकूल नहीं रहेंगे।

धनु (SAGITTARIUS) ये, यो, भा, भी, भू, ध, फ, द

यह वर्ष आपके लिए मिश्रित फलदायक रहेगा, वर्षारम्भ मे राशीश गुरु राशि से छठे स्थान में संचरण करेगा और द्वितीयेश-तृतीयेश शनि की चतुर्थ स्थान से विशेष तृतीय दृष्टि से दृष्ट रहेगा, फलस्वरुप स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याएं कार्य क्षमता को प्रभावित करेंगीं, उदरपीड़ा, टाइफाइड, प्लीहा, आंत्रशोध, कफाधिक्य, एड़ी-

चरणों में पीड़ा, पीलिया आदि रोगों से बचाव व उपचार अपेक्षित रहेगा, मातृपक्ष से असहयोग रहेगा, भूमि-भवन-वाहन सम्बन्धी राजकीय एवं न्यायालय व्यवस्था सम्बन्धी समस्याओं में धन व समय व्यर्थ होगा। १४ मई को राशीश गुरु मिथुन राशि में संचरण करेगा, राशि को पूर्ण दृष्टि से देखेगा, अतः स्वास्थ्य उत्तम रहेगा भूमि-भवन-वाहन सम्बन्धी राजकीय समस्याओं से छुटकारा मिलेगा। १८ अक्टूबर से राशीश गुरु अपनी उच्च राशि कर्क में संचरण करेगा और राशि को पूर्ण दृष्टि से देखेगा अतः स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, पति-पत्नी में सौहार्द रहेगा, दाम्पत्य सुख में वृद्धि रहेगी, वित्त व्यवस्था अनुकूल रहेगी, वर्षान्त में राशीश गुरु ११ नवम्बर २०२५ से, ११मार्च २०२६ तक कर्क राशि में वक्री रहेगा, फलस्वरुप उदासीन रहेगा। अरिष्टनिवारण हेतु कदलीवृक्ष पूजन एवं विष्णुसहस्रनाम का पाठ श्रेयस्कर रहेगा।

चैत्र शुक्ल पक्ष-वैशाख (दि. ३० मार्च से १२ मई २०२५ ई. तक)

यह समय आपके लिए मिश्रित फलदायक रहेगा सन्तान की उच्चशिक्षा शिक्षा हेतु सुअवसर प्राप्त होंगे, किए गए प्रयास सफल होंगे, मनोवांछित फल प्राप्त होने से मन प्रसन्न रहेगा, किन्तु पिता-पुत्र में वैचारिक मतभेद के कारण मन अशांत रहेगा। कार्यक्षेत्र व व्यापार में अपेक्षाकृत कम सफलता रहेगी, शत्रुपक्ष की कुटिल चालों के कारण, लाभ मार्ग किञ्चित अवरुद्ध रहेंगे। पति-पत्नी का सहयोग रहेगा। उत्तरार्द्ध में स्वास्थ्य किञ्चित नरम रहेगा, टायफायड, पीलिया एवं वातकफ-विकार से शरीररक्षा आवश्यक होगी। ५, ६, ७, १५, १६, १७, २५, २६ अप्रैल एवं ३, ४ मई के दिन आपके अनुकूल नहीं रहेंगे।

ज्येष्ठ -आषाढ़ (१३ मई से १० जुलाई २०२५ ई. तक)

यह समय आपके लिए मिश्रित फलदायक रहेगा, मासारम्भ में दाम्पत्य सुख में वृद्धि रहेगी, पति-पत्नी में सौहार्द रहेगा, मातृ पक्ष से भी सहयोग रहेगा, कार्यक्षेत्र में किए गए, नवीन योजनाओं के अनुबन्ध फलदायक रहेंगे, व्यवसाय के विस्तार हेतु पास-दूर की यात्राएं फलदायक रहेंगी। उत्तरार्द्ध में हस्ताक्षरित अनुबन्धों में कुछ कठिनाइयां सामने आयेंगी। स्थिति चुनौती पूर्ण रहेगी, योजनाओं के लम्बित रहने से तनाव रहेगा, वाद-विवाद व्यर्थ रहेगा, व्यवसाय हेतु विदेशगमन का भी अवसर प्राप्त होगा। १३, १४, २०, २१, ३०, ३१ मई ९, १०, १८, १९, २७, २८ जून एवं ६, ७, ८, जुलाई के दिन आपके अनुकूल नहीं रहेंगे।

श्रावण-भाद्रपद (११ जुलाई से ७ सितम्बर २०२५ ई. तक)

यह समय आपके लिए उत्तम फलदायक रहेगा, मासारम्भ में दूर -समीप की यात्राएं लाभकारी रहेगी, धार्मिककृत्यों एवं आध्यात्मिक-आयोजनों में सक्रियता बढ़ेगी उत्तरार्द्ध में कार्यक्षेत्र व व्यवसाय में आशातीत उन्नति प्राप्त होगी। लाभ के अनेक स्त्रोत एवं मार्ग विकसित होंगे, समाज एवं रोजगारक्षेत्र में, मान-सम्मान से मन प्रसन्न रहेगा, व्यवसाय की स्थिरता से धन सञ्चय के भी योग बनेंगे। १५, १६, १७, २४, २५ जुलाई एवं ३, ४, १२, १३, २१, २२ अगस्त के दिन आपके अनुकूल नहीं रहेंगे।

आश्विन-कार्तिक (८ सितम्बर से ५ नवम्बर २०२५ ई. तक)

यह समय आपके लिए मिश्रित फलदायक रहेगा मासारम्भ में कार्यक्षेत्र एवं व्यवसाय के क्षेत्र में मनोवांछित फलप्राप्ति से मन प्रसन्न रहेगा,भौतिक सुख-संसाधनों का सौख्य रहेगा, वर्षों से लम्बित एवं अवरुद्ध आकांक्षाएं पूर्ण होगी किन्तु उत्तरार्ध में किञ्चित समस्याएं उत्पन्न होगी, वृथाभ्रमण एवं प्रवास से धन की हानि व अपव्ययता होगी। मातृ पक्ष का असहयोग रहेगा आय-व्यय का सन्तुलन प्रभावित होगा। मानसिक तनाव रहेगा। ८, ९, १०, १७, १८, २७, २८ सितम्बर ६, ७, १४, १५, २४,२५ अक्टूबर एवं २, ३, नवम्बर के दिन आपके अनुकूल नहीं रहेंगे।

मार्गशीर्ष पौष (६ नवम्बर २०२५ ई. से ३ जनवरी २०२६ ई. तक)

यह समय आपके लिए उत्तम फलदायक रहेगा स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, वर्षों से लम्बित अवरुद्ध कार्य सम्पन्नता को प्राप्त होंगे। भ्रातृपक्ष से सम्बन्ध सुधरेंगे, माता का भी सहयोग रहेगा कार्य क्षेत्र में सफलता एवं लाभ से आय-व्यय का सन्तुलन बना रहेगा, धनागम के मार्ग प्रशस्त होंगे, धन सञ्चय से मन प्रसन्न रहेगा, परिवार में मांगलिक कार्यों का आयोजन से कुटुम्ब में स्नेह व सौहार्द रहेगा। १०, ११, १२, २०, २१, २२, २९, ३० नवम्बर एवं ७, ८, ९, १७, १८, २७, २८ दिसम्बर के दिन आपके अनुकूल नहीं रहेंगे।

माघ-फाल्गुन-चैत्र कृष्ण पक्ष (४ जनवरी से १९ मार्च २०२६ ई. तक)

यह समय आपके लिए मिश्रित फलदायक रहेगा मासारम्भ में पराक्रम एवं उत्साह में वृद्धि रहेगी, नवीन रोजगारपरक कार्यों में सक्रिय होने से लाभ मार्ग प्रशस्त होंगे। भ्रातृपक्ष से सहयोग रहेगा,भूमि-भवन- वाहन का सुख प्राप्त होगा, उच्चशिक्षा हेतु सुअवसर प्राप्त होंगे। ४, ५, १३, १४, १५, २३, २४, ३१ जनवरी १, १०, ११, १९, २०, २८ फरवरी एवं १, ९, १०, १८ मार्च के दिन आपके अनुकूल नहीं रहेंगे।

मकर (CAPRICON) भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी।

यह वर्ष आपके लिए मिश्रित फलदायक रहेगा, सम्पूर्ण वर्ष राशीश शनि,राशि से तृतीयस्थान,मीन राशि पर संचरण करेगा, अतःपराक्रम एवं उत्साह में वृद्धि रहेगी, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, राशीश शनि सम्पूर्ण वर्ष अपनी विशेष तृतीय दृष्टि से पञ्चम स्थान को देखेगा, फलस्वरुप सन्तान पक्ष से सौख्य रहेगा, पूर्ण सप्तम दृष्टि से नवम स्थान को देखेगा अतः सन्तान की उच्चशिक्षा हेतु विदेशगमन के सुअवसर प्राप्त होंगे एवं आध्यात्मिक गतिविधियों में रूचि बढ़ेगी, विशेष दशम दृष्टि द्वादश स्थान पर रहेगी, स्वास्थ्य किञ्चित नरम रहेगा कुटुम्ब एवं परिवार में मांगलिक कार्यों, सन्तान की शिक्षा-दीक्षा एवं कार्य-व्यवसाय के विस्तार हेतु विदेश गमन में धनव्यय होगा। किन्तु धन के उचित प्रयोग से सन्तुष्टि रहेगी। १३ जुलाई से २८ नवम्बर तक शनि वक्री रहेगा और अपेक्षित फलप्रदान नहीं करेगा।अरिष्ट परिहार हेतु शनि का दान, दीपप्रज्जवलन एवं हनुमदुपासना श्रेयस्कर रहेगी

चैत्र शुक्ल पक्ष- वैशाख (दि. ३० मार्च से १२ मई २०२५ ई. तक)

यह समय आपके लिए मिश्रित फलदायक रहेगा मासारम्भ में राशीश शनि की सूर्य से युति से पिता-पुत्र में वैचारिक मतभेद के कारण वैमनस्य उत्पन्न करेगी। भ्रातृ- पक्ष से पैतृक-सम्पत्ति सम्बन्धी वाद-विवाद होंगे, उत्तरार्द्ध में कार्यक्षेत्र में सफलता,व्यवसाय में उन्नति के लाभमार्ग प्रशस्त होंगें। दूर-पास की यात्राएं लाभप्रद रहेगी,स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, पराक्रम में वृद्धि से ऊर्जावान रहेंगे कार्यक्षेत्र व्यवसाय में अच्छा लाभ प्राप्त होगा मातृपक्ष से वित्तीय सहयोग होने से बड़े स्तर पर कार्य व्यवसाय की योजनाएं कार्यान्वित होंगी। ८, ९, १८, १९, २७, २८अप्रैल एव ५, ६, ७ मई के दिन आपके अनुकूल नहीं रहेंगे।

ज्येष्ठ-आषाढ़ (१३ मई से १० जुलाई २०२५ ई. तक)

यह समय आपके लिए मिश्रित फलदायक रहेगा, मासारम्भ में सन्तान की शिक्षा व रोजगारपरक योजनाओं में व्यय होगा,भौतिक सुख संसाधनों का सौख्य रहेगा, कार्य क्षेत्र एवं व्यवसाय में शत्रुपक्ष को मात दे कर प्रतिस्पर्धा में विजयी रहेंगे। उन्नति की एक नई दिशा प्राप्त होगी, उतरार्द्ध में स्वास्थ्य किञ्चित शिथिल रहेगा, संधिवात एवं दन्त रोगों से शरीर रक्षा आवश्यक होगी। १५, १६, १७, २४, २५ मई १, २, ३, ११, १२, १३, २०, २१, २९, ३० जून एवं ९, १० जुलाई के के दिन आपके अनुकूल नहीं रहेंगे।

श्रावण -भाद्रपद (११ जुलाई से ७ सितम्बर २०२५ ई. तक)

यह समय आपके लिए मिश्रित फलदायक रहेगा मासारम्भ में पति/पत्नी से अकारण मतभेद, वाद-विवाद से दाम्पत्य-सुख में न्यूनता रहेगी। पूर्व नियोजित अनुबन्धों का क्रियान्वयन लम्बित रहेगा। कारोबार एवं व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। कार्यक्षेत्र में शत्रुपक्ष से अनावश्यक वाद-विवाद से दूर रहना ही श्रेयस्कर होगा। १८, १९, २६, २७ जुलाई ५, ६, ७, १४, १५, २३, २४ अगस्त एवं २, ३, सितम्बर के दिन आपके अनुकूल नहीं रहेंगे।

आश्विन-कार्तिक (८ सितम्बर से ५ नवम्बर २०२५ ई. तक)

यह समय आपके लिए उत्तम फलदायक रहेगा मासारम्भ में राशीश शनि की भाग्य स्थान पर पूर्ण दृष्टि होने से भाग्य बली रहेगा, कार्य सिद्धि रोजगार व व्यवसाय में सफलता, मनोनूकूल शुभफल प्राप्ति,लाभ के स्रोत प्रशस्त होंगे, भ्रातृपक्ष के सहयोग एवं श्रेष्ठ जनों के अनुग्रह से राज्यपक्ष के सहयोग से लाभप्रद नवीन योजनाएं क्रियान्वित होंगी।धनागम से मन प्रसन्न रहेगा। ११, १२, १९, २०, २१, २९, ३० सितम्बर ८, ९, १६, १७, १८, २६, २७, २८ अक्टूबर एवं ४ नवम्बर के दिन आपके अनुकूल नहीं रहेंगे।

मार्गशीर्ष पौष (६ नवम्बर २०२५ ई. से ३ जनवरी २०२६ ई. तक)

यह समय आपके लिए मिश्रित फलदायक रहेगा मासारम्भ में व्यवसाय में उन्नति, सफलता व कार्य-सिद्धि से मनोबल उच्च रहेगा, कार्यक्षेत्र में अनेक लम्बित योजनाएं कार्य रूप ले लेंगीं। किन्तु उतरार्द्ध में स्वास्थ्य किञ्चित शिथिल रहेगा, संधिवात, उदर-पीड़ा, संक्रमण जन्य समस्याओं से शरीर क्लान्त रहेगा, वृथाभ्रमण, अपव्यय से आय-व्यय का सन्तुलन प्रभावित रहेगा। ५, १३, १४, २३ नवम्बर एवं १, २, १०, ११, १९, २०, २१, २९, ३० दिसम्बर के दिन आपके अनुकूल नहीं रहेंगे।

माघ-फाल्गुन-चैत्र कृष्ण पक्ष (४ जनवरी से १९ मार्च २०२६ ई. तक)

यह समय आपके लिए उत्तम फलदायक रहेगा कार्य व्यवसाय व नवीन रोजगार की लम्बित योजनाएं क्रियान्वित होंगी व्यापार हेतु विदेश गमन भी लाभप्रद रहेगा,कुटुम्ब परिवार में मांगलिक कार्यों का आयोजन होगा कार्यक्षेत्र में अनेक स्रोतों से धनागम के मार्ग प्रशस्त होंगे भौतिक सुख संसाधनों में वृद्धि होगी, आर्थिक स्थिति मजबूत बनेगी, धनसञ्चय से मन प्रसन्न रहेगा परिवार व सन्तान पक्ष के लिए भी समय अनुकूल रहेगा धनागम के नए-नए स्रोत प्राप्त होंगे। ६, ७, १६, १७, २५, २६ जनवरी २, ३, ४, १२, १३, १४, २१, २२ एवं २, ३, ११, १२, १३ फरवरी एवं मार्च के दिन आपके अनुकूल नहीं रहेंगे।

कुम्भ (AQUARIUS) गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, द।

यह वर्ष आपके लिए मिश्रित फल प्रदान करने वाला रहेगा, सम्पूर्ण वर्ष राशीश शनि राशि से द्वितीय स्थान पर संचरण करेगा, द्वितीयेश-लाभेश गुरू वर्षारम्भ में राशि से पञ्चम स्थान में और १८ अक्टूबर से राशि से षष्ठ स्थान में उच्चावस्था में संचरण करेगा, अतः यह वर्ष आय-व्यय के उतार-चढ़ाव चढ़ाव से जीवन में आर्थिक पारिवारिक और मानसिक स्थिति को प्रभावित करेगा। किन्तु व्ययाधिक्य के पश्चात भी आय के स्रोत बने रहेंगे। व्यय किया गया धन सन्तान की शिक्षा रोजगारपरक योजनाओं, पूंजी निवेश, भूमि-भवन निर्माण एवं मांगलिक कार्यों में होने से आत्म सन्तुष्टि रहेगी, पति-पत्नी में वैचारिक मतभेद एवं असहयोग मानसिक तनाव देने वाला रहेगा। स्वास्थ्य भी किञ्चित प्रतिकूल रहेगा। वर्ष के मध्य में आकस्मिक समस्याओं व हानियां के समय कठिन एवं संघर्षपूर्ण रहेगा, मासान्त में स्थिति परिवर्तित होगी, देश-विदेश की यात्राएं लाभप्रद रहेंगी, कार्यक्षेत्र में सफलता प्राप्त होगी। अरिष्टनिवारण हेतु हनुमदुपासना एवं शनि का दान (लौहपात्र, काला वस्त्र)श्रेयस्कर रहेगा।

चैत्र शुक्ल पक्ष- वैशाख (दि. ३० मार्च से १२ मई २०२५ ई. तक)

यह समय आपके लिए उत्तम फलदायक रहेगा, मासारम्भ में पूंजी निवेश व नवीन रोजगारपरक योजनाओं के सफल होने से मनोबल उच्च रहेगा,परिश्रम का शुभफल लाभांश रूप में प्राप्त होगा। कुटुम्ब परिवार में मांगलिक कार्यों से हर्षोल्लास का वातावरण रहेगा। धन सञ्चय से मन प्रसन्न रहेगा, कारोबार व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति रहेगी आय-व्यय का सन्तुलन प्रभावित होगा। किन्तु सामाजिक व व्यावहारिक कार्यों के संचालन में कोई बाधा नहीं होगी। मासान्त में पराक्रम एवं उत्साह में वृद्धि रहेगी, पिता-पुत्र में वैचारिक मतभेद रहेगा। तथापि धनागम से मन प्रसन्न रहेगा, पति-पत्नी के सहयोग से घर का वातावरण सुख- शान्तिपूर्ण बना रहेगा। १, २, १०, ११, १२, २०, २१, २२, २९, ३० अप्रैल एवं ८, ९, मई के दिन आपके अनुकूल नहीं रहेंगे।

ज्येष्ठ -आषाढ़ (१३ मई से १० जुलाई २०२५ ई. तक)

यह समय आपके लिए मिश्रित फल प्रदान करने वाला रहेगा भूमि-भवन-वाहन एवं पैतृक -सम्पत्ति सम्बन्धी समस्याएं कष्टदायक रहेगी, धोखे से अधिक भुगतान हो सकता है, व्ययाधिक्य से आय-व्यय का सन्तुलन प्रभावित रहेगा, मासान्त में स्थिति संभलेगी, कार्य क्षेत्र में उन्नति व आय के सुअवसर प्राप्त होंगे सन्तान की शिक्षा एवं रोजगारपरक प्रशिक्षण सम्बन्धी योजनाएं फलीभूत होंगी, उन्नति एवं लाभ के मार्ग प्रशस्त होंगे। १८, १९, २६, २७, मई ४, ५, १४, १५, २२, २३ जून एवं १, २, ३, जुलाई के दिन आपके अनुकूल नहीं रहेंगे।

श्रावण-भाद्रपद (११ जुलाई से ७ सितम्बर २०२५ ई. तक)

यह समय आपके लिए मिश्रित फलदायक रहेगा मासारम्भ में भौतिक सुख संसाधनों का सौख्य रहेगा, किन्तु स्वास्थ्य किंञ्चित नरम रहेगा, दमा,राज्यक्ष्मादि श्वसनतंत्र सम्बन्धी रोग, उदरपीड़ा, संक्रमणजन्य ज्वरादि आदि रोगों से शरीररक्षा आवश्यक रहेगी, उपचार पर भी व्यय वृद्धि रहेगी। उतरार्द्ध में पति पत्नी में वैचारिक मतभेद के कारण,अनावश्यक वादविवाद दाम्पत्य सुख की हानि करेगा कार्य क्षेत्र में किए गए अनुबन्ध लम्बित रहेंगे। ११, १२, २०, २१, २८, २९ जुलाई, ८, ९, १६, १७, २५, २६, २७, अगस्त एवं ४, ५, सितम्बर के दिन आपके अनुकूल नहीं रहेंगे।

आश्विन-कार्तिक (८ सितम्बर से ५ नवम्बर २०२५ ई. तक)

यह समय आपके लिए मिश्रित फलदायक रहेगा, मासारम्भ में सक्रियता एवं पराक्रम के अभाव में कार्य क्षेत्र व व्यवसाय सम्बन्धी लाभांश लम्बित रहेगा, स्वभाव में उग्रता रहेगी,अनावश्यक वाद विवाद से कठिनाईयां बढ़ सकती हैं व्यवसाय में कठिन प्रतिस्पर्धा एवं शत्रु पक्ष के षड्यंत्रों से मानसिक व आर्थिक कष्ट रहेगा चोट चपेट की भी संभावना रहेगी, उतरार्द्ध में देश-विदेश की यात्राएं लाभप्रद रहेगी, रोजगार सम्बन्धी नवीन योजनाएं क्रियान्वित होंगी, तीर्थाटन में रूचि बढ़ेगी, धार्मिक अनुष्ठानों में सन्तुष्टि प्राप्त होगी। १३, १४, २२, २३, सितम्बर एवं १, २, ३, १०, ११, १९, २०, २९, ३०, अक्टूबर के दिन आपके अनुकूल नहीं रहेंगे।

मार्गशीर्ष पौष (६ नवम्बर २०२५ ई. से ३ जनवरी २०२६ ई. तक)

यह समय आपके लिए उत्तम फल प्रदान करने वाला रहेगा, मास के पूर्वार्ध में कार्य क्षेत्र एवं व्यवसाय में उन्नति व सफलता के अनेक मार्ग प्रशस्त होंगे। आय के विभिन्न स्रोतों से धनागम होगा, वर्षों से लम्बित कार्य सिद्ध होंगे। जीवन की अनेक अभिलाषाएं परिपूर्ण होंगी। स्वास्थ्य भी अनुकूल रहेगा, कार्य क्षेत्र व व्यवसाय में मनोनुकूल सुधार आएगा, अवरुद्ध लाभ प्राप्ति होगी तथा लम्बित कार्य सिद्ध होंगे, परिवार में सुख व शान्ति रहेगी, रोजगारपरक नवीन योजनाएं क्रियान्वित होंगी। आय के विभिन्न नवीन स्रोत प्रचुर धन प्रदान करेंगे, धन सञ्चय से मन प्रसन्न रहेगा। ६, ७, १५, १६, १७, २५, २६ नवम्बर एवं ३, ४, १२, १३, २२, २३, ३१, दिसम्बर तथा १ जनवरी के दिन आपके अनुकूल नहीं रहेंगे।

माघ-फाल्गुन-चैत्र कृष्ण पक्ष (४ जनवरी से १९ मार्च २०२६ ई. तक)

यह समय आपके लिए मिश्रित फल प्रदान करने वाला रहेगा, मासारम्भ में कार्यक्षेत्र एवं व्यवसाय में उन्नति व लाभ के मार्ग प्रशस्त होंगे वहीं व्ययाधिक्य के कारण लाभांश अल्प ही रहेगा। आय-व्यय वह का सन्तुलन प्रभावित रहेगा। मानसम्मान की हानि की संभावना बनी रहेगी। स्वास्थ्य भी किञ्चित नरम रहेगा। आलस्य की अधिकता, कार्यक्षेत्र में नुकसान पहुंचाएगी, उत्तरार्द्ध में स्थिति परिवर्तित होकर धीरे-धीरे संभलेगी, एवं उत्तरोत्तर सफलता की ओर अग्रसर होंगे। १, ८, ९, १०, १८, १९, २०, २७, २८ जनवरी ५, ६, १५, १६, २३, २४, २५ फरवरी एवं ४, ५, १४, १५ मार्च के दिन आपके अनुकूल नहीं रहेंगे।

मीन (PISCES) दी, दु, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची।

यह वर्ष आपके लिए मिश्रित फलदायक रहेगा, आरम्भ में राशीश गुरु राशि से तृतीय स्थान में १४ मई तक संचरण करेगा, तत्पश्चात मिथुन राशि में अतिचार करते हुए १८ अक्टूबर से अपनी उच्च राशि कर्क में राशि से पञ्चम स्थान में संचरण करेगा, सम्पूर्ण वर्ष मीन राशि पर शनि एवं राहु की युति रहेगी, फलस्वरुप लाभालाभ, शुभाशुभ फल के उतार-चढ़ाव से प्रभावित रहेगें, ११ नवम्बर २०२५ से ११ मार्च २०२६ तक राशीश गुरु वक्री रहेगा, अतः कालावधि में फल प्रदानार्थ उदासीन ही रहेगा। अरिष्ट परिहार हेतु विष्णुसहस्त्रनाम पाठ एवं पीली, मीठी वस्तुओ का दान श्रेयस्कर रहेगा।

चैत्र शुक्ल पक्ष-वैशाख (दि. ३० मार्च से १२ मई २०२५ ई. तक)

यह समय आपके लिए मिश्रित फलदायक रहेगा मासारम्भ में कार्य क्षेत्र में सफलता, धनागम में वृद्धि,लाभ मार्ग प्रशस्त रहेंगे, धनसञ्चय से मन प्रसन्न रहेगा, शरीर सौख्य, ऊर्जा व स्फूर्ति बनी रहेगी, परिवार में सुख कुटुम्ब में स्वजनों का

सहयोग, पति-पत्नी से सम्बन्ध मधुर रहेंगे। पराक्रम में वृद्धि एवं व्यवसायिक निपुणता से अनेक नवीन रोजगारपरक योजनाएं फलीभूत होंगी,कार्यक्षेत्र की सफलता से मनोबल उच्च रहेगा, मासान्त में भ्रातृपक्ष से वाद-विवाद रहेगा। ३, ४, १३, १४, २३, २४ अप्रैल एवं १, २, १०, ११, १२ मई के दिन आपके अनुकूल नहीं रहेंगे।

ज्येष्ठ -आषाढ़ (१३ मई से १० जुलाई २०२५ ई. तक)

यही समय आपके लिए मिश्रित फलदायक रहेगा, मासारम्भ में भूमि-भवन-वाहन सम्बन्धी पूर्व चिंतित आकांक्षाएं पूर्ण होंगीं। नवीनभवन एवं कार्यालय बनाने का सुअवसर प्राप्त होगा मातृपक्ष एवं बन्धु बान्धवों से भी सहयोग एवं सम्मान प्राप्त होगा। सन्तानपक्ष की शिक्षा एवं रोजगार से सन्तुष्टि रहेगी, व्यवसायिक प्रशिक्षण प्राप्त करने का अवसर प्राप्त होगा। २०, २१, २८, २९ मई, ६, ७, ८, १६, १७, २४, २५, २६ जून एवं ४, ५ जुलाई के दिन आपके अनुकूल नहीं रहेंगे।

श्रावण -भाद्रपद (११ जुलाई से ७ सितम्बर २०२५ ई. तक)

यह समय आपके लिए मिश्रित फलदायक रहेगा मासारम्भ में कार्य व्यापार में उन्नति हेतु शत्रुपक्ष से कठिन प्रतियोगिता का सामना करना पड़ेगा, कठोर परिश्रम व संघर्ष अपेक्षित रहेगा, स्वास्थ्य किञ्चित नरम रहेगा, कफवायुविकार, प्रमेह, टाइफाइड, पीलियाआदि रोगों से शरीररक्षा आवश्यक होगी,मासान्त में, नवीनरोजगार सम्बन्धी योजनाओं के अनुबन्ध हस्ताक्षरित होंगे, देश-विदेश की यात्राएं लाभप्रद रहेंगी, पति-पत्नी से सम्बन्ध तनावपूर्ण रहेंगे। १३, १४, २२, २३, ३१ जुलाई १, २, १०, ११, १८, १९, २०, २८, २९, अगस्त एवं ६, ७, ८ सितम्बर के दिन आपके अनुकूल नहीं रहेंगे।

आश्विन-कार्तिक (८ सितम्बर से ५ नवम्बर २०२५ ई. तक)

यह समय आपके लिए मिश्रित फलदायक रहेगा, कार्यक्षेत्र में सफलता मध्यम रहेगी, व्यवसाय में कड़ी प्रतियोगिता के कारण लाभांश न्यून रहेगा। शत्रुपक्ष के षड्यन्त्रों से लाभमार्ग बाधित होंगे पति-पत्नी से असहयोग रहेगा, कार्य व्यवसाय में सफलता हेतु देश-विदेश की निरूद्देश्य,यात्राएं होंगी, वृथाभ्रमण से मन व शरीर शिथिल रहेगा, तीर्थाटन व धार्मिक अनुष्ठानों में सन्तुष्टि प्राप्त होगी। १५, १६, २४, २५, २६ सितम्बर ४, ५, १२, १३, २१, २२, २३, ३१ अक्टूबर एवं १ नवम्बर के दिन आपके अनुकूल नहीं रहेंगे।

मार्गशीर्ष पौष (६ नवम्बर २०२५ ई. से ३ जनवरी २०२६ ई. तक)

यह समय आपके लिए उत्तम फलदायक रहेगा मासारम्भ में, कार्यक्षेत्र में सफलता, व्यवसाय में उन्नति, रोजगार सम्बन्धी नवीन योजनाओं के क्रियान्वित होने से मनोबल में वृद्धि रहेगी, सन्तान पक्ष से भी संतोष एवं प्रसन्नता रहेगी, समाज में मान सम्मान एवं कार्यक्षेत्र में प्रतिष्ठा रहेगी वर्षों से लम्बित अनेक मनोकामनाएं पूर्ण होगीं, धनसञ्चय एवं भौतिक सुख संसाधनों का सौख्य होने से मन प्रसन्न रहेगा, धनागम के अनेक मार्ग प्रशस्त होंगे। ८, ९, १८, १९, २७, २८, नवम्बर ५, ६, १४, १५, १६, २४, २५ दिसम्बर एवं २, ३, जनवरी के दिन आपके अनुकूल नहीं रहेंगे।

माघ-फाल्गुन-चैत्र कृष्ण पक्ष (४ जनवरी से १९ मार्च २०२६ ई. तक)

यह समय आपके लिए संघर्षपूर्ण रहेगा, मासारम्भ में भौतिक सुख-सुविधाओं पर किए गए व्यय के कारण, आय-व्यय का सन्तुलन प्रभावित रहेगा, अपव्यय को नियंत्रित करना होगा, दूर-पास की यात्राएं, अल्प लाभांश ही प्रदान करेंगीं, शरीर भी किञ्चित अस्वस्थ रहेगा कठिन परिश्रम एवं कड़ी प्रतियोगिता से कार्य व्यवसाय में लाभांश प्राप्त हो पाएगा, आय के मार्ग अवरूद्ध होने से मन संतप्त रहेगा, उतरार्द्ध में परिस्थितियां संभलेगी, किञ्चित राहत मिलेगी। ११, १२, २१, २२, २९, ३०, जनवरी ७, ८, ९, १७, १८, २६, २७, फरवरी एवं ६, ७, ८, १६, १७, मार्च के दिन आपके अनुकूल नहीं रहेंगे।

प्रो. नीलम ठगेला
अध्यक्ष, ज्योतिष-विभाग

विक्रम सम्वत् २०८२, ईसवीय सन् २०२५ - २६ व्रत, पर्व एवं उत्सव

चैत्र शुक्ल पक्ष (दि. ३० मार्च से १२ अप्रैल २०२५ ई.)

तिथि	दिनाङ्क	वार	व्रत, पर्व एवं उत्सव
प्रतिपदा	३० मार्च	रवि	वासन्तिक नवरात्र प्रा., घटस्थापन, गुड़ी पड़वा, युगादि, भारतीय नववर्षारम्भ, रामायण पाठ प्रा., कल्पादि, सिद्धार्थ सम्वत्सर प्रा., चन्द्रदर्शन, सिन्धारा, झूलेलाल जयन्ती।
द्वितीया/ तृतीया	३१ मार्च	सोम	गणगौरी तृतीया, मत्स्य जयन्ती (अपराह्णकाल), मन्वादि, ईद-उल-फितर।
चतुर्थी	०१ अप्रैल	मङ्गल	विनायक चतुर्थी, उत्कल दिवस।
पञ्चमी	०२ अप्रैल	बुध	रोहिणी व्रत।
षष्ठी	०३ अप्रैल	गुरु	स्कन्द षष्ठी (सायंकाल),यमुना छठ।
सप्तमी	०४ अप्रैल	शुक्र	महानिशा पूजा।
अष्टमी	०५ अप्रैल	शनि	महाष्टमी, दुर्गाष्टमी, मेला मनसा देवी, मेला बाहुफोर्ट जम्मू, सन्धि पूजा, ओली जैन प्रा.
नवमी	०६ अप्रैल	रवि	श्री रामनवमी व्रत, श्री रामावतार (मध्याह्नकाल), श्रीतारा जयन्ती, रामायण पाठ समा., नवरात्र समा., महानवमी।
दशमी	०७ अप्रैल	सोम	नवरात्र व्रत पारणा।
एकादशी	०८ अप्रैल	मङ्गल	कामदा एकादशी व्रत (स.)।
त्रयोदशी	१० अप्रैल	गुरु	प्रदोष व्रत, अनङ्ग त्रयोदशी, महावीर जयन्ती ।
पूर्णिमा	१२ अप्रैल		पूर्णिमा व्रत, सत्यव्रत, मन्वादि, सिद्धाचल यात्रा, हनुमज्जयन्ती (दाक्षिणात्य), ओली जैन समा., वैशाख स्नान प्रा.।

वैशाख कृष्ण पक्ष (दि. १३ अप्रैल से २७ अप्रैल २०२५ ई.)

तिथि	दिनाङ्क	वार	व्रत, पर्व एवं उत्सव
प्रतिपदा	१३ अप्रैल	रवि	मेष संक्रान्ति २७:२१, वैशाखी।
प्रतिपदा/ द्वितीया	१४ अप्रैल	सोम	मेष संक्रान्ति पुण्यकाल मध्याह्न तक, आर्यभट जयन्ती, अम्बेडकर जयन्ती ।
द्वितीया	१५ अप्रैल	मङ्गल	हिमाचल दिवस
तृतीया/चतुर्थी	१६ अप्रैल	बुध	चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय (२२:१४)
पञ्चमी	१८ अप्रैल	शुक्र	गुड फ्राइडे
षष्ठी	१९ अप्रैल	शनि	कोकिला षष्ठी (अपराह्न व्यापिनी)
सप्तमी	२० अप्रैल	रवि	शर्करा सप्तमी, शीतलासप्तमी,कालाष्टमी।
नवमी	२२ अप्रैल	मङ्गल	पृथ्वी दिवस
एकादशी	२४ अप्रैल	गुरु	वरूथिनी एकादशी व्रत (स.), वल्लभाचार्य जयन्ती
द्वादशी	२५ अप्रैल	शुक्र	प्रदोष व्रत।
त्रयोदशी/ चतुर्दशी	२६ अप्रैल	शनि	मास शिवरात्रि
अमावस्या	२७ अप्रैल	रवि	अमावस्या।

वैशाख शुक्ल पक्ष (दि. २८ अप्रैल से १२ मई २०२५ ई.)

द्वितीया	२९ अप्रैल	मङ्गल	चन्द्रदर्शन, परशुरामावतार(प्रदोषकाल), मातङ्गी जयन्ती (प्रदोष काल), रोहिणी व्रत।
तृतीया	३०अप्रैल	बुध	अक्षय तृतीया, त्रेतायुगादि, बद्री केदार यात्रा।
चतुर्थी	१ मई	गुरु	विनायक चतुर्थी, , श्रमिक दिवस ।
पञ्चमी	२ मई	शुक्र	आद्यगुरु शंकराचार्य जयन्ती, सूरदास जयन्ती।
षष्ठी/सप्तमी	३ मई	शनि	गंगोत्पत्ति, गंगा सप्तमी(मध्याह्न), रामानुजाचार्य जयन्ती।

विक्रम सम्वत् २०८२, ईसवीय सन् २०२५ - २६ व्रत, पर्व एवं उत्सव

वैशाख शुक्ल पक्ष (दि. २८ अप्रैल से १२ मई २०२५ ई.)

तिथि	दिनाङ्क	वार	व्रत, पर्व एवं उत्सव
सप्तमी/अष्टमी	०४ मई	रवि	दुर्गाष्टमी (मध्याह्न व्यापिनी) बगलामुखी जयन्ती।
नवमी	०६ मई	मङ्गल	सीता नवमी, जानकी नवमी, मैथिली दिवस।
एकादशी	०८ मई	गुरु	मोहिनी एकादशी व्रत (स.)।
द्वा./त्रयोदशी	०९ मई	शुक्र	प्रदोष व्रत
त्रयो./चतुर्दशी	११ मई	रवि	नृसिंह जयन्ती, प्रदोष काल, श्री छिन्नमस्ता जयन्ती
पूर्णिमा	१२ मई	सोम	कूर्म जयन्ती (मध्याह्न काल), सत्यव्रत, बुद्ध पूर्णिमा, बुद्ध जयन्ती(उदय काल), वैशाख स्नान समा., पूर्णिमा व्रत।

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष (दि. १३ मई से २७ मई २०२५ ई.)

प्रतिपदा	१३ मई	मङ्गल	नारद जयन्ती ।
द्वितीया	१४ मई	बुध	वृष संक्रान्ति २४:११ ।
तृतीया	१५ मई	गुरु	वृष संक्रान्ति पुण्यकाल माध्याह्न तक।
चतुर्थी	१६ मई	शुक्र	चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय (२२:५७)
षष्ठी/सप्तमी	१९ मई	सोम	भानु सप्तमी,
सप्तमी/अष्टमी	२० मई	मङ्गल	कालाष्टमी।
एकादशी	२३ मई	शुक्र	अपरा एकादशी व्रत(स्मा+वै.)
द्वा./त्रयोदशी	२४ मई	शनि	अपरा एकादशी व्रत(नि), शनिप्रदोष व्रत।
त्रयो/चतुर्दशी	२५ मई	रवि	मास शिवरात्रि।
चतुर्दशी/ अमावस्या	२६ मई	सोम	अमावस्या श्राद्धादि, वट सावित्री व्रत, वट अमावस्या (दाक्षिणात्य)*।
अमावस्या	२७ मई	मङ्गल	भावुका अमावस्या, अमावस्या स्नानादि, रोहिणी व्रत।

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष (दि. २८ मई से ११ जून २०२५ ई.)

तिथि	दिनाङ्क	वार	व्रत, पर्व एवं उत्सव
द्वितीया	२८ मई	बुध	काशी दशाश्वमेध स्नान प्रा., चन्द्रदर्शन
तृतीया	२९ मई	गुरु	रम्भा तृतीया, महाराणा प्रताप जयन्ती (उदय काल व्यापिनी)।
चतुर्थी	३० मई	शुक्र	विनायक चतुर्थी।
पञ्चमी	३१ मई	शनि	विश्व तम्बाकू विरोधी दिवस
षष्ठी	०१ जून	रवि	अरण्य षष्ठी (सप्तमी विद्धा), विन्ध्यवासिनी पूजा।
अष्टमी	०३ जून	मङ्गल	दुर्गाष्टमी, मेला क्षीरभवानी(काश्मीर), श्री धूमावती जयन्ती।
दशमी	०५ जून	गुरु	गंगा दशहरा, रामेश्वर प्रतिष्ठा, काशी दशाश्वमेध स्नान समा., विश्व पर्यावरण दिवस।
एकादशी	०६ जून	शुक्र	निर्जला एकादशी व्रत (स्मा+वै), गायत्री जयन्ती
द्वादशी	०७ जून	शनि	निर्जला एकादशी व्रत (नि.), ईद-उल-जुहा (बकरीद)।
द्वा/त्रयोदशी	०८ जून	रवि	प्रदोष व्रत।
चतु./पूर्णिमा	१० जून	मङ्गल	पूर्णिमा व्रत, वट पूर्णिमा, वट सावित्री व्रत।
पूर्णिमा	११ जून	बुध	सत्यव्रत, कबीरदास जयन्ती, मन्वादि (वैवस्वत) **गुरु अस्त १९:१४**

आषाढ़ कृष्ण पक्ष (दि. १२ जून से २५ जून २०२५ ई.)

तृती./चतुर्थी	१४ जून	शनि	चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय (२२:१६)।
चतुर्थी	१५ जून	रवि	मिथुन संक्रान्ति ०६:४४, पुण्यकाल १३:०८तक
सप्त./अष्टमी	१८ जून	बुध	भानु सप्तमी, कालाष्टमी
दशमी/ एकादशी	२१ जून	शनि	योगिनी एकादशी व्रत (स्मा.),वर्ष का सबसे बड़ा दिन, विश्व योग दिवस

विक्रम सम्वत् २०८२, ईसवीय सन् २०२५ - २६ व्रत, पर्व एवं उत्सव

आषाढ़ कृष्ण पक्ष (दि. १२ जून से २५ जून २०२५ ई.)

तिथि	दिनाङ्क	वार	व्रत, पर्व एवं उत्सव
द्वादशी	२२ जून	रवि	योगिनी एकादशी व्रत (वैष्णव+निम्बार्क)।
त्रयोदशी	२३ जून	सोम	सोम प्रदोष व्रत, मास शिवरात्रि,रोहिणी व्रत ।
अमावस्या	२५ जून	बुध	अमावस्या।

आषाढ़ शुक्लपक्ष (दि. २६ जून से १० जुलाई २०२५ ई.)

प्रतिपदा	२६ जून	गुरु	गुप्त नवरात्र प्रा.,भगवान श्रीजगन्नाथ नवयौवन दर्शन, चन्द्र दर्शन।
द्वितीया	२७ जून	शुक्र	श्री जगन्नाथ रथयात्रा, मनोरथ द्वितीया।
तृती./चतुर्थी	२८ जून	शनि	विनायक चतुर्थी ।
षष्ठी	१ जुलाई	मङ्गल	कुसुम्बा षष्ठी, कुमार षष्ठी ।
सप्तमी	२ जुलाई	बुध	शीतला सप्तमी ।
अष्टमी	३ जुलाई	गुरु	दुर्गाष्टमी, शीतलाष्टमी, ओली जैन प्रा.
नवमी	४ जुलाई	शुक्र	भड्डली नवमी, गुप्त नवरात्र समाप्त।
दशमी	५ जुलाई	शनि	गुप्त नवरात्र पारणा, भगवान श्री जगन्नाथ रथयात्रा परावर्तन।
एकादशी	६ जुलाई	रवि	देवशयनी एकादशी व्रत (स.), चातुर्मास्यारम्भ, मोहर्रम, **गुरु उदय २९:३०**।
द्वादशी	७ जुलाई	सोम	वासुदेव द्वादशी ।
त्रयोदशी	८ जुलाई	मङ्गल	जया पार्वती व्रत (प्रा.), भौमप्रदोष व्रत ।
पूर्णिमा	१० जुलाई	गुरु	पूर्णिमा व्रत,सत्यव्रत,गुरु पूर्णिमा, व्यास पूर्णिमा, सन्यासियों का चातुर्मास्यारम्भ, कोकिला व्रत, ओली जैन समा., पवन परीक्षा, शिवशयनोत्सव ।

श्रावण कृष्ण पक्ष (दि. ११ जुलाई से २४ जुलाई २०२५ ई.)

तिथि	दिनाङ्क	वार	व्रत, पर्व एवं उत्सव
प्रतिपदा	११ जुलाई	शुक्र	हिण्डोले प्रा. (व्रजमण्डल), अशून्य शयन व्रत।
चतुर्थी	१४ जुलाई	सोम	चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय (२१:५६), जया पार्वती व्रत (समा.), श्रावण सोमवार व्रत।
पञ्चमी	१५ जुलाई	मङ्गल	मंगला गौरी व्रत, नाग पञ्चमी (बंगाल, बिहार)।
षष्ठी	१६ जुलाई	बुध	कर्क संक्रान्ति १७:३२, सं. पुण्यकाल सूर्योदय से १७:३२ तक ।
सप्त. /अष्टमी	१७ जुलाई	गुरु	भानु सप्तमी, शीतला सप्तमी, कालाष्टमी।
अष्टमी	१८ जुलाई	शुक्र	शीतलाष्टमी।
एकादशी	२१ जुलाई	सोम	कामिका एकादशी व्रत (स.), श्रावण सोमवार व्रत, रोहिणीव्रत।
द्वाद./ त्रयोदशी	२२ जुलाई	मङ्गल	मंगला गौरी व्रत, भौम प्रदोष व्रत ।
चतुर्दशी	२३ जुलाई	बुध	मास शिवरात्रि।
अमावस्या	२४ जुलाई	गुरु	हरियाली अमावस्या

श्रावण शुक्ल पक्ष (दि. २५ जुलाई से ०९ अगस्त २०२५ ई.)

द्वितीया	२६ जुलाई	शनि	चन्द्र दर्शन, सिन्धारा।
तृतीया	२७ जुलाई	रवि	हरियाली तीज, मधुश्रवा तृतीया, स्वर्ण गौरी व्रत।
चतुर्थी	२८ जुलाई	सोम	विनायक चतुर्थी व्रत, दूर्वागणपति व्रत, श्रावण सोमवार व्रत।
पञ्चमी	२९ जुलाई	मङ्गल	मंगला गौरी व्रत, नागपञ्चमी, ऋग्यजुहिरण्यकेशी, श्रावणी उपाकर्म।
षष्ठी	३० जुलाई	बुध	कल्कि जयन्ती (सायंकाल), वर्ण षष्ठी ।

विक्रम सम्वत् २०८२ , ईसवीय सन् २०२५ - २६ व्रत, पर्व एवं उत्सव

श्रावण शुक्ल पक्ष (दि.२५ जुलाई से ०९ अगस्त २०२५ ई.)

तिथि	दिनाङ्क	वार	व्रत, पर्व एवं उत्सव
सप्तमी	३१ जुलाई	गुरु	शीतला सप्तमी, भानु सप्तमी, गोस्वामी तुलसीदास जयन्ती।
अष्टमी	१ अगस्त	शुक्र	दुर्गाष्टमी मेला, श्री नयना देवी, मेला ज्वाला देवी जी, मेला चिन्तपूर्णी ।
दशमी	४ अगस्त	सोम	श्रावण सोमवार व्रत।
एकादशी	५ अगस्त	मङ्गल	मंगला गौरी व्रत, पुत्रदा (पवित्रा) एकादशी व्रत (स.)।
द्वाद. /त्रयोदशी	६ अगस्त	बुध	प्रदोष व्रत।
चतुर्दशी	८ अगस्त	शुक्र	पूर्णिमा व्रत
पूर्णिमा	९ अगस्त	शनि	सत्यव्रत,रक्षाबन्धन, हयग्रीवावतार, अमरनाथ दर्शन, हिण्डोले समा. (व्रजमण्डल), श्रावणी उपाकर्म, संस्कृत दिवस।

भाद्रपद कृष्ण पक्ष (दि. १० अगस्त से २३ अगस्त २०२५ ई.)

तिथि	दिनाङ्क	वार	व्रत, पर्व एवं उत्सव
प्रति./द्वितीया	१० अगस्त	रवि	अशून्य शयनव्रत।
तृती./ चतुर्थी	१२ अगस्त	मङ्गल	कज्जली तृतीया, चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय (२१:०१), बहुला चतुर्थी।
षष्ठी	१४ अगस्त	गुरु	बलराम जयन्ती, हल षष्ठी, चन्दन षष्ठी, चम्पा षष्ठी।
सप्तमी/ अष्टमी	१५ अगस्त	शुक्र	स्वतंत्रता दिवस, श्रीकृष्ण जयन्ती (निशीथ काल), कालाष्टमी, श्रीकृष्ण जन्माष्टमीव्रत (स्मा.), श्री महाकाली जयन्ती (निशीथ काल)।
अष्टमी	१६ अगस्त	शनि	श्रीकृष्ण जन्माष्टमीव्रत(वै.), सिंह संक्रांति २५:५२ ।
नवमी	१७ अगस्त	रवि	रोहिणी व्रत, गोगा नवमी, गोकुलोत्सव, सिंह संक्रांति पुण्यकाल सूर्योदय से मध्याह्न तक ।

भाद्रपद कृष्ण पक्ष (दि. १० अगस्त से २३ अगस्त २०२५ ई.)

तिथि	दिनाङ्क	वार	व्रत, पर्व एवं उत्सव
एकादशी	१९ अगस्त	मङ्गल	अजा एकादशी व्रत(स.)।
द्वा./त्रयोदशी	२० अगस्त	बुध	प्रदोष व्रत।
त्रयोदशी	२१ अगस्त	गुरु	पर्यूषण पर्वारम्भ, मास शिवरात्रि, डाकिनी चतुर्दशी ।
चतुर्दशी/ अमावस्या	२२ अगस्त	शुक्र	अमावस्या श्राद्धादि।
अमावस्या	२३ अगस्त	शनि	शनैश्चरी अमावस्या, अमावस्या स्नानादि, कुशोत्पाटिनी अमावस्या।

भाद्रपद शुक्ल पक्ष (दि. २४ अगस्त से ०७ सितम्बर २०२५ ई.)

द्वितीया	२४ अगस्त	रवि	चन्द्र दर्शन।
तृती./चतुर्थी	२६ अगस्त	मङ्गल	हरतालिका तीज, सामवेदियों का उपाकर्म, वराह जयन्ती(अप. काल), कलङ्क चतुर्थी, पत्थर चौथ, चन्द्र दर्शन निषेध, चन्द्रास्त, विनायक चतुर्थी व्रत, गणेश जन्मोत्सव।
चतुर्थी	२७ अगस्त	बुध	जैन सम्वत्सरी चतुर्थी पक्ष।
पञ्चमी	२८ अगस्त	गुरु	ऋषि पञ्चमी, जैन सम्वत्सरी पञ्चमी पक्ष, उत्कलीय नवान्न भक्षण।
षष्ठी	२९ अगस्त	शुक्र	स्कन्द षष्ठी, सूर्य षष्ठी, बलदेव छठ, लोलार्क षष्ठी, ललिता षष्ठी, मेला देव छठ (व्रजमण्डल), स्वामी कार्तिकेय दर्शन ।
अष्टमी	३१ अगस्त	रवि	दूर्गाष्टमी, राधाष्टमी, महालक्ष्मी व्रतारम्भ ।
नवमी	०१ सितम्बर	सोम	श्री चन्द्र नवमी, अदुःख नवमी, मेला श्री रामदेव जी (राज.)।
एकादशी	३ सितम्बर	बुध	पार्श्वपरिवर्तिनी एकादशी व्रत(स्मा.+वै.)

विक्रम सम्वत् २०८२ , ईसवीय सन् २०२५ - २६ व्रत, पर्व एवं उत्सव

भाद्रपद शुक्ल पक्ष (दि. २४ अगस्त से ०७ सितम्बर २०२५ ई.)

तिथि	दिनाङ्क	वार	व्रत, पर्व एवं उत्सव
द्वादशी	४ सितम्बर	गुरु	पार्श्वपरिवर्तिनी एकादशी व्रत(नि.) वामन जयन्ती (मध्याह्नकाल), श्री भुवनेश्वरी जयन्ती।
त्रयोदशी	५ सितम्बर	शुक्र	प्रदोषव्रत, ओणम, शिक्षक दिवस, पेगम्बर मुहम्मद जन्मदिवस।
चतुर्दशी	६ सितम्बर	शनि	अनन्त चतुर्दशी, गणपति विसर्जन।
पूर्णिमा	७ सितम्बर	रवि	पूर्णिमा व्रत, सत्यव्रत, महालयारम्भ, प्रौष्ठपदी पूर्णिमा, पूर्णिमा का श्राद्ध, अगस्त्य अर्घ्य दान, चन्द्र ग्रहण।

आश्विन कृष्ण पक्ष (दि. ०८ सितम्बर से २१ सितम्बर २०२५ ई.)

तिथि	दिनाङ्क	वार	व्रत, पर्व एवं उत्सव
प्रतिपदा	८ सितम्बर	सोम	प्रतिपदा का श्राद्ध, अशून्य शयन व्रत।
द्वितीया	९ सितम्बर	मङ्गल	द्वितीया का श्राद्ध।
तृती./चतु.	१० सितम्बर	बुध	तृतीया श्राद्ध, चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय । (२०:०७)
चतु./ पञ्चमी	११ सितम्बर	गुरु	चतुर्थी का श्राद्ध, भरणी श्राद्ध, पञ्चमी का श्राद्ध १२:४६ से।
पं./ षष्ठी	१२ सितम्बर	शुक्र	षष्ठी का श्राद्ध।
ष./ सप्तमी	१३ सितम्बर	शनि	सप्तमी का श्राद्ध, रोहिणी व्रत।
अष्टमी	१४ सितम्बर	रवि	हिन्दी दिवस, महालक्ष्मीव्रत, कालाष्टमी, जीमूत-वाहन व्रत, जीवित् पुत्रिका व्रत, अष्टमी का श्राद्ध, अष्टका श्राद्ध।
नवमी	१५सितम्बर	सोम	सधवा नवमी, मातृ नवमी, नवमी का श्राद्ध, अन्वष्टका श्राद्ध।
दशमी	१६ सितम्बर	मङ्गल	दशमी का श्राद्ध, कन्या संक्रांति २५:४७ से।
एकादशी	१७ सितम्बर	बुध	कन्या संक्रांति पुण्यकाल मध्याह्न तक, इन्दिरा एकादशी व्रत (स्मा.+वै.), एकादशी का श्राद्ध।

आश्विन कृष्ण पक्ष (दि. ०८ सितम्बर से २१ सितम्बर २०२५ ई.)

तिथि	दिनाङ्क	वार	व्रत, पर्व एवं उत्सव
द्वादशी	१८ सितम्बर	गुरु	इन्दिरा एकादशी व्रत (निम्बार्क), द्वादशी का श्राद्ध, सन्यासियों का श्राद्ध।
त्रयोदशी	१९ सितम्बर	शुक्र	प्रदोष व्रत, त्रयोदशी का श्राद्ध, मघा श्राद्ध ।
चतुर्दशी	२० सितम्बर	शनि	चतुर्दशी का श्राद्ध, विष-शस्त्रादि से हतों का श्राद्ध, मास शिवरात्रि।
अमावस्या	२१ सितम्बर	रवि	अमावस्या का श्राद्ध, सर्वपितृ अमावस्या, सर्व पितृ विसर्जन, पितृपक्ष समा.,।

आश्विन शुक्ल पक्ष (दि. २२ सितम्बर से ०७ अक्टूबर २०२५ई.)

तिथि	दिनाङ्क	वार	व्रत, पर्व एवं उत्सव
प्रतिपदा	२२ सितम्बर	सोम	मातामह श्राद्ध, शारदीय नवरात्र प्रा., घट स्थापन, महाराजा अग्रसेन जयन्ती।
द्वितीया	२३ सितम्बर	मङ्गल	चन्द्र दर्शन।
तृती./चतुर्थी	२५ सितम्बर	गुरु	विनायक चतुर्थी।
चतु. /पञ्चमी	२६ सितम्बर	शुक्र	उपाङ्ग ललिता व्रत (सायंकाल व्यापिनी)
षष्ठी	२८ सितम्बर	रवि	बिल्वाभिमन्त्रण सायं (ज्येष्ठा नक्षत्र में)।
सप्तमी	२९ सितम्बर	सोम	सरस्वती आवाहन (मूल नक्षत्र में) पत्रिका प्रवेश, महानिशीथ पूजन।
अष्टमी	३०सितम्बर	मङ्गल	दुर्गाष्टमी, महाष्टमी व्रत, ओली जैन प्रा., सन्धि पूजा, सरस्वती बलिदान।
नवमी	१ अक्टूबर	बुध	महानवमी व्रत, त्रिशूलिनी पूजा।
दशमी	२ अक्टूबर	गुरु	अपराजिता पूजा, विजयादशमी, सरस्वती विसर्जन, शस्त्र पूजा, सीमोल्लंघन, नवरात्र पारणा, शमी पूजा, श्री लालबहादुरशास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ स्थापना दिवस, गान्धी जयन्ती, श्री लालबहादुरशास्त्री जयन्ती।

विक्रम सम्वत् २०८२, ईसवीय सन् २०२५ - २६ व्रत, पर्व एवं उत्सव

आश्विन शुक्ल पक्ष (दि. २२ सितम्बर से ०७ अक्टूबर २०२५ई.)

तिथि	दिनाङ्क	वार	व्रत, पर्व एवं उत्सव
एकादशी	**३ अक्टूबर**	शुक्र	पापाङ्कुशा एकादशीव्रत(स.), मेला भरत मिलाप, मध्वाचार्य जयन्ती।
द्वादशी/ त्रयोदशी	**४ अक्टूबर**	शनि	पद्मनाभ द्वादशी, शनि प्रदोष व्रत।
चतुर्दशी/ पूर्णिमा	**६ अक्टूबर**	सोम	कोजागर व्रत, रास महोत्सव, लक्ष्मी पूजन, कोजागरी पूर्णिमा, शरद् पूर्णिमा , पूर्णिमा व्रत।
पूर्णिमा	**७ अक्टूबर**	मङ्गल	सत्यव्रत, वाल्मीकि जयन्ती, मीराबाई जयन्ती, ओली जैन समा. कार्तिक स्नान प्रा.,।

कार्तिक कृष्ण पक्ष (दि.०८ अक्टूबर से २१ अक्टूबर २०२५ ई.)

चतुर्थी	**१० अक्टूबर**	शुक्र	रोहिणी व्रत, करक चतुर्थी, करवा चौथ, चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय २०:०४ ।
सप्तमी/ अष्टमी	**१३ अक्टूबर**	रवि	अहोई अष्टमी, कालाष्टमी, राधा कुण्ड स्नान रात्रि समाप्ति पर अरुणोदय में।
एकादशी	**१७ अक्टूबर**	शुक्र	तुला संक्रांति १३:४५, संक्रांति पुण्यकाल ०९:४५ से १७:४५ तक, रमा एकादशी व्रत (स.)।
द्वादशी/ त्रयोदशी	**१८ अक्टूबर**	शनि	गोवत्स द्वादशी, धनतेरस, धन्वन्तरि जयन्ती, शनि प्रदोष व्रत, यम दीप दान। ।
त्रयोदशी/ चतुर्दशी	**१९ अक्टूबर**	रवि	मासशिवरात्रि, हनुमज्जयन्ती, नरक निवारण चतुर्दशी, रूप चौदस।
चतुर्दशी/ अमावस्या	**२० अक्टूबर**	सोम	दीपावली, महालक्ष्मी पूजन, केदारगौरी व्रत, कमला जयन्ती (प्रदोषकाल), श्री महाकाली पूजा, उल्का भ्रमण, दारिद्रय निःसारण।

कार्तिक कृष्ण पक्ष (दि. ०८ अक्टूबर से २१ अक्टूबर २०२५ ई.)

तिथि	दिनाङ्क	वार	व्रत, पर्व एवं उत्सव
अमावस्या	**२१ अक्टूबर**	मङ्गल	अमावस्या, महावीर निर्वाण दिवस, दयानन्द निर्वाण दिवस, आद्य शङ्करचार्य निर्वाण दिवस, विद्यापीठ संस्थापक कुलपति डॉ. मण्डन मिश्र निर्वाण दिवस।

कार्तिक शुक्ल पक्ष (दि. २२ अक्टूबर से ०५ नवम्बर २०२५ ई.)

प्रतिपदा	**२२ अक्टूबर**	बुध	गोवर्द्धन पूजा, अन्नकूट, विश्वकर्मा पूजा।
द्वितीया	**२३ अक्टूबर**	गुरु	चन्द्र दर्शन, भ्रातृ द्वितीया, यम द्वितीया, चित्रगुप्त पूजन, यमुना स्नान (मथुरा)
चतुर्थी	**२५ अक्टूबर**	शनि	विनायक चतुर्थी ।
पञ्चमी	**२६ अक्टूबर**	रवि	लाभ पञ्चमी, ज्ञान पञ्चमी, पाण्डव पञ्चमी।
षष्ठी	**२७ अक्टूबर**	सोम	छठ व्रत नहाई खाई (खरना), सांयकालीन अर्घ्य दान।
षष्ठी/सप्तमी	**२८ अक्टूबर**	मङ्गल	प्रतिहार षष्ठी व्रत, छठ पूजा, सूर्य षष्ठी ।
सप्तमी/ अष्टमी	**२९ अक्टूबर**	बुध	प्रातः कालीन सूर्य अर्घ्यदान एवं छठ व्रत पारणा, ओली जैन प्रा. दुर्गाष्टमी,।
अष्टमी	**३० अक्टूबर**	गुरु	गोपाष्टमी, मेला गोचारण (मथुरा)।
नवमी	**३१ अक्टूबर**	शुक्र	अक्षय नवमी, सत्य युगादि, कूष्माण्ड नवमी, मथुरा परिक्रमा ।
दशमी	**०१ नवम्बर**	शनि	मेला कंस (मथुरा), भीष्म पञ्चक प्रा.।
एकादशी/ द्वादशी	**०२ नवम्बर**	रवि	प्रबोधिनी/देवोत्थान एकादशी व्रत (स.), तुलसी विवाह, कालिदास जयन्ती, चातुर्मास्य समाप्त (सन्यासी), मन्वादि ।
त्रयोदशी	**३ नवम्बर**	सोम	सोम प्रदोष व्रत ।

विक्रम सम्वत् २०८२ , ईसवीय सन् २०२५ - २६ व्रत, पर्व एवं उत्सव

कार्तिक शुक्ल पक्ष (दि. २२ अक्तूबर से ०५ नवम्बर २०२५ ई.)

तिथि	दिनाङ्क	वार	व्रत, पर्व एवं उत्सव
चतुर्दशी	**०४ नवम्बर**	मङ्गल	वैकुण्ठ चतुर्दशी, मणिकर्णिका स्नान, काशी विश्वनाथ स्थापना दिवस।
पूर्णिमा	**०५ नवम्बर**	बुध	पूर्णिमा व्रत, सत्यव्रत, देव दीपावली, भीष्म पञ्चक समा., पुष्कर स्नान, गुरु नानक जयन्ती, मेला गढ़गंगा (मुक्तेश्वर), मेला हरिहर क्षेत्र, ओली जैन समाप्त, कार्तिक स्नान समाप्त, मन्वादि, त्रिपुरोत्सव (सायंकाल)।

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष (दि. ०६ नवम्बर से २० नवम्बर २०२५ ई.)

द्वितीया	**७ नवम्बर**	शुक्र	रोहिणी व्रत।
तृत./चतुर्थी	**८ नवम्बर**	शनि	चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय १९:४०
सप्तमी	**११ नवम्बर**	मङ्गल	कालाष्टमी, कालभैरव जयन्ती।
दशमी	**१४ नवम्बर**	शुक्र	बालदिवस।
एकादशी	**१५ नवम्बर**	शनि	उत्पन्ना एकादशी व्रत (स्मा.+वै.)।
द्वादशी	**१६ नवम्बर**	रवि	उत्पन्ना एकादशी व्रत (निं.),वृश्चिक संक्रांति १३:३७ पुण्यकाल ०७:१३ से १३:३७ तक।
त्रयोदशी	**१७ नवम्बर**	सोम	सोम प्रदोष व्रत ।
त्रयो. /चतुर्	**१८ नवम्बर**	मङ्गल	मास शिवरात्रि ।
चतु./अमा.	**१९ नवम्बर**	बुध	अमावस्या श्राद्धादि ।
अमावस्या	**२० नवम्बर**	गुरु	अमावस्या स्नानादि।

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष (दि. २१ नवम्बर से ०४ दिसम्बर २०२५ ई.)

द्वितीया	**२२ नवम्बर**	शनि	चन्द्र दर्शन ।
चतुर्थी	**२४ नवम्बर**	सोम	विनायक चतुर्थी ।

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष (दि. २१ नवम्बर से ०४ दिसम्बर २०२५ ई.)

तिथि	दिनाङ्क	वार	व्रत, पर्व एवं उत्सव
पञ्चमी	**२५ नवम्बर**	मङ्गल	श्रीसीताराम विवाहोत्सव, विवाह पञ्चमी, नाग पञ्चमी (दाक्षिणात्य), स्वामी हरिदास जयन्ती, रामदास जयन्ती, बाबू बैजनाथ जयन्ती।
षष्ठी	**२६ नवम्बर**	बुध	स्कन्द षष्ठी, चम्पा षष्ठी।
अष्टमी	**२८ नवम्बर**	शुक्र	दुर्गाष्टमी ।
एकादशी	**०१ दिसम्बर**	सोम	मोक्षदा एकादशी व्रत(स.), मौनी एकादशी (जैन), गीता जयन्ती।
द्वा./त्रयो.	**०२ दिसम्बर**	मङ्गल	मत्स्य द्वादशी, भौमप्रदोष व्रत ।
चतु./पूर्णि	**०४ दिसम्बर**	गुरु	दत्तात्रेय जयन्ती (प्रदोषकाल), पिशाचमोचन श्राद्ध, सत्यव्रत, पं. मदनमोहन मालवीय जयन्ती, पूर्णिमा व्रत, त्रिपुर भैरवी जयन्ती (प्रदोष व्यापिनी), रोहिणी व्रत।

पौष कृष्ण पक्ष (दि. ०५ दिसम्बर से २० दिसम्बर २०२५ ई.)

द्वितीया	**६ दिसम्बर**	शनि	अशून्य शयन व्रत।
तृती./चतु.	**७ दिसम्बर**	रवि	चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय १९:४४ ।
सप्तमी	**११ दिसम्बर**	गुरु	कालाष्टमी ।
एकादशी	**१५ दिसम्बर**	सोम	सफला एकादशी व्रत (स.), धनु संक्रान्ति २८:१९
द्वादशी	**१६ दिसम्बर**	मङ्गल	धनु संक्रान्ति पुण्यकाल सूर्योदय से मध्याह्न तक।
त्रयोदशी	**१७ दिसम्बर**	बुध	प्रदोष व्रत ।
चतुर्दशी	**१८ दिसम्बर**	गुरु	मास शिवरात्रि ।
अमावस्या	**१९ दिसम्बर**	शुक्र	अमावस्या ।

विक्रम सम्वत् २०८२, ईसवीय सन् २०२५ - २६ व्रत, पर्व एवं उत्सव

पौष शुक्ल पक्ष (दि. २१ दिसम्बर२०२५ से ०३ जनवरी २०२६ ई.)

तिथि	दिनाङ्क	वार	व्रत, पर्व एवं उत्सव
प्रतिपदा	**२१ दिसम्बर**	रवि	चन्द्र दर्शन, वर्ष का सबसे छोटा दिन ।
चतुर्थी	**२३ दिसम्बर**	मङ्गल	विनायक चतुर्थी ।
पञ्चमी	**२५ दिसम्बर**	गुरु	क्रिसमस दिवस, ईसामसीह जयन्ती ।
अष्टमी	**२८ दिसम्बर**	रवि	दुर्गाष्टमी ।
दश./एका	**३० दिसम्बर**	मङ्गल	पुत्रदा (पवित्रा) एकादशी व्रत (स्मा.)
एकादशी	**३१ दिसम्बर**	बुध	पुत्रदा (पवित्रा) एकादशी व्रत (वै.)
त्रयोदशी	**१ जनवरी**	गुरु	प्रदोष व्रत, रोहिणी व्रत, आंग्ल नववर्षारम्भ ।
चतु./पूर्णिमा	**२ जनवरी**	शुक्र	पूर्णिमा व्रत।
पूर्णिमा	**३ जनवरी**	शनि	सत्यव्रत, माघ स्नान प्रा., शाकम्भरी जयन्ती।

माघ कृष्ण पक्ष (दि. ०४ जनवरी से १८ जनवरी २०२६ ई.)

तृती./चतु	**६ जनवरी**	मङ्गल	चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय (२०:५५) , संकष्ट चतुर्थी, सकट चौथ, गणेशावतार।
सप्त./अष्ट	**१० जनवरी**	शनि	कालाष्टमी
नवमी	**१२ जनवरी**	सोम	स्वामी विवेकानन्द जयन्ती, युवा दिवस ।
दशमी	**१३ जनवरी**	मङ्गल	लोहड़ी।
एकादशी	**१४ जनवरी**	बुध	षट्तिला एकादशी व्रत (स.), पोंगल, मकर संक्रान्ति १५:०६ पुण्यकाल १५ :०६ से सूर्यास्त तक।
त्रयोदशी	**१६ जनवरी**	शुक्र	प्रदोष व्रत, मास शिवरात्रि।।
अमावस्या	**१८ जनवरी**	रवि	मौनी अमावस्या, यम तर्पण, प्रयाग स्नान।

माघ शुक्ल पक्ष (दि. १९ जनवरी से०१ फरवरी २०२६ ई.)

तिथि	दिनाङ्क	वार	व्रत, पर्व एवं उत्सव
प्रतिपदा	**१९ जनवरी**	सोम	गुप्त (शिशिर) नवरात्र प्रा.।
द्वितीया	**२० जनवरी**	मङ्गल	चन्द्र दर्शन ।
चतुर्थी	**२२ जनवरी**	गुरु	विनायक चतुर्थी, तिल चतुर्थी।
पञ्चमी	**२३ जनवरी**	शुक्र	वसन्त पञ्चमी, श्री पञ्चमी, सरस्वती पूजन, सुभाषचन्द्र बोस जयन्ती।
षष्ठी	**२४ जनवरी**	शनि	स्कन्द षष्ठी ।
सप्तमी	**२५ जनवरी**	रवि	रथ सप्तमी, भानु सप्तमी, अचला सप्तमी, हिमाचल प्रदेश पूर्ण राज्य दिवस ।
अष्टमी	**२६ जनवरी**	सोम	भारतीय गणतन्त्र दिवस, भीष्माष्टमी, दुर्गाष्टमी, मन्वादि ।
नवमी	**२७ जनवरी**	मङ्गल	गुप्त (शिशिर) नवरात्र समा. ।
दशमी	**२८ जनवरी**	बुध	रोहिणी व्रत ।
एकादशी	**२९ जनवरी**	गुरु	जया एकादशी व्रत (स.) भीष्म द्वादशी ।
द्वादशी	**३० जनवरी**	शुक्र	तिल द्वादशी, प्रदोष व्रत, मरु महोत्सव जैसलमेर राज. (प्रा.)।
पूर्णिमा	**१ फरवरी**	रवि	माघी पूर्णिमा, पूर्णिमा व्रत, सत्यव्रत, गुरु रविदास जयन्ती, मरु महोत्सव समाप्त, माघस्नान समाप्त, श्री ललिता जयन्ती, माघ जयन्ती ।

शुक्र उदय १७:५७
३१.०१.२०२६

फाल्गुन कृष्ण पक्ष (दि. ०२ फरवरी से १७ फरवरी २०२६ ई.)

द्वितीया	**३ फरवरी**	मङ्गल	अशून्य शयन व्रत।
चतुर्थी	**५ फरवरी**	गुरु	चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय २१:३६
अष्टमी	**९ फरवरी**	सोम	कालाष्टमी, हलाष्टमी, जानकी अष्टमी।

विक्रम सम्वत् २०८२ , ईसवीय सन् २०२५ - २६ व्रत, पर्व एवं उत्सव

फाल्गुन कृष्ण पक्ष (दि. ०२ फरवरी से १७ फरवरी २०२६ ई.)

तिथि	दिनाङ्क	वार	व्रत, पर्व एवं उत्सव
दशमी	**१२ फरवरी**	गुरु	महर्षि दयानन्द सरस्वती जयन्ती, कुम्भ संक्रांति २८:०८।
एकादशी	**१३ फरवरी**	शुक्र	विजया एकादशी व्रत (स.), कुम्भ संक्रांति पुण्यकाल मध्याह्न तक।
द्वादशी	**१४ फरवरी**	शनि	शनि प्रदोष व्रत।
त्रयोदशी	**१५ फरवरी**	रवि	महाशिवरात्रि व्रत।
चतुर्दशी	**१६ फरवरी**	सोम	महाशिवरात्रि व्रत पारणा।
अमावस्या	**१७ फरवरी**	मङ्गल	अमावस्या स्नानदानश्राद्धादि, युगादि अमावस्या।

फाल्गुन शुक्ल पक्ष (दि. १८ फरवरी से ०३ मार्च २०२६ ई.)

प्रतिपदा	**१८ फरवरी**	बुध	चन्द्र दर्शन।
द्वितीया	**१९ फरवरी**	गुरु	फुलैरा दोज, रामकृष्ण परमहंस जयन्ती।
चतुर्थी	**२१ फरवरी**	शनि	विनायक चतुर्थी।
सप्त/अष्ट	**२४ फरवरी**	मङ्गल	होलाकाष्टक प्रा., दुर्गाष्टमी, रोहिणी व्रत, ओलीजैन प्रा.।
एकादशी	**२७ फरवरी**	शुक्र	आमलकी (रङ्गभरी) एकादशी व्रत (स.)।
द्वादशी	**२८ फरवरी**	शनि	गोविन्द द्वादशी।
त्रयोदशी	**१ मार्च**	रवि	प्रदोष व्रत।
चतुर्दशी	**२ मार्च**	सोम	पूर्णिमा व्रत।
पूर्णिमा	**३ मार्च**	मङ्गल	सत्यव्रत, होलाष्टक समा., होलिका दहन प्रदोष काल, चैतन्य महा प्रभु जयन्ती। ओली जैन समा., मन्वादि खग्रास चन्द्रग्रहण।

चैत्र कृष्ण पक्ष (दि. ०४ मार्च से १९ मार्च २०२६ ई.)

तिथि	दिनाङ्क	वार	व्रत, पर्व एवं उत्सव
प्रतिपदा	**०४ मार्च**	बुध	अशून्य शयन व्रत, आम्रकलिका प्राशन, वसन्तोत्सव, धुलैण्डी, धूलिवन्दन।
चतुर्थी	**६ मार्च**	शुक्र	चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय २१:१५।
पञ्चमी	**०८ मार्च**	रवि	रंग पञ्चमी, मेला नवचण्डी प्रा. (मेरठ)।
षष्ठी	**०९ मार्च**	सोम	एकनाथ षष्ठी।
नवमी	**११ मार्च**	बुध	कालाष्टमी, शीतलाष्टमी, बासोडा, मेला नवचण्डी समा.(मेरठ)।
दशमी	**१४ मार्च**	शनि	मीन संक्रांति २५:०२
एकादशी	**१५ मार्च**	रवि	मीन संक्रांति पुण्यकाल मध्याह्न तक, पापमोचिनी एकादशी व्रत (स.)।
द्वा/त्रयोदशी	**१६ मार्च**	सोम	सोम प्रदोष व्रत।
त्रयो/चतुर्दशी	**१७ मार्च**	मङ्गल	मास शिवरात्रि।
चतुर्दशी	**१८ मार्च**	बुध	अमावस्या श्राद्धादि।
अमावस्या	**१९ मार्च**	गुरु	अमावस्या स्नानदानादि, मेला (पृथूदक पेह्वा) हरियाणा, विक्रम संवत् २०८२ समाप्त।

प्रो. सुशील कुमार
आचार्य,
ज्योतिष-विभाग

विक्रम संवत् २०८२ के वर्गीकृत व्रत, पर्वों की सूची

।। विनायक चतुर्थी व्रत।।

चैत्र	शु.	चतुर्थी	०१ अप्रैल २०२५ ई.
वैशाख	शु.	”	०१ मई ”
ज्येष्ठ	शु.	”	३० मई ”
आषाढ़	शु.	”	२८ जून ”
श्रावण	शु.	”	२६ अगस्त ”
भाद्रपद	शु.	”	२५ सितम्बर ”
आश्विन	शु.	”	२५ अक्टूबर ”
कार्तिक	शु.	”	२४ नवम्बर ”
मार्गशीर्ष	शु.	”	२३ दिसम्बर ”
पौष	शु.	”	२२ जनवरी २०२६ ई.
माघ	शु.	”	२१ फरवरी ”

।। संकष्ट चतुर्थी व्रत ।।

वैशाख	कृ.	चतुर्थी	१६ अप्रैल २०२५ ई.
ज्येष्ठ	कृ.	”	१६ मई ”
आषाढ़	कृ.	”	१४ जून ”
श्रावण	कृ.	”	१४ जुलाई ”
भाद्रपद	कृ.	”	१२ अगस्त ”
आश्विन	कृ.	”	१० सितम्बर ”
कार्तिक	कृ.	”	१० अक्टूबर ”
मार्गशीर्ष	कृ.	”	०८ नवम्बर ”
पौष	कृ.	”	०७ दिसम्बर ”
माघ	कृ.	”	०६ जनवरी २०२६ ई.
फाल्गुन	कृ.	”	०५ फरवरी ”
चैत्र	कृ.	”	०६ मार्च ”

।। दुर्गाष्टमी व्रत ।।

चैत्र	शु.	अष्टमी	०५ अप्रैल २०२५ ई.
वैशाख	शु.	”	०४ मई ”
ज्येष्ठ	शु.	”	०३ जून ”
आषाढ़	शु.	”	०३ जुलाई ”
श्रावण	शु.	”	०१ अगस्त ”
भाद्रपद	शु.	”	३१ अगस्त ”
आश्विन	शु.	”	३० सितम्बर ”
कार्तिक	शु.	”	२९ अक्टूबर ”
मार्गशीर्ष	शु.	”	२८ नवम्बर ”
पौष	शु.	”	२८ दिसम्बर ”
माघ	शु.	”	२६ जनवरी २०२६ई.
फाल्गुन	शु.	”	२४ फरवरी ”

।। कालाष्टमी व्रत ।।

वैशाख	कृ.	अष्टमी	२० अप्रैल २०२५ ई.
ज्येष्ठ	कृ.	”	२० मई ”
आषाढ़	कृ.	”	१८ जून ”
श्रावण	कृ.	”	१७ जुलाई ”
भाद्रपद	कृ.	”	१५ अगस्त ”
आश्विन	कृ.	”	१४ सितम्बर ”
कार्तिक	कृ.	”	१३ अक्टूबर ”
मार्गशीर्ष	कृ.	”	११ नवम्बर ”
पौष	कृ.	”	११ दिसम्बर ”
माघ	कृ.	”	१० जनवरी २०२६ई.
फाल्गुन	कृ.	”	०९ फरवरी ”
चैत्र	कृ.	”	११ मार्च ”

।। एकादशी व्रत ।।

चैत्र	शु.	कामदा	०८ अप्रैल २०२५ ई.
वैशाख	कृ.	वरुथिनी	२४ अप्रैल ”
वैशाख	शु.	मोहिनी	०८ मई ”
ज्येष्ठ	कृ.	अपरा (स्मा.वै.)	२३ मई ”
ज्येष्ठ	कृ.	अपरा (नि.)	२४ मई ”
ज्येष्ठ	शु.	निर्जला (स्मा.वै.)	०६ जून ”
ज्येष्ठ	शु.	निर्जला (नि.)	०७ जून ”
आषाढ़	कृ.	योगिनी (स्मा.)	२१ जून ”
आषाढ़	कृ.	योगिनी (वै.नि.)	२२ जून ”
आषाढ़	शु.	देवशयनी	०६ जुलाई ”
श्रावण	कृ.	कामिका	२१ जुलाई ”
श्रावण	शु.	पुत्रदा (पवित्रा)	०५ अगस्त ”
भाद्रपद	कृ.	अजा	१९ अगस्त ”
भाद्रपद	शु.	पार्श्व. (स्मा.वै.)	०३ सितम्बर ”
भाद्रपद	शु.	पार्श्व. (नि.)	०४ सितम्बर ”
आश्विन	कृ.	इन्दिरा (स्मा.वै.)	१७ सितम्बर”
आश्विन	कृ.	इन्दिरा (नि.)	१८ सितम्बर”
आश्विन	शु.	पापांकुशा	०३ अक्टूबर ”
कार्तिक	कृ.	रमा	१७ अक्टूबर ”
कार्तिक	शु.	प्रबोधिनी (देवोत्थान)	०२ नवम्बर ”
मार्गशीर्ष	कृ.	उत्पन्ना (स्मा.वै.)	१५ नवम्बर ”
मार्गशीर्ष	कृ.	उत्पन्ना (नि.)	१६ नवम्बर ”
मार्गशीर्ष	शु.	मोक्षदा	०१ दिसम्बर २०२५
पौष	कृ.	सफला	१५ दिसम्बर ”
पौष	शु.	पुत्रदा (स्मा.)	३० दिसम्बर ”
पौष	शु.	पुत्रदा (वै.)	३१ दिसम्बर ”
माघ	कृ.	षट्तिला	१४ जनवरी २०२६ ई.
माघ	शु.	जया	२९ जनवरी ”
फाल्गुन	कृ.	विजया	१३ फरवरी ”
फाल्गुन	शु.	आमलकी	२७ फरवरी ”
चैत्र	कृ.	पापमोचिनी	१५ मार्च ”

।। प्रदोष व्रत ।।

चैत्र	शु.	त्रयोदशी	१०अप्रैल २०२५ ई.
वैशाख	कृ.	”	२५ अप्रैल ”
वैशाख	शु.	”	०९ मई ”
ज्येष्ठ	कृ.	”	२४ मई ”
ज्येष्ठ	शु.	”	०८ जून ”
आषाढ़	कृ.	”	२३ जून ”
आषाढ़	शु.	”	०८ जुलाई ”
श्रावण	कृ.	”	२२ जुलाई ”
श्रावण	शु.	”	०६ अगस्त ”
भाद्रपद	कृ.	”	२० अगस्त ”
भाद्रपद	शु.	”	०५ सितम्बर ”
आश्विन	कृ.	”	१९ सितम्बर ”
आश्विन	शु.	”	०४ अक्टूबर ”
कार्तिक	कृ.	”	१८ अक्टूबर ”
कार्तिक	शु.	”	०३ नवम्बर ”
मार्गशीर्ष	कृ.	”	१७ नवम्बर ”

विक्रम संवत् २०८२ के वर्गीकृत व्रत, पर्वों की सूची

मार्गशीर्ष	शु.	त्रयोदशी	०२ दिसम्बर २०२५ ई.
पौष	कृ.	”	१७ दिसम्बर ”
पौष	शु.	”	०१ जनवरी २०२६ ई.
माघ	कृ.	”	१६ जनवरी ”
माघ	शु.	”	३० जनवरी ”
फाल्गुन	कृ.	”	१४ फरवरी ”
फाल्गुन	शु.	”	०१ मार्च ”
चैत्र	कृ.	”	१६ मार्च ”

।। मास शिवरात्रि ।।

वैशाख	कृ.	चतुर्दशी	२६ अप्रैल २०२५ ई.
ज्येष्ठ	कृ.	”	२५ मई ”
आषाढ़	कृ.	”	२३ जून ”
श्रावण	कृ.	”	२३ जुलाई ”
भाद्रपद	कृ.	”	२१ अगस्त ”
आश्विन	कृ.	”	२० सितम्बर ”
कार्तिक	कृ.	”	१९ अक्टूबर ”
मार्गशीर्ष	कृ.	”	१८ नवम्बर ”
पौष	कृ.	”	१८ दिसम्बर ”
माघ	कृ.	”	१६ जनवरी २०२६ ई.
फाल्गुन	कृ.	”	१५ फरवरी ”
चैत्र	कृ.	”	१७ मार्च ”

।। अमावस्या श्राद्धादि ।।

वैशाख	कृ.	अमावस्या	२७ अप्रैल २०२५ ई.
ज्येष्ठ	कृ.	”	२६ मई ”
आषाढ़	कृ.	”	२५ जून ”
श्रावण	कृ.	अमावस्या	२४ जुलाई २०२५ ई.
भाद्रपद	कृ.	”	२२ अगस्त ”
आश्विन	कृ.	”	२१ सितम्बर ”
कार्तिक	कृ.	”	२१ अक्टूबर ”
मार्गशीर्ष	कृ.	”	१९ नवम्बर ”
पौष	कृ.	”	१९ दिसम्बर ”
माघ	कृ.	”	१८ जनवरी २०२६ ई.
फाल्गुन	कृ.	”	१७ फरवरी ”
चैत्र	कृ.	”	१८ मार्च ”

।। सत्यनारायण व्रत ।।

चैत्र	शु.	पूर्णिमा	१२ अप्रैल २०२५ ई.
वैशाख	शु.	”	१२ मई ”
ज्येष्ठ	शु.	”	११ जून ”
आषाढ़	शु.	”	१० जुलाई ”
श्रावण	शु.	”	०९ अगस्त ”
भाद्रपद	शु.	”	०७ सितम्बर ”
आश्विन	शु.	”	०७ अक्टूबर ”
कार्तिक	शु.	”	०५ नवम्बर ”
मार्गशीर्ष	शु.	”	०४ दिसम्बर ”
पौष	शु.	”	०३जनवरी २०२६ ई.
माघ	शु.	”	०१ फरवरी ”
फाल्गुन	शु.	”	०३ मार्च ”

।। पूर्णिमा व्रत ।।

चैत्र	शु.	पूर्णिमा	१२ अप्रैल २०२५ ई.
वैशाख	शु.	”	१२ मई ”
ज्येष्ठ	शु.	पूर्णिमा	१० जून २०२५ ई.
आषाढ़	शु.	”	१० जुलाई ”
श्रावण	शु.	”	०८ अगस्त ”
भाद्रपद	शु.	”	०७ सितम्बर ”
आश्विन	शु.	”	०६ अक्टूबर ”
कार्तिक	शु.	”	०५ नवम्बर ”
मार्गशीर्ष	शु.	”	०४ दिसम्बर ”
पौष	शु.	”	०२ जनवरी २०२६ ई.
माघ	शु.	”	०१ फरवरी ”
फाल्गुन	शु.	”	०२ मार्च ”

।। संक्रान्तियों का पुण्यकाल ।।

मेष	१४ अप्रैल २०२५ ई.		मध्याह्न तक
वृष	१५ मई	”	मध्याह्न तक
मिथुन	१५ जून	”	१३:०८ तक
कर्क	१६ जुलाई	”	सूर्योदय से १७:३२ तक
सिंह	१७ अगस्त	”	सूर्योदय से मध्याह्न तक
कन्या	१७ सितम्बर	”	मध्याह्न तक
तुला	१७ अक्टूबर	”	०९:४५ से १७:४५ तक
वृश्चिक	१६ नवम्बर	”	०७:१३ से १३:३७ तक
धनु	१६ दिसम्बर	”	सूर्योदय से मध्याह्न तक
मकर	१४ जनवरी २०२६ ई.		१५:०६ से सूर्यास्त तक
कुम्भ	१३ फरवरी	”	मध्याह्न तक
मीन	१५ मार्च	”	मध्याह्न तक

।। दशावतार जयन्तियाँ ।।

श्री मत्स्य जय.	चैत्र शु.३	३१ अप्रैल २०२५ ई.	
श्री राम जय.	चैत्र शु.९	०६ अप्रैल	”
श्री परशुराम जय.	वै.शु. ३	२९ अप्रैल	”
श्री नृसिंह जय.	वै.शु. १४	१४ मई	”
श्री बुद्ध जय.	वै.शु. १५	११ मई	”
श्री कूर्म जय.	वै.शु. १५	१२ मई	”
श्री कल्कि जय.	श्रा.शु. ६	३० जुलाई	”
श्री कृष्ण जय.	भा.कृ. ८	१५ अगस्त	”
श्री वाराह जय.	भा.शु. ३	२६ अगस्त	”
श्री वामन जय.	भा.शु.१२	०४ सितम्बर	”

।। दशमहाविद्या जयन्तियाँ।।

श्री तारा	चै.शु. ९	०६ अप्रैल २०२५ ई.	
श्री मातंगी	वै.शु. ३	२९ अप्रैल	”
श्री बगलामुखी	वै.शु. ८	०४ मई	”
श्री छिन्नमस्तका	वै.शु. १४	११ मई	”
श्री धूमावती	ज्ये.शु.८	०३ जून	”
श्री काली	भाद्र.कृ.८	१५ अगस्त	”
श्री भुवनेश्वरी	भाद्र.शु.१२	०४सितम्बर	”
श्री कमला	कार्ति.कृ.३०	२० अक्टूबर	”
श्री त्रिपुरभैरवी	मार्ग शु.१५	०४ दिसम्बर	”
श्री ललिता माघ शु.१५		०१ फरवरी २०२६ ई.	

प्रो. सुशील कुमार
आचार्य, ज्योतिष-विभाग

ग्रहों के राशि एवं नक्षत्रचार (भा. स्टैं.टा.) विक्रम संवत् २०८२

।। निरयण सूर्य संक्रमण (राशिचार)।।

दिनाङ्क	वार	राशि	प्रा. समय
१३.०४.२०२५	रवि	मेष	२७:२१
१४.०५.२०२५	बुध	वृष	२४:११
१५.०६.२०२५	रवि	मिथुन	०६:४४
१६.०७.२०२५	बुध	कर्क	१७:३२
१६.०८.२०२५	शनि	सिंह	२५:५२
१६.०९.२०२५	मंगल	कन्या	२५:४७
१७.१०.२०२५	शुक्र	तुला	१३:४५
१६.११.२०२५	रवि	वृश्चिक	१३:३७
१५.१२.२०२५	सोम	धनु	२८:१९
१४.०१.२०२६	बुध	मकर	१५:०६
१२.०२.२०२६	गुरु	कुम्भ	२८:०८
१४.०३.२०२६	शनि	मीन	२५:०२

।। मंगल राशिचार ।।

दिनाङ्क	वार	राशि	प्रा. समय
०२.०४.२०२५	बुध	कर्क	२५:२८
०६.०६.२०२५	शुक्र	सिंह	२६:१२
२८.०७.२०२५	सोम	कन्या	१९:५९
१३.०९.२०२५	शनि	तुला	२१:२२
२७.१०.२०२५	सोम	वृश्चिक	१५:४२
०७.१२.२०२५	रवि	धनु	२०:१७
१५.०१.२०२६	गुरु	मकर	२८:२८
२३.०२.२०२६	सोम	कुम्भ	११:५०

।। बुध राशिचार ।।

दिनाङ्क	वार	राशि	प्रा. समय
०६.०५.२०२५	मंगल	मेष	२८:०७
२३.०५.२०२५	शुक्र	वृष	१३:०२
०६.०६.२०२५	शुक्र	मिथुन	०९:२६
२२.०६.२०२५	रवि	कर्क	२१:२८
३०.०८.२०२५	शनि	सिंह	१६:४५
१५.०९.२०२५	सोम	कन्या	११:०६
०२.१०.२०२५	गुरु	तुला	२७:४३
२४.१०.२०२५	शुक्र	वृश्चिक	१२:३३
२३.११.२०२५	रवि	वक्री/तुला	२०:०६
०६.१२.२०२५	शनि	वृश्चिक	२०:४५
२९.१२.२०२५	सोम	धनु	०७:२३
१७.०१.२०२६	शनि	मकर	१०:२३
०३.०२.२०२६	मंगल	कुम्भ	२१:५१

।। गुरु राशिचार ।।

दिनाङ्क	वार	राशि	प्रा. समय
१४.०५.२०२५	बुध	मिथुन	२२:३५
१८.१०.२०२५	शनि	कर्क	१९:४६
०५.१२.२०२५	शुक्र	वक्री/मिथुन	१७:२६

।। शुक्र राशिचार ।।

दिनाङ्क	वार	राशि	प्रा. समय
३१.०५.२०२५	शनि	मेष	११:३३
२९.०६.२०२५	रवि	वृष	१४:०९
२६.०७.२०२५	शनि	मिथुन	०८:५६
२०.०८.२०२५	बुध	कर्क	२५:१९
१४.०९.२०२५	रवि	सिंह	२४:१७
०९.१०.२०२५	गुरु	कन्या	१०:४९
०२.११.२०२५	रवि	तुला	१३:१५
२६.११.२०२५	बुध	वृश्चिक	११:२१
२०.१२.२०२५	शनि	धनु	०७:४५
१२.०१.२०२६	सोम	मकर	२७:५७
०५.०२.२०२६	गुरु	कुम्भ	२५:११
०१.०३.२०२६	रवि	मीन	२४:५६

।। शनि राशिचार ।।

दिनाङ्क	वार	राशि	प्रा. समय
वर्षभर शनि मीन राशि में संचार करेगा।			

।। राहु राशिचार ।।

दिनाङ्क	वार	राशि	प्रा. समय
१८.०५.२०२५	रवि	मीन	१९:३५

।। केतु राशिचार ।।

दिनाङ्क	वार	राशि	प्रा. समय
१८.०५.२०२५	रवि	कन्या	१९.३५

।। सायन सूर्य संक्रमण (नक्षत्रचार)।।

दिनाङ्क	वार	नक्षत्र	प्रा. समय
१९. ०४.२०२५	शनि	वृष	२५:२६
२०.०५.२०२५	मंगल	मिथुन	२४:२५
२१.०६.२०२५	शनि	कर्क	०८:३१
२२.०७.२०२५	मंगल	सिंह	१९:००
२२.०८.२०२५	शुक्र	कन्या	२६:०४
२२.०९.२०२५	सोम	तुला	२३:५०
२३.१०.२०२५	गुरु	वृश्चिक	०९:२१
२२.११.२०२५	शनि	धनु	०७:०६
२१.१२.२०२५	रवि	मकर	२०:३३
१९.०१.२०२५	सोम	कुम्भ	३१:१५
१८.०२.२०२६	बुध	मीन	२१:२२

।। सूर्य नक्षत्रचार ।।

दिनाङ्क	वार	नक्षत्र	प्रा. समय
३१.०३.२०२५	सोम	रेव.	१३:५९
१३.०४.२०२५	रवि	अश्वि.	२७:२१
२७.०४.२०२५	रवि	भरणी	१९:०९
११.०५.२०२५	रवि	कृत्ति.	१३:१७
२५.०५.२०२५	रवि	रोहि.	०९:३०
०८.०६.२०२५	रवि	मृग.	०७:१८
२२.०६.२०२५	रवि	आर्द्रा	०६:१९
०६.०७.२०२५	रवि	पुन.	०५:४७
१९.०७.२०२५	शनि	पुष्य	२९:२२
०२.०८.२०२५	शनि	आश्ले.	२८:०८
१६.०८.२०२५	शनि	मघा	२५:५२
३०.०८.२०२५	शनि	पू.फा.	२१:४४
१३.०९.२०२५	शनि	उ.फा.	१५:४१
२७.०९.२०२५	शनि	हस्त	०७:०६
१०.१०.२०२५	शुक्र	चित्रा	२०:११
२४.१०.२०२५	शुक्र	स्वाति	०६:४०
०६.११.२०२५	गुरु	विशा.	१४:५२
१९.११.२०२५	बुध	अनु.	२०:५६
०२.१२.२०२५	मंगल	ज्ये.	२५:१४
१५.१२.२०२५	सोम	मूल	२८:१९
२८.१२.२०२५	रवि	पू.षा.	३०:३०
११.०१.२०२६	रवि	उ.षा.	०८:३५

ग्रहों के राशि एवं नक्षत्रचार (भा. स्टैं.टा.) विक्रम संवत् २०८२

२४.०१.२०२६	शनि	श्रव.	१०:५०
०६.०२.२०२६	शुक्र	धनि.	१४:०४
१९.०२.२०२६	गुरु	शत.	१८:३३
०४.०३.२०२६	बुध	पू.भा.	२४:५३
१८:०३.२०२६	बुध	उ.भा.	०९:२०

।। मंगल नक्षत्रचार ।।

दिनाङ्क	वार	नक्षत्र	प्रा. समय
१२.०४.२०२५	शनि	पुष्य	०६:०८
१२.०५.२०२५	सोम	आश्ले.	०८:३६
०६.०६.२०२५	शुक्र	मघा	२६:११
३०.०६.२०२५	सोम	पू.फा.	२०:१९
२३.०७.२०२५	बुध	उ.फा.	०८:३७
१३.०८.२०२५	बुध	हस्त	२२:३२
०३.०९.२०२५	बुध	चित्रा	१७:५२
२३.०९.२०२५	मंगल	स्वा.	२०:५७
१३.१०.२०२५	सोम	विशा.	०९:१७
०१.११.२०२५	शनि	अनु.	०८:१७
१९:११.२०२५	बुध	ज्ये.	१९:२९
०७:१२.२०२५	रवि	मूल	२०:१७
२५.१२.२०२५	गुरु	पू.षा.	१२:१५
११.०१.२०२६	रवि	उ.षा.	२१:१०
२८.०१.२०२६	बुध	श्रव.	२४:३८
१४.०२.२०२६	शनि	धनि.	२४:३७
०३.०३.२०२६	मंगल	शत.	२२:५४

।। बुध नक्षत्रचार ।।

दिनाङ्क	वार	नक्षत्र	प्रा. समय
०३.०४.२०२५	गुरु	उ.भा.	१७:५८
११.०४.२०२५	शुक्र	उ.भा.	१८:०८
२७.०४.२०२५	रवि	रेव.	१५:३५
०६.०५.२०२५	मंगल	अश्वि.	२८:०७
१४.०५.२०२५	बुध	भर.	२५:०३
२१.०५.२०२५	बुध	कृत्ति.	२२:२०
२७.०५.२०२५	मंगल	रोहि.	२९:०५
०३.०६.२०२५	मंगल	मृग.	०६:५६
०९.०६.२०२५	सोम	आर्द्रा	१४:५४
१६.०६.२०२५	सोम	पुन.	१६:५८
२४.०६.२०२५	मंगल	पुष्य	२९:०३
०७.०७.२०२५	सोम	आश्ले.	०५:४६
२९.०७.२०२५	मंगल	आश्ले.	१६:२९
२१.०८.२०२५	गुरु	आश्ले.	२८:२३
३०.०८.२०२५	शनि	मघा	१६:४५
०६.०९.२०२५	शनि	पू.फा.	१६:४३
१३.०९.२०२५	शनि	उ.फा.	१६:००
२०.०९.२०२५	शनि	हस्त	२४:५२
२८.०९.२०२५	रवि	चित्रा	२३:०५
०७.१०.२०२५	मंगल	स्वा.	१२:१६
१६.१०.२०२५	गुरु	विशा.	१९:०२
२७.१०.२०२५	सोम	अनु.	०९:२८
२०.११.२०२५	गुरु	अनु.	२८:१५
०९.१२.२०२५	मंगल	अनु.	२६:३३
१९.१२.२०२५	शुक्र	ज्ये.	३०:०९
२९.१२.२०२५	सोम	मूल	०७:२३
०६.०१.२०२६	मंगल	पू.षा.	२४:०१
१५.०१.२०२६	गुरु	उ.षा.	०९:१९
२३.०१.२०२६	शुक्र	श्रव.	१०:२४
३०:०१:२०२६	शुक्र	धनि.	२७:२४
०७:०२.२०२६	शनि	शत.	१६:२९
१५.०२.२०२६	रवि	पू.भा.	२१:३३
१०.०३.२०२६	मंगल	पू.भा.	०७:५५

।। गुरु नक्षत्रचार ।।

दिनाङ्क	वार	नक्षत्र	प्रा. समय
१०.०४.२०२५	गुरु	मृग.	१८:५५
१३.०६.२०२५	शुक्र	आर्द्रा	२३:२८
१२.०८.२०२५	मंगल	पुन.	२९:०५

।। शुक्र नक्षत्रचार ।।

दिनाङ्क	वार	नक्षत्र	प्रा. समय
३१.०३.२०२५	सोम	उ.भा.	२८:४७
२५.०४.२०२५	शुक्र	उ.भा.	२३:४१
१६.०५.२०२५	शुक्र	रेव.	१२:४८
३१.०५.२०२५	शनि	अश्वि.	११:३३
१३.०६.२०२५	शुक्र	भर.	२१:१३
२६.०६.२०२५	गुरु	कृत्ति.	१२:१७
०८.०७.२०२५	मंगल	रोहि.	१६:२४
२०.०७.२०२५	रवि	मृग.	१२:५५
३१.०७.२०२५	गुरु	आर्द्रा	२७:४४
१२.०८.२०२५	मंगल	पुन.	१४:०८
२३.०८.२०२५	शनि	पुष्य	२०:३६
०३.०९.२०२५	बुध	आश्ले.	२३:५१
१४.०९.२०२५	रवि	मघा	२४:१७
२५.०९.२०२५	गुरु	पू.फा.	२२:११
०६.१०.२०२५	सोम	उ.फा.	१८:०६
१७.१०.२०२५	शुक्र	हस्त	१२:१९
२७.१०.२०२५	सोम	चित्रा	२९:११
०७.११.२०२५	शुक्र	स्वा.	२१:०७
१८.११.२०२५	मंगल	विशा.	१२:१८
२८.११.२०२५	शुक्र	अनु.	२७:००
०९.१२.२०२५	मंगल	ज्ये.	१७:२९
२०.१२.२०२५	शनि	मूल	०७:४४
३०.१२.२०२५	मंगल	पू.षा.	२१:५९
१०.०१.२०२६	शनि	उ.षा.	१२:२१
२०.०१.२०२६	मंगल	श्रव.	२६:४९
३१.०१.२०२६	शनि	धनि.	१७:३७
११.०२.२०२६	बुध	शत.	०८:५१
२१.०२.२०२६	शनि	पू.भा.	२४:३७
०४.०३.२०२६	बुध	उ.भा.	१७:१०
१५.०३.२०२६	रवि	रेव.	१०:३८

।। शनि नक्षत्रचार ।।

दिनाङ्क	वार	नक्षत्र	प्रा. समय
२८.०४.२०२५	सोम	उ.भा.	०६:१९
०३.१०.२०२५	शुक्र	उ.भा.	२३:४२
२०.०१.२०२६	मंगल	उ.भा.	१०:५२

।। राहु नक्षत्रचार ।।

दिनाङ्क	वार	नक्षत्र	प्रा. समय
२३.११.२०२५	रवि	पू.भा.	१२:३४

।। केतु नक्षत्रचार ।।

दिनाङ्क	वार	नक्षत्र	प्रा. समय
२०.०७.२०२५	रवि	उ.फा.	१७:१५

ग्रहों के वक्रत्व-मार्गत्व एवं उदयास्त (भा. स्टैं.टा.) विक्रम संवत् २०८२

।। ग्रहों का वक्रत्व - मार्गत्व ।।

दिनाङ्क	ग्रह	प्रा. समय	गति
०७.०४.२०२५	बुध	१६:३७	मार्गी
१८.०७.२०२५	बुध	१०:१४	वक्री
११.०८.२०२५	बुध	१२:५९	मार्गी
०९.११.२०२५	बुध	२४:३१	वक्री
२९.११.२०२५	बुध	२३:०८	मार्गी
२६.०२.२०२६	बुध	१२:१७	वक्री
११.११.२०२५	गुरु	२२:११	वक्री
११.०३.२०२६	गुरु	०८:५९	मार्गी
१३.०४.२०२५	शुक्र	०६:३२	मार्गी
१३:०७.२०२५	शनि	०९:३६	वक्री
२८.११.२०२५	शनि	०९:२१	मार्गी

।। ग्रहों का उदयास्त ।।

दिनाङ्क	ग्रह	स्थिति	प्रा. समय
०३.११.२०२५	मंगल	अस्त	३०:२५
०२.०४.२०२५	बुध	उदय	१३:२६
१६.०५.२०२५	बुध	अस्त	२३:३५
०७.०६.२०२५	बुध	उदय	२२:०७
२०.०७.२०२५	बुध	अस्त	१०:०८
०८.०८.२०२५	बुध	उदय	२४:४१
०२.०९.२०२५	बुध	अस्त	२९:१५
०३.१०.२०२५	बुध	उदय	२०:०१
१३.११.२०२५	बुध	अस्त	१२:३९
२५.११.२०२५	बुध	उदय	१४:१५
०१.०१.२०२६	बुध	अस्त	२८:३८
०४.०२.२०२६	बुध	उदय	२१:५४
०१.०३.२०२६	बुध	अस्त	१४:४९
१४.०३.२०२६	बुध	उदय	१४:४१
११.०६.२०२५	गुरु	अस्त	१९:१४
०६.०७.२०२५	गुरु	उदय	२९:३०
१३.१२.२०२५	शुक्र	अस्त	२९:१५
३१.०२.२०२६	शुक्र	उदय	१७:५७
०४.०१.२०२५	शनि	उदय	०६:३६
११.०३.२०२६	शनि	अस्त	१९:५४

प्रो. सुशील कुमार, आचार्य, ज्योतिष विभाग

सर्वार्थसिद्धियोग विक्रम सम्वत् २०८२, ईशवीय सन् २०२५-२६

दिनाङ्क २०२५ ई.	वार	प्रारम्भ घं. मि.	समाप्त घं. मि.	दिनाङ्क २०२५ ई.	वार	प्रारम्भ घं. मि.	समाप्त घं. मि.	दिनाङ्क २०२५ ई.	वार	प्रारम्भ घं. मि.	समाप्त घं. मि.	दिनाङ्क २०२५ ई.	वार	प्रारम्भ घं. मि.	समाप्त घं. मि.
मार्च ३०	रवि	१६:३५	३०:१६	जून ०४	बुध	२७:३५	२९:२७	१४	गुरु	०५:५४	२९:५४	०४	मंगल	१२:३४	३०:४०
अप्रैल ०१	मंगल	११:०७	३०:१४	०७	शनि	०९:४०	२९:२७	१५	शुक्र	०५:५४	०७:३६	१०	सोम	१८:४८	३०:४४
०२	बुध	०६:१४	०८:५०	०९	सोम	१५:३१	२९:२७	१६	शनि	२८:३९	२९:५५	११	मंगल	१८:१८	३०:४५
०४	शुक्र	२९:२०	३०:११	१४	शनि	२४:२२	२९:२७	१८	सोम	०५:५६	२६:०६	१६	रवि	०६:४९	२६:११
०६	रवि	०६:१०	३०:०८	१९	गुरु	२३:१७	२९:२८	२१	गुरु	०५:५७	२४:०८	२०	गुरु	१०:५९	३०:३५
०७	सोम	०६:०८	०६:२५	२०	शुक्र	०५:२८	२१:४५	२४	रवि	२६:०६	३०:००	२१	शुक्र	०६:५३	१३:५५
०८	मंगल	०६:०७	०७:५५	२३	सोम	१५:१७	२९:२९	सितम्बर ०५	शुक्र	०६:०५	२३:३८	२३	रवि	०६:५४	१९:२८
१६	बुध	०५:५९	२९:५५	२५	बुध	०५:२९	१०:४०	०९	मंगल	०६:०७	१८:०७	३०	रवि	०७:००	२५:११
२०	रवि	११:४८	२९:५४	२६	गुरु	०८:४६	२९:२९	११	गुरु	०६:०८	१३:५८	दिसम्बर ०२	मंगल	०७:०१	२०:५१
२१	सोम	१२:३७	२९:५३	२७	शुक्र	०५:२९	०७:२२	१३	शनि	१०:११	३०:०९	०३	बुध	१८:००	३१:०२
२७	रवि	०५:४८	२४:३९	जुलाई ०२	बुध	११:०७	२९:३१	१५	सोम	०६:१०	०७:३१	०७	रवि	२८:११	३१:०६
२९	मंगल	०५:४६	१८:४७	०५	शनि	०५:३२	१९:५१	१८	गुरु	०६:११	०६:३२	०८	सोम	०७:०६	२६:५३
३०	बुध	०५:४६	१६:१८	०७	सोम	०५:३३	२५:१२	२१	रवि	०९:३२	३०:१३	०९	मंगल	०७:०६	२६:२२
मई ०२	शुक्र	१३:०४	२९:४३	१२	शनि	०६:३६	२९:३६	२६	शुक्र	२२:०८	३०:१६	१४	रवि	०७:१०	०८:१८
०४	रवि	०५:४२	१२:५३	१७	गुरु	०५:३८	२७:३९	२८	रवि	२७:५४	३०:१७	१७	बुध	१७:११	३१:१२
१०	शनि	२७:१५	२९:३७	१८	शुक्र	०५:३८	२६:१४	अक्टूबर ०३	शुक्र	०६:१९	०९:३४	१८	गुरु	०७:१२	२०:०७
१४	बुध	०५:३५	११:४७	२१	सोम	०५:४०	२१:०७	०७	मंगल	२५:२७	३०:२१	२१	रवि	२७:३६	३१:१४
१८	रवि	०५:३३	१८:५२	२४	गुरु	०५:४२	१६:४४	११	शनि	०६:२३	१५:२०	२२	सोम	२९:३२	३१:१५
१९	सोम	०५:३३	१९:३०	३०	बुध	०५:४५	२१:५३	१९	रवि	०६:२८	१७:४९	२८	रवि	०७:१७	०८:४३
२३	शुक्र	१६:०२	२९:३०	अगस्त ०४	सोम	०५:४८	०९:५२	२३	गुरु	२८:५०	३०:३१	३०	मंगल	२७:५८	३१:१७
२५	रवि	०५:३०	११:१२	०८	शुक्र	१४:२८	२९:५१	२४	शुक्र	०६:३१	३०:३२	३१	बुध	०७:१८	२५:३०
२८	बुध	०५:२९	२४:२९	०९	शनि	०५:५१	१४:२४	२६	रवि	१०:४६	३०:३३	२०२६ ई.			
२९	गुरु	२२:३९	२९:२८	१२	मंगल	०५:५३	११:५२	नवम्बर ०२	रवि	१७:०३	३०:३८	जनवरी ०४	रवि	१५:११	३१:१९
३०	शुक्र	०५:२८	२१:२९												

सर्वार्थसिद्धियोग विक्रम सम्वत् २०८२

दिनाङ्क २०२६ ई.	वार	प्रारम्भ घं. मि.	समाप्त घं. मि.
०५	सोम	०७:१९	१३:२४
०६	मंगल	०७:१९	१२:१७
१४	बुध	०७:१९	२७:०३
१८	रवि	१०:१४	३१:१८
१९	सोम	११:५२	३१:१८
२५	रवि	१३:३५	३१:१७
२७	मंगल	११:०९	३१:१६
२८	बुध	०७:१६	०९:२६
३०	शुक्र	२७:२७	३१:१४
फरवरी ०१	रवि	०७:१४	२३:५८
०७	शनि	२६:२८	३१:१०
११	बुध	०७:०७	१०:५३
१५	रवि	०७:०४	१९:४८
१६	सोम	०७:०३	२०:४७
२०	शुक्र	२०:०७	३१:००
२२	रवि	०६:५८	१७:५४
२४	मंगल	०६:५६	१५:०७
२५	बुध	०६:५५	३०:५४
२७	शुक्र	१०:४८	३०:५२
मार्च ०१	रवि	०६:५१	०८:३४
०७	शनि	११:१५	३०:४३
०९	सोम	१६:११	३०:४१

दिनाङ्क २०२५ ई.	वार	प्रारम्भ घं. मि.	समाप्त घं. मि.
१४	शनि	२८:४९	३०:३५
१९	गुरु	२८:०४	३०:३१

गुरुपुष्ययोग
विक्रम सम्वत् २०८२

दिनाङ्क २०२५ ई.	वार	प्रारम्भ घं. मि.	समाप्त घं. मि.
जुलाई २४	गुरु	१६:४४	२९:४२
अगस्त २१	गुरु	०५:५७	२४:०८
सितम्बर १८	गुरु	०६:११	०६:३२

रविपुष्ययोग
विक्रम सम्वत् २०८२

दिनाङ्क २०२५ ई.	वार	प्रारम्भ घं. मि.	समाप्त घं. मि.
अप्रैल ०६	रवि	०६:१०	३०:०८
मई ०४	रवि	०५:४२	१२:५३
दिसम्बर ०७	रवि	२८:११	३१:०६
२०२६ ई.			
जनवरी ०४	रवि	१५:११	३१:१९
फरवरी ०१	रवि	०७:१४	२३:५७
मार्च ०१	रवि	०६:५१	०८:३४

द्विपुष्करयोग विक्रम सम्वत् २०८२

दिनाङ्क २०२५ ई.	वार	प्रारम्भ घं. मि.	समाप्त घं. मि.
मई २०	मंगल	०५:३२	०५:५२
२७	मंगल	२९:०३	२९:२९
जून ०७	शनि	०५:२७	०९:४०
जुलाई २२	मंगल	०५:४१	०७:०६
अगस्त १०	रवि	१२:१०	१३:५२
सितम्बर २३	मंगल	१३:३९	२८:५१
अक्टूबर ०४	शनि	०६:१९	०९:०९
नवम्बर १६	रवि	२६:१०	२८:४७
दिसम्बर ०६	शनि	०७:०४	०८:४८
२०२६ ई.			
जनवरी २०	मंगल	१३:०६	२६:४२
मार्च १५	रवि	२९:५६	३०:३४

त्रिपुष्करयोग
विक्रम सम्वत् २०८२

दिनाङ्क २०२५ ई.	वार	प्रारम्भ घं. मि.	समाप्त घं. मि.
अप्रैल १५	मंगल	०६:००	१०:५६
२०	रवि	११:४८	१९:०१
२९	मंगल	०५:४६	१७:३१

त्रिपुष्करयोग विक्रम सम्वत् २०८२

दिनाङ्क २०२५ ई.	वार	प्रारम्भ घं. मि.	समाप्त घं. मि.
मई ०३	शनि	०७:५२	१२:३४
जून १७	मंगल	२५:०२	२९:२७
२२	रवि	१७:३८	२५:२२
जुलाई ०१	मंगल	१०:२१	२९:३१
०६	रवि	२१:१५	२२:४२
१२	शनि	०५:३५	०६:३६
अगस्त १९	मंगल	२५:०८	२९:५७
२४	रवि	२६:०६	३०:००
३०	शनि	०६:०२	१४:३७
सितम्बर १३	शनि	०७:२३	१०:११
अक्टूबर २८	मंगल	१५:४४	३०:३५
नवम्बर ०२	रवि	०७:३१	१७:०३
दिसम्बर १६	मंगल	१४:१०	२३:५७
२७	शनि	०७:१६	०९:१०
३१	मंगल	२९:०१	३१:१८
२०२६ ई.			
जनवरी ०४	रवि	१२:३०	१५:११
फरवरी २८	शनि	०६:५२	०९:३४

सिद्धियोग विक्रम सम्वत् २०८२, ईश्वीय सन् २०२५ – २६

दिनाङ्क २०२५ ई.	वार	प्रारम्भ घं. मि.	समाप्त घं. मि.	दिनाङ्क २०२५ ई.	वार	प्रारम्भ घं. मि.	समाप्त घं. मि.	दिनाङ्क २०२५ ई.	वार	प्रारम्भ घं. मि.	समाप्त घं. मि.	दिनाङ्क २०२५ ई.	वार	प्रारम्भ घं. मि.	समाप्त घं. मि.
अप्रैल ०५	शनि	१९:२७	३०:११	जून ०३	मंगल	०५:२८	२१:५७	अगस्त ०२	शनि	०७:२४	२९:४७	अक्टूबर ०२	गुरु	०६:१८	१९:११
०७	सोम	२०:००	३०:०८	०५	गुरु	०५:२७	२६:१६	०४	सोम	११:४२	२९:४९	०३	शुक्र	०६:१९	१८:३४
०९	बुध	०६:०६	२२:५६	०६	शुक्र	०५:२७	२८:४८	०६	बुध	०५:४९	१४:०९	०५	रवि	०६:२०	१५:०४
१४	सोम	०६:०१	०८:२५	०८	रवि	०७:१८	२९:२७	१२	मंगल	०५:५३	०८:४१	०८	बुध	०६:२१	२६:२३
१५	मंगल	१०:५६	३०:००	१४	शनि	१५:४७	२९:२७	१६	शनि	२१:३५	२९:५६	१४	मंगल	०६:२५	११:१०
१७	गुरु	१५:२४	२९:५८	१६	सोम	१५:३२	२९:२७	१८	सोम	१७:२३	२९:५७	१६	गुरु	०६:२६	१०:३६
१८	शुक्र	१७:०८	२९:५७	१८	बुध	०५:२७	१३:३५	२०	बुध	०५:५७	१३:५९	१७	शुक्र	०६:२७	११:१२
२०	रवि	१९:०१	२९:५५	२२	रवि	२५:२२	२९:२८	२६	मंगल	०६:००	१३:५५	१९	रवि	०६:२८	१३:५२
२६	शनि	०८:२८	२८:५०	२८	शनि	०९:५४	२९:३०	२८	गुरु	०६:०१	१७:५७	२२	बुध	२०:१७	३०:३०
२८	सोम	०५:४७	२१:११	३०	सोम	०९:२४	२९:३१	२९	शुक्र	०६:०२	२०:२२	२५	शनि	०६:३२	२७:४९
२९	मंगल	१७:३१	२९:४६	जुलाई ०२	बुध	०५:३१	११:५९	३१	रवि	०६:०३	२४:५८	२७	सोम	०६:३३	३०:३४
मई ०१	गुरु	११:२४	२९:४४	०८	मंगल	०५:३४	२४:३९	सितम्बर ०३	बुध	२८:२२	३०:०५	२९	बुध	०६:३५	०९:२३
०२	शुक्र	०९:१५	२९:४३	१०	गुरु	०५:३५	२६:०७	०६	शनि	०६:०५	२५:४१	नवम्बर ०२	रवि	२९:०८	३०:३७
०४	रवि	०७:१९	२९:४२	११	शुक्र	०५:३५	२०:०९	०८	सोम	१८:२९	३०:०७	०८	शनि	०७:३२	३०:४३
१०	शनि	१७:३०	२९:३७	१३	रवि	०५:३६	२५:०३	०९	मंगल	१८:२९	३०:०८	१०	सोम	०६:४४	२४:०८
१२	सोम	२२:२६	२९:३६	१६	बुध	२१:०२	२९:३९	११	गुरु	१२:४६	३०:०९	११	मंगल	२३:०९	३०:४५
१४	बुध	०५:३५	२६:२९	१९	शनि	०५:३९	१४:४२	१२	शुक्र	०९:५९	३०:०९	१३	गुरु	२३:३४	३०:४८
१९	सोम	०५:३३	०६:१२	२१	सोम	०५:४०	०९:३९	१४	रवि	०६:१०	२७:०६	१४	शुक्र	२४:५०	३०:४८
२०	मंगल	०५:५२	२८:५६	२२	मंगल	०७:०६	२८:४०	१७	बुध	२३:४०	३०:१२	१६	रवि	२८:४८	३०:५०
२२	गुरु	०५:२८	२५:१२	२४	गुरु	०५:४२	२४:४१	२०	शनि	०६:१३	२४:१७	१८	मंगल	०६:५१	०७:१२
२३	शुक्र	०५:३१	२२:३०	२५	शुक्र	०५:४३	२३:२३	२२	सोम	०६:१४	२६:५६	२०	गुरु	०६:५२	१२:१७
२५	रवि	०५:२९	१५:५१	२७	रवि	०५:४३	२२:४२	२३	मंगल	२८:५२	३०:१५	२१	शुक्र	०६:५२	१४:४७
२८	बुध	०५:२९	१५:५१	३०	बुध	२६:४२	२९:४६	३०	मंगल	०६:१८	१८:०६	२३	रवि	०६:५४	१९:२५
												२६	बुध	२४:०२	३०:५७
												२९	शनि	०७:००	२३:१५

सिद्धियोग विक्रम सम्वत् २०८२, ईश्वीय सन् २०२५-२६

दिनाङ्क २०२५ ई.	वार	प्रारम्भ घं. मि.	समाप्त घं. मि.
दिसम्बर ०१	सोम	०७:००	१९:०१
०२	मंगल	१५:५७	३१:०१
०५	शुक्र	०७:०४	२४:५६
०७	रवि	०७:०५	१८:२५
१०	बुध	१३:४७	३१:०८
१३	गुरु	०७:०९	१६:३८
१५	सोम	०७:११	२१:२०
१६	मंगल	२३:५८	३१:१२
१८	गुरु	२८:५९	३१:१३
२३	मंगल	७:१५	१२:१३
२५	गुरु	०७:१६	१३:४३
२६	शुक्र	०७:१६	१३:४४
२८	रवि	०७:१७	१२:००
३१	बुध	०७:१८	२५:४८
२०२६ ई.			
जनवरी ०६	मंगल	०७:१९	०८:०२
११	रवि	०७:१९	१०:०२
१४	बुध	१७:५३	३१:१९
१७	शनि	०७:१९	२४:०४
१९	सोम	०७:१९	२६:१४
२०	मंगल	२६:४३	३१:१८
२२	गुरु	२६:२९	३१:१८
२३	शुक्र	२५:४६	३१:१७
२५	रवि	२३:१०	३१:१६

दिनाङ्क २०२६ ई.	वार	प्रारम्भ घं. मि.	समाप्त घं. मि.
३१	शनि	०८:२६	२९:५३
फरवरी ०२	सोम	०७:१३	२५:५२
०३	मंगल	२४:४१	३१:१२
०५	गुरु	२४:२२	३१:११
०६	शुक्र	२५:१९	३१:१०
०८	रवि	२९:०१	३१:०९
१०	मंगल	०७:०८	०७:२७
१२	गुरु	०७:०७	१२:२२
१३	शुक्र	०७:०३	१४:२६
१५	रवि	०७:०४	१७:०५
१८	बुध	१६:५९	३१:०१
२१	शनि	०६:५९	१३:०१
२३	सोम	०६:५७	०९:०९
२४	मंगल	०७:०२	२८:५१
२६	गुरु	०६:५५	२४:३३
२७	शुक्र	०६:५४	२२:३३
मार्च ०१	रवि	०६:५१	१९:०९
०४	बुध	१६:४९	३०:४८
०७	शनि	०६:४६	१९:१७
०९	सोम	०६:४२	२३:२७
१०	मंगल	२५:५४	३०:४०
१७	मंगल	०६:३३	०९:२३

अमृतयोग विक्रम सम्वत् २०८२

दिनाङ्क २०२५ ई.	वार	प्रारम्भ घं. मि.	समाप्त घं. मि.
अप्रैल ०२	बुध	२३:५०	३०:१३
०६	रवि	१९:२३	३०:१०
०७	सोम	०६:१०	२०:००
०८	मंगल	२१:१३	३०:०७
१०	गुरु	०६:०५	२५:०१
११	शुक्र	०६:०४	२७:२२
१५	मंगल	०६:००	१०:५६
१९	शनि	०५:५६	१८:२२
२३	बुध	१६:४४	२९:५२
२७	रवि	०५:४८	२५:०१
२९	मंगल	०५:४६	१७:३१
मई ०३	शनि	०५:४३	०७:५२
०७	बुध	१०:२०	२९:४०
११	रवि	२०:०२	२९:३७
१२	सोम	०५:३७	२२:२६
१३	मंगल	२४:३६	२९:३६
१५	गुरु	०५:३५	२८:०३
१६	शुक्र	०५:३४	२९:१४
१८	रवि	०५:३३	०५:५८
२०	मंगल	०५:३२	०५:५२
२६	सोम	१२:१२	२९:३०
२७	मंगल	२९:०३	२९:२९
२९	गुरु	०५:२९	२३:१८
३०	शुक्र	०५:२८	२१:२३
३१	शनि	२०:१६	२९:२८

दिनाङ्क २०२४ ई.	वार	प्रारम्भ घं. मि.	समाप्त घं. मि.
जून ११	बुध	१३:१४	२९:२७
१५	रवि	१५:५१	२९:२७
१६	सोम	०५:२८	१५:३२
१७	मंगल	१४:४७	२९:२७
१९	गुरु	०५:२८	११:५६
२०	शुक्र	०५:२८	०९:५०
२१	शनि	०७:१९	२८:२८
२५	बुध	१६:०१	२९:२९
२९	रवि	०९:१५	२९:२९
३०	सोम	०५:२९	०९:२४
जुलाई ०१	मंगल	१०:२१	२९:३१
०३	गुरु	०५:३१	१४:०७
०४	शुक्र	०५:३२	१६:३२
०५	शनि	१८:५९	२९:३२
१४	सोम	२४:००	२९:३७
१६	बुध	०५:३७	२१:०२
१७	गुरु	१९:०९	२९:३९
१८	शुक्र	१७:०२	२९:३९
२०	रवि	०५:४१	१२:१३
२२	मंगल	०५:४१	०७:०६
२८	सोम	२३:२५	२९:४४
३०	बुध	०५:४५	२६:४२
३१	गुरु	२८:५९	२९:४६

अमृतयोग विक्रम सम्वत् २०८२, ईश्वीय सन् २०२५-२६

दिनाङ्क २०२५ ई.	वार	प्रारम्भ घं. मि.	समाप्त घं. मि.	दिनाङ्क २०२५ ई.	वार	प्रारम्भ घं. मि.	समाप्त घं. मि.	दिनाङ्क २०२५ ई.	वार	प्रारम्भ घं. मि.	समाप्त घं. मि.	दिनाङ्क २०२६ ई.	वार	प्रारम्भ घं. मि.	समाप्त घं. मि.
अगस्त ०३	सोम	०९:४२	२९:४८	सितम्बर १९	गुरु	२३:३७	३०:१२	नवम्बर १५	शनि	०६:४९	२६:३८	१५	गुरु	२०:१७	३१:१९
०४	मंगल	०५:४८	११:४२	२१	रवि	०६:१३	२५:२४	२४	सोम	२१:२२	३०:५५	१६	शुक्र	२२:२२	३१:१९
०५	बुध	१३:१३	२९:४९	२३	मंगल	०६:१४	२८:५२	२६	बुध	०६:५७	२४:०२	१८	रवि	०७:१९	२५:२२
०७	गुरु	०५:५०	१४:२८	२५	गुरु	०६:१५	०७:०६	२७	गुरु	२४:३०	३०:५८	२०	मंगल	०७:१९	२६:४३
०८	शुक्र	०५:५०	१४:१२	२६	शुक्र	०६:१६	०९:३३	२८	शुक्र	२४:१६	३०:५९	२४	शनि	०७:१७	२४:४०
०९	शनि	१३:२५	२९:५१	२७	शनि	१२:०४	३०:१६	३०	रवि	०७:००	२१:२९	२८	बुध	१६:३६	३१:१६
१३	बुध	२८:२४	२९:५४	अक्टूबर ०६	सोम	१२:२४	३०:२१	दिसम्बर ०२	मंगल	०७:०१	१५:५७	फरवरी ०१	रवि	०७:१४	२७:३८
१७	रवि	१९:२५	२९:५६	०७	मंगल	२९:५४	३०:२१	०८	सोम	१६:०४	३१:०६	०३	मंगल	०७:१३	२४:४१
१८	सोम	०५:५६	१७:२३	०९	गुरु	०६:२२	२२:५५	१०	बुध	०७:०७	१३:४७	०७	शनि	०७:१०	२६:५५
१९	मंगल	१५:३३	२९:५७	१०	शुक्र	०६:२२	१९:३९	११	गुरु	१३:५७	३१:०८	१६	सोम	१७:३४	३१:०२
२१	गुरु	०५:५८	१२:४५	११	शनि	१६:४४	३०:२४	१२	शुक्र	१४:५७	३१:०९	१८	बुध	०७:०२	१६:५८
२२	शुक्र	०५:५८	११:५६	२०	सोम	१५:४५	३०:२९	१४	रवि	०७:१०	१८:५०	१९	गुरु	१५:५८	३१:००
२३	शनि	११:३६	२९:५९	२२	बुध	०६:३०	२०:१७	१६	मंगल	०७:११	२३:५८	२०	शुक्र	१४:३९	०६:५९
सितम्बर ०१	सोम	२६:४३	३०:०३	२३	गुरु	२२:४७	३०:३१	२०	शनि	०७:१५	३१:१४	२२	रवि	०६:५८	११:१०
०३	बुध	०६:०४	२८:२२	२४	शुक्र	२५:२०	३०:३२	२९	सोम	१०:१३	३१:१७	२४	मंगल	०६:५६	०७:०२
०४	गुरु	२८:०४	३०:०५	२६	रवि	०६:३२	३०:०५	३०	मंगल	२९:०१	३१:१८	मार्च ०२	सोम	१७:५६	३०:४९
०५	शुक्र	२७:१३	३०:०५	२८	मंगल	०८:००	३०:३५	२०२६ ई.				०४	बुध	०६:४८	१६:४९
०७	रवि	०६:०६	२३:३९	३०	गुरु	०६:३५	१०:०७	जनवरी ०१	गुरु	०७:१८	२२:२२	०५	गुरु	१७:०४	३०:४६
०९	मंगल	०६:०७	१८:२९	३१	शुक्र	०६:३६	१०:०४	०२	शुक्र	०७:१८	१८:५४	०६	शुक्र	१७:५४	३०:४५
१३	शनि	०६:०९	०७:२३	नवम्बर ०१	शनि	०९:१२	३०:३७	०३	शनि	१५:३३	३१:१९	०८	रवि	०६:४३	२१:११
१५	सोम	२५:३२	३०:१०	०५	बुध	१८:४९	३०:४०	०७	बुध	३०:३३	३१:१९	१०	मंगल	०६:४०	२५:५४
१७	मंगल	०६:११	२३:४०	०९	रवि	०६:४३	२५:५५	जनवरी १२	सोम	१२:४३	३१:१९	१४	शनि	०८:११	३०:३४
१८	बुध	२३:२५	३०:१२	११	मंगल	०६:४४	२३:०९	१४	बुध	०७:१९	१७:५३				

रवियोग विक्रम सम्वत् २०८२, ईश्वीय सन् २०२५-२६

दिनाङ्क २०२५ ई.	वार	प्रारम्भ घं. मि.	समाप्त घं. मि.	दिनाङ्क २०२५ ई.	वार	प्रारम्भ घं. मि.	समाप्त घं. मि.	दिनाङ्क २०२५ ई.	वार	प्रारम्भ घं. मि.	समाप्त घं. मि.	दिनाङ्क २०२५ ई.	वार	प्रारम्भ घं. मि.	समाप्त घं. मि.
अप्रैल ०१	मंगल	११:०७	३०:१४	मई ०७	बुध	०५:४०	१८:१७	जून १६	सोम	२५:१४	२९:२७	अगस्त ०५	मंगल	०५:४९	११:२३
०२	बुध	०६:१४	०८:५०	०९	शुक्र	२४:०९	२९:३८	१७	मंगल	०५:२७	२५:०२	०७	गुरु	१४:०१	२९:५०
०३	गुरु	०७:०२	२९:५१	१०	शनि	०५:३८	२६:१५	२८	शनि	०६:३५	२९:३०	०८	शुक्र	०५:५०	१४:२८
०५	शनि	२९:३२	३०:१०	११	रवि	१३:१७	२९:३६	३०	सोम	०७:२१	२९:३१	१४	गुरु	०९:०६	२९:५४
०६	रवि	०६:१०	३०:०८	१२	सोम	०५:३६	०६:१७	जुलाई ०१	मंगल	०५:३१	०८:५४	१५	शुक्र	०५:५४	०७:३६
०७	सोम	०६:०८	३०:०७	१८	रवि	१८:५२	२९:३३	०३	गुरु	१३:५०	२९:३२	२५	सोम	२७:५०	३०:००
०८	मंगल	०६:०७	०७:५५	१९	सोम	०५:३३	१९:३०	०४	शुक्र	०५:३२	२९:३२	२८	गुरु	०८:४३	३०:०२
१०	गुरु	१२:२४	३०:०४	२९	गुरु	२२:३९	२९:३८	०५	शनि	०५:३२	१९:५२	२९	शुक्र	०६:०२	११:३९
११	शुक्र	०६:०४	१५:१०	३०	शुक्र	०५:३८	२१:२९	०६	रवि	०५:४७	२८:५१	सितम्बर ०१	सोम	१९:५५	३०:०४
१९	शनि	१०:२१	२९:५५	३१	शनि	२१:०७	२९:२८	२७	रवि	१६:२३	२९:४४	०२	मंगल	०६:०४	३०:०४
२०	रवि	०५:५५	११:४८	जून ०१	रवि	०५:२८	२१:३७	२८	सोम	०५:४४	१७:३६	०३	बुध	०६:०४	२३:०८
३०	बुध	१६:१८	२९:४४	०३	मंगल	२४:५८	२९:२७	२९	मंगल	१९:२८	२९:४५	०५	शुक्र	२३:३९	३०:०५
मई ०१	गुरु	०५:४४	१४:२१	०४	बुध	०५:२७	२९:२७	३०	बुध	०५:४५	२१:५३	०६	शनि	०६:०५	२२:५६
०२	शुक्र	१३:०४	२९:४३	०५	गुरु	०५:२७	२९:२७	अगस्त ०१	शुक्र	२७:४०	२९:४७	१२	शुक्र	११:५९	३०:०९
०३	शनि	०५:४३	१२:३४	०६	शुक्र	०५:२७	०६:३४	०२	शनि	०५:४७	२८:०७	१३	शनि	०६:०९	१०:११
०५	सोम	१४:०१	२९:४१	०९	सोम	१५:३१	२९:२७	०३	रवि	०६:३५	२९:४८	१३	शनि	१५:४०	३०:०९
०६	मंगल	०५:४१	२९:४०	१०	मंगल	०५:२७	१८:०२	०४	सोम	०५:४८	२९:४९	१४	रवि	०६:०९	०८:४१

रवियोग विक्रम सम्वत् २०८१, ईश्वीय सन् २०२४ – २५

दिनाङ्क २०२५ ई.	वार	प्रारम्भ घं. मि.	समाप्त घं. मि.	दिनाङ्क २०२६ ई.	वार	प्रारम्भ घं. मि.	समाप्त घं. मि.	दिनाङ्क २०२५ ई.	वार	प्रारम्भ घं. मि.	समाप्त घं. मि.	दिनाङ्क २०२५ ई.	वार	प्रारम्भ घं. मि.	समाप्त घं. मि.
सितम्बर २४	बुध	१६:१६	३०:१५	अक्टूबर ३१	शुक्र	०६:३६	३०:३७	दिसम्बर २२	सोम	२९:३२	३१:१५	जनवरी २७	मंगल	११:०८	३१:१५
२५	गुरु	०६:१५	१९:०८	नवम्बर ०१	शनि	०६:३७	१८:२०	२३	मंगल	०७:१५	३१:०८	२८	बुध	०७:१५	३१:१५
२६	शुक्र	२२:०८	३०:१६	०३	सोम	१५:०६	३०:३९	२५	गुरु	०८:१८	३१:१६	३०	शुक्र	२७:२७	३१:१४
२७	शनि	०६:१६	०७:०६	०४	मंगल	०६:३९	१२:३४	२६	शुक्र	०७:१६	०९:००	३१	शनि	०७:१४	२५:३३
२७	शनि	२५:०८	३०:१६	१०	सोम	१८:४९	३०:४४	२८	रवि	०८:४३	३०:३०	फरवरी ०७	शनि	२६:२८	३१:०९
२८	रवि	०६:१६	२७:५४	११	मंगल	०६:४४	१८:१७	२९	सोम	०७:४१	३१:१७	०८	रवि	०७:०९	२९:०३
अक्टूबर ०१	बुध	०८:०६	३०:१८	२३	रवि	१९:२७	३०:५५	३०	मंगल	०७:१७	२७:५८	२०	शुक्र	२०:०७	३०:५९
०२	गुरु	०६:१८	३०:१९	२४	सोम	०६:५५	२१:५३	**२०२६ ई.**				२१	शनि	०६:५९	१९:०६
०३	शुक्र	०६:१९	०९:३५	२५	मंगल	२३:५७	२५:३३	जनवरी ०१	शुक्र	२२:४९	३१:१८	२२	रवि	१७:५४	३०:५७
०५	रवि	०८:०९	३०:१५	२७	गुरु	२६:५०	३०:५८	०२	शनि	०७:१८	२०:०४	२३	सोम	०६:५७	१६:३४
१२	रवि	१३:३७	३०:२४	२८	शुक्र	०६:५८	३०:५९	०८	गुरु	१२:२४	०७:१९	२५	बुध	१३:३८	३०:५४
१३	सोम	०६:२४	१२:२६	२९	शनि	०६:५९	३१:००	०९	शुक्र	०७:१९	१३:४१	२६	गुरु	०६:५४	३०:५३
२३	गुरु	२८:५०	३०:३९	३०	रवि	०७:००	२५:१०	२१	बुध	१३:५८	३१:१८	२७	शुक्र	०७:५३	१०:४८
२५	शनि	०७:५२	३०:३२	दिसम्बर ०२	मंगल	२०:५१	२५:१४	२२	गुरु	०७:१८	१४:२७	मार्च ०१	रवि	०८:३४	३०:५०
२६	रवि	०६:३२	१०:४७	०३	बुध	१८:००	३१:०३	२३	शुक्र	१४:३३	३१:१७	०२	सोम	०६:५०	०७:५१
२७	सोम	१३:२७	३०:३४	०४	गुरु	०७:०३	१४:५४	२४	शनि	०७:१७	१०:४९	०९	सोम	१६:११	३०:४१
२८	मंगल	०६:३४	१५:४६	०९	मंगल	२६:२२	३१:०७	२४	शनि	१४:१६	३१:१७	१०	मंगल	०६:४१	१९:०५
३०	गुरु	१८:३३	३०:३६	१०	बुध	०७:०७	२६:४४	२५	सोम	०७:१७	१३:३५				

विक्रम सम्वत् २०८२ ईश्वीय सन् २०२५-२६ दैनिक राहुकाल सारिणी (नई दिल्ली), (भा. स्टैं. टा. घण्टा/मिनट)

अप्रैल २०२५				मई २०२५				जून २०२५			
दिनाङ्क	वार	प्रारम्भ	समाप्ति	दिनाङ्क	वार	प्रारम्भ	समाप्ति	दिनाङ्क	वार	प्रारम्भ	समाप्ति
१	मंगल	१५:३१	१७:०४	१	गुरु	१३:५७	१५:३६	१	रवि	१७:२९	१९:१३
२	बुध	१२:२५	१३:५८	२	शुक्र	१०:३९	१२:१८	२	सोम	०७:०८	०८:५२
३	गुरु	१३:५८	१५:३१	३	शनि	०८:५९	१०:३८	३	मंगल	१५:४६	१७:३०
४	शुक्र	१०:५०	१२:२४	४	रवि	१७:१७	१८:५७	४	बुध	१२:१९	१४:०३
५	शनि	०९:१६	१०:५०	५	सोम	०७:१८	०८:५८	५	गुरु	१४:०३	१५:४७
६	रवि	१७:०६	१८:४०	६	मंगल	१५:३८	१७:१८	६	शुक्र	१०:३६	१२:२०
७	सोम	०७:४०	०९:१४	७	बुध	१२:१८	१३:५८	७	शनि	०८:५२	१०:३६
८	मंगल	१५:३२	१७:०७	८	गुरु	१३:५८	१५:३८	८	रवि	१७:३२	१९:१६
९	बुध	१२:२३	१३:५७	९	शुक्र	१०:३७	१२:१७	९	सोम	०७:०८	०८:५२
१०	गुरु	१३:५७	१५:३२	१०	शनि	०८:५६	१०:३७	१०	मंगल	१५:४९	१७:३३
११	शुक्र	१०:४७	१२:२२	११	रवि	१७:२०	१९:०१	११	बुध	१२:२१	१४:०५
१२	शनि	०९:११	१०:४६	१२	सोम	०७:१४	०८:५५	१२	गुरु	१४:०५	१५:४९
१३	रवि	१७:०९	१८:४४	१३	मंगल	१५:४०	१७:२१	१३	शुक्र	१०:३७	१२:२१
१४	सोम	०७:३४	०९:१०	१४	बुध	१२:१७	१३:५९	१४	शनि	०८:५३	१०:३७
१५	मंगल	१५:३३	१७:०९	१५	गुरु	१३:५९	१५:४०	१५	रवि	१७:३४	१९:१९
१६	बुध	१२:२१	१३:५७	१६	शुक्र	१०:३६	१२:१७	१६	सोम	०७:०९	०८:५३
१७	गुरु	१३:५७	१५:३४	१७	शनि	०८:५४	१०:३६	१७	मंगल	१५:५०	१७:३५
१८	शुक्र	१०:४४	१२:२०	१८	रवि	१७:२३	१९:०५	१८	बुध	१२:२२	१४:०६
१९	शनि	०९:०६	१०:४३	१९	सोम	०७:११	०८:५३	१९	गुरु	१४:०७	१५:५१
२०	रवि	१७:११	१८:४८	२०	मंगल	१५:४२	१७:२४	२०	शुक्र	१०:३८	१२:२२
२१	सोम	०७:२८	०९:०५	२१	बुध	१२:१८	१४:००	२१	शनि	०८:५४	१०:३८
२२	मंगल	१५:३४	१७:१२	२२	गुरु	१४:००	१५:४२	२२	रवि	१७:३६	१९:२०
२३	बुध	१२:१९	१३:५७	२३	शुक्र	१०:३५	१२:१८	२३	सोम	०७:१०	०८:५४
२४	गुरु	१३:५७	१५:३५	२४	शनि	०८:५२	१०:३५	२४	मंगल	१५:५२	१७:३६
२५	शुक्र	१०:४१	१२:१९	२५	रवि	१७:२६	१९:०९	२५	बुध	१२:२३	१४:०८
२६	शनि	०९:०२	१०:४१	२६	सोम	०७:०९	०८:५२	२६	गुरु	१४:०८	१५:५२
२७	रवि	१७:१४	१८:५२	२७	मंगल	१५:४४	१७:२७	२७	शुक्र	१०:४०	१२:२४
२८	सोम	०७:२३	०९:०१	२८	बुध	१२:१८	१४:०१	२८	शनि	०८:५५	१०:४०
२९	मंगल	१५:३६	१७:१५	२९	गुरु	१४:०२	१५:४५	२९	रवि	१७:३७	१९:२१
३०	बुध	१२:१८	१३:५७	३०	शुक्र	१०:३५	१२:१८	३०	सोम	०७:१२	०८:५६
				३१	शनि	०८:५२	१०:३५				

विक्रम सम्वत् २०८२ ईश्वीय सन् २०२५-२६ दैनिक राहुकाल सारिणी (नई दिल्ली), (भा. स्टैं. टा. घण्टा/मिनट)

जुलाई २०२५				अगस्त २०२५				सितम्बर २०२५			
दिनाङ्क	वार	प्रारम्भ	समाप्ति	दिनाङ्क	वार	प्रारम्भ	समाप्ति	दिनाङ्क	वार	प्रारम्भ	समाप्ति
१	मंगल	१५:५३	१७:३७	१	शुक्र	१०:४६	१२:२७	१	सोम	०७:३५	०९:१०
२	बुध	१२:२५	१४:०९	२	शनि	०९:०५	१०:४६	२	मंगल	१५:३०	१७:०५
३	गुरु	१४:०९	१५:५३	३	रवि	१७:२८	१९:०९	३	बुध	१२:२०	१३:५५
४	शुक्र	१०:४१	१२:२५	४	सोम	०७:२६	०९:०६	४	गुरु	१३:५४	१५:२८
५	शनि	०८:५७	१०:४१	५	मंगल	१५:४७	१७:२७	५	शुक्र	१०:४५	१२:१९
६	रवि	१७:३७	१९:२१	६	बुध	१२:२६	१४:०६	६	शनि	०९:११	१०:४५
७	सोम	०७:१४	०८:५८	७	गुरु	१४:०६	१५:४६	७	रवि	१७:००	१८:३४
८	मंगल	१५:५३	१७:३७	८	शुक्र	१०:४६	१२:२६	८	सोम	०७:३७	०९:११
९	बुध	१२:२६	१४:१०	९	शनि	०९:०७	१०:४७	९	मंगल	१५:२५	१६:५८
१०	गुरु	१४:१०	१५:५३	१०	रवि	१७:२४	१९:०३	१०	बुध	१२:१७	१३:५१
११	शुक्र	१०:४३	१२:२६	११	सोम	०७:२८	०९:०७	११	गुरु	१३:५०	१५:२३
१२	शनि	०९:००	१०:४३	१२	मंगल	१५:४३	१७:२२	१२	शुक्र	१०:४४	१२:१७
१३	रवि	१७:३६	१९:२०	१३	बुध	१२:२५	१४:०४	१३	शनि	०९:११	१०:४४
१४	सोम	०७:१७	०९:००	१४	गुरु	१४:०४	१५:४२	१४	रवि	१६:५३	१८:२६
१५	मंगल	१५:५३	१७:३६	१५	शुक्र	१०:४७	१२:२५	१५	सोम	०७:३९	०९:११
१६	बुध	१२:२७	१४:१०	१६	शनि	०९:०८	१०:४७	१६	मंगल	१५:१९	१६:५१
१७	गुरु	१४:१०	१५:५३	१७	रवि	१७:१९	१८:५७	१७	बुध	१२:१५	१३:४७
१८	शुक्र	१०:४४	१२:२७	१८	सोम	०७:३१	०९:०९	१८	गुरु	१३:४६	१५:१८
१९	शनि	०९:०२	१०:४४	१९	मंगल	१५:३९	१७:१७	१९	शुक्र	१०:४३	१२:१४
२०	रवि	१७:३५	१९:१७	२०	बुध	१२:२४	१४:०१	२०	शनि	०९:१२	१०:४३
२१	सोम	०७:२०	०९:०२	२१	गुरु	१४:०१	१५:३८	२१	रवि	१६:४६	१८:१७
२२	मंगल	१५:५२	१७:३४	२२	शुक्र	१०:४६	१२:२३	२२	सोम	०७:४१	०९:१२
२३	बुध	१२:२७	१४:०९	२३	शनि	०९:०९	१०:४६	२३	मंगल	१५:१४	१६:४४
२४	गुरु	१४:०९	१५:५१	२४	रवि	१७:१३	१८:५०	२४	बुध	१२:१३	१३:४३
२५	शुक्र	१०:४५	१२:२७	२५	सोम	०७:३३	०९:१०	२५	गुरु	१३:४२	१५:१२
२६	शनि	०९:०४	१०:४५	२६	मंगल	१५:३५	१७:११	२६	शुक्र	१०:४२	१२:१२
२७	रवि	१७:३२	१९:१३	२७	बुध	१२:२२	१३:५८	२७	शनि	०९:१२	१०:४२
२८	सोम	०७:२३	०९:०४	२८	गुरु	१३:५८	१५:३४	२८	रवि	१६:३९	१८:०९
२९	मंगल	१५:५०	१७:३१	२९	शुक्र	१०:४६	१२:२१	२९	सोम	०७:४३	०९:१२
३०	बुध	१२:२७	१४:०८	३०	शनि	०९:१०	१०:४६	३०	मंगल	१५:०९	१६:३८
३१	गुरु	१४:०८	१५:४९	३१	रवि	१७:०७	१८:४२				

विक्रम सम्वत् २०८२ ईश्वीय सन् २०२५-२६ दैनिक राहुकाल सारिणी (नई दिल्ली), (भा. स्टैं. टा. घण्टा/मिनट)

अक्टूबर २०२५				नवम्बर २०२५				दिसम्बर २०२५			
दिनाङ्क	वार	प्रारम्भ	समाप्ति	दिनाङ्क	वार	प्रारम्भ	समाप्ति	दिनाङ्क	वार	प्रारम्भ	समाप्ति
१	बुध	१२:१०	१३:३९	१	शनि	०९:१९	१०:४२	१	सोम	०८:१५	०९:३३
२	गुरु	१३:३८	१५:०७	२	रवि	१६:१२	१७:३४	२	मंगल	१४:४६	१६:०४
३	शुक्र	१०:४१	१२:१०	३	सोम	०७:५७	०९:२०	३	बुध	१२:१०	१३:२८
४	शनि	०९:१३	१०:४१	४	मंगल	१४:४९	१६:११	४	गुरु	१३:२९	१४:४६
५	रवि	१६:३४	१८:०२	५	बुध	१२:०४	१३:२६	५	शुक्र	१०:५३	१२:११
६	सोम	०७:४५	०९:१३	६	गुरु	१३:२६	१४:४८	६	शनि	०९:३६	१०:५४
७	मंगल	१५:०४	१६:३२	७	शुक्र	१०:४३	१२:०४	७	रवि	१६:०५	१७:२२
८	बुध	१२:०८	१३:३६	८	शनि	०९:२२	१०:४३	८	सोम	०८:२०	०९:३७
९	गुरु	१३:३५	१५:०३	९	रवि	१६:०८	१७:२९	९	मंगल	१४:४८	१६:०५
१०	शुक्र	१०:४१	१२:०८	१०	सोम	०८:०१	०९:२२	१०	बुध	१२:१३	१३:३१
११	शनि	०९:१४	१०:४१	११	मंगल	१४:४६	१६:०७	११	गुरु	१३:३१	१४:४८
१२	रवि	१६:२७	१७:५४	१२	बुध	१२:०५	१३:२६	१२	शुक्र	१०:५७	१२:१४
१३	सोम	०७:४८	०९:१४	१३	गुरु	१३:२६	१४:४६	१३	शनि	०९:४०	१०:५७
१४	मंगल	१४:५९	१६:२६	१४	शुक्र	१०:४५	१२:०५	१४	रवि	१६:०७	१७:२४
१५	बुध	१२:०७	१३:३३	१५	शनि	०९:२५	१०:४५	१५	सोम	०८:२४	०९:४१
१६	गुरु	१३:३२	१४:५८	१६	रवि	१६:०६	१७:२६	१६	मंगल	१४:५०	१६:०७
१७	शुक्र	१०:४१	१२:०६	१७	सोम	०८:०६	०९:२६	१७	बुध	१२:१७	१३:३४
१८	शनि	०९:१५	१०:४१	१८	मंगल	१४:४५	१६:०५	१८	गुरु	१३:३४	१४:५१
१९	रवि	१६:२१	१७:४७	१९	बुध	१२:०६	१३:२६	१९	शुक्र	११:०१	१२:१८
२०	सोम	०७:५१	०९:१६	२०	गुरु	१३:२६	१४:४५	२०	शनि	०९:४४	११:०१
२१	मंगल	१४:५५	१६:२०	२१	शुक्र	१०:४७	१२:०६	२१	रवि	१६:१०	१७:२७
२२	बुध	१२:०५	१३:३०	२२	शनि	०९:२८	१०:४८	२२	सोम	०८:२८	०९:४५
२३	गुरु	१३:३०	१४:५४	२३	रवि	१६:०४	१७:२३	२३	मंगल	१४:५४	१६:११
२४	शुक्र	१०:४१	१२:०५	२४	सोम	०८:१०	०९:२९	२४	बुध	१२:२०	१३:३७
२५	शनि	०९:१७	१०:४१	२५	मंगल	१४:४५	१६:०४	२५	गुरु	१३:३८	१४:५५
२६	रवि	१६:१६	१७:४०	२६	बुध	१२:०८	१३:२७	२६	शुक्र	११:०४	१२:२१
२७	सोम	०७:५४	०९:१७	२७	गुरु	१३:२७	१४:४५	२७	शनि	०९:४७	११:०४
२८	मंगल	१४:५१	१६:१५	२८	शुक्र	१०:५०	१२:०८	२८	रवि	१६:१३	१७:३०
२९	बुध	१२:०५	१३:२८	२९	शनि	०९:३२	१०:५०	२९	सोम	०८:३१	०९:४८
३०	गुरु	१३:२७	१४:५१	३०	रवि	१६:०४	१७:२२	३०	मंगल	१४:५७	१६:१५
३१	शुक्र	१०:४२	१२:०४					३१	बुध	१२:२४	१३:४१

विक्रम सम्वत् २०८२ ईश्वीय सन् २०२५-२६ दैनिक राहुकाल सारिणी (नई दिल्ली), (भा. स्टैं. टा. घण्टा/मिनट)

जनवरी २०२६				फरवरी २०२६				मार्च २०२६			
दिनाङ्क	वार	प्रारम्भ	समाप्ति	दिनाङ्क	वार	प्रारम्भ	समाप्ति	दिनाङ्क	वार	प्रारम्भ	समाप्ति
१	गुरु	१३:४१	१४:५९	१	रवि	१६:३७	१७:५८	१	रवि	१६:५२	१८:१९
२	शुक्र	११:०७	१२:२४	२	सोम	०८:३२	०९:५३	२	सोम	०८:१४	०९:४०
३	शनि	०९:५०	११:०८	३	मंगल	१५:१७	१६:३८	३	मंगल	१५:२६	१६:५३
४	रवि	१६:१८	१७:३५	४	बुध	१२:३५	१३:५६	४	बुध	१२:३३	१४:००
५	सोम	०८:३३	०९:५१	५	गुरु	१३:५६	१५:१८	५	गुरु	१४:००	१५:२७
६	मंगल	१५:०१	१६:१९	६	शुक्र	११:१३	१२:३५	६	शुक्र	११:०५	१२:३३
७	बुध	१२:२७	१३:४४	७	शनि	०९:५१	११:१३	७	शनि	०९:३७	११:०५
८	गुरु	१३:४५	१५:०३	८	रवि	१६:४१	१८:०३	८	रवि	१६:५५	१८:२३
९	शुक्र	११:१०	१२:२८	९	सोम	०८:२८	०९:५१	९	सोम	०८:०८	०९:३६
१०	शनि	०९:५२	११:१०	१०	मंगल	१५:२०	१६:४२	१०	मंगल	१५:२८	१६:५६
११	रवि	१६:२२	१७:४०	११	बुध	१२:३५	१३:५८	११	बुध	१२:३१	१४:००
१२	सोम	०८:३५	०९:५३	१२	गुरु	१३:५८	१५:२१	१२	गुरु	१४:००	१५:२८
१३	मंगल	१५:०६	१६:२४	१३	शुक्र	११:१२	१२:३५	१३	शुक्र	११:०२	१२:३१
१४	बुध	१२:३०	१३:४८	१४	शनि	०९:४९	११:१२	१४	शनि	०९:३३	११:०२
१५	गुरु	१३:४८	१५:०७	१५	रवि	१६:४५	१८:०९	१५	रवि	१६:५८	१८:२७
१६	शुक्र	११:१२	१२:३०	१६	सोम	०८:२४	०९:४८	१६	सोम	०८:०२	०९:३१
१७	शनि	०९:५३	११:१२	१७	मंगल	१५:२३	१६:४६	१७	मंगल	१५:२९	१६:५९
१८	रवि	१६:२७	१७:४६	१८	बुध	१२:३५	१३:५९	१८	बुध	१२:२९	१३:५९
१९	सोम	०८:३५	०९:५४	१९	गुरु	१३:५९	१५:२३	१९	गुरु	१३:५९	१५:२९
२०	मंगल	१५:१०	१६:२९	२०	शुक्र	११:१०	१२:३५	२०	शुक्र	१०:५९	१२:२९
२१	बुध	१२:३२	१३:५१	२१	शनि	०९:४६	११:१०	२१	शनि	०९:२८	१०:५८
२२	गुरु	१३:५२	१५:११	२२	रवि	१६:४९	१८:१४	२२	रवि	१७:००	१८:३१
२३	शुक्र	११:१३	१२:३३	२३	सोम	०८:२०	०९:४५	२३	सोम	०७:५५	०९:२६
२४	शनि	०९:५४	११:१३	२४	मंगल	१५:२५	१६:५०	२४	मंगल	१५:३०	१७:०१
२५	रवि	१६:३२	१७:५२	२५	बुध	१२:३४	१३:००	२५	बुध	१२:२७	१३:५९
२६	सोम	०८:३४	०९:५४	२६	गुरु	१४:००	१५:२५	२६	गुरु	१३:५९	१५:३०
२७	मंगल	१५:१४	१६:३४	२७	शुक्र	११:०८	१२:३४	२७	शुक्र	१०:५५	१२:२७
२८	बुध	१२:३४	१३:५४	२८	शनि	०९:४२	११:०८	२८	शनि	०९:२२	१०:५४
२९	गुरु	१३:५४	१५:१५					२९	रवि	१७:०३	१८:३६
३०	शुक्र	११:१४	१२:३४					३०	सोम	०७:४८	०९:२०
३१	शनि	०९:५३	११:१४					३१	मंगल	१५:३१	१७:०४

❋ क्रान्ति सारिणी ❋

दिनांक	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१
जनवरी	२३	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२१	२१	२१	२१	२१	२०	२०	२०	२०	२०	१९	१९	१९	१९	१९	१८	१८	१८	१८	१७	१७
+	२	५७	५१	४५	३९	३२	२४	१७	९	००	५१	४१	३१	२१	१०	५९	४८	३६	२४	११	५८	४४	३०	१६	२	४७	३२	१६	००	४४	२७
फरवरी	१७	१६	१६	१६	१६	१५	१५	१५	१४	१४	१४	१३	१३	१३	१२	१२	१२	११	११	११	१०	१०	९	९	९	८	८	८	७	×	×
+	११	५३	३६	१८	००	४२	२३	५	४६	२६	७	४७	२७	७	४६	२६	५	४४	२२	१	३९	१८	५६	३४	११	४९	२७	४	५२	×	×
मार्च	७	७	६	६	६	५	५	५	४	४	३	३	३	२	२	१	१	१	०	+ ०	−०	०	०	१	१	२	२	२	३	३	४
+	४१	१८	५५	३२	९	४६	२३	०	३६	१३	४९	२६	२	३८	१५	५१	२७	४	४१	१६	८	३१	५५	१९	४२	६	२९	५३	१६	४०	३
अप्रैल	४	४	५	५	५	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१४	१४	१४	×
	२६	४९	१२	३५	५८	२१	४४	६	२८	५१	१३	३५	५७	१९	४०	२	२३	४४	५	२५	४६	६	२६	४६	६	२६	४५	४	२३	४१	×
मई	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१
−	०	१८	३६	५३	११	२८	४४	१	१७	३३	४९	४	१९	३४	४८	२	१६	२९	४३	५५	८	२०	३२	४३	५४	५	१५	२५	३५	४१	५३
जून	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२ ३	×	
−	१	९	१७	२४	३१	३८	४४	४९	५५	०	४	८	१२	१५	१८	२०	२२	२४	२५	२६	२७	२७	२६	२५	२४	२२	२०	१८	१५	११	×
जुलाई	२३	२३	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२०	२०	२०	२०	२०	१९	१९	१९	१९	१९	१८	१८	१८
−	८	४	५९	५४	४९	४३	३७	३१	२४	१६	९	१	५२	४३	३४	२५	१५	५	५४	४३	३२	२०	८	५६	४३	३०	१७	३	४९	३५	२०
अगस्त	१८	१७	१७	१७	१७	१६	१६	१६	१५	१५	१५	१५	१४	१४	१४	१३	१३	१३	१२	१२	१२	११	११	११	१०	१०	१०	९	९	९	८
−	५	५०	३५	१९	३	४७	३०	१३	५६	३९	२१	३	४५	२७	८	४०	३१	११	५२	३२	१३	५३	३२	१२	५१	३१	१०	४९	२७	६	४५
सितम्बर	८	८	७	७	६	६	६	५	५	५	४	४	३	३	३	२	२	१	१	१	०	−०	+०	०	०	१	१	१	२	२	×
−	२३	१	३९	१७	५५	३३	१०	४८	२५	८	४०	१७	५४	३१	८	४५	२२	५९	३५	१२	४९	२५	२	२१	४५	८	३१	५५	१८	४१	×
अक्टूबर	३	३	३	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१४
+	५	२८	५१	१४	३८	१	२४	४७	९	३२	५५	१८	४०	३	२५	४७	९	३१	५३	१४	३६	५७	१८	३९	००	२१	४१	२	२२	४१	१
नवम्बर	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	×
+	२०	४०	५९	१७	३६	५४	१२	२९	४७	४	२१	३७	५३	९	२५	४०	५५	१०	२४	३८	५१	४	१७	३०	४२	५३	५	१५	२६	३६	×
दिसम्बर	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३
+	४६	५५	४	१२	२०	२८	३५	४१	४८	५३	५९	४	८	१२	१५	१८	२१	२३	२५	२६	२६	२७	२६	२६	२४	२३	२१	१८	१५	११	७

नोट : रवि क्रान्ति २१ मार्च से २२ सितम्बर तक उत्तरा (-) तथा २३ सितम्बर से २० मार्च तक दक्षिणा (+) होती है। क्रान्ति अंश और कला में हैं।

❋ चर सारिणी ❋

क्रान्त्यंश→	२		४		६		८		१०		१२		१४		१६		१८		२०		२२		२४	
अक्षांश ↓	मि.	से.	मि.	से.	मि.	से.	मि.	से.	मि.	से.	मि.	से.	मि.	से.	मि.	से.	मि.	से.	मि.	से.	मि.	से.	मि.	से.
२	०	१७	०	३४	०	५०	१	०७	१	२४	१	४२	२	००	२	१८	२	३६	२	५४	३	१४	३	३४
४	०	३४	१	०७	१	४२	२	१५	२	५०	३	२४	४	००	४	३६	५	१२	५	५०	६	२९	७	०८
६	०	५०	१	४२	२	३२	३	२३	४	१५	५	०७	६	००	६	५४	७	५०	८	४६	९	४४	१०	४४
८	१	०७	२	१५	३	२३	४	३२	५	४१	६	५१	८	०२	९	१४	१०	२८	११	४४	१३	०१	१४	२१
९	१	१६	२	३२	३	४९	५	०६	६	२४	७	४३	९	०१	१०	२५	११	४८	१३	१३	१४	५१	१६	१०
१०	१	२४	२	४९	४	१४	५	४१	७	०८	८	३६	१०	०५	११	३६	१३	०८	१४	४३	१६	२०	१८	०१
११	१	३३	३	०७	४	४१	६	१६	७	५१	९	२८	११	०६	१२	४७	१४	२९	१६	१३	१८	००	१९	५२
१२	१	४२	३	२४	५	०७	६	५१	८	३६	१०	२१	१२	०९	१४	००	१५	५०	१७	४५	१९	४२	२१	४३
१३	१	५०	३	४२	५	३४	७	२६	९	२०	११	१५	१३	१२	१५	११	१७	१२	१९	१७	२१	२५	२३	३६
१४	२	००	४	००	६	००	८	०२	१०	०५	१२	०९	१४	१५	१६	२४	१८	३५	२०	५०	२३	०८	२५	३०
१५	२	०९	४	१८	६	२७	८	३८	१०	५०	१३	०४	१५	१९	१७	३८	१९	५९	२२	२३	२४	५२	२७	२४
१६	२	१८	४	३६	६	५४	९	१४	११	३६	१३	५९	१६	२४	१८	५२	२१	२३	२३	५८	२६	३७	२९	२०
१७	२	२६	४	५४	७	२२	९	५१	१२	२२	१४	५४	१७	२९	२०	०७	२२	४८	२५	३३	२८	२३	३१	१८
१८	२	३६	५	१२	७	५०	१०	२८	१३	०८	१५	५०	१८	३५	२१	२३	२४	१४	२७	१०	३०	१०	३३	१६
१९	२	४५	५	३१	८	१८	११	०६	१३	५५	१६	४७	१९	४२	२२	४०	२५	४२	२८	४८	३१	५९	३५	१६
२०	२	५४	५	५०	८	४६	११	४३	१४	४३	१७	४५	२०	५०	२३	५८	२७	१०	३०	२७	३३	४९	३७	१८
२१	३	०४	६	०९	९	१५	१२	२२	१५	३१	१८	४३	२१	५८	२५	१७	२८	४०	३२	०७	३५	४१	३९	४२
२२	३	१४	६	२८	९	४४	१३	०१	१६	२०	१९	४२	२३	०८	२६	३६	३०	१०	२२	४९	३७	३५	४१	२७
२३	३	२४	६	४८	१०	१४	१३	४१	१७	१०	२०	४२	२४	१८	२७	५७	३१	४३	३५	३३	३९	३०	४३	३४
२४	३	३४	७	०८	१०	४४	१४	२१	१८	०१	२१	४३	२५	३०	२९	२०	३३	१६	३७	१८	४१	२७	४५	४४
२५	३	४४	७	२८	११	१४	१५	०२	१८	५२	२२	४५	२६	४२	३०	४४	३४	५२	३९	०५	४३	२६	४७	५६
२६	३	५४	७	४९	११	४५	११	४३	१९	४४	२३	४८	२७	५६	३२	०९	३६	२८	४०	५४	४५	२८	५०	१०
२७	४	०४	८	१०	१२	१७	१६	२६	२०	३६	२४	५२	२९	१२	३३	३६	३८	०७	४२	४५	४७	३१	५२	२७
२८	४	१५	८	३१	१२	४९	१७	०९	२१	३१	२५	५७	३०	२८	३५	०५	३९	४८	४४	३८	४९	३७	५४	४७
२९	४	२६	८	५३	१३	२२	१७	५२	२२	२६	२७	०४	३१	४७	३६	३५	४१	३०	४६	३३	५१	४५	५७	०९
३०	४	३७	९	१५	१३	५५	१८	३७	२३	२२	२८	१२	३३	०६	३८	०७	४३	१५	४८	३१	५३	५७	५९	३५
३१	४	४९	९	३८	१४	२९	१९	२३	२४	२०	२९	२१	३४	२८	३९	४१	४५	०२	५०	३२	५६	१२	६२	०४
३३	५	१२	१०	२५	१५	३९	२०	५७	२६	१८	३१	४४	३७	१६	४२	५६	४८	४४	५४	४१	६०	५१	६७	०३
३५	५	३६	११	१४	१६	५३	२२	३७	२८	२२	३४	१४	४०	१३	४६	२०	५२	३६	५९	०४	६५	४४	७२	४०
४०	६	४३	१३	२७	२०	१४	२७	०५	३४	०२	४१	०६	४८	१८	५५	४१	६३	१७	७१	०८	७९	१६	८७	४५
४५	८	०१	१६	०२	२४	०८	३२	१८	४०	३७	४९	०५	४७	४५	६६	३९	७५	५०	८५	२२	९५	१९	१०५	४५
५०	९	३२	१९	०७	२८	४६	३८	३४	४८	३१	५८	४२	६९	०९	७९	५६	९१	०८	१०२	५०	११५	०८	१२८	११
५५	११	२६	२२	५६	३४	३२	४६	१९	५८	२०	७०	४१	८३	२६	९६	४२	११०	३५	१२५	१७	१४०	५८	१५७	५६
१३ ४',	१	४४	३	५४	५	५१	७	५०	९	५०	११	५१	१३	५४	१६	००	१८	०८	२०	१९	२२	३३	२४	५२
१८ ५५',	२	४५	५	३०	८	१५	११	०३	१३	५१	१६	४३	१९	३६	२२	३३	२५	३४	२८	४०	३१	५०	३५	०६
२२ ३४'	३	२०	५	४०	१०	०१	१३	२४	१६	४८	२०	१६	२३	४७	२७	२३	३१	०२	३४	४८	३८	४०	४२	३९
२८ ३८'	४	२२	८	४५	१३	१०	१७	३६	२२	०६	२६	४९	३१	१८	३६	०२	४०	३१	४५	५१	५०	५८	५६	१६

❋ वेलान्तर सारिणी ❋

दिनांक	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१
जनवरी	०३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	१०	१०	१०	१०	११	१९	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३
–	३२	००	२८	४५	२२	४५	९	३४	०	२४	४८	११	३५	५७	१९	३९	००	१९	३८	५६	१४	३०	४७	०२	१७	३०	४३	५८	६	१६	२६
फरवरी	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१२	१२	१२	×	×
–	३०	४०	५०	५६	१	५	९	१२	१४	१५	१६	१५	१५	१३	११	८	४	०	५५	४९	४२	३४	२७	१९	१०	००	५१	४०	३४	×	×
मार्च	१२	१२	१२	११	११	११	११	१०	१०	१०	१०	९	९	९	९	८	८	८	७	७	७	७	६	६	६	५	५	५	४	४	४
–	२९	१७	५	५२	३९	२५	११	५६	४१	२५	१०	५४	३८	२१	५	४८	३१	१३	५६	३८	२१	०३	४५	२७	९	५१	३३	१४	५६	३८	२०
अप्रैल	४	३	३	३	२	२	२	२	१	१	१	०	०	−०	+०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	×
–	२	४२	२६	८	५१	३४	१७	०	४३	२६	१०	५४	३८	२४	९	१४	२०	३३	४७	०	१३	२४	३६	४७	५८	८	१८	२७	३६	४४	×
मई	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	२	२	२	२	२
+	५२	५९	६	१२	१८	२२	२७	३१	३५	३८	४०	४२	४३	४३	४३	४२	४१	३९	३७	३३	३०	२६	२२	१६	११	४	५८	५१	४४	३५	२७
जून	२	२	२	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	+०	−०	०	०	०	१	१	१	१	२	२	२	२	२	३	३	३	×
+	१९	१०	०	५०	४०	२९	१९	७	५६	४४	३२	२०	८	१३	१७	३०	४३	५६	९	२२	३६	४९	२	१५	२८	४०	५३	६	१८	३०	×
जुलाई	३	३	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६
–	४२	५३	४	१५	२६	३६	४६	५६	५	१३	२२	३०	३७	४४	५१	५७	२	७	१२	१६	२०	२३	२५	२६	२८	२८	२८	२७	२७	२५	२२
अगस्त	६	६	६	६	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	३	३	३	३	२	२	२	२	१	१	१	१	०	०
–	१८	१४	१०	४	५९	५२	४६	३९	३१	२२	१३	३	५३	४२	३१	१९	७	५४	४१	२७	१३	५८	४३	१७	१२	५५	३८	२०	३	४५	२७
सितम्बर	०	०	०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	१	८	८	८	९	९	९	×
+	०८	१९	३१	५१	१०	३०	५१	११	३२	५३	१४	३५	५६	१७	३८	०	२१	४२	३	२४	४६	०७	२८	४९	९	३०	५१	११	३१	५१	×
अक्टूबर	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६
+	११	३०	४९	७	२६	४४	२	१९	३६	५२	८	२३	३८	५२	६	१९	३२	४३	५५	००	१६	२५	३४	४२	५०	५६	३	८	१३	१७	२०
नवम्बर	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१४	१४	१४	१४	१३	१३	१३	१३	१२	१२	१२	११	११	×
+	२२	२४	२५	२४	२४	२२	१९	१६	१२	६	००	५३	४६	२८	२८	१७	६	५४	४१	२७	१३	५७	४२	२५	८	४९	३०	१०	५०	२९	×
दिसम्बर	११	१०	१०	९	९	९	८	८	७	७	६	६	६	५	५	४	४	३	३	२	२	१	१	०	+०	−०	०	१	१	२	२
+	८	४५	२२	५८	३४	९	४४	१७	५१	२४	५७	२९	१	३२	०	३४	५	३६	३	३७	७	३७	७	३९	७	२९	५२	२२	५१	२०	४९

नोट : २६ दिसम्बर से १४ अप्रैल तक तथा १५ जून से ३१ अगस्त तक वेलान्तर ऋण (–) १५ अप्रैल से १४ जून तक तथा १ दिसम्बर तक वेलान्तर धन (+) होता है। वेलान्तर मिनट एवं सेकेण्ड में हैं।

❋ स्पष्टान्तर सारिणी ❋

मास	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१
जनवरी (–)	२४	२४	२५	२५	२६	२६	२७	२७	२७	२८	२८	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
	२४	५६	१९	४६	१३	३९	०५	३०	५६	२०	४४	०८	३१	५३	१५	२६	५७	१७	३६	५५	१२	३०	४६	०२	१७	३१	४५	५७	०९	२०	३१
फरवरी (–)	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३३	३३	
	४०	४९	५७	०४	१०	१५	२०	२४	२७	२९	३०	३१	३०	२९	२८	२५	२२	१७	१३	०७	०१	५४	४६	३७	२६	१९	०८	५७	५०		
मार्च (–)	३३	३३	३३	३३	३२	३२	३२	३२	३१	३१	३१	३१	३०	३०	३०	२९	२९	२९	२९	२८	२८	२८	२७	२७	२७	२६	२६	२६	२६	२५	३५
	४६	३४	२१	०८	५४	४०	२६	११	५५	३९	२३	०६	४९	३२	१५	५७	३९	२०	०२	४४	२५	०६	४७	२८	०९	५०	३१	१२	५३	३४	१६
अप्रैल (–)	२४	२४	२४	२४	२३	२३	२३	२२	२२	२२	२१	२१	२१	२१	२०	२०	२०	२०	२०	१९	१९	१९	१९	१९	१८	१८	१८	१८	१८	१८		
	५७	३८	२०	०२	४४	२७	०९	५२	३५	१९	५८	४३	२७	१२	५८	४३	३०	१६	०३	५१	३९	२७	१७	०६	५६	४७	३८	२९	२२	१४	
मई (+)	१८	१८	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८
	०८	०२	५६	५१	४७	४३	३९	३७	३५	३३	३२	३१	३१	३२	३३	३५	३७	४०	४३	४७	५१	५६	०१	०७	१३	१९	२६	३३	४१	४९	५८
जून (+)	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४		
	०७	१६	२६	३५	४६	५६	०७	१७	२९	४०	५१	०३	१५	२७	३९	५१	०३	१५	२८	४०	५२	०४	१६	२९	४१	५२	०४	१६	२७	३८	
जुलाई (–)	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७
	५०	००	११	२१	३१	४१	५१	००	०८	१७	२५	३३	४०	४७	५३	५९	०४	०९	१४	१८	२१	२४	२७	२९	३०	३१	३१	३१	३०	२९	२७
अगस्त (–)	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२६	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२५	२५	२५	२५	२५	२४	२४	२४	२४	२३	२३	२३	२३	२२	२२	२२	२१	२१	
	२४	२१	१७	१३	०८	०२	५६	४९	४२	३४	२५	१६	०६	५६	४५	३४	२२	०९	५६	४२	२८	१४	५८	४३	२७	१०	५३	३६	१८	५९	४१	
सितम्बर (+)	२१	२१	२०	२०	२०	१९	१९	१९	१८	१८	१७	१७	१७	१६	१६	१६	१५	१५	१४	१४	१४	१३	१३	१३	१२	१२	१२	११	११	११		
	२२	०२	४३	२३	०२	४२	२१	००	३८	१७	५५	३३	११	४९	२७	०५	४३	२०	५८	३६	१४	५१	२९	०८	४६	२४	०३	४२	२१	००	
अक्टूबर (+)	१०	१०	१०	०९	०९	०९	०८	०८	०८	०७	०७	०७	०७	०६	०६	०६	०६	०६	०५	०५	०५	०५	०५	०५	०४	०४	०४	०४	०४	०४	०४	०४
	४०	२०	००	४१	२२	०४	४६	२८	११	५४	३८	२३	०८	५४	४०	२७	१४	०२	५१	४१	३१	२२	१३	०६	५९	५३	४८	४३	४०	३७	३५
नवम्बर (+)	०४	०४	०४	०४	०४	०४	०४	०४	०४	०५	०५	०५	०५	०५	०५	०५	०६	०६	०६	०६	०७	०७	०७	०७	०८	०८	०८	०९	०९	०९		
	३३	३३	३४	३५	३७	४०	४४	४८	५४	००	०८	१६	२५	३४	४५	५६	०८	२१	३५	५०	०५	२१	३८	५५	१४	३२	५२	१२	३३	३५	
दिसम्बर (+)	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१३	१३	१३	१४	१४	१५	१५	१६	१६	१७	१७	१८	१८	१९	१९	२०	२०	२१	२१	२२	२२	२३	२३	२३	
	१७	४०	०३	२७	५१	१६	४१	०७	३३	५९	२६	५३	२१	४९	१७	४५	१४	४२	११	४०	०९	३८	०७	३६	०५	३४	०३	३१	००	२८	५६

स्पष्टान्तर संस्कार का प्रयोग स्थानीय (लोकल) समय को मानक (स्टैण्डर्ड) में, तथा मानक समय को स्थानीय समय में बदलने के लिए किया जाता है। यदि स्पष्टान्तर ऋणात्मक (–) हो तो धन (+) और धनात्मक (+) हो तो ऋण (–) अर्थात् विपरीत संस्कार स्थानीय समय में करने से स्थानीय समय मानक समय में बदल जाता है। तथा मानक समय को स्थानीय समय में बदलने के लिए ऋण हो तो ऋण एवं धन हो तो धन यथावत् संस्कार किया जाता है। दिल्ली का स्पष्टान्तर सभी महीनों में ऋणात्मक (–) है।

ग्रहण-विवरण विक्रम संवत् २०८२

विक्रम संवत् २०८२ (३० मार्च २०२५ ई. से १९ मार्च २०२६ ई. तक) वर्ष भर सम्पूर्ण विश्व में चार ग्रहण घटित होंगे।

१. **खग्रास चन्द्रग्रहण (७/८ सितम्बर, २०२५ ई. रविवार)**
२. **खण्डग्रास सूर्यग्रहण (२१ सितम्बर, २०२५ ई. रविवार)**
३. **कंकण सूर्यग्रहण (१७ फरवरी २०२६ ई. मंगलवार)**
४. **खग्रास चन्द्रग्रहण (०३ मार्च, २०२६ ई. मंगलवार)**

विक्रम संवत २०८२ में घटित होने वाले चार ग्रहणों में दो चन्द्रग्रहण और दो सूर्य ग्रहण होंगे। इन चार ग्रहणों में दो चन्द्रग्रहण भारत में दृष्टिगोचर होंगे। २१ सितम्बर २०२५ ई. आश्विन कृष्ण पक्ष रविवाार खण्डग्रास सूर्य ग्रहण तथा १७ फरवरी २०२५ ई. फाल्गुन कृष्ण अमावस्या मंगलवार कंकण सूर्यग्रहण भारत देश में दृष्टिगोचर नहीं होगा।

भारत में दृश्य खग्रास चन्द्रग्रहण (७/८ सितम्बर, २०२५ ई. रविवार)

यह खग्रास चन्द्रग्रहण भाद्रपद शुक्ल पूर्णिमा रविवार ७/८ सितम्बर २०२५ ई. भारतीय मानक समयानुसार रात्रि २१ बजकर ५८ मि. से प्रारम्भ होकर २५ बजकर २६ मिनट तक भूलोक पर दिखाई देगा। यह ग्रहण भारत के अतिरिक्त सम्पूर्ण यूरोप, सम्पूर्ण एशिया, न्यूजीलैण्ड, अफ्रीका, आस्ट्रेलिया, पश्चिमी उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका के पूर्वी भूभाग तथा ब्राजील के पूर्वी प्रान्त में दिखाई देगा।

खण्डग्रास चन्द्रग्रहण का भारतीय मानक समयानुसार विवरण इस प्रकार से है-

ग्रहण स्पर्श काल	-	**२१ बजकर ५८ मिनट**
ग्रहण मध्यकाल	-	**२३ बजकर ४२ मिनट**
ग्रहण मोक्षकाल	-	**२५ बजकर २६ मिनट**

ग्रहण का सूतक काल -

इस ग्रहण का सूतक काल ७ सितम्बर २०२५ ई. रविवार को मध्याह्न १२ बजकर ५८ मिनट से प्रारम्भ होगा।

ग्रहण का राशिफल-

यह ग्रहण कुम्भ राशि एवं पूर्वभाद्रपदा नक्षत्र में घटित होगा। अत: इस ग्रहण का प्रभाव पूर्व भाद्रपदा नक्षत्र एवं कुम्भ राशि में उत्पन्न जातकों के लिए कष्टप्रद रहेगा। कुम्भ राशि के जातकों को ग्रहण के समय चन्द्रमन्त्र एवं स्तोत्र का पाठ, चन्द्र के लिए शास्त्रोक्त वस्तु का दान करना लाभप्रद होगा। विशेष इष्ट मन्त्र, गुरु मन्त्र, महामृत्युञ्जय मन्त्र का जाप करना सबके लिए लाभकारी होगा। ग्रह औषधि स्नान आदि उपाय करना शुभप्रद रहेगा। मेषादि द्वादश राशियों में उत्पन्न जातकों के लिए ग्रहण फल अधोलिखित है-

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
धनागम।	शारीरिक पीड़ा, रोग भय।	सन्तति चिन्ता एवं कष्ट।	सुख प्राप्ति, धनागम।	स्त्री/पति-मतभेद एवं कष्ट।	संघर्ष, गुप्तरोग एवं भय।	धनागम में अवरोध एवं खर्च की अधिकता।	कार्यसिद्धि, धनलाभ, सुखप्राप्ति।	धनलाभ, मानसिक प्रसन्नता।	धनहानि व्यर्थ व्यय।	शारीरिक कष्ट।	धन-हानि

ग्रहण का जन जीवन पर प्रभाव

यह ग्रहण कुम्भ राशि एवं पूर्व भाद्रपदा नक्षत्र में घटित होगा। अतः इस ग्रहण का प्रभाव पहाड़ी मनुष्य, पाश्चात्य देश में रहने वाले मनुष्य, बोझा ढ़ोने वाले, चोर, अहीर, दरद देश में रहने वाले समाज, देश एवं राज्य के प्रधान मनुष्य या नायक, सिंपुर, बर्बर देश में रहने वाले लोगों के लिए कष्टपद्र रहेगा।

कुम्भेऽन्तर्गिरिजान् स पश्चिमजनान् भारोद्वाहांस्तस्कारानीभीरान्
दरदाऽऽर्यसिंहपुरकान् हन्यात्तथा बर्बरान् (बृ.सं.रा.चा.अ.श्लो.४२)

यह खण्डग्रास चन्द्रग्रहण भाद्रपद मास की पूर्णिमा में घटित होगा अतः कलिङ्ग, बंग, मगध, सौराष्ट्र, म्लेच्छ, सुवीर, दरद, अश्मक आदि देशों के लिए कष्टप्रद रहेगा तथा गर्भिणी स्त्रियों के लिए भी अशुभ सूचक रहेगा। प्रजा के लिए सुभिक्ष अर्थात् अन्नादि फसलों की स्थिति उत्तम होगी।

कलिङ्गवङ्गान् मगधान् सुराष्ट्रान् म्लेच्छान् सुवीरान् दरदाश्मकांश्च।
स्त्रीणां च गर्भानसुरो निहन्ति, सुभिक्षकृद् भाद्रपदेऽभ्युपेतः ॥
(बृ.सं.रा.चा.अ.श्लो. ७९)

भारत में अदृश्य खण्डग्रास सूर्यग्रहण (२१ सितम्बर २०२५ ई. रविवार)

यह ग्रहण भौगोलिक स्थितिवश भारत में नहीं दिखायी देगा। खण्डग्रास सूर्यग्रहण आश्विन कृष्ण पक्ष अमावस्या रविवार २१ सितम्बर २०२५ ई. को भारतीय मानक समयानुसार रात्रि २२ बजकर ५९ मिनट से प्रारम्भ होकर २७ बजकर २३ मिनट तक भूलोक पर दिखायी देगा। यह खण्डग्रास सूर्यग्रहण न्यूजीलैण्ड, फिजी, आस्ट्रेलिया के दक्षिणी भूभाग तथा अन्टार्कटिका आदि कुछ देशों में खण्डग्रास के रूप में अवलोकित होगा।

भारत में अदृश्य कंकण सूर्यग्रहण (१६ फरवरी, २०२६ ई. मंगलवार)-

यह कंकण सूर्यग्रहण भौगोलिक स्थिति वश भारत में नहीं दिखायी देगा। यह ग्रहण फाल्गुन कृष्ण पक्ष अमावस्या मंगलवार १७ फरवरी २०२६ ई. को भारतीय मानक समयानुसार अपराह्न १५ बजकर २६ मिनट से रात्रि १९ बजकर ५७ मिनट तक भूलोक पर दृष्टिगोचर होगा। यह कंकण सूर्य ग्रहण जिम्बाम्बवे, वोत्सवाना, दक्षिण अफ्रिका, दक्षिण अफ्रिका के दक्षिण देशों, मोजम्बीक, जाम्बिया, तंजानिया, नाम्बीया, मौरिशस, अन्टार्कटिका, दक्षिण अमेरिका के दक्षिणी देशों, अर्जेंटीना चीली आदि से समीपस्थ देशों के भू-भाग पर दृष्टिगोचर होगा।

भारत में दृश्य खग्रास चन्द्रग्रहण का विवरण

खग्रास (ग्रस्तोदय) चन्द्रग्रहण फाल्गुन पूर्णिमा मंगलवार तदनुसार ३ मार्च २०२६ ई. को पड़ेगा। यह ग्रहण सम्पूर्ण भारत में ग्रस्तोदय रूप में दृष्टिगोचर होगा। भारत में चन्द्रोदय पूर्व से खग्रास चन्द्रग्रहण प्रारम्भ हो चुका होगा। भारत के उत्तरीय पूर्वी राज्यों में खग्रास समाप्ति तथा ग्रहण का मोक्ष काल दृष्टिगोचर हो सकेगा। शेष राज्यों में केवल ग्रहण समाप्ति काल ही दिखाई देगा।

भारत के अतिरिक्त यह ग्रहण पश्चिम एशिया के कुछ देश यथा- पाकिस्तान, अफगानिस्तान, इरान, इराक आदि को छोड़कर सम्पूर्ण एशिया, ऑस्ट्रेलिया, अण्टार्कटिका, उत्तरी तथा दक्षिणी अमेरिका एवं रूस आदि में दृष्टिगोचर होगा। खग्रास चन्द्रग्रहण भारतीय मानक समयानुसार १५ बजकर २१ मिनट से प्रारम्भ होगर १८ बजकर ४७ मिनट तक रहेगा। परन्तु जहाँ चन्द्रोदय जब से प्रारम्भ होगा वहाँ पर उसी समय से ग्रस्तोदित चन्द्रग्रहण दिखलाई देगा।

खग्रास (ग्रस्तोदय) चन्द्र ग्रहण का भारतीय मानक समयानुसार दिल्ली नगर का विवरण-

ग्रस्तोदित चन्द्र काल - १८ बजकर २१ मिनट
ग्रहण का मोक्ष काल - १८ बजकर ४७ मिनट

ग्रहण का सूतक काल -

इस ग्रहण का सूतक काल ३ मार्च २०२६ ई. मंगलवार को प्रातः ६ बजकर २० मिनट से प्रारम्भ होगा।

नोट - रोगियों, बच्चों, वृद्धों एवं गर्भणी स्त्रियों के लिए सूतक काल में भोजनादि व्यवस्था में सूतक दोष क्षम्य है।

ग्रहण का राशिफल -

यह चन्द्र ग्रहण सिंह राशि एवं पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में घटित होगा। अतः इस ग्रहण का प्रभाव पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र एवं सिंह राशि में उत्पन्न जातकों के लिए कष्टप्रद रहेगा।

सिंह राशि के जातकों को ग्रहण के समय चन्द्र मन्त्र, स्तोत्र का पाठ, चन्द्र के लिए शास्त्रोक्त वस्तु का दान करना श्रेयस्कर रहेगा। विशेषकर इष्ट मन्त्र, गुरु मन्त्र, महामत्युञ्जय मन्त्र का जाप आदि करना सबके लिए लाभकारी होगा। ग्रह औषधि स्नान आदि उपाय करना शुभप्रद रहेगा। मेषादि द्वादश राशियों में उत्पन्न जातकों के लिए ग्रहण फल अधोलिखित है-

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
धनागम में अवरोध एवं खर्च की अधिकता।	कार्यसिद्धि, धनलाभ, सुख-प्राप्ति।	धनलाभ, मानसिक प्रसन्नता।	धनहानि, व्यर्थ व्यय।	शारीरिक कष्ट।	धनहानि।	धनागम।	शारीरिक पीड़ा, रोग भय।	सन्तति चिन्ता एवं कष्ट।	सुख-प्राप्ति, धनागम।	स्त्री/पति-मतभेद एवं भय।	संघर्ष, गुप्तरोग एवं भय।

ग्रहण का जन-जीवन पर प्रभाव -

यह ग्रहण सिंह राशि एवं पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में घटित होगा। अतः इस ग्रहण का प्रभाव पुलिन्दों (म्लेच्छ-जातियों) मेकल (पर्वतविशेष) में निवास करने वाले, बलवान जन्तु, राजा और राजा के समान तथा वन में निवास करने वाले मनुष्यों के लिए कष्टप्रद रहेगा।

सिंहे पुलिन्दगणमेकलसत्त्वयुक्तान्
राजोपमान्नरपतीन् वनगोचरांश्च । (बृ.सं.रा.चा.अ.श्लो. ३९)

यह ग्रहण फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा को घटित होगा। अतः बङ्गाल, अश्मक, अवन्ती और मेकल देश में रहने वाले, नाचने वाले, (आधुनिक दृष्टि से फिल्मी दुनिया के लोगों), धान्य, उत्तम स्त्री, धनुष बनाने वाले शिल्पी, क्षत्रिय, तपस्वी इन सभीं के लिए इस ग्रहण का फल कष्टप्रद रहेगा।

पीडाकरं फाल्गुनमासि पर्व वङ्गाश्मकावन्तिकमेकलानाम् ।
नृत्यज्ञसस्यप्रवराङ्गनानां धनुष्करक्षत्रतपस्विनां च ॥
(बृ.सं.रा.चा.अ.श्लो. ७३)

प्रो. फणीन्द्र कुमार चौधरी
आचार्य, ज्योतिष-विभाग

संदिग्ध व्रत-पर्व निर्णय विक्रम संवत् २०८२

श्री मत्स्य जयन्ती (दिनांक ३१ मार्च २०२५ ई., सोमवार)

चैत्रशुक्ल अपराह्णव्यापिनी तृतीया तिथि के दिन मत्स्य जयन्ती मनाई जाती है। यथा-

"चैत्रशुक्लतृतीयायामपराह्णे मत्स्योत्पत्तिः" (धर्मसिन्धु)

इस वर्ष दिनांक ३१ मार्च २०२५ ई., सोमवार को चैत्र शुक्ल तृतीया तिथि अपराह्णव्यापिनी है। अतः इस दिन मत्स्य जयन्ती मनाई जाएगी।

श्री रामनवमी (दिनांक ६ अप्रैल २०२५ ई., रविवार)

शास्त्रवचनानुसार भगवान श्री राम का जन्म चैत्र शुक्ल मध्याह्न-व्यापिनी नवमी तिथि एवं पुनर्वसु नक्षत्र में हुआ था। यथा-

चैत्रशुक्ल नवमी रामनवमी। चैत्रशुक्लनवम्यां
पुनर्वसुयुतायां मध्याह्ने श्री रामजन्म श्रवणात् ॥

इस वष दिनांक ६ अप्रैल को नवमी तिथि मध्याह्नकाल व्यापिनी है तथा पुनर्वसु नक्षत्र से युत है। अतः इस दिन श्रीरामनवमी का व्रत एवं पर्व मनाना शास्त्रसम्मत होगा।

परशुरामजयन्ती (दिनांक २९ अप्रैल २०२५ ई. मंगलवार)

वैशाख शुक्ल प्रदोषव्यापिनी तृतीया तिथि को भगवान परशुराम का जन्म हुआ था। यथा-

वैशाखशुक्ल तृतीयायां परशुरामोद्भवः ।
इयं रात्रि प्रथमयामव्यापिनी ग्राह्या (धर्मसिन्धु)

उपरोक्त शास्त्रवचनानुसार इस वर्ष दिनांक २९ अप्रैल को तृतीया तिथि प्रदोषकालव्यापिनी है। अतः इस दिन भगवान परशुराम जयन्ती मनाई जाएगी।

अक्षय तृतीया (दिनांक ३० अप्रैल २०२५ ई. बुधवार)

इयं अक्षय्य तृतीयासंज्ञिका। अस्यां यत्किंचिज्जपहोम-
पितृतर्पणदानादि क्रियते तत्सर्वमक्षयम् ॥ (धर्मसिन्धु)

अक्षय तृतीया के दिन जप, होम, पितृतर्पण, दानादि करने का पुण्य 'अक्षय' रहता है। इस कारण यह दिन बहुत ही पवित्र माना गया है।

वैशाखशुक्ल तृतीया अक्षयातृतीयोच्यते ।
वैशाखशुक्लतृतीयायां गङ्गास्नानं यवहोमो
यवदानं यवाशनं च सर्वपापहम् । (धर्मसिन्धु)

वैशाख शुक्ल तृतीया में गंगास्नान, यव से होम, यव का दान, स्वयं यव खाना सम्पूर्ण पापों का नाश करता है। यह तिथि पूर्वाह्नव्यापिनी प्रशस्त मानी जाती है- **सा पूर्वाह्नव्यापिनी ग्राह्या ॥** (निर्णयसिन्धु)

उपरोक्त शास्त्रवचनानुसार इस वर्ष दिनांक ३० अप्रैल को तृतीया तिथि औदयिक एवं पूर्वाह्नव्यापिनी है। अतः इस दिन अक्षय तृतीया का पर्व मनाना महानपुण्यप्रद होगा।

गंगा सप्तमी (दिनांक ३ मई २०२५ ई. शनिवार)

वैशाखशुक्ल सप्तमी तिथि को माँ गंगा की उत्पत्ति हुई थी। इस दिन गंगा स्नान एवं गंगा की पूजा अर्चना करने का विशेष विधान है। यह तिथि मध्याह्नव्यापिनी ग्राह्य है। यथा-

वैशाखशुक्लसप्तभ्यां गङ्गोत्पत्तिस्तस्यां
मध्याह्नव्यापिन्यां गङ्गापूजनं कार्यम् । (धर्मसिन्धु)

इस वर्ष दिनांक ३ मई को सप्तमी तिथि मध्याह्नव्यापिनी है। अतः इस दिन गंगा सप्तमी का पर्व मनाना प्रशस्त होगा।

वट सावित्री व्रत (दिनांक २६ मई २०२५ ई. सोमवार)

वट सावित्री व्रत उत्तर भारत में ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या को किया जाता है। और दक्षिण भारत में यह व्रत ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा को किया जाता है। इन दोनों परम्पराओं में यह पूर्व (चतुर्दशी) विद्धा अमावस्या या पूर्णिमा के दिन किया जाता है। यथा-

पूर्णिमास्यमावस्ये तु सावित्रीव्रतं विना परे ग्राह्ये ।
कुलधर्मादौ पूर्वा गृह्यते, तत्र मूलं मृग्यम् ॥ (धर्मसिन्धु)

वट सावित्री व्रत में परविद्धा अमावस्या या पूर्णिमा का निषेध बतलाया गया है। यथा-

भूविद्या न कर्तव्या दर्शपूर्णे कदाचन ।
वर्जयित्वा मुनिश्रेष्ठ सावित्रीव्रतमुत्तमम् ॥ (बह्मवैवर्तपुराण)

अत: इस वर्ष उत्तर भारत में २६ मई को वटसावित्री व्रत करना शास्त्रोचित होगाा। क्योंकि इस दिन अमावस्या तिथि चतुर्दशी विद्धा है। तथा दक्षिण भारत में ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा को किया जाने वाला वटसावित्री व्रत दिनांक १० जून को करना प्रशस्त होगा। क्योंकि इस दिन पूर्णिमा तिथि चतुर्दशी से विद्ध है।

रक्षाबन्धन (दिनांक ९ अगस्त २०२५ ई. शनिवार)

भद्ररहित अपराह्नव्यापिनी पूर्णिमा तिथि में रक्षाबन्धन का पवित्र पर्व मनाने का विधान है। यथा-

भद्रायां द्वे न कर्तव्ये श्रावणी फाल्गुनी तथा ॥ (धर्मसिन्धु)

इस वर्ष श्रावणशुक्ल पूर्णिमा तिथि ८ अगस्त २०२५ ई. को 14घ.-12मि. पर आरम्भ हो रहा है तथा ९ अगस्त २०२५ ई. को 13घ.-25मि. तक पूर्णिमा तिथि व्याप्त है। ८ अगस्त को भद्रा का दोष है तथा ९ अगस्त को पूर्णिमा तिथि पूर्णत: भद्रादोष से मुक्त एवं शुद्ध है अत: ९ अगस्त को रक्षाबन्धन का पुनीत पर्व मनाना शास्त्र सम्मत होगा।

श्री कृष्णजन्माष्टमी -

(दिनांक १५ अगस्त २०२५ ई. शुक्रवार) (स्मार्त)
(दिनांक १६ अगस्त २०२५ ई. शनिवार) (वैष्णव)

भगवान श्री कृष्ण का जन्म भाद्रपदमास के कृष्णपक्ष की अष्टमी तिथि एवं रोहिणी नक्षत्र एवं वृषराशिस्थ चन्द्रमा में अर्धरात्रि के समय हुआ था। यथा-

मासि भद्रपदेऽष्टम्यां कृष्णपक्षेऽर्धरात्रिके ।
वृषराशिस्थे चन्द्रे नक्षत्रे रोहिणीयुते ॥ (भविष्यपुराण)

प्रतिवर्ष भाद्रपद कृष्णजन्माष्टमी को अर्धरात्रि में अष्टमी तिथि एवं रोहिणी नक्षत्र का योग संभव नहीं हो पाता है। कहने का तात्पर्य यह है कि यदि अष्टमी तिथि अर्धरात्रि में आ जाए तो कभी राहिणी नक्षत्र का अभाव होता है और यदि अर्धरात्रि में रोहिणी नक्षत्र आ जाए तो अष्टमी तिथि नहीं मिलती है। अत: सदैव संशय बना रहता है। स्मार्त सम्प्रदाय के अनुयायी सप्तमीयुता अर्धरात्रिव्यापिनी अष्टमी तिथि में जन्माष्टमी व्रत एवं कृष्णजन्मोत्सव करते हैं। तथा वैष्णव सम्प्रदाय के अनुयायी दूसरे दिन औदयिक अष्टमी (नवमी विद्धा) को ही व्रत एवं कृष्ण जन्मोत्सव करते है। यथा-

स्मार्तानां गृहिणीपूर्वापोष्या निष्काम
वनस्थैर्विधवामि: वैष्णवैश्च परेवापोष्या।
वैष्णवास्तु अर्धरात्रिव्यापिनीमपि रोहिणीयुतामपि
सप्तमीविद्धां अष्टमी परित्यज्य नवमी युतैव ग्राह्या ॥
(धर्मसिन्धु)

इस वर्ष दिनांक १५ अगस्त २०२५ ई. शुक्रवार को सप्तमी तिथि रात्रि में २३घं.-५०मि. तक व्याप्त है। तदोपरान्त अष्टमी तिथि का आरम्भ हो रहा है। चूँकि इस दिन अष्टमी तिथि अर्धरात्रिकालिनव्यापिनी है, अत:

स्मार्त्त सम्प्रदाय के अनुयायियों के लिए व्रत एवं कृष्णजन्मोत्सव मनाना शास्त्रोचित होगा।

दिनांक १६ अगस्त २०२५ ई. शनिवार को अष्टमी तिथि २१घ. -३५मि. तक व्याप्त है तथा औदयिक है। अतः वैष्णव सम्प्रदाय के अनुयायियो को इस दिन व्रत एवं कृष्णजन्मोत्सव मनाना प्रशस्त होगा।

आश्विन कृष्ण चतुथी+पञ्चमी श्राद्ध (दिनांक ११ सितम्बर २०२५ ई. गुरुवार)

आश्विन कृष्ण पक्ष में पितरों के निमित्त श्राद्ध किए जाते हैं इसलिए इस पक्ष को पितृपक्ष कहते हैं। मृत्यु की तिथि के अनुसार इस पक्ष में श्राद्ध करने का विधान है। यद्यपि पार्वणश्राद्ध अपराह्णव्यापिनी तिथि में करने की शास्त्राज्ञा है, किन्तु जब तिथि अपराह्णकाल में अल्प समय के लिए व्याप्त हो तब अग्रिम दिन मध्याह्नकाल में श्राद्ध करना शात्रोचित होता है।

इस वर्ष आश्विन कृष्ण पक्ष की चतुर्थी तिथि १० सितम्बर २०२५ को 15 घ.-३८ मि. के पश्चात् आरम्भ होकर ११ सितम्बर २०२५ ई. को १२ घ.-४६ मि. तक व्याप्त है। चूकिं चतुर्थी तिथि दिनांक १० सितम्बर को १५ घ.-३८ मि. के पश्चात् अल्प समय के लिए अपराह्ण का स्पर्श कर रही है ऐसी स्थिति में अग्रिम दिनांक ११ सितम्बर को 12 घ.-४६ मि. तक अर्थात् मध्याह्न में चतुर्थी तिथि का श्राद्ध करना शास्त्रोचित होगा।

दिनांक ११ सितम्बर को पंचमी तिथि का प्रारम्भ १२ घ.-४६ मि. के पश्चात् हो रहा है, तथा पंचमी तिथि पूर्ण से अपराह्णव्यापिनी भी है अतः इस दिन पंचमी तिथि का श्राद्ध करना भी शास्त्रोचित होगा।

नोट : चतुर्थी श्राद्ध - ११ सितम्बर को १२ घ.- ४६ मि. तक होगा।

पंचमी श्राद्ध - ११ सितम्बर को १२ घ.- ४६ मि. के पश्चात् होगा।

कलंक चतुर्थी (दिनांक २६ अगस्त २०२५ ई. मंगलवार)

सिद्धिविनायक व्रत (दिनांक २७ अगस्त २०२५ ई. बुधवार)

भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी तिथि को कलंक चतुर्थी कहते है। इस दिन चन्द्रदर्शन का निषेध है। मिथ्यादोष लगने के कारण इस दिन चन्द्रदर्शन नहीं करना चाहिए। इस दोष का निर्धारण चन्द्रमा के उदयास्त से होता है। कहने का तात्पर्य यह है कि चतुर्थी तिथि में चन्द्रोदय होकर चन्द्रास्त पंचमी तिथि में हो तो सिद्धिविनायक व्रत के दिन चन्द्रदर्शन करना दोष कारक होता है तथा पूर्व दिन तृतीया तिथि में चन्द्रोदय होकर चतुर्थी में अस्त हो तो चन्द्रदर्शन का निषेध पहले दिन होगा चाहे उस दिन सिद्धिविनायक व्रत न भी हो। निष्कर्ष यह है कि चतुर्थी तिथि में ही चन्द्रदर्शन करने का दोष है। सिद्धिविनायक व्रत का इससे कोई संबंध नहीं है। यथोक्तम्

अत्र चतुर्थ्यां चन्द्रदर्शनं मिथ्यादूषणं दोषस्तेन चतुर्थ्यामुदितस्य पंचम्यां दर्शनं विनायकव्रतदिनेपि न दोषाय पूर्वदिने सायाह्नमारम्भ-प्रवृत्तायां चतुर्थ्यां विनायकव्रताभावेऽपि पूर्वेद्यूरेव चन्द्रदर्शने दोष इति सिध्यति ॥ (धर्मसिन्धु)

इस वर्ष दिनांक २६ अगस्त को चतुर्थी तिथि मातृविद्धा तथा चन्द्रोदयव्यापिनी है अतः शास्त्रवचनानुसार इस दिन कलंक चतुर्थी मनाई जाएगी, इस दिन ही चन्द्रदर्शन का निषेध माना जाएगा। तथा सिद्धिविनायक व्रत दिनांक २७ अगस्त २०२५ बुधवार को करना प्रशस्त होगा। क्योंकि इस दिन चतुर्थी तिथि मध्याह्नकाल व्यापिनी है।

करक चतुर्थी व्रत (दिनांक १० अक्टूबर २०२५ ई. शुक्रवार)

अखण्ड सौभाग्य प्राप्ति एवं पति की दीर्घायु हेतु किया जाने वाला करवा चौथ का व्रत कार्तिक कृष्ण चन्द्रोदयव्यापिनी चतुर्थी तिथि में करने का विधान है। इस व्रत की तिथि का निर्णय संकष्टचतुर्थी के शास्त्रोचित निर्णयानुसार किया जता है। करक चतुर्थी चन्द्रोदयव्यापिनी ग्राह्य है। यदि

दोनों दिन चतुर्थी तिथि चन्द्रोदयव्यापिनी हो तो पहले दिन तृतीया युता ग्राह्य है। परन्तु यदि दोनों दिन चतुर्थी तिथि चन्द्रोदय काल में न हो तो परयुता चतुर्थी ग्राह्य है। यथा-

करक चतुर्थी चन्द्रोदयव्यापिनी ग्राह्या ।
परदिने एव चन्द्रोदयव्याप्तौ परैव ॥
उभयदिने चन्द्रोदयव्यापित्वे तृतीया युतैव ग्राह्या ।
दिनद्वये चन्द्रोदयव्याप्त्यभावे परैव ॥ (धर्मसिन्धु)

इस वर्ष ९ अक्टूबर को तृतीय तिथि २२घ.- ५४मि. तक व्याप्त रहेगा। चन्द्रोदय इस दिन १९घ.-१७मि. पर अर्थात् तृतीया तिथि में होगा। जबकि १० अक्टूबर को चतुर्थी तिथि १९घ.-३८मि. तक ही व्याप्त है और चन्द्रोदय में चतुर्थी तिथि का अभाव है। दोनों ही दिन चन्द्रोदय में चतुर्थी तिथि नहीं है। अत: शास्त्रवचनानुसार १० अक्टूबर शुक्रवार को ही करक चतुर्थी (करवाचौथ) का व्रत करना प्रशस्त होगा।

कोजागर व्रत+शरद् पूर्णिमा व्रत (दिनांक ६ अक्टूबर २०२५ ई. सोमवार)

आश्विन मास के शुक्त पक्ष की प्रदोष एवं निशीथव्यापिनी पूर्णिमा को कोजागर एवं शरद् पूर्णिमा का व्रत किया जाता है। कोजागर व्रत में धनसम्पत्ति एवं एश्वर्य प्राप्ति हेतु रात्रि में लक्ष्मी की पूजा तथा रात्रि जागरण करने का विधान। आचार्यों ने इस पूर्णिमा को कौमुदी का नाम दिया है। यथोक्तम-

आश्विन पौर्णमास्यां कोजागारव्रतम् ।
सा पूर्वत्रैव निशीथव्याप्तौ पूर्वा ॥ (धर्मसिन्धु)
आश्विने पौर्षमास्यां तु चरेज्जागरणं निशि।
कौमुदी तु समाख्याता कार्यालोकैविर्भूतये ॥(निर्ण्यसिन्धु)

इस वर्ष दिनांक ६ अक्टूबर को पूर्णिमा तिथि प्रदोष एवं निशीथ कालव्यापिनी है। अत: इस दिन शरद् पूर्णिमा एवं कोजागरव्रत दोनों ही करना प्रशस्त होगा।

दीपावली निर्णय (दिनांक २० अक्टूबर २०२५ ई. सोमवार)

'दीपावली' का महापर्व प्रदोष एवं निशीथ कालव्यापिनी अमावस्या तिथि में मनाने का विधान है। गत वर्ष की भाँति इस वर्ष भी अमावस्या तिथि दो दिन प्रदोषव्यापिनी है अत: किस दिन दीपावली मनाई जाए? इस शंका से जनमानस को मुक्त कर शास्त्रसम्मत निर्णय आम जन तक पहुँचाना हमारा दायित्व है।

इस वर्ष अमावस्या तिथि २० अक्टूबर २०२५ ई. को १५घ.-४५मि. से प्रारम्भ होकर २१ अक्टूबर को १७घ.-५४मि. तक व्याप्त है। २० अक्टूबर को अमावस्या तिथि पूर्णतया प्रदोष एवं निशीथकालव्यापिनी है। जबकि २१ अक्टूबर को अमावस्या तिथि बहुत कम समय के लिए प्रदोषकाल में व्याप्त है। अत: दीपावली का महापर्व २० अक्टूबर को मनाने का निर्देश देने वाले शास्त्र वचनों की समीक्षा आवश्यक है। जो इस प्रकार हैं। दीपावली पर्व का काल निर्धानण करते हुए देवीपुराण में वचन है कि-

तुलास्थेदीपदाने पूजा कार्या महाफला ।
दीपवृक्षाश्च कर्तव्या दीपचक्रमथापरम् ॥
दीपयात्रा प्रकर्त्तव्या चतुर्दश्यां कुहूषु च ।
सिनीवालीषु अथवा वत्सकार्यं महाफलम् ॥

अर्थात् चतुर्दशी अमावस्या, प्रतिपत में निशा सम्बन्धी काल में दीपदान प्रतिपादित है। पुनश्च दीपदान 'नरक' के लिए किया जाता है। इसका प्रमाण भविष्योत्तर पुराण में प्राप्त है। 'नरक के लिए' शब्द का अर्थ नरक गमन परित्राण निमित्त है। इस वचन का प्रमाण इस प्रकार है-

नरकाय प्रदातव्या दीपः सम्पूज्य देवताम् ।

ततः प्रदोषसमये दीपान् दद्यान्मनोरमान् ॥

सम्प्रति देवीपुराणोक्त मुद्रित वचन इस प्रकार से प्राप्त हो रहा है-

तुलास्थे दीपदानेन पूजाकार्या महात्मना ।
दीपवृक्षाः प्रकर्त्तव्या दीपचक्रास्तथापराः ॥
दीपयात्रा प्रकर्त्तव्या चतुर्दश्यां कुहूषु च ।
सिनिवाली तथा वत्स तदा कार्यं महाफलम् ॥

माधवीय मदनपारिजातवचनानुसार -

पहले अपराह्न में श्राद्धदान करके प्रदोष काल में दीपदान किया जाएगा। पुनश्च अमावस्या में श्राद्धदानोपरान्त दीपदान किया जाएगा।

कालदर्श वचनानुसार-

अमायाम् अमावस्याम् अलक्ष्मीः निस्सारणं कार्यम् ।

अर्थात् अपराह्न में श्राद्ध, सन्ध्या में दीपदान एवं लक्ष्मीपूजन किया जाएगा। इस अलक्ष्मी निस्सारण का समय पद्मपुराण में वर्णित है-

कार्तिकेयमास्यमावस्या तस्यां दीपदानं शालायां बाह्मणः कुर्यात, स गच्छेत् परमं पदमिति ।

अर्थात् श्राद्ध के दिन प्रदोषव्यापिनी अमावस्या में, एवं उसी दिन निशीथ में 'अलक्ष्मी निस्सारण' रूपक कर्म किया जाता है। यहाँ पर स्मृति कौस्तुकार कहते है- **"पुराणभेदेन उक्त्योः क्रमस्य अशास्त्रीयत्वात् शास्त्रीयत्वेऽपि क्रमः बलवान्"।** अर्थात्- **"सप्तदश प्राजापत्य पशूना-मुपाकर्मनियोजनपर्याग्निकरणमिति क्रमः ॥**

यहाँ क्रम का लक्षण है- **"विवति विशेष पौर्वापर्यसम्बन्धो वाक्रमः"।** अर्थात्- सप्तदश प्राजापत्य पशुओं के उपाकर्म पर्याग्नि नियोजन कर्म में कोई क्रम हानि नहीं होनी चाहिए। क्रम हानि एक दोष होता है। अतः दीपावली पर किए जाने वाले तीन मुख्य कर्म है-

1. श्राद्धदान
2. दीपदान एवं लक्ष्मीपूजन
3. अलक्ष्मी निस्सारण

एक ही दिन में यह सभी कर्म होने चाहिए। इनमें क्रम हानि शास्त्रविरूद्ध है। पुनश्च दीपदान चतुर्दशी, अमावस्या एवं प्रतिपद तीनों ही दिन तक किया जाता है।

"दीपदाने तु प्रभातव्यापिनी ग्राह्य" यह वचन बह्मोक्त और वीर मित्रोदयकार द्वार उद्धृत किया गया है। अर्थात् अमावस्या में पार्वण श्राद्ध करके, दीपदानपूर्वक लक्ष्मीपूजन करके निशीथकाल में 'अलक्ष्मी' निस्सारण रूपककर्म करना चाहिए। यह वचन वीरमित्रोदयकार ने उद्धृत किया है-

एवं गते निशीथे तु जने निद्रार्त लोचने
तावन्नगरनारिभिः शूर्पडिष्डिमवादनैः
निष्कास्यते प्रहृष्टाभिः अलक्ष्मीः स्वगृहाङ्गणात् ॥

उपरोक्त शास्त्रवचनानुसार अमावस्या, श्राद्ध, प्रदोषकाल, लक्ष्मी-पूजन, दीपदान, अलक्ष्मीनिस्सारण रूपक समस्त कर्म के लिए प्रशस्त काल २० अक्टूबर २०२५ को प्राप्त हो रहा है। दिनांक २१ अक्टूबर का दिन ग्रहण किया जाय तो श्राद्ध, प्रदोषकाल एवं लक्ष्मीपूजन तक अमावस्या का काल प्राप्त होता है। किन्तु निशीथ तक अमावस्या का काल प्राप्त नहीं हो रहा है इसलिए एक तिथि में दो कर्म और एक तिथि में एक कर्म करना क्रम हानि होगी। और क्रमहानि वर्जित है। निर्णयसिन्धुकार कमलाकरभट्ट ने भी निष्कर्ष रूप में निशीथमुख को दृष्टिपथगत करके अपने सिद्धान्त दिए है। अतः शास्त्रनिर्देशानुसार दिनांक २० अक्टूबर २०२५ ई. को ही 'दीपावली महापर्व' मनाना शास्त्र सम्मत होगा।

होलिका दहन (दिनांक ३ मार्च २०२६ ई. मंगलवार)

होलिका दहन फाल्गुन मास की सायाह्नव्यापिनी पूर्णिमा तिथि में करना प्रशस्त माना गया है। यथोक्तम्-

"फाल्गुनपौर्णमासी होलिका सा च सायाहनव्यापिनी ग्राह्यां।"
सायाहने होलिकां कुर्यात् पूर्वाहने क्रीडनं गवाम् ॥

(निर्णयसिन्धु)

होलिकादहन भद्रारहित काल में करने का विशेष विधान है।- यथोक्तम् -

भद्रायां द्वे न कर्तव्ये श्रावणी फाल्गुनी तथा ।
श्रावणी नृपति हन्ति ग्राम दहती फाल्गुनी ॥ (निर्णयसिन्धु)

आचार्य नारद के वचनानुसार 'होलिकादहन' प्रातःकाल करने का निषेध है। यथोक्तम्-

निशागमे प्रपूज्येत होलिका सर्वदा बुधैः।
न दिवा पूज्येत ढुण्ढां पूजिता दुःखदा भवेत् ॥

भद्रासमाप्ति के उपरान्त प्रातःकाल होलिका दहन करने के विषय में प्रसिद्ध धर्मशास्त्रीय ग्रन्थ 'वीरमित्रोदय' के समय प्रकाशखण्ड में 'होलिका निर्णय' के सन्दर्भ में भी कहा गया है-

निशागमे तु पूज्येतहोलाका सर्वतोमुखी
इयञ्च भद्रायां न कर्तव्या ।

यद्यपि कुछ गौण वचन भद्रा का मुख छोड़कर भद्रा के पुच्छ में होलिकादहन की बात कहते है, लेकिन यह विकल्प तभी मान्य होगा यदि पर दिन सायाह्नव्यापिनी पूर्णिमा का अभाव हो। निर्णयसिन्धुकार ने विभिन्न वचनों के समाहार रूप में कहा है-

यदोत्तरदिने सार्धयामत्रयं ततोऽधिकं वा पूर्णिमा न तु प्रदोषे परेधुश्च प्रतिपदावृद्धिस्तदा पूर्णिमोत्तरं प्रतिपदि प्रदोषे होलिका कार्या न तु पूर्वेधुश्च प्रतिपदावृद्धिस्तदा पूर्णिमोत्तरं प्रतिपदि प्रदोषे होलिका कार्या न तु पूर्वेधुर्विष्टि पुच्छे इत्यर्थः। एवं सति योत्तरदिने प्रदोषैकदेशेऽस्ति पूर्वरात्रौ च न भद्रा रहिता तदा सुताशमुत्तेरति ।

तिथितत्वचिन्माणि ग्रन्थानुसार- **"परदिने पूर्णिमा सायाहनात् प्रागेव समाप्यते तदा पूर्वदिने सम्पूर्णरात्रौ भद्रासत्वात् न्निषेधात् परेऽहनि प्रतिपद्येव कुर्यादिति ठक्कुराः"**

महोमहोपाध्याय श्रीमदमृतनाथ झा विरचित कृत्यसार समुच्चय के अनुसार होलिका दहन निर्णय के विषय में लिखा है-

सा च सायाह्नव्यापिन्यां चतुर्दशी विद्धायां
पूर्णिमायां भद्राशून्यायां होलिकादाहः।

यदि च पूर्वदिने सांयाह्ने भद्रशून्या सा (पूर्णिमा) न लभ्यते तदा परदिने। तथा हि ब्रह्मवैवर्ते-

"होलिका पौर्णिमासी तु सायाह्नव्यापिनी मता"

इस वर्ष फाल्गुन पूर्णिमा २ मार्च २०२६ ई. को १७घ.-५५मि. से प्रारम्भ होकर ३ मार्च को १७घ.-७मि. तक व्याप्त रहेगी। २ मार्च को भद्रा का आरम्भ १७ घ.-५६ मि. से रहा है जो कि २९घ.-२८मि. तक व्याप्त है अर्थात् सायंकाल से लेकर सम्पूर्ण रात्रि में भद्रा व्याप्त है। जबकि दिनांक ३ मार्च को पूर्णिमा तिथि सायाह्नकालव्यापिनी एवं भद्रारहिता है। अतः इस दिन निशामुख में होलिकादहन करना शास्त्र सम्मत होगा।

प्रो. रश्मि चतुर्वेदी
आचार्या, ज्योतिष-विभाग

विवाह में अष्टकूट विचार एवं परिहार

विवाह शब्द से पाणिग्रहण संस्कार विशेष कहा गया है। अथवा विशेष रूप से जीवन का निर्वहन करना विवाह शब्द को इङ्गित करता है। भारतीय संस्कृति संस्कारों से परिपूर्ण हैं, विवाह षोडश संस्कारों में प्रमुख स्थान रखता है। चारों वर्णों के आधारगत ज्योतिषशास्त्र के दैवज्ञों एवं आचार्यों द्वारा आठ प्रकार के विवाहों के विषय में विचार किया है। यथा-

ब्राह्मो दैवस्तथा चाऽऽर्षः प्राजापत्यस्तथाऽऽसुरः ।
गान्धर्वो राक्षसश्चैव पैशाचश्चाष्टमोऽधमः ॥ (मनुस्मृति)

उपर्युक्त आठ प्रकार के विवाहों में प्रथम चार प्रकार के विवाहों को श्रेष्ठतम श्रेणी में रखा गया है। अन्तिम चार विवाह निम्न श्रेणी के अन्तर्गत हैं। प्रथम चार विवाहों में भी सर्वोत्कृष्ट एवं उत्तम श्रेणी में प्रथम विवाह ब्राह्म विवाह कहा गया है। यथा-

ब्राह्मो विवाह आहूय दीयते शक्त्यलङ्कृता ।
तज्जः पुनात्युभयतः पुरुषानेकविंशतिम् ॥

(मुहूर्तचिन्तामणि विवाह प्रकरण)

विवाह वर्णयोग्य स्त्री -

जो सुन्दर एवं सदा पति के अनुकूल चलने वाली स्त्री, धर्म, अर्थ एवं काम इन तीनों वर्गों को प्रदान करती है और पति को सहयोग देकर तीन ऋणों से मुक्त कराती है इस प्रकार के गुणों के लिए विवाह में लग्न की प्रधानता होनी चाहिए। अर्थात् शास्त्रविहित शुभ मुहुर्त में विवाह होने पर स्त्री का स्वभाव और आचरण पवित्र होता है। इसलिए विवाह का विचार किया जाता है, क्योंकि पुत्र (सुसन्तति) सुन्दर स्वभाव और धर्म विवाहकालिक लग्न के अधीन होते हैं। यथा-

भार्या त्रिवर्गकरणं शुभशीलयुक्ता
शीलं शुभं भवति लग्नवशेन तस्याः।
तस्माद्विवाहसमयः परिचिन्त्यते हि
तन्निघ्नतामुपगताः सुतशीलधर्माः॥

मुहूर्तचिन्तामणि विवाह प्रकरण श्लो.१

विवाह आदि संस्कारों में जन्मराशि की प्रधानता -

विवाह एवं सर्वविध मङ्गलकार्यों तथा ग्रहगोचर का विचार करने हेतु जन्म राशि की प्रधानता रहती है। इसलिए सर्वविध कल्याण चाहने वालों को प्रत्येक संस्कार में जन्म राशि को ग्रहण करना चाहिए। हाँ यदि जन्मराशि अज्ञात हो तो नामराशि में मेलापकादि कार्य किये जा सकते हैं। यथा-

विवाहे सर्वमाङ्गल्ये यात्रायां ग्रहगोचरे ।
जन्मराशेः प्रधानत्वं नामराशिं च चिन्तयेत् ॥
कुर्यात् षोडशकर्माणि जन्मराशौ बलान्विते ।
सर्वाण्यन्यानि कर्माणि नामराशौ बलान्विते ॥

यदि नाम राशि से विवाह संस्कार अथवा अन्य संस्कार करवाना हो तो दोनों वर एवं कन्या का संस्कार के लिए नाम राशि का ही प्रयोग करना चाहिए। ऐसा नहीं कि वर की नाम राशि और कन्या की जन्मराशि ग्रहण की जाए अथवा वर की जन्मराशि और कन्या की नाम राशि से विवाह किया जाए यह विपरीत संस्कार नहीं करना चाहिए दोनों वर एवं कन्या की या तो नामराशि को अथवा जन्मराशि को ही ग्रहण करना चाहिए। यथा-

जन्मलग्नमिद्मङ्कमङ्किनाम् मेनिरे मन इतीन्दुमन्दिरम् ।
सौहृदं हि मनसोर्न देहयोः मेलकस्तदयमिन्दुगेहयोः ॥

– विवाह वृन्दावन

जैसा कि कहा गया है कि– यदि वर की नाम राशि और कन्या की जन्म राशि अथवा कन्या की नाम राशि अथवा वर की जन्म राशि के अनुसार यदि विवाह मेलापक में विचार किया गया तो निश्चित रूप से दम्पति का निधन होगा। यथा–

जन्मभं जन्मधिष्ण्येन नामधिष्ण्येन नामभम् ।
व्यत्ययेन यदा योज्यं दम्पत्योर्निधनप्रदम् ॥

– विवाह वृन्दावन

वर कन्या मेलापक में विचार –

वर एवं कन्या के मिलान में अष्टकूटों का अहम् योगदान है। अष्टकूट का आधार पूर्ण रूप से वैज्ञानिक है। इसलिए सुयोग्य दैवज्ञों के पास जाकर कुण्डली मिलान करना चाहिए। अष्टकूट पूर्णरूप से वर एवं कन्या के कायिक, वाचिक एवं मानसिक तीनों का आधारभूत स्तम्भ है। इसलिए शास्त्रसम्मत विधि के अनुरूप विवाह मिलान करना चाहिए। इसलिए वर की कुण्डली में वर्ण, वश्य, तारा, योनि, ग्रहमैत्री, गणमैत्री, भकूट तथा नाड़ी इन आठ विषयों का विशेष रूप से विचार किया जाता है। जैसे कि– वर्ण का एक अंक, वश्य के दो, तारा के तीन, योनि के चार, ग्रहमैत्री के पाँच, गणमैत्री के छः, भकूट के सात तथा नाड़ी के आठ अंक उत्तरोत्तर वृद्धि क्रम में ग्रहण करने चाहिए। इस प्रकार से इन सभी गुणों का योग ३६ होता है। यथा–

वर्णो वश्यं तथा तारा योनिश्च ग्रह मैत्रकम् ।
गणमैत्रं भकूटञ्च नाडी चैते गुणाधिकाः ॥

– मुहूर्त्तचिन्तामणि विवाह प्रकरणम्

गुण संख्या निर्धारण –

वर–कन्या की जन्म कुण्डली के मिलान में यदि सोलह गुणों से कम संख्या हो तो उसे निन्द्य कहा गया है अर्थात् विवाह नहीं किया जा सकता। २० गुण मिलने पर विवाह को मध्यम श्रेणी में रखा गया है। ३० गुण या ३० से अधिक गुण मिलने पर उत्तम प्रकार का मिलान कहा गया है। यथा –

गुणा षोडशभिर्न्यूना निन्द्या मध्यास्तु विंशतिः ।
श्रेष्ठात्रिंशद् गुणाः प्रोक्ताः परतस्तूत्तमोत्तमाः ॥

– मुहूर्त्तचिन्तामणि विवाह प्रकरणम्

वर्ण विचार –

विवाह संस्कार में प्रायः वर एवं कन्या दोनों के मन एक हों इस हेतु से विचार किया जाता है। चन्द्रमा मन का कारक ग्रह है और जन्मराशि या नाम राशि में, राशि का नेतृत्व चन्द्रमा के द्वारा किया जाता है। अतः सर्वप्रथम राशियों की वर्णगत संज्ञा का बोध होना चाहिए। मीन, कर्क, वृश्चिक राशियाँ ब्राह्मण वर्ण। मेष, सिंह, धनु क्षत्रिय वर्ण। वृष, कन्या, मकर राशियाँ वैश्य वर्ण, मिथुन, तुला, कुम्भ राशियां शूद्र वर्ण की है। वर्णों में भी उत्तरोत्तर क्रम से वर के विषय में विचार किया जाता है। यथा यदि वर ब्राह्मण वर्ण का हो और कन्या क्षत्रिय वर्ण की हो तो श्रेष्ठ श्रेणी में है और दोनों वर एवं वधु का वर्ण एक हो तो वह भी श्रेष्ठ श्रेणी में होगा। इसलिए वर्ण विचार में वर का वर्ण उच्च होना चाहिए और कन्या का वर्ण हीन हो तो ऐसा विवाह मंगलकारी सिद्ध होता है। यथा–

द्विजा झषालिकर्कटास्ततो नृपा विशोऽङ्घ्रिजाः ।
वरस्य वर्णतोऽधिका वधूर्न शस्यते बुधैः ॥

– मुहूर्त्तचिन्तामणि विवाह प्रकरण श्लोक– २२

अपि च - वर्णों की श्रेष्ठता सिद्ध करने के लिए और भी प्रमाण दिये गये हैं। यथा-

वर्णज्येष्ठा तु या नारी वर्णहीनस्तु यः पुमान् ।
विवाहं यदि कुर्वीत तस्या भर्ता विनश्यति ॥

अपिच - **एको गुणः सदृग्वर्णोऽथवा वर्णोत्तमे वरे ।**
हीने वरेऽधिके शून्यं केऽप्याहुः सदृशेदलम् ॥

- ज्योर्तिनिबन्ध

वर्ण गुणबोधाक सारणी						अन्यमतेन गुणबोधक सारणी			
		वरवर्ण				वरवर्ण			
		ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र
	ब्राह्मण	१	०	०	०	११	०	०	०
	क्षत्रिय	१	१	०	०	१	११	०	०
कन्यावर्ण	वैश्य	१	१	१	०	१	१	११	०
	शूद्र	१	१	१	१	१	१	१	११

वर्ण दोष का परिहार -

वर्ण दोष के परिहार से पूर्व हमें ग्रहों के वर्णों के विषय में जान लेना चाहिए। यथा- सूर्य का वर्ण क्षत्रिय, चन्द्रमा का वैश्य, मंगल का क्षत्रिय, बुध का शुद्र, गुरु और शुक्र का ब्राह्मण और शनि का वर्ण शूद्र है। वर की राशि के वर्ण से कन्या की राशि का वर्ण उत्तम होने पर वर्ण दोष होता है। लेकिन यदि वर के राशीश का वर्ण कन्या की राशीश के वर्ण से उत्तम हो तो वर्णदोष का परिहार हो जाता है।

वश्य कूट विचार एवं परिहार -

सिंह राशि को छोड़ कर मेष, वृष, कर्क, वृश्चिक, धनु का उत्तरार्ध मकर, कुम्भ तथा मीन राशियां मनुष्य राशियों के अधीन हैं। (मिथुन, कन्या, तुला एवं धनु का पूर्वार्ध) इन उपर्युक्त राशियों में जलचर राशियां कर्क, मकर, कुम्भ और मीन राशियां मनुष्य राशि के भक्ष्य भी है। वृश्चिक को छोड़ कर सभी राशियां मेष, वृष, मिथनु, कर्क, कन्या तुला, धनु, मकर, कुम्भ, मीन राशियां सिंह के वश्य है। इससे अधिक मनुष्य के परस्पर व्यवहार से जानना चाहिए। अतः वर के लिए यदि कन्या वश्य या भक्ष्य है तो श्रेष्ठ है। यथा-

हित्वा मृगेन्द्रं नरराशिवश्याः सर्वे तथैषां जलजास्तु भक्ष्यः ।
सर्वेऽपि सिंहस्य वशे विनालिं ज्ञेयं नराणां व्यवहारतोऽन्यत् ॥

- मुहूर्त्तचिन्तामणि विवाह प्रकरणम्, पृ.सं. ३३७ श्लो.-२३

वश्य गुण विचार -

वैरभक्ष्ये गुणाभावो द्वयोः संख्ये गुणद्वयम् ।
वश्यवैरे गुणस्त्वेको वश्यभक्ष्ये गुणार्धकः ॥

अर्थात् यदि वर से कन्या का वश्य हीन है तो दो गुण यदि एक का वैर है तो एक गुण और यदि कन्या भक्ष्य है और वर वश्य है तो आधा गुण प्राप्त होगा।

२	वर					
	२	द्विपद	चतुष्पद	जलचर	सिंह	वृश्चिक
कन्या	द्विपद	२	१	११	०	१
	चतुष्पद	१	२	१	०	१
	जलचर	११	१	२	१	१
	सिंह	०	०	१	२	०
	वृश्चिक	१	१	१	०	१

वश्य दोष परिहार -

वर कन्या की राशियों की योनिमैत्री होने पर वश्य दोष का परिहार हो जाता है।

ताराकूट विचार एवं परिहार -

ताराकूट विचार में वर के जन्म नक्षत्र से कन्या के जन्म नक्षत्र तक गणना करें और कन्या के जन्म नक्षत्र से वर के जन्म नक्षत्र तक गणना करें और जितनी संख्या आये उसे ९ से भाग देने पर यदि शेष ३, ५,७ शेष बचे तो तारा शुभ नहीं होती शेष, १,२,४,६,८,९ ताराएं होती है। यथा-

कन्यर्क्षाद्वरभं यावत् कन्याभं वरभादपि ।
गणयेन्नवहृच्छेषे त्रीष्वद्रिभमसत्स्मृतम् ॥

- मुहूर्तचिन्तामणि विवाह प्रकरण श्लो. सं.-२४

ताराओं के नाम इस प्रकार से है - जैसा कि भीम नामक व्यक्ति के लिए तारा का विचार करेंगे तो इस प्रकार से होगा। यथा-

उत्तराषाढ़ा, कृत्तिका, उत्तराफाल्गुनि, **विपत्ततारा** ।
धनिष्ठा, मृगशिरा, चित्रा, **प्रत्यरितारा** ।
पू.भा., पुनर्वसु विशाखा **वधतारा** ।

इन नक्षत्रों में कोई भी शुभ कार्य नहीं करना चाहिए। जन्म तारा कुछ कार्यों के लिए शुभ और कुछ कार्यों के लिए अशुभ कही गई है। उपनयन संस्कार में जन्मतारा शुभ और मात्रा में निषिद्ध मानी जाती है। अन्यत्र जन्म नक्षत्र को छोड़कर प्रायः शुभ होती है।

भीम नामक व्यक्ति के निम्नांकित चक्र में ताराएँ

जन्म	सम्पत	विपत्	क्षेम	प्रत्यरि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू.भा	उ.भा.	रेवती

अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा
मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाती	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा

यथा-

जन्माख्यसम्पद्विपदः क्षेमप्रत्यरिसाधकाः ।
वधमैत्रातिमैत्राः स्युस्ताराः नामसदृक्फलाः ॥

- मुहूर्तचिन्तामणि गोचरप्रकरण श्लो.-१२

तारा दोष परिहार - वर एवं कन्या के राशियों के स्वामियों की परस्पर मैत्री या नवांशेशों की मैत्री या एकता हो तो तारा दोष का परिहार होता है और अन्य कोई दूसरा परिहार नहीं है।

तारा गुण बोधक चक्र

	१	2	३	4	5	6	7	8	9
१	३	३	$1\frac{1}{2}$	३	$1\frac{1}{2}$	३	$1\frac{1}{2}$	३	३
2	३	३	$1\frac{1}{2}$	३	$1\frac{1}{2}$	३	$1\frac{1}{2}$	३	३
३	$1\frac{1}{2}$	$1\frac{1}{2}$	०	$1\frac{1}{2}$	०	$1\frac{1}{2}$	०	$1\frac{1}{2}$	$1\frac{1}{2}$
4	३	३	$1\frac{1}{2}$	३	$1\frac{1}{2}$	३	$1\frac{1}{2}$	३	३
5	$1\frac{1}{2}$	$1\frac{1}{2}$	०	$1\frac{1}{2}$	०	$1\frac{1}{2}$	०	$1\frac{1}{2}$	$1\frac{1}{2}$
6	३	३	$1\frac{1}{2}$	३	$1\frac{1}{2}$	३	$1\frac{1}{2}$	३	३
7	$1\frac{1}{2}$	$1\frac{1}{2}$	०	$1\frac{1}{2}$	०	$1\frac{1}{2}$	०	$1\frac{1}{2}$	$1\frac{1}{2}$
8	३	३	$1\frac{1}{2}$	३	$1\frac{1}{2}$	३	$1\frac{1}{2}$	३	३
9	३	३	$1\frac{1}{2}$	३	$1\frac{1}{2}$	३	$1\frac{1}{2}$	३	३

योनि कूट विचार एवं परिहार -

योनि विचार में जन्म नक्षत्रों के आधार पर योनि का विचार किया जाता है। प्रत्येक नक्षत्र की अलग योनि है, इसी योनि को आधार मानकर विवाह मेलापक में विचार किया जाता है। यथा-

अश्विनी और शतभिषा की अश्व योनि, स्वाती और हस्त नक्षत्र की कासर (भैंसा) योनि, धनिष्ठा एवं पू.भा. की सिंह योनि, भरणी तथा रेवती की हाथी योनि, पुष्य और कृत्तिका की मेष योनि, श्रवण एवं पू.षा. की वानर योनि, उ.षा. तथा अभिजित की नकुल योनि, रोहिणी एवं मृगशिरा की सर्प योनि, ज्येष्ठा एवं अनुराधा की मृग योनि, मूल एवं आर्द्रा की कुत्ता योनि, पुनर्वसु और आश्लेषा की मार्जर, योनि, मघा तथा पूर्वाफाल्गुनी की मूषक योनि, विशाखा-चित्रा की योनि व्याघ्र और उत्तराभाद्रपद व उत्तराफाल्गुनी की गौ योनि होती है।

एक-एक चरण में कही गई दो-दो योनियों में परस्पर वैर होता है। उन्हें विवाह में त्याग देना चाहिए। यथा प्रथम पाद में घोड़ा और भैंसा, द्वितीय पाद में सिंह एवं हाथी, तृतीय पाद में मेष और वानर, चौथे पाद में नकुल-सांप, पांचवें पाद में मृग एवं कुत्ता, छठे पाद में मार्जार और मूषक, सातवें पाद में व्याघ्र एवं गौ, का परस्पर महावैर होता है जो कि योनि विचार में निन्दित है। अर्थात् यदि योनि विचार में वर एवं वधु दोनों की योनियों में परस्पर महावैर है तो जीवन दु:खमय एवं परस्पर एक-दूसरे के प्रति वैर-विरोध की भावना रहेगी। इसलिए ऐसी योनि कूट की स्थिति में विवाह नहीं करना चाहिए। यथा-

अश्विन्यम्बुपयोर्हयो निगदितः स्वात्यर्कयोः कासः
सिंहो वस्वजपाद्भयोः समुदितो याग्यान्त्ययोः कुञ्जरः।
मेषो देवपुरोहितानलभयोः कर्णाम्बुनोर्वानरः
स्याद् वैश्वाभिजितोस्तथैव नकुलश्चान्द्राब्जयोन्योरहिः ॥
ज्येष्ठामैत्रभयोः कुरङ्ग उदितो मूलार्द्रयोः श्वा तथा
मार्जारोऽदितिसार्पयोरथ मघायोन्योस्तथैवोन्दुरुः ।
व्याघ्रो द्वीशभचित्रयोरपि च गौरर्यम्णबुध्न्यर्क्षयो-
योनिः पादगयोः परस्परमहावैरं भयोन्योस्त्यजेत् ॥

- - मुहूर्तचिन्तामणि विवाह प्रकरण श्लो. सं.- २५-२६

योनि गुणबोधक चक्र

	अ.	हस्त	धनि.	भर.	पुष्य	श्रव.	पू.षा.	मृग.	ज्ये.	मू.	पुन.	मघा	वि.	उ.फा.
	शत.	स्वा.	पू.भा.	रेव.	कृति.	पू.षा.	अभि.	रोहि.	अनु.	आ.	श्ले.	पू.फा.	चित्रा	उ.भा.
४	अश्व	महिष	सिंह	गज	मेष	कपि	नकु.	सर्प	मृग	श्वान	मार्जार	मूषक	व्याघ्र	गौ
अश्व.	४	०	१	२	३	२	२	१	३	२	३	३	१	३
महि.	०	४	१	३	३	२	२	२	२	२	२	२	१	३
सिंह	१	१	४	०	१	२	२	२	१	१	२	१	२	१
गज	२	२	०	४	२	२	२	२	२	२	३	२	१	२
मेष	३	३	१	२	४	०	३	१	३	२	३	२	१	३
कपि	२	२	२	२	०	४	२	१	२	२	२	२	१	२
नकु.	२	२	२	२	३	२	४	०	२	१	२	२	२	२
सर्प	१	२	२	२	१	१	०	४	१	१	१	१	२	१
मृग	२	२	१	२	३	२	२	१	४	०	२	२	१	२
खान	२	२	१	२	२	२	१	१	०	४	१	१	१	१
मार्जार	३	२	२	३	३	२	२	१	२	१	४	०	२	२
मूषक	३	२	१	२	२	२	२	१	२	१	०	४	२	२
व्याघ्र	१	१	२	१	१	१	२	२	१	१	२	२	४	०
गौ	३	३	१	२	३	२	२	१	२	१	२	२	०	४

योनिकूट के विषय में और भी कहा गया है यथा-

अष्टाविंशतितारााणां योनयस्तु चतुर्दश।
मैत्रं चैवातिमैत्रं च विवाहे नरयोषितोः ॥

महद्वैरे च वैरे च स्वभावे च यथाक्रमम् ।
मैत्रे चैवातिमैत्रे च खेन्दुद्वित्रिचतुर्गुणाः ॥

– गुणविभागो दैवज्ञमनोहर २५-२६

योनिकूट विचार – भकूट एवं वश्यकूटों में से कोई एक भी शुभ हो तो योनिकूट का परिहार हो जाता है। यथा-

योनेरभावे नोद्वह्य स तु कार्ये वियोगहा ।
राशिवश्यं च यद्यस्मि कारयेन्न तु दोषभाक् ॥

– गुणविभागो दैवज्ञमनोहर २५-२६

ग्रहमैत्री विचार –

सूर्य आत्माकारक ग्रह और चन्द्रमा मन का नेतृत्वकारक, मंगल बल का कारक, बुध वाणी का कारक ग्रह है गुरु एवं शुक्र दोनों ग्रह अध्यात्म एवं भौतिक सुख-संसाधनों के क्रमशः नेतृत्व कारक ग्रह हैं। और शनि सेवक है शरीर में दुःख का कारक है दुःख के उपरान्त ही सुख की अनुभूति होती है। अतः ग्रह मिलाप परमावश्यक बिन्दु है। वर एवं कन्या का परस्पर निस्वार्थ भावपूर्ण प्रेम बना रहे तो गृहस्थ आश्रम स्वतः ही ठीक रहता है इसलिए विवाह मेलापक में ग्रह मैत्री आवश्यक एवं प्रधान विषय है। सर्वप्रथम सूर्य ग्रह के साथ मैत्री के विषय में विचार करते हैं सूर्य के चन्द्रमा, मंगल, बृहस्पति ये तीनों मित्र है शुक्र और शनि शत्रु हैं बुध सम है।

चन्द्रमा के सूर्य एवं बुध मित्र है अन्य सभी ग्रह मंगल, गुरु, शुक्र, शनि सम है। चन्द्रमा के कोई भी ग्रह शत्रु नहीं है।

मंगल – मंगल ग्रह के सूर्य, चन्द्रमा, बृहस्पति मित्र हैं। बुध शत्रु हैं, शक्र एवं शनि सम है।

बुध – बुध ग्रह के शक्र एवं सूर्य मित्र हैं। चन्द्रमा शत्रु तथा मंगल, गुरु, शनि सम है।

बृहस्पति– बृहस्पति के सूर्य, मंगल एवं चन्द्रमा मित्र हैं। बुध और शुक्र शत्रु तथा शनि सम है।

शुक्र – शुक्र ग्रह के बुध और शनि मित्र, सूर्य और चन्द्रमा शत्रु एवं गुरु सम है।

शनि – शनि ग्रह के बुध एवं शुक्र मित्र है, चन्द्र, सूर्य तथा मंगल शत्रु गुरु सम है।

यथा-

शत्रु मन्दसितौ समश्च राशिजो मित्राणि रवेः।
तीक्ष्णांशुहिमरश्मिजश्च सुहृदौ शेषाः समाः शीतगोः ।
जीवेन्दूष्णकराः कुजस्य सुहृदो ज्ञोऽरिः सितार्की समौ
मित्रे सूयसितौ बुधस्य हिमगुः शत्रुः समाश्चापरे।
सूरेः सौम्यसितावरी रविसुतो मध्योऽपरेत्वन्यथा
सौम्यार्की सुहृदौ समौ कुजरूः शुक्रस्य शेषावरी ।
शुक्रज्ञौ सुहृदौ समः सुरगुरु सौरस्य चान्येऽरयः
तत्काले दशायबन्धुसहजस्वान्त्येषु मित्रं स्थिताः ॥

– भारतीय कुण्डली विज्ञान पृ.सं. ५३ कुण्डली विधान प्रकरण

ग्रह मैत्री बोधक ग्रह

मित्र	शत्रु	सम
सूर्य – गुरु, मंगल चन्द्र	शनि, शुक्र	बुध
चन्द्र – सूर्य, बुध	राहु	मंगल, गुरु, शुक्र, शनि
मंगल – सूर्य, चन्द्र, गुरु	बुध	शुक्र, शनि
बुध – सूर्य एवं शुक्र	चन्द्र	मंगल, गुरु, शनि
गुरु – रवि, चन्द्र, मंगल	बुध, शुक्र	शनि
शुक्र – शनि, बुध	सूर्य, चन्द्र	मंगल, गुरु

शनि - शुक्र, बुध	सूर्य, चन्द्र, मंगल	गुरु
राहु - शनि, बुध, शुक्र	सूर्य, चन्द्र, मंगल	गुरु

ग्रह मैत्री गुणबोधक सारणी

५	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
सूर्य	५	५	५	४	५	०	०
चन्द्र	५	५	४	१	४	११	११
मंगल	५	४	५	११	५	३	११
बुध	४	१	११	५	११	५	४
गुरु	५	४	५	११	५	११	३
शुक्र	०	११	३	५	११	५	५
शनि	०	११	११	४	३	५	५

गण कूट विचार -

मानव की मानसिक प्रकृति तीन भागों में विभाजित है वह चाहे सत्व, रज, तमात्मक हो या फिर देव, मनुष्य राक्षक की हो। इसी विषय को आधार मानकर गण कूट का विचार परमावश्यक हो जाता है। यथा- मघा, आश्लेषा, धनिष्ठा, ज्येष्ठा, मूल, शतभिषा, कृत्तिका एवं चित्रा इन नक्षत्रों का गण राक्षस है। तीनों उत्तरा, (उ.फा., उ.षा., उ.भा.) रोहिणी, भरणी तथा आर्द्रा में नौ नक्षत्र मनुष्य गण के हैं।

अनुराधा, पुनर्वसु, मृगशिरा, श्रवण, रेवती, स्वाती, हस्त अश्विनी पुष्य ये नौ नक्षत्र देवगण के है। एक समान गण होने पर वर-वधु में प्रेम रहता है। देवगण एवं मनुष्यगण में मध्यम श्रेणी की मित्रता होती है। राक्षस एवं मनुष्य गण में मृत्यु होती है। देवता एवं राक्षस गण में वर-कन्या का विवाह हो तो परस्पर वैर बना रहता है। यथा-

रक्षोनरामरगणाः क्रमतो मघाहिवस्विन्द्रमूलवरुणानलतक्षराधाः
पूर्वोत्तरात्रयविधातृयमेशभानि मैत्रादितीन्दुहरिपौष्णमरुल्लघूनि॥
निनिजगणमध्ये प्रीतिरत्युत्तमा स्यादमरमनुजयोः सामध्यमा सम्प्रदिष्टा।
असुरमनुजयोश्चेन्मृत्युरेव प्रदिष्टो दनुजबिबुधयोः स्याद्वैरमेकान्ततोऽत्र॥

-मुहूर्त्तचिन्तामणि विवाह प्रकरण २९-३०

गणकूट में गुणविभाग-

गणकूट के छः गुण वर एवं वधु के होते हैं। यदि कन्या देवगण की हो और वर मनुष्यगण का हो तो ४ गुण होंगे। वर राक्षस गण का और कन्या देवगण की हो तो २ गुण और कन्या राक्षस गण की और वर मनुष्य गण का हो तो १ गुण होता है। वर एवं वधु दोनों देवगण के हों या दोनों वर-वधु मनुष्यगण के हों या वर-वधु दोनों राक्षणगण के हों तो ६ गुण होंगे। यथा-

षड्गुणा गुणसादृश्ये पञ्च स्युः सुरमानुषे ।
नार्या देवो नरः पुंसश्चत्वारो वा गुणास्त्रयः ॥
देवराक्षसयोः शून्यं तथैव नररक्षसोः ।
पुंसो रक्षोगणो यत्र नार्या देवोऽथवा नरः ॥
गुणौ द्वौ क्रमतश्चैको गुणो ग्राह्योऽन्यथा न हि ॥

- दैवज्ञमनोहर गुणविभाग

गुण बोधक सारणी

वर / कन्या	अनु. पुन. पुष्य मृग. स्व. श्रव. रेव. अश्वि. हस्त.	३ पूर्वा., ३ उत्तरा., रोहि. भरणी, आर्द्रा	मघा., अश्वि., धनि., ज्ये., मूल, शत., कृ., चि., वि.
६	देव	मनुष्य	राक्षस
देव	६	५	१

मनुष्य	६	६	०
राक्षस	०	०	६

अपिच–

मृत्युः षष्ठाष्टके ज्ञेयोऽपत्यहानिर्नवात्मजे ।
द्विर्द्वादशे निर्धनत्वं द्वयोरन्यत्र सौख्यकृत् ॥

– मुहूर्त्तचिन्तामणि विवाह प्रकरण

गणकूट परिहार –

सद्भकूटं योनिशुद्धिर्ग्रहसख्यं गुणत्रयम् ।
एष्वेकतमसद्भावे कन्या रक्षो गणाः शुभाः ॥

– ज्यातिर्निबन्ध

अपि च–

१. राशीशों या नवमाशेशों की मैत्री या एकता हो।
२. भकूट दोष न हो।
३. दोनों की राशि एक और नक्षत्र भिन्न-भिन्न हों।

भकूट विचार (राशिकूट) –

वर एवं कन्या की राशि यदि परस्पर छठी और आठवीं हो तो विवाह मृत्युकारक होता है। इसी प्रकार से नवमी एवं पाचवीं हो तो निर्धनता रहती है। अन्यत्र समसप्तक परस्पर यथा ५–११, ४–१० ये शुभ होते हैं।

समसप्तक, तृतीय–एकादश, चतुर्थ–दशम, षडषटक्, नवम–पंचम, और द्विर्द्वादश ये ६ प्रकार के भकूट कहे गये हैं। इसमें प्रथम तीन प्रकार के भकूटों को उत्तम माना गया है। शेष अन्तिम ०३ भकूटों को अशुभफलदायक कहा गया है। इन छः भकूटों में शुभ एवं अशुभ भेद से दो–दो भेद होते हैं। राशिस्वामियों की शत्रुता में अशुभ कूट और अन्य स्थिति में शुभ माना गया है। यथा–

१. समसप्तक – १–७, २–८, ३–९, ४–१०, ५–११, ६–१२ में कर्क–मकर एवं सिंह–कुम्भ को समसप्तक अशुभ एवं शेष शुभ है। यथा–

"मृगः कुलीरेण घटेन सिंहः वैरप्रदः स्यात्समसप्तकत्वम्।"

२. चतुर्थदशम के – १–४, २–५, ३–६, ४–७, ५–८, ६–९, ७–१०, ८–११, ९–१२, १०–१, ११–२, तथा १२–३ ये कुल बारह भेद हैं इनमें १, ३, ५, ७, ९, ११ मैत्रीभाव एवं एकाधिपत्य होने के फलस्वरूप शुभ हैं। शेष अशुभ होते हैं।

३. तृतीयैकादश सभी भकूट शुभ एवं उत्तम माने गये हैं।

४. षडषटक भी १२ प्रकार के होते हैं यथा– १–८, २–९, ३–१०, ४–११, ५–१२, ६–१, ७–२, ८–३, ९–४, १०–५, ११–६, १२–७ इनमें १, ३, ५, ७, ९, ११ वाला षडषटक एकाधिपत्य एवं मित्र होने के फलस्वरूप उत्तम कहे गये हैं। २, ४, ६, ८, १०, १२ भेद के षडषटक परस्पर शत्रु होने के फलस्वरूप अशुभ कहे गये हैं।

यथा–

वैरषड्काष्टकं मेषकन्ययोर्घटमीनयोः ।
चापक्षयोर्नृयुक्कीटभयोर्घटकुलीरयोः ।
पञ्चास्यमृगयोर्जन्मराशेः प्रोक्तेऽशुभप्रदः ।
मित्रषष्ठाष्टकं कीटमेषयोर्वृषजूकयोः ॥
कर्किचापभयोर्मीनसिंहयोर्भृयुग्मयोः ।
कन्याकाकुम्भयोरन्यत्प्रयत्नादिह वर्जयेत् ॥

५. नव–पञ्चम भकूट के भी बारह भेद कहे गये हैं और परस्पर सभी मित्र हैं। उनमें ६ शुभ और ६ अशुभ कहे गये हैं। यथा–

मेषे च चापे, मकरे वृषे च, कुम्भे च युग्मे, झषकर्कटे च ।

कुम्भे तुलायां, झषकीटयोश्च शत्रुत्रिकोणे बहुदु:खहानिः ॥
मेषे च सिंहे वृषभे च कन्यके युग्मे घटे वृश्चिककर्कटे च ।
सिंहे च चापे, मकरे युवत्या, मित्रत्रिकोणे बहुपुत्रलाभः ॥

पुरुष की राशि से पांचवीं कन्या की राशि हो तो अशुभ होती है। और नवम राशि हो तो शुभ होती है।

६. द्विर्द्वादश के भी बारह भेद होते हें। मीनादि समराशि से दूसरी राशि उत्तम अर्थात् १२-१, २-३, ४-५, ६-७, ८-९, १०-११ मित्र अथवा एकाधिपत्य होने के कारण से शुभ कहा गया है। इसी प्रकार से मेषादि विषमराशियों में दूसरी राशि अर्थात् १-२, ३-४, ५-६, ७-८, ९-१०, ११-१२ हो तो अशुभ द्विर्द्वादश होते हैं। यथा-

द्विर्द्वादशं शुभं प्रोक्तं भीमादौ युग्मराशिषु ।
मेषादौ युग्मराशौ तु निधनत्वं न संशयः ॥

दुष्ट भकूट में गुणों का अभाव होता है, किन्तु यदि योनि मैत्री और अबलादूर हो तो ४ गुण होते हैं। योनि मैत्री एवं अबलादूर में से यदि एक ही हो तो १ गुण होता है। एक राशि में ७ गुण होते हैं, किन्तु एक चरण हो जाये तो शून्य गुण ही प्राप्त होता है। अच्छे भकूट में भी यदि नृदूर और राशिरिपुता हो तो ०६ गुण होते हैं। भिन्न राशि नक्षत्र एक (द्विर्द्वादश) हो तो ५ गुण होते हैं। अन्य भकूट में ०७ गुण होते हैं। यथा-

भकूट गुणबोधक चक्रम

७	मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी
मेष	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०
वृष	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७
मिथुन	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७
कर्क	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०
सिंह	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०
कन्या	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७
तुला	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०
वृश्चिक	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०
धनु	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७
मकर	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७
कुम्भ	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०
मीन	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७

दुष्ट भकूट का परिहार -

वर एवं कन्या दोनों के राशि स्वामियों की परस्पर मित्रता हो अथवा दोनों के नवमांश स्वामियों की मित्रता हो तो गण दोष नहीं होता है। उत्तम भकूट की अवस्था में ग्रहमैत्रीदोष होने पर नष्ट हो जाता है और यदि ग्रह मैत्री उत्तम हो तो भकूट का दोष नष्ट हो जाता है। यथा-

मैत्र्यां राशिस्वामिनोरंशनाथद्वन्द्वस्यापि स्याद् गणानां न दोषः।
खेटारित्वं नाशयेत् सद्भकूटं खेटप्रीतिश्चापि दुष्टं भकूटम् ॥

-मुहूर्तचिन्तामणि विवाह प्रकरण श्लो.सं. ३३

नाडी कूट विचार-

अष्टकूटों में प्रधान विषय नाडी कूट है और इसी कूट के वर-वधु मिलान में सर्वाधिक अंक प्राप्त होते हैं। नाडी कूट के विषय में प्रायः भ्रान्ति बनी रहती है कि यह केवल बाह्मणों के लिए इसका दोष होता है जबकि यह ठीक नहीं है। शास्त्र के अनुसार जो राशियाँ ब्राह्मण वर्ण की है उन सभी जातकों को यह दोष होगा जिनकी ब्राह्मण वर्ण की जन्म राशियां है। इसी प्रकार से क्षत्रिय वर्ण की राशि वालों को वर्णदोष होता है।

नाड़ी कूट तीन भागों में विभाजित है। जिसमें आदि नाड़ी, मध्य

नाड़ी, एवं अन्त्य नाड़ी है। यह नक्षत्रों के आधार पर विभाजन किया गया है। यथा-

१. ज्येष्ठा, आर्द्रा, मूल, पुनर्वसु, उत्तराफाल्गुनी-हस्त, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपदा और अश्विनी इन नौ नक्षत्रों की आदि नाड़ी है।

२. भरणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पूर्वाफाल्गुनी, चित्रा, अनुराधा, पूर्वाषाढ़ा, धनिष्ठा उत्तराभाद्रपदा की मध्य नाड़ी है।

३. कृत्तिका, रोहिणी, आश्लेषा, मघा, स्वाती, विशाखा, उत्तराषाढ़ा, श्रवण, रेवती नक्षत्रों की अन्त्य नाड़ी है।

वर एवं वधु की यदि एक नाड़ी हो जैसे यदि दोनों की आदि नाड़ी हो या दोनों की मध्यनाड़ी हो अथवा दोनों की अन्त्य नाड़ी हो तो अशुभ फलदायक होती है। और यदि दोनों की मध्यनाड़ी हो तो मृत्युदायक होती है।

नाड़ी गुणबोधक चक्र

नक्षत्र	आर्द्रा, पुन, उ.फा., हस्त, ज्येष्ठा, मूल, शत., पू.भा., अश्वि.	भर.,मृग.,पु.,पू.फा., चित्रा, अनु.,पू.षा., धनि, उ.भा.,	कृ.रो.,आश्ले,मघा, स्वाती, विशा., उ.षा., श्रव., रेवती
८	आदि	मध्य	अन्त
आदि	०	८	८
मध्य	८	०	८
अन्त	८	८	०

नाड़ी कूट परिहार-

१. वर एवं वधु दोनों की एक राशि हो और नक्षत्र भिन्न-भिन्न हो तो नाड़ी दोष नहीं होता है।

२. वर एवं वधु दोनों का नक्षत्र एक हो किन्तु राशि भिन्न-भिन्न हो तो नाड़ी और गण का दोष नहीं होता है।

३. वर एवं वधु का नक्षत्र एक हो किन्तु चरण अलग-अलग हो तो भी नाड़ी एवं गण का दोष नहीं होता है। यहाँ पर नक्षत्र का मेल उत्तम कहा गया है।

४. यदि वर एवं वधु का एक ही नक्षत्र, एक ही चरण, हो तो विवाह उत्तम नहीं होता है। यथा-

"एकांशकलेऽपि समप्रभावान्न भर्तृभार्या व्यवहारसिद्धिः"।

५. यदि वर के नक्षत्र से कन्या का नक्षत्र दूसरा हो तो भी अशुभ होता है। यथा-

राश्यैक्ये चेद्भिन्नमृक्षं द्वयोः स्यान्नक्षत्रैक्ये राशियुग्मं तथैव।
नाड़ीदोषो नो गणानां च दोषो नक्षत्रैक्ये पादभेदे शुभं स्यात् ॥

- मुहूर्तचिन्तामणि विवाह प्रकरण श्लो. सं. ३५

अपि च -

एकर्क्षे चैकराशौ च विवाहः प्राणहानिदः ।

और भी महर्षि वशिष्ठ के मतानुसार-

दम्पत्योर्जन्मभे चैक्ये राशौ च निधनं तयोः ।
एकस्य च तथोद्वाहे किञ्चिद्भेदेऽनि वा न वा ॥

-महर्षि वशिष्ठ

- डॉ. रत्नलाल
सहाचार्य-ज्योतिष विभाग

चमत्कारिक यन्त्र-मन्त्र एवं तन्त्रों द्वारा कार्यसिद्धि

हमारे ऋषियों द्वारा जन समान्य के कष्टों को किस प्रकार से दूर किया जाए इसके लिए अनेकानेक प्रविधियों का उल्लेख हमारे ज्ञान के प्रमुख स्त्रोत वेद, दर्शन, पुराणादि ग्रन्थों में प्राप्त होता है। उन्होंने मानव कल्याण के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए अपनी दिव्य दृष्टि के द्वारा मन्त्र शक्ति को उद्घाटित किया। लोक जगत एवं पारलौकिक जीवन के क्षेत्र में किस प्रकार से मन्त्र साधना, यन्त्रों का निर्माण एवं तन्त्र के माध्यम से जनकल्याण किया जाए इस हेतु से असंख्य मन्त्रों को प्रदान किया। इसी क्रम में विद्यापीठ पञ्चाङ्ग के माध्यम से ज्योतिष विभाग भी अनवरत **अहर्निशं सेवामहे** की भावना के साथ जन-कल्याण के कार्यों को यत्र-तत्र-सर्वत्र किसी न किसी रूप में साकार करता रहा है। मन्त्रों की साधना के लिए शुभ मुहूर्त में गुरुमुख से मन्त्र प्राप्त करके सूर्य-चन्द्र ग्रहण काल, क्रान्ति साम्य या सायन संक्रान्तियों के पुण्यकाल में अथवा सर्वसिद्ध मुहूर्त्तों में विधि विधान, श्रद्धा पूर्वक साधना करने पर निश्चित रूप से सफलता प्राप्त होती है इस विषय पर यह भी ध्यातव्य है कि यन्त्र निर्माण, तन्त्र साधना, एवं मन्त्र साधना के लिए कुछ विशेष पर्व भी है। जैसे दीपावली, महाशिवरात्रि, होली, विजय दशमी, अक्षय तृतीया आदि प्रसिद्ध रात्रियों में सिद्ध करके इनका चमत्कार आप देख सकते हैं। यन्त्र-तन्त्र एवं मन्त्रों के आधार पर ही दैवज्ञ अपनी विद्वता से जगत में यश को प्राप्त कर सकता है। यथा- **"सिद्धिर्भूषयते विद्याम्"**

मन्त्र ऐसे दिव्य एवं आलौकिक शब्दों का संग्रह है जिसके बल पर दैवज्ञ अपनी दृढ़ इच्छा-शक्तिपूर्वक साधना करके अलौकिक कार्य कर सकते हैं। यथा-

मननात् त्रायते यस्मात्तस्मात् मन्त्रः प्रकीर्तितः।
जपात् सिद्धिर्जपात् सिद्धिर्न संशयः ॥

मन्त्र शास्त्र के आधार पर वैदिक मन्त्रों को ब्रह्मा द्वारा शक्ति प्रदान की गई। तान्त्रिक मन्त्रों को भगवान शिव के द्वारा शक्ति सम्पन्न किया गया। इसी प्रकार से शाबर मन्त्रों में भी अद्भुत शक्ति है। कलियुग में भगवान शिव के अवतार शाबरनाथ द्वारा शाबर मन्त्रों को शक्ति सम्पन्न किया गया है। शाबर मन्त्र अर्थहीन लगते हैं परन्तु भगवान शिवजी के प्रताप से यह मन्त्र चमत्कारिक फल प्रदान करने वाले होते हैं।

विशेष - मन्त्र का पुरश्चरण करते समय गुप्त रखें। क्योंकि यदि प्रकट हो जाए तो पुरश्चरण का लाभ प्राप्त नहीं होता। **गोपनीयं गोपनीयं गोपनीयं प्रयत्नतः।**

मन्त्र सिद्धि के विषय में एक उद्धरण प्रसिद्ध है कि मन्त्र, तीर्थ, ब्राह्मण, दैवज्ञ, देवता, वैद्य एवं गुरु के सम्बन्ध में मनुष्य की जैसी भावना होगी उसी प्रकार से उसे फल की प्राप्ति होगी। यथा-

मन्त्र तीर्थे द्विजे दैवज्ञे भैषजे गुरौ ।
यादृशी भावना यस्य सिद्धिर्भवति तादृशी

1. भुवनेश्वरी - कर्णपिशाचिनी मन्त्र (अनुभूत प्रयोग)

मन्त्र- "ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं भुवनेश्वरी वाग्वादिनी कर्णपिशाचिनी साधकाय सिद्धिदायै नमः।

गंगा, जमुना, नर्मदा या बहते जल में खड़ा होकर पाँच सौ बार इस मन्त्र का जाप करना चाहिए। जाप के उपरान्त दशांश होम, तर्पण, मार्जन तथा ब्रह्मभोज करवायें। अद्योलिखित यन्त्र को 10,000 बार भूमि पर लिखें। बड़े से बड़े शासक प्रशासक भी वश में होंगे। आपके मुख से जो भी वचन निकलेगा वह सत्य होगा। इस मन्त्र साधना से भूत-भविष्य एवं वर्तमान के विषय में जान लेगा।

यन्त्र

ह्रीं ८	ह्रीं १	ह्रीं ६
ह्रीं ३	ह्रीं ५	ह्रीं ७
ह्रीं ४	ह्रीं ९	ह्रीं २

भूत-भविष्य ज्ञानार्थ कर्णपिशाचिनी मन्त्रसिद्धि-

ॐ रक्ते महारक्ते इडि विडि सुणिदे कर्णपिशाचिनी आगच्छ भगवति सत्यं वदतु स्वाहा॥

इस मन्त्र का जाप कृष्णपक्ष की चतुर्दशी से प्रारम्भ करें। किसी एकांत स्थान में या देवालय में दक्षिणदिशाभिमुख होकर सवा लाख जाप करें। दशांश होम, तर्पण एवं मार्जन, ब्राह्मण भोजन दक्षिणा प्रदान करें। ऐसा करने के उपरान्त भूत-भविष्य एवं वर्तमान के विषय में कान में प्रत्यक्ष अनुभव होना प्रारम्भ होगा।

2. सर्वकार्यसिद्धि नृसिंह मन्त्र -

ॐ उग्रवीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम् ।
नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्य-मृत्यं नमाम्यहम् ॥

इस मन्त्र के जाप करने से व्यक्ति सर्वविध कष्टों से निवृत्ति प्राप्त कर सकता है। शारदातिलक में कहा गया है कि यह मन्त्र सर्वसिद्धिदायक, सर्वमनोरथ सिद्ध करने वाला एवं महामारी आदि से मुक्ति पाने के लिए प्रत्यक्ष फल प्रदान करने वाला है। इस मन्त्र का प्रातः तीन माला सूर्याभिमुख करने पर मनोवाञ्छित फल प्राप्त होता है।

लक्ष्मी प्राप्ति मन्त्र-

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रिये नमो भगवति मम समृद्धौ ज्वल ज्वल मां सर्वसम्पदं देहि देहि यमालक्ष्मीं नाशय-नाशय हुँ फट् स्वाहा॥

इस मन्त्र को जो प्राणी दीपावली, विजयदशमी, सूर्य एवं चन्द्रग्रहण में एक हजार आठ बार जप कर दशांश घृत आहुति से होम करता है तो ऐसे प्राणी की दरिद्रता का नाश होता है और लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।

पुत्र प्रदायक सरस्वती मन्त्र-

त्वं शक्तिस्त्वं स्वाहा स्वाहा त्वं सावित्री सरस्वती ।
पतिं देहि, गृहं देहि, सुतं देहि मे, नमोऽस्तुते ॥

हे सरस्वती मां आप ही शक्ति स्वरूपा हो, आप ही शक्ति स्वरूपा सत्व रूप स्वाधा, स्वाहा, सावित्री आदि रूपों में विद्यमान हो। मुझको पति सुख, गृह सुख, एवं पुत्र सुख प्रदान करें। आपको मेरा नमस्कार है। उपर्युक्त मन्त्र पति/पत्नी द्वारा ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया से आरम्भ करके सवा लाख संख्या में करना चाहिए। पाठ का आरम्भ सरस्वती की प्रतिमा के सामने अखण्ड दीप जलाकर प्रारम्भ करना चाहिए। पाठोपरान्त कम से कम 108 आहुतियाँ देनी चाहिए अन्त में अपनी श्रद्धानुसार ब्राह्मण भोजन, दक्षिणा आदि देना चाहिए तथा कन्या पूजन करना कल्याणकारी सिद्ध होगा।

भविष्य कथन हेतु सुरकात्यायनी मन्त्र-प्रयोग-

"ॐ भ्रूं हुं फट्"

विधान - ऐसा देवस्थान जिसकी उपेक्षा की गई हो उस देवालय में बैठकर आठ हजार मन्त्रजाप करें। भगवती सुरकात्यायनी अट्टाहास करती हुई सपरिवार पूर्वक समक्ष आयेगी। भगवती को समक्ष आया देखकर जल में चन्दन मिलाकर अर्घ्य दें। इस प्रकार माता अनेकविध भोग्य पदार्थों को प्रदान करती है तथा भविष्य कथन में सामर्थ्य प्रदान करती है। अनुभूत प्रयोग है।

सभी रोगों से मुक्ति पाने का अनुभूत मंत्र-

ॐ मां भयात् सर्वतो रक्ष श्रियं वर्धय सर्वदा ।
शरीरारोग्यं में देहि देव देव नमोऽस्तुते ॥

इस मन्त्र को ग्रहण के समय या दीपावली की रात्रि में जाप करके सिद्ध कर लें। उसके उपरान्त पात्र में शुद्ध जल लेकर उस पात्र को हाथ से ढककर सात बार इस मंत्र का जाप विश्वास पूर्वक अभिमन्त्रित जल रोगी को पिला दें। लगभग 11 या 41 दिन लगातार पिलाने पर रोगी रोग से मुक्त हो जायेगा।

बालक को दृष्टिदोष से मुक्त कराने का साबर मन्त्र -

ॐ डायन मोर जादू बाण। चौंक उठे बालक के प्राण।
रोए बालक फक्का फाड़। चीखें मार करे चीत्कार।
दोहाई कामाक्षा देवी की, तुझे शंकर की आन।
ॐ नमः रूद्राय।
ॐ नमः कामाक्षादैव्यै ह्रीं क्रीं श्रीं फट् स्वाहा।

कभी-कभी सोया हुआ बच्चा सोते-सोते बीच में चौंक कर उठता है। अकारण रोता है तो ऐसे में झाड़ू की तिल्ली लेकर बालक को उक्त मन्त्र पढ़ते हुए झाड़ दें। उसके बाद तिल्ली को अग्नि में जला दें। बालक पूर्ण रूप से स्वस्थ एवं प्रसन्न रहेगा।

भूत-प्रेत-पिशाच-निशाचर से मुक्ति हेतु अनुभूत मन्त्र प्रयोग-

विधि-निम्नलिखित मन्त्र दीपावली की रात्रि में 11 हजार बार जाप करने पर सिद्ध होता है। इसलिए 11 हजार जप करने के बाद दशांश हवन करें।

यदि घर पर हमेशा कलह, लड़ाई, झगड़ा बिना कारण भय, बाधा, धनहानि दरिद्रता, आतंक, भूतप्रेत, पिशाच की छाया, किसी के द्वारा घर पर अनिष्टकारक प्रयोग किया गया हो तो निम्न मन्त्र को शुभ समय में भोजपत्र पर अनार की कलम से लिखकर मन्त्र का विधिवत् पूजन करके धूप-दीप करने के बाद दाईं भुजा में बाँधने पर या लाल कपड़े में बांध कर घर में शुद्धस्थान में रखने पर सर्वविधरूप से शान्तिलाभ होता है।

यदि घर के समस्त सदस्य-भूत-प्रेत-बाधा से ग्रसित हो तो घर पर निम्न मन्त्र का जाप करावें। दशांश हवन करावें। हवन पूर्ण होने पर खदिर की लकड़ी 8 लोहे की कीलें, 8 पीली कौड़ी, 8 हल्दी की गांठे, डोडी वाले आठ लौंग लेकर निम्न मन्त्र के द्वारा अभिमन्त्रित करके आग्नेय कोण से प्रारम्भ करके आठों दिशाओं में एक हाथ का गड्ढा करके इन सब को उसमें गाढ़ देवें। ऐसा करने पर भूत-प्रेत से घर सुरक्षित रहता है।

मन्त्र-

"ॐ ह्रीं दुर्वृत्तानामशेषाणं बलहानिकरं परम् ।
रक्षो-भूत-पिशाचानां पठनादेव नाशनम् ह्रीं ॐ॥"

सर्वकार्य सिद्धि बत्तीसा यन्त्र-

इस मन्त्र को शुभमुहूर्त्त, दीपावली की रात्रि ग्रहण के समय या विजय दशमी को अनार की कलम एवं अष्टगंध से भोजपत्र पर लिख कर सिद्ध कर लें। यन्त्र सिद्ध होने पर संसार के सभी मनोरथों को साधक प्राप्त कर सकता है। इसमें कोई सन्देह नहीं है।

विधि- इस मन्त्र को हल्दी के द्वारा भोजपत्र पर लिखकर यन्त्र के नीचे अपनी इच्छा प्राप्ति लिखें रविवार को इस यन्त्र की रूई के साथ बत्ती बनाकर दीपक की लौं में जला दें और हल्दी की माला से **"ॐ ह्रीं हंसः"** इस मन्त्र का ग्यारह सौ बार जाप करें। इस प्रकार से सात रविवार करने वाला मनुष्य सभी दुःखों से मुक्त होकर मनोवाञ्छित फल को प्राप्त करके सुखी रहता है।

8	15	2	7
6	3	12	11
14	9	8	1
4	5	10	13
मनोकामना यहाँ पर लिखें			

सर्वसिद्ध आकर्षणा (वशीकरण) यन्त्र-

ॐ आकर्षय महादेवि अमुकं हि मम प्रियम् ।
ऐं त्रिपुरे देवदेवे तुभ्यं दास्यामि याचितम् ॥

निम्न षट्कोण यन्त्र को गोरोचन से भोजपत्र पर लिखकर पंचोपचार पूजन करके घी के कलश में स्थापित करें नित्य कलश का पूजन करें। प्रतिदिन भगवती का ध्यान करके जहाँ पर अमुकं लिखा है वहाँ पर जिसका वशीकरण करना है उसका नाम लिखें।?

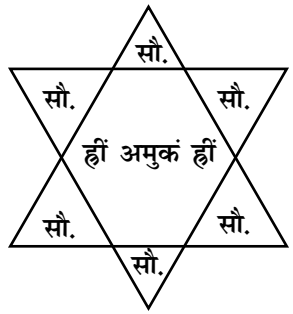

विज्ञानप्रद 'सिद्ध बीसा यन्त्र'-

प्रयोगविधि - निम्न बीसा यन्त्र को सूर्यग्रहण, चन्द्रग्रहण, पूर्णमाशी के दिन गुरुवारी जब आये अथवा दीपावली की रात्रि को इस यन्त्र को भोजपत्र पर केशर अथवा अष्टगन्ध की स्याही से सोने की निब अथवा चमेली की कलम से एक अंक के क्रमानुसार 09 तक यन्त्रानुसार लिखें। तत्पश्चात् विधि पूर्वक यन्त्र का पूजन करें। रूद्राक्ष की माला से नौ दिन में 27000 नवार्ण मन्त्र का जप करें और यथाशक्ति यन्त्र में भरकर लाल धागे में पिरोकर धारण करने पर ज्योतिष, तन्त्र, ज्ञान-विज्ञान प्रदादि समस्त सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं।

नवार्ण मन्त्र - **"ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे।"**

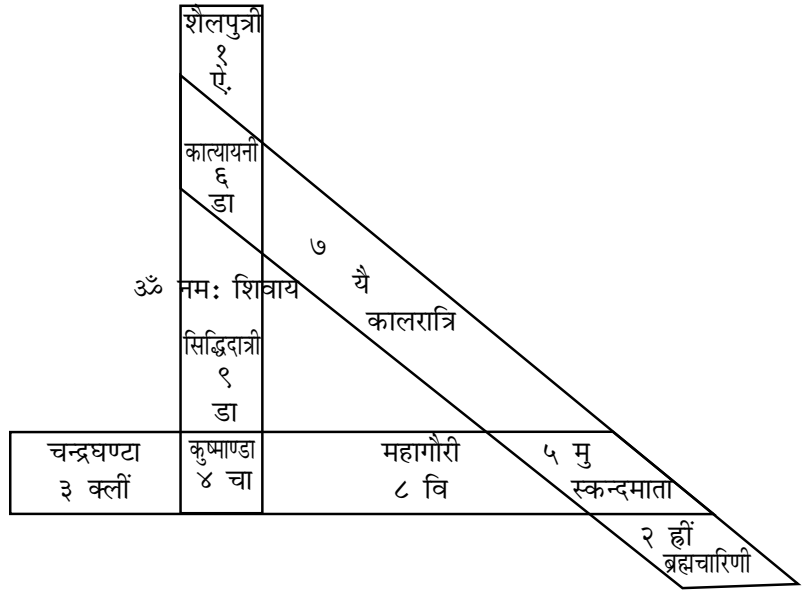

कन्या का शीघ्र विवाह हेतु मन्त्र प्रयोग -

जिस कन्या का अशुभ ग्रहों के कारण अथवा आर्थिक संकट के कारण विवाह नहीं हो पा रहा हो उसको भगवान शंकर एवं पार्वती का चित्र सामने रख कर नित्य प्रति पूजन करें गमले में केले के पौधे को रोपकर उसमें 11 बार कलावा लपेट दें और उसकी पूजा करें। निम्न मन्त्र की तीन माला जाप करें। जाप के अनन्तर केले के पौधे की बारह बार प्रदक्षिणा करें ऐसा करने पर निश्चित रूप से विवाह होगा।

मन्त्र - **ॐ शं शंकराय सकलजन्मार्जित पापविध्वंसनाय पुरुषार्थ चतुष्टयलाभाय च पति मे देहि कुरु-कुरु स्वाहा ।**

मुकदमे में विजय हेतु मन्त्र -

निम्न मन्त्र को दीपावली, ग्रहण के दिन यह सर्वसिद्धि योग में सिद्ध करके 21 बार विवाह के समय मन में स्मरण करें। तो व्यक्ति विवाद, शास्त्रार्थ, मुकदमा, प्रतियोगी परीक्षा जीत कर ही आयेगा और इसी के साथ नीचे दिये गये यन्त्र को चाँदी के पत्ते पर या भोजपत्र पर, रविपुष्य, गुरुपुष्य, सायन संक्रान्ति, दीपावली की रात्रि, विजयदशमी या ग्रहण के दिन खुदवाकर प्रतिष्ठित स्थान पर स्थापित करें तो कोर्ट-कचहरी आदि विषयों में विजय होने की प्रबल संभावना रहती है।

मन्त्र -

ॐ नीली-नीली, महानीली (शत्रु-पक्ष/जज का नाम) जीभि तालू सर्वखिली सही खिलो तत्क्षणाय स्वाहा।

592	599	2	7
6	3	596	595
598	593	8	1
4	5	594	597

- डॉ. रत्नलाल
सहाचार्य-ज्योतिष विभाग

हवन में अग्निवास विचार

सैका तिथिर्वारयुताकृताप्ता शेषे गुणेऽभ्रे भुवि वह्निवासः।
सौख्याय होमे शशियुग्मशेषे प्राणार्थनाशौ दिवि भूतले च ॥

जिस दिन हवन करना हो उस दिन की तिथि और वार की संख्या को जोड़ कर १ जमा करें। फिर जोड़ को 4 द्वारा भाग दें। यदि शेष ० या ३ हो तो भूमि पर अग्नि का वास है। शेष १,२ बचें तो क्रमशः स्वर्ग व पाताल में वास है, जो क्रमशः प्राण व धन नाशक है। हवन में अग्नि का वास पृथ्वी पर होना सुख प्रद है। तिथि गणना शुक्ल प्रतिपदा से तथा वार गणना रविवार से करनी चाहिए।

हवन में ग्रह मुख विचार

सूर्यभात् त्रित्रिभे चान्द्रे सूर्यविच्छुक्रपंगवः ।
चन्द्रारेज्यागुशिखिनो नेष्टा होमाहुतिः खले॥

सूर्य के नक्षत्र से चन्द्र नक्षत्र तक गिने। ३-३ नक्षत्रों के समूह में क्रमशः सूर्य, बुध, शुक्र, शनि चन्द्र, मंगल गुह राहु , केतु इन ग्रहों के मुख में आहुति होती है। शुभ ग्रह के मुख में आहुति शुभ व पापग्रह के मुख में आहुति होने से अशुभ होता है-

होमाहुति चक्र

ग्रह	सूर्य	बुध	शुक्र	शनि	चन्द्र	मंगल	गुरु	राहु	केतु
नक्षत्र	३	३	३	३	३	३	३	३	३
फल	अशुभ	शुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	अशुभ

विक्रम संवत् २०८२ के माङ्गलिक मुहूर्तों के लिए काल-शुद्धि

कालशुद्धि

सामान्यतया गुरु एवं शुक्र के अस्तकाल, श्राद्धपक्ष, भीष्मपञ्चक, होलिकाष्टक, पौषमास व चैत्रमास तथा अधिकमास में विवाहादि संस्कारों एवं अन्य माङ्गलिक कार्य के लिए वर्जित काल माना गया है। उपनयन संस्कार चैत्रमास में भी किया जाता है तथा पुरातन गृहप्रवेश गुरु-शुक्र के अस्तकाल में भी किया जा सकता है। इस वर्ष वि.सं. २०८२ के माङ्गलिक मुहूर्तों के सन्दर्भ में कालशुद्धि का विवरण निम्न है।

१. गुरु अस्त

विक्रम संवत् २०८२ ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा बुधवार से आषाढ़ शुक्ल ११ रविवार तदनुसार ११ जून २०२५ से ६ जुलाई २०२५ तक गुर्वस्त रहेगा। गुर्वस्त से ३ दिन पूर्व में वृद्धावस्था तथा उदय के ३ दिन बाद बाल्यावस्था का समय माङ्गलिक कार्यों में वर्जित है।

२. शुक्र अस्त

इस वर्ष पौष कृष्ण पक्ष ९ शनिवार से माघ शुक्ल पक्ष १४ शनिवार तदनुसार १३ दिसम्बर से ३१ जनवरी २०२६ तक शुक्रास्त रहेगा। उदय अस्त से ०३ दिन की वृद्धा व बाल्यावस्था का समय शुभकार्यों में वर्जित है।

३. श्राद्ध पक्ष

विक्रम संवत् २०८२ में श्राद्धपक्ष का समय दिनांक ०७ सितम्बर, २०२५ से २१ सितम्बर, २०२५ तक रहेगा। इस कालावधि में माङ्गलिक कार्य वर्जित हैं।

४. भीष्मपञ्चक

इस वर्ष कार्तिक शुक्ल ११ शनिवार से कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा बुधवार तदनुसार ०१ नवम्बर, २०२५ से ०५ नवम्बर, २०२५ तक भीष्मपञ्चक रहेंगे जो माङ्गलिक कार्यों में त्याज्य हैं।

५. पौष सौर-मास

विक्रम संवत् २०८२ में १५ दिसम्बर २०२५ से १४ जनवरी २०२६ तक (पौष कृष्ण पक्ष ११ शनिवार से माघ कृष्ण ११ बुधवार तक) सौर पौष मास का समय विवाहादि संस्कारों में वर्जित है।

६. होलिकाष्टक

इस वर्ष दिनांक २४ फरवरी, २०२६ से ०३ मार्च २०२६ तक (फाल्गुन शुक्लाष्टमी से फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा तक) होलिकाष्टक के कारण शुभकार्य वर्जित रहेंगे।

७. चैत्र सौर-मास

विक्रम संवत् २०८२ वर्षारम्भ ३० मार्च २०२५ से १२ अप्रैल २०२५ तक तथा दिनांक १४ मार्च, २०२६ से वर्षान्त तक चैत्रमास का समय माङ्गलिक मुहूर्तों के लिए त्याज्य रहेगा।

विवाह मुहूर्त्त विक्रम संवत् २०८२

१४ अप्रैल से १४ मई २०२५ तक वैशाख सौर मास

दिनाङ्क	मास-पक्ष-तिथि	वार	नक्षत्र	विवाह लग्न में त्रिबल शुद्धि हेतु			लत्तादि दस दोषों का विवरण	रेखा योग	लग्न एवं पूजादि विवरण
				गुरुराशि	सूर्यराशि	चन्द्रराशि			
१४.०४.२०२५	वैशाख कृष्ण १/२	सोम	स्वाती	वृष	मेष	तुला	। । । ० ० । ० ० । ।	६	दि. ल. २ च.दान २, ३, ५, ९, (२४/१२ तक)
१६.०४.२०२५	वैशाख कृष्ण ०३	बुध	अनुराधा	वृष	मेष	वृश्चिक	। ० । । । ० ० । । ।	७	दि. ल. ५, गोधूलि, ९, ११
१८.०४.२०२५	वैशाख कृष्ण ०५	शुक्र	मूल	वृष	मेष	धनु	। । । । । ० ० ० । ।	७	दि. ल. ५, गोधूलि, ११
१९.०४.२०२५	वैशाख कृष्ण ०६	शनि	मूल	वृष	मेष	धनु	। । । । । ० ० ० । ०	६	दि. ल. २, च. दान
२०.०४.२०२५	वैशाख कृष्ण ०७	रवि	उ.षा.	वृष	मेष	ध./म.	० । । ० । ० ० ० । ।	५	दि. ल. ५, गोधूलि, ९ च. दान, ११
२१.०४.२०२५	वैशाख कृष्ण ०८	सोम	उ.षा.	वृष	मेष	मकर	० । । ० । । ० ० । ।	६	दि. ल. २, ३, च. दान
२१.०४.२०२५	वैशाख कृष्ण ०८	सोम	श्रावण*	वृष	मेष	मकर	। ० । । । । ० ० । ।	६	दि. ल. ५, च. दान, गोधूलि, ९, ११
२२.०४.२०२५	वैशाख कृष्ण ०९	भौम	श्रावण*	वृष	मेष	मकर	। ० । । ० ० ० ० । ।	५	दि. ल. २, ३, च. दान
२२.०४.२०२५	वैशाख कृष्ण ०९	भौम	धनिष्ठा*	वृष	मेष	म./कु.	। । । । ० ० । ० । ।	६	दि. ल. ५, च. दान, गोधूलि, ९, गु. दान, ११
२५.०४.२०२५	वैशाख कृष्ण १२	शुक्र	उ.भा.	वृष	मेष	मीन	। । ० । ० ० ० । । ।	६	दि. ल. २ (८/५३ से) ३, ५ च. दान, ९, ११
२९.०४.२०२५	वैशाख शुक्ल ०२	भौम	रोहिणी	वृष	मेष	वृष	। । । । । ० ० । । ।	८	ल. ११
३०.०४.२०२५	वैशाख शुक्ल ०३	बुध	रोहिणी	वृष	मेष	वृष	। । । । । ० ० । । ।	८	दि. ल. २, ३, ५
०१.०५.२०२५	वैशाख शुक्ल ०४	गुरु	मृगशीर्ष	वृष	मेष	मिथुन	। । । । । ० । । । ।	९	दि. ल. ५ (१४/२१ तक)
०५.०५.२०२५	वैशाख शुक्ल ०८	सोम	मघा	वृष	मेष	सिंह	० । । । । । ० । । ।	८	ल. गोधूलि, ९ गु. दान
०६.०५.२०२५	वैशाख शुक्ल ०९	भौम	मघा	वृष	मेष	सिंह	० । । । । ० ० । ० ।	६	दि. ल. २, ३
०७.०५.२०२५	वैशाख शुक्ल १०	बुध	उ.फा.	वृष	मेष	सिं./क.	। । । । ० । ० । ० ।	७	ल. गोधूलि, ९ (२३/२२ तक)
०८.०५.२०२५	वैशाख शुक्ल ११	गुरु	उ.फा.	वृष	मेष	कन्या	। । । । ० । ० । । ।	८	दि. ल. ५, गोधूलि
११.०५.२०२५	वैशाख शुक्ल १५	रवि	स्वाती	वृष	मेष	तुला	। ० । । ० ० ० । । ।	६	दि. ल. २, च. दान, ३, ५

नोटः– लत्तादि दस दोषों का क्रमशः उल्लेख किया गया है दोष को शून्य (०) तथा दोषरहित को रेखा (।) द्वारा सूचित किया गया है।

***ताराङ्कित अश्विनी, चित्रा, श्रवण व धनिष्ठा कात्यायनोक्त नक्षत्रों में विवाह मुहूर्त्त दिये गये हैं।**

विवाह मुहूर्त्त विक्रम संवत् २०८२

१५ मई से १४ जून २०२५ तक ज्येष्ठ सौर मास

दिनाङ्क	मास-पक्ष-तिथि	वार	नक्षत्र	विवाह लग्न में त्रिबल शुद्धि हेतु			लत्तादि दस दोषों का विवरण	रेखा योग	लग्न एवं पूजादि विवरण
				गुरुराशि	सूर्यराशि	चन्द्रराशि			
१७.०५.२०२५	ज्येष्ठ कृष्ण ०५	शनि	उ.षा.	मिथुन	वृष	ध./म.	। । । ० । ० ० ० । ।	६	गोधूलि, ११, १
१८.०५.२०२५	ज्येष्ठ कृष्ण ५/६	रवि	उ.षा.	मिथुन	वृष	मकर	। । । ० । । ० ० । ।	७	दि. ल. २, ३, च. दान, ५
१८.०५.२०२५	ज्येष्ठ कृष्ण ०६	रवि	श्रवण*	मिथुन	वृष	मकर	। । । । । । ० । ० ।	८	ल. गोधूलि, ११, १
१९.०५.२०२५	ज्येष्ठ कृष्ण ०६	सोम	श्रवण*	मिथुन	वृष	मकर	। । । । । ० ० । ० ।	७	ल. गोधूलि
१९.०५.२०२५	ज्येष्ठ कृष्ण ०६	सोम	धनिष्ठा*	मिथुन	वृष	मकर	० । । । ० ० । ० ० ।	५	ल. ११, १
२०.०५.२०२५	ज्येष्ठ कृष्ण ०८	भौम	धनिष्ठा*	मिथुन	वृष	कुम्भ	० । । । ० । । ० । ।	७	दि. ल. २, ३, गोधूलि
२४.०५.२०२५	ज्येष्ठ कृष्ण १२	शनि	अश्विनी*	मिथुन	वृष	मेष	। । । । । । ० । । ।	९	ल. ११, १
२५.०५.२०२५	ज्येष्ठ कृष्ण १३	रवि	अश्विनी*	मिथुन	वृष	मेष	। । । । । । ० । । ।	९	दि. ल. २, ३
२८.०५.२०२५	ज्येष्ठ शुक्ल ०१	बुध	मृगशीर्ष	मिथुन	वृष	वृ./मि.	। । ० । । । । । । ।	९	दि. ल. २, ३, ४ मं. दान, ५
०१.०६.२०२५	ज्येष्ठ शुक्ल ०६	रवि	मघा	मिथुन	वृष	सिंह	० । । । । ० ० ० । ।	६	ल. १२, च. दान, १
०२.०६.२०२५	ज्येष्ठ शुक्ल ०७	सोम	मघा	मिथुन	वृष	सिंह	० । । । । । ० ० । ।	७	दि. ल. २, ३, ४ मं. दान, गोधूलि
०४.०६.२०२५	ज्येष्ठ शुक्ल ०९	बुध	उ.फा.	मिथुन	वृष	कन्या	। । । । ० ० ० । । ।	७	ल. गोधूलि
०७.०६.२०२५	ज्येष्ठ शुक्ल १२	शनि	स्वाति	मिथुन	वृष	तुला	० । । । ० ० । । । ।	७	दि. ल. ४, १०, १२ च. दान
०८.०६.२०२५	ज्येष्ठ शुक्ल१२/१३	रवि	स्वाति	मिथुन	वृष	तुला	। । । । ० । । । । ।	९	दि. ल. ३, ४

नोटः– लत्तादि दस दोषों का क्रमशः उल्लेख किया गया है दोष को शून्य (०) तथा दोषरहित को रेखा (।) द्वारा सूचित किया गया है।

***ताराङ्कित अश्विनी, चित्रा, श्रवण व धनिष्ठा कात्यायनोक्त नक्षत्रों में विवाह मुहूर्त्त दिये गये हैं।**

विवाह मुहूर्त्त विक्रम संवत् २०८२

१५ जून से १५ जुलाई २०२५ तक आषाढ़ सौर मास (केवल हि.प्र., पञ्जाब एवं जम्मू काश्मीर)

दिनाङ्क	मास-पक्ष-तिथि	वार	नक्षत्र	विवाह लग्न में त्रिबल शुद्धि हेतु			लत्तादि दस दोषों का विवरण	रेखा योग	लग्न एवं पूजादि विवरण
				गुरुराशि	सूर्यराशि	चन्द्रराशि			
११.०७.२०२५	श्रावण कृष्ण ०१	शुक्र	उ.षा.	मिथुन	मिथुन	ध./म.	। ० । । ० । ० ० । ।	६	दि. ल. ७, शु. दान, गोधूलि, १२, १२
१२.०७.२०२५	श्रावण कृष्ण ०२	शनि	उ.षा.	मिथुन	मिथुन	मकर	। ० । । ० । ० ० । ।	६	दि. ल. ३ (६/३६ तक) च. दान
१२.०७.२०२५	श्रावण कृष्ण ०२	शनि	श्रवण*	मिथुन	मिथुन	मकर	। । । । । ० ० । । ।	८	दि. ल. ७, गोधूलि १२, १, २
१३.०७.२०२५	श्रावण कृष्ण ०३	रवि	श्रवण*	मिथुन	मिथुन	मकर	। । । । । ० ० । । ।	८	दि. ल. ३, च. दान
१३.०७.२०२५	श्रावण कृष्ण ०३	रवि	धनिष्ठा*	मिथुन	मिथुन	म./कु.	। । । । । ० । । । ।	९	दि. ल. ७, (१३/२७ तक) १ (२५/०३ से) २
१४.०७.२०२५	श्रावण कृष्ण ०४	सोम	धनिष्ठा*	मिथुन	मिथुन	कुम्भ	। । । । । । । । । ।	१०	दि. ल. ३, ४ (६/४९ तक)
१६ जुलाई से १६ अगस्त २०२५ तक श्रावण सौर मास									
२०.०७.२०२५	श्रावण कृष्ण १०	रवि	रोहिणी	मिथुन	कर्क	वृष	। । । । । । ० ० । ।	८	ल. १२, श. दान (२२/५३ से) १, २, ३
२१.०७.२०२५	श्रावण कृष्ण ११	सोम	रोहिणी	मिथुन	कर्क	वृष	। । । । । ० ० ० । ।	७	दि. ल. ४, गोधूलि
२१.०७.२०२५	श्रावण कृष्ण ११	सोम	मृगशीर्ष	मिथुन	कर्क	वृष	। । ० । । ० । ० । ।	७	ल. १२ श. दान, १, २, ३
२६.०७.२०२५	श्रावण शुक्ल ०२	शनि	मघा	मिथुन	कर्क	सिंह	। ० । । । ० ० । । ।	७	ल. १, २, ३ (२७/१५ तक)
३१.०७.२०२५	श्रावण शुक्ल ०७	गुरु	स्वाति	मिथुन	कर्क	तुला	। ० । । । । । ० । ।	८	ल. २, च. दान, ३
०१.०८.२०२५	श्रावण शुक्ल ०८	शुक्र	स्वाति	मिथुन	कर्क	तुला	। ० । । । ० । ० । ।	७	ल. २ च. दान ३, (२७/४०) तक
०३.०८.२०२५	श्रावण शुक्ल९/१०	रवि	अनुराधा	मिथुन	कर्क	वृश्चिक	। । । । । ० ० । ० ।	७	दि. ल. ७ गोधूलि, ३ च. दान
०४.०८.२०२५	श्रावण शुक्ल १०	सोम	अनुराधा	मिथुन	कर्क	वृश्चिक	। । । । । । ० । ० ।	८	दि. ल. ४
०७.०८.२०२५	श्रावण शुक्ल १३	गुरु	उ. षा.	मिथुन	कर्क	ध./म.	। । । । । । ० । । ।	९	दि. ल. ८, गोधूलि १, २ च. दान
०८.०८.२०२५	श्रावण शुक्ल १४	शुक्र	उ. षा.	मिथुन	कर्क	मकर	। । । । । । ० । । ।	९	दि. ल. ४, च. दान, ७ (१४/१२ तक)

नोटः– लत्तादि दस दोषों का क्रमशः उल्लेख किया गया है दोष को शून्य (०) तथा दोषरहित को रेखा (।) द्वारा सूचित किया गया है।

***ताराङ्कित अश्विनी, चित्रा, श्रवण व धनिष्ठा कात्यायनोक्त नक्षत्रों में विवाह मुहूर्त्त दिये गये हैं।**

विवाह मुहूर्त्त विक्रम संवत् २०८२

१६ जुलाई से १६ अगस्त २०२५ तक श्रावण सौर मास (केवल हि.प्र., पञ्जाब एवं जम्मू काश्मीर)

दिनाङ्क	मास-पक्ष-तिथि	वार	नक्षत्र	विवाह लग्न में त्रिबल शुद्धि हेतु			लत्तादि दस दोषों का विवरण	रेखा योग	लग्न एवं पूजादि विवरण
				गुरुराशि	सूर्यराशि	चन्द्रराशि			
०९.०८.२०२५	श्रावण शुक्ल १५	शनि	श्रवण*	मिथुन	कर्क	मकर	। । । । ० ० ० । ।	६	दि. ल. ७, ८ (१४/२३ तक)
०९.०८.२०२५	श्रावण शुक्ल १५	शनि	धनिष्ठा*	मिथुन	कर्क	म./कुं.	। । । । ० ० । ० । ।	७	दि. ल. ८, (१४/२३ से), १, २, ३ च. दान
१०.०८.२०२५	भाद्रपद कृष्ण ०१	रवि	धनिष्ठा*	मिथुन	कर्क	कुम्भ	। । । । ० । । ० । ।	८	दि. ल. ७, ८ (१३/५२ तक)
१६ अगस्त से १६ सितम्बर २०२५ तक भाद्रपद सौर मास (केवल हि.प्र. आदि)									
१७.०८.२०२५	भाद्रपद कृष्ण ०९	रवि	रोहिणी	मिथुन	सिंह	वृष	। । । । । । ० ० । ।	८	दि. ल. ७ च. दान, १, २, च. दान, ३
१७.०८.२०२५	भाद्रपद कृष्ण ०९	रवि	मार्गशीर्ष	मिथुन	सिंह	वृष	। ० । । । । । ० । ।	८	ल. ४
२४.०८.२०२५	भाद्रपद शुक्ल ०१	रवि	उ.फा.	मिथुन	सिंह	सिंह	। । । । ० । ० । । ।	८	ल. ३ (२/६ से) ४
२५.०८.२०२५	भाद्रपद शुक्ल ०२	सोम	उ.फा.	मिथुन	सिंह	कन्या	। । । । ० ० ० । । ।	७	दि. ल. ७, ८, २, ३, ४ (२७/५० तक)
२८.०८.२०२५	भाद्रपद शुक्ल ०५	गुरु	स्वाति	मिथुन	सिंह	तुला	० । । । । ० । । । ।	८	दि. ल. ७ च. दान, ८, ३, ४
२९.०८.२०२५	भाद्रपद शुक्ल ०६	शुक्र	स्वाति	मिथुन	सिंह	तुला	० । । । । । । । । ।	९	दि. ल. ७ च. दान (११/३८ तक)
३०.०८.२०२५	भाद्रपद शुक्ल ०७	शनि	अनुराधा	मिथुन	सिंह	वृश्चिक	। ० । । । ० । । । ।	८	ल. १ च. दान
३१.०८.२०२५	भाद्रपद शुक्ल ०८	रवि	अनुराधा	मिथुन	सिंह	वृश्चिक	। ० । । । । । । । ।	९	दि. ल. ७ (११/४५ से) ८ च. दान
०१.०९.२०२५	भाद्रपद शुक्ल ०९	सोम	मूल	मिथुन	सिंह	धनु	। । । ० । ० ० । । ।	७	ल. १, २ च. दान, ४ च. दान
०२.०९.२०२५	भाद्रपद शुक्ल १०	भौम	मूल	मिथुन	सिंह	धनु	। । । ० । । ० । । ०	७	दि. ल. ७, ८, १ (२१/५१ तक)
०४.०९.२०२५	भाद्रपद शुक्ल १२	गुरु	उ.षा.	मिथुन	सिंह	मकर	। । । । ० ० ० । । ।	७	दि. ल. ७, ८, १, २ (२३/४३ तक)
०४.०९.२०२५	भाद्रपद शुक्ल १२	गुरु	श्रवण*	मिथुन	सिंह	मकर	० । । ० । । ० । । ।	७	ल. २ (२३/४३ से) ३, च. दान
०५.०९.२०२५	भाद्रपद शुक्ल १३	शुक्र	श्रवण*	मिथुन	सिंह	मकर	० । । ० । । ० । । ।	७	दि. ल. ७, ८

नोटः– लत्तादि दस दोषों का क्रमशः उल्लेख किया गया है दोष को शून्य (०) तथा दोषरहित को रेखा (।) द्वारा सूचित किया गया है।

***ताराङ्कित अश्विनी, चित्रा, श्रवण व धनिष्ठा कात्यायनोक्त नक्षत्रों में विवाह मुहूर्त्त दिये गये हैं।**

विवाह मुहूर्त्त विक्रम संवत् २०८२

१६ सितम्बर से १५ अक्टूबर २०२५ तक आश्विन सौर मास (केवल हि.प्र., पञ्जाब एवं जम्मू काश्मीर)

दिनाङ्क	मास-पक्ष-तिथि	वार	नक्षत्र	विवाह लग्न में त्रिबल शुद्धि हेतु			लत्तादि दस दोषों का विवरण	रेखा योग	लग्न एवं पूजादि विवरण
				गुरुराशि	सूर्यराशि	चन्द्रराशि			
२६.०९.२०२५	आश्विन शुक्ल ०४	शुक्र	अनुराधा	मिथुन	कन्या	वृश्चिक	०।।।।।।।।।।	९	ल. ३, च. दान, ४
२९.०९.२०२५	आश्विन शुक्ल ०७	सोम	मूल	मिथुन	कन्या	धनु	।।।०।।००।।	७	दि. ल. ८
०१.१०.२०२५	आश्विन शुक्ल ०९	बुध	उ.षा.	मिथुन	कन्या	ध./म.	।।।।०।०।।।	८	दि. ल. ८, २ च. दान, ४ च. दान
०२.१०.२०२५	आश्विन शुक्ल १०	गुरु	उ.षा.	मिथुन	कन्या	मकर	।।।।०००।।।	७	दि. ल. ७ मं दान (९/३३ तक)
०२.१०.२०२५	आश्विन शुक्ल १०	गुरु	श्रवण*	मिथुन	कन्या	मकर	।।।।।०००।।	७	दि. ल. ८, २, ३ च. दान
०३.१०.२०२५	आश्विन शुक्ल ११	शुक्र	श्रवण*	मिथुन	कन्या	म./कु.	।।।।।।००।।	८	दि. ल. ७ मं. दान (९/३४ तक)
०३.१०.२०२५	आश्विन शुक्ल ११	शुक्र	धनिष्ठा*	मिथुन	कन्या	म./कु.	।।।।।।।।।।	१०	दि. ल. ८, २, ३ च.
०७.१०.२०२५	आश्विन शुक्ल १५	भौम	रेवती	मिथुन	कन्या	मीन	।।।०००।०।।	६	दि. ल., १०, २, ३, ४ (२५/२७ तक)
०८.१०.२०२५	कार्तिक कृष्ण ०२	बुध	अश्विनी*	मिथुन	कन्या	मेष	।।।।।।०।।।	९	दि. ल. ८, १०, २, ३, (२२/४४ तक)
१०.१०.२०२५	कार्तिक कृष्ण ०४	शुक्र	रोहिणी	मिथुन	कन्या	वृष	।।।।।।।०।।	९	ल. २ च. दान, ३, ४
११.१०.२०२५	कार्तिक कृष्ण ०५	शनि	रोहिणी	मिथुन	कन्या	वृष	।।।।।।।०।।	९	दि. ल. ७, मं. च. दान, १० (१५/१९ तक)
११.१०.२०२५	कार्तिक कृष्ण ०५	शनि	मृगशीर्ष	मिथुन	कन्या	वृ./मी.	०।।।।०।०।।	७	ल. २ च. दान, ३, ४
१२.१०.२०२५	कार्तिक कृष्ण ०६	रवि	मृगशीर्ष	मिथुन	कन्या	मिथुन	०।।।।०।०।।	७	दि. ल. ८ च. दान, ४ (च. शु. दान)

१६ अक्टूबर से १५ नवम्बर २०२५ तक कार्तिक सौर मास (केवल हि.प्र., पञ्जाब एवं जम्मू काश्मीर)

२०.१०.२०२५	कार्तिक कृष्ण १४	सोम	हस्त	कर्क	तुला	कन्या	।।०।।०।।।।	८	दि. ल. ८, ९, २, ३, ४
२२.१०.२०२५	कार्तिक शुक्ल ०१	बुध	स्वाति	कर्क	तुला	तुला	।।।।।०।।।।	९	दि. ल. ९, २, च. दान, ३, ४

नोटः– लत्तादि दस दोषों का क्रमशः उल्लेख किया गया है दोष को शून्य (०) तथा दोषरहित को रेखा (।) द्वारा सूचित किया गया है।

***ताराङ्कित अश्विनी, चित्रा, श्रवण व धनिष्ठा कात्यायनोक्त नक्षत्रों में विवाह मुहूर्त्त दिये गये हैं।**

विवाह मुहूर्त्त विक्रम संवत् २०८२

१६ अक्टूबर से १५ नवम्बर २०२५ तक कार्तिक सौर मास (केवल हि.प्र., पञ्जाब एवं जम्मू काश्मीर)

दिनाङ्क	मास-पक्ष-तिथि	वार	नक्षत्र	विवाह लग्न में त्रिबल शुद्धि हेतु			लत्तादि दस दोषों का विवरण	रेखा योग	लग्न एवं पूजादि विवरण
				गुरुराशि	सूर्यराशि	चन्द्रराशि			
२४.१०.२०२५	कार्तिक शुक्ल ०३	शुक्र	अनुराधा	कर्क	तुला	वृश्चिक	। । । । । । ० । । ।	९	दि. ल. ७, म. दान, ९,३ च. दान ४
२६.१०.२०२५	कार्तिक शुक्ल ०५	रवि	मूल	कर्क	तुला	धनु	। । । ० । ० ० ० । ।	६	दि. ल. ९ च. दान (१०/४७ से) ४ च दान
२७.१०.२०२५	कार्तिक शुक्ल ०६	सोम	मूल	कर्क	तुला	धनु	। । । ० । । ० ० । ।	७	दि. ल. ७ सू. मं. दान, ८, ९, च.दान (११/३० तक)
२८.१०.२०२५	कार्तिक शुक्ल ०७	भौम	उ.षा.	कर्क	तुला	ध./म.	। । । । । ० ० ० । ।	७	ल. ४, च. दान
२९.१०.२०२५	कार्तिक शुक्ल ०८	बुध	उ.षा.	कर्क	तुला	मकर	। । । । । ० ० ० । ।	७	दि. ल. ८, मं. दान (९/२३ तक)
३०.१०.२०२५	कार्तिक शुक्ल ०९	गुरु	धनिष्ठा*	कर्क	तुला	मकर	। ० । । । ० । । । ।	८	ल. ३, बु. च. दान
३१.१०.२०२५	कार्तिक शुक्ल ०९	शुक्र	धनिष्ठा*	कर्क	तुला	म./कु.	। ० । । । ० । । । ।	८	दि. ल. ८ मं. दान, ९
०२.११.२०२५	कार्तिक शुक्ल ११/१२	रवि	उ.भा.	कर्क	तुला	मीन	० । । । । । ० । । ।	८	ल. ३, बु. दान, ४
०३.११.२०२५	कार्तिक शुक्ल १३	सोम	उ.भा.	कर्क	तुला	मीन	० । । । । । ० । । ।	८	दि. ल. ७, सू. दान, ८ मं. दान, ९
०३.११.२०२५	कार्तिक शुक्ल १३	सोम	रेवती	कर्क	तुला	मीन	। ० । । । ० । । । ।	८	ल. ३, बु. दान ४
०४.११.२०२५	कार्तिक शुक्ल १४	भौम	रेवती	कर्क	तुला	मीन	। ० । । । । । । । ।	९	दि. ल. ८ च. दान. ९
०४.११.२०२५	कार्तिक शुक्ल १४	भौम	अश्विनी*	कर्क	तुला	मेष	। । । ० ० । ० ० । ।	६	दि. ल. १२ श. दान, ३
०७.११.२०२५	मार्गशीर्ष कृष्ण ०२	शुक्र	रोहिणी	कर्क	तुला	वृष	। । । । ० ० ० । । ।	७	दि. ल. ९, च. दान, १२ श. दान, ३ (२१/१६ तक)
०८.११.२०२५	मार्गशीर्ष कृष्ण ३/४	शनि	मृगशीर्ष	कर्क	तुला	वृ./मी.	० । । । । । । । । ।	९	दि. ल. ९, च. दान, १२ श. दान, ३ च. दान
१२.११.२०२५	मार्गशीर्ष कृष्ण ०८	बुध	मघा	कर्क	तुला	सिंह	। । । । । ० । । । ।	९	ल. ३, ४
१३.११.२०२५	मार्गशीर्ष कृष्ण ०८	गुरु	मघा	कर्क	तुला	सिंह	। । । । । ० । । । ।	९	दि. ल. ७ सू. दान, ८ मं. दान, ९

नोटः– लत्तादि दस दोषों का क्रमशः उल्लेख किया गया है दोष को शून्य (०) तथा दोषरहित को रेखा (।) द्वारा सूचित किया गया है।

***ताराङ्कित अश्विनी, चित्रा, श्रवण व धनिष्ठा कात्यायनोक्त नक्षत्रों में विवाह मुहूर्त्त दिये गये हैं।**

विवाह मुहूर्त्त विक्रम संवत् २०८२

१६ नवम्बर से १५ दिसम्बर २०२५ तक मार्गशीर्ष सौर मास

दिनाङ्क	मास-पक्ष-तिथि	वार	नक्षत्र	विवाह लग्न में त्रिबल शुद्धि हेतु			लत्तादि दस दोषों का विवरण	रेखा योग	लग्न एवं पूजादि विवरण
				गुरुराशि	सूर्यराशि	चन्द्रराशि			
२२.११.२०२५	मार्गशीर्ष शुक्ल०३	शनि	मूल	कर्क	वृश्चिक	धनु	। । । ० । ० ० । । ।	७	ल. ४, च. दान, ७
२३.११.२०२५	मार्गशीर्ष शुक्ल०३	रवि	मूल	कर्क	वृश्चिक	धनु	। । । ० । । । ० । ।	८	दि. ल. ८, सू. मं. दान, ९ च. दान, १२ श. दान
२४.११.२०२५	मार्गशीर्ष शुक्ल०४	सोम	उ.षा.	कर्क	वृश्चिक	ध./म.	। ० । । ० ० ० । । ।	६	ल. ४, च. दान ७
२५.११.२०२५	मार्गशीर्ष शुक्ल०५	भौम	उ.षा.	कर्क	वृश्चिक	मकर	। ० । । ० । ० । । ।	७	दि. ल. ८, सू. मं दान, ९, १२ श. दान
२५.११.२०२५	मार्गशीर्ष शुक्ल०५	भौम	श्रवण*	कर्क	वृश्चिक	मकर	। । । । । । ० । । ।	९	ल. ७
२६.११.२०२५	मार्गशीर्ष शुक्ल०६	बुध	श्रवण*	कर्क	वृश्चिक	मकर	। । । । । । ० । । ।	९	दि. ल. ८ सू. मं. दान (८:०० बजे से मृत्युबाण)
२७.११.२०२५	मार्गशीर्ष शुक्ल ७	गुरु	धनिष्ठा*	कर्क	वृश्चिक	कुम्भ	। । । । । ० । ० । ।	८	दि. ल. ९, १२ श. दान, ३ च. दान
३०.११.२०२५	मार्गशीर्ष शुक्ल १०	रवि	उ.भा.	कर्क	वृश्चिक	मीन	। । । । । । ० ० । ।	८	दि. ल. ८, सू. मं. दान, ९, १२ श. च. दान, ३, ४
३०.११.२०२५	मार्गशीर्ष शुक्ल १०	रवि	रेवती	कर्क	वृश्चिक	मीन	। । । । । । । । । ०	९	ल. ७ च. दान
०१.१२.२०२५	मार्गशीर्ष शुक्ल ११	सोम	रेवती	कर्क	वृश्चिक	मीन	। । । । । ० । । । ।	९	ल. ३, ४
०४.१२.२०२५	मार्गशीर्ष शुक्ल १५	गुरु	रोहिणी	कर्क	वृश्चिक	वृष	। । । । ० । ० ० । ।	७	ल, ३, ४, ७, च. दान
०९.१२.२०२५	पौष कृष्ण ०५	भौम	मघा	कर्क	वृश्चिक	सिंह	० ० । । । । ० । । ।	७	ल. ७
१०.१२.२०२५	पौष कृष्ण ०६	बुध	मघा	कर्क	वृश्चिक	सिंह	० ० । । । । ० । । ।	७	दि. ल. ८, सू. मं. दान, १० च दान

नोटः– लत्तादि दस दोषों का क्रमशः उल्लेख किया गया है दोष को शून्य (०) तथा दोषरहित को रेखा (।) द्वारा सूचित किया गया है।

***ताराङ्कित अश्विनी, चित्रा, श्रवण व धनिष्ठा कात्यायनोक्त नक्षत्रों में विवाह मुहूर्त्त दिये गये हैं।**

विवाह मुहूर्त्त विक्रम संवत् २०८२

१४ जनवरी से १२ फरवरी २०२६ तक माघ सौर मास

दिनाङ्क	मास-पक्ष-तिथि	वार	नक्षत्र	विवाह लग्न में त्रिबल शुद्धि हेतु			लत्तादि दस दोषों का विवरण	रेखा योग	लग्न एवं पूजादि विवरण
				गुरुराशि	सूर्यराशि	चन्द्रराशि			
०४.०२.२०२६	फाल्गुन कृष्ण ०३	बुध	उ.फा.	मिथुन	मकर	सिं./क	०।।।।।।०।।	८	ल. ७, ८, गु. दान
०५.०२.२०२६	फाल्गुन कृष्ण ०४	गुरु	उ.फा.	मिथुन	मकर	कन्या	०।।।।।।०।।	८	दि. ल. १० सू. मं. दान, २, ३
१०.०२.२०२६	फाल्गुन कृष्ण ०८	भौम	अनुराधा	मिथुन	मकर	वृश्चिक	।।।।।।।०।।	९	दि. ल. १२ श. दान, १ च. दान, ३, ७ च. दान

१३ फरवरी से १४ मार्च २०२६ तक फाल्गुन सौर मास

१३.०२.२०२६	फाल्गुन कृष्ण ११	शुक्र	मूल	मिथुन	कुम्भ	धनु	।०।०।।।०।।	७	दि. ल. १, २, च. दान
१५.०२.२०२६	फाल्गुन कृष्ण १३	रवि	उ.षा.	मिथुन	कुम्भ	मकर	।।।।०।।।।।	९	दि. ल. १२ श. दान, १, २, ३, च. दान
२०.०२.२०२६	फाल्गुन शुक्ल ०३	शुक्र	रेवती	मिथुन	कुम्भ	मीन	।।।।।।।।।०	९	ल. ७. च. दान, ८
२१.०२.२०२६	फाल्गुन शुक्ल ०४	शनि	रेवती	मिथुन	कुम्भ	मीन	।।।।।०।।।०	८	दि. ल. १२ श. दान, १ च. दान, २, ३ गोधूली
२१.०२.२०६	फाल्गुन शुक्ल ०४	शनि	अश्विन*	मिथुन	कुम्भ	मेष	।।।।।०।।।०	७	ल. ८, च. दान, १० मं. दान
२२.०२.२०२६	फाल्गुन शुक्ल ०५	रवि	अश्विन*	मिथुन	कुम्भ	मेष	।।।०।।००।।	७	दि. ल. १२ श. दान, १, च. दान, २, ३
०६.०३.२०२६	चैत्र कृष्ण ०३	शुक्र	चित्रा*	मिथुन	कुम्भ	क./तु.	।।।०।।०।।।	८	ल. ७, शु. दान, ८, १० गु. शु. दान
०७.०३.२०२६	चैत्र कृष्ण ०४	शनि	चित्रा*	मिथुन	कुम्भ	तुला	।।।०।००।।०	७	दि. ल. १२, श. च. दान,
०९.०३.२०२६	चैत्र कृष्ण ०६	सोम	अनुराधा	मिथुन	कुम्भ	वृश्चिक	।०।।।०।।।।	८	ल. ७, शु. दान
१२.०३.२०२६	चैत्र कृष्ण ०९	गुरु	मूल	मिथुन	कुम्भ	धनु	।।।०।।।०।।	८	दि. ल. १२, १ श.दान, २ च.दान ७,८, (२४/४३ तक)

नोटः– लत्तादि दस दोषों का क्रमशः उल्लेख किया गया है दोष को शून्य (०) तथा दोषरहित को रेखा (।) द्वारा सूचित किया गया है।

***ताराङ्कित अश्विनी, चित्रा, श्रवण व धनिष्ठा कात्यायनोक्त नक्षत्रों में विवाह मुहूर्त्त दिये गये हैं।**

अशुद्ध विवाह मुहूर्त्त विक्रम संवत् २०८२

दिनाङ्क	मास-पक्ष-तिथि	वार	नक्षत्र	दोष विवरण	दिनाङ्क	मास-पक्ष-तिथि	वार	नक्षत्र	दोष विवरण
०८.०५.२०२५	वैशाख शुक्ल ११	गुरु	हस्त	शनिवेध	२७.०७.२०२५	श्रावण शुक्ल ०३	रवि	मघा	मृत्युबाण
०९.०५.२०२५	वैशाख शुक्ल १२	शुक्र	हस्त	शानिवेध	२८.०७.२०२५	श्रावण शुक्ल ०४	सोम	उ.फा.	भौमयुति
०९.०५.२०२५	वैशाख शुक्ल १२	शुक्र	चित्रा*	राहुवेध	२९.०७.२०२५	श्रावण शुक्ल ०५	भौम	उ.फा.	भौमयुति
१०.०५.२०२५	वैशाख शुक्ल १३	शनि	चित्रा*	राहुवेध	२९.०७.२०२५	श्रावण शुक्ल ०५	भौम	हस्त	शनिवेध
१३.०५.२०२५	ज्येष्ठ कृष्ण ०१	भौम	अनुराधा	मृत्युबाण	३०.०७.२०२५	श्रावण शुक्ल ०६	बुध	हस्त	शनिवेध
१५.०५.२०२५	ज्येष्ठ कृष्ण ०३	गुरु	मूल	मृत्युबाण	३०.०७.२०२५	श्रावण शुक्ल ०६	बुध	चित्रा*	शनिवेध
१६.०५.२०२५	ज्येष्ठ कृष्ण ०४	शुक्र	मूल	मृत्युबाण	३१.०७.२०२५	श्रावण शुक्ल ०७	गुरु	चित्रा*	राहूवेध
२२.०५.२०२५	ज्येष्ठ कृष्ण १०	गुरु	उ.भा.	शनियुति	०५.०८.२०२५	श्रावण शुक्ल ११	भौम	मूल	मृत्युबाण
२३.०५.२०२५	ज्येष्ठ कृष्ण ११	शुक्र	उ.भा.	शनियुति	०६.०८.२०२८	श्रावण शुक्ल १२	बुध	धनु	मृत्युबाण
२३.०५.२०२५	ज्येष्ठ कृष्ण ११	शुक्र	रेवती	केतुवेध	१२.०८.२०२५	भाद्रपद कृष्ण ०३	सोम	उ.भा.	शनियुति
२४.०५.२०२५	ज्येष्ठ कृष्ण १२	शनि	रेवती	केतुवेध	१३.०८.२०२५	भाद्रपद कृष्ण ४/५	बुध	उ.भा.	शनियुति
०३.०६.२०२५	ज्येष्ठ शुक्ल ०८	भौम	उ.फा.	मृत्युबाण	१३.०८.२०२५	भाद्रपद कृष्ण ४/५	बुध	रेवती	भौमवेध
०५.०६.२०२५	ज्येष्ठ शुक्ल १०	गुरु	हस्त	शनिवेध	१४.०८.२०२५	भाद्रपद कृष्ण ०६	गुरु	रेवती	भौमवेध
०६.०६.२०२५	ज्येष्ठ शुक्ल ११	शुक्र	चित्रा*	राहुवेध	१४.०८.२०२५	भाद्रपद कृष्ण ०६	गुरु	अश्विनी*	केतुवेध
०७.०६.२०२५	ज्येष्ठ शुक्ल १२	शनि	चित्रा*	राहुवेध	१८.०८.२०२५	भाद्रपद कृष्ण १०	सोम	मृगशीर्ष	मृत्युबाण
११.०६.२०२५	ज्येष्ठ शुक्ल १५	बुध	मूल	गुरु अस्त दोष	२६.०८.२०२५	भाद्रपद शुक्ल ०३	भौम	हस्त	भौमयुति
१२.०६.२०२५	आषाढ़ कृष्ण ०१	गुरु	मूल	गुरु अस्त दोष	२७.०८.२०५	भाद्रपद शुक्ल ०४	बुध	चित्रा*	मृत्युबाण
०७.०७.२०२५	श्रावण कृष्ण ०७	गुरु	रेवती	मृत्युबाण	२८.०८.२०२५	भाद्रपद शुक्ल ०५	गुरु	चित्रा*	लग्नाभाव
१७.०७.२०२५	श्रावण कृष्ण ०७	गुरु	अश्विनी*	भौमकेतुवेध	०५.०९.२०२५	भाद्रपद शुक्ल १३	शुक्र	धनिष्ठा*	मृत्युबाण
१८.०७.२०२५	श्रावण कृष्ण ०८	शुक्र	अश्विनी*	भौमकेतुवेध	०६.०९.२०२५	भाद्रपद शुक्ल १४	शनि	धनिष्ठा*	मृत्युबाण

अशुद्ध विवाह मुहूर्त्त विक्रम संवत् २०८२

दिनाङ्क	मास-पक्ष-तिथि	वार	नक्षत्र	दोष विवरण	दिनाङ्क	मास-पक्ष-तिथि	वार	नक्षत्र	दोष विवरण
२२.०९.२०२५	आश्विन शुक्ल ०१	सोम	उ.फा.	सूर्ययुति	०१.१२.२०२५	मार्गशीर्ष शुक्ल ११	सोम	अश्विनी*	लग्नाभाव
२३.०९.२०२५	आश्विन शुक्ल ०१	सोम	हस्त	शनिवेध	०२.१२.२०२५	मार्गशीर्ष शुक्ल १२	भौम	अश्विनी*	केतुवेध
२३.०९.२०२५	आश्विन शुक्ल ०२	भौम	हस्त	राहुवेध	०५.१२.२०२५	पौष कृष्ण ०१	शुक्र	रोहिणी	मृत्युबाण
२४.०९.२०२५	आश्विन शुक्ल ०३	बुध	चित्रा*	राहुवेध	०५.१२.२०२५	पौष कृष्ण ०१	शुक्र	मृगशीर्ष	मृत्युबाण
२४.०९.२०२५	आश्विन शुक्ल ०३	बुध	स्वाति	भौमयुति	०६.१२.२०२५	पौष कृष्ण ०२	शनि	मृगशीर्ष	मृत्युबाण
२५.०९.२०२५	आश्विन शुक्ल ०३	गुरु	स्वाति	भौमयुति	०५.०२.२०२६	फाल्गुन कृष्ण ०४	गुरु	हस्त	शनिवेध
२७.०९.२०२५	आश्विन शुक्ल ०५	शनि	अनुराधा	मृत्युबाण	०६.०२.२०२६	फाल्गुन कृष्ण ०५	शुक्र	हस्त	शनिवेध
०६.१०.२०२५	आश्विन शुक्ल १४	सोम	उ.भा.	मृत्युबाण	०६.०२.२०२६	फाल्गुन कृष्ण ०५	शुक्र	चित्रा*	भुजंगपात
१७.१०.२०२५	कार्तिक कृष्ण ११	शुक्र	मघा	तुला संक्रान्ति	०७.०२.२०२६	फाल्गुन कृष्ण ०६	शनि	चित्रा*	भुजंगपात
१८.१०.२०२५	कार्तिक कृष्ण १२	शनि	उ.फा.	मृत्युबाण	०८.०२.२०२६	फाल्गुन कृष्ण ०७	रवि	स्वाति	राहुवेध
१९.१०.२०२५	कार्तिक कृष्ण १३	रवि	उ.फा.	मृत्युबाण	११.०२.२०२६	फाल्गुन कृष्ण ०९	बुध	अनुराधा	मृत्युबाण
३०.१०.२०२५	कार्तिक शुक्ल ०९	गुरु	श्रवण*	भुजंगपात	१४.०२.२०२६	फाल्गुन कृष्ण १२	शनि	उ.षा.	मृत्युबाण
१४.११.२०२५	मार्गशीर्ष कृष्ण १०	शुक्र	उ.फा.	मृत्युबाण	१९.०२.२०२६	फाल्गुन शुक्ल ०२	गुरु	उ.भा.	शनियुति
१५.११.२०२५	मार्गशीर्ष कृष्ण ११	शनि	उ.फा.	मृत्युबाण	२०.०२.२०२६	फाल्गुन शुक्ल ०३	शुक्र	उ.भा.	शनियुति
१५.११.२०२५	मार्गशीर्ष कृष्ण ११	शनि	हस्त	मासान्त	०४.०३.२०२६	चैत्र कृष्ण ०१	बुध	उ.फा.	भुजंगपात
१७.११.२०२५	मार्गशीर्ष कृष्ण १३	सोम	चित्रा*	शनिवेध	०५.०३.२०२६	चैत्र कृष्ण ०२	गुरु	हस्त	शनिवेध
१८.११.२०२५	मार्गशीर्ष कृष्ण १३	भौम	स्वाति	मृत्युबाण	०७.०३.२०२६	चैत्र कृष्ण ०४	शनि	स्वाति	भौमवेध, राहुवेध
२१.११.२०२५	मार्गशीर्ष शुक्ल ०१	शुक्र	अनुराधा	सूर्ययुति	०८.०३.२०२६	चैत्र कृष्ण ०५	रवि	स्वाति	भौमवेध, राहुवेध
२६.११.२०२५	मार्गशीर्ष शुक्ल ०६	बुध	धनिष्ठा*	मृत्युबाण					

द्विरागमन मुहूर्त्त विक्रम सम्वत् २०८२

दिनाङ्क	मास-पक्ष-तिथि	वार	नक्षत्र	लग्न एवं पूजादि विवरण
१४.०४.२०२५	वैशाख कृष्ण ०२	सोम	स्वाति	ल. २, ३
१६.०४.२०२५	वैशाख कृष्ण ०३	बुध	अनुराधा	ल. २, ३
१८.०४.२०२५	वैशाख कृष्ण ०५	शुक्र	मूल	ल. २, च. दान, ३
२१.०४.२०२५	वैशाख कृष्ण ०८	सोम	उ.षा.	ल. २, ३
२३.०४.२०२५	वैशाख कृष्ण १०	बुध	धनिष्ठा	ल. २, ३
२४.०४.२०२५	वैशाख कृष्ण ११	गुरु	शतभिषा	ल. २, ३
२५.०४.२०२५	वैशाख कृष्ण १२	शुक्र	उ.भा.	ल. २, ३
३०.०४.२०२५	वैशाख शुक्ल ०३	बुध	रोहिणी	ल. २, ३
०२.०५.२०२५	वैशाख शुक्ल ०५	शुक्र	पुनर्वसु	दि. ल. विचारणीय
०८.०५.२०२५	वैशाख शुक्ल ११	गुरु	उ.फा.	ल. ६
०९.०५.२०२५	वैशाख शुक्ल १२	शुक्र	हस्त	ल. २, ३ च. के. दान
१२.०५.२०२५	वैशाख शुक्ल १५	सोम	स्वाति	ल. २ (६/१७ तक)
१७.११.२०२५	मार्गशीर्ष कृष्ण १३	सोम	चित्रा	ल. ३, बु. दान
२१.११.२०२५	मार्गशीर्ष शुक्ल ०१	शुक्र	अनुराधा	ल. अभिजीत
२६.११.२०२५	मार्गशीर्ष शुक्ल ०६	बुध	श्रवण	ल. १२ बु. दान, ३ च. दान
२७.११.२०२५	मार्गशीर्ष शुक्ल ०७	गुरु	धनिष्ठा	ल. १२, बु. दान, ३ च.दान
२८.११.२०२५	मार्गशीर्ष शुक्ल ०८	शुक्र	शतभिषा	ल. २, ३
०५.१२.२०२५	पौष कृष्ण ०१	शुक्र	रोहिणी	ल. अभिजीत, १२
१८.०२.२०२५	फाल्गुन शुक्ल ०१	बुध	शतभिषा	ल. अभिजीत, म. दान
२०.०२.२०२६	फाल्गुन शुक्ल ०३	शुक्र	उ.भा.	ल. ३, म.दान

उपनयन मुहूर्त्त विक्रम सम्वत् २०८२

दिनाङ्क	मास-पक्ष-तिथि	वार	नक्षत्र	लग्न एवं पूजादि विवरण
३१.०३.२०२५	चैत्र शुक्ल २/३	सोम	अश्विनी	ल. ४
०२.०४.२०२५	चैत्र शुक्ल ०५	बुध	रोहिणी	ल. २ (८/५० से) ४
०७.०४.२०२५	चैत्र शुक्ल १०	सोम	आर्द्रा	ल. २ के. दान, अभिजित
१४.०४.२०२५	वैशाख कृष्ण ०२	सोम	स्वाति	ल. ३, गु. दान
१६.०४.२०२५	वैशाख कृष्ण ०३	बुध	अनुराधा	ल. २, के. दान, ३ गु. दान
३०.०४.२०२५	वैशाख शुक्ल ०३	बुध	रोहिणी	ल. २, के. दान, ३ गु. दान
०७.०५.२०२५	वैशाख शुक्ल १०	बुध	पू.फा.	ल. २ के. दान, ३ गु. दान
०८.०५.२०२५	वैशाख शुक्ल ११	गुरु	उ.फा.	ल. विचारणीय
०९.०५.२०२५	वैशाख शुक्ल १२	शुक्र	हस्त	ल. ३, गु. दान, अभिजीत
२८.०५.२०२५	ज्येष्ठ शुक्ल ०२	बुध	मृगशीर्ष	ल. २ के. सू. दान
२९.०५.२०२५	ज्येष्ठ शुक्ल ०३	गुरु	आर्द्रा	ल. ३ बु. दान
०५.०६.२०२५	ज्येष्ठ शुक्ल १०	गुरु	हस्त	ल. २ सू. दान, ३ बु.दान
०६.०६.२०२५	ज्येष्ठ शुक्ल ११	शुक्र	चित्रा	ल. ३ बु. दान
०८.०६.२०२५	ज्येष्ठ शुक्ल १२	रवि	स्वाति	ल. ३
०४.०२.२०२६	फाल्गुन कृष्ण ०३	बुध	पू.फा.	ल. २, अभि.(१२/२० तक)
०६.०२.२०२६	फाल्गुन कृष्ण ०५	शुक्र	हस्त	ल. २
१९.०२.२०२५	फाल्गुन शुक्ल ०२	गुरु	पू.फा.	ल. २
२०.०२.२०२६	फाल्गुन शुक्ल ०३	शुक्र	उ.भा.	ल. २
२२.०२.२०२६	फाल्गुन शुक्ल ०५	रवि	अश्विन	ल. २, च. दान, अभिजीत
०४.०३.२०२६	चैत्र कृष्ण ०२	बुध	उ.फा.	ल. २
०५.०३.२०२६	चैत्र कृष्ण ०३	गुरु	उ.फा./ह	ल. २
०८.०३.२०२६	चैत्र कृष्ण ०५	रवि	स्वाति	ल. ३

चूड़ाकर्म मुहूर्त्त विक्रम सम्वत् २०८२

दिनाङ्क	मास-पक्ष-तिथि	वार	नक्षत्र	लग्न एवं पूजादि विवरण
१४.०४.२०२५	वैशाखा कृष्ण ०२	सोम	स्वाति	ल. २ (८/२५ से) ३
१८.०४.२०२५	वैशाखा कृष्ण ०५	शुक्र	ज्येष्ठ	ल. २, ३ (८/२९ तक)
२३.०४.२०२५	वैशाखा कृष्ण १०	बुध	धनिष्ठा	ल. २, ३
२४.०४.२०२५	वैशाखा कृष्ण ११	गुरु	शतभिषा	ल. २, ३
०१.०५.२०२५	वैशाखा शुक्ल ०५	गुरु	मृगशीर्ष	ल. अभिजित
०६.०२.२०२६	फाल्गुन कृष्ण ०५	शुक्र	हस्त	ल. १२ अभिजित
१२.०२.२०२६	फाल्गुन कृष्ण १०	गुरु	ज्येष्ठ	ल. २
०५.०३.२०२६	चैत्र कृष्ण ०२	गुरु	हस्त	ल. २

सर्वदेव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त विक्रम सम्वत् २०८२

१४.०४.२०२५	वैशाख कृष्ण ०२	सोम	स्वाति	ल. ३
१६.०४.२०२५	वैशाख कृष्ण ०३	बुध	अनुराधा	ल. २ के. दान
१८.०४.२०२५	वैशाख कृष्ण ०५	शुक्र	मूल	ल. ३
२८.०४.२०२५	वैशाख शुक्ल ०१	सोम	भरणी	ल. ३
३०.०४.२०२५	वैशाख शुक्ल ०३	बुध	रोहिणी	ल. २, के. दान
०८.०५.२०२५	वैशाख शुक्ल ११	गुरु	उ.फा.	लग्नाभाव
०९.०५.२०२५	वैशाख शुक्ल १२	शुक्र	हस्त	ल. २ के. दान, ३
२८.०५.२०२५	ज्येष्ठ शुक्ल ०१	बुध	मृगशीर्ष	ल. २ के. दान
०५.०६.२०२५	ज्येष्ठ शुक्ल १०	गुरु	हस्त	ल. २, ३
०६.०६.२०२६	ज्येष्ठ शुक्ल ११	शुक्र	हस्त	ल. २, ३
०६.०२.२०२६	फाल्गुन कृष्ण ०५	शुक्र	हस्त	ल. १२, अभिजित
२०.०२.२०२६	फाल्गुन शुक्ल ०३	शुक्र	उ.भा.	ल. २ मं. दान
२३.०२.२०२६	फाल्गुन शुक्ल ०७	सोम	भरणी	ल. २, च. दान
०४.०३.२०२६	चैत्र कृष्ण ०१	बुध	उ.फा.	ल. २
०५.०३.२०२६	चैत्र कृष्ण ०२	गुरु	उ.फा.	ल. १२ (८/१७ तक)

पुरातन गृह प्रवेश मुहूर्त्त विक्रम सम्वत् २०८२

दिनाङ्क	मास-पक्ष-तिथि	वार	नक्षत्र	लग्न एवं पूजादि विवरण
१४.०४.२०२५	वैशाख कृष्ण ०२	सोम	स्वाति	ल. २ चक्रशुद्धि अभाव
१६.०४.२०२५	वैशाख कृष्ण ०३	बुध	अनुराधा	ल. २ चक्रशुद्धि अभाव
२१.०४.२०२५	वैशाख कृष्ण ०८	सोम	उषा	ल. २ चक्रशुद्धि अभाव
२३.०४.२०२५	वैशाख कृष्ण १०	बुध	शत.	ल. ८, चक्रशुद्धि अभाव
२४.०४.२०२५	वैशाख कृष्ण ११	गुरु	शत.	ल. २, चक्रशुद्धि
२५.०४.२०२५	वैशाख कृष्ण १२	शुक्र	उ.भा.	ल. ३ के. दान, चक्रशुद्धि
२६.०४.२०२५	वैशाख कृष्ण १३	शनि	मूल	ल. २, चक्रशुद्धि
३०.०४.२०२५	वैशाख शुक्ल ०३	बुध	रो./मृग.	ल. २, चक्रशुद्धि, आभाव
०१.०५.२०२५	वैशाख शुक्ल ०५	गुरु	मृग.	ल. अभिजित, च.शु.अ.
०३.०५.२०२५	वैशाख शुक्ल ०७	शनि	पुष्य	ल. ८, चक्रशुद्धि
०८.०५.२०२५	वैशाख शुक्ल ११	गुरु	उ.फा	ल. ८, चक्रशुद्धि
१०.०५.२०२५	वैशाख शुक्ल १३	शनि	चित्रा	ल. २, ८, चक्रशुद्धि
१४.०५.२०२५	ज्येष्ठ कृष्ण ०२	बुध	अनुराधा	ल. २, चक्रशुद्धि
१७.०५.२०२५	ज्येष्ठ कृष्ण ०५	शनि	उ.षा.	ल. ८ गु.दान., च.शु.अ.
२३.०५.२०२५	ज्येष्ठ कृष्ण ११	शुक्र	उ.भा.	ल. २, चक्रशुद्धि
२४.०५.२०२५	ज्येष्ठ कृष्ण १२	शनि	रेवती	ल. २, चक्रशुद्धि
२८.०५.२०२५	ज्येष्ठ शुक्ल ०१	बुध	मृगशीर्ष	ल. २, चक्रशुद्धि, अभाव
३१.०५.२०२५	ज्येष्ठ शुक्ल ०५	शनि	पुष्य	ल. ३, चक्रशुद्धि, अभाव
०६.०६.२०२५	ज्येष्ठ शुक्ल ११	शुक्र	चित्रा	ल. ३, च.दान, चक्रशुद्धि
०७.०६.२०२५	ज्येष्ठ शुक्ल १२	शनि	चि./स्वा.	ल. ३, चक्रशुद्धि
१७.०७.२०२५	श्रावण कृष्ण ०७	गुरु	रेवती	ल. ६, चक्रशुद्धि, अभाव

पुरातन गृह प्रवेश मुहूर्त्त विक्रम सम्वत् २०८२

दिनाङ्क	मास-पक्ष-तिथि	वार	नक्षत्र	लग्न एवं पूजादि विवरण
२१.०७.२०२५	श्रावण कृष्ण ११	सोम	रोहिणी	ल. ६, चक्रशुद्धि
२५.०७.२०२५	श्रावण शुक्ल ०१	शुक्र	पुष्य	ल. ६, चक्रशुद्धि, अभाव
३१.०७.२०२५	श्रावण शुक्ल ०७	गुरु	चित्रा	ल. ६, चक्रशुद्धि
०४.०८.२०२५	श्रावण शुक्ल १०	सोम	अनुराधा	ल. ६ (९/१२), चक्रशुद्धि
११.०८.२०२५	भाद्रपद कृष्ण ०२	सोम	शतभिषा	ल. ६, चक्रशुद्धि, अभाव
१३.०८.२०२५	भाद्रपद कृष्ण ०५	बुध	उ.भा.	ल. ६, चक्रशुद्धि, अभाव
१४.०८.२०२५	भाद्रपद कृष्ण ०६	गुरु	रेवती	ल. अभिजित, चक्रशुद्धि
२४.१०.२०२५	कार्तिक शुक्ल ०३	शुक्र	अनुराधा	ल. अभिजित, च.शु.अ.
२९.१०.२०२५	कार्तिक शुक्ल ०७	बुध	उ.षा.	ल. ८, (९/२३) चक्रशुद्धि
०१.११.२०२५	कार्तिक शुक्ल १०	शनि	शतभिषा	ल. ११, शु.दान, चक्रशुद्धि
०३.११.२०२५	कार्तिक शुक्ल १३	सोम	उ.भा.	ल. ११, चक्रशुद्धि
०७.११.२०२५	मार्गशीर्ष कृष्ण ०२	शुक्र	रोहिणी	ल. अभिजित, च.शु.अ.
१५.११.२०२५	मार्गशीर्ष कृष्ण ११	शनि	उ.फा.	ल. ११, च. दान, चक्रशुद्धि
१७.११.२०२५	मार्गशीर्ष कृष्ण १३	सोम	चित्रा	ल. ११, च. दान, चक्रशुद्धि
२१.११.२०२५	मार्गशीर्ष शुक्ल ०१	शुक्र	अनुराधा	ल. ११, चक्रशुद्धि, अभाव
२७.११.२०२५	मार्गशीर्ष शुक्ल ०७	गुरु	धनिष्ठा	ल. ११. चक्रशुद्धि
०५.१२.२०२५	पौष कृष्ण ०१	शुक्र	रोहिणी	ल. अभिजित, च.शु.अ.
१२.१२.२०२५	पौष कृष्ण ०८	शुक्र	उ.फा.	ल. अभिजित, चक्रशुद्धि
१९.०१.२०२६	माघ शुक्ल ०१	सोम	उ.षा.	ल. ११, चक्रशुद्धि, अभाव
२१.०१.२०२६	माघ शुक्ल ०३	बुध	धनिष्ठा	ल. ११, चक्रशुद्धि, अभाव

पुरातन गृह प्रवेश मुहूर्त्त विक्रम सम्वत् २०८२

दिनाङ्क	मास-पक्ष-तिथि	वार	नक्षत्र	लग्न एवं पूजादि विवरण
२३.०१.२०२६	माघ शुक्ल ०५	शुक्र	उ.भा.	ल. २, के दान, चक्रशुद्धि
२४.०१.२०२६	माघ शुक्ल ०६	शनि	उ.भा.	ल. ६, चक्रशुद्धि
२८.०१.२०२६	माघ शुक्ल १०	बुध	रोहिणी	ल. अभिजित, चक्रशुद्धि
२९.०१.२०२६	माघ शुक्ल ११	गुरु	मृगशीर्ष	ल. २, (१३/५५) चक्रशुद्धि
०७.०२.२०२६	फाल्गुन कृष्ण ०६	शनि	चित्रा	ल. २ के. दान, च.शु.अ.
१८.०२.२०२६	फल्गुल शुल्क ०१	बुध	शतभिषा	ल. ११, ३, च.शु. अभाव
२०.०२.२०२६	फाल्गुन शुक्ल ०३	शुक्र	उ.भा.	ल.११,२, च.शुद्धि, अभाव
२६.०२.२०२६	फाल्गुन शुक्ल १०	गुरु	मृगशीर्ष	ल. ११, चक्रशुद्धि
२८.०२.२०२६	फाल्गुन शुक्ल १२	शनि	पुष्य	ल. अभिजित, चक्रशुद्धि
०४.०३.२०२६	चैत्र कृष्ण ०१	बुध	उ.फा.	ल. ११, च.शुद्धि, अ.
०५.०३.२०२६	चैत्र कृष्ण ०२	गुरु	हस्त	ल. अभिजित, च.शु.अ.

गृहरम्भ मुहूर्त्त विक्रम सम्वत् २०८२

२४.०२.२०२५	वैशाख कृष्ण ११	गुरु	शतभिषा	ल. २, ३ के. दान, च.शु.अ.
२५.०४.२०२५	वैशाख कृष्ण १३	शुक्र	उ.भा.	ल. २, ३ के. दान, च.शु.अ.
३०.०५.२०२५	वैशाख शुक्ल ०३	बुध	रोहिणी	ल. २, चक्रशुद्धि अभाव
०३.०५.२०२५	वैशाख शुक्ल ०७	शनि	पुष्य	ल. ८, चक्रशुद्धि अभाव
०४.०५.२०२५	वैशाख शुक्ल ११	गुरु	उ.फा.	ल. ८, चक्रशुद्धि
१०.०५.२०२५	वैशाख शुक्ल १३	शनि	चित्रा	ल. २ चक्रशुद्धि
१७.०७.२०२५	श्रावण शुक्ल ०७	गुरु	रेवती	ल. अभि., ८ गु. दान, च.शु.अ.

गृहरम्भ मुहूर्त्त विक्रम सम्वत् २०८२

दिनाङ्क	मास-पक्ष-तिथि	वार	नक्षत्र	लग्न एवं पूजादि विवरण
२१.०७.२०२५	श्रावण शुक्ल ११	सोम	रोहिणी	ल. अभिजीत, च.शु.अ.
२५.०७.२०२५	श्रावण शुक्ल ०१	शुक्र	पुष्य	ल. ८ गु.दान, च.शु.अ.
३१.०७.२०२५	श्रावण शुक्ल ०७	गुरु	चित्रा	ल. ६ के.दान, च.शु.अ
०४.०८.२०२५	श्रावण शुक्ल १०	सोम	अनुराधा	ल. विचारणीय
०९.०८.२०२५	श्रावण शुक्ल १५	शनि	धनिष्ठा	ल. २, चक्रशुद्धि
११.०८.२०२४	भाद्रपद कृष्ण ०२	सोम	शतभिषा	ल. २, चक्रशुद्धि
१३.०८.२०२५	भाद्रपद कृष्ण ०५	बुध	उ.भा.	ल. २, चक्रशुद्धि
१७.११.२०२५	मार्गशीर्ष कृष्ण १३	सोम	चित्रा	ल. ८ शु.दान, च.शु.अ.
२७.११.२०२५	मार्गशीर्ष शुक्ल ०७	गुरु	धनिष्ठा	ल. ८ बु.दान ११, च.शु.अ.
०१.१२.२०२५	मार्गशीर्ष शुक्ल ११	सोम	रेवती	ल. ८, बु. दान, १ च.शुद्धि
०६.१२.२०२५	पौष कृष्ण ०२	शनि	मृगशीर्ष	ल. विचारणीय, चक्रशुद्धि
०६.०२.२०२६	फाल्गुन कृष्ण ०५	शुक्र	हस्त	ल. १२, चक्रशुद्धि, अभाव
२०.०२.२०२६	फाल्गुन शुक्ल ०३	शुक्र	उ.भा.	ल. २, चक्रशुद्धि, अभाव
०४.०३.२०२६	चैत्र कृष्ण ०२	गुरु	उ.फा.	ल. २, चक्रशुद्धि
०५.०३.२०२६	चैत्र कृष्ण ०२	गुरु	हस्त	ल. २, चक्रशुद्धि

नूतन गृहप्रवेश मुहूर्त्त विक्रम सम्वत् २०८१

१४.०४.२०२५	वैशाख कृष्ण ०२	सोम	स्वाति	ल. २, चक्रशुद्धि, अभाव
१६.०४.२०२५	वैशाख कृष्ण ०३	बुध	अनुराधा	ल. २, चक्रशुद्धि, अभाव
२१.०४.२०२५	वैशाख कृष्ण ०८	सोम	उ.षा.	ल. २, चक्रशुद्धि, अभाव

नूतन गृहप्रवेश मुहूर्त्त विक्रम सम्वत् २०८१

दिनाङ्क	मास-पक्ष-तिथि	वार	नक्षत्र	लग्न एवं पूजादि विवरण
२३.०४.२०२५	वैशाख कृष्ण १०	बुध	शतभिषा	ल.८,च.दान चक्रशुद्धि,अभाव
२९.०४.२०२५	वैशाख कृष्ण ११	गुरु	शतभिषा	ल. २, चक्रशुद्धि
२५.०४.२०२५	वैशाख कृष्ण १२	शुक्र	उ.भा.	ल. ३. के दान, चक्रशुद्धि
२६.०४.२०२५	वैशाख कृष्ण १३	शनि	रेवती	ल. २, चक्रशुद्धि
३०.०४.२०२५	वैशाख शुक्ल ०३	बुध	रोहिणी	ल २, चक्रशुद्धि, अभाव
०१.०५.२०२५	वैशाख शुक्ल ०५	गुरु	मृगशीर्ष	ल. अभि, चक्रशुद्धि, अभाव
०३.०५.२०२५	वैशाख शुक्ल ०७	शनि	पुष्य	ल. ८, चक्रशुद्धि
०८.०५.२०२५	वैशाख शुक्ल ११	गुरु	उ.फा.	ल. ८, चक्रशुद्धि
१०.०५.२०२५	वैशाख शुक्ल १३	शनि	चित्रा	ल. २, ८, चक्रशुद्धि
२३.०५.२०२५	ज्येष्ठ कृष्ण ११	शुक्र	उ.भा.	ल. २, चक्रशुद्धि
२४.०५.२०२५	ज्येष्ठ कृष्ण १२	शनि	रेवती	ल. २, चक्रशुद्धि
२८.०५.२०२५	ज्येष्ठ शुक्ल ०१	बुध	मृगशीर्ष	ल. २, चक्रशुद्धि, अभाव
३१.०५.२०२५	ज्येष्ठ शुक्ल ०५	शनि	पुष्य	ल. ३ चक्रशुद्धि, अभाव
०६.०६.२०२५	ज्येष्ठ शुक्ल ११	शुक्र	चित्रा	ल. ३ च.दान, चक्रशुद्धि
०७.०६.२०२५	ज्येष्ठ शुक्ल १२	शनि	चित्रा	ल. ३ चक्रशुद्धि
०७.०२.२०२६	फाल्गुन कृष्ण ०६	शनि	चित्रा	ल. २, के. दान., च.शु.अ.
१८.०२.२०२६	फाल्गुन शुक्ल ०१	बुध	शतभिषा	ल. ११,२,च.शुद्धि, अभाव
२०.०२.२०२६	फाल्गुन शुक्ल ०३	शुक्र	उ.भा.	ल. ११, २, के.च.शु.अभाव
२१.०२.२०२६	फाल्गुन शुक्ल ०५	शनि	रेवती	ल. २, के. चक्रशुद्धि, अभाव
०४.०३.२०२६	चैत्र कृष्ण ०१	बुध	उ.फा.	ल. ११, चक्रशुद्धि, अभाव
०५.०३.२०२६	चैत्र कृष्ण ०२	गुरु	हस्त	ल. अभि. च.शुद्धि अभाव

माङ्गलिक मुहूर्त्तों के निर्णेता – प्रो. परमानन्द भारद्वाज, आचार्य ज्योतिष–विभाग

वि. सं. २०८२, शाके १९४७, चैत्र शुक्ल पक्ष (दि. ३० मार्च से १२ अप्रैल २०२५ ई.), उत्तरायण, उत्तर गोल, वसन्त ऋतु, के. अहर्गण ५१०६, अयनांश २४°/१२'/३५"

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	घं.	मि.	न.	घ.	प.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	कर.	घ.	प.	सूर्योदय	सूर्यास्त	रा.	प्र.	मु.	अं.	चन्द्रचार	विवरण (भारतीय स्टैण्डर्ड समय में)
३०	४०	१	र.	१६	२०	१२	५०	रे.	२५	४२	१६	३५	ऐं.	२८	५७	ब.	१६	२०	०६:१८	०६:३४	चैत्र ०९	चैत्र १७	रम. २९	मा. ३०	मेष १६:३५	पञ्चक समा. १६:३५ वासन्तिक नवरात्र प्रा., (A)
३०	४४	२ ३	सो.	०७ ५८	१८ ३८	०९ २९	११ ४३	अश्वि.	१८	४२	१३	४५	वै.	१८	४५	कौ.	०७	१८	०६:१६	०६:३४	१०	१८	श. ०१	३१	मेष	गण्डमूल समा. १३:४५, सूर्य रेवती में १३:५९ बजे, (B)
३०	४८	४	मं.	५०	४५	२६	३३	भ.	१२	१०	११	०७	वि. प्री.	०८ ५९	५३ ४०	व.	२४	३५	०६:१५	०६:३५	११	१९	०२	अप्रै. ०१	वृष १६:३०	भद्रा १६:०५ से २६:३३ तक, विनायक चतुर्थी, (C)
३०	५२	५	बु.	४४	००	२३	५०	कृ.	०६	३०	०८	५०	आ.	५१	३०	ब.	१७	१२	०६:१४	०६:३५	१२	२०	०३	०२	वृष	मंगल कर्क में २५:२८, रोहिणी व्रत।
३०	५७	६	गु.	३८	४३	२१	४२	रो. मृ.	०२ ५९	०२ ०५	०७ २९	०२ ५१	सौ.	४४	३०	कौ.	११	१०	०६:१३	०६:३६	१३	२१	०४	०३	मिथुन १८:२२	वक्री बुध पू. भा. में १७:५८, (D)
३१	०१	७	शु.	३५	०२	२०	१३	आ.	५७	५०	२९	२०	शो.	३८	५३	ग.	०६	४०	०६:१२	०६:३६	१४	२२	०५	०४	मिथुन	भद्रा २०:१३ बजे से, महानिशा पूजा।
३१	०५	८	श.	३३	१०	१९	२७	पुन.	५८	२३	२९	३२	अति.	३४	४०	वि.	०३	५३	०६:११	०६:३७	१५	२३	०६	०५	कर्क २३:२५	भद्रा ०७:४४ बजे तक, महाष्टमी, दुर्गाष्टमी, मेला (E)
३१	०९	९	र.	३३	०२	१९	२३	पु.	६०	००	–	–	सु.	३१	५३	बा.	०२	५५	०६:१०	०६:३७	१६	२४	०७	०६	कर्क	श्री राम नवमी व्रत, श्री रामावतार (मध्याह्नकाल) (F)
३१	१३	१०	सो.	३४	४०	२०	००	पु.	००	४३	०६	२५	धृ.	३०	२५	तै.	०३	४३	०६:०८	०६:३८	१७	२५	०८	०७	कर्क	गण्डमूल प्रा. ०६:२५, बुध मार्गी १६:३७ बजे, (G)
३१	१८	११	मं.	३७	४५	२१	१३	आश्ले.	०४	३०	०७	५५	शू.	३०	०८	व.	०६	०५	०६:०७	०६:३९	१८	२६	०९	०८	सिंह ०७:५५	भद्रा ०८:३३ बजे से २१:१३ तक, कामदा एकादशी व्रत (स.)।
३१	२२	१२	बु.	४२	०५	२२	५६	म.	०९	३८	०९	५७	गं.	३०	४८	ब.	०९	५०	०६:०६	०६:३९	१९	२७	१०	०९	सिंह	गण्डमूल समा. ०९:५७।
३१	२६	१३	गु.	४७	२०	२५	०१	पू.फा.	१५	४८	१२	२४	वृ.	३२	१३	कौ.	१४	३८	०६:०५	०६:४०	२०	२८	११	१०	कन्या १९:०४	गुरु मृगशिरा में १८:५५ बजे, प्रदोष व्रत, (H)
३१	३०	१४	शु.	५३	१५	२७	२२	उ.फा.	२२	४५	१५	१०	ध्रु.	३४	१३	ग.	२०	१५	०६:०४	०६:४०	२१	२९	१२	११	कन्या	भद्रा २७:२२ बजे से, बुध उ.भा. में १८:०८ बजे।
३१	३४	१५	श.	५९	३२	२९	५२	ह.	३०	१२	१८	०८	व्या.	३६	३२	वि.	२६	२३	०६:०३	०६:४१	२२	३०	१३	१२	कन्या	भद्रा १६:३६ बजे तक, मंगल पुष्य में ०६:०८ बजे (I)

(A) घटस्थापन, गुड़ी पड़वा, युगादि, सिद्धार्थ नामक संवत्सर प्रा., भारतीय नववर्षारम्भ, रामायण पाठ प्रारम्भ, कल्पादि, चन्द्रदर्शन, सिन्धारा, झूलेलाल जयन्ती। (B) मत्स्य जयन्ती, गणगौरी तृतीया, वक्री शुक्र उत्तराभाद्रपदा में २८:४७, मन्वादि, ईद-उल- फितर, मु. शव्वाल प्रा.। (C) उत्कल दिवस।(D) स्कन्दषष्ठी (सायंकाल) यमुना छठ। (E) मनसा देवी, मेला बाहूफोर्ट जम्मू, सन्धि पूजा, औली जैन (प्रा.) (F) श्री तारा जयन्ती, रामायण पाठ समा., नवरात्र समा., महानवमी। (G) नवरात्र व्रत पारणा। (H) अनङ्ग त्रयोदशी, महावीर जयन्ती। (I) पूर्णिमा व्रत, सत्यव्रत, मन्वादि, सिद्धाचल यात्रा, हनुमज्जयन्ती दाक्षिणात्य, औली जैन समा., वैशाख स्नान प्रा.।

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	११	०२	०३	११	०१	११	११	११	०५
अं.	२१	२०	००	०२	२२	०१	००	०२	०२
क.	१७	३७	४५	५३	२४	४२	४५	१८	१८
वि.	१८	१७	३४	०९	३४	४६	४०	२८	२८
गति	५९ ०६	७८० ३८	२१ ५१	१५ व. १३	३७ ४२	२० व. ३२	०७ ०६	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	२ च.	४ च.	४ च.	४ च.	४ च.	४ च.	४ च.	४ च.	२ च.
	ज्ये.	पुन.	पुन.	पूर्वा.	रो.	पूर्वा.	पूर्वा.	पूर्वा.	उ.फा.

०५ अप्रैल २०२५ ई., प्रातः ६:२७

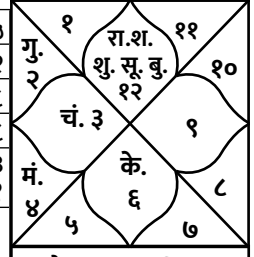

चैत्र शु. ८, शनिवार

विक्रम संवत् २०८२ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा तदनुसार ३० मार्च २०२५ ई., रविवार से 'सिद्धार्थ' नामक संवत्सर का प्रारम्भ हो रहा है। अतः नित्य एवं नैमित्तिक अनुष्ठान आदि के संकल्प में संवत्सर के अन्त तक इसका प्रयोग किया जायेगा। सिद्धार्थ संवत्सर में निवेश से सम्पत्ति में लाभ होगा। संवत्सर का राजा एवं मन्त्री सूर्य होने के कारण धान्य एवं फलों की उत्पत्ति कम होगी। संवत्सर के प्रारम्भ में पञ्चग्रही योग होने के कारण यूरोप में युद्ध के विकराल रूप लेने की सम्भावना है। आन्तकवाद, उग्रवाद, अग्निकाण्ड, महामारी, भूकम्प, तूफान, तस्करी, डकैती आदि घटनाओं से जन-धन की हानि होगी।

१२ अप्रैल २०२५ ई., प्रातः ६:२७

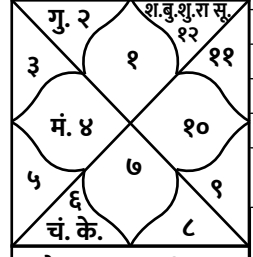

चैत्र शु. १५, शनिवार

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	११	०५	०३	११	०१	११	११	११	०५
अं.	२८	१७	०३	०३	२३	००	०१	०१	०१
क.	१०	३४	२०	३१	३५	२६	३४	५६	५६
वि.	००	००	१८	१३	२४	०५	४१	१२	१२
गति	५८ ५१	७१३ ५४	२२ ५९	२० मा. ४४	२० ४५	०३ व. ३८	०६ ५५	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	४ च.	३ च.	१ च.	१ च.	१ च.	४ च.	४ च.	४ च.	२ च.
	ज्ये.	हस्त.	पुष्य.	उ.भा.	मृग.	पूर्वा.	पूर्वा.	उ.भा.	उ.फा.

वि. सं. २०८२, शाके १९४७, वैशाख कृष्ण पक्ष (दि. १३ अप्रैल से २७ अप्रैल २०२५ ई.), उत्तरायण, उत्तर गोल, वसन्त/ग्रीष्म ऋतु, के. अहर्गण ५१२०, अयनांश २४°/१२'/३७"

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	घं.	मि.	न.	घ.	प.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	कर.	घ.	प.	सूर्योदय	सूर्यास्त	रा.	प्र.	मु.	अं.	चन्द्रचार	विवरण (भारतीय स्टैण्डर्ड समय में)
३१	३८	१	र.	६०	००	–	–	चि.	३७	५३	२१	११	ह.	३९	०२	बा.	३२	४७	०६:०२	०६:४१	चै. २३	वै. ०१	श. १४	अप्रै. १३	तुला ०७:३९	मेष संक्रान्ति २७:२१, शुक्र ०६:३२ बजे मार्गी, (A)
३१	४२	१	सो.	०६	००	०८	२५	स्वा.	४५	३०	२४	१३	व.	४१	३२	कौ.	०६	००	०६:०१	०६:४२	२४	०२	१५	१४	तुला	मेष संक्रान्ति पुण्यकाल मध्याह्न तक, (B)
३१	४६	२	मं.	१२	२०	१०	५६	वि.	५२	५५	२७	१०	सि.	४३	५०	ग.	१२	२०	०६:००	०६:४२	२५	०३	१६	१५	वृश्चिक २०:२७	भद्रा २४:०८ बजे से, हिमाचल दिवस।
३१	५०	३	बु.	१८	१५	१३	१७	अनु.	५९	५०	२९	५५	व्य.	४५	४७	वि.	१८	१५	०५:५९	०६:४३	२६	०४	१७	१६	वृश्चिक	गण्डमूल प्रा. २९:५५, भद्रा १३:१७ बजे तक, (C)
३१	५४	४	गु.	२३	३५	१५	२४	ज्ये.	६०	००	–	–	वरि.	४७	१०	बा.	२३	३५	०५:५८	०६:४४	२७	०५	१८	१७	वृश्चिक	
३१	५८	५	शु.	२७	५७	१७	०८	ज्ये.	०६	००	०८	२१	परि.	४७	४५	तै.	२७	५७	०५:५७	०६:४४	२८	०६	१९	१८	धनु ०८:२१	गुड फ्राइडे।
३२	०२	६	श.	३१	०५	१८	२२	मू.	११	०२	१०	२१	शि.	४७	२०	व.	३१	०५	०५:५६	०६:४५	२९	०७	२०	१९	धनु	गण्डमूल समा. १०:२१, भद्रा १८:२२ बजे से, (D)
३२	०६	७	र.	३२	४५	१९	०१	पू.षा.	१४	४३	११	४८	सि.	४५	४३	वि.	०२	०८	०५:५५	०६:४५	३०	०८	२१	२०	मकर १८:०४	भद्रा ०६:४६ बजे तक, शर्करा सप्तमी, (E)
३२	१०	८	सो.	३२	४३	१८	५९	उ.षा.	१६	४८	१२	३७	सा.	४२	४५	बा.	०२	५८	०५:५४	०६:४६	वैशा. ०१	०९	२२	२१	मकर	राष्ट्रीय वैशाख प्रारम्भ।
३२	१४	९	मं.	३०	५०	१८	१३	श्र.	१७	०८	१२	४४	शुभ	३८	२०	तै.	०२	०२	०५:५३	०६:४६	०२	१०	२३	२२	कुम्भ २४:३१	पञ्चक प्रा. २४:३१, भद्रा २९:३४ बजे से, पृथ्वी दिवस।
३२	१८	१०	बु.	२७	१०	१६	४४	धनि.	१५	३८	१२	०७	शु.	३२	२८	वि.	२७	१०	०५:५२	०६:४७	०३	११	२४	२३	कुम्भ	भद्रा १६:४४ बजे तक।
३२	२२	११	गु.	२१	४५	१४	३३	श.	१२	२५	१०	४९	ब्र.	२५	१०	बा.	२१	४५	०५:५१	०६:४८	०४	१२	२५	२४	मीन २७:२६	वरूथिनी एकादशी व्रत (स.), वल्लभाचार्य जयन्ती।
३२	२६	१२	शु.	१४	४८	११	४५	पू.भा.	०७	३८	०८	५३	ऐं.	१६	४०	तै.	१४	४८	०५:५०	०६:४८	०५	१३	२६	२५	मीन	शुक्र उ.भा. में २३:४१ बजे, प्रदोष व्रत।
३२	२९	१३ १४	श.	०६ ५७	३८ ३२	०८ २८	२८ ५०	उ.भा. रेव.	०१ ५४	३५ ३५	०६ २७	२७ ३९	वै. वि.	०७ ५६	१० ५५	व.	०६	३८	०५:४९	०६:४९	०६	१४	२७	२६	मेष २७:३९	पञ्चक समा. २७:३९, गण्डमूल प्रा. ०६:२७, (F)
३२	३३	३०	र.	४८	०२	२५	०१	अश्वि.	४७	०८	२४	३९	प्री.	४६	१७	चतु.	२२	५०	०५:४८	०६:४९	०७	१५	२८	२७	मेष	गण्डमूल समा. २४:३९, सूर्य भरणी में १९:०९ बजे, (G)

(A) सूर्य अश्विनी में २७:२१ बजे, वैशाखी। (B) आर्यभट जयन्ती, अम्बेडकर जयन्ती। (C) चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय २२:१४। (D)कोकिला षष्ठी (अपराह्णकाल), सूर्य सायन वृष में २५:२६, ग्रीष्म ऋतु प्रारम्भ। (E) शीतला सप्तमी, कालाष्टमी, ईस्टर सण्डे। (F) भद्रा ०८:२८ से १८:४१ तक, मास शिवरात्रि। (G) बुध रेवती में १५:३५, अमावस्या स्नानदानादि।

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	००	०९	०३	११	०१	११	११	११	०५
अं.	०६	०६	०६	०९	२५	०१	०२	०१	०१
क.	५८	३९	५९	४१	१३	३७	३५	२७	२७
वि.	१२	०३	०२	३४	२१	०६	१५	३५	३५
गति	६० ३५	७२० ४९	२५ १७	५५ १६	११ १४	१६ मि. २९	०६ ३४	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	अश्वि. ३	उ.षा. ३	पुष्य. २	उ.भा. २	मृग. १	पू.भा. ४	पू.भा. ४	पू.भा. ४	उ.फा. २

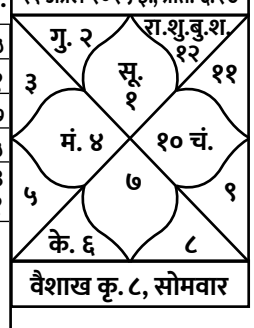

इस मास में पाँच रविवार एवं पाँच सोमवार हैं और मेष की संक्रान्ति भी रविवार को है, अत: वृष्टि की कमी से कृषकवर्ग चिन्तित रहेगा। मँहगाई से आम जनता त्रस्त रहेगी। प्रजा में रोग, अशान्ति एवं भय का वातावरण रहेगा। अन्न, सुवर्ण एवं अलसी के भाव तेज रहेंगे। खण्डवृष्टि होने से कहीं सुभिक्ष तो कहीं दुर्भिक्ष की सम्भावना है।

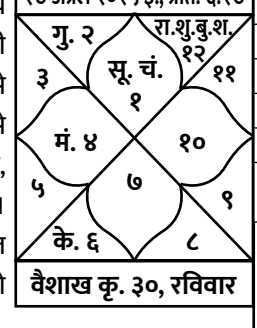

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	००	००	०३	११	०१	११	११	११	०५
अं.	१२	०१	०९	१६	२६	०३	०३	०१	०१
क.	४९	४६	३५	१२	२२	५४	१३	०८	०८
वि.	०४	३४	३०	०६	२७	३१	४७	३१	३१
गति	५८ २४	९०६ ३५	२६ ३७	७१ ३३	११ १४	२७ ०९	०५ १९	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	अश्वि. ४	अश्वि. १	पुष्य. २	उ.भा. ४	मृग. १	उ.भा. १	पू.भा. ४	पू.भा. ४	उ.फा. २

वि. सं. २०८२, शाके १९४७, वैशाख शुक्ल पक्ष (दि. २८ अप्रैल से १२ मई २०२५ ई.), उत्तरायण, उत्तर गोल, ग्रीष्म ऋतु, के. अहर्गण ५१३५, अयनांश २४°/१२'/३९"

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	घं.	मि.	न.	घ.	प.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	कर.	घ.	प.	सूर्योदय	सूर्यास्त	रा.	प्र.	मु.	अं.	चन्द्रचार	विवरण (भारतीय स्टैण्डर्ड समय में)
३२	३७	१	सो.	३८	३०	२१	११	भ.	३९	३८	२१	३८	आयु.	३५	३८	किं	१३	१५	०५:४७	०६:५०	वै. ०८	वै. १६	श. २९	अप्रै. २८	वृष २६:५३	शनि उ.भा. में. ०६:१९ बजे।
३२	४१	२	मं.	२९	२३	१७	३१	कृ.	३२	३२	१८	४७	सौ.	२५	१८	बा.	०३	५३	०५:४६	०६:५१	०९	१७	३०	२९	वृष	चन्द्रदर्शन, परशुराम अवतार (प्रदोष काल) (A)
३२	४४	३	बु.	२१	०८	१४	१२	रो.	२६	२३	१६	१८	शो.	१५	४०	ग.	२१	०८	०५:४५	०६:५१	१०	१८	जि. ०१	३०	मिथुन २७:१५	भद्रा २४:४४ बजे से, अक्षय तृतीया, त्रेतायुगादि, (B)
३२	४८	४	गु.	१४	१०	११	२४	मृ.	२१	३३	१४	२१	अति. सु.	०७ ५९	०५ ४५	वि.	१४	१०	०५:४४	०६:५२	११	१९	०२	मई ०१	मिथुन	भद्रा ११:२४ बजे तक, विनायक चतुर्थी, श्रम दिवस।
३२	५१	५	शु.	०८	४५	०९	१५	आ.	१८	२०	१३	०४	धृ.	५३	५८	बा.	०८	४८	०५:४४	०६:५२	१२	२०	०३	०२	मिथुन	आद्यगुरुशङ्कराचार्य जयन्ती, सूरदास जयन्ती।
३२	५५	६	श.	०५	२३	०७	५२	पुन.	१७	०८	१२	३४	शू.	४९	५३	तै.	०५	२३	०५:४३	०६:५३	१३	२१	०४	०३	कर्क ०६:३७	गङ्गोत्पत्ति (मध्याह्नकाल) गङ्गासप्तमी, रामानुजाचार्य जयन्ती
३२	५८	७	र.	०४	०३	०७	१९	पु.	१७	५७	१२	५३	ग.	४७	२८	व.	०४	०३	०५:४२	०६:५४	१४	२२	०५	०४	कर्क	गण्डमूल प्रा. १२:५३, भद्रा ०७:१९ बजे से १९:२१ बजे तक (C)
३३	०२	८	सो.	०४	४८	०७	३६	आ.	२०	५०	१४	०१	वृ.	४६	३५	ब.	०४	४८	०५:४१	०६:५४	१५	२३	०६	०५	सिंह १४:०१	
३३	०५	९	मं.	०७	२५	०८	३९	म.	२५	२७	१५	५२	ध्रु.	४७	०२	कौ.	०७	२५	०५:४१	०६:५५	१६	२४	०७	०६	सिंह	बुध मेष में २८:०७, गण्डमूल समा. १५:५२, (D)
३३	०९	१०	बु.	११	४०	१०	२०	पू.फा.	३१	३३	१८	१७	व्या.	४८	३२	ग.	११	४०	०५:४०	०६:५५	१७	२५	०८	०७	कन्या १४:५७	भद्रा २३:२२ बजे से।
३३	१२	११	गु.	१७	०८	१२	३०	उ.फा.	३८	३८	२१	०६	ह.	४८	३२	वि.	१७	०८	०५:३९	०६:५६	१८	२६	०९	०८	कन्या	भद्रा १२:३० बजे तक, मोहिनी एकादाशी व्रत (स.)
३३	१५	१२	शु.	२३	१५	१४	५६	ह.	४६	१७	२४	०९	व.	५३	१७	बा.	२३	१५	०५:३८	०६:५७	१९	२७	१०	०९	कन्या	प्रदोष व्रत।
३३	१९	१३	श.	२९	४०	१७	३०	चि.	५१	३२	२७	१५	सि.	५५	५८	तै.	२९	४०	०५:३८	०६:५७	२०	२८	११	१०	तुला १३:४२	
३३	२२	१४	र.	३६	०२	२०	०२	स्वा.	६०	००	-	-	व्य.	५८	२८	ग.	०२	५५	५:३७	०६:५८	२१	२९	१२	११	तुला	भद्रा २०:०२ बजे से, सूर्य कृत्तिका में १३:१७ बजे (E)
३३	२५	१५	सो.	४२	०५	२२	२६	स्वा.	०१	४३	०६	१७	वरि.	६०	००	वि.	०९	०८	०५:३६	०६:५९	२२	३०	१३	१२	वृश्चिक २६:२७	भद्रा ०९:१५ बजे तक, मंगल आश्लेषा में ०८:३६ बजे, (F)

(A) रोहिणी व्रत, मातङ्गी जयन्ती। (B) बद्री केदार यात्रा, मु. जिल्काद प्रा.। (C) बगलामुखी जयन्ती, दुर्गाष्टमी। (D) सीता नवमी, जानकी नवमी, मैथिली दिवस, बुध अश्विनी में २८:०७ बजे। (E) नृसिंह जयन्ती (प्रदोषकाल) छिन्नमस्ता जयन्ती। (F) पूर्णिमा व्रत, सत्यव्रत, बुद्ध पूर्णिमा, बुद्ध जयन्ती, कूर्म जयन्ती, वैशाख स्नान (समा.)

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	००	०३	०३	११	०१	११	११	११	०५
अं.	२०	२६	१३	२६	२७	०८	०४	००	००
क.	३५	०१	१५	०५	५८	२२	०२	४३	४३
वि.	१३	३८	३६	०२	३८	५०	२१	०४	०४
गति	५८ ०९	७७० ४७	२८ १०	८८ ५९	१२ १५	३८ ०१	०५ ५३	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	भर. ३	आ. ३	पुष्य. ३	श्ले. ४	मृग. २	उ.भा. २	उ.भा. १	पू.भा. ४	उ.फा. २

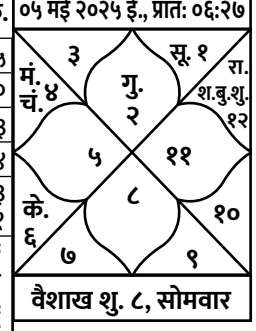

इस मास में बुध-शुक्र-शनि-राहु का चतुर्ग्रही योग होने के कारण विश्व के विभिन्न क्षेत्रों के राजनैतिक वैमनस्य के कारण युद्धोन्माद की स्थिति बनेगी। पश्चिमी एशिया, यूरोप एवं अमेरिका में राजनैतिक विद्वेश बढ़ने से यूरोप में युद्ध के विकराल रूप लेने की सम्भावना है। कश्मीर के उग्रवाद एवं आन्तकवाद से जन-धन की हानि होगी। महामारी, तूफान, भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोप से विश्व के कई भागों में विशेषतः उत्तर के क्षेत्रों में अत्यधिक हानि होने की सम्भावना है।

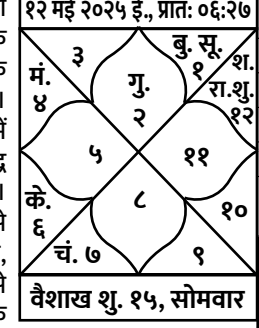

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	००	०६	०३	००	०१	११	११	११	०५
अं.	२७	२०	१६	०८	२९	१३	०४	००	००
क.	२१	०४	३७	२३	२५	१८	४१	२०	२०
वि.	२५	५७	२२	५५	५८	१९	५२	४९	४९
गति	५७ ५७	७१० २६	२९ १८	१०२ ५५	१२ ३८	४५ ०६	०५ २७	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	कृति. १	विशा. १	पुन. ४	अश्वि. ३	मृग. २	उ.भा. ३	उ.भा. १	पू.भा. ४	उ.फा. २

वि. सं. २०८२, शाके १९४७, ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष (दि. १३ मई से २७ मई २०२५ ई.), उत्तरायण, उत्तर गोल, ग्रीष्म ऋतु, के. अहर्गण ५१५०, अयनांश २४°/१२'/४१"

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	घं.	मि.	न.	घ.	प.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	कर.	घ.	प.	सूर्योदय	सूर्यास्त	रा.	प्र.	मु.	अं.	चन्द्रचार	विवरण (भारतीय स्टैण्डर्ड समय में)
३३	२८	१	मं.	४७	३०	२४	३६	वि.	०८	५३	०९	०९	वरि.	००	४०	बा.	१४	५३	०५:३६	०६:५९	वै. २३	वै. ३१	जि. १४	मई १३	वृश्चिक	नारद जयन्ती
३३	३१	२	बु.	५२	१५	२६	२९	अनु.	१५	३०	११	४७	परि.	०२	२८	तै.	२०	००	०५:३५	०७:००	२४	ज्ये. १	१५	१४	वृश्चिक	वृष संक्रान्ति २४:११, गुरु मिथुन में २२:३५, (A)
३३	३४	३	गु.	५६	१०	२८	०३	ज्ये.	२१	२०	१४	०७	शि.	०३	३८	व.	२४	२०	०५:३५	०७:००	२५	२	१६	१५	धनु १४:०७	भद्रा १५:१९ बजे से २८:०३ तक, वृष संकान्ति, (B)
३३	३७	४	शु.	५९	१०	२९	१४	मू.	२६	२३	१६	०७	सि.	०४	१०	ब.	२७	५०	०५:३४	०७:०१	२६	३	१७	१६	धनु	गण्डमूल समा. १६:०७, शुक्र रेवती में १२:५८ बजे, (C)
३३	४०	५	श.	६०	००	-	-	पू.षा.	३०	२७	१७	४४	सा.	०४	००	कौ.	३०	१५	०५:३३	०७:०२	२७	४	१८	१७	मकर २४:०४	
३३	४३	५	र.	०१	०३	०५	५८	उ.षा.	३३	१७	१८	५२	शुभ.	०२	५३	तै.	०१	०३	०५:३३	०७:०२	२८	५	१९	१८	मकर	केतु सिंह में १९:३५, राहु मीन में १९:३५
३३	४५	६	सो.	०१	३८	०६	१२	श्र.	३४	५३	१९	३०	शु. ब्रह्म	०० ५७	४८ ३५	व.	०३	१८	०५:३३	०७:०३	२९	६	२०	१९	मकर	भद्रा ०६:१२ बजे से १८:०६ तक, भानु सप्तमी।
३३	४८	७ ८	मं.	०० ५८	५० ३०	०५ २८	५२ ५६	धनि.	३५	००	१९	३२	ऐं.	५३	१५	ब.	००	५०	०५:३२	०७:०३	३०	७	२१	२०	कुम्भ १७:३५	पञ्चक प्रा. ०७:३५, कालाष्टमी, (D)
३३	५१	९	बु.	५४	३५	२७	२२	श.	३३	३५	१८	५८	वै.	४७	३५	तै.	२६	४५	०५:३२	०७:०४	३१	८	२२	२१	कुम्भ	बुध कृत्तिका में २२:२०
३३	५३	१०	गु.	४९	१३	२५	१२	पू.भा.	३०	४०	१७	४७	वि.	४०	४५	व.	२२	०८	०५:३१	०७:०५	ज्यै. ९	९	२३	२२	मीन १२:०८	भद्रा १४:२२ से २५:१२ बजे तक, रा. ज्येष्ठ प्रा.।
३३	५६	११	शु.	४२	२८	२२	३०	उ.भा.	२६	१८	१६	०२	प्री.	३२	४३	ब.	१६	००	०५:३१	०७:०५	०२	१०	२४	२३	मीन	बुध वृष में १३:०२, गण्डमूल प्रा. १६:०२, (E)
३३	५८	१२	श.	३४	३५	१९	२०	रे.	२०	४५	१३	४८	आयु.	२३	४५	कौ.	०८	४०	०५:३०	०७:०७	०३	११	२५	२४	मेष १३:४८	पञ्चक समा. १३:४८, अपरा एकादशी व्रत (नि.), (F)
३४	००	१३	र.	२५	५३	१५	५१	अश्वि.	१४	१५	११	१२	सौ.	१४	००	ग.	००	२०	०५:३०	०७:०६	०४	१२	२६	२५	मेष	गण्डमूल समा. ११:१२; भद्रा १५:५१ से २६:०२ बजे तक, (G)
३४	०३	१४	सो.	१६	४५	१२	१२	भ.	०७	१५	०८	२४	शो. अति.	०३ ५३	५० ३२	श.	१६	४५	०५:३०	०७:०७	०५	१३	२७	२६	वृष १३:४१	अमावस्या श्राद्धादि, वटसावित्री व्रत।
३४	०५	३०	मं.	०७	३८	०८	३२	कृ. रो.	०० ५३	१० २३	०५ २६	३३ ५०	सु.	४३	३२	ना.	०७	३८	०५:२९	०७:०७	०६	१४	२८	२७	वृष	बुध रोहिणी में २९:०५, भावुका अमावस्या, (H)

(A) गण्डमूल प्रा. ११:४७, बुध भरणी में २५:०३ (B) पुण्यकाल मध्याह्नकाल तक। (C) चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय २२:५७ (D) सायन सूर्य मिथुन में२४:२५(E) अपरा एकादशी व्रत (स्मा.+वै.)। (F) शनि प्रदोष व्रत। (G) मास शिवरात्रि, सूर्य रोहिणी में ०९:३० (H) अमावस्या स्नानदानादि, रोहिणी व्रत।

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०१	०९	०३	००	०२	११	११	१०	०४
अं.	०५	२९	२०	२३	०१	१९	०५	२९	२९
क.	०४	२२	३६	१८	०८	४७	२३	५५	५५
वि.	०५	०६	५५	३९	४८	४३	१३	२३	२३
गति	५७ ४६	७८८ ११	३० २६	११८ ४१	१३ ००	५१ ११	०४ ५६	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	३ चं.	२ चं.	२ चं.	३ चं.	३ चं.	१ चं.	१ चं.	३ चं.	१ चं.
	कृत्ति.	धनि.	आश्ले.	भर.	मृग.	रेव.	उ.भा.	पू.भा.	उ.फा.

२० मई २०२५ ई., प्रात: ०६:२७

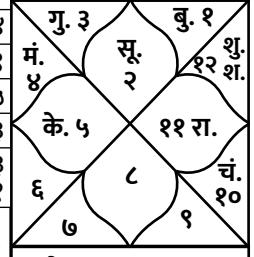

ज्येष्ठ कृ. ८, मंगलवार

इस मास में पाँच मंगलवार एवं पाँच बुधवार हैं और वृष संक्रान्ति भी बुधवार को है, अत: प्रजा में परस्पर द्वेष, कलह एवं अशान्ति व्याप्त रहेगी। खण्डवृष्टि के कारण कहीं धान्य कम तो कहीं अच्छा होगा। वनस्पति, घी, गुड़, शक्कर, चीनी, रूई, तिल, तैल, सरसो में तेजी तथा गेहूँ, जौ, चना में मन्दी रहेगी।

२७ मई २०२५ ई., प्रात: ०६:२७

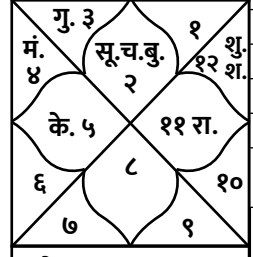

ज्येष्ठ कृ. ३०, मंगलवार

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०१	०१	०३	०१	०२	११	११	१०	०४
अं.	११	१०	२४	०७	०२	२६	०५	२९	२९
क.	४७	३४	१३	५६	४०	०२	५५	३३	३३
वि.	५६	१७	३४	४७	५७	३३	४१	०८	०८
गति	५७ ३९	९०७ ४६	३१ १९	१२९ ४२	१३ १६	५५ ०९	०४ २५	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	१ चं.	१ चं.	३ चं.	४ चं.	३ चं.	३ चं.	१ चं.	३ चं.	१ चं.
	रोहि.	रोहि.	आश्ले.	कृत्ति.	मृग.	रेव.	उ.भा.	पू.भा.	उ.फा.

वि. सं. २०८२, शाके १९४७, ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष (दि. २८ मई से ११ जून २०२५ ई.), उत्तरायण, उत्तर गोल, ग्रीष्म ऋतु, के. अहर्गण ५१६५, अयनांश २४°/१२'/४४"

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	घं.	मि.	न.	घ.	प.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	कर.	घ.	प.	सूर्योदय	सूर्यास्त	रा.	प्र.	मु.	अं.	चन्द्रचार	विवरण (भारतीय स्टैण्डर्ड समय में)
००	००	१	मं.	५८	५६	२९	०३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प्रतिपदा क्षय।
३४	०७	२	बु.	५१	०५	२५	५५	मृ.	४७	३०	२४	२९	धृ.	३४	०८	बा.	२४	५०	०५:२९	०७:०८	ज्ये. ०७	ज्ये. १५	जि. २९	मई २८	मिथुन १३:३६	काशी दशाश्वमेध स्नान प्रा., चन्द्रदर्शन ।
३४	०९	३	गु.	४४	३२	२३	१८	आ.	४२	५५	२२	३९	शू.	२५	४५	तै.	१७	३८	०५:२९	०७:०९	०८	१६	जि. ०१	२९	मिथुन	रम्भा तृतीया, महाराणा प्रताप जयन्ती, मु. जिल्हेज प्रा.
३४	११	४	शु.	३९	४७	२१	२३	पुन.	४०	०२	२१	२९	ग.	१८	४०	व.	११	५८	०५:२८	०७:०९	०९	१७	०२	३०	कर्क १५:४२	भद्रा १०:१५ बजे से २१:२३ तक, विनायक चतुर्थी।
३४	१३	५	श.	३७	००	२०	१६	पु.	३९	०८	२१	०७	वृ.	१३	०८	ब.	०८	०८	०५:२८	०७:१०	१०	१८	०३	३१	कर्क	शुक्र मेष में ११:३३, गण्डमूल प्रा. २१:०७, (A)
३४	१५	६	र.	३६	२०	२०	००	आश्ले.	४०	२०	२१	३६	ध्रु.	०९	१८	कौ.	०६	२३	०५:२८	०७:१०	११	१९	०४	जून ठि१	सिंह २१:३६	अरण्य षष्ठी, विन्ध्यवासिनी पूजा।
३४	१७	७	सो.	३७	४७	२०	३५	म.	४३	३८	२२	५५	व्या.	०७	१०	ग.	०६	४८	०५:२८	०७:११	१२	२०	०५	०२	सिंह	गण्डमूल समा. २२:५५, भद्रा २०:३५ बजे से।
३४	१८	८	मं.	४१	१३	२१	५७	पू.फा.	४८	४५	२४	५८	ह.	०४	१५	वि.	०९	१८	०५:२८	०७:११	१३	२१	०६	०३	सिंह	भद्रा ०९:११ बजे तक, बुध मृगशिरा में ०६:५६ बजे, (B)
३४	२०	९	बु.	४६	०८	२३	५४	उ.फा.	५५	२०	२७	३५	व.	०७	३३	बा.	१३	३३	०५:२७	०७:१२	१४	२२	०७	०४	कन्या ०७:३५	
३४	२१	१०	गु.	५२	०२	२६	१६	ह.	६०	००	–	–	सि.	०९	२५	तै.	१९	००	०५:२७	०७:१२	१५	२३	०८	०५	कन्या	गङ्गादशहरा, रामेश्वर प्रतिष्ठा, विश्व पर्यावरण दिवस।(C)
३४	२३	११	शु.	५८	२३	२८	४८	ह.	०२	४८	०६	३४	व्य.	११	५५	व.	२५	१२	०५:२७	०७:१३	१६	२४	०९	०६	तुला २०:०६	मंगल सिंह में २६:१२, बुध मिथुन में ०९:२६, (D)
३४	२४	१२	श.	६०	००	–	–	चि.	१०	३३	०९	४०	वरि.	१४	३५	ब.	३१	३३	०५:२७	०७:१३	१७	२५	१०	०७	तुला	निर्जला एकादशी व्रत (निम्बार्क), ईद-उल-जुहा (बकरीद)।
३४	२५	१२	र.	०४	३८	०७	१८	स्वा.	१८	०८	१२	४२	परि.	१७	०८	बा.	०४	३८	०५:२७	०७:१३	१८	२६	११	०८	तुला	सूर्य मृगशीर्ष में ०७:१८ बजे, प्रदोष व्रत, (E)
३४	२७	१३	सो.	१०	२३	०९	३६	वि.	२५	१०	१५	३१	शि.	१९	१२	तै.	१०	२३	०५:२७	०७:१४	१९	२७	१२	०९	वृश्चिक ०८:५०	बुध आर्द्रा में १४:५४ बजे।
३४	२८	१४	मं.	१५	२३	११	३६	अनु.	३१	२३	१८	०२	सि.	२०	४२	व.	१५	२३	०५:२७	०७:१४	२०	२८	१३	१०	वृश्चिक	गण्डमूल प्रा. १८:०२, भद्रा ११:३६ बजे से (F)
३४	२९	१५	बु.	१९	२७	१३	१४	ज्ये.	३६	५०	२०	११	सा.	२१	३०	ब.	१९	२७	०५:२७	०७:१५	२१	२९	१४	११	धनु २०:११	सत्यव्रत, कबीरदास जयन्ती, (G) गुरु अस्त ११ जून

(A) शुक्र अश्विनी में ११:३३ बजे, विश्व तम्बाकु विरोधी दिवस। (B) दुर्गाष्टमी, मेलाक्षीर भवानी (कश्मीर), धूमावती जयन्ती। (C) काशी दशाश्वमेध स्नान समा. (D) भद्रा १५:३२ बजे से २८:४८ बजे तक, मंगल मघा में २६:१२ बजे, निर्जला एकादशी व्रत (स्मा.+वै.), गायत्री जयन्ती। (E) गुरु की वृद्धावस्था प्रा. सायं १९:१४ बजे। (F) २४:४८ बजे तक, पूर्णिमा व्रत, वट पूर्णिमा, वट सावित्री व्रत। (G) वैवस्वत मन्वादि, गुरु अस्त पश्चिम में सायं १९:१४ बजे।

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०१	०४	०३	०१	०२	००	११	१०	०४
अं.	१८	१७	२७	२३	०४	०२	०६	२९	२९
क.	३०	१३	५६	१७	१४	४१	२४	१०	१०
वि.	४९	१६	११	२०	३९	१०	२१	५२	५२
गति	५७	७५०	३२	१३१	१३	५८	०३	०३	०३
	२९	५४	०८	०२	२७	११	५१	११	११
नक्षत्र चरण	रोहि. ३	पू.फा. २	आश्ले. ४	रोहि. ४	मृग. ४	अश्वि. १	उ.भा. १	पू.भा. ३	उ.फा. १

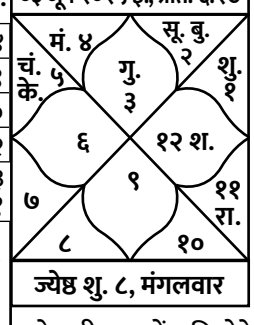

इस मास में सूर्य का गुरु एवं शुक्र से द्विर्द्वादश तथा मंगल-केतु एवं राहु से केन्द्रीय योग होने के कारण देश के कई भागों विशेषकर जम्मू कश्मीर, पञ्जाब, हरियाणा, उड़ीसा आदि प्रान्तों में आतंकवाद एवं प्राकृतिक प्रकोप से जन-धन की हानि होने की सम्भावना है। बुधोदय होने के कारण देश के कई भागों में भूकम्प आदि प्राकृतिक आपदा से भारी मात्रा में हानि होने की सम्भावना है।

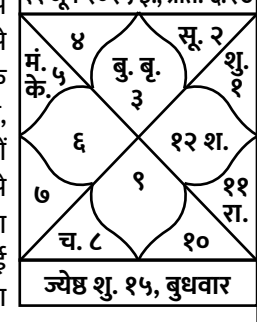

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०१	०७	०४	०२	०२	००	११	१०	०४
अं.	२६	२२	०२	०९	०६	१०	०६	२८	२८
क.	१०	५८	१६	५६	०३	३९	५२	४५	४५
वि.	०३	३८	५७	११	०४	१८	०५	२६	२६
गति	५७	७२९	३२	११८	१३	६०	०३	०३	०३
	२१	१८	५६	२३	३७	५४	१०	११	११
नक्षत्र चरण	मृग. १	ज्ये. २	म. १	आर्द्रा. १	मृग. ४	अश्वि. ४	उ.भा. २	पू.भा. ३	उ.फा. १

वि. सं. २०८२, शाके १९४७, आषाढ़ कृष्ण पक्ष (दि. १२ जून से २५ जून २०२५ ई.), उत्तरायण/दक्षिणायन, उत्तर गोल, ग्रीष्म/वर्षा ऋतु, के. अहर्गण ५१८०, अयनांश २४°/१२'/४७"

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	घं.	मि.	न.	घ.	प.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	कर.	घ.	प.	सूर्योदय	सूर्यास्त	रा.	प्र.	मु.	अं.	चन्द्रचार	विवरण (भारतीय स्टैण्डर्ड समय में)
३४	३०	१	गु.	२२	३३	१४	२८	मू.	४१	१५	२१	५७	शुभ	२१	३५	कौ.	२२	३३	०५:२७	०७:१५	ज्ये. २२	ज्ये. ३०	जि. १५	जून १२	धनु	गण्डमूल समा. २१:५७
३४	३०	२	शु.	२४	४०	१५	१९	पू.षा.	४४	४५	२३	२१	शु.	२०	५३	ग.	२४	४०	०५:२७	०७:१५	२३	३१	१६	१३	धनु	भद्रा २७:३६ बजे से, गुरु आर्द्रा में २३:२८ बजे, (A)
३४	३१	३	श.	२५	५०	१५	४७	उ.षा.	४७	१७	२४	२२	ब्र.	१९	२५	वि.	२५	४८	०५:२७	०७:१६	२४	३२	१७	१४	मकर	भद्रा १५:४७ बजे तक, चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय २२:१६।
३४	३२	४	र.	२६	०३	१५	५२	श्र.	४८	५३	२५	००	ऐं	१७	१०	बा.	२६	०३	०५:२७	०७:१६	२५	आषाढ़ ०१	१८	१५	मकर	मिथुन संक्रांति ०६:४४, संक्रान्ति पुण्यकाल १३:०८ तक।
३४	३२	५	सो.	२५	१२	१५	३२	धनि.	४९	२८	२५	१४	वै.	१४	१०	तै.	२५	१२	०५:२७	०७:१६	२६	०२	१९	१६	कुम्भ	बुध पुनर्वसु मे १६:५८, पञ्चक प्रा. १३:१० ।
३४	३३	६	मं.	२३	२०	१४	४७	शत.	४८	५८	२५	०२	विष.	१०	१८	व.	२३	२०	०५:२७	०७:१७	२७	०३	२०	१७	कुम्भ	भद्रा १४:४७ बजे से २६:१४ बजे तक।
३४	३३	७	बु.	२०	२०	१३	३५	पू.भा.	४७	२०	२४	२३	प्री. आयु.	०५ ५९	३३ ५३	ब.	२०	२०	०५:२७	०७:१७	२८	०४	२१	१८	मीन	भानुसप्तमी, कालाष्टमी।
३४	३३	८	गु.	१६	१०	११	५६	उ.भा.	४४	३२	२३	१७	सौ.	५३	१५	कौ.	१६	१०	०५:२८	०७:१७	२९	०५	२२	१९	मीन	गण्डमूल प्रा. २३:१७ ।
३४	३४	९	शु.	१०	५५	०९	५०	रे.	४०	४३	२१	४५	शो.	४५	४५	ग.	१०	५५	०५:२८	०७:१७	३०	०६	२३	२०	मेष	भद्रा २०:३७ बजे से, पञ्चक समा. २१:४५ ।
३४	३४	१० ११	श.	०४ ५७	३८ ३०	०७ २८	१९ २८	अश्वि.	३५	५५	१९	५०	अति.	३७	३२	वि.	०४	३८	०५:२८	०७:१८	३१	०७	२४	२१	मेष	वर्ष का सबसे बड़ा दिन, गण्डमूल समा. १९:५०, (B)
३४	३४	१२	र.	४९	४५	२५	२२	भ.	३०	२५	१७	३८	सु.	२८	४२	कौ.	२३	४०	०५:२८	०७:१८	आ. ०१	०८	२५	२२	वृष	बुध कर्क में २१:२८, सूर्य आर्द्रा में ०६:१९ बजे, (C)
३४	३४	१३	सो.	४१	४५	२२	१०	कृ.	२४	३३	१५	१७	धृ.	१९	३३	ग.	१५	४५	०५:२८	०७:१८	०२	०९	२६	२३	वृष	भद्रा २२:१० बजे से, सोम प्रदोष व्रत, (D)
३४	३३	१४	मं.	३१	१८	१८	००	रो.	१८	३३	१२	५४	शू.	१०	१५	वि.	०७	४३	०५:२९	०७:१८	०३	१०	२७	२४	मिथुन	भद्रा ०८:३४ बजे तक, बुध पुष्य में २९:०३ बजे।
३४	३३	३०	बु.	२६	२०	१६	०१	मृ.	१२	५८	१०	४०	ग. वृ.	०१ ५२	१८ ५५	चतु.	००	१५	०५:२९	०७:१८	०४	११	२८	२५	मिथुन	अमावस्या

(A) शुक्र भरणी में २१:१३ बजे। (B) भद्रा ०७:१९ बजे तक, विश्व योग दिवस, योगिनी एकादशी व्रत (स्मा.), सायन सूर्य कर्क में ०८:३१, वर्षा ऋतु एवं दक्षिणायन प्रा.। (C) योगिनी एकादशी व्रत (वै.+निम्बार्क), रा. आषाढ़ प्रारम्भ। (D) मासशिवरात्रि, रोहिणी व्रत।

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०२	११	०४	०२	०२	००	११	१०	०४
अं.	०३	०६	०६	२४	०७	१८	०७	२८	२८
क.	४८	५०	४३	१९	५२	५६	१४	२०	२०
वि.	२८	३२	४७	४९	२०	३७	०८	००	००
गति	५७ १७	८२६ ०८	३३ ४१	९९ ३२	१३ ४१	६३ ०४	०२ २६	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	मृग. ४ च.	उ.भा. २ च.	म. ३ च.	पुन. २ च.	आर्द्रा. १ च.	भर. २ च.	उ.भा. २ च.	पू.भा. ३ च.	उ.फा. १ च.

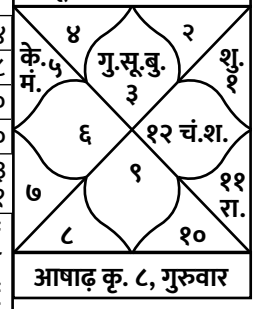

इस मास में पाँच गुरुवार हैं और मिथुन की संक्रान्ति रविवार को है, अतः घी, गुड़, रसादि पदार्थ एवं अन्नादि के भाव तेज रहेंगे। शेयर बाजार में घटाबढ़ी के बाद गिरावट का रुख रहेगा। पश्चिमी देशों में युद्ध विभीषिका से अशान्ति का वातावरण रहेगा।

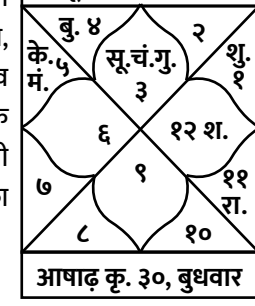

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०२	०२	०४	०३	०२	००	११	१०	०४
अं.	०९	०४	१०	०३	०९	२५	०७	२८	२८
क.	३२	०५	०७	२४	१४	१९	२६	००	००
वि.	०५	३१	४१	५०	३२	४२	४४	५५	५५
गति	५७ १६	८८३ ५३	३३ १३	८४ ३२	१३ ४१	६४ २२	०१ ५१	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	आर्द्रा. १ च.	मृग. ४ च.	मघा ४ च.	पुष्य. १ च.	आर्द्रा. १ च.	भर. ४ च.	उ.भा. २ च.	पू.भा. ३ च.	उ.फा. १ च.

वि. सं. २०८२, शाके १९४७, आषाढ़ शुक्ल पक्ष (दि. २६ जून से १० जुलाई २०२५ ई.), दक्षिणायन, उत्तर गोल, वर्षा ऋतु, के. अहर्गण ५१९४, अयनांश २४°/१२'/५०"

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	घं.	मि.	न.	घ.	प.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	कर.	घ.	प.	सूर्योदय	सूर्यास्त	रा.	प्र.	मु.	अं.	चन्द्रचार	विवरण (भारतीय स्टैण्डर्ड समय में)
३४	३३	१	गु.	१९	५०	१३	२५	आ.	१४	१५	०८	४६	ध्रु.	४५	२५	ब.	१९	५०	०५:२९	०७:१८	आषाढ़ ०५	आषाढ़ १२	ज़ि. २९	जून २६	कर्क २५:३९	शुक्र कृत्तिका में १२:१७ से, गुप्त नवरात्र प्रारम्भ, (A)
३४	३२	२	शु.	१४	३७	११	२०	पुन.	०४	४२	०७	२२	व्या.	३९	१२	कौ.	१४	३७	०५:२९	०७:१९	०६	१३	मु॰ ३	२७	कर्क	श्री जगन्नाथ रथयात्रा, मनोरथ द्वितीया, मु. मोहर्रम प्रा.।
३४	३२	३	श.	११	००	०९	५४	पु.	०२	४२	०६	३५	ह.	३४	२२	ग.	११	००	०५:३०	०७:१९	०७	१४	०२	२८	कर्क	भद्रा २१:२९ से, गण्डमूल प्रारम्भ ०६:३५ से, (B)
३४	३१	४	र.	१०	४५	०९	४८	आश्ले	०२	४०	०६	३४	व.	३१	१०	वि.	०९	२२	०५:३०	०७:१९	०८	१५	०३	२९	सिंह ०६:३४	शुक्र वृष में १४:०९, भद्रा ०९:१५ तक।
३४	३०	५	सो.	०९	१५	०९	२४	म.	०४	३७	०७	२१	सि.	२९	३५	बा.	०९	४५	०५:३०	०७:१९	०९	१६	०४	३०	सिंह	गण्डमूल समा. ०७:२१, मंगल पू.फा. में २०:१९ से।
३४	२९	६	मं.	१२	०५	१०	२१	पू.फा.	०८	२५	०८	५४	व्य.	२९	२७	तै.	१२	५०	०५:३१	०७:१९	१०	१७	०५	जुला. ०१	कन्या १५:२४	कुसुम्बाषष्ठी, कुमार षष्ठी।
३४	२९	७	बु.	१६	१०	११	५९	उ.फा.	१४	५०	११	०७	वरि.	३०	३७	व.	१६	१०	०५:३१	०७:१९	११	१८	०६	०२	कन्या	भद्रा ११:५९ से, २५:०० तक, शीतला सप्तमी।
३४	२८	८	गु.	२१	३०	१४	०७	ह.	२०	४७	१३	५०	परि.	३२	४०	ब.	२१	३०	०५:३१	०७:१९	१२	१९	०७	०३	तुला : २७:१९	दुर्गाष्टमी, शीतलाष्टमी, ओली जैन प्रा.।
३४	२६	९	शु.	२७	३०	१६	३२	चि.	२८	१४	१६	५०	शि.	३५	०७	कौ.	२७	३०	०५:३२	०७:१९	१३	२०	०८	०४	तुला	भड्डुलीनवमी, गुप्त नवरात्र समा.। गुरु उदय ०६ जुलाई
३४	२५	१०	श.	३४	३७	१८	५९	स्वा.	३५	४७	१९	५१	सि.	३७	४०	तै.	००	३५	०५:३२	०७:१९	१४	२१	०९	०५	तुला	गुप्त नवरात्र (पारणा), भगवान श्रीजगन्नाथ रथ यात्रा (C)
३४	२४	११	र.	३९	१५	२१	१५	वि.	४२	५२	२२	४२	सा.	३९	४५	व.	०६	३०	०५:३३	०७:१९	१५	२२	१०	०६	वृश्चिक १६:००	भद्रा ०८:०६ से २१:१५ तक, (D)
३४	२३	१२	सो.	४४	०२	२३	१०	अनु.	४९	०५	२५	११	शुभ	४१	१२	ब.	११	४७	०५:३३	०७:१८	१६	२३	११	०७	वृश्चिक	गण्डमूल प्रारम्भ २५:११, बुध आश्लेषा में ०५:४६ से (E)
३४	२१	१३	मं.	४७	४०	२४	३८	ज्ये.	५४	१२	२७	१५	शु.	४१	४७	कौ.	१६	००	०५:३४	०७:१८	१७	२४	१२	०८	धनु २७:१५	शुक्र रोहिणी में १६:२४ से, भौम प्रदोष व्रत, (F)
३४	२०	१४	बु.	५०	०७	२५	३७	मू.	५५	४०	२८	५०	ब्र.	४१	२५	ग.	१९	०५	०५:३४	०७:१८	१८	२५	१३	०९	धनु	भद्रा २५:३७ से, गण्डमूल समा. २८:५० (G)
३४	१८	१५	गु.	५१	२०	२६	०६	पू.षा.	६०	००	–	–	ऐं.	४०	०७	वि.	२०	५२	०५:३४	०७:१८	१९	२६	१४	१०	धनु	भद्रा १३:५५ तक, पूर्णिमा व्रत, सत्य व्रत, गुरुपूर्णिमा, (H)

(A) भगवान श्री जगन्नाथ नवयौवन दर्शन, चन्द्रदर्शन। (B) विनायक चतुर्थी । (C) परावर्तन। (D) सूर्य पुनर्वसु में ०५:४७ से, देवशयनी एकादशी व्रत (स.), चातुर्मास्यारम्भ, गुरु उदय पूर्व में २९:३० बजे, मोहर्रम। (E) वासुदेव द्वादशी। (F) जयापार्वती व्रत (प्रा.)। (G) गुरु बाल्यत्व समा. २९:३० बजे। (H) व्यास पूर्णिमा, सन्यासियों का चातुर्मास्यारम्भ, कोकिला व्रत, ओली जैन समा., पवन परीक्षा, शिवशयनोत्सव।

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०२	०५	०४	०३	०२	०१	११	१०	०४
अं.	१७	१९	१४	१३	११	०४	०७	२७	२७
क.	०९	३९	४४	०३	०३	०१	३८	३५	३५
वि.	५७	५०	१७	५२	५९	०९	०३	२९	२९
गति	५७ १२	७२१ ०१	३४ ५१	६२ २२	१३ ३९	६५ ५७	०१ ०४	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	आर्द्रा. ४ च.	हस्त. ३ च.	पू.फा. १ च.	पुष्य. ३ च.	आर्द्रा. २ च.	कृत्ति. ३ च.	उ.भा. २ च.	पू.भा. ३ च.	उ.फा. १ च.

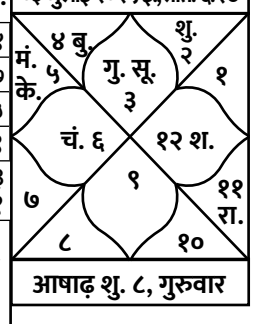

इस मास में सूर्य-गुरु की युति उनका बुध एवं शुक्र से द्विर्द्वादश तथा मंगल-केतु का शनि से षडष्टक योग होने के कारण वर्षा-तूफान आदि प्राकृतिक प्रकोप से फल एवं फसलों को भारी मात्रा में हानि होने की सम्भावना है। यूरोप में युद्ध से भारी मात्रा में जन-धन की हानि होने की सम्भावना है। वायुयान दुर्घटना से भी जन-धन की हानि होगी।

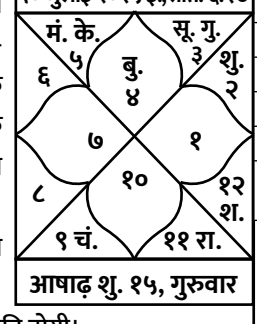

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०२	०८	०४	०३	०२	०१	११	१०	०४
अं.	२३	१४	१८	१८	१२	११	०७	२७	२७
क.	५०	११	५०	४७	३९	४५	४२	१३	१३
वि.	२०	१४	२१	४२	०९	५१	४२	१४	१४
गति	५७ १२	७५२ ५९	३५ २२	३८ २२	१३ ३३	६६ ४९	०० २२	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	पुन. २ च.	पू.षा. १ च.	पू.फा. २ च.	आश्ले. १ च.	आर्द्रा. २ च.	रोहि. १ च.	उ.भा. २ च.	पू.भा. ३ च.	उ.फा. १ च.

वि. सं. २०८२, शाके १९४७, श्रावण कृष्ण पक्ष (दि. ११ जुलाई से २४ जुलाई २०२५ ई.), दक्षिणायन, उत्तर गोल, वर्षा ऋतु, के. अहर्गण ५२०९, अयनांश २४°/१२'/५२"

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	घं.	मि.	न.	घ.	प.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	कर.	घ.	प.	सूर्योदय	सूर्यास्त	रा.	प्र.	मु.	अं.	चन्द्रचार	विवरण (भारतीय स्टैण्डर्ड समय में)
३४	१७	१	शु.	५१	२५	२६	०९	पू.षा.	००	२१	०५	५६	वै.	३७	५२	बा.	२१	३०	०५:३५	०७:१८	आषाढ़ २०	आषाढ़ २७	मो. १५	जुलाई ११	मकर १२:०८	हिण्डोले प्रारम्भ (ब्रज मण्डल), अशून्य शयन व्रत।
३४	१५	२	श.	५०	३०	२५	४७	उ.षा.	०२	३२	०६	३६	वि.	३४	५०	तै.	२१	०२	०५:३५	०७:१८	२१	२८	१६	१२	मकर	
३४	१३	३	र.	४८	३७	२५	०३	श्र.	०३	१२	०६	५३	प्री.	३१	००	व.	१९	३७	०५:३६	०७:१७	२२	२९	१७	१३	कुम्भ १८:५३	पञ्चक प्रा. १८:५३, भद्रा १३:२७ से २५:०३ तक, (A)
३४	११	४	सो.	४६	००	२४	००	धनि.	०३	०२	०६	४९	आयु.	२६	३५	ब.	१७	२५	०५:३६	०७:१७	२३	३०	१८	१४	कुम्भ	चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय २१:५६, (B)
३४	०९	५	मं.	४२	३५	२२	३९	शत.	०१	५२	०६	२६	सौ.	२१	३७	कौ.	१४	२२	०५:३७	०७:१७	२४	३१	१९	१५	मीन २३:५८	मङ्गलागौरीव्रत, नागपञ्चमी (बंगाल/बिहार)
३४	०७	६	बु.	३८	३२	२१	०२	पू.भा. उ.भा.	०० ५८	२२ ०२	०५ २८	४६ ५०	शो.	१५	५०	ग.	१०	४०	०५:३७	०७:१६	२५	श्रावण ०१	२०	१६	मीन	पञ्चक समाप्त २७:३९, भद्रा २१:०२ से, (C)
३४	०५	७	गु.	३३	४७	१९	०९	रे.	५५	०२	२७	३९	अति.	०९	१२	वि.	०६	१५	०५:३८	०७:१६	२६	०२	२१	१७	मेष २७:३८	भद्रा समा. ०८:०८, शीतला सप्तमी, (D)
३४	०३	८	शु.	२८	३०	१७	०२	अश्वि.	५१	३०	२६	१४	सु. धृ.	०२ ५५	५५ ४५	बा.	०१	१२	०५:३८	०७:१६	२७	०३	२२	१८	मेष	गण्डमूल समा. २६:१४, बुध वक्री १०:१४ से, शीतलाष्टमी।
३४	००	९	श.	२२	३७	१४	४२	भ.	४७	१५	२४	३७	शू.	४८	१०	ग.	२२	३७	०५:३९	०७:१५	२८	०४	२३	१९	मेष	भद्रा २५:२९ से, सूर्य पुष्य में २९:२२ से, ।
३३	५८	१०	र.	१६	२२	१२	१३	कृ.	४३	०२	२२	५३	ग.	४०	२०	वि.	१६	२२	०५:४०	०७:१५	२९	०५	२४	२०	वृष ०६:११	भद्रा १२:१३ तक, केतु उ.फा. में १७:१५ से, (E)
३३	५६	११	सो.	०९	५७	०९	३९	रो.	३८	३७	२१	०७	वृ.	३२	२५	बा.	०९	५७	०५:४०	०७:१४	३०	०६	२५	२१	वृष	रोहिणी व्रत, कामिका एकादशी व्रत (स.), (F)
३३	५३	१२ १३	मं.	०३ ५७	३२ ०२	०७ २८	०६ ४०	मृग.	३४	२०	१९	२५	ध्रु.	२४	३७	तै.	०३	३२	०५:४१	०७:१४	३१	०७	२६	२२	मिथुन ०८:१५	भद्रा २८:४० से, मङ्गलागौरी व्रत, भौम प्रदोष व्रत, (G)
३३	५१	१४	बु.	५२	००	२६	२९	आर्द्रा	३०	३२	१७	५४	व्या.	१७	१२	वि.	२४	३७	०५:४१	०७:१४	श्रावण ०१	०८	२७	२३	मिथुन	भद्रा १५:३२ तक, मंगल उ.फा में ०८:३७ से, (H)
३३	४८	३०	गु.	४७	०२	२४	४१	पुन.	२७	३२	१६	४३	ह.	१०	२०	चतु.	१९	३५	०५:४२	०७:१३	०२	०९	२८	२४	कर्क १०:५८	हरियाली अमावस्या।

(A) शनि वक्री ०९:३६ (B) जयापार्वती व्रत समा., श्रावण सोमवार व्रत। (C) गण्डमूल प्रा. २८:५०, कर्क संक्रान्ति १७:३२, संक्रान्ति पुण्यकाल, सूर्योदय से १७:३२ तक (D) भानुसप्तमी, कालाष्टमी। (E) शुक्र मृगशिरा में १२:५५ से। (F) श्रावण सोमवार व्रत। (G) सायन सूर्य सिंह में १९:०० । (H) रा. श्रावण प्रारम्भ, मासशिवरात्रि।

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०३	००	०४	०३	०२	०१	११	१०	०४
अं.	०१	०१	२३	२१	१४	२०	०७	२६	२६
क.	२८	३८	३५	२१	२६	४५	४१	४७	४७
वि.	०३	४८	५४	३४	४४	२५	५९	४७	४७
गति	६१ १५	८४२ ३४	३५ ५७	०३ १२	१३ २२	६७ ५४	२६वं.००	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	४ च. पुन.	१ च. अश्वि.	४ च. पू.फा.	२ च. अश्वि.	३ च. आर्द्रा.	४ च. रोहि.	२ च. उ.भा.	३ च. पू.भा.	१ च. उ.भा.

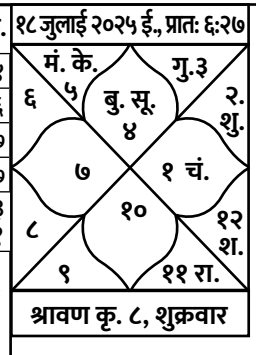

श्रावण कृ. ८, शुक्रवार

इस मास में पाँच शुक्रवार एवं पाँच शनिवार हैं और कर्क संक्रान्ति बुधवार को है, अत: प्रजा में रोग, परस्पर द्वेष चोर भय आदि से अशान्ति का वातावरण रहेगा। तूफान से खड़ी फसल एवं वृक्षों के टूटने से भारी मात्रा में जन-धन की हानि होने की सम्भावना है। शेयर बाजार में घटा-बढ़ी का दौर रहेगा।

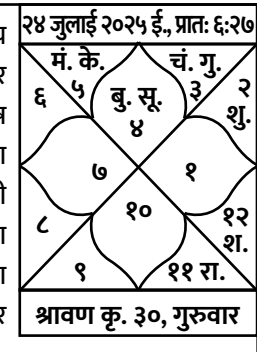

श्रावण कृ. ३०, गुरुवार

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०३	०२	०४	०३	०२	०१	११	१०	०४
अं.	०७	२७	२७	१९	१५	२७	०७	२६	२६
क.	११	२१	१३	५९	४६	३५	३७	२८	२८
वि.	४७	३०	०५	३२	१८	१९	१२	४३	४३
गति	५६ १९	८९१ ४४	३६ २३	२५वं. २०	१३ ११	६८ ३६	०१वं. ०३	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	२ च. पुष्य.	३ च. पुन.	१ च. उ.फा.	१ च. अश्वि.	३ च. आर्द्रा.	२ च. मृग.	२ च. उ.भा.	२ च. पू.भा.	४ च. पू.फा.

वि. सं. २०८२, शाके १९४७, श्रावण शुक्ल पक्ष (दि. २५ जुलाई से ०९ अगस्त २०२५ ई.), दक्षिणायन, उत्तर गोल, वर्षा ऋतु, के. अहर्गण ५२२३, अयनांश २४°/१२'/५५"

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	घं.	मि.	न.	घ.	प.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	कर.	घ.	प.	सूर्योदय	सूर्यास्त	रा.	प्र.	मु.	अं.	चन्द्रचार	विवरण (भारतीय स्टैण्डर्ड समय में)
३३	४५	१	शु.	४३	४७	२३	१३	पु.	२५	४७	१६	०१	व. सि.	०४ ५९	२५ ०७	किं.	१५	४०	०५:४२	०७:१३	श्रावण ०३	श्रावण १०	मो. २९	जु. २५	कर्क	गण्डमूल प्रा. १६:०१ ।
३३	४३	२	श.	४२	३०	२२	४३	आश्ले.	२५	२२	१५	५२	व्य.	५५	५७	बा.	१३	०७	०५:४३	०७:१२	०४	११	३०	२६	सिंह १५:५२	शुक्र मिथुन में ०८:५६ से, चन्द्र दर्शन, सिन्धारा ।
३३	४०	३	र.	४२	१२	२२	४२	म.	२६	४०	१६	२३	वरि.	५३	४५	तै.	११	५०	०५:४३	०७:१२	०५	१२	सू. ०१	२७	सिंह	गण्डमूल समा. १६:२३, हरियाली तीज, मु. सफ्फर प्रा.(A)
३३	३७	४	सो.	४४	१२	२३	२५	पू.फा.	२९	१२	१७	३५	परि.	५२	५५	व.	१३	०५	०५:४४	०७:११	०६	१३	०२	२८	कन्या २३:५९	मङ्गल कन्या में १९:५९, भद्रा १०:५८ से २३:२५ तक, (B)
३३	३४	५	मं.	४७	३५	२४	४७	उ.फा.	३४	१५	१९	२७	शि.	५३	१७	ब.	१५	४०	०५:४५	०७:११	०७	१४	०३	२९	कन्या	वक्री बुध पुष्य में १६:२९, मंगला गौरी व्रत, (C)
३३	३१	६	बु.	५२	२२	२६	४२	ह.	४०	२०	२१	५३	सि.	५४	४७	कौ.	१९	५०	०५:४५	०७:१०	०८	१५	०४	३०	कन्या	कल्कि जयन्ती, वर्ण षष्ठी।
३३	२८	७	गु.	५८	०२	२८	५९	चि.	४७	२०	२४	४२	सा.	५६	५५	ग.	२५	०५	०५:४६	०७:०९	०९	१६	०५	३१	तुला ११:१५	भद्रा २८:५६ से, भानु सप्तमी, शीतला सप्तमी, (D)
३३	२५	८	शु.	६०	००	–	–	स्वा.	५४	४५	२७	४०	शुभ.	५९	२०	वि.	३१	०२	०५:४६	०७:०९	१०	१७	०६	अ. ०१	तुला	भद्रा १८:११ तक, दुर्गाष्टमी, मेला श्री नयना देवी, (E)
३३	२२	८	श.	०३	०२	०७	२४	वि.	६०	००	–	–	शु.	६०	००	ब.	०४	००	०५:४७	०७:०८	११	१८	०७	०२	वृश्चिक २३:५२	सूर्य आश्लेषा में २८:०८ ।
३३	१९	९	र.	०९	१७	०९	४२	वि.	०२	००	०६	३५	शु.	०१	३२	कौ.	०९	१७	०५:४७	०७:०८	१२	१९	०८	०३	वृश्चिक	
३३	१६	१०	सो.	१४	४५	११	४२	अनु.	०८	३०	०९	१२	ब्र.	०३	१०	ग.	१४	४५	०५:४८	०७:०६	१३	२०	०९	०४	वृश्चिक	भद्रा २४:३१ से, गण्डमूल प्रा. ०९:१२, (F)
३३	१२	११	मं.	१८	३०	१३	१३	ज्ये.	१३	५५	११	२३	ऐं.	०३	५७	वि.	१८	३०	०५:४९	०७:०६	१४	२१	१०	०५	धनु ११:२२	भद्रा १३:१३ तक, मङ्गला गौरी व्रत, (G)
३३	०९	१२	बु.	२०	५०	१४	०९	मू.	१७	५५	१२	५९	वै.	०३	४०	बा.	२०	५०	०५:४९	०७:०५	१५	२२	११	०६	धनु	गण्डमूल समा. १२:५९, प्रदोष व्रत।
३३	०६	१३	गु.	२१	०६	१४	२८	पू.षा.	२०	२७	१४	०१	वि. प्री.	०४ ५९	४० ३२	तै.	२१	३५	०५:५०	०७:४४	१६	२३	१२	०७	मकर २०:११	
३३	०२	१४	शु.	२०	५५	१४	१२	उ.षा.	२१	३५	१४	२८	आयु.	५५	४५	व.	२०	५५	०५:५५	०७:०३	१७	२४	१३	०८	मकर	भद्रा १४:१२ से २५:५२ तक, (H)
३२	५९	१५	श.	१८	४५	१३	२५	श्र.	२१	२०	१४	२३	सौ.	५१	००	ब.	१८	५५	०५:५१	०७:०३	१८	२५	१४	०९	कुम्भ २६:११	पञ्चक प्रा. २६:११, सत्यव्रत, रक्षाबन्धन, (I)

(A) मधुश्रवा तृतीया, स्वर्ण गौरी व्रत। (B) विनायक चतुर्थी व्रत, दूर्वा गणपति व्रत, श्रावण सोमवार व्रत। (C) नाग पञ्चमी, श्रावणी उपाकर्म ऋग् यजुहिरण्यकेशी श्रावणी। (D) गोस्वामी तुलसी दास जयन्ती, शुक्र आर्द्रा में २७:४४ । (E) मेला ज्वाला देवी, मेला चिन्तपूर्णी। (F) श्रावण सोमवार व्रत। (G) पुत्रदा (पवित्रा) एकादशी व्रत (स.)। (H) पूर्णिमा व्रत। (I) हयग्रीव अवतार, अमरनाथ दर्शन, हिण्डोले समाप्त (ब्रजमण्डल), श्रावणी उपाकर्म, संस्कृत दिवस।

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०३	०६	०५	०३	०२	०२	११	१०	०४
अं.	१५	२१	०२	१४	१७	०७	०७	२६	२३
क.	४८	२२	४३	०१	४३	५७	२३	००	००
वि.	०६	२१	३४	२४	०९	१९	२५	०६	०६
गति	५७ २४	७१९ ३०	३६ ५९	४३ वक्री ५६	१२ ४८	७७ ३०	५५ वक्री ०१	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	पुष्य ४ च.	विशा. १ च.	उ.फा. २ च.	पुष्य. ४ च.	आर्द्रा. ४ च.	आर्द्रा. १ च.	उ.भा. २ च.	पू.भा. २ च.	पू.फा. ४ च.

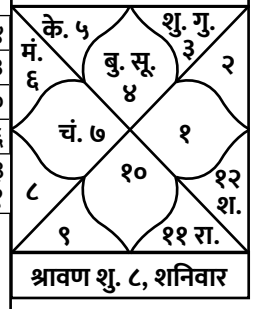

श्रावण शु. ८, शनिवार

इस मास में सूर्य-बुध की युति उनका मंगल-केतु तथा गुरु से द्विर्द्वादश एवं मासान्त में मंगल-शनि का समसप्तक योग होने के कारण उग्रवाद, आतंकवाद, तूफान, बाढ़, भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोप से भारी मात्रा में जन-धन की हानि होने की सम्भावना है। पक्ष एवं विपक्ष में भारी टकराव होने की सम्भावना है।

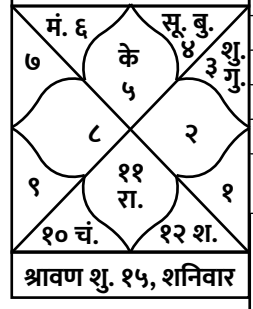

श्रावण शु. १५, शनिवार

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०३	०९	०५	०३	०२	०२	११	१०	०४
अं.	२२	१८	०७	१०	१९	१६	०७	२५	२५
क.	३०	५२	०४	१९	११	०६	०७	३७	३७
वि.	१७	४०	१८	०७	२६	२६	३०	५०	५०
गति	५७ ३९	७९६ ५९	३७ २६	११ वक्री ४६	१२ २७	७० ०९	३२ वक्री ०२	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	आश्ले. २ च.	श्रवण ३ च.	उ.फा. ४ च.	पुष्य. ३ च.	आर्द्रा. ४ च.	आर्द्रा. ३ च.	उ.भा. २ च.	पू.भा. २ च.	पू.फा. ४ च.

वि. सं. २०८२, शाके १९४७, भाद्रपद कृष्ण पक्ष (दि. १० अगस्त से २३ अगस्त २०२५ ई.), दक्षिणायन, उत्तर गोल, वर्षा/शरद् ऋतु, के. अहर्गण ५२३९, अयनांश २४°/१२'/५७"

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	घं.	मि.	न.	घ.	प.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	कर.	घ.	प.	सूर्योदय	सूर्यास्त	रा.	प्र.	मु.	अं.	चन्द्रचार	विवरण (भारतीय स्टैण्डर्ड समय में)
३२	५६	१	र.	१५	४७	१२	१०	ध.	२०	०२	१३	५२	शो.	४५	२७	कौ.	१५	४७	०५:५१	०७:०२	श्रावण १९	श्रावण २६	स. १५	अग. १०	कुम्भ	अशून्य शयन व्रत
३२	५२	२	सो.	११	१०	१०	३४	शत	१७	५०	१३	००	अति.	३७	५०	ग.	११	२०	०५:५२	०७:०१	२०	२७	१६	११	कुम्भ	भद्रा २१:३७ से, बुध मार्गी १२:५९ से।
३२	४९	३	मं.	०७	००	०८	४१	पू.भा.	१४	५६	११	५२	सु.	३२	३०	वि.	०७	००	०५:५३	०७:००	२१	२८	१७	१२	मीन	भद्रा ०८:४१ तक, शुक्र पुनर्वसु में १४:०८ से, (A)
३२	४५	४ ५	बु.	०१ ५६	२२ १७	०६ २८	३६ २४	उ.भा.	१३	४२	१०	३२	धृ.	२५	३०	बा.	०१	४७	०५:५३	०६:५९	२२	२९	१८	१३	मीन	गण्डमूल प्रा. १०:३२, मंगल हस्त में २२:३२ से।
३२	४१	६	गु.	५०	३२	२६	०७	रे.	०८	००	०९	०६	शू.	१८	१५	ग.	२३	२५	०५:५४	०६:५८	२३	३०	१९	१४	मेष	भद्रा २६:०७ से, पञ्चक समा. ०९:०६, (B)
३२	३८	७	शु.	४४	२५	२३	५०	अश्वि.	०३	५०	०७	३६	गं.	१०	५५	वि.	१७	४२	०५:५४	०६:५७	२४	३१	२०	१५	मेष	भद्रा १२:५९ तक, गण्डमूल समा. ०७:३६, (C)
३२	३४	८	श.	३८	४५	२१	३५	भ. कृ.	०० ५६	२५ २२	०६ २८	०५ ३८	वृ. ध्रु.	०३ ५६	३५ २२	बा.	११	५७	०५:५५	०६:५७	२५	भाद्रपद ०१	२१	१६	वृष	श्री कृष्ण जन्माष्टमी (वै.), सिंह संक्रान्ति २५:५२ ।
३२	३०	९	र.	३३	४५	१९	२५	रो.	५३	२५	२७	१७	व्या.	४९	२२	तै.	१८	५५	०५:५५	०६:५६	२६	०२	२२	१७	वृष	सूर्य मघा में, (D)
३१	२७	१०	सो.	२९	०२	१७	२३	मृग.	५०	२५	२६	०६	हर्ष.	४२	३७	व.	०१	०५	०५:५६	०६:५५	२७	०३	२३	१८	मिथुन	भद्रा ०६:२२ से, १७:२३ तक।
३२	२३	११	मं.	२४	०२	१५	३३	आ.	५०	३०	२५	०८	वज्र	३६	२५	बा.	२४	०२	०५:५६	०६:५४	२८	०४	२४	१९	मिथुन	अजा एकादशी व्रत (स.)।
३२	१९	१२	बु.	२०	०२	१३	५८	पुन.	४६	१५	२४	२७	सि.	३०	३५	तै.	२०	०५	०५:५७	०६:५३	२९	०५	२५	२०	कर्क	शुक्र कर्क में २५:१९ से, प्रदोष व्रत।
३२	१५	१३	गु.	१७	००	१२	४५	पु.	४५	२७	२४	०८	व्य.	२५	४२	व.	१७	००	०५:५७	०६:५२	३०	०६	२६	२१	कर्क	भद्रा १२:४५ से २४:१७ तक, गण्डमूल प्रा. २४:०८ से, (E)
३१	११	१४	शु.	१४	५५	११	५६	आश्ले.	४५	४५	२४	१६	वरि.	२१	३२	श.	१४	५५	०५:५८	०६:५१	३१	०७	२७	२२	सिंह	सायनसूर्य कन्या में २६:०४, शरद् ऋतु प्रा., (F)
३२	०८	३०	श.	१४	०५	११	३६	म.	४७	२०	२४	५४	परि.	२०	५२	नाग	१४	०५	०५:५८	०६:५०	भाद्रपद ०१	०८	२८	२३	सिंह	गण्डमूल समा. २४:५५, (G)

(A) बहुला चतुर्थी कज्जली तृतीया, चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय २१:०१, गुरु पुनर्वसु में २९:०५ बजे। (B) बलराम जयन्ती, हलषष्ठी, चन्दन षष्ठी, चम्पा षष्ठी। (C) कालाष्टमी, स्वतन्त्रता दिवस, श्री कृष्ण जन्माष्टमी (स्मा.), श्री महाकाली जयन्ती। (D) सिंह संक्रान्ति पुण्यकाल मध्याह्न तक, गोगा नवमी, गोकुलोत्सव, रोहिणी व्रत। (E) मास शिवरात्रि, पर्युषण पर्वारम्भ, डाकिनी चतुर्दशी, बुध आश्लेषा में २८:२३ । (F) अमावस्या श्राद्धादि (G) शुक्र पुष्य में २०:३६ से, कुशोत्पाटिनी अमावस्या, अमावस्या स्नानदानादि, शनैश्चरी अमावस्या, रा. भाद्रपद प्रारम्भ।।

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०३	००	०५	०३	०२	०२	११	१०	०४
अं.	२९	२६	११	११	२०	२४	०६	२५	२५
क.	१३	५२	२८	२०	३७	२०	४७	१५	१५
वि.	१९	३५	०९	४८	००	०२	२४	३५	३५
गति	५८ ३९	८५७ २४	३८ १३	३० मा ००	१२ ०२	७० ४७	०३ व ०६	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	आश्ले. ४ च.	कृत्ति. १ च.	हस्त. १ च.	पुष्य. ३ च.	पुन. १ च.	पुन. २ च.	उ.भा. २ च.	पू.भा. २ च.	पू.फा. ४ च.

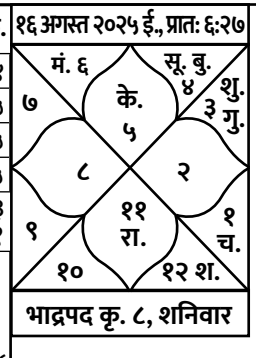

इस मास में पाँच रविवार हैं और सिंह संक्रान्ति शनिवार को है, अतः प्रजा में रोग, अशान्ति एवं भय व्याप्त रहेगा। आँधी, तूफान आदि प्राकृतिक आपदा से खड़ी फसलों को नुकसान होगा। वर्षा की कमी से भी कृषकवर्ग चिन्तित रहेगा। अन्न, सुवर्ण, अलसी में तेजी रहेगी।

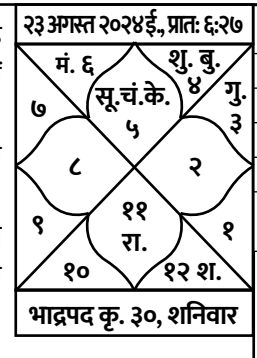

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०४	०४	०५	०३	०२	०३	११	१०	०४
अं.	०५	०३	१५	१८	२१	०२	०६	२४	२४
क.	५७	२२	५५	०२	५९	३७	२३	५३	५३
वि.	३५	०७	१५	५४	२४	५१	३२	२०	२०
गति	५७ ४९	७९१ २९	३८ २१	७५ ३७	०१ ३४	७१ २१	०३ व ३७	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	मघा. २ च.	मघा. २ च.	हस्त. २ च.	आश्ले. १ च.	पुन. १ च.	पुन. ४ च.	उ.भा. १ च.	पू.भा. २ च.	पू.फा. ४ च.

वि. सं. २०८२, शाके १९४७, भाद्रपद शुक्ल पक्ष (दि. २४ अगस्त से ०७ सितम्बर २०२५ ई.), दक्षिणायन, उत्तर गोल, शरद् ऋतु, के. अहर्गण ५२५३, अयनांश २४°/१२'/५९"

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	घं.	मि.	न.	घ.	प.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	कर.	घ.	प.	सूर्योदय	सूर्यास्त	रा.	प्र.	मु.	अं.	चन्द्रचार	विवरण (भारतीय स्टैण्डर्ड समय में)
३२	०४	१	र.	१४	३५	११	४९	पू.फा.	५०	१७	२६	०६	शि.	१६	१५	ब.	१४	३५	०५:५९	०६:४९	भाद्रपद ०२	भाद्रपद ०९	स. २९	अग. २४	सिंह	चन्द्रदर्शन
३२	००	२	सो.	१६	२७	१२	३५	उ.फा.	५४	३५	२७	५०	सि.	१५	१५	कौ.	१६	२७	०६:००	०६:४८	०३	१०	रे ०१	२५	कन्या ०८:२८	मु. रविलावल प्रा.।
३१	५६	३	मं.	१९	४७	१३	५५	ह.	६०	००	–	–	सा.	१५	२०	ग.	१९	४७	०६:००	०६:४७	०४	११	०२	२६	कन्या	भद्रा २६:४६ से, हरतालिका तीज, (A)
३१	५२	४	बु.	२४	१७	१५	४४	ह.	००	०७	०६	०४	शुभ	१६	२२	वि.	२४	२०	०६:०१	०६:४५	०५	१२	०३	२७	तुला १९:२१	भद्रा १५:४५ तक, जैन संवत्सरी चतुर्थी पक्ष।
३१	४८	५	गु.	२९	५०	१७	५७	चि.	०६	४५	०८	४३	शु.	१८	१२	बा.	२९	५०	०६:०१	०६:४४	०६	१३	०४	२८	तुला	ऋषि पञ्चमी, जैन संवत्सरी पञ्चमी पक्ष (B)
३१	४४	६	शु.	३५	५०	२०	२२	स्वा.	१४	००	११	३८	ब्र.	२०	२७	कौ.	०२	४७	०६:०२	०६:४३	०७	१४	०५	२९	तुला	स्कन्द षष्ठी, सूर्य षष्ठी, बलदेव छठ, लोलार्क षष्ठी,(C)।
३१	४०	७	श.	४१	५०	२२	४६	वि.	२१	२७	१४	३७	ऐं.	०९	०७	ग.	०८	४२	०६:०२	०६:४२	०८	१५	०६	३०	वृश्चिक ०७:५२	बुध सिंह में १६:४५, भद्रा २२:४७ से, (D)
३१	३६	८	र.	४७	१७	२४	५८	अनु.	२८	३०	१७	२७	वै.	२४	५०	वि.	१४	४०	०६:०३	०६:४१	०९	१६	०७	३१	वृश्चिक	भद्रा ११:४५ तक, गण्डमूल प्रा. १७:२७, (E)
३१	३२	९	सो.	५१	४०	२६	४३	ज्ये.	३४	४०	१९	५५	वि.	२६	१०	बा.	१९	४०	०६:०३	०६:४०	१०	१७	०८	सि. ०१	धनु १९:५५	श्री चन्द नवमी, अदुःख नवमी, मेला श्री रामदेव जी (राज.)।
३१	२८	१०	मं.	५४	३२	२७	५३	मू.	३९	२७	२१	५१	प्री.	२६	१७	तै.	२२	४७	०६:०४	०६:३९	११	१८	०९	०२	धनु	गण्डमूल समा. २१:५१
३१	२४	११	बु.	५५	४५	२८	२२	पू.षा.	४२	४०	२३	०८	आ.	२५	३२	व.	२५	२२	०६:०४	०६:३८	१२	१९	१०	०३	मकर २९:२१	भद्रा १६:१३ से २८:२२ तक, मंगल चित्रा में १७:५२, (F)
३१	२०	१२	गु.	५५	०७	२८	०८	उ.षा.	४४	१५	२३	४३	सौ.	२३	१०	ब.	२५	४०	०६:०५	०६:३७	१३	२०	११	०४	मकर	पार्श्वपरिवर्तिनी एकादशी व्रत (नि.), (G)
३१	१६	१३	शु.	५२	५०	२७	१३	श्र.	३३	५२	२३	३८	शो.	१९	२७	कौ.	२४	१२	०६:०५	०६:३५	१४	२१	१२	०५	मकर	ओणम, प्रदोष व्रत, शिक्षक दिवस ।
३१	११	१४	श.	४९	००	२५	४१	ध.	४२	०५	२२	५५	अति.	१४	२५	ग.	२१	०७	०६:०५	०६:३४	१५	२२	१३	०६	कुम्भ ११:२१	भद्रा २५:४१ से बुध पू.फा. में १६:४३ से, (H)
३१	०७	१५	र.	४३	५०	२३	३८	शत.	३८	५७	२१	४१	सु.	०८	१०	वि.	१६	३२	०६:०६	०६:३३	१६	२३	१४	०७	कुम्भ	भद्रा १२:४३ तक, पूर्णिमा व्रत, सत्यव्रत, (I)

(A) सामवेदियों का उपाकर्म, वराह जयन्ती, कलङ्क चतुर्थी, पत्थर चौथ,चन्द्र दर्शन निषेध, विनायक चतुर्थी व्रत, चन्द्रास्त २०:२९ । (B) उत्कलीय नवान्न भक्षण । (C) ललिता षष्ठी, मेला देवछठ (व्रजमण्डल) स्वामी कार्तिकेय दर्शन। (D) सूर्य पू.फा. में २१:४४ से, बुध मघा में १६:४५ से, मुक्ताभरण सप्तमी। (E) दुर्गाष्टमी, राधाष्टमी, दूर्वाष्टमी, महालक्ष्मी व्रतारम्भ । (F) शुक्र आश्लेषा में २३:५१ से, पार्श्वपरिवर्तिनी एकादशी व्रत (स्मा.+वै.)। (G) वामन जयन्ती, भुवनेश्वर जयन्ती। (H) पञ्चक प्रा. ११:२१ से, अनन्त चतुर्दशी, गणपति विसर्जन (I) महालयारम्भ, पूर्णिमा का श्राद्ध, प्रौष्ठपदी पूर्णिमा श्राद्ध, चन्द्रग्रहण, अगस्त्य अर्घ्यदान ।

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०४	०७	०५	०४	०२	०३	११	१०	०४
अं.	१३	११	२१	०१	२३	१२	०५	२४	२४
क.	४१	११	०४	०२	२८	११	५२	२७	२७
वि.	०४	००	२५	०९	५७	२२	२३	५३	५३
गति	५८ ०१	७१३ २९	३८ ५२	१०९ ३५	१० ५४	७१ ५६	०५ ०५	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	पू.फा. २	अनु. ३	हस्त. ४	मघा. १	पुन. २	पुष्य. ३	उ.भा. १	पू.भा. २	पू.फा. ४

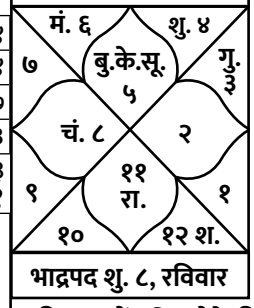

इस मास में सूर्य-बुध-केतु की युति उनका मंगल एवं शुक्र से द्विर्द्वादश राहु से समसप्तक तथा शनि से षडष्टक योग होने के कारण उड़ीसा एवं समीपवर्ती प्रान्तों में आँधी तूफान आदि प्राकृतिक आपदा से जन-धन की हानि होने की सम्भावना है। देश के कई भागों में आतंकवादी, उग्रवादी एवं अग्निकाण्ड की घटनायें घटित होने की सम्भावना है।

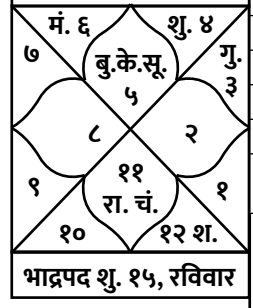

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०४	१०	०५	०४	०२	०३	११	१०	०४
अं.	२०	११	२५	१४	२४	२०	०५	२४	२४
क.	२७	०२	३८	२६	४२	३६	२२	०५	०५
वि.	४८	३७	१२	३३	४२	५४	३०	३८	३८
गति	५८ ११	८३० ४२	३९ १८	१०६ २१	१० १५	७२ २६	०५ २३	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	पू.फा. ३	शत. २	वि. १	पू.फा. १	पुन. २	आश्ले. २	उ.भा. १	पू.भा. २	पू.फा. ४

वि. सं. २०८२, शाके १९४७, आश्विन कृष्ण पक्ष (दि. ०८ सितम्बर से २१ सितम्बर २०२५ ई.), दक्षिणायन, उत्तर गोल, शरद् ऋतु, के. अहर्गण ५२६८, अयनांश २४°/१३'/०१"

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	घं.	मि.	न.	घ.	प.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	कर.	घ.	प.	सूर्योदय	सूर्यास्त	रा.	प्र.	मु.	अं.	चन्द्रचार	विवरण (भारतीय स्टैण्डर्ड समय में)
३१	०३	१	सो.	३७	४५	२१	१२	पू.भा.	३४	५०	२०	०२	धृ. शू.	०१ ५३	३० ०५	बा.	१०	५५	०६:०६	०६:३२	भाद्रपद १७	भाद्रपद २४	२. १५	सि. ०८	मीन १४:२९	प्रतिपदा का श्राद्ध, अशून्य शयन व्रत।
३०	५९	२	मं.	३०	५५	१८	२९	उ.भा.	३०	००	१८	०७	गं.	४४	३७	तै.	०४	२२	०६:०७	०६:३१	१८	२५	१६	०९	मीन	भद्रा २९:०४ से, गण्डमूल प्रा. १८:०७ से (A)
३०	५५	३	बु.	२३	४७	१५	३८	रे.	२४	५०	१६	०३	वृ.	३६	००	वि.	२३	४७	०६:०७	०६:३०	१९	२६	१७	१०	मेष १६:०३	भद्रा १५:३८ तक, पञ्चक समा. १६:०३, (B)
३०	५१	४	गु.	१६	३५	१२	४६	अश्वि.	१९	३५	१३	५८	ध्रु.	२७	२२	बा.	१६	३५	०६:०८	०६:२८	२०	२७	१८	११	मेष	गण्डमूल समा. १३:५८, भरणी श्राद्ध, (C)
३०	४६	५	शु.	०९	३७	०९	५९	भ.	१४	३७	११	५९	व्या.	१८	४७	तै.	०९	३७	०६:०८	०६:२७	२१	२८	१९	१२	वृष १७:३०	षष्ठी का श्राद्ध ।
३०	४२	६ ७	श.	०३ ५७	०५ २०	०७ २९	२३ ०५	कृ.	१०	०५	१०	११	ह.	१०	५७	व.	०३	०५	०६:०९	०६:२६	२२	२९	२०	१३	वृष	मंगल तुला में २१:२२, भद्रा ०७:२२ से १८:१२ तक, (D)
३०	३८	८	र.	५२	२२	२७	०६	रो.	०६	२०	०८	४१	व्रज सि.	०३ ५६	३५ ५५	बा.	२४	४५	०६:०९	०६:२५	२३	३०	२१	१४	मिथुन २०:०३	महालक्ष्मी व्रत, कालाष्टमी, अष्टमी का श्राद्ध, (E)
३०	३४	९	सो.	४८	२२	२५	३१	मृ.	०३	२२	०७	३१	व्य.	५१	००	तै.	२०	१५	०६:१०	०६:२३	२४	३१	२२	१५	मिथुन	बुध कन्या में ११:०६, (F)
३०	३०	१०	मं.	४५	३०	२४	२२	आ.	०१	३०	०६	४६	वरि.	४६	००	व.	१६	५०	०६:१०	०६:२२	२५	आश्विन ०१	२३	१६	कर्क २४:२८	भद्रा १२:५४ से २४:२२ तक, दशमी का श्राद्ध, (G)
३०	२५	११	बु.	४३	४२	२३	४०	पुन.	००	३७	०६	२६	परि.	४१	४७	ब.	१४	२७	०६:११	०६:२१	२६	०२	२४	१७	कर्क	एकादशी का श्राद्ध, इन्दिरा एकादशी व्रत (स्मा.+वै) (H)
३०	२१	१२	गु.	४३	०५	२३	२५	पु.	००	५२	०६	३२	शि.	३८	३५	कौ.	१३	१५	०६:११	०६:२०	२७	०३	२५	१८	कर्क	गण्डमूल प्रा.०६:३२, (I)
३०	१७	१३	शु.	४३	३२	२३	३७	आश्ले.	०२	१२	०७	०५	सिद्ध	३६	१२	ग.	१३	०७	०६:१२	०६:१९	२८	०४	२६	१९	सिंह ०७:०५	भद्रा २३:३७ से, प्रदोष व्रत, त्रयोदशी का श्राद्ध, मघा श्राद्ध।
३०	१३	१४	श.	४५	१२	२४	१७	म.	०४	४२	०८	०५	सा.	३४	४५	वि.	१४	१५	०६:१२	०६:१७	२९	०५	२७	२०	सिंह	भद्रा ११:५४ तक, गण्डमूल समा. ०८:०५, (J)
३०	०८	३०	र.	४७	५७	२५	२४	पू.फा.	०८	१७	०९	३२	शुभ	३४	१०	चतु.	१६	२५	०६:१३	०६:१६	३०	०६	२८	२१	कन्या १५:५७	पितृपक्ष समा., अमावस्या का श्राद्ध, (K)

(A) द्वितीया का श्राद्ध । (B) तृतीया का श्राद्ध, चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय २०:०७ । (C) चतुर्थी का श्राद्ध, पञ्चमी का श्राद्ध १२:४६ से । (D) रोहिणी व्रत, सूर्य उ.फा. में १५:४१, बुध उ.फा. में १६:००, सप्तमी का श्राद्ध। (E) शुक्र सिंह में २४:१७ बजे, शुक्र मघा में २४:१७, जीवित पुत्रिका व्रत, जीमूतवाहन व्रत, अष्टका श्राद्ध, हिन्दी दिवस। (F) सधवा नवमी,मातृ नवमी, नवमी का श्राद्ध, अन्वष्टका श्राद्ध। (G) कन्या संक्रान्ति २५:४७ । (H) कन्या संक्रान्ति पुण्यकाल मध्याह्न तक, (I) द्वादशी का श्राद्ध, सन्यासियों का श्राद्ध, इन्दिरा एकादशी व्रत (निम्बार्क)। (J) मास शिवरात्रि, चतुर्दशी का श्राद्ध, विष-शस्त्रादि से हतों का श्राद्ध । (K) सर्वपितृ अमावस्या, सर्व पितृ विसर्जन।

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०४	०१	०६	०४	०२	०३	११	१०	०४
अं.	२७	२२	००	२७	२५	२९	०४	२३	२३
क.	१५	०१	१५	४७	५१	०५	५०	४३	४३
वि.	५६	१०	०२	२१	३६	४७	५६	२३	२३
गति	५८ २४	५८८ ०७	३९ ४५	१०१ ०७	०९ ३२	६८ ५४	०४ ३५	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	उ.फा. २	रोहि. ४	चित्त. ३	उ.फा. १	पुन. २	आश्ले. ४	उ.भा. १	पू.भा. २	पू.फा. ४

१४ सितम्बर २०२५ ई., प्रातः ६:२७

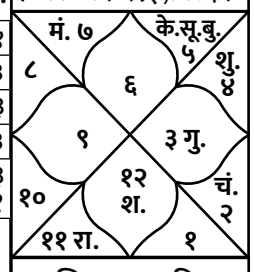

आश्विन कृ. ८, रविवार

इस मास में पाँच सोमवार और पाँच मंगलवार हैं तथा कन्या संक्रान्ति मंगलवार को है, अतः वर्षा समयानुकूल होने की सम्भावना है। रूई, सूत, बिनौला, अलसी, मूँग, उड़द, मसूर, मक्की, गेहूँ, ताम्बा, लोहा, पीतल, नमक, हल्दी, धनिया, जीरा में तेजी तथा नारियल, जायफल में मन्दी रहेगी।

२१ सितम्बर २०२५ ई., प्रातः ६:२७

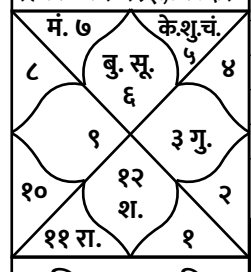

आश्विन कृ. ३०, रविवार

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०५	०४	०६	०५	०२	०४	११	१०	०४
अं.	०४	२५	०४	१०	२६	०७	०४	२३	२३
क.	०५	०३	५५	२४	५५	३७	२८	२१	२१
वि.	४७	४३	०१	२१	०५	५१	१८	०७	०७
गति	५८ ३९	७५६ ५३	४० ११	१०५ ०५	०९ ४३	७३ ४३	०५ ४०	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	उ.फा. ३	पू.फा. ४	चि. ४	हस्त. १	पुन. ३	मघा ३	उ.भा. १	पू.भा. २	पू.फा. ४

वि. सं. २०८२, शाके १९४७, आश्विन शुक्ल पक्ष (दि. २२ सितम्बर से ०७ अक्टूबर २०२५ ई.), दक्षिणायन, दक्षिण गोल, शरद् ऋतु, के. अहर्गण ५२८२, अयनांश २४°/१३'/०३"

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	घं.	मि.	न.	घ.	प.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	कर.	घ.	प.	सूर्योदय	सूर्यास्त	रा.	प्र.	मु.	अं.	चन्द्रचार	विवरण (भारतीय स्टैण्डर्ड समय में)
३०	०४	१	सो.	५१	४७	२६	५६	उ.फा.	१२	५७	११	२४	शु.	३४	२२	किं.	१९	४२	०६:१३	०६:१५	भा. ३१	आश्वि. ७	र. २९	सि. २२	कन्या	मातामह श्राद्ध, शारदीय नवरात्र प्रा., (A)
३०	००	२	मं.	५६	३२	२८	५१	ह.	१८	३२	१३	३९	ब्र.	३५	२०	बा.	२४	०२	०६:१४	०६:१४	आ. ०१	८	३०	२३	तुला	मङ्गल स्वा. में २०:५७, चन्द्रदर्शन, रा. आश्विन प्रा.।
२९	५६	३	बु.	६०	००	-	-	चि.	२५	०५	१६	१६	ऐं.	३७	००	तै.	२९	१७	०६:१४	०६:१३	०२	९	र. ०१	२४	तुला	मु. रविलाखर प्रा. ।
२९	५१	३	गु.	०२	०७	०७	०६	स्वा.	३२	१२	१९	०८	वै.	३९	०५	ग.	०२	०७	०६:१५	०६:११	०३	१०	०२	२५	तुला	शुक्र पू.फा में २२:११, भद्रा २०:१९ से, विनायक चतुर्थी।
२९	४७	४	शु.	०८	१५	०९	३३	वि.	३९	४२	२२	०८	वि.	४१	२७	वि.	०८	१५	०६:१५	०६:१०	०४	११	०३	२६	वृश्चिक १५:२३	भद्रा ०९:३३ तक, उपाङ्ग ललिता व्रत (सायंकाल)।
२९	४३	५	श.	१६	५७	१२	०३	अ.	४७	१७	२५	०८	प्री.	४४	१२	बा.	१४	३५	०६:१६	०६:०९	०५	१२	०४	२७	वृश्चिक	सूर्य हस्त में ०७:०६, गण्डमूल प्रा. २५:०८
२९	३९	६	र.	२०	२७	१४	२७	ज्ये.	५४	०५	२७	५४	आ.	४५	३७	तै.	२०	२७	०६:१६	०६:०८	०६	१३	०५	२८	धनु २७:५४	बुध चित्रा में २३:०५, बिल्वाभिमन्त्रण सायं जयेष्ट नक्षत्र में।
२९	३४	७	सो.	२५	३५	१६	३१	मू.	६०	००	-	-	सौ.	४६	४७	व.	२५	३५	०६:१७	०६:०६	०७	१४	०६	२९	धनु	भद्रा १६:३२ से २९:२४ तक, (B)
२९	३०	८	मं.	२८	५५	१८	०६	मू.	००	०२	०६	१७	शो.	४६	५२	ब.	३२	०७	०६:१७	०६:०५	०८	१५	०७	३०	धनु	गण्डमूल समा. ०६:१७, दुर्गाष्टमी, महाष्टमी व्रत, (C)
२९	२६	९	बु.	३१	४७	१९	०१	पू.षा.	०४	३०	०८	०६	अति.	४५	३७	बा.	००	५२	०६:१८	०६:०४	०९	१६	०८	अक्टू. ०१	मकर १४:२७	महानवमी व्रत, त्रिशूलिनी पूजा।
२९	२२	१०	गु.	३२	१२	१९	११	उ.षा.	०६	५२	०९	१३	सु.	४२	५५	तै.	०२	१५	०६:१८	०६:०३	१०	१७	०९	०२	मकर	बुध तुला में २७:४३, अपराजिता पूजा, (D)
२९	१७	११	शु.	३०	३५	१८	३३	श्र.	०८	०७	०९	३४	धृ.	३८	३५	व.	०१	३७	०६:१९	०६:०२	११	१८	१०	०३	कुम्भ २१:२७	भद्रा ०६:५८ से १८:३४ तक, शनि उ.भा. में २३:४२, (E)
२९	१३	१२	श.	२७	०५	१७	०९	ध.	०७	०५	०९	०९	शू.	३२	४७	बा.	२७	०५	०६:१९	०६:०१	१२	१९	११	०४	कुम्भ	पद्मनाभ द्वादशी, (F)
२९	०९	१३	र.	२१	५०	१५	०४	शत. पू.भा.	०४ ५९	१२ ४७	०८ ३०	०१ १५	गं.	२५	३२	तै.	२१	५०	०६:२०	०५:५९	१३	२०	१२	०५	मीन २४:४५	
२९	०५	१४	सो.	१५	१०	१२	२४	उ.भा.	५४	१२	२८	०१	वृ.	१७	१२	व.	१५	१०	०६:२०	०५:५८	१४	२१	१३	०६	मीन	शुक्र उ.फा. में १८:०६, गण्डमूल प्रा. २८:०१, (G)
२९	००	१५ ०१	मं.	०७	२०	०९	१७	रे.	४८	१०	२५	२७	ध्रु.	०७	५५	ब.	०७	२०	०६:२१	०५:५७	१५	२२	१४	०७	मेष २५:२७	बुध स्वाति में १२:१६ पञ्चक समा. २५:२७, (H)

(A) घट स्थापन, महाराजा अग्रसेन जयन्ती, सायन सूर्य तुला में २३:५०, दक्षिण गोल प्रा., विषुवद् दिन। (B) सरस्वती आवाहन, मूल नक्षत्र में, पत्रिका प्रवेश, महानिशीथ पूजा। (C) औली जैन प्रा., सन्धिपूजा, सरस्वती बलिदान। (D) नवरात्र पारणा, शमी पूजा, विद्यापीठ स्थापना दिवस, विजयदशमी, सरस्वती विसर्जन, शस्त्र पूजा, सीमोल्लंघन, गाँधी जयन्ती, श्री लाल बहादुर शास्त्री जयन्ती। (E) पञ्चक प्रा. २१:२७, पापाङ्कुशा एकादशी व्रत (स.), मेला भरत मिलाप, मध्वाचार्य जयन्ती। (F) शनि प्रदोष व्रत। (G) भद्रा १२:२४ से २२:५३ तक, शरत् पूर्णिमाव्रत, कोजागारी पूर्णिमा, कोजागर व्रत, रास महोत्सव, लक्ष्मी पूजा। (H) औली जैन समाप्त, कार्तिक स्नान प्रा., सत्यव्रत, वाल्मीकि जयन्ती, मीरा जयन्ती।

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०५	०८	०६	०५	०२	०४	११	१०	०४
अं.	१२	१३	१०	२५	२८	१८	०३	२२	२२
क.	५५	२४	५९	२६	०७	४०	३६	५२	५२
वि.	०५	५१	३७	१८	३१	१४	४८	३०	३०
गति	५८ ५७	७४३ १७	४० ३०	९५ ३८	०७ २३	७३ ५१	०४ ३३	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	हस्त. १ च.	पू.षा. १ च.	स्वाति २ च.	चित्रा. १ च.	पुन. ३ च.	पू.फा. २ च.	उ.भा. १ च.	पू.भा. १ च.	पू.फा. ३ च.

३० सितम्बर २०२५ ई., प्रातः ६:२७

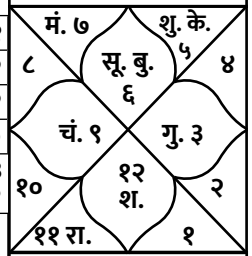

आश्विन शु. ८, मंगलवार

इस मास में सूर्य-बुध का मंगल तथा केतु-शुक्र से द्विर्द्वादश, राहु से षडष्टक तथा शनि से समसप्तक योग होने के कारण कश्मीर में आतंकवादी घटनायें बढ़ेंगी। मध्यप्रदेश, झारखण्ड, उड़ीसा तथा दक्षिण के नक्सलप्रभावित क्षेत्रों में आतंकवादी घटनाओं में सैनिक मुठभेड़ होने की सम्भावना है। यान-दुर्घटना में भारी मात्रा में क्षति होने की सम्भावना है।

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०५	११	०६	०६	०२	०४	११	१०	०४
अं.	१९	१८	१५	०६	२८	२७	०३	२२	२२
क.	४८	०९	४६	१८	५६	१८	०५	३०	३०
वि.	२५	५२	३९	०६	१८	०७	३२	१५	१५
गति	५९ ११	८९५ ०६	४१ १४	८९ ५०	०६ २१	७४ १०	०० ३१	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	हस्त. ३ च.	रेवती १ च.	स्वाति ३ च.	चित्रा ४ च.	पुन. ३ च.	उ.फा. १ च.	पू.भा. ४ च.	पू.भा. १ च.	पू.फा. ३ च.

०७ अक्टूबर २०२५ ई., प्रातः ६:२७

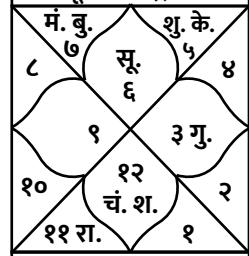

आश्विन शु. १५, मंगलवार

वि. सं. २०८२, शाके १९४७, कार्तिक कृष्ण पक्ष (दि. ०८ अक्टूबर से २१ अक्टूबर २०२५ ई.), दक्षिणायन, दक्षिण गोल, शरद् ऋतु, के. अहर्गण ५२९८, अयनांश २४°/१३'/०४"

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	घं.	मि.	न.	घ.	प.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	कर.	घ.	प.	सूर्योदय	सूर्यास्त	रा.	प्र.	मु.	अं.	चन्द्रचार	विवरण (भारतीय स्टैण्डर्ड समय में)
०	०	१	मं.	५८	५०	२९	५३	०	०	०	०	०	व्या.	५८	०२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प्रतिपदा तिथि क्षय।
२८	५६	२	बु.	५०	०२	२६	२२	अ.	४०	४७	२२	४४	ह.	४७	५८	तै.	२४	२७	०६:२१	०५:५६	आश्विन १६	आ. २३	र. १५	अक्टू. ०८	मेष	गण्डमूल समा. २२:४५ ।
२८	५२	३	गु.	४१	२०	२२	५४	भ.	३४	१०	२०	०२	व्.	३७	५५	व.	१५	३७	०६:२२	०५:५५	१७	२४	१६	०९	वृष २५:२३	शुक्र कन्या में १०:४९, भद्रा १२:३८ से २२:५५ तक,
२८	४८	४	शु.	३३	१०	१९	३८	कृ.	२७	५२	१७	३१	सि.	२९	०७	ब.	०७	१०	०६:२२	०५:५४	१८	२५	१७	१०	वृष	सूर्य चित्रा में २०:१२, चन्द्रोदय २०:०४, (A)
२८	४३	५	श.	२५	५०	१६	४३	रो.	२२	२२	१५	१९	व्य.	१९	१७	तै.	२५	५०	०६:२३	०५:५३	१९	२६	१८	११	मिथुन २६:२४	
२८	३९	६	र.	१९	४२	१४	१७	मृ.	१८	००	१३	३६	व.	११	१५	व.	१९	४२	०६:२४	०५:५२	२०	२७	१९	१२	मिथुन	भद्रा १४:१७ से २५:१६ तक
२८	३५	७	सो.	१५	००	१२	२४	आ.	१५	०५	१२	२६	पु. शि.	०४ ५८	२५ ४७	ब.	१५	००	०६:२४	०५:५०	२१	२८	२०	१३	कर्क २९:५८	मंगल विशाखा में ०९:१७, अहोई अष्टमी, (B)
२८	३१	८	मं.	११	५०	११	०९	पुन.	१३	४२	११	५४	सि.	५४	२२	कौ.	११	५०	०६:२५	०५:५९	२२	२९	२१	१४	कर्क	
२८	२७	९	बु.	१०	२०	१०	३३	पु.	१३	५५	११	५९	सा.	५१	१७	ग.	१०	२०	०६:२५	०५:४८	२३	३०	२२	१५	कर्क	गण्डमूल प्रा. ११:५९, भद्रा २२:३० से ।
२८	२३	१०	गु.	१०	२२	१०	३५	आश्ले.	१५	४०	१२	४२	शुभ	४३	२०	वि.	१०	२७	०६:२६	०५:४७	२४	३१	२३	१६	सिंह १२:४२	बुध विशाखा में १९:०२, भद्रा १०:३७ तक ।
२८	१९	११	शु.	१२	१७	११	१२	म.	१८	४५	१३	१३	शु.	४८	२२	बा.	११	५२	०६:२७	०५:४६	२५	कार्ति. ०१	२४	१७	सिंह	तुला संक्रान्ति. १३:४५, (C)
२८	१४	१२	श.	१४	३०	१२	१९	पू.फा.	२३	०५	१५	४१	ब्र.	४८	२०	तै.	१४	४०	०६:२७	०५:४५	२६	०२	२५	१८	कन्या २२:११	गुरु कर्क में १९:४६, गोवत्स द्वादशी, (D)
२८	१०	१३	र.	१८	२७	१३	५१	उ.फा.	२८	२२	१७	४९	ए.	४९	२५	व.	१८	२७	०६:२८	०५:४४	२७	०३	२६	१९	कन्या	भद्रा १३:५२ से २६:४६ तक, मासशिवरात्रि, (E)
२८	०६	१४	सो.	२३	१२	१५	४५	ह.	३४	५०	२०	१६	वै.	५०	१५	श.	२३	१२	०६:२८	०५:४३	२८	०४	२७	२०	कन्या	दीपावली, महालक्ष्मीपूजन, केदार गौरी व्रत, (F)
२८	०२	३०	मं.	२८	३२	१७	५४	चि.	३६	१२	२०	५८	वि.	५१	५५	ना.	२८	२२	०६:२९	०५:४२	२९	०५	२८	२१	तुला ०९:३६	महावीर निर्वाण दिवस, अमावस्या, (G)

(A) करक चतुर्थी, करवा चौथ, चन्द्रोदय २०:०४, रोहिणी व्रत (B) कालाष्टमी, राधा कुण्ड स्नान रात्रि समाप्ति पर अरुणोदय में। (C) संक्रान्ति पुण्यकाल ०९:४५ से १७:४५ तक, शुक्र हस्त में १२:१९, गण्डमूल समा. १३:२७ तक, रमा एकादशी व्रत (स.)। (D) धनतेरस, धन्वन्तरि जयन्ती, शनि प्रदोष व्रत, यम दीप दान। (E) नरक निवारण चतुर्दशी, हनुमत् जयन्ती, रूप चौदस। (F) कमला जयन्ती (प्रदोषकाल) श्री महाकाली पूजा, उल्का भ्रमण, द्वारिद्र्य निःसारण, (G) विद्यापीठ संस्थापक डॉ. मण्डन मिश्र निर्वाण दिवस, दयानन्द निर्वाण दिवस, आद्यशङ्कराचार्य निर्वाण दिवस।

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०५	०३	०६	०६	०२	०५	११	१०	०४
अं.	२६	००	२०	१६	२९	०५	०२	२२	२२
क.	४३	१५	३६	२९	३७	५८	३६	०८	०८
वि.	२५	५५	४१	४४	३०	१३	११	००	००
गति	५९ २६	८०१ ४४	४१ ४२	८३ ४९	०५ १४	७४ २८	०४ व ००	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	२ चि.	४ चि.	१ वि.	३ स्वा.	३ पुन.	३ उ.फा.	४ पू.भा.	१ पू.भा.	३ पू.फा.

१४ अक्टूबर २०२५ ई., प्रातः ६:२७

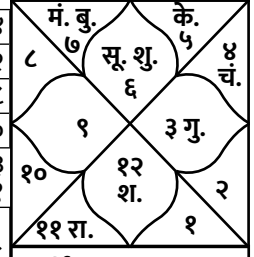

कार्तिक कृ. ८, मंगलवार

होकर मन्दे रहेंगे।

इस मास में पाँच बुधवार हैं तथा तुला संक्रान्ति शुक्रवार को है, अतः प्रजा में परस्पर द्वेष, कलह, अशान्ति का वातावरण रहेगा। नारियल, जायफल, सोना, गुड़, शक्कर खाण्ड, अलसी, सन, लोहा, जस्ता, कोयला पत्थर, घी आदि पदार्थों के भाव तेज रहेंगे। गेहूँ, जौ, चना, चावल, कपास में मन्दी के बाद तेजी रहेगी। लाल चन्दन, मजीठ तथा लाल रंग की वस्तुओं के भाव तेज

२१ अक्टूबर २०२५ ई., प्रातः ६:२७

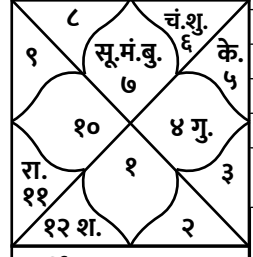

कार्तिक कृ. ३०, मंगलवार

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०६	०५	०६	०६	०३	०५	११	१०	०४
अं.	०३	२८	२५	२५	००	१४	०२	२१	२१
क.	४०	२५	२९	५६	१०	४०	०९	५५	५५
वि.	१७	३४	५२	३७	३६	१७	२८	४४	४४
गति	६१ ४१	७१७ १७	४२ ०८	७६ २५	०४ ०२	७४ ४४	व ३४	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	४ चि.	२ चि.	२ विशा.	२ विशा.	४ पुन.	२ हस्त.	४ पू.भा.	२ पू.भा.	३ पू.फा.

वि. सं. २०८२, शाके १९४७, कार्तिक शुक्ल पक्ष (दि. २२ अक्टूबर से ०५ नवम्बर २०२५ ई.), दक्षिणायन, दक्षिण गोल, शरद्/हेमन्त ऋतु, के. अहर्गण ५३१२, अयनांश २४°/१३'/०६"

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	घं.	मि.	न.	घ.	प.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	कर.	घ.	प.	सूर्योदय	सूर्यास्त	रा.	प्र.	मु.	अं.	चन्द्रचार	विवरण (भारतीय स्टैण्डर्ड समय में)
२७	५८	१	बु.	३४	२५	२०	१६	स्वा.	४८	२२	२५	५१	प्री.	५३	५७	किं	०१	२५	०६:३०	०५:४१	आश्वि. ३०	कार्तिक ०६	र. २९	अक्टूबर २२	तुला	गोवर्धन पूजा, अन्नकूट, विश्वकर्मा पूजा।
२७	५४	२	गु.	४०	४०	२२	४६	वि.	५५	५०	२८	५०	आयु.	५६	१२	बा.	०७	३२	०६:३०	०५:४०	का. ०१	०७	३०	२३	वृश्चिक २२:०५	यम द्वितीया, भ्रातृ द्वितीया, चन्द्र दर्शन, (A)
२७	५०	३	शु.	४७	००	२५	१९	अनु.	६०	००	-	-	सौ.	५८	२७	तै.	१३	५०	०६:३१	०५:३९	०२	०८	ज. ०१	२४	वृश्चिक	सूर्य स्वा. में ०६:४०, बुध वृश्चिक में १२:३३, मु. जमादिलावल प्रा.।
२७	४६	४	श.	५३	१०	२७	४८	अनु.	०२	५२	०७	५१	शो.	६०	००	व.	२०	०७	०६:३२	०५:३८	०३	०९	०२	२५	वृश्चिक	गण्डमूल प्रा. ०७:५२, भद्रा १४:३५ से २७:४९ तक, (B)
२७	४२	५	र.	५८	५२	३०	०५	ज्ये.	१०	३५	१०	४६	शो.	००	३३	ब.	२६	०५	०६:३२	०५:३७	०४	१०	०३	२६	धनु १०:४६	लाभ पञ्चमी, ज्ञान पञ्चमी, पाण्डव पञ्चमी।
२७	३८	६	सो.	६०	००	-	-	मू.	१६	१५	१३	२७	अति.	०२	१२	कौ.	३३	५०	०६:३३	०५:३७	०५	११	०४	२७	धनु	शुक्र चित्रा में ३०:११, बुध अनु. में ०९:२८, (C)
२७	३४	६	मं.	०३	३२	०७	५९	पू.षा.	२२	५५	१५	४४	सु.	०३	१०	तै.	०३	३२	०६:३४	०५:३६	०६	१२	०५	२८	मकर २२:१४	प्रतिहार पष्ठी व्रत, छठ पूजा, सूर्य षष्ठी ।
२७	३०	७	बु.	०७	००	०९	२३	उ.षा.	२७	१५	१७	२९	धृ.	०३	०७	व.	०७	००	०६:३५	०५:३५	०७	१३	०६	२९	मकर	भद्रा ०९:२३ से २१:५१ तक, दुर्गाष्टमी, (D)
२७	२७	८	गु.	०८	४७	१०	०६	श्र.	२९	५५	१८	३३	शू. गं.	०१ ५८	५७ १०	ब.	०८	४७	०६:३५	०५:३४	०८	१४	०७	३०	मकर	गोपाष्टमी, मेलागोचारण (मथुरा)।
२७	२३	९	शु.	०८	३८	१०	०३	ध.	३०	३७	१८	५१	वृ.	५४	५०	कौ.	०८	३७	०६:३६	०५:३३	०९	१५	०८	३१	कुम्भ ०६:४८	पञ्चक प्रा. ०६:४८, अक्षयनवमी, कूष्माण्ड नवमी, (E)
२७	१९	१०	श.	०६	२५	०९	११	श.	२९	१७	१८	२०	ध्रु.	४८	२०	ग.	०६	२५	०६:३७	०५:३२	१०	१६	०९	नवम्बर ०१	कुम्भ	मङ्गल अनु. में ०८:१७, (F)
२७	१५	११ १२	र.	०१ ५६	२५ १५	०७ २९	३१ ०७	पू.भा.	२६	०५	१७	०३	व्या.	४१	२२	वि.	०१	२५	०६:३७	०५:३२	११	१७	१०	०२	मीन ११:२६	शुक्र तुला में १३:१५, भद्रा ०७:३२ तक, (G)
२७	११	१३	सो.	४८	४०	२६	०६	उ.भा.	२१	०७	१५	०५	ह.	३२	३२	कौ.	२२	३५	०६:३८	०५:३१	१२	१८	११	०३	मीन	गण्डमूल प्रा. १५:०६, सोम प्रदोषव्रत।
२७	०८	१४	मं.	३९	५२	२२	३६	रे.	१४	४७	१२	३४	वज्र	२२	३७	ग.	१४	२२	०६:३९	०५:३०	१३	१९	१२	०४	मेष १२:३४	पञ्चक समा. १२:३४, भद्रा २२:३७ से, (H)
२७	०४	१५	बु.	३०	२२	१८	४९	अश्वि. भ.	०७ ५९	३० ४२	०९ ३०	४० ३३	सि.	१२	००	वि.	०५	१०	०६:४०	०५:२९	१४	२०	१३	०५	मेष	गण्डमूल समा. ०९:४०, भद्रा ०८:४४ तक, (I)

(A) सायन सूर्य वृश्चिक में ०९:२१, हेमन्त ऋतु प्रा., चित्रगुप्त पूजा, यमुना स्नान (मथुरा), रा. कार्तिक प्रारम्भ । (B) विनायक चतुर्थी। (C) मंगल वृश्चिक में १५:४२, गण्डमूल समा. १३:२७, छठ व्रत नहाई खाई (खरना), सायंकालीन अर्ध्यदान । (D) प्रातः कालीन अर्ध्यदान एवं छठव्रत पारणा, ओली जैन प्रा.। (E) सत्युगादि, मथुरा परिक्रमा। (F) भद्रा २०:२८ से, मेला कंस (मथुरा), भीष्म पञ्चक प्रा.। (G) प्रबोधिनी (देवोत्थान) एकादशी व्रत (स.) तुलसी विवाह, कालीदास जयन्ती, चातुर्मास्य समा. (सन्यासी), मन्वादि। (H) वैकुण्ठ चतुर्दशी, मणिकर्णिका स्नान, काशी विश्वनाथ स्थापना दिवस। (I) पूर्णिमा व्रत, सत्यव्रत, देव दीपावली, भीष्म पञ्चक समा., पुष्कर स्नान, गुरु नानकदेव जयन्ती, मेला गढ़ गंगा (मुक्तेश्वर) मेला हरिहर क्षेत्र, ओली जैन समा., कार्तिक स्नान समा., मन्वादि, त्रिपुरोत्सव (सायंकाल)।

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०६	०९	०७	०७	०३	०५	११	१०	०४
अं.	१२	१६	०१	०६	००	२५	०१	२१	२१
क.	३८	५०	५१	२१	४०	५३	४०	१७	१७
वि.	३७	३६	१८	४९	१८	४७	१०	०७	०७
गति	५९ ५२	७७७ ४५	४२ ४०	५७ ४१	०२ ३२	७४ ५७	०२व्र ५९	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	२ चं. स्वा.	३ चं. श्रव.	४ चं. वि.	२ चं. अनु.	४ चं. पुन.	१ चं. चित्रा	४ चं. पू.भा.	२ चं. पू.भा.	३ चं. पू.फा.

३० अक्टूबर २०२५ ई., प्रातः ६:२७

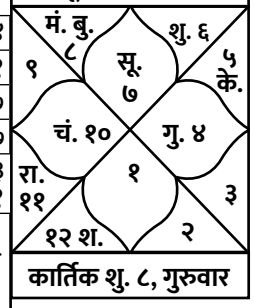

कार्तिक शु. ८, गुरुवार

इस मास के पूर्वार्द्ध में सूर्य-मंगल-बुध की युति तथा उत्तरार्द्ध में सूर्य का मंगल-बुध एवं शुक्र से द्विर्द्वादश योग राहु से नवम-पञ्चम एवं शनि से षडष्टक योग होने के कारण जम्मू कश्मीर, पश्चिम बंगाल में उग्रवादी एवं आतंकवादी घटनायें बढ़ेगी। नक्सलवादी क्षेत्रों में भी उग्रवादी घटनायें बढ़ेंगी। सेना की नक्सलवादी घटनाओं में मुठमेड़ में नक्सलियों का सफाया करने में कामयाबी मिलेगी।

०५ नवम्बर २०२४ ई., प्रातः ६:२७

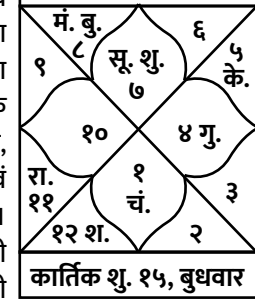

कार्तिक शु. १५, बुधवार

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०६	००	०७	०७	०३	०६	११	१०	०४
अं.	१८	११	०६	१२	००	०३	०१	२०	२०
क.	३८	१७	०८	११	५१	२३	२४	५८	५२
वि.	४७	१५	१५	०३	३८	५१	२२	०३	०३
गति	६० ०७	११८ २०	४३ ०२	३१ २२	०१ १२	७५ ०६	०१व्र ३२	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	४ चं. स्वा.	४ चं. आश्वि.	२ चं. अनु.	३ चं. अनु.	४ चं. पुन.	४ चं. पुन.	४ चं. पू.भा.	२ चं. पू.भा.	३ चं. पू.फा.

वि. सं. २०८२, शाके १९४७, मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष (दि. ०६ नवम्बर से २० नवम्बर २०२५ ई.), दक्षिणायन, दक्षिण गोल, हेमन्त ऋतु, के. अहर्गण ५३२७, अयनांश २४°/१३'/०८"

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	घं.	मि.	न.	घ.	प.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	कर.	घ.	प.	सूर्योदय	सूर्यास्त	रा.	प्र.	मु.	अं.	चन्द्रचार	विवरण (भारतीय स्टैण्डर्ड समय में)
२७	००	१	गु.	२०	३५	१४	५४	कृ.	५१	५७	२७	२७	व्या. वरि.	०१ ५०	०० ०२	कौ.	२०	३५	०६:४०	०५:२९	कार्तिक १५	कार्तिक २१	ज. १४	नवम्बर ०६	वृष ११:४६	सूर्य विशा. में १४:५२ ।
२६	५७	२	शु.	११	००	११	०५	रो.	४४	४०	२४	३३	प.	३९	२५	ग.	११	००	०६:४१	०५:२८	१६	२२	१५	०७	वृष	शुक्र स्वाति में २१:०७, भद्रा २१:१६ से, रोहिणी व्रत।
२६	५३	३ ४	श.	०२ ५४	०५ १७	०७ २८	३२ ३५	मृग.	३८	२०	२२	०२	शि.	२९	३२	वि.	०२	०५	०६:४२	०५:२८	१७	२३	१६	०८	मिथुन ११:१४	भद्रा ०७:३२ तक, चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय १९:४० ।
२६	५०	५	र.	४८	०७	२५	५५	आर्द्रा	३३	२२	२०	०४	सि.	२०	४५	कौ.	२०	५५	०६:४३	०५:२७	१८	२४	१७	०९	मिथुन	बुध वक्री २४:३१ ।
२६	४६	६	सो.	४३	३०	२४	०८	पुन.	३०	१२	१८	४८	सा.	१३	२०	ग.	१५	३०	०६:४४	०५:२६	१९	२५	१८	१०	कर्क १३:०२	भद्रा २४:०८ से ।
२६	४३	७	मं.	४१	०२	२३	०९	पु.	२८	५२	१८	१७	शुभ	०७	३०	वि.	१२	००	०६:४४	०५:२६	२०	२६	१९	११	कर्क	गुरु वक्री २२:११, गण्डमूल प्रा. १८:१८, (A)
२६	४०	८	बु.	४०	३२	२२	५८	आश्ले	२९	३५	१८	३५	शु.	०३	१२	बा.	१०	३०	०६:४५	०५:२५	२१	२७	२०	१२	सिंह १८:३५	
२६	३६	९	गु.	४२	००	२३	३४	म.	३२	३५	१९	४८	ब्र. ऐं.	०० ५९	२७ १२	तै.	११	१२	०६:४६	०५:२५	२२	२८	२१	१३	सिंह	गण्डमूल समा. १९:४८ ।
२६	३३	१०	शु.	४५	०७	२४	५०	पू.फा.	३६	२५	२१	२०	वै.	५९	०५	व.	१३	२०	०६:४७	०५:२४	२३	२९	२२	१४	कन्या २७:५१	भद्रा १२:०८ से २४:५० तक, बाल दिवस।
२६	३०	११	श.	४९	३२	२६	३७	उ.फा.	४१	५५	२३	३४	वि.	५९	५५	ब.	१७	१०	०६:४८	०५:२४	२४	३०	२३	१५	कन्या	उत्पन्ना एकादशी व्रत (स्मा.+वै.)।
२६	२७	१२	र.	५४	५५	२८	४७	ह.	४८	२२	२६	१०	प्री.	६०	००	कौ.	२२	०७	०६:४९	०५:२३	२५	मार्ग. ०१	२४	१६	कन्या	सूर्य वृश्चिक संक्रान्ति १३:३७, (B)
२६	२४	१३	सो.	६०	००	–	–	चि.	५५	२७	२९	०१	प्री.	०१	२०	ग.	२७	५०	०६:५०	०५:२३	२६	०२	२५	१७	तुला १५:३४	सोम प्रदोष व्रत।
२६	२१	१३	मं.	००	५२	०७	१२	स्वा.	६०	००	–	–	आयु	०३	१२	व.	००	५२	०६:५१	०५:२२	२७	०३	२६	१८	तुला	शुक्र विशाखा में १२:१८, भद्रा ०७:१२ से २०:२२ तक, (C)
२६	१८	१४	बु.	०७	०७	०९	४३	स्वा.	०२	२२	०७	५९	सौ.	०५	२०	श.	०७	०७	०६:५२	०५:२२	२८	०४	२७	१९	वृश्चिक २८:१३	मङ्गल ज्येष्ठा में १९:२९, सूर्य अनु. में २०:५६, (D)
२६	१५	३०	गु.	१३	३०	१२	१६	वि.	१०	१५	१०	५८	शो.	०७	३०	ना.	१३	३०	०६:५२	०५:२२	२९	०५	२८	२०	वृश्चिक	बुध अनु. में २८:१५, अमावस्या स्नानदानादि।

(A) भद्रा ११:३३ तक, कालाष्टमी, कालभैरव जयन्ती। (B) उत्पन्ना एकादशी व्रत (नि.), संक्रान्ति पुण्यकाल ०७:१३ से १३:३७ तक (C) मास शिवरात्रि। (D) अमावस्या श्राद्धादि।

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०६	०३	०७	०७	०३	०६	११	१०	०४
अं.	२५	२३	११	१२	००	१२	०१	२०	२०
क.	४०	२३	१०	१५	५५	०९	१०	३५	३५
वि.	२०	२९	४३	११	५९	५५	०७	४७	४७
गति	६० २१	८३८ १२	४३ २८	२६ व ०७	०० व १०	६५ १५	०१ व ३८	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	२ च. विशा.	३ च. आश्ले.	३ च. अनु.	३ च. अनु.	४ च. पुन.	२ च. स्वा.	४ च. पू.भा.	२ च. पू.भा.	३ च. पू.फा.

१२ नवम्बर २०२५ ई., प्रातः ६:२७

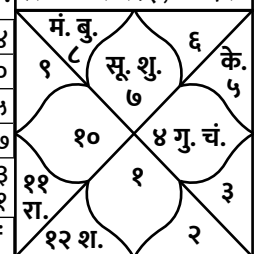

मार्गशीर्ष कृ. ८, बुधवार

बाजार में घटाबढ़ी के बाद गिरावट का रुख रहेगा।

इस मास में पाँच गुरुवार है और वृश्चिक संक्रान्ति रविवार को है, अतः गेहूँ, जौ, चना, चावल, तिल, तैल, सरसों, सोना, ताम्बा, लोहा, जस्ता, पीतल, रूई, नमक, हल्दी मिर्च तथा सफेद वस्तुओं के भाव तेज रहेंगे। जूट, सूती-ऊनी वस्त्र के भाव मन्दे रहेंगे। गुड़-शक्कर के भाव घटाबढ़ी के बाद तेज रहेंगे। शेयर

२० नवम्बर २०२५ ई., प्रातः ६:२७

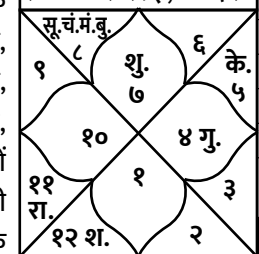

मार्गशीर्ष कृ. ३०, गुरुवार

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०७	०७	०७	०७	०३	०६	११	१०	०४
अं.	०३	०१	१७	०४	००	२२	००	२०	२०
क.	४४	०५	००	३३	४८	१२	५९	१०	१०
वि.	०१	४८	०१	५७	५९	१६	४९	२१	२१
गति	६० ३५	७१२ ००	४३ ४६	३८ व ४२	०१ व ४६	७५ २२	०० व ४९	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	१ च. अनु.	४ च. विशा.	१ च. ज्ये.	१ च. अनु.	४ च. पुन.	१ च. विशा.	४ च. पू.भा.	१ च. पू.भा.	३ च. पू.फा.

वि. सं. २०८२, शाके १९४७, मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष (दि. २१ नवम्बर से ०४ दिसम्बर २०२५ ई.), दक्षिणायन, दक्षिण गोल, हेमन्त ऋतु, के. अहर्गण ५३४२, अयनांश २४°/१३'/१०"

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	घं.	मि.	न.	घ.	प.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	कर.	घ.	प.	सूर्योदय	सूर्यास्त	रा.	प्र.	मु.	अं.	चन्द्रचार	विवरण (भारतीय स्टैण्डर्ड समय में)
२६	१२	१	शु.	१८	५५	१४	२७	अनु	१७	३६	१३	५५	अति.	०९	१०	ब.	१८	५५	०६:५३	०५:२१	का. ३०	मार्ग. ०६	ज. २९	नवम्बर २१	वृश्चिक	गण्डमूल प्रा. १३:५५।
२६	०९	२	श.	२५	४५	१७	११	ज्ये.	२५	०९	१६	४६	सु.	११	३०	कौ.	२५	४५	०६:५३	०५:२१	मार्ग. ०१	०७	३०	२२	धनु १६:४६	चन्द्रदर्शन, सायन सूर्य धनु में ०७:०६, रा. मार्गशीर्ष प्रा.।
२६	०६	३	र.	३१	१५	१९	२४	मू.	३१	२२	१९	२७	धृ.	१३	०५	ग.	३१	१५	०६:५४	०५:२१	०२	०८	ज. ०१	२३	धनु	राहु शतभिषा में १२:३४, वक्री बुध तुला में २०:०६, (A)
२६	०४	४	सो.	३६	०७	२१	२२	पू.षा.	३७	००	२१	५३	शू.	१४	१२	व.	०३	४७	०६:५५	०५:२१	०३	०९	०२	२४	मकर २८:२६	भद्रा ०८:२६ से २१:२२ तक, विनायक चतुर्थी।
२६	०१	५	मं.	४०	०२	२२	५७	उ.षा.	४२	३०	२३	५७	गं.	१४	४२	ब.	०८	१२	०६:५६	०५:२०	०४	१०	०३	२५	मकर	श्री सीता राम विवाहोत्सव, विवाह पञ्चमी, (B)
२५	५९	६	बु.	४२	४२	२४	०२	श्रव.	४६	२७	२५	३२	वृ.	१४	२२	कौ.	११	३०	०६:५७	०५:२०	०५	११	०४	२६	मकर	शुक्र वृश्चिक में ११:२१, स्कन्द षष्ठी, चम्पा षष्ठी।
२५	५६	७	गु.	४३	५२	२४	३०	ध.	४८	५५	२६	३१	ध्रु.	१३	००	ग.	१३	३०	०६:५७	०५:२०	०६	१२	०५	२७	कुम्भ १४:०७	पञ्चक प्रा. १४:०७, भद्रा २४:३० से।
२५	५४	८	शु.	४३	१२	२४	१५	शत.	४९	३७	२६	४९	व्या.	१०	१७	वि.	१३	४५	०६:५८	०५:२०	०७	१३	०६	२८	कुम्भ	शनि मार्गी, ०९:२१, शुक्र अनु. में २५:००, (C)
२५	५२	९	श.	४०	४०	२३	१५	पू.भा.	४८	२७	२६	२२	ह.	०६	३७	बा.	१२	१०	०६:५९	०५:२०	०८	१४	०७	२९	मीन २०:३३	बुध मार्गी २३:०८।
२५	५०	१०	र.	३६	१२	२१	२९	उ.भा.	४५	२५	२५	१०	वज्र. सि.	००५३	३०२२	तै.	०८	३७	०७:००	०५:२०	०९	१५	०८	३०	मीन	गण्डमूल प्रा. २५:११।
२५	४७	११	सो.	३०	०२	१९	०१	रे.	४०	४५	२३	१८	व्य.	४४	५४	ब.	०३	३०	०७:००	०५:२०	१०	१६	०९	दिसम्बर ०१	मेष २३:१८	पञ्चक समा. २३:१८, भद्रा ०८:२० से १६:०१ तक, (D)
२५	४५	१२	मं.	२२	२०	१५	५७	अश्वि.	३३	५५	२०	५१	वरि.	३५	१७	बा.	२२	२०	०७:०१	०५:२०	११	१७	१०	०२	मेष	सूर्य ज्येष्ठा में २५:१४, गण्डमूल समा. २०:५१, (E)
२५	४४	१३	बु.	१३	५५	१२	२६	भर.	२७	२२	१७	५९	परि.	२४	४७	तै.	१३	५५	०७:०२	०५:२०	१२	१८	११	०३	वृष २३:१४	
२५	४२	१४ १५	गु.	०३ ५४	५५ ३५	०८ २८	३७ ४३	कृ.	१९	३७	१४	५४	शिव	१३	४५	व.	०३	५५	०७:०३	०५:२०	१३	१९	१२	०४	वृष	भद्रा ०८:३२ से १८:४२ तक, (F)

(A) गण्डमूल समा. १९:२७, मु. जमादिलाखर प्रा.। (B) नागपञ्चमी (दाक्षिणात्य), स्वामी हरिदास जयन्ती, रामदास जयन्ती, बाबू बैजनाथ जयन्ती। (C) भद्रा १२:३९ तक, दुर्गाष्टमी। (D) मोक्षदा एकादशी व्रत (स.) मौनी एकादशी (जैन), गीता जयन्ती। (E) मत्स्य द्वादशी, भौम प्रदोष व्रत। (F) दत्तात्रेय जयन्ती (प्रदोषकाल), पूर्णिमा व्रत, सत्यव्रत, पण्डित मदनमोहन मालवीय जयन्ती, त्रिपुरभैरवी जयन्ती (प्रदोष काल), रोहिणी व्रत।

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०७	१०	०७	०६	०३	०७	११	१०	०४
अं.	११	०८	२२	२६	००	०२	००	१९	१९
क.	४९	४७	५३	४५	२९	१५	५६	४४	४४
वि.	१९	२६	००	०६	१७	२३	१५	५५	५५
गति	६० ५४	७९४ ०५	४४ २२	१३ वक्री १६	०३ वक्री २०	७५ २५	०० मार्गी ०३	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	अनु. ३ च.	शत. १ च.	ऋ. २ च.	विशा. ३ च.	पुन. ४ च.	विशा. ४ च.	पू.भा. ४ च.	शत. ४ च.	पू.फा. २ च.

२८ नवम्बर २०२५ ई., प्रातः ६:२७

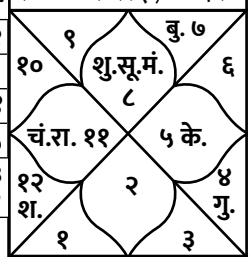

मार्गशीर्ष शु. ८, शुक्रवार

इस मास के पूर्वार्द्ध में सूर्य-मंगल-बुध की युति उनका शुक्र से द्विर्द्वादश योग तथा मास के उत्तरार्द्ध में सूर्य-मंगल-शुक्र की युति और उनका बुध से द्विर्द्वादश योग तथा राहु एवं केतु से केन्द्रीय योग होने के कारण तथा पूर्णिमा का क्षय होने के कारण विश्व रङ्गमञ्च पर भारी राजनैतिक उठापटक होने की सम्भावना है।

०४ दिसम्बर २०२५ ई., प्रातः ६:२७

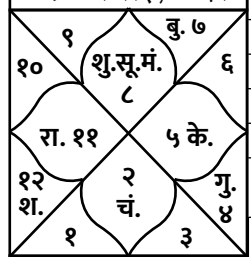

मार्गशीर्ष शु. १४/१५, गुरुवार

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०७	०१	०७	०६	०३	०७	११	१०	०४
अं.	१७	०४	२७	२७	००	०९	००	१९	१९
क.	५४	३६	१९	५८	०६	४७	५८	२५	२५
वि.	०२	००	५८	०२	३१	५९	०७	५०	५०
गति	६० ५०	१२० २४	४४ ४०	४६ मार्गी ०४	०४ वक्री २६	८५ २७	०० मार्गी ४९	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	ऋ. १ च.	कृति. ३ च.	ऋ. ४ च.	विशा. ३ च.	पुन. ४ च.	अनु. २ च.	पू.भा. ४ च.	शत. ४ च.	पू.फा. २ च.

वि. सं. २०८२, शाके १९४७, पौष कृष्ण पक्ष (दि. ०५ दिसम्बर से २० दिसम्बर २०२५ ई.), दक्षिणायन, दक्षिण गोल, हेमन्त ऋतु, के. अहर्गण ५३५६, अयनांश २४°/१३'/१३"

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	घं.	मि.	न.	घ.	प.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	कर.	घ.	प.	सूर्योदय	सूर्यास्त	रा.	प्र.	मु.	अं.	चन्द्रचार	विवरण (भारतीय स्टैण्डर्ड समय में)
२५	४०	१	शु.	४४	३२	२४	५५	रो.	११	४५	११	४६	सि. सा.	०२ ५१	४२ ५०	बा.	१९	२०	०७:०४	०५:२०	मार्ग. १४	मार्ग. २०	ज. १३	दिसम्बर ०५	मिथुन २२:१५	वक्री गुरु मिथुन में १७:२६
२५	३८	२	श.	३६	२०	२१	२५	मृग. आर्द्रा	०४ ५७	४५ ५२	०८ ३०	४८ १३	शुभ	४१	४२	तै.	१०	०७	०७:०४	०५:२०	१५	२१	१४	०६	मिथुन	बुध वृश्चिक में २०:४५, अशून्य शयन व्रत।
२५	३७	३	र.	२८	२०	१८	२५	पुन.	५२	४८	२८	११	शु.	३२	३६	व.	०१	५५	०७:०५	०५:२०	१६	२२	१५	०७	कर्क २२:३८	मङ्गल मूल में २०:१७, मंगल धनु में २०:१७, (A)
२५	३५	४	सो.	२२	२२	१६	०३	पु.	४९	३५	२६	५२	ब्र.	२४	४७	बा.	२२	२२	०७:०६	०५:२०	१७	२३	१६	०८	कर्क	गण्डमूल प्रा. २६:५३
२५	३४	५	मं.	१८	२७	१४	२९	आश्ले.	४८	१०	२६	२२	ऐं.	१८	३५	तै.	१८	२७	०७:०६	०५:२०	१८	२४	१७	०९	सिंह २६:२२	शुक्र ज्येष्ठा में १७:२९, बुध अनु. में, २६:३३
२५	३३	६	बु.	१६	३७	१३	४६	म.	४९	०२	२६	४४	वै.	१४	०५	व.	१६	३७	०७:०७	०५:२०	१९	२५	१८	१०	सिंह	गण्डमूल समा. २६:४४, (B)
२५	३२	७	गु.	१७	०२	१३	५७	पू.फा.	२६	५७	२७	५५	वि.	११	१७	ब.	१७	०२	०७:०८	०५:२१	२०	२६	१९	११	सिंह	कालाष्टमी।
२५	३०	८	शु.	१९	३२	१४	५७	उ.फा.	५६	४५	२९	५०	प्री.	१०	०७	कौ.	१९	३२	०७:०८	०५:२१	२१	२७	२०	१२	कन्या १०:२०	
२५	२९	९	श.	२३	४२	१६	३८	ह.	६०	००	–	–	आयु.	१०	१७	ग.	२३	४२	०७:०९	०५:२२	२२	२८	२१	१३	कन्या	भद्रा २९:४१ से **शुक्रास्त पूर्व में २९:१५ बजे से**
२५	२९	१०	र.	२९	०७	१८	४९	ह.	०३	५०	०८	१८	सौ.	११	२७	वि.	२९	०७	०७:१०	०५:२१	२३	२९	२२	१४	तुला २१:४१	भद्रा १८:५० तक
२५	२८	११	सो.	३५	२२	२१	२०	चि.	०९	५२	११	०८	शो.	१३	१७	ब.	०२	१०	०७:११	०५:२२	२४	पौष ०१	२३	१५	तुला	सूर्य मूल में २८:१९, सूर्य धनु संक्रान्ति २८:१९, (C)
२५	२७	१२	मं.	४१	५५	२३	५७	स्वा.	१७	२५	१४	०९	अति.	१५	२७	कौ.	०८	३७	०७:११	०५:२२	२५	०२	२४	१६	तुला	धनु संक्रान्ति पुण्यकाल मध्याह्न तक।
२५	२७	१३	बु.	४८	२०	२६	३२	वि.	२५	००	१७	११	सु.	१७	४२	ग.	१५	१२	०७:१२	०५:२२	२६	०३	२५	१७	वृश्चिक १०:२६	भद्रा २६:३३ से, प्रदोषव्रत।
२५	२६	१४	गु.	५४	२७	२८	५९	अ.	३२	२५	२०	०६	धृ.	१९	४२	वि.	२१	२७	०७:१२	०५:२३	२७	०४	२६	१८	वृश्चिक	गण्डमूल प्रा. २०:०६, भद्रा १५:४८ तक, मासशिवरात्रि।
२५	२६	३०	शु.	६०	००	-	-	ज्ये.	३९	०५	२२	५१	शू.	२१	२२	च.	२७	१७	०७:१३	०५:२३	२८	०५	२७	१९	धनु २२:५१	बुध ज्येष्ठा में ३०:०९, अमावस्या स्नान दान श्राद्धादि।
२५	२६	३०	श.	००	०५	०७	१५	मू.	४५	२०	२५	२१	गं.	२२	४०	ना.	००	०५	०७:१३	०५:२४	२९	०६	२८	२०	धनु	शुक्र मूल में ०७:४५, शुक्र धनु में ०७:४५, (D)

(A) भद्रा ०७:५१ से १८:२५ तक, चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय १९:४४ (B) भद्रा १३:४७ से २५:४६ तक, शुक्र वृद्धत्व प्रारम्भ, २९:१५ बजे।। (C) सफला एकादशीव्रत (स.)। (D) गण्डमूल समा. २५:२१

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०७	०४	०८	०७	०२	०७	११	१०	०४
अं.	२६	२७	०३	०५	२९	१९	०१	१९	१९
क.	०१	५८	१८	५३	२६	५१	०६	०३	०३
वि.	१८	५४	५१	४९	२२	४६	३५	३५	३५
गति	६० ४४	७३१ ४३	४५ ०६	७५ १२	०५ ४५	६५ ३०	०१ ३२	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	३ चं.	१ चं.	१ चं.	१ चं.	३ चं.	१ चं.	४ चं.	४ चं.	२ चं.
	ज्ये.	उ.फा.	मूल.	अनु.	पुन.	ज्ये.	पू.भा.	शत.	पू.फा.

१२ दिसम्बर २०२५ ई., प्रातः ६:२७

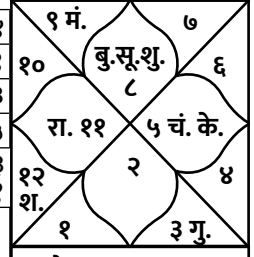

पौष कृ. ८, शुक्रवार

इस मास में पाँच शुक्रवार तथा पाँच शनिवार हैं और धनु संक्रान्ति सोमवार को है अतः सूत, चाँदी, चावल, गेहूँ के भाव मन्दे रहेंगे। तिल, तैल, सरसों, लाल मिर्च, लाल वस्तुओं तथा लोहा तथा लोहे से बनी वस्तुओं के भाव तेज रहेंगे। शेयर बाजार में अनिश्चितता की स्थिति रहेगी।

२० दिसम्बर २०२५ ई., प्रातः ६:२७

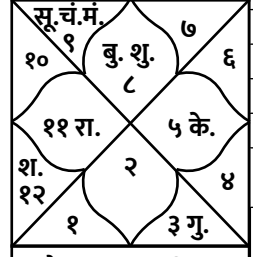

पौष कृ. ३०, शनिवार

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०८	०८	०८	०७	०२	०७	११	१०	०४
अं.	०४	०३	०९	१६	२८	२९	०१	१८	१८
क.	०९	४८	२१	४१	४३	५५	२१	३४	३४
वि.	४३	३२	०२	०४	०६	५४	५०	५८	५८
गति	६१ ०७	७२६ ०२	४५ ३०	८६ ०४	०६ ५०	७५ ३२	०२ २२	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	२ चं.	२ चं.	३ चं.	१ चं.	३ चं.	४ चं.	४ चं.	४ चं.	२ चं.
	मूल.	मूल.	मूल.	ज्ये.	पुन.	ज्ये.	पू.भा.	शत.	पू.फा.

वि. सं. २०८२, शाके १९४७, पौष शुक्ल पक्ष (दि. २१ दिसम्बर २०२५ से ०३ जनवरी २०२६ ई.), दक्षिणायन/उत्तरायण, दक्षिण गोल, शिशिर ऋतु, के. अहर्गण ५३७२, अयनांश २४°/१३'/१६"

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	घं.	मि.	न.	घ.	प.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	कर.	घ.	प.	सूर्योदय	सूर्यास्त	रा.	प्र.	मु.	अं.	चन्द्रचार	विवरण (भारतीय स्टैण्डर्ड समय में)
२५	२५	१	र.	०४	५३	०९	११	पू.षा.	५०	५५	२७	३६	वृ.	२३	२३	व.	०४	५३	०७:१४	०५:२४	मार्ग. ३०	पौष. ०७	ज. २९	दिसम्बर २१	धनु	चन्द्रदर्शन, वर्ष का सबसे छोटा दिन, (A)
२५	२५	२	सो.	०९	०५	१०	५२	उ.षा.	५५	४५	२९	३२	ध्रु.	२३	३५	कौ.	०९	०५	०७:१४	०५:२५	पौष ०१	०८	र. ०१	२२	मकर	रा. पौष प्रा., मु. रज्जब प्रा.।
२५	२५	३	मं.	१२	२५	१२	१३	श्र.	५७	१३	३१	०८	व्या.	२३	०८	ग.	१२	२५	०७:१५	०५:२५	०२	०९	०२	२३	मकर	भद्रा २४:५५ से., विनायक चतुर्थी।
२५	२६	४	बु.	१४	५०	१३	११	धनि.	६०	००	–	–	ह.	२१	५७	वि.	१४	५०	०७:१५	०५:२६	०३	१०	०३	२४	कुम्भ	भद्रा १३:११ तक., पञ्चक १९:४६ से प्रा.।
२५	२६	५	गु.	१६	०५	१३	४२	धनि.	०२	३५	०८	१८	वज्र	१९	५३	बा.	१६	०५	०७:१६	०५:२६	०४	११	०४	२५	कुम्भ	मंगल पू.षा. १२:१५, क्रिसमस दिवस, ईसामसीह जयन्ती।
२५	२६	६	शु.	१६	१०	१३	४४	शत.	०४	२०	०९	००	सि.	१६	५३	तै.	१६	१०	०७:१६	०५:२७	०५	१२	०५	२६	मीन	२७:१०
२५	२७	७	श.	१४	४५	१३	१०	पू.भा.	०४	४५	०९	१०	व्य.	१२	४३	व.	१४	४५	०७:१६	०५:२७	०६	१३	०६	२७	मीन	भद्रा १३:१० से २४:४० तक।
२५	२७	८	र.	११	४५	११	५९	उ.भा.	०३	३५	०८	४३	वरि.	०७	२०	बा.	११	४५	०७:१७	०५:२८	०७	१४	०७	२८	मीन	गण्डमूल प्रा. ०८:४३ से, दुर्गाष्टमी, सूर्य पू.षा. ३०:३० ।
२५	२८	९	सो.	०७	१७	१०	१२	रे. अश्वि.	०१ ५६	०० ५८	०७ ३०	४१ ०४	पुरि. शि.	०० ५३	४८ ०५	कौ.	०७	१७	०७:१७	०५:२८	०८	१५	०८	२९	मेष	पञ्चक समा. ०७:४१, गण्डमूल समा. ३०:०४, (B)
२५	२९	१० ११	मं.	०१ ५४	२५ ५०	०७ २९	५१ ०१	भ.	५१	४३	२७	५८	सिद्ध	४४	२३	ग.	०१	२५	०७:१७	०५:२९	०९	१६	०९	३०	मेष	भद्रा १८:२९ से २९:०१ तक, (C)
२५	३०	१२	बु.	४६	१५	२५	४८	कृ.	४५	३०	२५	३०	सा.	३४	४७	ब.	२०	२३	०७:१८	०५:३०	१०	१७	१०	३१	वृष	पुत्रदा (पवित्रा) एकादशी व्रत (वै.)।
२५	३१	१३	गु.	२७	४०	२२	२२	रो.	४६	१५	२५	४८	शुभ	२४	४५	कौ.	१२	००	०७:१८	०५:३०	११	१८	११	जन. ०१	वृष	रोहिणीव्रत, प्रदोषव्रत, आंग्ल नववर्ष २०२६ प्रा.।
२५	३२	१४	शु.	२८	५७	१८	५३	मृग.	३१	५५	२०	०४	शु.	१४	३३	ग.	०३	२०	०७:१८	०५:३१	१२	१९	१२	०२	मिथुन	भद्रा १८:५४ से २९:११ तक, पूर्णिमा व्रत।
२५	३३	१५	श.	२०	३५	१५	३२	आर्द्रा.	२५	२५	१७	२८	ब्र. ऐं.	०४ ५४	२८ ५३	ब.	२०	३५	०७:१८	०५:३१	१३	२०	१३	०३	मिथुन	सत्यव्रत, माघस्नान प्रारम्भ, शाकम्भरी जयन्ती।

(A) सायन सूर्य मकर में २०:३३, शिशिर ऋतु एवं उत्तरायण प्रा. ।(B) बुध-धनु में ०७:२३ । (C) शुक्र पू.षा. में २१:३०, पुत्रदा (पवित्रा) एकादशी व्रत (स्मा.)।

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०८	११	०८	०७	०२	०८	११	१०	०४
अं.	१२	१५	१५	२८	२७	१०	०१	१८	१८
क.	१८	२१	२६	२६	३८	००	४३	०९	०९
वि.	४३	५९	१३	११	४३	०५	३८	३२	३२
गति	६१ ०८	८१२ ४१	४७ ४८	८९ ५२	०७ वृ. ३२	७५ ३१	०३ ०५	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	४ चं. मृ.	४ चं. उ.भा.	२ चं. पू.षा.	४ चं. ज्ये.	३ चं. पुन.	४ चं. मृ.	४ चं. पू.भा.	४ चं. शत.	२ चं. पू.फा.

२८ दिसम्बर २०२५ ई., प्रातः ६:२७

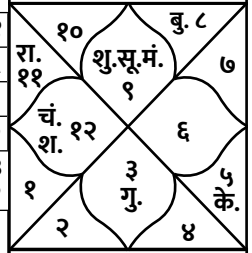

पौष शु. ८, रविवार

इस मास में सूर्य-मंगल-बुध शुक्र की युति तथा उनका शनि के साथ केन्द्रीय योग होने के कारण कश्मीर एवं पश्चिमी प्रान्तों में उग्रवादी एवं आतंकवादी घटनायें बढ़ेंगी। आँधी, तूफान से खड़ी फसलों को नुकसान होने के कारण कृषक वर्ग चिन्तित रहेगा। यान दुर्घटना होने से जन-धन की हानि होने की सम्भावना है।

०३ जनवरी २०२६ ई., प्रातः ६:२७

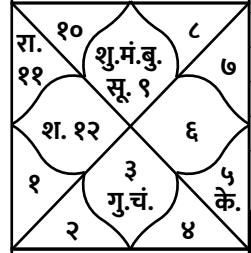

पौष शु. १५, शनिवार

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०८	०२	०८	०८	०२	०८	११	१०	०४
अं.	१८	१३	२०	०७	२६	१७	०२	१७	१७
क.	२५	०९	०१	३३	५२	३३	०४	५०	५०
वि.	३०	२२	५१	१२	०३	०४	०३	२७	२७
गति	६१ ०८	९०१ ३१	४६ ०२	९२ ०३	०७ वृ. ५५	७५ २९	०३ ३८	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	२ चं. पू.षा.	२ चं. आर्द्रा.	३ चं. पू.षा.	३ चं. मूल.	३ चं. पुन.	२ चं. पू.षा.	४ चं. पू.भा.	४ चं. शत.	२ चं. पू.फा.

वि. सं. २०८२, शाके १९४७, माघ कृष्ण पक्ष (दि. ०४ जनवरी से १८ जनवरी २०२६ ई.), उत्तरायण, दक्षिण गोल, शिशिर ऋतु, के. अहर्गण ५३८६, अयनांश २४°/१३'/१९"

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	घं.	मि.	न.	घ.	प.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	कर.	घ.	प.	सूर्योदय	सूर्यास्त	रा.	प्र.	मु.	अं.	चन्द्रचार	विवरण (भारतीय स्टैण्डर्ड समय में)
२५	३४	१	र.	१२	५७	१२	३०	पुन.	१९	४०	१५	११	वै.	४६	१०	कौ.	१२	५७	०७:१९	०५:३२	पौष १४	पौष २१	र. १४	जन. ०४	कर्क ०९:४२	
२५	३६	२	सो.	०६	३२	०९	५६	पुष्य	१५	१२	१३	२४	वि.	३८	४०	ग.	०६	३२	०७:१९	०५:३३	१५	२२	१५	०५	कर्क	भद्रा २०:५४ से, गण्डमूल प्रा. १३:२४ से।
२५	३७	३ ४	मं.	०१ ५७	४५ ०७	०८ ३०	०१ ५२	आश्ले.	१२	२५	१२	१७	प्री.	३२	३५	वि.	०१	४५	०७:१९	०५:३४	१६	२३	१६	०६	सिंह १२:१८	भद्रा समा. ०८:०२, चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय २०:५५, (A)
२५	३९	५	बु.	५९	०५	३०	३३	म.	११	३३	११	५६	आयु.	२८	०८	कौ.	२९	०५	०७:१९	०५:३५	१७	२४	१७	०७	सिंह	गण्डमूल समा. ११:५६ ।
२५	४०	६	गु.	५९	२५	३१	०५	पू.फा.	१२	४३	१२	२४	सौ.	२५	१८	ग.	२८	३३	०७:१९	०५:३५	१८	२५	१८	०८	कन्या १८:३९	भद्रा ३१:०६ से।
२५	४२	७	शु.	६०	००	–	–	उ.फा.	१५	५३	१३	४०	शो.	२४	००	वि.	३०	५०	०७:१९	०५:३६	१९	२६	१९	०९	कन्या	भद्रा १९:४७ तक।
२५	४४	७	श.	०२	४०	०८	२३	हस्त.	२०	५०	१५	३९	अति.	२४	०८	ब.	०२	४०	०७:१९	०५:३७	२०	२७	२०	१०	तुला २८:५२	शुक्र उ.षा. में १२:२१, कालाष्टमी।
२५	४६	८	र.	०७	३२	१०	२०	चि.	२७	१२	१८	१२	सु.	२५	२०	कौ.	०७	३२	०७:१९	०५:३८	२१	२८	२१	११	तुला	सूर्य उत्तराषाढ़ा में ०८:३५, मंगल उ.षा. में २१:१०।
२५	४८	९	सो.	१३	२७	१२	४२	स्वा.	३४	२५	२१	०५	धृ.	२७	१२	गर.	१३	२७	०७:१९	०५:३९	२२	२९	२२	१२	तुला	भद्रा २६:०० से, स्वामी विवेकानन्द जयन्ती, (B)
२५	५०	१०	मं.	१९	५७	१५	१८	वि.	४१	५८	२४	०६	शू.	२९	२५	वि.	१९	५७	०७:१९	०५:३९	२३	३०	२३	१३	वृश्चिक १७:२१	भद्रा समा. १५:१८, लोहड़ी ।
२५	५२	११	बु.	२६	२२	१७	५२	अनु.	४९	२०	२७	०३	गं.	३१	३३	बा.	२६	२२	०७:१९	०५:४०	२४	माघ ०१	२४	१४	वृश्चिक	गण्डमूल प्रा. २७:०४ से, मकर संक्रान्ति १५:०६, (C)
२५	५४	१२	गु.	३२	२२	२०	१६	ज्ये.	५६	१०	२९	४७	वृ.	३३	१७	तै.	३२	२५	०७:१९	०५:४१	२५	०२	२५	१५	धनु २९:४७	बुध. उ.षा. में ०९:१९, मंगल मकर में २८:२८ ।
२५	५७	१३	शु.	३७	३५	२२	२१	मू.	६०	००	–	–	ध्रु.	३४	२८	गर.	०५	०८	०७:१९	०५:४२	२६	०३	२६	१६	धनु	भद्रा प्रा. २२:२२, प्रदोष व्रत, मासशिवरात्रि।
२५	५९	१४	श.	४१	५२	२४	०४	मू.	०२	१२	०८	१२	व्या.	३४	५८	वि.	०९	५३	०७:१९	०५:४३	२७	०४	२७	१७	धनु	भद्रा समा. ११:१६, गण्डमूल समा. ०८:१२, (D)
२६	०२	३०	र.	४५	०५	२५	२१	पू.षा.	०७	१८	१०	१४	ह.	३४	४०	चतु.	१३	३८	०७:१९	०५:४४	२८	०५	२८	१८	मकर १६:४०	मौनी अमावस्या, प्रयाग स्नान, यम तर्पण।

(A) संकष्ट चतुर्थी, सकट चौथ, गणेशावतार, बुध पू.षा. में २४:०१ । (B) शुक्र मकर में २७:५७, युवा दिवस। (C) मकर संक्रान्ति पुण्यकाल १५:०६ से सूर्यास्त तक, षट्तिला एकादशी व्रत (स.), पोंगल। (D) बुध मकर में १०:२३ ।

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०८	०६	०८	०८	०२	०८	११	१०	०४
अं.	२६	००	२६	२०	२५	२७	०२	१७	१७
क.	३४	४७	११	०३	४७	३६	३६	२५	२५
वि.	३२	२९	३३	१३	३९	५३	२०	०१	०१
गति	६१ ०८	७२८ ५१	४६ २१	९५ ०९	०८ ०६	७५ २८	०४ २०	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	४ पू.षा.	३ चित्रा.	४ पू.षा.	३ पू.षा.	२ पुन.	१ उ.षा.	४ पू.भा.	४ शत.	२ पू.फा.

११ जनवरी २०२६ ई., प्रातः ६:२७

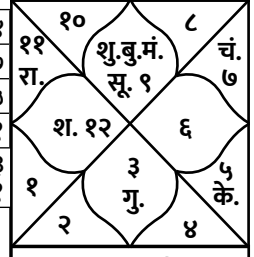

माघ कृ. ८, रविवार

इस मास में पाँच रविवार हैं और मकर संक्रान्ति बुधवार को है, अत: प्रजा में रोग, अशान्ति एवं भय का वातावरण रहेगा। वर्षा की कमी से कृषकवर्ग चिन्तित रहेगा। ऊन, रेशम, किशमिश, पिस्ता आदि मेवा के भाव तेज रहेंगे। सोना, चाँदी, सूत के भाव तेज होकर मन्दे रहेंगे। घी, चावल, नारियल, केशर के भाव मन्दे रहेंगे।

१८ जनवरी २०२६ ई., प्रातः ६:२७

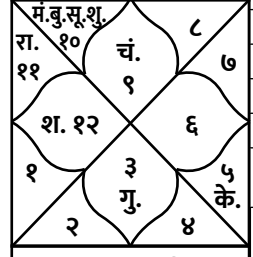

माघ कृ. ३०, रविवार

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०९	०८	०९	०९	०२	०९	११	१०	०४
अं.	०३	२४	०१	०१	२४	०६	०३	१७	१७
क.	४२	४२	३७	२२	५१	२५	०९	०२	०२
वि.	२५	५५	००	२२	२५	०५	०१	४६	४६
गति	६१ ०७	७३६ २३	४६ ३६	९८ ३२	०७ ५६	७५ २६	०४ ५५	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	३ उ.षा.	४ पू.षा.	२ उ.षा.	२ उ.षा.	२ पुन.	३ उ.षा.	४ पू.भा.	४ शत.	२ पू.फा.

वि. सं. २०८२, शाके १९४७, माघ शुक्ल पक्ष (दि. १९ जनवरी से ०१ फरवरी २०२६ ई.), उत्तरायण, दक्षिण गोल, शिशिर ऋतु, के. अहर्गण ५४०१, अयनांश २४°/१३'/२२"

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	घं.	मि.	न.	घ.	प.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	कर.	घ.	प.	सूर्योदय	सूर्यास्त	रा.	प्र.	मु.	अं.	चन्द्रचार	विवरण (भारतीय स्टैण्डर्ड समय में)
२६	०४	१	सो.	४७	२०	२६	१४	उ.षा.	११	२५	११	५२	वज्र.	३३	३७	किं	१६	२२	०७:१८	०५:४४	पौष २९	माघ ०६	र. २९	जन. १९	मकर	गुप्त (शिशिर) नवरात्र प्रा., सायन सूर्य कुम्भ में ३१:१५ ।
२६	**०७**	**२**	मं.	**४८**	**३०**	**२६**	**४२**	श्रव.	**१४**	**३०**	**१३**	**०६**	सिद्धि	**३१**	**४५**	बा.	**१८**	**०५**	**०७:१८**	**०५:४५**	**३०**	**०७**	३०	**२०**	कुम्भ २५:३५	पञ्चक प्रा. २५:३५, शनि उ.भा. में १०:५२, चन्द्रदर्शन(A)
२६	१०	३	बु.	४८	४२	२६	४७	धनि.	१९	४०	१३	५८	व्य.	२९	१०	तै.	१८	४२	०७:१८	०५:४६	माघ ०१	०८	शब्बा ०१	२१	कुम्भ	मु.शब्बाल प्रा., रा. माघ प्रा.।
२६	१३	४	गु.	४७	५५	२६	२८	शत.	१७	५०	१४	२६	वरि.	२५	४७	व.	१८	५०	०७:१८	०५:४७	०२	०९	०२	२२	कुम्भ	भद्रा १४:४१ से २६:२९ तक, (B)
२६	१५	५	शु.	४६	१२	२५	४६	पू.भा.	१८	०७	१४	३२	परि.	२१	४२	ब.	१७	१२	०७:१७	०५:४८	०३	१०	०३	२३	मीन ०८:३३	बुध-श्रवण में १०:२४, वसन्त पञ्चमी, श्री पञ्चमी, (C)
२६	१८	६	श.	४३	२७	२४	४०	उ.भा.	१७	००	१४	१५	शिव	१६	५०	कौ.	१५	००	०७:१७	०५:४९	०४	११	०४	२४	मीन	गण्डमूल प्रा. १४:१५, सूर्य श्रवण में १०:५०, स्कन्द षष्ठी।
२६	२१	७	र.	३९	४२	२३	१०	रेव.	१५	४५	१३	३५	सि.	०९	१०	ग.	११	४५	०७:१७	०५:५०	०५	१२	०५	२५	मेष १३:३५	भद्रा २७:१७ से, पञ्चक समा. १३:३५ रथ सप्तमी, (D)
२६	२४	८	सो.	३५	०५	२१	१८	अश्वि.	१३	१०	१२	३२	सा. शुभं.	०४ ५७	४७ ३७	वि.	०७	३२	०७:१६	०५:५०	०६	१३	०६	२६	मेष	भद्रा समा. १०:१७, गण्डमूल समा. १२:३२, भीष्माष्टमी, (E)
२६	२८	९	मं.	२९	३२	१९	०५	भर.	०९	४०	११	०८	शु.	४९	५०	बा.	०२	२०	०७:१६	०५:५१	०७	१४	०७	२७	वृष १६:४४	गुप्त (शिशिर) नवरात्र समा.।
२६	३१	१०	बु.	२३	२०	१६	२६	कृ.	०५	२५	०९	२६	ब्र.	४१	३२	गर.	२३	२०	०७:१६	०५:५२	०८	१५	०८	२८	वृष	भद्रा २८:१७ से., रोहिणी व्रत, मंगल-श्रवण में २४:३८।
२६	३४	११	गु.	१६	४०	१३	५५	रो. मृगं.	०० ५५	४० ३५	०७ २९	३१ २९	ऐं.	३३	५०	वि.	१६	४०	०७:१५	०५:५३	०९	१६	०९	२९	मिथुन १८:३०	भद्रा समा. १३:५५, (F)
२६	३७	१२	शु.	०९	४५	११	०९	आर्द्रा.	५०	३०	२७	२७	वै.	२४	२७	बा.	०९	४५	०७:१५	०५:५४	१०	१७	१०	३०	मिथुन	तिल द्वादशी, प्रदोष व्रत, मरु महोत्सव (राज.)(प्रा.) (G)
२६	४१	१३ १४	श.	०२ ५५	५७ ०५	०८ २९	२५ ५२	पुन.	४५	४७	२५	३३	वि.	१५	४७	तै.	०२	५७	०७:१४	०५:५५	११	१८	११	३१	कर्क २०:०१	भद्रा २९:५३ से । **शुक्र उदय १७:३७**
२६	४४	१५	र.	५१	००	२७	३८	पुष्य.	५१	४७	२३	५७	प्री.	०७	४०	वि.	२३	४०	०७:१४	०५:५६	१२	१९	१२	फर. ०१	कर्क	भद्रा समा. १६:४३, गण्डमूल प्रा. २३:५८, (H)

(A) शुक्र श्रवण २६:४९, (B) विनायक चतुर्थी, तिल चतुर्थी। (C) सरस्वती पूजा, सुभाष चन्द्र बोस जयन्ती। (D) भानु सप्तमी, अचला सप्तमी, हिमाचल प्रदेश पूर्ण राज्य दिवस। (E) दुर्गाष्टमी, मन्वादि, भारतीय गणतन्त्र दिवस। (F) जया एकादशी व्रत (स.) भीष्मद्वादशी। (G) जैसलमेर (राज.), बुध धनिष्ठा में २७:२४। (H) माघी पूर्णिमा, पूर्णिमा व्रत, सत्यव्रत, गुरु रविदास जयन्ती, मरुमहोत्सव समाप्त, श्री ललिता जयन्ती, माघस्नान समाप्त, माघ जयन्ती।

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०९	००	०९	०९	०२	०९	११	१०	०४
अं.	११	०९	०७	१४	२३	१६	०३	१६	१६
क.	५०	४६	५०	५०	५०	२८	५०	३७	३७
वि.	५३	१६	४६	३४	०८	१९	५७	१९	१९
गति	६१ ०१	८३२ ३९	४६ ४९	१०३ ०१	०७ २३	७५ २२	०५ २९	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	२ चं.	३ चं.	४ चं.	२ चं.	२ चं.	२ चं.	१ चं.	३ चं.	२ चं.
	श्रव.	अश्वि.	उ.षा.	श्रव.	पुन.	श्रव.	उ.भा.	शत.	पू.फा.

२६ जनवरी २०२६ ई., प्रातः ६:२७

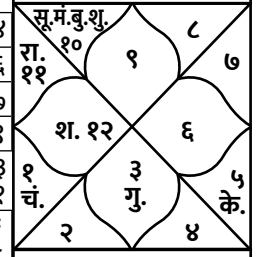

माघ शु. ८, सोमवार

इस मास में सूर्य-मंगल-बुध-शुक्र की युति इनका राहु से द्विर्द्वादश तथा केतु से षडष्टक योग होने के कारण कश्मीर, गुजरात, उड़ीसा, बंगाल में उग्रवादी एवं हिंसक घटनायें घटित होंगी। प्राकृतिक आपदा से भी जन-धन हानि होने की सम्भावना, पूरे उत्तरी भारत में शीतलहर से जन-जीवन अस्त-व्यस्त रहेगा।

०१ फरवरी २०२६ ई., प्रातः ६:२७

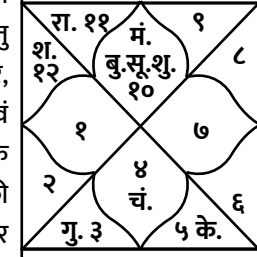

माघ शु. १५, रविवार

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०९	०३	०९	०९	०२	०९	११	१०	०४
अं.	१७	०६	१२	२५	२३	२४	०४	१६	१६
क.	५६	१५	३२	१९	०७	००	२५	१८	१८
वि.	३०	३०	०८	१४	५८	१४	१६	१५	१५
गति	६० ५४	८६६ ४३	४६ ५७	१०५ ५१	०६ ४५	७५ १७	०५ ५२	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	३ चं.	१ चं.	१ चं.	१ चं.	१ चं.	१ चं.	१ चं.	३ चं.	१ चं.
	श्रव.	पुष्य.	श्रव.	धनि.	पुन.	धनि.	उ.भा.	शत.	पू.फा.

वि. सं. २०८२, शाके १९४७, फाल्गुन कृष्ण पक्ष (दि. ०२ फरवरी से १७ फरवरी २०२६ ई.), उत्तरायण, दक्षिण गोल, शिशिर ऋतु, के. अहर्गण ५४१५, अयनांश २४°/१३'/२५"

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	घं.	मि.	न.	घ.	प.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	कर.	घ.	प.	सूर्योदय	सूर्यास्त	रा.	प्र.	मु.	अं.	चन्द्रचार	विवरण (भारतीय स्टैण्डर्ड समय में)
२६	४८	१	सो.	४६	३८	२५	५२	आश्ले.	३८	५५	२२	४७	आयु. सौ.	०० ५३	१८ ५०	बा.	१८	४०	०७:१३	०५:५८	माघ १३	माघ २०	श. १३	फर. ०२	सिंह २२:४७	
२६	५१	२	मं.	४३	३८	२४	४०	मघा	३६	५८	२२	१०	शो.	४८	३२	तै.	१४	५५	०७:१३	०५:५७	१४	२१	१४	०३	सिंह	गण्डमूल समा. २२:११, बुध कुम्भ में २१:५१, (A)
२६	५५	३	बु.	४२	३३	२४	०९	पू.फा.	३७	२५	२२	१२	अति.	४४	४०	व.	१२	४८	०७:१२	०५:५८	१५	२२	१५	०४	कन्या २८:१९	भद्रा १२:२० से. २४:१० तक।
२६	५८	४	गु.	४२	५८	२४	२२	उ.फा.	३९	२३	२२	५७	सु.	४२	१३	ब.	१२	२८	०७:११	०५:५९	१६	२३	१६	०५	कन्या	चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय २१:३६, शुक्र कुम्भ २५:११,
२७	०२	५	शु.	४५	१७	२५	१८	ह.	४३	००	२४	२३	धृ.	४१	०५	कौ.	१३	५५	०७:११	०६:००	१७	२४	१७	०६	कन्या	सूर्य-धनि में १४:०४
२७	०६	६	श.	४९	२०	२६	५४	चि.	४८	१६	२६	२८	शू.	४१	१५	ग.	१७	१०	०७:१०	०६:००	१८	२५	१८	०७	तुला १३:२१	भद्रा २६:५५ से., बुध-शत. में १६:२९
२७	०९	७	र.	५४	३८	२९	०१	स्वा.	५४	४२	२९	०२	गं.	४२	२५	वि.	२१	०३	०७:०९	०६:०१	१९	२६	१९	०८	तुला	भद्रा समा. १५:५५ ।
२७	१३	८	सो.	६०	००	-	-	वि.	६०	००	-	-	वृ.	४४	१५	बा.	२७	३८	०७:०९	०६:०२	२०	२७	२०	०९	वृश्चिक २५:११	कालाष्टमी, हलाष्टमी, जानकी अष्टमी।
२७	१७	८	मं.	००	४७	०७	२७	वि.	०१	५८	०७	५५	ध्रु.	४६	२५	कौ.	००	४८	०७:०८	०६:०३	२१	२८	२१	१०	वृश्चिक	
२७	२१	९	बु.	०७	०७	०९	५८	अनु.	०९	२३	१०	५२	व्या.	४८	२५	ग.	०७	०८	०७:०७	०६:०४	२२	२९	२२	११	वृश्चिक	भद्रा २३:१२ से., गण्डमूल प्रा. १०:५२, (B)
२७	२४	१०	गु.	१३	०७	१२	२२	ज्ये.	१६	२९	१३	४२	ह.	४९	५५	वि.	१३	०८	०७:०७	०६:०४	२३	फा. ०१	२३	१२	धनु १३:४२	भद्रा समा. १२:२२, महर्षि दयानन्द सरस्वती जयन्ती, (C)
२७	२८	११	शु.	१८	२०	१४	२६	मूल.	२२	४५	१६	१२	वज्र	५०	२८	बा.	१८	२०	०७:०६	०६:०५	२४	०२	२४	१३	धनु	गण्डमूल समा. १६:१३, (D)
२७	३२	१२	श.	२२	२२	१६	०२	पू.षा.	२७	५७	१८	१६	सिद्धि	५०	३०	तै.	२२	२२	०७:०५	०६:०६	२५	०३	२५	१४	मकर २४:४२	शनिप्रदोष व्रत, मंगल-धनिष्ठा में २४:३७।
२७	३६	१३	र.	२५	०२	१७	०५	उ.षा.	३१	४८	१९	४८	व्य.	४९	१५	व.	२५	०३	०७:०४	०६:०७	२६	०४	२६	१५	मकर	भद्रा १७:०५ से २९:२४ तक, (E)
२७	४०	१४	सो.	२६	१७	१७	३४	श्रव.	३४	२०	२०	४७	वरि.	४६	३०	श.	२६	१८	०७:०३	०६:०८	२७	०५	२७	१६	मकर	महाशिवरात्रि व्रत-पारणा।
२७	४४	३०	मं.	२६	१०	१७	३०	धनि.	३५	३३	२१	१६	परि.	४४	२५	ना.	२६	१०	०७:०२	०६:०८	२८	०६	२८	१७	कुम्भ ०९:०५	पञ्चक प्रा. ०९:०६, युगादि अमावस्या, (F)

(A) शुक्र बाल्यत्व समा. १७:३७ बजे, अशून्य शयन व्रत। (B) शुक्र-शत ०८:५१ (C) कुम्भ संक्रान्ति २८:०८ (D) विजया एकादशी व्रत (स.) कुम्भ संक्रान्ति पुण्यकाल मध्याह्न तक। (E) बुध-पू. भा. में २१:३३, महाशिवरात्रि व्रत। (F) स्नानदान श्राद्धादि अमावस्या।

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०९	०६	०९	१०	०२	१०	११	१०	०४
अं.	२६	२०	१८	०९	२२	०४	०५	१५	१५
क.	०२	४२	४८	२४	१८	०२	१४	५२	५२
वि.	५९	०१	२७	५२	४४	०६	२२	४९	४९
गति	६० ४४	७१४ २२	४७ ०४	१०२ ३५	०५ ३०	७५ १०	०६ २३	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	४ चं. धनि.	४ चं. विशा.	३ चं. श्रव.	१ चं. शत.	१ चं. पुन.	४ चं. धनि	१ चं. उ.भा.	३ चं. शत.	१ चं. पू.फा.

१० फरवरी २०२६ ई., प्रातः ६:२७

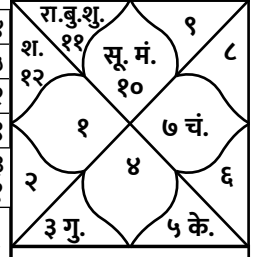

फाल्गुन कृ. ८, मंगलवार

इस मास में पाँच मंगलवार हैं और कुम्भ की संक्रान्ति गुरुवार को है, अतः प्रजा में परस्पर द्वेष, कलह, अशान्ति रक्तविकार होगा। मक्का, ज्वार, बाजरा, चावल, मूँग, मोठ, लोबिया, सरसों, तिल, तैल, अलसी, सोना, चाँदी, ताम्बा, पीतल, जस्ता आदि धातुओं के भाव मन्दे, चना, गेहूँ, जौ, ऊन, रेशम के भाव तेज रहेंगे।

१७ फरवरी २०२६ ई., प्रातः ६:२७

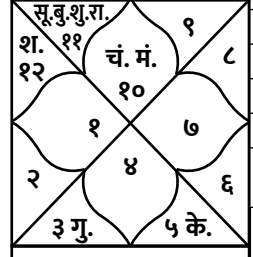

फाल्गुन कृ. ३०, मंगलवार

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	१०	०९	०९	१०	०२	१०	११	१०	०४
अं.	०४	२८	२५	२१	२१	१४	०६	१५	१५
क.	०८	३३	०५	५१	३९	०३	०६	२७	२७
वि.	२१	४१	५३	०३	१९	०७	४७	२२	२२
गति	६० ३५	७७४ ५९	४७ १०	८० ०४	०४ २०	७५ ०४	०६ ४३	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	४ चं. धनि.	२ चं. धनि.	१ चं. धनि.	१ चं. पू.भा.	१ चं. पुन.	३ चं. शत.	१ चं. उ.भा.	३ चं. शत.	१ चं. पू.फा.

वि. सं. २०८२, शाके १९४७, फाल्गुन शुक्ल पक्ष (दि. १८ फरवरी से ०३ मार्च २०२६ ई.), उत्तरायण, दक्षिण गोल, वसन्त ऋतु, के. अहर्गण ५४३१, अयनांश २४°/१३'/२७"

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	घं.	मि.	न.	घ.	प.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	कर.	घ.	प.	सूर्योदय	सूर्यास्त	रा.	प्र.	मु.	अं.	चन्द्रचार	विवरण (भारतीय स्टैण्डर्ड समय में)
२७	४८	१	बु.	२४	४७	१६	५७	शत.	३५	३५	२१	१६	शि.	३९	१७	ब.	२४	५०	०७:०२	०६:०९	मा. २९	फा. ०७	श. २९	फर. १८	कुम्भ	सायन सूर्य मीन में २१:२२ वसन्त ऋतु प्रा., चन्द्रदर्शन।
२७	५२	२	गु.	२२	२२	१५	५८	पू.भा.	३४	३५	२०	५१	सिद्ध	३४	१२	कौ.	२२	२५	०७:०१	०६:१०	३०	०८	२. ०१	१९	मीन १४:५९	सूर्य शत. में १८:३३, फुलैरा दोज, (A)
२७	५६	३	शु.	१९	०५	१४	३८	उ.भा.	३२	४७	२०	०७	सा.	२८	२७	ग.	१९	०५	०७:००	०६:११	फा. ०१	०९	०२	२०	मीन	भद्रा २५:५२ से., गण्डमूल प्रा. २०:०७, रा. फाल्गुन प्रा.
२८	००	४	श.	१५	०५	१३	०१	रे.	३०	१७	१९	०६	शुभ.	२२	१०	वि.	१५	०५	०६:५९	०६:११	०२	१०	०३	२१	मेष १९:०६	भद्रा समा. १३:०१, पञ्चक समा. १९:०६, (B)
२८	०५	५	र.	१०	३०	११	१०	अश्वि.	२७	२०	१७	५४	शु.	१५	२५	बा.	१०	३०	०६:५८	०६:१२	०३	११	०४	२२	मेष	गण्डमूल समा. १७:५४ ।
२८	०९	६	सो.	०५	३०	०९	०९	भर.	२४	००	१६	३३	ब्र.	०८	१२	तै.	०५	३०	०६:५७	०६:१३	०४	१२	०५	२३	वृष २२:१२	मंगल कुम्भ में ११:५० ।
२८	१३	७ ८	मं.	०० ५४	१५ ४७	०७ २८	०२ ५१	कृ.	२०	२७	१५	०७	वै. वं.	०१ ५३	०७ ४५	व.	००	१५	०६:५६	०६:१३	०५	१३	०६	२४	वृष	भद्रा ०७:०२ से १७:५७ तक, दुर्गाष्टमी, (C)
२८	१७	९	बु.	५४	४७	२६	४१	रो.	१६	४७	१३	३८	वि.	४६	२२	बा.	२२	०७	०६:५५	०६:१४	०६	१४	०७	२५	वृष	
२८	२१	१०	गु.	४४	०७	२४	३३	मृग.	१३	१७	१२	११	प्री.	३८	३२	तै.	१६	४७	०६:५४	०६:१५	०७	१५	०८	२६	मिथुन ००:५४	बुध-वक्री १२:१७
२८	२५	११	शु.	३९	१०	२२	३३	आर्द्रा.	१०	१२	१०	५८	आयु.	३२	०५	व.	११	३७	०६:५३	०६:१६	०८	१६	०९	२७	मिथुन	भद्रा ११:३२ से २२:३३ तक, (D)
२८	३०	१२	श.	३४	३७	२०	४३	पुन.	०६	४५	०९	३४	सौ.	२५	२५	ब.	०६	५०	०६:५२	०६:१६	०९	१७	१०	२८	कर्क ०३:५२	गोविन्द द्वादशी।
२८	३४	१३	र.	३०	४५	१९	०९	पुष्य.	०४	१७	०८	३४	शो.	१९	१२	कौ.	०२	३७	०६:५१	०६:१७	१०	१८	११	मार्च ०१	कर्क	गण्डमूल प्रा. ०८:३४, प्रदोष व्रत, शुक्र मीन में २४:५६।
२८	३८	१४	सो.	२७	४२	१७	५५	आश्ले.	०२	३२	०७	५१	अति.	१३	३२	व.	२७	४५	०६:५०	०६:१८	११	१९	१२	०२	सिंह ०७:५१	भद्रा १७:५६ से २९:२८ तक, (E)
२८	४२	१५	मं.	२५	४५	१७	०७	मघा.	०१	४५	०७	३१	सु.	०१	१७	ब.	२५	४७	०६:४९	०६:१८	१२	२०	१३	०३	सिंह	गण्डमूल समा. ०७:३१, मंगल शतभिषा में २२:५४, सत्यव्रत, (F)

(A) रामकृष्णपरमहंस जयन्ती, मु. रमजान प्रा.। (B) शुक्र पू. भा. में २४:३७, विनायक चतुर्थी। (C) होलाष्टक प्रा., रोहिणी व्रत, ओली जैन प्रा.। (D) आमलकी (रङ्गभरी) एकादशी व्रत (स.)। (E) पूर्णिमा व्रत । (F) होलाष्टक समाप्त, होलिका दहन प्रदोषकाल,चैतन्य महाप्रभु जयन्ती , ओली जैन समा., खग्रास चन्द्रग्रहण।

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	१०	०१	१०	१०	०२	१०	११	१०	०४
अं.	११	०४	००	२७	२१	२२	०६	१५	१५
क.	११	५२	३६	५५	१४	४८	५४	०५	०५
वि.	४७	२३	४०	४०	०६	०५	५२	०७	०७
गति	६० २४	८४९ ५३	४७ १६	२६ ४८	वक्री ०३	७४ ५५	०६ ५८	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	२ चं. शत.	३ चं. कृत्ति.	३ चं. धनि.	३ चं. पू.भा.	१ चं. पुन.	१ चं. पू.भा.	२ चं. उ.भा.	३ चं. शत.	१ चं. पू.फा.

२४ फरवरी २०२६ ई., प्रातः ६:२७

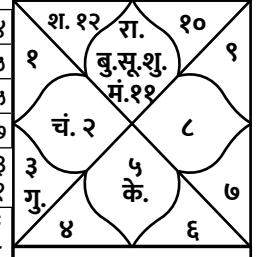

फाल्गुन शु. ७/८, मंगलवार

इस मास में सूर्य-मंगल-बुध-शुक्र-राहू पञ्चग्रही योग उनका शनि से द्विर्द्वादश तथा केतु से समसप्तक योग होने के कारण विश्व के अधिकतर भागों में संक्रामक रोग तथा महामारी का प्रकोप रहेगा। यवन राष्ट्रों में युद्ध विभीषिका से भयावह स्थिति रहेगी। किसी राष्ट्र में छत्रभङ्ग होने की सम्भावना है। तूफान, भूकम्प आदि प्राकृतिक आपदा से भी जन-धन हानि होने की सम्भावना है।

०३ मार्च २०२६ ई., प्रातः ६:२७

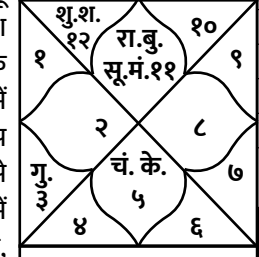

फाल्गुन शु. १५, मंगलवार

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	१०	०४	१०	१०	०२	११	११	१०	०४
अं.	१८	१२	०६	२६	२०	०१	०७	१४	१४
क.	१३	४४	०७	३५	५८	३१	४४	४२	४२
वि.	३९	०१	३५	१९	१३	५४	३७	५२	५२
गति	६० १०	८१२ ०१	४७ १७	३८ १७	०१ १७	०१ वक्री ४१	७४ ३५	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	४ चं. शत.	४ चं. मघा.	४ चं. धनि.	२ चं. पू.भा.	१ चं. पुन.	४ चं. पू.भा.	२ चं. उ.भा.	३ चं. शत.	१ चं. पू.फा.

वि. सं. २०८२, शाके १९४७, चैत्र कृष्ण पक्ष (दि. ०४ मार्च से १९ मार्च २०२६ ई.), उत्तरायण, दक्षिण गोल, वसन्त ऋतु, के. अहर्गण ५४४५, अयनांश २४°/१३'/२९"

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	घं.	मि.	न.	घ.	प.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	कर.	घ.	प.	सूर्योदय	सूर्यास्त	रा.	प्र.	मु.	अं.	चन्द्रचार	विवरण (भारतीय स्टैण्डर्ड समय में)
२८	४७	१	बु.	२५	०२	१६	४९	पू.फा.	०२	०५	०७	३८	धृ.	०५	१०	कौ.	२५	०२	०६:४८	०६:१९	फा. १३	फा. २१	रम. १४	मार्च ०४	कन्या १३:४५	शुक्र उ.भा. में १७:१०, अशून्य शयन व्रत, (A)
२८	५१	२	गु.	२५	४३	१७	०४	उ.फा.	०३	५५	०८	१७	शू.	०२	२५	ग.	२५	४२	०६:४७	०६:१९	१४	२२	१५	०५	कन्या	भद्रा २९:२८ से।
२८	५५	३	शु.	२७	४७	१७	५३	ह.	०६	४७	०९	२९	ग.	००	४७	वि.	२७	५०	०६:४६	०६:२०	१५	२३	१६	०६	तुला	२२:१८ भद्रा १७:५४ तक, चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय २१:१५
२८	५९	४	श.	३१	२०	१९	१७	चि.	१२	४५	११	५१	वृ.	००	१७	ब.	३१	२०	०६:४५	०६:२०	१६	२४	१७	०७	तुला	
२९	०४	५	र.	३६	१०	२१	११	स्व.	१६	३५	१३	३१	ध्रु.	००	५०	कौ.	०३	३७	०६:४३	०६:२१	१७	२५	१८	०८	तुला	रङ्गपञ्चमी, मेलानवचण्डी प्रा. (मेरठ)।
२९	०८	६	सो.	४१	४२	२३	२७	वि.	२३	४२	१६	११	व्या.	०२	१२	ग.	०८	५७	०६:४२	०६:२२	१८	२६	१९	०९	वृश्चिक ०९:२९	भद्रा २३:२७ से, एकनाथ षष्ठी।
२९	१२	७	मं.	४८	०२	२५	५४	अनु.	३१	००	१९	०५	ह.	०४	१०	वि.	३१	३०	०६:४१	०६:२२	१९	२७	२०	१०	वृश्चिक	भद्रा समा. १२:४०, गण्डमूल प्रा. १९:०५ ।
२९	१७	८	बु.	५४	०७	२८	१९	ज्ये.	३८	२०	२२	००	वज्र.	०६	२०	बा.	३१	३२	०६:४०	०६:२३	२०	२८	२१	११	धनु २२:००	गुरु मार्गी ०९:५९, कालाष्टमी, शीतलाष्टमी, (B)
२९	२१	९	गु.	५९	३५	३०	२९	मू.	४५	१०	२४	४३	सिद्ध	०७	४७	तै.	३१	५२	०६:३९	०६:२४	२१	२९	२२	१२	धनु	गण्डमूल समा. २४:४३
२९	२५	१०	शु.	६०	००	२४	००	पू.षा.	५१	०२	२७	०३	व्य.	०९	४२	व.	३१	५५	०६:३८	०६:२४	२२	३०	२३	१३	धनु	भद्रा १९:२४से।
२९	३०	१०	श.	०३	५५	०८	११	उ.षा.	५५	३०	२८	४९	वरि.	११	०२	वि.	०३	५५	०६:३७	०६:२५	२३	चैत्र ०१	२४	१४	मकर ०९:३२	भद्रा ०८:११ तक, मीन संक्रान्ति २५:०२
२९	३४	११	र.	०६	४७	०९	१६	श्रव.	५८	२२	२९	५६	परि.	०९	३५	बा.	०६	४५	०६:३५	०६:२५	२४	०२	२५	१५	मकर	शुक्र रेवती में १०:३८, (C)
२९	३८	१२	सो.	०७	४७	०९	४१	धनि.	५९	५५	३०	२२	शि.	०७	३५	तै.	०७	४७	०६:३४	०६:२६	२५	०३	२६	१६	कुम्भ १८:१४	पञ्चक प्रा. १८:१४, सोम प्रदोष व्रत।
२९	४३	१३	मं.	०७	०५	०९	२३	शत.	५८	५७	३०	०८	सिद्ध सा.	०४ ५९	१२ २२	व.	०७	०५	०६:३३	०६:२६	२६	०४	२७	१७	कुम्भ	भद्रा ०९:२३ से २०:५४ तक, मास शिवरात्रि।
२९	४७	१४	बु.	०४	४२	०८	२५	पू.भा.	५७	०२	२९	२१	शुभ.	५३	४२	श.	०४	१५	०६:३२	०६:२७	२७	०५	२८	१८	मीन २३:३६	सूर्य उ.भा. में ०९:२०, अमावस्या श्राद्धादि।
२९	५१	३० ०१	गु.	०० ५५	५५ ५२	०६ २८	५३ ५२	उ.भा.	५३	५२	२८	०४	शु.	४६	५५	ना.	००	५५	०६:३१	०६:२८	२८	०६	२९	१९	मीन	गण्डमूल प्रा. २८:०४, अमावस्या स्नानदानादि, (D)

(A) आम्रकलिका प्राशन, वसन्तोत्सव, धुलेण्डी, धूलिवन्दन, सूर्य पूर्वाभाद्रपदा में २४:५३। (B) बासोड़ा, मेला नवचण्डी (समा.) मेरठ। (C) पापमोचिनी एकादशी व्रत (स.) मीन संक्रान्ति पुण्यकाल मध्याह्न तक।(D) मेला पृथूदक (पेहवा) हरियाणा, विक्रम संवत् २०८२ समाप्त, चैत्र शुक्लपक्ष प्रतिपदा तिथि क्षय।

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	१०	०७	१०	१०	०२	११	११	१०	०४
अं.	२६	२२	१२	१९	२०	११	०८	१४	१४
क.	१३	१७	२५	०६	५१	२९	४२	१७	१७
वि.	५९	३०	४३	१५	४६	०२	५७	२५	२५
गति	५९ ५७	७१२ ४९	४७ १५	५७ २१	०० ०७	७४ ३३	०७ २२	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	पू.भा. २	ज्ये. २	शत. २	शत. ४	पुन. १	उ.भा. ३	उ.भा. २	शत. ३	पू.फा. १

११ मार्च २०२६ ई., प्रात: ६:२७

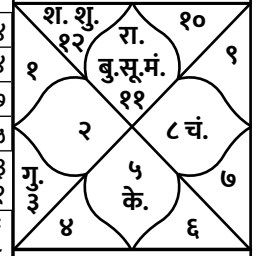

चैत्र कृ. ८, बुधवार

इस पक्ष में सूर्य-मंगल-बुध-राहु चतुर्ग्रही योग तथा उनका शुक्र-शनि से द्विर्द्वादश एवं केतु से समसप्तक योग होने के कारण कश्मीर में आन्तकवादी एवं उग्रवादी घटनायें बढ़ेंगी। आन्तकवादियों से सैनिक मुठभेढ़ में भारी मात्रा में अवैध हथियार एवं बम विस्फोटक गोला बारुद आदि बरामद होगा। पश्चिम बंगाल में भी आन्तकवादी घटनायें बढेंगी। बुध का पूर्व में उदय होने के कारण तूफान, भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोप से जन-धन हानि की सम्भावना है। सरकार के अनेक लोक हितकारी योजनायें लाने की सम्भावना है।

१९ मार्च २०२६ ई., प्रात: ६:२७

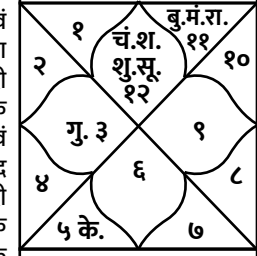

चैत्र कृ. ३०, गुरुवार

ग्र.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	११	११	१०	१०	०२	११	११	१०	०४
अं.	०४	०३	१८	१४	२०	२१	०९	१३	१३
क.	१२	५८	४३	२५	५७	२४	४२	५१	५१
वि.	३०	२१	३२	२८	४८	३२	२२	५९	५९
गति	५९ ४३	८२८ ०६	४७ १२	१३ ५९	०१ २६	७४ २१	०७ २८	०३ ११	०३ ११
नक्षत्र चरण	उ.भा. १	उ.भा. १	शत. ४	शत. ३	पुन. १	रेव. २	उ.भा. २	शत. ३	पू.फा. १

विक्रम सम्वत् २०८२, दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह, अप्रैल २०२५ (भा. स्टैं. टा. समय प्रातः०६:२७)

तिथि	दिन	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
		रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.
१	मंगल	११ १७ २० १४	०० २३ ४० १४	०२ २९ २४ ०६	११ ०४ ३१ ०१	०१ २१ ४६ २३	११ ०३ १८ १५	११ ०० १७ ०१	११ ०२ ३१ १२	०५ ०२ ३१ १२
२	बुध	११ १८ १९ २७	०१ ०८ २७ १०	०२ २९ ४३ ५४	११ ०३ ५८ ३३	०१ २१ ५५ ४५	११ ०२ ५१ १४	११ ०० २४ १२	११ ०२ २८ ०१	०५ ०२ २८ ०१
३	गुरु	११ १९ १८ ३८	०१ २२ ५३ १३	०३ ०० ०४ ०४	११ ०३ ३१ १८	०१ २२ ०५ १३	११ ०२ २६ १६	११ ०० ३१ २२	११ ०२ २४ ५०	०५ ०२ २४ ५०
४	शुक्र	११ २० १७ ४७	०२ ०६ ५५ ००	०३ ०० २४ ३४	११ ०३ ०९ ३०	०१ २२ १४ ४८	११ ०२ ०३ २७	११ ०० ३८ ३१	११ ०२ २१ ४०	०५ ०२ २१ ४०
५	शनि	११ २१ १६ ५३	०२ २० ३१ ४१	०३ ०० ४५ २५	११ ०२ ५३ १५	०१ २२ २४ ३०	११ ०१ ४२ ५४	११ ०० ४५ ३७	११ ०२ १८ २९	०५ ०२ १८ २९
६	रवि	११ २२ १५ ५८	०३ ०३ ४४ ३०	०३ ०१ ०६ ३६	११ ०२ ४२ ३५	०१ २२ ३४ १८	११ ०१ २४ ३९	११ ०० ५२ ४३	११ ०२ १५ १८	०५ ०२ १५ १८
७	सोम	११ २३ १४ ५९	०३ १६ ३५ ५८	०३ ०१ २८ ०६	११ ०२ ३७ २८	०१ २२ ४४ १३	११ ०१ ०८ ४८	११ ०० ५९ ४६	११ ०२ १२ ०७	०५ ०२ १२ ०७
८	मंगल	११ २४ १३ ५९	०३ २९ ०९ २३	०३ ०१ ४९ ५५	११ ०२ ३७ ५१	०१ २२ ५४ १४	११ ०० ५५ २२	११ ०१ ०६ ४८	११ ०२ ०८ ५७	०५ ०२ ०८ ५७
९	बुध	११ २५ १२ ५६	०४ ११ २८ १२	०३ ०२ १२ ०२	११ ०२ ४३ ३३	०१ २३ ०४ २१	११ ०० ४४ २२	११ ०१ १३ ४९	११ ०२ ०५ ४६	०५ ०२ ०५ ४६
१०	गुरु	११ २६ ११ ५१	०४ २३ ३५ ४७	०३ ०२ ३४ २७	११ ०२ ५४ २७	०१ २३ १४ ३५	११ ०० ३५ ५०	११ ०१ २० ४७	११ ०२ ०२ ३५	०५ ०२ ०२ ३५
११	शुक्र	११ २७ १० ४४	०५ ०५ ३५ ११	०३ ०२ ५७ ०९	११ ०३ १० २१	०१ २३ २४ ५४	११ ०० २९ ४५	११ ०१ २७ ४३	११ ०१ ५९ २४	०५ ०१ ५९ २४
१२	शनि	११ २८ ०९ ३५	०५ १७ २९ ०३	०३ ०३ २० ०८	११ ०३ ३१ ०४	०१ २३ ३५ १९	११ ०० २६ ०६	११ ०१ ३४ ३८	११ ०१ ५६ १४	०५ ०१ ५६ १४
१३	रवि	११ २९ ०८ २४	०५ २९ १९ ४३	०३ ०३ ४३ २५	११ ०३ ५६ २३	०१ २३ ४५ ५०	११ ०० २४ ५३	११ ०१ ४१ ३१	११ ०१ ५३ ०३	०५ ०१ ५३ ०३
१४	सोम	०० ०० ०७ ११	०६ ११ ०९ १३	०३ ०४ ०६ ५७	११ ०४ २६ ०६	०१ २३ ५६ २७	११ ०० २६ ०२	११ ०१ ४८ २१	११ ०१ ४९ ५२	०५ ०१ ४९ ५२
१५	मंगल	०० ०१ ०५ ५६	०६ २२ ५९ ३२	०३ ०४ ३० ४५	११ ०५ ०० ००	०१ २४ ०७ १०	११ ०० २९ ३३	११ ०१ ५५ ०९	११ ०१ ४६ ४१	०५ ०१ ४६ ४१
१६	बुध	०० ०२ ०४ ३९	०७ ०४ ५२ ४३	०३ ०४ ५४ ४९	११ ०५ ३७ ५५	०१ २४ १७ ५७	११ ०० ३५ २१	११ ०२ ०१ ५६	११ ०१ ४३ ३०	०५ ०१ ४३ ३०
१७	गुरु	०० ०३ ०३ २०	०७ १६ ५१ ०२	०३ ०५ १९ ०८	११ ०६ १९ ३९	०१ २४ २८ ५१	११ ०० ४३ २५	११ ०२ ०८ ४०	११ ०१ ४० २०	०५ ०१ ४० २०
१८	शुक्र	०० ०४ ०१ ५९	०७ २८ ५७ ०६	०३ ०५ ४३ ४२	११ ०७ ०५ ००	०१ २४ ३९ ४९	११ ०० ५३ ४०	११ ०२ १५ २२	११ ०१ ३७ ०९	०५ ०१ ३७ ०९
१९	शनि	०० ०५ ०० ३७	०८ ११ १३ ५६	०३ ०६ ०८ ३१	११ ०७ ५३ ४९	०१ २४ ५० ५३	११ ०१ ०६ ०३	११ ०२ २२ ०१	११ ०१ ३३ ५८	०५ ०१ ३३ ५८
२०	रवि	०० ०५ ५९ १३	०८ २३ ४४ ५५	०३ ०६ ३३ ३४	११ ०८ ४५ ५६	०१ २५ ०२ ०२	११ ०१ २० ३१	११ ०२ २८ ३८	११ ०१ ३० ४७	०५ ०१ ३० ४७
२१	सोम	०० ०६ ५७ ४७	०९ ०६ ३३ ३९	०३ ०६ ५८ ५२	११ ०९ ४१ ११	०१ २५ १३ १६	११ ०१ ३६ ५९	११ ०२ ३५ १२	११ ०१ २७ ३७	०५ ०१ २७ ३७
२२	मंगल	०० ०७ ५६ २०	०९ १९ ४३ ४०	०३ ०७ २४ २३	११ १० ३९ २६	०१ २५ २४ ३५	११ ०१ ५५ २४	११ ०२ ४१ ४४	११ ०१ २४ २६	०५ ०१ २४ २६
२३	बुध	०० ०८ ५४ ५१	१० ०३ १७ ५७	०३ ०७ ५० ०८	११ ११ ४० ३४	०१ २५ ३५ ५९	११ ०२ १५ ४२	११ ०२ ४८ १४	११ ०१ २१ १५	०५ ०१ २१ १५
२४	गुरु	०० ०९ ५३ २१	१० १७ १८ १६	०३ ०८ १६ ०६	११ १२ ४४ २७	०१ २५ ४७ २८	११ ०२ ३७ ४८	११ ०२ ५४ ४१	११ ०१ १८ ०४	०५ ०१ १८ ०४
२५	शुक्र	०० १० ५१ ४९	११ ०१ ४४ २८	०३ ०८ ४२ १८	११ १३ ५० ५९	०१ २५ ५९ ०१	११ ०३ ०१ ३९	११ ०३ ०१ ०४	११ ०१ १४ ५४	०५ ०१ १४ ५४
२६	शनि	०० ११ ५० १५	११ १६ ३३ ४४	०३ ०९ ०८ ४२	११ १५ ०० ०४	०१ २६ १० ३९	११ ०३ २७ ११	११ ०३ ०७ २६	११ ०१ ११ ४३	०५ ०१ ११ ४३
२७	रवि	०० १२ ४८ ४०	०० ०१ ४० १४	०३ ०९ ३५ १९	११ १६ ११ ३६	०१ २६ २२ २२	११ ०३ ५४ १९	११ ०३ १३ ४४	११ ०१ ०८ ३२	०५ ०१ ०८ ३२
२८	सोम	०० १३ ४७ ०३	०० १६ ५५ १८	०३ १० ०२ ०९	११ १७ २५ ३०	०१ २६ ३४ ०९	११ ०४ २३ ०१	११ ०३ १९ ५९	११ ०१ ०५ २१	०५ ०१ ०५ २१
२९	मंगल	०० १४ ४५ २४	०१ ०२ ०८ ३६	०३ १० २९ ११	११ १८ ४१ ४३	०१ २६ ४६ ००	११ ०४ ५३ १३	११ ०३ २६ १२	११ ०१ ०२ १०	०५ ०१ ०२ १०
३०	बुध	०० १५ ४३ ४३	०१ १७ ०९ ४६	०३ १० ५६ २४	११ २० ०० ११	०१ २६ ५७ ५६	११ ०५ २४ ५०	११ ०३ ३२ २१	११ ०० ५९ ००	०५ ०० ५९ ००

विक्रम सम्वत् २०८२, दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह, मई २०२५ (भा. स्टैं. टा. समय प्रातः०६:२७)

तिथि	दिन	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
		रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.
१	गुरु	०० १६ ४२ ००	०२ ०१ ५० ०७	०३ ११ २३ ५०	११ २१ २० ४९	०१ २७ ०९ ५५	११ ०५ ५७ ५०	११ ०३ ३८ २७	११ ०० ५५ ४९	०५ ०० ५५ ४९
२	शुक्र	०० १७ ४० १५	०२ १६ ०३ ५७	०३ ११ ५१ २७	११ २२ ४३ ३६	०१ २७ २१ ५९	११ ०६ ३२ ०९	११ ०३ ४४ ३०	११ ०० ५२ ३८	०५ ०० ५२ ३८
३	शनि	०० १८ ३८ २८	०२ २९ ४८ ५१	०३ १२ १९ १५	११ २४ ०८ २९	०१ २७ ३४ ०६	११ ०७ ०७ ४५	११ ०३ ५० ३०	११ ०० ४९ २७	०५ ०० ४९ २७
४	रवि	०० १९ ३६ ४०	०३ १३ ०५ २४	०३ १२ ४७ १४	११ २५ ३५ २६	०१ २७ ४६ १८	११ ०७ ४४ ३४	११ ०३ ५६ २६	११ ०० ४६ १७	०५ ०० ४६ १७
५	सोम	०० २० ३४ ४९	०३ २५ ५६ २२	०३ १३ १५ २४	११ २७ ०४ २५	०१ २७ ५८ ३२	११ ०८ २२ ३४	११ ०४ ०२ १९	११ ०० ४३ ०६	०५ ०० ४३ ०६
६	मंगल	०० २१ ३२ ५६	०४ ०८ २५ ५०	०३ १३ ४३ ४४	११ २८ ३५ २५	०१ २८ १० ५१	११ ०९ ०१ ४१	११ ०४ ०८ ०८	११ ०० ३९ ५५	०५ ०० ३९ ५५
७	बुध	०० २२ ३१ ०१	०४ २० ३८ ३०	०३ १४ १२ १४	०० ०० ०८ २५	०१ २८ २३ १३	११ ०९ ४१ ५५	११ ०४ १३ ५४	११ ०० ३६ ४४	०५ ०० ३६ ४४
८	गुरु	०० २३ २९ ०५	०५ ०२ ३९ ०५	०३ १४ ४० ५४	०० ०१ ४३ २५	०१ २८ ३५ ३९	११ १० २३ ११	११ ०४ १९ ३७	११ ०० ३३ ३३	०५ ०० ३३ ३३
९	शुक्र	०० २४ २७ ०६	०५ १४ ३२ ०१	०३ १५ ०९ ४४	०० ०३ २० २३	०१ २८ ४८ ०७	११ ११ ०५ २८	११ ०४ २५ १६	११ ०० ३० २३	०५ ०० ३० २३
१०	शनि	०० २५ २५ ०६	०५ २६ २१ ०६	०३ १५ ३८ ४३	०० ०४ ५९ २१	०१ २९ ०० ३९	११ ११ ४८ ४३	११ ०४ ३० ५१	११ ०० २७ १२	०५ ०० २७ १२
११	रवि	०० २६ २३ ०४	०६ ०८ ०९ ३५	०३ १६ ०७ ५२	०० ०६ ४० १७	०१ २९ १३ १५	११ १२ ३२ ५४	११ ०४ ३६ २२	११ ०० २४ ०१	०५ ०० २४ ०१
१२	सोम	०० २७ २१ ०१	०६ २० ०० ००	०३ १६ ३७ ०९	०० ०८ २३ १२	०१ २९ २५ ५३	११ १३ १८ ००	११ ०४ ४१ ५०	११ ०० २० ५०	०५ ०० २० ५०
१३	मंगल	०० २८ १८ ५५	०७ ०१ ५४ २०	०३ १७ ०६ ३६	०० १० ०८ ०६	०१ २९ ३८ ३४	११ १४ ०३ ५७	११ ०४ ४७ १४	११ ०० १७ ४०	०५ ०० १७ ४०
१४	बुध	०० २९ १६ ४९	०७ १३ ५४ १०	०३ १७ ३६ १२	०० ११ ५४ ५९	०१ २९ ५१ १९	११ १४ ५० ४५	११ ०४ ५२ ३४	११ ०० १४ २९	०५ ०० १४ २९
१५	गुरु	०१ ०० १४ ४१	०७ २६ ०० ५३	०३ १८ ०५ ५६	०० १३ ४३ ५२	०२ ०० ०४ ०६	११ १५ ३८ २१	११ ०४ ५७ ५०	११ ०० ११ १८	०५ ०० ११ १८
१६	शुक्र	०१ ०१ १२ ३१	०८ ०८ १५ ५२	०३ १८ ३५ ४९	०० १५ ३४ ४४	०२ ०० १६ ५६	११ १६ २६ ४३	११ ०५ ०३ ०३	११ ०० ०८ ०७	०५ ०० ०८ ०७
१७	शनि	०१ ०२ १० २०	०८ २० ४० ४४	०३ १९ ०५ ५०	०० १७ २७ ३४	०२ ०० २९ ४९	११ १७ १५ ५०	११ ०५ ०८ ११	११ ०० ०४ ५७	०५ ०० ०४ ५७
१८	रवि	०१ ०३ ०८ ०८	०९ ०३ १७ २८	०३ १९ ३५ ५९	०० १९ २२ २३	०२ ०० ४२ ४४	११ १८ ०५ ४०	११ ०५ १३ १५	११ ०० ०१ ४६	०५ ०० ०१ ४६
१९	सोम	०१ ०४ ०५ ५५	०९ १६ ०८ ३०	०३ २० ०६ १७	०० २१ १९ ०९	०२ ०० ५५ ४२	११ १८ ५६ ११	११ ०५ १८ १५	१० २९ ५८ ३५	०४ २९ ५८ ३५
२०	मंगल	०१ ०५ ०३ ४१	०९ २९ १६ ३४	०३ २० ३६ ४२	०० २३ १७ ४९	०२ ०१ ०८ ४३	११ १९ ४७ २२	११ ०५ २३ ११	१० २९ ५५ २४	०४ २९ ५५ २४
२१	बुध	०१ ०६ ०१ २६	१० १२ ४४ २२	०३ २१ ०७ १६	०० २५ १८ २२	०२ ०१ २१ ४६	११ २० ३९ ११	११ ०५ २८ ०३	१० २९ ५२ १३	०४ २९ ५२ १३
२२	गुरु	०१ ०६ ५९ ०९	१० २६ ३४ ०९	०३ २१ ३७ ५८	०० २७ २० ४३	०२ ०१ ३४ ५१	११ २१ ३१ ३७	११ ०५ ३२ ५०	१० २९ ४९ ०३	०४ २९ ४९ ०३
२३	शुक्र	०१ ०७ ५६ ५२	११ १० ४६ ५८	०३ २२ ०८ ४७	०० २९ २४ ४८	०२ ०१ ४७ ५९	११ २२ २४ ३९	११ ०५ ३७ ३३	१० २९ ४५ ५२	०४ २९ ४५ ५२
२४	शनि	०१ ०८ ५४ ३३	११ २५ २१ ५१	०३ २२ ३९ ४४	०१ ०१ ३० २९	०२ ०२ ०१ ०९	११ २३ १८ १४	११ ०५ ४२ ११	१० २९ ४२ ४१	०४ २९ ४२ ४१
२५	रवि	०१ ०९ ५२ १४	०० १० १५ ०८	०३ २३ १० ४९	०१ ०३ ३७ ४०	०२ ०२ १४ २१	११ २४ १२ २२	११ ०५ ४६ ४५	१० २९ ३९ ३०	०४ २९ ३९ ३०
२६	सोम	०१ १० ४९ ५३	०० २५ २० १३	०३ २३ ४२ ०२	०१ ०५ ४६ १२	०२ ०२ २७ ३५	११ २५ ०७ ०१	११ ०५ ५१ १५	१० २९ ३६ २०	०४ २९ ३६ २०
२७	मंगल	०१ ११ ४७ ३२	०१ १० २७ ५९	०३ २४ १३ २१	०१ ०७ ५५ ५३	०२ ०२ ४० ५२	११ २६ ०२ १०	११ ०५ ५५ ३९	१० २९ ३३ ०९	०४ २९ ३३ ०९
२८	बुध	०१ १२ ४५ ०९	०१ २५ २८ १६	०३ २४ ४४ ४९	०१ १० ०६ ३१	०२ ०२ ५४ १०	११ २६ ५७ ४८	११ ०६ ०० ००	१० २९ २९ ५८	०४ २९ २९ ५८
२९	गुरु	०१ १३ ४२ ४५	०२ १० ११ ३२	०३ २५ १६ २३	०१ १२ १७ ५२	०२ ०३ ०७ ३०	११ २७ ५३ ५३	११ ०६ ०४ १५	१० २९ २६ ४७	०४ २९ २६ ४७
३०	शुक्र	०१ १४ ४० १९	०२ २४ ३० ३१	०३ २५ ४८ ०४	०१ १४ २९ ४२	०२ ०३ २० ५१	११ २८ ५० २६	११ ०६ ०८ २५	१० २९ २३ ३७	०४ २९ २३ ३७
३१	शनि	०१ १५ ३७ ५३	०३ ०८ २१ १०	०३ २६ १९ ५३	०१ १६ ४१ ४५	०२ ०३ ३४ १५	११ २९ ४७ २४	११ ०६ १२ ३१	१० २९ २० २६	०४ २९ २० २६

विक्रम सम्वत् २०८२, दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह, जून २०२५ (भा. स्टैं. टा. समय प्रातः०६:२७)

तिथि	दिन	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
		रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.
१	रवि	०१ १६ ३५ २५	०३ २१ ४२ ४२	०३ २६ ५१ ४८	०१ १८ ५३ ४४	०२ ०३ ४७ ४०	०० ०० ४४ ४७	११ ०६ १६ ३२	१० २९ १७ १५	०४ २९ १७ १५
२	सोम	०१ १७ ३२ ५६	०४ ०४ ३७ ०५	०३ २७ २३ ४९	०१ २१ ०५ २३	०२ ०४ ०१ ०६	०० ०१ ४२ ३५	११ ०६ २० २८	१० २९ १४ ०४	०४ २९ १४ ०४
३	मंगल	०१ १८ ३० २५	०४ १७ ०८ ०७	०३ २७ ५५ ५८	०१ २३ १६ २६	०२ ०४ १४ ३४	०० ०२ ४० ४६	११ ०६ २४ १९	१० २९ १० ५३	०४ २९ १० ५३
४	बुध	०१ १९ २७ ५३	०४ २९ २० ४४	०३ २८ २८ १२	०१ २५ २६ ३६	०२ ०४ २८ ०३	०० ०३ ३९ १९	११ ०६ २८ ०५	१० २९ ०७ ४३	०४ २९ ०७ ४३
५	गुरु	०१ २० २५ २०	०५ ११ २० १३	०३ २९ ०० ३३	०१ २७ ३५ ३९	०२ ०४ ४१ ३३	०० ०४ ३८ १४	११ ०६ ३१ ४६	१० २९ ०४ ३२	०४ २९ ०४ ३२
६	शुक्र	०१ २१ २२ ४६	०५ २३ ११ ४९	०३ २९ ३३ ००	०१ २९ ४३ २१	०२ ०४ ५५ ०५	०० ०५ ३७ ३१	११ ०६ ३५ २२	१० २९ ०१ २१	०४ २९ ०१ २१
७	शनि	०१ २२ २० १०	०६ ०५ ०० १७	०४ ०० ०५ ३३	०२ ०१ ४९ ३०	०२ ०५ ०८ ३८	०० ०६ ३७ ०८	११ ०६ ३८ ५३	१० २८ ५८ १०	०४ २८ ५८ १०
८	रवि	०१ २३ १७ ३४	०६ १६ ४९ ४७	०४ ०० ३८ १२	०२ ०३ ५३ ५५	०२ ०५ २२ ११	०० ०७ ३७ ०६	११ ०६ ४२ १८	१० २८ ५५ ००	०४ २८ ५५ ००
९	सोम	०१ २४ १४ ५७	०६ २८ ४३ ३७	०४ ०१ १० ५६	०२ ०५ ५६ २७	०२ ०५ ३५ ४६	०० ०८ ३७ २३	११ ०६ ४५ ३८	१० २८ ५१ ४९	०४ २८ ५१ ४९
१०	मंगल	०१ २५ १२ १८	०७ १० ४४ १८	०४ ०१ ४३ ४७	०२ ०७ ५६ ५८	०२ ०५ ४९ २२	०० ०९ ३७ ५९	११ ०६ ४८ ५४	१० २८ ४८ ३८	०४ २८ ४८ ३८
११	बुध	०१ २६ ०९ ३९	०७ २२ ५३ ३२	०४ ०२ १६ ४३	०२ ०९ ५५ २२	०२ ०६ ०२ ५८	०० १० ३८ ५३	११ ०६ ५२ ०३	१० २८ ४५ २७	०४ २८ ४५ २७
१२	गुरु	०१ २७ ०६ ५९	०८ ०५ १२ १९	०४ ०२ ४९ ४५	०२ ११ ५१ ३४	०२ ०६ १६ ३६	०० ११ ४० ०५	११ ०६ ५५ ०८	१० २८ ४२ १६	०४ २८ ४२ १६
१३	शुक्र	०१ २८ ०४ १८	०८ १७ ४१ १५	०४ ०३ २२ ५२	०२ १३ ४५ २९	०२ ०६ ३० १४	०० १२ ४१ ३५	११ ०६ ५८ ०७	१० २८ ३९ ०६	०४ २८ ३९ ०६
१४	शनि	०१ २९ ०१ ३७	०९ ०० २० ४१	०४ ०३ ५६ ०६	०२ १५ ३७ ०५	०२ ०६ ४३ ५२	०० १३ ४३ २१	११ ०७ ०१ ०१	१० २८ ३५ ५५	०४ २८ ३५ ५५
१५	रवि	०१ २९ ५८ ५५	०९ १३ ११ ०९	०४ ०४ २९ २४	०२ १७ २६ १९	०२ ०६ ५७ ३२	०० १४ ४५ २४	११ ०७ ०३ ४९	१० २८ ३२ ४४	०४ २८ ३२ ४४
१६	सोम	०२ ०० ५६ १३	०९ २६ १३ २७	०४ ०५ ०२ ४८	०२ १९ १३ ०९	०२ ०७ ११ १२	०० १५ ४७ ४३	११ ०७ ०६ ३२	१० २८ २९ ३३	०४ २८ २९ ३३
१७	मंगल	०२ ०१ ५३ ३०	१० ०९ २८ ४८	०४ ०५ ३६ १७	०२ २० ५७ ३५	०२ ०७ २४ ५२	०० १६ ५० १७	११ ०७ ०९ ०९	१० २८ २६ २३	०४ २८ २६ २३
१८	बुध	०२ ०२ ५० ४७	१० २२ ५८ ४३	०४ ०६ ०९ ५२	०२ २२ ३९ ३५	०२ ०७ ३८ ३३	०० १७ ५३ ०६	११ ०७ ११ ४१	१० २८ २३ १२	०४ २८ २३ १२
१९	गुरु	०२ ०३ ४८ ०४	११ ०६ ४४ ४४	०४ ०६ ४३ ३३	०२ २४ १९ ०८	०२ ०७ ५२ १५	०० १८ ५६ १०	११ ०७ १४ ०७	१० २८ २० ०१	०४ २८ २० ०१
२०	शुक्र	०२ ०४ ४५ २१	११ २० ४७ ४९	०४ ०७ १७ १८	०२ २५ ५६ १३	०२ ०८ ०५ ५६	०० १९ ५९ २८	११ ०७ १६ २७	१० २८ १६ ५०	०४ २८ १६ ५०
२१	शनि	०२ ०५ ४२ ३७	०० ०५ ०७ ४३	०४ ०७ ५१ ०९	०२ २७ ३० ५०	०२ ०८ १९ ३८	०० २१ ०३ ००	११ ०७ १८ ४२	१० २८ १३ ४०	०४ २८ १३ ४०
२२	रवि	०२ ०६ ३९ ५४	०० १९ ४२ १७	०४ ०८ २५ ०६	०२ २९ ०२ ५९	०२ ०८ ३३ २०	०० २२ ०६ ४५	११ ०७ २० ५१	१० २८ १० २९	०४ २८ १० २९
२३	सोम	०२ ०७ ३७ १०	०१ ०४ २७ ०५	०४ ०८ ५९ ०७	०३ ०० ३२ ३६	०२ ०८ ४७ ०३	०० २३ १० ४३	११ ०७ २२ ५४	१० २८ ०७ १८	०४ २८ ०७ १८
२४	मंगल	०२ ०८ ३४ २६	०१ १९ १५ २९	०४ ०९ ३३ १४	०३ ०१ ५९ ४३	०२ ०९ ०० ४५	०० २४ १४ ५३	११ ०७ २४ ५२	१० २८ ०४ ०७	०४ २८ ०४ ०७
२५	बुध	०२ ०९ ३१ ४१	०२ ०३ ५९ २५	०४ १० ०७ २६	०३ ०३ २४ १६	०२ ०९ १४ २६	०० २५ १९ १५	११ ०७ २६ ४३	१० २८ ०० ५६	०४ २८ ०० ५६
२६	गुरु	०२ १० २८ ५७	०२ १८ ३० ३९	०४ १० ४१ ४४	०३ ०४ ४६ १३	०२ ०९ २८ ०९	०० २६ २३ ४८	११ ०७ २८ २९	१० २७ ५७ ४६	०४ २७ ५७ ४६
२७	शुक्र	०२ ११ २६ १२	०३ ०२ ४२ १५	०४ ११ १६ ०६	०३ ०६ ०५ ३४	०२ ०९ ४१ ५१	०० २७ २८ ३३	११ ०७ ३० ०९	१० २७ ५४ ३५	०४ २७ ५४ ३५
२८	शनि	०२ १२ २३ २६	०३ १६ २९ ३२	०४ ११ ५० ३३	०३ ०७ २२ १४	०२ ०९ ५५ ३२	०० २८ ३३ २९	११ ०७ ३१ ४३	१० २७ ५१ २४	०४ २७ ५१ २४
२९	रवि	०२ १३ २० ४१	०३ २९ ५० ३८	०४ १२ २५ ०६	०३ ०८ ३६ ११	०२ १० ०९ १४	०० २९ ३८ ३५	११ ०७ ३३ ११	१० २७ ४८ १३	०४ २७ ४८ १३
३०	सोम	०२ १४ १७ ५४	०४ १२ ४६ १६	०४ १२ ५९ ४३	०३ ०९ ४७ २१	०२ १० २२ ५४	०१ ०० ४३ ५२	११ ०७ ३४ ३३	१० २७ ४५ ०३	०४ २७ ४५ ०३

विक्रम सम्वत् २०८२, दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह, जुलाई २०२५ (भा. स्टैं. टा. समय प्रातः०६:२७)

तिथि	दिन	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
		रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.
१	मंगल	०२ १५ १५ ०८	०४ २५ १९ १५	०४ १३ ३४ २५	०३ १० ५५ ४०	०२ १० ३६ ३५	०१ ०१ ४९ १८	११ ०७ ३५ ४८	१० २७ ४१ ५२	०४ २७ ४१ ५२
२	बुध	०२ १६ १२ २१	०५ ०७ ३३ ४६	०४ १४ ०९ ११	०३ १२ ०१ ०३	०२ १० ५० १४	०१ ०२ ५४ ५५	११ ०७ ३६ ५८	१० २७ ३८ ४१	०४ २७ ३८ ४१
३	गुरु	०२ १७ ०९ ३४	०५ १९ ३४ ५२	०४ १४ ४४ ०२	०३ १३ ०३ २७	०२ ११ ०३ ५३	०१ ०४ ०० ४१	११ ०७ ३८ ०२	१० २७ ३५ ३०	०४ २७ ३५ ३०
४	शुक्र	०२ १८ ०६ ४६	०६ ०१ २७ ५१	०४ १५ १८ ५८	०३ १४ ०२ ४४	०२ ११ १७ ३२	०१ ०५ ०६ ३७	११ ०७ ३९ ००	१० २७ ३२ २०	०४ २७ ३२ २०
५	शनि	०२ १९ ०३ ५८	०६ १३ १७ ५६	०४ १५ ५३ ५९	०३ १४ ५८ ५०	०२ ११ ३१ ०९	०१ ०६ १२ ४२	११ ०७ ३९ ५२	१० २७ २९ ०९	०४ २७ २९ ०९
६	रवि	०२ २० ०१ १०	०६ २५ ०९ ५३	०४ १६ २९ ०३	०३ १५ ५१ ३८	०२ ११ ४४ ४६	०१ ०७ १८ ५७	११ ०७ ४० ३८	१० २७ २५ ५८	०४ २७ २५ ५८
७	सोम	०२ २० ५८ २१	०७ ०७ ०७ ५२	०४ १७ ०४ १२	०३ १६ ४१ ०१	०२ ११ ५८ २२	०१ ०८ २५ २०	११ ०७ ४१ १८	१० २७ २२ ४७	०४ २७ २२ ४७
८	मंगल	०२ २१ ५५ ३३	०७ १९ १५ ०९	०४ १७ ३९ २६	०३ १७ २६ ५२	०२ १२ ११ ५७	०१ ०९ ३१ ५३	११ ०७ ४१ ५२	१० २७ १९ ३६	०४ २७ १९ ३६
९	बुध	०२ २२ ५२ ४४	०८ ०१ ३४ ०५	०४ १८ १४ ४४	०३ १८ ०९ ०३	०२ १२ २५ ३०	०१ १० ३८ ३४	११ ०७ ४२ २०	१० २७ १६ २६	०४ २७ १६ २६
१०	गुरु	०२ २३ ४९ ५६	०८ १४ ०५ ५८	०४ १८ ५० ०६	०३ १८ ४७ २७	०२ १२ ३९ ०३	०१ ११ ४५ २३	११ ०७ ४२ ४२	१० २७ १३ १५	०४ २७ १३ १५
११	शुक्र	०२ २४ ४७ ०७	०८ २६ ५१ १४	०४ १९ २५ ३३	०३ १९ २१ ५४	०२ १२ ५२ ३५	०१ १२ ५२ २२	११ ०७ ४२ ५८	१० २७ १० ०४	०४ २७ १० ०४
१२	शनि	०२ २५ ४४ १९	०९ ०९ ४९ ३३	०४ २० ०१ ०३	०३ १९ ५२ १७	०२ १३ ०६ ०५	०१ १३ ५९ २८	११ ०७ ४३ ०७	१० २७ ०६ ५३	०४ २७ ०६ ५३
१३	रवि	०२ २६ ४१ ३१	०९ २३ ०० ०९	०४ २० ३६ ३९	०३ २० १८ २७	०२ १३ १९ ३४	०१ १५ ०६ ४३	११ ०७ ४३ ११	१० २७ ०३ ४३	०४ २७ ०३ ४३
१४	सोम	०२ २७ ३८ ४४	१० ०६ २२ ०८	०४ २१ १२ १८	०३ २० ४० १५	०२ १३ ३३ ०२	०१ १६ १४ ०६	११ ०७ ४३ ०९	१० २७ ०० ३२	०४ २७ ०० ३२
१५	मंगल	०२ २८ ३५ ५७	१० १९ ५४ ४६	०४ २१ ४८ ०२	०३ २० ५७ ३५	०२ १३ ४६ २८	०१ १७ २१ ३७	११ ०७ ४३ ००	१० २६ ५७ २१	०४ २६ ५७ २१
१६	बुध	०२ २९ ३३ १०	११ ०३ ३७ ३७	०४ २२ २३ ५०	०३ २१ १० १९	०२ १३ ५९ ५३	०१ १८ २९ १६	११ ०७ ४२ ४६	१० २६ ५४ १०	०४ २६ ५४ १०
१७	गुरु	०३ ०० ३० २४	११ १७ ३० २५	०४ २२ ५९ ४२	०३ २१ १८ २०	०२ १४ १३ १७	०१ १९ ३७ ०२	११ ०७ ४२ २५	१० २६ ५१ ००	०४ २६ ५१ ००
१८	शुक्र	०३ ०१ २७ ३९	०० ०१ ३२ ५५	०४ २३ ३५ ३९	०३ २१ २१ ३३	०२ १४ २६ ३९	०१ २० ४४ ५६	११ ०७ ४१ ५९	१० २६ ४७ ४९	०४ २६ ४७ ४९
१९	शनि	०३ ०२ २४ ५५	०० १५ ४४ २१	०४ २४ ११ ४०	०३ २१ १९ ५५	०२ १४ ३९ ५९	०१ २१ ५२ ५८	११ ०७ ४१ २६	१० २६ ४४ ३८	०४ २६ ४४ ३८
२०	रवि	०३ ०३ २२ ११	०१ ०० ०३ ०५	०४ २४ ४७ ४५	०३ २१ १३ २४	०२ १४ ५३ १७	०१ २३ ०१ ०७	११ ०७ ४० ४८	१० २६ ४१ २७	०४ २६ ४१ २७
२१	सोम	०३ ०४ १९ २८	०१ १४ २६ १२	०४ २५ २३ ५५	०३ २१ ०२ ०२	०२ १५ ०६ ३४	०१ २४ ०९ २३	११ ०७ ४० ०३	१० २६ ३८ १६	०४ २६ ३८ १६
२२	मंगल	०३ ०५ १६ ४६	०१ २८ ४९ ३१	०४ २६ ०० ०९	०३ २० ४५ ५२	०२ १५ १९ ४९	०१ २५ १७ ४५	११ ०७ ३९ १२	१० २६ ३५ ०६	०४ २६ ३५ ०६
२३	बुध	०३ ०६ १४ ०४	०२ १३ ०७ ५०	०४ २६ ३६ २७	०३ २० २५ ०२	०२ १५ ३३ ०२	०१ २६ २६ १५	११ ०७ ३८ १५	१० २६ ३१ ५५	०४ २६ ३१ ५५
२४	गुरु	०३ ०७ ११ २३	०२ २७ १५ ३९	०४ २७ १२ ४९	०३ १९ ५९ ४३	०२ १५ ४६ १३	०१ २७ ३४ ५१	११ ०७ ३७ १३	१० २६ २८ ४४	०४ २६ २८ ४४
२५	शुक्र	०३ ०८ ०८ ४३	०३ ११ ०८ ००	०४ २७ ४९ १६	०३ १९ ३० १२	०२ १५ ५९ २१	०१ २८ ४३ ३३	११ ०७ ३६ ०४	१० २६ २५ ३३	०४ २६ २५ ३३
२६	शनि	०३ ०९ ०६ ०४	०३ २४ ४१ ०९	०४ २८ २५ ४७	०३ १८ ५६ ५१	०२ १६ १२ २८	०१ २९ ५२ २२	११ ०७ ३४ ५०	१० २६ २२ २३	०४ २६ २२ २३
२७	रवि	०३ १० ०३ २५	०४ ०७ ५३ ०७	०४ २९ ०२ २३	०३ १८ २० ०४	०२ १६ २५ ३२	०२ ०१ ०१ १७	११ ०७ ३३ २९	१० २६ १९ १२	०४ २६ १९ १२
२८	सोम	०३ ११ ०० ४६	०४ २० ४३ ५१	०४ २९ ३९ ०२	०३ १७ ४० २३	०२ १६ ३८ ३४	०२ ०२ १० १८	११ ०७ ३२ ०३	१० २६ १६ ०१	०४ २६ १६ ०१
२९	मंगल	०३ ११ ५८ ०८	०५ ०३ १४ ५८	०५ ०० १५ ४५	०३ १६ ५८ २४	०२ १६ ५१ ३३	०२ ०३ १९ २४	११ ०७ ३० ३१	१० २६ १२ ५०	०४ २६ १२ ५०
३०	बुध	०३ १२ ५५ ३१	०५ १५ २९ ३२	०५ ०० ५२ ३३	०३ १६ १४ ४७	०२ १७ ०४ ३०	०२ ०४ २८ ३७	११ ०७ २८ ५३	१० २६ ०९ ३९	०४ २६ ०९ ३९
३१	गुरु	०३ १३ ५२ ५४	०५ २७ ३१ ३६	०५ ०१ २९ २४	०३ १५ ३० १६	०२ १७ १७ २४	०२ ०५ ३७ ५६	११ ०७ २७ १०	१० २६ ०६ २९	०४ २६ ०६ २९

विक्रम सम्वत् २०८२, दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह, अगस्त २०२५ (भा. स्टैं. टा. समय प्रातः०६:२७)

तिथि	दिन	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
		रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.
१	शुक्र	०३ १४ ५० १८	०६ ०९ २५ ५४	०५ ०२ ०६ २०	०३ १४ ४५ ३८	०२ १७ ३० १५	०२ ०६ ४७ २०	११ ०७ २५ २०	१० २६ ०३ १८	०४ २६ ०३ १८
२	शनि	०३ १५ ४७ ४२	०६ २१ १७ २४	०५ ०२ ४३ १९	०३ १४ ०१ ४२	०२ १७ ४३ ०४	०२ ०७ ५६ ५०	११ ०७ २३ २६	१० २६ ०० ०७	०४ २६ ०० ०७
३	रवि	०३ १६ ४५ ०७	०७ ०३ ११ ०४	०५ ०३ २० २२	०३ १३ १९ १७	०२ १७ ५५ ५०	०२ ०९ ०६ २५	११ ०७ २१ २५	१० २५ ५६ ५६	०४ २५ ५६ ५६
४	सोम	०३ १७ ४२ ३३	०७ १५ ११ ३३	०५ ०३ ५७ २९	०३ १२ ३९ १२	०२ १८ ०८ ३३	०२ १० १६ ०७	११ ०७ १९ २०	१० २५ ५३ ४६	०४ २५ ५३ ४६
५	मंगल	०३ १८ ३९ ५९	०७ २७ २२ ५८	०५ ०४ ३४ ४०	०३ १२ ०२ १३	०२ १८ २१ १३	०२ ११ २५ ५४	११ ०७ १७ ०८	१० २५ ५० ३५	०४ २५ ५० ३५
६	बुध	०३ १९ ३७ २६	०८ ०९ ४८ ३५	०५ ०५ ११ ५५	०३ ११ २९ ०६	०२ १८ ३३ ५०	०२ १२ ३५ ४६	११ ०७ १४ ५२	१० २५ ४७ २४	०४ २५ ४७ २४
७	गुरु	०३ २० ३४ ५४	०८ २२ ३० ३९	०५ ०५ ४९ १४	०३ ११ ०० ३०	०२ १८ ४६ २३	०२ १३ ४५ ४४	११ ०७ १२ ३०	१० २५ ४४ १३	०४ २५ ४४ १३
८	शुक्र	०३ २१ ३२ २३	०९ ०५ ३० १२	०५ ०६ २६ ३६	०३ १० ३७ ०१	०२ १८ ५८ ५४	०२ १४ ५५ ४७	११ ०७ १० ०३	१० २५ ४१ ०३	०४ २५ ४१ ०३
९	शनि	०३ २२ २९ ५३	०९ १८ ४७ ०४	०५ ०७ ०४ ०२	०३ १० १९ १३	०२ १९ ११ २१	०२ १६ ०५ ५६	११ ०७ ०७ ३१	१० २५ ३७ ५२	०४ २५ ३७ ५२
१०	रवि	०३ २३ २७ २३	१० ०२ १९ ५४	०५ ०७ ४१ ३२	०३ १० ०७ ३१	०२ १९ २३ ४५	०२ १७ १६ ११	११ ०७ ०४ ५३	१० २५ ३४ ४१	०४ २५ ३४ ४१
११	सोम	०३ २४ २४ ५५	१० १६ ०६ २७	०५ ०८ १९ ०६	०३ १० ०२ १६	०२ १९ ३६ ०६	०२ १८ २६ ३१	११ ०७ ०२ ११	१० २५ ३१ ३०	०४ २५ ३१ ३०
१२	मंगल	०३ २५ २२ २८	११ ०० ०३ ५७	०५ ०८ ५६ ४४	०३ १० ०३ ४७	०२ १९ ४८ २३	०२ १९ ३६ ५६	११ ०६ ५९ २३	१० २५ २८ १९	०४ २५ २८ १९
१३	बुध	०३ २६ २० ०३	११ १४ ०९ २६	०५ ०९ ३४ २५	०३ १० १२ १६	०२ २० ०० ३७	०२ २० ४७ २७	११ ०६ ५६ ३१	१० २५ २५ ०९	०४ २५ २५ ०९
१४	गुरु	०३ २७ १७ ३९	११ २८ २० ०४	०५ १० १२ ११	०३ १० २७ ५१	०२ २० १२ ४६	०२ २१ ५८ ०३	११ ०६ ५३ ३४	१० २५ २१ ५८	०४ २५ २१ ५८
१५	शुक्र	०३ २८ १५ १६	०० १२ ३३ १५	०५ १० ५० ००	०३ १० ५० ३७	०२ २० २४ ५३	०२ २३ ०८ ४५	११ ०६ ५० ३२	१० २५ १८ ४७	०४ २५ १८ ४७
१६	शनि	०३ २९ १२ ५५	०० २६ ४६ ४०	०५ ११ २७ ५४	०३ ११ २० ३४	०२ २० ३६ ५५	०२ २४ १९ ३२	११ ०६ ४७ २५	१० २५ १५ ३६	०४ २५ १५ ३६
१७	रवि	०४ ०० १० ३६	०१ १० ५८ ०५	०५ १२ ०५ ५१	०३ ११ ५७ ४०	०२ २० ४८ ५४	०२ २५ ३० २४	११ ०६ ४४ १४	१० २५ १२ २६	०४ २५ १२ २६
१८	सोम	०४ ०१ ०८ १८	०१ २५ ०५ २०	०५ १२ ४३ ५२	०३ १२ ४१ ५०	०२ २१ ०० ४९	०२ २६ ४१ २१	११ ०६ ४० ५८	१० २५ ०९ १५	०४ २५ ०९ १५
१९	मंगल	०४ ०२ ०६ ०१	०२ ०९ ०६ ०४	०५ १३ २१ ५८	०३ १३ ३२ ५६	०२ २१ १२ ३९	०२ २७ ५२ २४	११ ०६ ३७ ३८	१० २५ ०६ ०४	०४ २५ ०६ ०४
२०	बुध	०४ ०३ ०३ ४६	०२ २२ ५७ ५१	०५ १४ ०० ०७	०३ १४ ३० ४६	०२ २१ २४ २६	०२ २९ ०३ ३१	११ ०६ ३४ १३	१० २५ ०२ ५३	०४ २५ ०२ ५३
२१	गुरु	०४ ०४ ०१ ३३	०३ ०६ ३८ १५	०५ १४ ३८ २०	०३ १५ ३५ ०८	०२ २१ ३६ ०८	०३ ०० १४ ४३	११ ०६ ३० ४४	१० २४ ५९ ४३	०४ २४ ५९ ४३
२२	शुक्र	०४ ०४ ५९ २२	०३ २० ०५ ०५	०५ १५ १६ ३८	०३ १६ ४५ ४६	०२ २१ ४७ ४५	०३ ०१ २६ ००	११ ०६ २७ ११	१० २४ ५६ ३२	०४ २४ ५६ ३२
२३	शनि	०४ ०५ ५७ ११	०४ ०३ १६ ४०	०५ १५ ५४ ५९	०३ १८ ०२ २१	०२ २१ ५९ १९	०३ ०२ ३७ २१	११ ०६ २३ ३४	१० २४ ५३ २१	०४ २४ ५३ २१
२४	रवि	०४ ०६ ५५ ०३	०४ १६ १२ ०६	०५ १६ ३३ २४	०३ १९ २४ ३३	०२ २२ १० ४७	०३ ०३ ४८ ४७	११ ०६ १९ ५२	१० २४ ५० १०	०४ २४ ५० १०
२५	सोम	०४ ०७ ५२ ५५	०४ २८ ५१ २२	०५ १७ ११ ५३	०३ २० ५१ ५८	०२ २२ २२ १२	०३ ०५ ०० १८	११ ०६ १६ ०८	१० २४ ४६ ५९	०४ २४ ४६ ५९
२६	मंगल	०४ ०८ ५० ४९	०५ ११ १५ ३०	०५ १७ ५० २६	०३ २२ २४ १३	०२ २२ ३३ ३१	०३ ०६ ११ ५३	११ ०६ १२ १९	१० २४ ४३ ४९	०४ २४ ४३ ४९
२७	बुध	०४ ०९ ४८ ४५	०५ २३ २६ २८	०५ १८ २९ ०३	०३ २४ ०० ५२	०२ २२ ४४ ४५	०३ ०७ २३ ३२	११ ०६ ०८ २७	१० २४ ४० ३८	०४ २४ ४० ३८
२८	गुरु	०४ १० ४६ ४१	०६ ०५ २७ ०८	०५ १९ ०७ ४४	०३ २५ ४१ २६	०२ २२ ५५ ५५	०३ ०८ ३५ १६	११ ०६ ०४ ३१	१० २४ ३७ २७	०४ २४ ३७ २७
२९	शुक्र	०४ ११ ४४ ३९	०६ १७ २१ ०७	०५ १९ ४६ २८	०३ २७ २५ २८	०२ २३ ०६ ५९	०३ ०९ ४७ ०४	११ ०६ ०० ३२	१० २४ ३४ १६	०४ २४ ३४ १६
३०	शनि	०४ १२ ४२ ३९	०६ २९ १२ ३४	०५ २० २५ १७	०३ २९ १२ २९	०२ २३ १७ ५८	०३ १० ५८ ५६	११ ०५ ५६ ३०	१० २४ ३१ ०६	०४ २४ ३१ ०६
३१	रवि	०४ १३ ४० ३९	०७ ११ ०६ ०२	०५ २१ ०४ ०९	०४ ०१ ०२ ०३	०२ २३ २८ ५३	०३ १२ १० ५२	११ ०५ ५२ २४	१० २४ २७ ५५	०४ २४ २७ ५५

विक्रम सम्वत् २०८२, दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह, सितम्बर २०२५ (भा. स्टैं. टा. समय प्रातः०६:२७)

तिथि	दिन	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
		रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.
१	सोम	०४ १४ ३८ ४१	०७ २३ ०६ ११	०५ २१ ४३ ०४	०४ ०२ ५३ ४१	०२ २३ ३९ ४१	०३ १३ २२ ५३	११ ०५ ४८ १६	१० २४ २४ ४४	०४ २४ २४ ४४
२	मंगल	०४ १५ ३६ ४५	०८ ०५ १७ ३४	०५ २२ २२ ०४	०४ ०४ ४७ ००	०२ २३ ५० २५	०३ १४ ३४ ५८	११ ०५ ४४ ०५	१० २४ २१ ३३	०४ २४ २१ ३३
३	बुध	०४ १६ ३४ ५०	०८ १७ ४४ २४	०५ २३ ०१ ०७	०४ ०६ ४१ ३४	०२ २४ ०१ ०३	०३ १५ ४७ ०७	११ ०५ ३९ ५१	१० २४ १८ २२	०४ २४ १८ २२
४	गुरु	०४ १७ ३२ ५६	०९ ०० ३० ०६	०५ २३ ४० १३	०४ ०८ ३७ ०२	०२ २४ ११ ३५	०३ १६ ५९ २०	११ ०५ ३५ ३५	१० २४ १५ १२	०४ २४ १५ १२
५	शुक्र	०४ १८ ३१ ०४	०९ १३ ३७ ०४	०५ २४ १९ २४	०४ १० ३३ ०४	०२ २४ २२ ०२	०३ १८ ११ ३७	११ ०५ ३१ १६	१० २४ १२ ०१	०४ २४ १२ ०१
६	शनि	०४ १९ २९ १३	०९ २७ ०६ १३	०५ २४ ५८ ३८	०४ १२ २९ २४	०२ २४ ३२ २२	०३ १९ २३ ५८	११ ०५ २६ ५५	१० २४ ०८ ५०	०४ २४ ०८ ५०
७	रवि	०४ २० २७ २४	१० १० ५६ ४७	०५ २५ ३७ ५५	०४ १४ २५ ४५	०२ २४ ४२ ३८	०३ २० ३६ २३	११ ०५ २२ ३१	१० २४ ०५ ३९	०४ २४ ०५ ३९
८	सोम	०४ २१ २५ ३६	१० २५ ०६ १०	०५ २६ १७ १७	०४ १६ २१ ५५	०२ २४ ५२ ४७	०३ २१ ४८ ५३	११ ०५ १८ ०६	१० २४ ०२ २९	०४ २४ ०२ २९
९	मंगल	०४ २२ २३ ५१	११ ०९ ३० ०९	०५ २६ ५६ ४२	०४ १८ १७ ४२	०२ २५ ०२ ५०	०३ २३ ०१ २७	११ ०५ १३ ३९	१० २३ ५९ १८	०४ २३ ५९ १८
१०	बुध	०४ २३ २२ ०७	११ २४ ०३ २०	०५ २७ ३६ ११	०४ २० १२ ५८	०२ २५ १२ ४७	०३ २४ १४ ०४	११ ०५ ०९ १०	१० २३ ५६ ०७	०४ २३ ५६ ०७
११	गुरु	०४ २४ २० २५	०० ०८ ३९ ४५	०५ २८ १५ ४४	०४ २२ ०७ ३५	०२ २५ २२ ३८	०३ २५ २६ ४६	११ ०५ ०४ ३९	१० २३ ५२ ५६	०४ २३ ५२ ५६
१२	शुक्र	०४ २५ १८ ४५	०० २३ १३ ३९	०५ २८ ५५ २०	०४ २४ ०१ २६	०२ २५ ३२ २२	०३ २६ ३९ ३२	११ ०५ ०० ०७	१० २३ ४९ ४६	०४ २३ ४९ ४६
१३	शनि	०४ २६ १७ ०७	०१ ०७ ४० ०४	०५ २९ ३५ ०१	०४ २५ ५४ २७	०२ २५ ४२ ००	०३ २७ ५२ २२	११ ०४ ५५ ३३	१० २३ ४६ ३५	०४ २३ ४६ ३५
१४	रवि	०४ २७ १५ ३२	०१ २१ ५५ १७	०६ ०० १४ ४५	०४ २७ ४६ ३४	०२ २५ ५१ ३२	०३ २९ ०५ १७	११ ०४ ५० ५८	१० २३ ४३ २४	०४ २३ ४३ २४
१५	सोम	०४ २८ १३ ५८	०२ ०५ ५६ ५१	०६ ०० ५४ ३३	०४ २९ ३७ ४५	०२ २६ ०० ५७	०४ ०० १८ १५	११ ०४ ४६ २२	१० २३ ४० १३	०४ २३ ४० १३
१६	मंगल	०४ २९ १२ २७	०२ १९ ४३ ३२	०६ ०१ ३४ २५	०५ ०१ २७ ५६	०२ २६ १० १५	०४ ०१ ३१ १६	११ ०४ ४१ ४५	१० २३ ३७ ०२	०४ २३ ३७ ०२
१७	बुध	०५ ०० १० ५८	०३ ०३ १५ ०२	०६ ०२ १४ २१	०५ ०३ १७ ०७	०२ २६ १९ २७	०४ ०२ ४४ २२	११ ०४ ३७ ०७	१० २३ ३३ ५२	०४ २३ ३३ ५२
१८	गुरु	०५ ०१ ०९ ३१	०३ १६ ३१ ३६	०६ ०२ ५४ २१	०५ ०५ ०५ १७	०२ २६ २८ ३१	०४ ०३ ५७ ३१	११ ०४ ३२ २८	१० २३ ३० ४१	०४ २३ ३० ४१
१९	शुक्र	०५ ०२ ०८ ०६	०३ २९ ३३ ५१	०६ ०३ ३४ २५	०५ ०६ ५२ २५	०२ २६ ३७ २८	०४ ०५ १० ४४	११ ०४ २७ ४९	१० २३ २७ ३०	०४ २३ २७ ३०
२०	शनि	०५ ०३ ०६ ४३	०४ १२ २२ ३३	०६ ०४ १४ ३३	०५ ०८ ३८ ३२	०२ २६ ४६ १८	०४ ०६ २४ ०१	११ ०४ २३ ०९	१० २३ २४ १९	०४ २३ २४ १९
२१	रवि	०५ ०४ ०५ २२	०४ २४ ५८ ३०	०६ ०४ ५४ ४४	०५ १० २३ ३७	०२ २६ ५५ ०१	०४ ०७ ३७ २१	११ ०४ १८ ३०	१० २३ २१ ०९	०४ २३ २१ ०९
२२	सोम	०५ ०५ ०४ ०४	०५ ०७ २२ ४२	०६ ०५ ३५ ००	०५ १२ ०७ ४२	०२ २७ ०३ ३६	०४ ०८ ५० ४४	११ ०४ १३ ५०	१० २३ १७ ५८	०४ २३ १७ ५८
२३	मंगल	०५ ०६ ०२ ४७	०५ १९ ३६ १६	०६ ०६ १५ १९	०५ १३ ५० ४७	०२ २७ १२ ०४	०४ १० ०४ ११	११ ०४ ०९ १०	१० २३ १४ ४७	०४ २३ १४ ४७
२४	बुध	०५ ०७ ०१ ३२	०६ ०१ ४० ४१	०६ ०६ ५५ ४३	०५ १५ ३२ ५३	०२ २७ २० २४	०४ ११ १७ ४१	११ ०४ ०४ ३१	१० २३ ११ ३६	०४ २३ ११ ३६
२५	गुरु	०५ ०८ ०० १९	०६ १३ ३७ ५१	०६ ०७ ३६ ०९	०५ १७ १४ ००	०२ २७ २८ ३६	०४ १२ ३१ १३	११ ०३ ५९ ५२	१० २३ ०८ २६	०४ २३ ०८ २६
२६	शुक्र	०५ ०८ ५९ ०७	०६ २५ ३० १४	०६ ०८ १६ ४०	०५ १८ ५४ १०	०२ २७ ३६ ४०	०४ १३ ४४ ५०	११ ०३ ५५ १४	१० २३ ०५ १५	०४ २३ ०५ १५
२७	शनि	०५ ०९ ५७ ५८	०७ ०७ २० ५०	०६ ०८ ५७ १५	०५ २० ३३ २४	०२ २७ ४४ ३६	०४ १४ ५८ २९	११ ०३ ५० ३६	१० २३ ०२ ०४	०४ २३ ०२ ०४
२८	रवि	०५ १० ५६ ५०	०७ १९ १३ ११	०६ ०९ ३७ ५३	०५ २२ ११ ४२	०२ २७ ५२ २४	०४ १६ १२ ११	११ ०३ ४६ ००	१० २२ ५८ ५३	०४ २२ ५८ ५३
२९	सोम	०५ ११ ५५ ४४	०८ ०१ ११ २१	०६ १० १८ ३५	०५ २३ ४९ ०७	०२ २८ ०० ०४	०४ १७ २५ ५६	११ ०३ ४१ २४	१० २२ ५५ ४२	०४ २२ ५५ ४२
३०	मंगल	०५ १२ ५४ ४०	०८ १३ १९ ४५	०६ १० ५९ २०	०५ २५ २५ ३७	०२ २८ ०७ ३६	०४ १८ ३९ ४३	११ ०३ ३६ ४९	१० २२ ५२ ३२	०४ २२ ५२ ३२

विक्रम सम्वत् २०८२, दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह, अक्टूबर २०२५ (भा. स्टैं. टा. समय प्रातः०६:२७)

तिथि	दिन	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
		रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.
१	बुध	०५ १३ ५३ ३८	०८ २५ ४२ ५५	०६ ११ ४० ०९	०५ २७ ०१ १६	०२ २८ १४ ५९	०४ १९ ५३ ३४	११ ०३ ३२ १६	१० २२ ४९ २१	०४ २२ ४९ २१
२	गुरु	०५ १४ ५२ ३७	०९ ०८ २५ १३	०६ १२ २१ ०२	०५ २८ ३६ ०३	०२ २८ २२ १३	०४ २१ ०७ २८	११ ०३ २७ ४५	१० २२ ४६ १०	०४ २२ ४६ १०
३	शुक्र	०५ १५ ५१ ३८	०९ २१ ३० २७	०६ १३ ०१ ५९	०६ ०० ०९ ५९	०२ २८ २९ १९	०४ २२ २१ २४	११ ०३ २३ १५	१० २२ ४२ ५९	०४ २२ ४२ ५९
४	शनि	०५ १६ ५० ४१	१० ०५ ०१ १४	०६ १३ ४२ ५९	०६ ०१ ४३ ०५	०२ २८ ३६ १७	०४ २३ ३५ २३	११ ०३ १८ ४७	१० २२ ३९ ४९	०४ २२ ३९ ४९
५	रवि	०५ १७ ४९ ४६	१० १८ ५८ २७	०६ १४ २४ ०३	०६ ०३ १५ २२	०२ २८ ४३ ०५	०४ २४ ४९ २५	११ ०३ १४ २०	१० २२ ३६ ३८	०४ २२ ३६ ३८
६	सोम	०५ १८ ४८ ५२	११ ०३ २० ३९	०६ १५ ०५ १०	०६ ०४ ४६ ४९	०२ २८ ४९ ४५	०४ २६ ०३ २९	११ ०३ ०९ ५६	१० २२ ३३ २७	०४ २२ ३३ २७
७	मंगल	०५ १९ ४८ ०१	११ १८ ०३ ४१	०६ १५ ४६ २१	०६ ०६ १७ २८	०२ २८ ५६ १५	०४ २७ १७ ३६	११ ०३ ०५ ३४	१० २२ ३० १६	०४ २२ ३० १६
८	बुध	०५ २० ४७ ११	०० ०३ ०० ५१	०६ १६ २७ ३६	०६ ०७ ४७ १९	०२ २९ ०२ ३७	०४ २८ ३१ ४६	११ ०३ ०१ १५	१० २२ २७ ०५	०४ २२ २७ ०५
९	गुरु	०५ २१ ४६ २४	०० १८ ०३ ३५	०६ १७ ०८ ५५	०६ ०९ १६ २०	०२ २९ ०८ ४९	०४ २९ ४५ ५९	११ ०२ ५६ ५७	१० २२ २३ ५५	०४ २२ २३ ५५
१०	शुक्र	०५ २२ ४५ ३८	०१ ०३ ०२ ४४	०६ १७ ५० १७	०६ १० ४४ ३४	०२ २९ १४ ५२	०५ ०१ ०० १४	११ ०२ ५२ ४३	१० २२ २० ४४	०४ २२ २० ४४
११	शनि	०५ २३ ४४ ५५	०१ १७ ४९ ५८	०६ १८ ३१ ४३	०६ १२ ११ ५८	०२ २९ २० ४५	०५ ०२ १४ ३२	११ ०२ ४८ ३१	१० २२ १७ ३३	०४ २२ १७ ३३
१२	रवि	०५ २४ ४४ १५	०२ ०२ १९ ०२	०६ १९ १३ १३	०६ १३ ३८ ३३	०२ २९ २६ २९	०५ ०३ २८ ५३	११ ०२ ४४ २२	१० २२ १४ २२	०४ २२ १४ २२
१३	सोम	०५ २५ ४३ ३६	०२ १६ २६ ११	०६ १९ ५४ ४७	०६ १५ ०४ १७	०२ २९ ३२ ०३	०५ ०४ ४३ १६	११ ०२ ४० १५	१० २२ ११ १२	०४ २२ ११ १२
१४	मंगल	०५ २६ ४३ ००	०३ ०० १० १६	०६ २० ३६ २४	०६ १६ २९ ०९	०२ २९ ३७ २८	०५ ०५ ५७ ४२	११ ०२ ३६ १२	१० २२ ०८ ०१	०४ २२ ०८ ०१
१५	बुध	०५ २७ ४२ २७	०३ १३ ३२ ०९	०६ २१ १८ ०६	०६ १७ ५३ ०८	०२ २९ ४२ ४२	०५ ०७ १२ १०	११ ०२ ३२ १२	१० २२ ०४ ५०	०४ २२ ०४ ५०
१६	गुरु	०५ २८ ४१ ५५	०३ २६ ३३ ५९	०६ २१ ५९ ५१	०६ १९ १६ १२	०२ २९ ४७ ४७	०५ ०८ २६ ४०	११ ०२ २८ १६	१० २२ ०१ ३९	०४ २२ ०१ ३९
१७	शुक्र	०५ २९ ४१ २६	०४ ०९ १८ ३८	०६ २२ ४१ ४०	०६ २० ३८ १९	०२ २९ ५२ ४१	०५ ०९ ४१ १३	११ ०२ २४ २३	१० २१ ५८ २९	०४ २१ ५८ २९
१८	शनि	०६ ०० ४० ५९	०४ २१ ४९ ०२	०६ २३ २३ ३३	०६ २१ ५९ २५	०२ २९ ५७ २५	०५ १० ५५ ४८	११ ०२ २० ३४	१० २१ ५५ १८	०४ २१ ५५ १८
१९	रवि	०६ ०१ ४० ३५	०५ ०४ ०७ ५९	०६ २४ ०५ ३०	०६ २३ १९ २७	०३ ०० ०१ ५८	०५ १२ १० २६	११ ०२ १६ ४८	१० २१ ५२ ०७	०४ २१ ५२ ०७
२०	सोम	०६ ०२ ४० १२	०५ १६ १७ ५०	०६ २४ ४७ ३०	०६ २४ ३८ २२	०३ ०० ०६ २२	०५ १३ २५ ०५	११ ०२ १३ ०७	१० २१ ४८ ५६	०४ २१ ४८ ५६
२१	मंगल	०६ ०३ ३९ ५२	०५ २८ २० ३४	०६ २५ २९ ३५	०६ २५ ५६ ०५	०३ ०० १० ३४	०५ १४ ३९ ४६	११ ०२ ०९ २९	१० २१ ४५ ४५	०४ २१ ४५ ४५
२२	बुध	०६ ०४ ३९ ३३	०६ १० १७ ५३	०६ २६ ११ ४३	०६ २७ १२ ३०	०३ ०० १४ ३६	०५ १५ ५४ २९	११ ०२ ०५ ५६	१० २१ ४२ ३५	०४ २१ ४२ ३५
२३	गुरु	०६ ०५ ३९ १७	०६ २२ ११ १८	०६ २६ ५३ ५५	०६ २८ २७ ३२	०३ ०० १८ २७	०५ १७ ०९ १४	११ ०२ ०२ २७	१० २१ ३९ २४	०४ २१ ३९ २४
२४	शुक्र	०६ ०६ ३९ ०२	०७ ०४ ०२ २८	०६ २७ ३६ १०	०६ २९ ४१ ०४	०३ ०० २२ ०७	०५ १८ २४ ०१	११ ०१ ५९ ०२	१० २१ ३६ १३	०४ २१ ३६ १३
२५	शनि	०६ ०७ ३८ ५०	०७ १५ ५३ १७	०६ २८ १८ ३०	०७ ०० ५२ ५६	०३ ०० २५ ३७	०५ १९ ३८ ५०	११ ०१ ५५ ४१	१० २१ ३३ ०२	०४ २१ ३३ ०२
२६	रवि	०६ ०८ ३८ ३९	०७ २७ ४६ ०८	०६ २९ ०० ५२	०७ ०२ ०३ ०१	०३ ०० २८ ५५	०५ २० ५३ ४०	११ ०१ ५२ २६	१० २१ २९ ५२	०४ २१ २९ ५२
२७	सोम	०६ ०९ ३८ ३०	०८ ०९ ४३ ५७	०६ २९ ४३ १९	०७ ०३ ११ ०७	०३ ०० ३२ ०२	०५ २२ ०८ ३२	११ ०१ ४९ १५	१० २१ २६ ४१	०४ २१ २६ ४१
२८	मंगल	०६ १० ३८ २२	०८ २१ ५० १७	०७ ०० २५ ४९	०७ ०४ १७ ०३	०३ ०० ३४ ५८	०५ २३ २३ २५	११ ०१ ४६ ०९	१० २१ २३ ३०	०४ २१ २३ ३०
२९	बुध	०६ ११ ३८ १७	०९ ०४ ०९ १४	०७ ०१ ०८ २३	०७ ०५ २० ३४	०३ ०० ३७ ४३	०५ २४ ३८ २०	११ ०१ ४३ ०७	१० २१ २० १९	०४ २१ २० १९
३०	गुरु	०६ १२ ३८ १२	०९ १६ ४५ १६	०७ ०१ ५१ ००	०७ ०६ २१ २४	०३ ०० ४० १७	०५ २५ ५३ १६	११ ०१ ४० ११	१० २१ १७ ०९	०४ २१ १७ ०९
३१	शुक्र	०६ १३ ३८ १०	०९ २९ ४२ ५२	०७ ०२ ३३ ४१	०७ ०७ १९ १७	०३ ०० ४२ ३९	०५ २७ ०८ १३	११ ०१ ३७ २०	१० २१ १३ ५८	०४ २१ १३ ५८

विक्रम सम्वत् २०८२, दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह, नवम्बर २०२५ (भा. स्टैं. टा. समय प्रातः०६:२७)

तिथि	दिन	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
		रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.
१	शनि	०६ १४ ३८ ०९	१० १३ ०५ ५९	०७ ०३ १६ २५	०७ ०८ १३ ५१	०३ ०० ४४ ४९	०५ २८ २३ १२	११ ०१ ३४ ३४	१० २१ १० ४७	०४ २१ १० ४७
२	रवि	०६ १५ ३८ १०	१० २६ ५७ १८	०७ ०३ ५९ १३	०७ ०९ ०४ ४४	०३ ०० ४६ ४९	०५ २९ ३८ १२	११ ०१ ३१ ५३	१० २१ ०७ ३६	०४ २१ ०७ ३६
३	सोम	०६ १६ ३८ १२	११ ११ १७ २५	०७ ०४ ४२ ०४	०७ ०९ ५१ ३१	०३ ०० ४८ ३६	०६ ०० ५३ १३	११ ०१ २९ १७	१० २१ ०४ २५	०४ २१ ०४ २५
४	मंगल	०६ १७ ३८ १६	११ २६ ०३ ५५	०७ ०५ २४ ५९	०७ १० ३३ ४३	०३ ०० ५० १३	०६ ०२ ०८ १६	११ ०१ २६ ४७	१० २१ ०१ १५	०४ २१ ०१ १५
५	बुध	०६ १८ ३८ २२	०० ११ १० ५४	०७ ०६ ०७ ५७	०७ ११ १० ४८	०३ ०० ५१ ३७	०६ ०३ २३ २०	११ ०१ २४ २३	१० २० ५८ ०४	०४ २० ५८ ०४
६	गुरु	०६ १९ ३८ २९	०० २६ २९ ११	०७ ०६ ५० ५९	०७ ११ ४२ १३	०३ ०० ५२ ५०	०६ ०४ ३८ २५	११ ०१ २२ ०४	१० २० ५४ ५३	०४ २० ५४ ५३
७	शुक्र	०६ २० ३८ ३९	०१ ११ ४७ ३८	०७ ०७ ३४ ०४	०७ १२ ०७ २१	०३ ०० ५३ ५१	०६ ०५ ५३ ३२	११ ०१ १९ ५०	१० २० ५१ ४२	०४ २० ५१ ४२
८	शनि	०६ २१ ३८ ५०	०१ २६ ५५ ००	०७ ०८ १७ १३	०७ १२ २५ ३१	०३ ०० ५४ ४०	०६ ०७ ०८ ४०	११ ०१ १७ ४२	१० २० ४८ ३२	०४ २० ४८ ३२
९	रवि	०६ २२ ३९ ०३	०२ ११ ४२ ००	०७ ०९ ०० २६	०७ १२ ३६ ०४	०३ ०० ५५ १८	०६ ०८ २३ ४९	११ ०१ १५ ४०	१० २० ४५ २१	०४ २० ४५ २१
१०	सोम	०६ २३ ३९ १८	०२ २६ ०२ ३५	०७ ०९ ४३ ४२	०७ १२ ३८ १८	०३ ०० ५५ ४४	०६ ०९ ३८ ५९	११ ०१ १३ ४३	१० २० ४२ १०	०४ २० ४२ १०
११	मंगल	०६ २४ ३९ ३५	०३ ०९ ५४ २१	०७ १० २७ ०२	०७ १२ ३१ ३५	०३ ०० ५५ ५७	०६ १० ५४ ११	११ ०१ ११ ५३	१० २० ३८ ५९	०४ २० ३८ ५९
१२	बुध	०६ २५ ३९ ५४	०३ २३ १७ ५९	०७ ११ १० २५	०७ १२ १५ २०	०३ ०० ५५ ५९	०६ १२ ०९ २४	११ ०१ १० ०८	१० २० ३५ ४९	०४ २० ३५ ४९
१३	गुरु	०६ २६ ४० १६	०४ ०६ १६ २४	०७ ११ ५३ ५२	०७ ११ ४९ ०८	०३ ०० ५५ ४९	०६ १३ २४ ३८	११ ०१ ०८ २९	१० २० ३२ ३८	०४ २० ३२ ३८
१४	शुक्र	०६ २७ ४० ३९	०४ १८ ५३ ३९	०७ १२ ३७ २३	०७ ११ १२ ४४	०३ ०० ५५ २७	०६ १४ ३९ ५३	११ ०१ ०६ ५७	१० २० २९ २७	०४ २० २९ २७
१५	शनि	०६ २८ ४१ ०४	०५ ०१ १४ १७	०७ १३ २० ५८	०७ १० २६ १४	०३ ०० ५४ ५२	०६ १५ ५५ १०	११ ०१ ०५ ३०	१० २० २६ १६	०४ २० २६ १६
१६	रवि	०६ २९ ४१ ३१	०५ १३ २२ ३९	०७ १४ ०४ ३६	०७ ०९ ३० ०५	०३ ०० ५४ ०६	०६ १७ १० २७	११ ०१ ०४ ०९	१० २० २३ ०५	०४ २० २३ ०५
१७	सोम	०७ ०० ४१ ५९	०५ २५ २२ ३८	०७ १४ ४८ १७	०७ ०८ २५ १२	०३ ०० ५३ ०८	०६ १८ २५ ४५	११ ०१ ०२ ५५	१० २० १९ ५५	०४ २० १९ ५५
१८	मंगल	०७ ०१ ४२ ३०	०६ ०७ १७ २६	०७ १५ ३२ ०२	०७ ०७ १२ ५९	०३ ०० ५१ ५७	०६ १९ ४१ ०४	११ ०१ ०१ ४७	१० २० १६ ४४	०४ २० १६ ४४
१९	बुध	०७ ०२ ४३ ०२	०६ १९ ०९ ३३	०७ १६ १५ ५१	०७ ०५ ५५ १९	०३ ०० ५० ३५	०६ २० ५६ २४	११ ०१ ०० ४५	१० २० १३ ३३	०४ २० १३ ३३
२०	गुरु	०७ ०३ ४३ ३६	०७ ०१ ०० ५२	०७ १६ ५९ ४३	०७ ०४ ३४ ३१	०३ ०० ४९ ००	०६ २२ ११ ४५	११ ०० ५९ ४९	१० २० १० २२	०४ २० १० २२
२१	शुक्र	०७ ०४ ४४ ११	०७ १२ ५२ ५१	०७ १७ ४३ ३९	०७ ०३ १३ १२	०३ ०० ४७ १४	०६ २३ २७ ०६	११ ०० ५९ ००	१० २० ०७ १२	०४ २० ०७ १२
२२	शनि	०७ ०५ ४४ ४७	०७ २४ ४६ ४८	०७ १८ २७ ३८	०७ ०१ ५४ ०३	०३ ०० ४५ १५	०६ २४ ४२ २८	११ ०० ५८ १७	१० २० ०४ ०१	०४ २० ०४ ०१
२३	रवि	०७ ०६ ४५ २५	०८ ०६ ४४ ०५	०७ १९ ११ ४०	०७ ०० ३९ ४३	०३ ०० ४३ ०५	०६ २५ ५७ ५१	११ ०० ५७ ४१	१० २० ०० ५०	०४ २० ०० ५०
२४	सोम	०७ ०७ ४६ ०५	०८ १८ ४६ २७	०७ १९ ५५ ४६	०६ २९ ३२ ३२	०३ ०० ४० ४३	०६ २७ १३ १४	११ ०० ५७ ११	१० १९ ५७ ३९	०४ १९ ५७ ३९
२५	मंगल	०७ ०८ ४६ ४५	०९ ०० ५६ १०	०७ २० ३९ ५५	०६ २८ ३४ २२	०३ ०० ३८ ०९	०६ २८ २८ ३८	११ ०० ५६ ४७	१० १९ ५४ २८	०४ १९ ५४ २८
२६	बुध	०७ ०९ ४७ २७	०९ १३ १६ १२	०७ २१ २४ ०७	०६ २७ ४६ ३७	०३ ०० ३५ २३	०६ २९ ४४ ०२	११ ०० ५६ ३०	१० १९ ५१ १८	०४ १९ ५१ १८
२७	गुरु	०७ १० ४८ १०	०९ २५ ५० ०८	०७ २२ ०८ २२	०६ २७ १० ०७	०३ ०० ३२ २६	०७ ०० ५९ २७	११ ०० ५६ २०	१० १९ ४८ ०७	०४ १९ ४८ ०७
२८	शुक्र	०७ ११ ४८ ५३	१० ०८ ४२ ००	०७ २२ ५२ ४१	०६ २६ ४५ १४	०३ ०० २९ १८	०७ ०२ १४ ५१	११ ०० ५६ १५	१० १९ ४४ ५६	०४ १९ ४४ ५६
२९	शनि	०७ १२ ४९ ३८	१० २१ ५५ ५५	०७ २३ ३७ ०३	०६ २६ ३१ ५४	०३ ०० २५ ५८	०७ ०३ ३० १७	११ ०० ५६ १८	१० १९ ४१ ४५	०४ १९ ४१ ४५
३०	रवि	०७ १३ ५० २४	११ ०५ ३५ २३	०७ २४ २१ २८	०६ २६ २९ ४१	०३ ०० २२ २७	०७ ०४ ४५ ४२	११ ०० ५६ २६	१० १९ ३८ ३५	०४ १९ ३८ ३५

विक्रम सम्वत् २०८२, दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह, दिसम्बर २०२५ (भा. स्टैं. टा. समय प्रातः०६:२७)

तिथि	दिन	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
		रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.
१	सोम	०७ १४ ५१ ११	११ १९ ४२ ३२	०७ २५ ०५ ५६	०६ २६ ३७ ५९	०३ ०० १८ ४५	०७ ०६ ०१ ०८	११ ०० ५६ ४२	१० १९ ३५ २४	०४ १९ ३५ २४
२	मंगल	०७ १५ ५१ ५८	०० ०४ १७ ००	०७ २५ ५० २७	०६ २६ ५६ ००	०३ ०० १४ ५१	०७ ०७ १६ ३४	११ ०० ५७ ०३	१० १९ ३२ १३	०४ १९ ३२ १३
३	बुध	०७ १६ ५२ ४७	०० १९ १५ ०९	०७ २६ ३५ ०२	०६ २७ २२ ५३	०३ ०० १० ४७	०७ ०८ ३२ ०१	११ ०० ५७ ३२	१० १९ २९ ०२	०४ १९ २९ ०२
४	गुरु	०७ १७ ५३ ३६	०१ ०४ २९ ३७	०७ २७ १९ ३९	०६ २७ ५७ ४६	०३ ०० ०६ ३२	०७ ०९ ४७ २७	११ ०० ५८ ०६	१० १९ २५ ५२	०४ १९ २५ ५२
५	शुक्र	०७ १८ ५४ २७	०१ १९ ५० ०१	०७ २८ ०४ २०	०६ २८ ३९ ४७	०३ ०० ०२ ०७	०७ ११ ०२ ५४	११ ०० ५८ ४७	१० १९ २२ ४१	०४ १९ २२ ४१
६	शनि	०७ १९ ५५ १९	०२ ०५ ०४ ३४	०७ २८ ४९ ०४	०६ २९ २८ ०८	०२ २९ ५७ ३१	०७ १२ १८ २२	११ ०० ५९ ३५	१० १९ १९ ३०	०४ १९ १९ ३०
७	रवि	०७ २० ५६ ११	०२ २० ०२ १६	०७ २९ ३३ ५०	०७ ०० २२ ०२	०२ २९ ५२ ४५	०७ १३ ३३ ५०	११ ०१ ०० २९	१० १९ १६ १९	०४ १९ १६ १९
८	सोम	०७ २१ ५७ ०५	०३ ०४ ३४ ५२	०८ ०० १८ ४०	०७ ०१ २० ४८	०२ २९ ४७ ४८	०७ १४ ४९ १८	११ ०१ ०१ २९	१० १९ १३ ०८	०४ १९ १३ ०८
९	मंगल	०७ २२ ५८ ००	०३ १८ ३७ ४८	०८ ०१ ०३ ३४	०७ ०२ २३ ५१	०२ २९ ४२ ४२	०७ १६ ०४ ४६	११ ०१ ०२ ३६	१० १९ ०९ ५८	०४ १९ ०९ ५८
१०	बुध	०७ २३ ५८ ५७	०४ ०२ १० १३	०८ ०१ ४८ ३०	०७ ०३ ३० ३५	०२ २९ ३७ २६	०७ १७ २० १५	११ ०१ ०३ ४९	१० १९ ०६ ४७	०४ १९ ०६ ४७
११	गुरु	०७ २४ ५९ ५४	०४ १५ १४ ११	०८ ०२ ३३ २९	०७ ०४ ४० ३३	०२ २९ ३२ ००	०७ १८ ३५ ४५	११ ०१ ०५ ०८	१० १९ ०३ ३६	०४ १९ ०३ ३६
१२	शुक्र	०७ २६ ०० ५३	०४ २७ ५३ ४२	०८ ०३ १८ ३२	०७ ०५ ५३ १८	०२ २९ २६ २४	०७ १९ ५१ १५	११ ०१ ०६ ३४	१० १९ ०० २५	०४ १९ ०० २५
१३	शनि	०७ २७ ०१ ५३	०५ १० १३ ४२	०८ ०४ ०३ ३८	०७ ०७ ०८ २९	०२ २९ २० ३९	०७ २१ ०६ ४५	११ ०१ ०८ ०७	१० १८ ५७ १५	०४ १८ ५७ १५
१४	रवि	०७ २८ ०२ ५४	०५ २२ १९ २२	०८ ०४ ४८ ४७	०७ ०८ २५ ४६	०२ २९ १४ ४५	०७ २२ २२ १५	११ ०१ ०९ ४५	१० १८ ५४ ०४	०४ १८ ५४ ०४
१५	सोम	०७ २९ ०३ ५५	०६ ०४ १५ ४१	०८ ०५ ३३ ५९	०७ ०९ ४४ ५२	०२ २९ ०८ ४३	०७ २३ ३७ ४६	११ ०१ ११ ३०	१० १८ ५० ५३	०४ १८ ५० ५३
१६	मंगल	०८ ०० ०४ ५८	०६ १६ ०७ ०२	०८ ०६ १९ १४	०७ ११ ०५ ३४	०२ २९ ०२ ३१	०७ २४ ५३ १७	११ ०१ १३ २१	१० १८ ४७ ४२	०४ १८ ४७ ४२
१७	बुध	०८ ०१ ०६ ०२	०६ २७ ५७ ०२	०८ ०७ ०४ ३२	०७ १२ २७ ३८	०२ २८ ५६ १२	०७ २६ ०८ ४८	११ ०१ १५ १९	१० १८ ४४ ३२	०४ १८ ४४ ३२
१८	गुरु	०८ ०२ ०७ ०७	०७ ०९ ४८ ३१	०८ ०७ ४९ ५३	०७ १३ ५० ५४	०२ २८ ४९ ४४	०७ २७ २४ २०	११ ०१ १७ २३	१० १८ ४१ २१	०४ १८ ४१ २१
१९	शुक्र	०८ ०३ ०८ १२	०७ २१ ४३ ३२	०८ ०८ ३५ १७	०७ १५ १५ १४	०२ २८ ४३ ०८	०७ २८ ३९ ५१	११ ०१ १९ ३३	१० १८ ३८ १०	०४ १८ ३८ १०
२०	शनि	०८ ०४ ०९ १८	०८ ०३ ४३ ३१	०८ ०९ २० ४३	०७ १६ ४० २८	०२ २८ ३६ २५	०७ २९ ५५ २३	११ ०१ २१ ४९	१० १८ ३४ ५९	०४ १८ ३४ ५९
२१	रवि	०८ ०५ १० २४	०८ १५ ४९ ३०	०८ १० ०६ १३	०७ १८ ०६ ३२	०२ २८ २९ ३५	०८ ०१ १० ५४	११ ०१ २४ ११	१० १८ ३१ ४८	०४ १८ ३१ ४८
२२	सोम	०८ ०६ ११ ३१	०८ २८ ०२ २२	०८ १० ५१ ४५	०७ १९ ३३ १९	०२ २८ २२ ३८	०८ ०२ २६ २६	११ ०१ २६ ४०	१० १८ २८ ३८	०४ १८ २८ ३८
२३	मंगल	०८ ०७ १२ ३८	०९ १० २३ १२	०८ ११ ३७ २०	०७ २१ ०० ४४	०२ २८ १५ ३४	०८ ०३ ४१ ५७	११ ०१ २९ १४	१० १८ २५ २७	०४ १८ २५ २७
२४	बुध	०८ ०८ १३ ४६	०९ २२ ५३ २९	०८ १२ २२ ५८	०७ २२ २८ ४४	०२ २८ ०८ २३	०८ ०४ ५७ २९	११ ०१ ३१ ५५	१० १८ २२ १६	०४ १८ २२ १६
२५	गुरु	०८ ०९ १४ ५४	१० ०५ ३५ १३	०८ १३ ०८ ३८	०७ २३ ५७ १५	०२ २८ ०१ ०७	०८ ०६ १३ ००	११ ०१ ३४ ४१	१० १८ १९ ०५	०४ १८ १९ ०५
२६	शुक्र	०८ १० १६ ०२	१० १८ ३१ ००	०८ १३ ५४ २१	०७ २५ २६ १५	०२ २७ ५३ ४५	०८ ०७ २८ ३२	११ ०१ ३७ ३४	१० १८ १५ ५५	०४ १८ १५ ५५
२७	शनि	०८ ११ १७ १०	११ ०१ ४३ ४४	०८ १४ ४० ०६	०७ २६ ५५ ४२	०२ २७ ४६ १८	०८ ०८ ४४ ०३	११ ०१ ४० ३२	१० १८ १२ ४४	०४ १८ १२ ४४
२८	रवि	०८ १२ १८ १८	११ १५ १६ १६	०८ १५ २५ ५४	०७ २८ २५ ३४	०२ २७ ३८ ४६	०८ ०९ ५९ ३३	११ ०१ ४३ ३६	१० १८ ०९ ३३	०४ १८ ०९ ३३
२९	सोम	०८ १३ १९ २६	११ २९ १० ४३	०८ १६ ११ ४४	०७ २९ ५५ ४९	०२ २७ ३१ ०९	०८ ११ १५ ०४	११ ०१ ४६ ४६	१० १८ ०६ २२	०४ १८ ०६ २२
३०	मंगल	०८ १४ २० ३४	०० १३ २७ ४०	०८ १६ ५७ ३७	०८ ०१ २६ २७	०२ २७ २३ २८	०८ १२ ३० ३४	११ ०१ ५० ०२	१० १८ ०३ ११	०४ १८ ०३ ११
३१	बुध	०८ १५ २१ ४१	०० २८ ०५ २३	०८ १७ ४३ ३२	०८ ०२ ५७ २७	०२ २७ १५ ४३	०८ १३ ४६ ०४	११ ०१ ५३ २४	१० १८ ०० ०१	०४ १८ ०० ०१

विक्रम सम्वत् २०८२, दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह, जनवरी २०२६ (भा. स्टैं. टा. समय प्रातः०६:२७)

तिथि	दिन	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
		रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.
१	गुरु	०८ १६ २२ ४९	०१ १२ ५९ ११	०८ १८ २९ ३०	०८ ०४ २८ ४८	०२ २७ ०७ ५४	०८ १५ ०१ ३४	११ ०१ ५६ ५१	१० १७ ५६ ५०	०४ १७ ५६ ५०
२	शुक्र	०८ १७ २३ ५७	०१ २८ ०१ ३५	०८ १९ १५ २९	०८ ०६ ०० ३०	०२ २७ ०० ०२	०८ १६ १७ ०३	११ ०२ ०० २३	१० १७ ५३ ३९	०४ १७ ५३ ३९
३	शनि	०८ १८ २५ ०४	०२ १३ ०३ ०८	०८ २० ०१ ३२	०८ ०७ ३२ ३४	०२ २६ ५२ ०७	०८ १७ ३२ ३३	११ ०२ ०४ ०१	१० १७ ५० २८	०४ १७ ५० २८
४	रवि	०८ १९ २६ १२	०२ २७ ५४ ०१	०८ २० ४७ ३६	०८ ०९ ०४ ५९	०२ २६ ४४ ०९	०८ १८ ४८ ०२	११ ०२ ०७ ४५	१० १७ ४७ १८	०४ १७ ४७ १८
५	सोम	०८ २० २७ १९	०३ १२ २५ ४२	०८ २१ ३३ ४३	०८ १० ३७ ४६	०२ २६ ३६ ०९	०८ २० ०३ ३१	११ ०२ ११ ३४	१० १७ ४४ ०७	०४ १७ ४४ ०७
६	मंगल	०८ २१ २८ २७	०३ २६ ३२ १८	०८ २२ १९ ५२	०८ १२ १० ५५	०२ २६ २८ ०८	०८ २१ १८ ५९	११ ०२ १५ २८	१० १७ ४० ५६	०४ १७ ४० ५६
७	बुध	०८ २२ २९ ३४	०४ १० ११ ०६	०८ २३ ०६ ०४	०८ १३ ४४ २७	०२ २६ २० ०४	०८ २२ ३४ २८	११ ०२ १९ २८	१० १७ ३७ ४५	०४ १७ ३७ ४५
८	गुरु	०८ २३ ३० ४२	०४ २३ २२ १८	०८ २३ ५२ १८	०८ १५ १८ २२	०२ २६ १२ ००	०८ २३ ४९ ५७	११ ०२ २३ ३३	१० १७ ३४ ३५	०४ १७ ३४ ३५
९	शुक्र	०८ २४ ३१ ५०	०५ ०६ ०८ २५	०८ २४ ३८ ३४	०८ १६ ५२ ४०	०२ २६ ०३ ५४	०८ २५ ०५ २५	११ ०२ २७ ४३	१० १७ ३१ २४	०४ १७ ३१ २४
१०	शनि	०८ २५ ३२ ५८	०५ १८ ३३ ३१	०८ २५ २४ ५३	०८ १८ २७ २४	०२ २५ ५५ ४८	०८ २६ २० ५४	११ ०२ ३१ ५८	१० १७ २८ १३	०४ १७ २८ १३
११	रवि	०८ २६ ३४ ०६	०६ ०० ४२ २८	०८ २६ ११ १४	०८ २० ०२ ३३	०२ २५ ४७ ४२	०८ २७ ३६ २२	११ ०२ ३६ १८	१० १७ २५ ०२	०४ १७ २५ ०२
१२	सोम	०८ २७ ३५ १४	०६ १२ ४० २५	०८ २६ ५७ ३७	०८ २१ ३८ ०८	०२ २५ ३९ ३७	०८ २८ ५१ ५०	११ ०२ ४० ४४	१० १७ २१ ५१	०४ १७ २१ ५१
१३	मंगल	०८ २८ ३६ २२	०६ २४ ३२ २३	०८ २७ ४४ ०२	०८ २३ १४ ११	०२ २५ ३१ ३१	०९ ०० ०७ १८	११ ०२ ४५ १४	१० १७ १८ ४१	०४ १७ १८ ४१
१४	बुध	०८ २९ ३७ ३०	०७ ०६ २२ ५७	०८ २८ ३० ३०	०८ २४ ५० ४१	०२ २५ २३ २७	०९ ०१ २२ ४६	११ ०२ ४९ ४९	१० १७ १५ ३०	०४ १७ १५ ३०
१५	गुरु	०९ ०० ३८ ३८	०७ १८ १६ ००	०८ २९ १६ ५९	०८ २६ २७ ४०	०२ २५ १५ २४	०९ ०२ ३८ १३	११ ०२ ५४ ३०	१० १७ १२ १९	०४ १७ १२ १९
१६	शुक्र	०९ ०१ ३९ ४५	०८ ०० १४ ४४	०९ ०० ०३ ३१	०८ २८ ०५ १०	०२ २५ ०७ २३	०९ ०३ ५३ ४०	११ ०२ ५९ १५	१० १७ ०९ ०८	०४ १७ ०९ ०८
१७	शनि	०९ ०२ ४० ५२	०८ १२ २१ २७	०९ ०० ५० ०५	०८ २९ ४३ ०९	०२ २४ ५९ २४	०९ ०५ ०९ ०७	११ ०३ ०४ ०४	१० १७ ०५ ५८	०४ १७ ०५ ५८
१८	रवि	०९ ०३ ४१ ५९	०८ २४ ३७ ४६	०९ ०१ ३६ ४०	०९ ०१ २१ ४१	०२ २४ ५१ २८	०९ ०६ २४ ३४	११ ०३ ०८ ५९	१० १७ ०२ ४७	०४ १७ ०२ ४७
१९	सोम	०९ ०४ ४३ ०५	०९ ०७ ०४ ३४	०९ ०२ २३ १८	०९ ०३ ०० ४४	०२ २४ ४३ ३४	०९ ०७ ४० ००	११ ०३ १३ ५८	१० १६ ५९ ३६	०४ १६ ५९ ३६
२०	मंगल	०९ ०५ ४४ ११	०९ १९ ४२ २०	०९ ०३ ०९ ५७	०९ ०४ ४० २०	०२ २४ ३५ ४४	०९ ०८ ५५ २५	११ ०३ १९ ०१	१० १६ ५६ २५	०४ १६ ५६ २५
२१	बुध	०९ ०६ ४५ १६	१० ०२ ३१ १९	०९ ०३ ५६ ३८	०९ ०६ २० ३०	०२ २४ २७ ५७	०९ १० १० ५१	११ ०३ २४ १०	१० १६ ५३ १५	०४ १६ ५३ १५
२२	गुरु	०९ ०७ ४६ २०	१० १५ ३१ ४७	०९ ०४ ४३ २०	०९ ०८ ०१ १४	०२ २४ २० १५	०९ ११ २६ १५	११ ०३ २९ २२	१० १६ ५० ०४	०४ १६ ५० ०४
२३	शुक्र	०९ ०८ ४७ २३	१० २८ ४४ १४	०९ ०५ ३० ०५	०९ ०९ ४२ ३२	०२ २४ १२ ३६	०९ १२ ४१ ३९	११ ०३ ३४ ३९	१० १६ ४६ ५३	०४ १६ ४६ ५३
२४	शनि	०९ ०९ ४८ २६	११ १२ ०९ २०	०९ ०६ १६ ५१	०९ ११ २४ २४	०२ २४ ०५ ०३	०९ १३ ५७ ०३	११ ०३ ४० ००	१० १६ ४३ ४२	०४ १६ ४३ ४२
२५	रवि	०९ १० ४९ २७	११ २५ ४७ ५३	०९ ०७ ०३ ३८	०९ १३ ०६ ५१	०२ २३ ५७ ३४	०९ १५ १२ २५	११ ०३ ४५ २५	१० १६ ४० ३१	०४ १६ ४० ३१
२६	सोम	०९ ११ ५० २७	०० ०९ ४० २७	०९ ०७ ५० २७	०९ १४ ४९ ५१	०२ २३ ५० ११	०९ १६ २७ ४७	११ ०३ ५० ५५	१० १६ ३७ २१	०४ १६ ३७ २१
२७	मंगल	०९ १२ ५१ २६	०० २३ ४६ ५३	०९ ०८ ३७ १७	०९ १६ ३३ २४	०२ २३ ४२ ५३	०९ १७ ४३ ०९	११ ०३ ५६ २८	१० १६ ३४ १०	०४ १६ ३४ १०
२८	बुध	०९ १३ ५२ २४	०१ ०८ ०५ ५६	०९ ०९ २४ ०९	०९ १८ १७ ३०	०२ २३ ३५ ४२	०९ १८ ५८ २९	११ ०४ ०२ ०६	१० १६ ३० ५९	०४ १६ ३० ५९
२९	गुरु	०९ १४ ५३ २१	०१ २२ ३४ ४७	०९ १० ११ ०१	०९ २० ०२ ०६	०२ २३ २८ ३६	०९ २० १३ ४९	११ ०४ ०७ ४७	१० १६ २७ ४८	०४ १६ २७ ४८
३०	शुक्र	०९ १५ ५४ १७	०२ ०७ ०९ ००	०९ १० ५७ ५६	०९ २१ ४७ १०	०२ २३ २१ ३७	०९ २१ २९ ०८	११ ०४ १३ ३२	१० १६ २४ ३८	०४ १६ २४ ३८
३१	शनि	०९ १६ ५५ ११	०२ २१ ४२ ४४	०९ ११ ४४ ५१	०९ २३ ३२ ३९	०२ २३ १४ ४५	०९ २२ ४४ २६	११ ०४ १९ २१	१० १६ २१ २७	०४ १६ २१ २७

विक्रम सम्वत् २०८२, दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह, फरवरी २०२६ (भा. स्टैं. टा. समय प्रातः०६:२७)

तिथि	दिन	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
		रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.
१	रवि	०९ १७ ५६ ०४	०३ ०६ ०९ ३१	०९ १२ ३१ ४८	०९ २५ १८ ३०	०२ २३ ०८ ०१	०९ २३ ५९ ४३	११ ०४ २५ १४	१० १६ १८ १६	०४ १६ १८ १६
२	सोम	०९ १८ ५६ ५७	०३ २० २३ ०८	०९ १३ १८ ४६	०९ २७ ०४ ३८	०२ २३ ०१ २३	०९ २५ १५ ००	११ ०४ ३१ १०	१० १६ १५ ०५	०४ १६ १५ ०५
३	मंगल	०९ १९ ५७ ४८	०४ ०४ १८ ३१	०९ १४ ०५ ४५	०९ २८ ५० ५७	०२ २२ ५४ ५३	०९ २६ ३० १५	११ ०४ ३७ १०	१० १६ ११ ५५	०४ १६ ११ ५५
४	बुध	०९ २० ५८ ३८	०४ १७ ५२ २४	०९ १४ ५२ ४६	१० ०० ३७ २०	०२ २२ ४८ ३१	०९ २७ ४५ ३०	११ ०४ ४३ १३	१० १६ ०८ ४४	०४ १६ ०८ ४४
५	गुरु	०९ २१ ५९ २७	०५ ०१ ०३ ३४	०९ १५ ३९ ४८	१० ०२ २३ ३८	०२ २२ ४२ १७	०९ २९ ०० ४५	११ ०४ ४९ २०	१० १६ ०५ ३३	०४ १६ ०५ ३३
६	शुक्र	०९ २३ ०० १५	०५ १३ ५२ ४४	०९ १६ २६ ५१	१० ०४ ०९ ४२	०२ २२ ३६ ११	१० ०० १५ ५८	११ ०४ ५५ ३०	१० १६ ०२ २२	०४ १६ ०२ २२
७	शनि	०९ २४ ०१ ०२	०५ २६ २२ १२	०९ १७ १३ ५५	१० ०५ ५५ १८	०२ २२ ३० १४	१० ०१ ३१ ११	११ ०५ ०१ ४३	१० १५ ५९ ११	०४ १५ ५९ ११
८	रवि	०९ २५ ०१ ४९	०६ ०८ ३५ ३२	०९ १८ ०१ ०१	१० ०७ ४० १३	०२ २२ २४ २६	१० ०२ ४६ २३	११ ०५ ०८ ००	१० १५ ५६ ०१	०४ १५ ५६ ०१
९	सोम	०९ २६ ०२ ३४	०६ २० ३७ ०२	०९ १८ ४८ ०७	१० ०९ २४ ०९	०२ २२ १८ ४६	१० ०४ ०१ ३४	११ ०५ १४ १९	१० १५ ५२ ५०	०४ १५ ५२ ५०
१०	मंगल	०९ २७ ०३ १८	०७ ०२ ३१ २६	०९ १९ ३५ १५	१० ११ ०६ ४६	०२ २२ १३ १६	१० ०५ १६ ४५	११ ०५ २० ४२	१० १५ ४९ ३९	०४ १५ ४९ ३९
११	बुध	०९ २८ ०४ ०१	०७ १४ २३ ३२	०९ २० २२ २३	१० १२ ४७ ४३	०२ २२ ०७ ५६	१० ०६ ३१ ५५	११ ०५ २७ ०८	१० १५ ४६ २८	०४ १५ ४६ २८
१२	गुरु	०९ २९ ०४ ४४	०७ २६ १७ ५८	०९ २१ ०९ ३३	१० १४ २६ ३२	०२ २२ ०२ ४५	१० ०७ ४७ ०४	११ ०५ ३३ ३७	१० १५ ४३ १८	०४ १५ ४३ १८
१३	शुक्र	१० ०० ०५ २५	०८ ०८ १८ ५८	०९ २१ ५६ ४३	१० १६ ०२ ४७	०२ २१ ५७ ४३	१० ०९ ०२ १२	११ ०५ ४० ०९	१० १५ ४० ०७	०४ १५ ४० ०७
१४	शनि	१० ०१ ०६ ०४	०८ २० ३० ०९	०९ २२ ४३ ५५	१० १७ ३५ ५४	०२ २१ ५२ ५२	१० १० १७ १९	११ ०५ ४६ ४४	१० १५ ३६ ५६	०४ १५ ३६ ५६
१५	रवि	१० ०२ ०६ ४३	०९ ०२ ५४ १९	०९ २३ ३१ ०७	१० १९ ०५ १९	०२ २१ ४८ ११	१० ११ ३२ २६	११ ०५ ५३ २१	१० १५ ३३ ४५	०४ १५ ३३ ४५
१६	सोम	१० ०३ ०७ २०	०९ १५ ३३ २३	०९ २४ १८ २०	१० २० ३० २४	०२ २१ ४३ ४१	१० १२ ४७ ३१	११ ०६ ०० ०१	१० १५ ३० ३४	०४ १५ ३० ३४
१७	मंगल	१० ०४ ०७ ५६	०९ २८ २८ १४	०९ २५ ०५ ३३	१० २१ ५० ३१	०२ २१ ३९ २१	१० १४ ०२ ३६	११ ०६ ०६ ४४	१० १५ २७ २४	०४ १५ २७ २४
१८	बुध	१० ०५ ०८ ३१	१० ११ ३८ ४९	०९ २५ ५२ ४७	१० २३ ०४ ५८	०२ २१ ३५ ११	१० १५ १७ ३९	११ ०६ १३ २९	१० १५ २४ १३	०४ १५ २४ १३
१९	गुरु	१० ०६ ०९ ०४	१० २५ ०४ १२	०९ २६ ४० ०२	१० २४ १३ ०३	०२ २१ ३१ १३	१० १६ ३२ ४२	११ ०६ २० १७	१० १५ २१ ०२	०४ १५ २१ ०२
२०	शुक्र	१० ०७ ०९ ३५	११ ०८ ४२ ४६	०९ २७ २७ १७	१० २५ १४ ०६	०२ २१ २७ २५	१० १७ ४७ ४३	११ ०६ २७ ०७	१० १५ १७ ५१	०४ १५ १७ ५१
२१	शनि	१० ०८ १० ०४	११ २२ ३२ ३१	०९ २८ १४ ३२	१० २६ ०७ २६	०२ २१ २३ ४९	१० १९ ०२ ४३	११ ०६ ३३ ५९	१० १५ १४ ४१	०४ १५ १४ ४१
२२	रवि	१० ०९ १० ३२	०० ०६ ३१ १३	०९ २९ ०१ ४८	१० २६ ५२ २८	०२ २१ २० २४	१० २० १७ ४१	११ ०६ ४० ५४	१० १५ ११ ३०	०४ १५ ११ ३०
२३	सोम	१० १० १० ५८	०० २० ३६ ३७	०९ २९ ४९ ०४	१० २७ २८ ३९	०२ २१ १७ १०	१० २१ ३२ ३८	११ ०६ ४७ ५१	१० १५ ०८ १९	०४ १५ ०८ १९
२४	मंगल	१० ११ ११ २२	०१ ०४ ४६ २८	१० ०० ३६ २०	१० २७ ५५ ३१	०२ २१ १४ ०७	१० २२ ४७ ३४	११ ०६ ५४ ५०	१० १५ ०५ ०८	०४ १५ ०५ ०८
२५	बुध	१० १२ ११ ४४	०१ १८ ५८ ३५	१० ०१ २३ ३७	१० २८ १२ ४५	०२ २१ ११ १६	१० २४ ०२ २९	११ ०७ ०१ ५०	१० १५ ०१ ५८	०४ १५ ०१ ५८
२६	गुरु	१० १३ १२ ०४	०२ ०३ १० ३८	१० ०२ १० ५३	१० २८ २० ०९	०२ २१ ०८ ३७	१० २५ १७ २१	११ ०७ ०८ ५३	१० १४ ५८ ४७	०४ १४ ५८ ४७
२७	शुक्र	१० १४ १२ २२	०२ १७ २० ११	१० ०२ ५८ ०९	१० २८ १७ ४२	०२ २१ ०६ ०९	१० २६ ३२ १३	११ ०७ १५ ५८	१० १४ ५५ ३६	०४ १४ ५५ ३६
२८	शनि	१० १५ १२ ३८	०३ ०१ २४ ३२	१० ०३ ४५ २६	१० २८ ०५ ३३	०२ २१ ०३ ५३	१० २७ ४७ ०३	११ ०७ २३ ०४	१० १४ ५२ २५	०४ १४ ५२ २५

विक्रम सम्वत् २०८२, दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह, मार्च २०२६ (भा. स्टैं. टा. समय प्रातः०६:२७)

तिथि	दिन	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
		रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.
१	रवि	१० १६ १२ ५२	०३ १५ २० ५०	१० ०४ ३२ ४२	१० २७ ४४ ०४	०२ २१ ०१ ४८	१० २९ ०१ ५१	११ ०७ ३० १२	१० १४ ४९ १४	०४ १४ ४९ १४
२	सोम	१० १७ १३ ०४	०३ २९ ०६ १९	१० ०५ १९ ५९	१० २७ १३ ५०	०२ २० ५९ ५५	११ ०० १६ ३८	११ ०७ ३७ २२	१० १४ ४६ ०४	०४ १४ ४६ ०४
३	मंगल	१० १८ १३ १४	०४ १२ ३८ २६	१० ०६ ०७ १५	१० २६ ३५ ३६	०२ २० ५८ १४	११ ०१ ३१ २३	११ ०७ ४४ ३४	१० १४ ४२ ५३	०४ १४ ४२ ५३
४	बुध	१० १९ १३ २३	०४ २५ ५५ ११	१० ०६ ५४ ३२	१० २५ ५० २२	०२ २० ५६ ४४	११ ०२ ४६ ०७	११ ०७ ५१ ४७	१० १४ ३९ ४२	०४ १४ ३९ ४२
५	गुरु	१० २० १३ २९	०५ ०८ ५५ २६	१० ०७ ४१ ४८	१० २४ ५९ १८	०२ २० ५५ २६	११ ०४ ०० ४९	११ ०७ ५९ ०१	१० १४ ३६ ३१	०४ १४ ३६ ३१
६	शुक्र	१० २१ १३ ३४	०५ २१ ३९ ००	१० ०८ २९ ०४	१० २४ ०३ ४१	०२ २० ५४ २०	११ ०५ १५ ३०	११ ०८ ०६ १७	१० १४ ३३ २१	०४ १४ ३३ २१
७	शनि	१० २२ १३ ३७	०६ ०४ ०६ ४९	१० ०९ १६ २१	१० २३ ०४ ५५	०२ २० ५३ २६	११ ०६ ३० ०९	११ ०८ १३ ३४	१० १४ ३० १०	०४ १४ ३० १०
८	रवि	१० २३ १३ ३९	०६ १६ २० ४८	१० १० ०३ ३७	१० २२ ०४ २७	०२ २० ५२ ४३	११ ०७ ४४ ४७	११ ०८ २० ५२	१० १४ २६ ५९	०४ १४ २६ ५९
९	सोम	१० २४ १३ ३९	०६ २८ २३ ५३	१० १० ५० ५३	१० २१ ०३ ४१	०२ २० ५२ १२	११ ०८ ५९ २३	११ ०८ २८ १२	१० १४ २३ ४८	०४ १४ २३ ४८
१०	मंगल	१० २५ १३ ३७	०७ १० १९ ४४	१० ११ ३८ ०८	१० २० ०४ ००	०२ २० ५१ ५३	११ १० १३ ५८	११ ०८ ३५ ३२	१० १४ २० ३८	०४ १४ २० ३८
११	बुध	१० २६ १३ ३४	०७ २२ १२ ३३	१० १२ २५ २४	१० १९ ०६ ३८	०२ २० ५१ ४६	११ ११ २८ ३१	११ ०८ ४२ ५४	१० १४ १७ २७	०४ १४ १७ २७
१२	गुरु	१० २७ १३ २९	०८ ०४ ०६ ५९	१० १३ १२ ३९	१० १८ १२ ४१	०२ २० ५१ ५०	११ १२ ४३ ०३	११ ०८ ५० १७	१० १४ १४ १६	०४ १४ १४ १६
१३	शुक्र	१० २८ १३ २२	०८ १६ ०७ ४३	१० १३ ५९ ५४	१० १७ २३ ०३	०२ २० ५२ ०६	११ १३ ५७ ३३	११ ०८ ५७ ४१	१० १४ ११ ०५	०४ १४ ११ ०५
१४	शनि	१० २९ १३ १३	०८ २८ १९ २२	१० १४ ४७ ०८	१० १६ ३८ ३०	०२ २० ५२ ३४	११ १५ १२ ०२	११ ०९ ०५ ०५	१० १४ ०७ ५४	०४ १४ ०७ ५४
१५	रवि	११ ०० १३ ०३	०९ १० ४६ ०५	१० १५ ३४ २२	१० १५ ५९ ३३	०२ २० ५३ १३	११ १६ २६ २९	११ ०९ १२ ३१	१० १४ ०४ ४४	०४ १४ ०४ ४४
१६	सोम	११ ०१ १२ ५१	०९ २३ ३१ १६	१० १६ २१ ३६	१० १५ २६ ३७	०२ २० ५४ ०४	११ १७ ४० ५४	११ ०९ १९ ५७	१० १४ ०१ ३३	०४ १४ ०१ ३३
१७	मंगल	११ ०२ १२ ३८	१० ०६ ३७ १०	१० १७ ०८ ४८	१० १४ ५९ ५५	०२ २० ५५ ०७	११ १८ ५५ १८	११ ०९ २७ २४	१० १३ ५८ २२	०४ १३ ५८ २२
१८	बुध	११ ०३ १२ २२	१० २० ०४ ३४	१० १७ ५६ ०१	१० १४ ३९ ३४	०२ २० ५६ २२	११ २० ०९ ४०	११ ०९ ३४ ५१	१० १३ ५५ ११	०४ १३ ५५ ११
१९	गुरु	११ ०४ १२ ०५	११ ०३ ५२ ३२	१० १८ ४३ १२	१० १४ २५ ३३	०२ २० ५७ ४८	११ २१ २४ ०१	११ ०९ ४२ १९	१० १३ ५२ ०१	०४ १३ ५२ ०१
२०	शुक्र	११ ०५ ११ ४६	११ १७ ५८ १८	१० १९ ३० २३	१० १४ १७ ४६	०२ २० ५९ २५	११ २२ ३८ १९	११ ०९ ४९ ४७	१० १३ ४८ ५०	०४ १३ ४८ ५०
२१	शनि	११ ०६ ११ २४	०० ०२ १७ ३२	१० २० १७ ३२	१० १४ १६ ०५	०२ २१ ०१ १४	११ २३ ५२ ३६	११ ०९ ५७ १६	१० १३ ४५ ३९	०४ १३ ४५ ३९
२२	रवि	११ ०७ ११ ००	०० १६ ४४ ४८	१० २१ ०४ ४१	१० १४ २० १७	०२ २१ ०३ १५	११ २५ ०६ ५१	११ १० ०४ ४५	१० १३ ४२ २८	०४ १३ ४२ २८
२३	सोम	११ ०८ १० ३५	०१ ०१ १४ २०	१० २१ ५१ ४९	१० १४ ३० ०७	०२ २१ ०५ २६	११ २६ २१ ०४	११ १० १२ १४	१० १३ ३९ १७	०४ १३ ३९ १७
२४	मंगल	११ ०९ १० ०७	०१ १५ ४० ४९	१० २२ ३८ ५६	१० १४ ४५ २०	०२ २१ ०७ ४९	११ २७ ३५ १५	११ १० १९ ४४	१० १३ ३६ ०७	०४ १३ ३६ ०७
२५	बुध	११ १० ०९ ३६	०१ २९ ५९ ५५	१० २३ २६ ०१	१० १५ ०५ ४१	०२ २१ १० २४	११ २८ ४९ २३	११ १० २७ १३	१० १३ ३२ ५६	०४ १३ ३२ ५६
२६	गुरु	११ ११ ०९ ०३	०२ १४ ०८ ४१	१० २४ १३ ०५	१० १५ ३० ५३	०२ २१ १३ ०९	०० ०० ०३ ३०	११ १० ३४ ४२	१० १३ २९ ४५	०४ १३ २९ ४५
२७	शुक्र	११ १२ ०८ २८	०२ २८ ०५ २६	१० २५ ०० ०९	१० १६ ०० ४१	०२ २१ १६ ०५	०० ०१ १७ ३४	११ १० ४२ ११	१० १३ २६ ३४	०४ १३ २६ ३४
२८	शनि	११ १३ ०७ ५१	०३ ११ ४९ २९	१० २५ ४७ १०	१० १६ ३४ ४८	०२ २१ १९ १२	०० ०२ ३१ ३७	११ १० ४९ ४१	१० १३ २३ २४	०४ १३ २३ २४
२९	रवि	११ १४ ०७ ११	०३ २५ २० ४८	१० २६ ३४ ११	१० १७ १३ ०१	०२ २१ २२ ३०	०० ०३ ४५ ३७	११ १० ५७ १०	१० १३ २० १३	०४ १३ २० १३
३०	सोम	११ १५ ०६ २९	०४ ०८ ३९ ३६	१० २७ २१ १०	१० १७ ५५ ०६	०२ २१ २५ ५८	०० ०४ ५९ ३४	११ ११ ०४ ३८	१० १३ १७ ०२	०४ १३ १७ ०२
३१	मंगल	११ १६ ०५ ४५	०४ २१ ४६ ०८	१० २८ ०८ ०८	१० १८ ४० ४९	०२ २१ २९ ३८	०० ०६ १३ ३०	११ ११ १२ ०७	१० १३ १३ ५१	०४ १३ १३ ५१

विक्रम सम्वत् २०२५-२६ की दैनिक लग्नसारिणी, नई दिल्ली में लग्नों का समाप्तिकाल (भा.स्टैं.टा.)

मार्च, २०२५, अयनांश : २४:०८:५४

तिथि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
०१	१०:२८	१२:२४	१४:३८	१६:५९	१९:१६	२१:३२	२३:५२	०२:१४	०४:१८	०६:०१	०७:२८	०८:५३
०२	१०:२४	१२:२०	१४:३४	१६:५५	१९:१२	२१:२८	२३:४८	०२:१०	०४:१४	०५:५७	०७:२४	०८:४९
०३	१०:२०	१२:१६	१४:३०	१६:५१	१९:०८	२१:२४	२३:४४	०२:०६	०४:१०	०५:५३	०७:२०	०८:४५
०४	१०:१६	१२:१२	१४:२६	१६:४७	१९:०४	२१:२१	२३:४०	०२:०३	०४:०७	०५:४९	०७:१६	०८:४१
०५	१०:१२	१२:०८	१४:२३	१६:४३	१९:००	२१:१७	२३:३६	०१:५९	०४:०३	०५:४५	०७:१२	०८:३७
०६	१०:०८	१२:०४	१४:१९	१६:३९	१८:५६	२१:१३	२३:३२	०१:५५	०३:५९	०५:४१	०७:०८	०८:३३
०७	१०:०५	१२:००	१४:१५	१६:३५	१८:५२	२१:०९	२३:२८	०१:५१	०३:५५	०५:३७	०७:०४	०८:२९
०८	१०:०१	११:५६	१४:११	१६:३१	१८:४९	२१:०५	२३:२४	०१:४७	०३:५१	०५:३३	०७:०१	०८:२५
०९	०९:५७	११:५२	१४:०७	१६:२७	१८:४४	२१:०१	२३:२०	०१:४३	०३:४७	०५:२९	०६:५७	०८:२२
१०	०९:५३	११:४८	१४:०३	१६:२३	१८:४१	२०:५७	२३:१६	०१:३९	०३:४३	०५:२५	०६:५३	०८:१८
११	०९:४९	११:४४	१३:५९	१६:१९	१८:३७	२०:५३	२३:१३	०१:३५	०३:३९	०५:२१	०६:४९	०८:१४
१२	०९:४५	११:४१	१३:५५	१६:१५	१८:३३	२०:४९	२३:०८	०१:३१	०३:३५	०५:१७	०६:४५	०८:१०
१३	०९:४१	११:३६	१३:५१	१६:१२	१८:२९	२०:४५	२३:०५	०१:२७	०३:३१	०५:१३	०६:४१	०८:०६
१४	०९:३७	११:३३	१३:४७	१६:०८	१८:२५	२०:४१	२३:०१	०१:२३	०३:२७	०५:०९	०६:३७	०८:०२
१५	०९:३३	११:२९	१३:४३	१६:०४	१८:२१	२०:३७	२२:५७	०१:१९	०३:२३	०५:०६	०६:३३	०७:५८
१६	०९:२९	११:२५	१३:३९	१६:००	१८:१७	२०:३३	२२:५३	०१:१५	०३:१९	०५:०२	०६:२९	०७:५४
१७	०९:२५	११:२१	१३:३५	१५:५६	१८:१३	२०:२९	२२:४९	०१:११	०३:१५	०४:५८	०६:२५	०७:५०
१८	०९:२१	११:१७	१३:३२	१५:५२	१८:०९	२०:२६	२२:४५	०१:०७	०३:११	०४:५४	०६:२१	०७:४६
१९	०९:१७	११:१३	१३:२८	१५:४८	१८:०५	२०:२२	२२:४१	०१:०३	०३:०८	०४:५०	०६:१७	०७:४२
२०	०९:१३	११:०९	१३:२४	१५:४४	१८:०१	२०:१८	२२:३७	००:५९	०३:०४	०४:४६	०६:१३	०७:३८
२१	०९:१०	११:०५	१३:२०	१५:४०	१७:५७	२०:१४	२२:३३	००:५६	०३:००	०४:४२	०६:०९	०७:३४
२२	०९:०६	११:०१	१३:१६	१५:३६	१७:५३	२०:१०	२२:२९	००:५२	०२:५६	०४:३८	०६:०५	०७:३०
२३	०९:०२	१०:५७	१३:१२	१५:३२	१७:५०	२०:०६	२२:२५	००:४८	०२:५२	०४:३४	०६:०२	०७:२६
२४	०८:५८	१०:५३	१३:०८	१५:२८	१७:४६	२०:०२	२२:२१	००:४४	०२:४८	०४:३०	०५:५८	०७:२३
२५	०८:५४	१०:४९	१३:०४	१५:२४	१७:४२	१९:५८	२२:१७	००:४०	०२:४४	०४:२६	०५:५४	०७:१९
२६	०८:५०	१०:४५	१३:००	१५:२०	१७:३८	१९:५४	२२:१४	००:३६	०२:४०	०४:२२	०५:५०	०७:१५
२७	०८:४६	१०:४२	१२:५६	१५:१७	१७:३४	१९:५०	२२:१०	००:३२	०२:३६	०४:१८	०५:४६	०७:११
२८	०८:४२	१०:३८	१२:५२	१५:१३	१७:३०	१९:४६	२२:०६	००:२८	०२:३२	०४:१४	०५:४२	०७:०७
२९	०८:३८	१०:३४	१२:४८	१५:०९	१७:२६	१९:४२	२२:०२	००:२०	०२:२८	०४:११	०५:३८	०७:०३
३०	०८:३४	१०:३०	१२:४४	१५:०५	१७:२२	१९:३८	२१:५८	००:१६	०२:२४	०४:०७	०५:३४	०६:५९
३१	०८:३०	१०:२६	१२:४०	१५:०१	१७:१८	१९:३४	२१:५४	००:१२	०२:२०	०४:०३	०५:३०	०६:५५

अप्रैल, २०२५, अयनांश : २४:०८:५७

तिथि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
०१	०८:२६	१०:२२	१२:३७	१४:५७	१७:१४	१९:३०	२१:५०	००:०९	०२:१६	०३:५९	०५:२६	०६:५१
०२	०८:२२	१०:१८	१२:३३	१४:५३	१७:१०	१९:२७	२१:४६	००:०५	०२:१३	०३:५५	०५:२२	०६:४७
०३	०८:१८	१०:१४	१२:२९	१४:४९	१७:०६	१९:२३	२१:४२	००:०१	०२:०९	०३:५१	०५:१८	०६:४३
०४	०८:१५	१०:१०	१२:२५	१४:४५	१७:०२	१९:१९	२१:३८	२३:५७	०२:०५	०३:४७	०५:१४	०६:३९
०५	०८:११	१०:०६	१२:२१	१४:४१	१६:५८	१९:१५	२१:३४	२३:५३	०२:०१	०३:४३	०५:१०	०६:३५
०६	०८:०७	१०:०२	१२:१७	१४:३७	१६:५४	१९:११	२१:३०	२३:४९	०१:५७	०३:३९	०५:०६	०६:३१
०७	०८:०३	०९:५८	१२:१३	१४:३३	१६:५१	१९:०७	२१:२६	२३:४५	०१:५३	०३:३५	०५:०३	०६:२७
०८	०७:५९	०९:५४	१२:०९	१४:२९	१६:४७	१९:०३	२१:२२	२३:४१	०१:४९	०३:३१	०४:५९	०६:२४
०९	०७:५५	०९:५०	१२:०५	१४:२५	१६:४३	१८:५९	२१:१९	२३:३७	०१:४५	०३:२७	०४:५५	०६:२०
१०	०७:५१	०९:४६	१२:०१	१४:२१	१६:३९	१८:५५	२१:१५	२३:३३	०१:४१	०३:२३	०४:५१	०६:१६
११	०७:४७	०९:४३	११:५७	१४:१८	१६:३५	१८:५१	२१:११	२३:२९	०१:३७	०३:१९	०४:४७	०६:१२
१२	०७:४३	०९:३९	११:५३	१४:१४	१६:३१	१८:४७	२१:०७	२३:२५	०१:३३	०३:१५	०४:४३	०६:०८
१३	०७:३९	०९:३५	११:४९	१४:१०	१६:२७	१८:४३	२१:०३	२३:२१	०१:२९	०३:१२	०४:३९	०६:०४
१४	०७:३५	०९:३१	११:४५	१४:०६	१६:२३	१८:३९	२०:५९	२३:१७	०१:२५	०३:०७	०४:३५	०६:००
१५	०७:३१	०९:२७	११:४१	१४:०२	१६:१९	१८:३५	२०:५५	२३:१३	०१:२१	०३:०४	०४:३१	०५:५६
१६	०७:२७	०९:२३	११:३८	१३:५८	१६:१५	१८:३१	२०:५१	२३:१०	०१:१७	०३:००	०४:२७	०५:५२
१७	०७:२३	०९:१९	११:३४	१३:५४	१६:११	१८:२८	२०:४७	२३:०६	०१:१४	०२:५६	०४:२३	०५:४८
१८	०७:१९	०९:१५	११:३०	१३:५०	१६:०७	१८:२४	२०:४३	२३:०२	०१:१०	०२:५२	०४:१९	०५:४४
१९	०७:१६	०९:११	११:२६	१३:४६	१६:०३	१८:२०	२०:३९	२२:५८	०१:०६	०२:४८	०४:१५	०५:४०
२०	०७:१२	०९:०७	११:२२	१३:४२	१५:५९	१८:१६	२०:३५	२२:५४	०१:०२	०२:४४	०४:११	०५:३६
२१	०७:०८	०९:०३	११:१८	१३:३८	१५:५१	१८:१२	२०:३१	२२:५०	००:५८	०२:४०	०४:०८	०५:३२
२२	०७:०४	०८:५९	११:१४	१३:३४	१५:५२	१८:०८	२०:२७	२२:४६	००:५४	०२:३६	०४:०४	०५:२९
२३	०७:००	०८:५५	११:१०	१३:३०	१५:४८	१८:०४	२०:२३	२२:४२	००:५०	०२:३२	०४:००	०५:२५
२४	०६:५६	०८:५१	११:०६	१३:२६	१५:४४	१८:००	२०:१८	२२:३८	००:४६	०२:२८	०३:५७	०५:२१
२५	०६:५२	०८:४८	११:०२	१३:२२	१५:४०	१७:५६	२०:१६	२२:३४	००:४२	०२:२४	०३:५३	०५:१७
२६	०६:४८	०८:४४	१०:५८	१३:१९	१५:३६	१७:५२	२०:१२	२२:३०	००:३८	०२:२०	०३:४८	०५:१३
२७	०६:४४	०८:४०	१०:५४	१३:१५	१५:३२	१७:४८	२०:०८	२२:२६	००:३४	०२:१६	०३:४४	०५:०९
२८	०६:४०	०८:३६	१०:५०	१३:११	१५:२८	१७:४४	२०:०४	२२:२२	००:३०	०२:१३	०३:४०	०५:०५
२९	०६:३६	०८:३२	१०:४६	१३:०७	१५:२४	१७:४०	२०:००	२२:१८	००:२६	०२:०९	०३:३६	०५:०१
३०	०६:३२	०८:२८	१०:४२	१३:०३	१५:२०	१७:३६	१९:५६	२२:१४	००:२२	०२:०५	०३:३२	०४:५७

विक्रम सम्वत् २०२५-२६ की दैनिक लग्नसारिणी, नई दिल्ली में लग्नों का समाप्तिकाल (भा.स्टैं.टा.)

मई, २०२५, अयनांश : २४:०९:०१

तिथि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
०१	०६:२८	०८:२४	१०:३९	१२:५९	१५:१६	१७:३३	१९:५२	२२:११	००:१५	०२:०१	०३:२८	०४:५३
०२	०६:२४	०८:२०	१०:३५	१२:५५	१५:१२	१७:२९	१९:४८	२२:०७	००:११	०१:५७	०३:२४	०४:४९
०३	०६:२०	०८:१६	१०:३१	१२:५१	१५:०८	१७:२५	१९:४४	२२:०३	००:०७	०१:५३	०३:२०	०४:४५
०४	०६:१७	०८:१२	१०:२७	१२:४७	१५:०४	१७:२१	१९:४०	२१:५९	००:०३	०१:४९	०३:१६	०४:४१
०५	०६:१३	०८:०८	१०:२३	१२:४३	१५:००	१७:१७	१९:३६	२१:५५	२३:५९	०१:४५	०३:१२	०४:३७
०६	०६:०९	०८:०४	१०:१९	१२:३९	१४:५७	१७:१३	१९:३२	२१:५१	२३:५५	०१:४१	०३:०९	०४:३३
०७	०६:०५	०८:००	१०:१५	१२:३५	१४:५३	१७:०९	१९:२८	२१:४७	२३:५१	०१:३७	०३:०५	०४:३०
०८	०६:०१	०७:५६	१०:११	१२:३१	१४:४९	१७:०५	१९:२४	२१:४३	२३:४७	०१:३३	०३:०१	०४:२६
०९	०५:५७	०७:५२	१०:०७	१२:२७	१४:४५	१७:०१	१९:२१	२१:३९	२३:४३	०१:२९	०२:५७	०४:२२
१०	०५:५३	०७:४९	१०:०३	१२:२४	१४:४१	१६:५७	१९:१७	२१:३५	२३:३९	०१:२५	०२:५३	०४:१८
११	०५:४९	०७:४५	०९:५९	१२:२०	१४:३७	१६:५३	१९:१३	२१:३१	२३:३५	०१:२१	०२:४९	०४:१४
१२	०५:४५	०७:४१	०९:५५	१२:१६	१४:३३	१६:४९	१९:०९	२१:२७	२३:३१	०१:१८	०२:४५	०४:१०
१३	०५:४१	०७:३७	०९:५१	१२:१२	१४:२९	१६:४५	१९:०५	२१:२३	२३:२७	०१:१४	०२:४१	०४:०६
१४	०५:३७	०७:३३	०९:४७	१२:०८	१४:२५	१६:४१	१९:०१	२१:१९	२३:२३	०१:१०	०२:३७	०४:०२
१५	०५:३३	०७:२९	०९:४४	१२:०४	१४:२१	१६:३७	१८:५७	२१:१६	२३:२०	०१:०६	०२:३३	०३:५८
१६	०५:२९	०७:२५	०९:४०	१२:००	१४:१७	१६:३४	१८:५३	२१:१२	२३:१६	०१:०२	०२:२९	०३:५४
१७	०५:२५	०७:२१	०९:३६	११:५६	१४:१३	१६:३०	१८:४९	२१:०८	२३:१२	००:५८	०२:२५	०३:५०
१८	०५:२१	०७:१७	०९:३२	११:५२	१४:०९	१६:२६	१८:४५	२१:०४	२३:०८	००:५४	०२:२१	०३:४६
१९	०५:१८	०७:१३	०९:२८	११:४८	१४:०५	१६:२२	१८:४१	२१:००	२३:०४	००:५०	०२:१७	०३:४२
२०	०५:१४	०७:०९	०९:२४	११:४४	१४:०१	१६:१८	१८:३७	२०:५६	२३:००	००:४६	०२:१३	०३:३८
२१	०५:१०	०७:०५	०९:२०	११:४०	१३:५८	१६:१४	१८:३३	२०:५२	२२:५६	००:४२	०२:१०	०३:३४
२२	०५:०६	०७:०१	०९:१६	११:३६	१३:५४	१६:१०	१८:२९	२०:४८	२२:५२	००:३८	०२:०६	०३:३१
२३	०५:०२	०६:५७	०९:१२	११:३२	१३:५०	१६:०६	१८:२६	२०:४४	२२:४८	००:३४	०२:०२	०३:२७
२४	०४:५८	०६:५३	०९:०८	११:२८	१३:४६	१६:०२	१८:२२	२०:४०	२२:४४	००:३०	०१:५८	०३:२३
२५/	०४:५४	०६:५०	०९:०४	११:२५	१३:४२	१५:५८	१८:१८	२०:३६	२२:४०	००:२६	०१:५४:	०३:१९
२६	०४:५०	०६:४६	०९:००	११:२०	१३:३८	१५:५४	१८:१४	२०:३२	२२:३६	००:२२	०१:५०	०३:१५
२७	०४:४६	०६:४२	०८:५६	११:१७	१३:३४	१५:५०	१८:१०	२०:२८	२२:३२	००:१५	०१:४६	०३:११
२८	०४:४२	०६:३८	०८:५२	११:१३	१३:३०	१५:४६	१८:०६	२०:२४	२२:२८	००:११	०१:४२	०३:०७
२९	०४:३८	०६:३४	०८:४८	११:०९	१३:२६	१५:४२	१८:०२	२०:२०	२२:२४	००:०७	०१:३८	०३:०३
३०	०४:३४	०६:३०	०८:४५	११:०५	१३:२२	१५:३८	१७:५८	२०:१६	२२:२१	००:०३	०१:३४	०२:५९
३१	०४:३०	०६:२६	०८:४१	११:०१	१३:१८	१५:३५	१७:५४	२०:१३	२२:१७	२३:५९	०१:३०	०२:५५

जून, २०२५, अयनांश : २४:०९:०६

तिथि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
०१	०४:२६	०६:२२	०८:३७	१०:५७	१३:१४	१५:३१	१७:५०	२०:०९	२२:१३	२३:५५	०१:२६	०२:५१
०२	०४:२३	०६:१८	०८:३३	१०:५३	१३:१०	१५:२७	१७:४६	२०:०५	२२:०९	२३:५१	०१:२२	०२:४७
०३	०४:१९	०६:१४	०८:२९	१०:४९	१३:०६	१५:२३	१७:४२	२०:०१	२२:०५	२३:४७	०१:१८	०२:४३
०४	०४:१५	०६:१०	०८:२५	१०:४५	१३:०३	१५:१९	१७:३८	१९:५७	२२:०१	२३:४३	०१:१५	०२:३९
०५	०४:११	०६:०६	०८:२१	१०:४१	१२:५८	१५:१५	१७:३४	१९:५३	२१:५७	२३:३९	०१:११	०२:३६
०६	०४:०७	०६:०२	०८:१७	१०:३७	१२:५४	१५:११	१७:३०	१९:४९	२१:५३	२३:३५	०१:०७	०२:३२
०७	०४:०३	०५:५८	०८:१३	१०:३३	१२:५१	१५:०७	१७:२७	१९:४५	२१:४९	२३:३१	०१:०३	०२:२८
०८	०३:५९	०५:५५	०८:०९	१०:२९	१२:४७	१५:०३	१७:२३	१९:४१	२१:४५	२३:२७	००:५९	०२:२४
०९	०३:५५	०५:५०	०८:०५	१०:२६	१२:४३	१४:५९	१७:१९	१९:३७	२१:४१	२३:२३	००:५५	०२:२०
१०	०३:५१	०५:४७	०८:०१	१०:२२	१२:३९	१४:५५	१७:१५	१९:३३	२१:३७	२३:२०	००:५१	०२:१६
११	०३:४७	०५:४३	०७:५७	१०:१८	१२:३५	१४:५१	१७:११	१९:२९	२१:३३	२३:१६	००:४७	०२:१२
१२	०३:४३	०५:३९	०७:५३	१०:१४	१२:३१	१४:४७	१७:०७	१९:२५	२१:२९	२३:१२	००:४३	०२:०८
१३	०३:३९	०५:३५	०७:४९	१०:१०	१२:२७	१४:४३	१७:०३	१९:२२	२१:२५	२३:०८	००:३९	०२:०४
१४	०३:३५	०५:३१	०७:४६	१०:०६	१२:२३	१४:४०	१६:५९	१९:१८	२१:२२	२३:०४	००:३५	०२:००
१५	०३:३१	०५:२७	०७:४२	१०:०२	१२:१९	१४:३६	१६:५५	१९:१४	२१:१८	२३:००	००:३१	०१:५६
१६	०३:२७	०५:२३	०७:३८	०९:५८	१२:१५	१४:३२	१६:५१	१९:१०	२१:१४	२२:५६	००:२७	०१:५२
१७	०३:२४	०५:१९	०७:३४	०९:५४	१२:११	१४:२८	१६:४७	१९:०६	२१:१०	२२:५२	००:२३	०१:४८
१८	०३:२०	०५:१५	०७:३०	०९:५०	१२:०७	१४:२४	१६:४३	१९:०२	२१:०६	२२:४८	००:१६	०१:४४
१९	०३:१६	०५:११	०७:२६	०९:४६	१२:०३	१४:२०	१६:३९	१८:५८	२१:०२	२२:४४	००:१२	०१:४०
२०	०३:१२	०५:०७	०७:२२	०९:४२	१२:००	१४:१६	१६:३५	१८:५४	२०:५८	२२:४०	००:०८	०१:३७
२१	०३:०८	०५:०३	०७:१८	०९:३८	११:५६	१४:१२	१६:३१	१८:५०	२०:५४	२२:३६	००:०४	०१:३३
२२	०३:०४	०४:५९	०७:१४	०९:३४	११:५२	१४:०८	१६:२८	१८:४६	२०:५०	२२:३२	००:००	०१:२९
२३	०३:००	०४:५६	०७:१०	०९:३१	११:४८	१४:०४	१६:२४	१८:४२	२०:४६	२२:२८	२३:५६	०१:२५
२४	०२:५६	०४:५१	०७:०६	०९:२७	११:४४	१४:००	१६:२०	१८:३८	२०:४२	२२:२५	२३:५२	०१:२१
२५	०२:५२	०४:४८	०७:०२	०९:२३	११:४०	१३:५६	१६:१६	१८:३४	२०:३८	२२:२१	२३:४८	०१:१७
२६	०२:४८	०४:४४	०६:५८	०९:१९	११:३६	१३:५२	१६:१२	१८:३०	२०:३४	२२:१७	२३:४४	०१:१३
२७	०२:४४	०४:४०	०६:५४	०९:१५	११:३२	१३:४८	१६:०८	१८:२६	२०:३०	२२:१३	२३:४०	०१:०९
२८	०२:४०	०४:३६	०६:५१	०९:११	११:२८	१३:४४	१६:०४	१८:२३	२०:२७	२२:०९	२३:३६	०१:०५
२९	०२:३६	०४:३२	०६:४७	०९:०७	११:२४	१३:४१	१६:००	१८:१९	२०:२३	२२:०५	२३:३२	०१:०१
३०	०२:३२	०४:२८	०६:४३	०९:०३	११:२०	१३:३७	१५:५६	१८:१५	२०:१९	२२:०१	२३:२८	००:५७

विक्रम सम्वत् २०२५-२६ की दैनिक लग्नसारिणी, नई दिल्ली में लग्नों का समाप्तिकाल (भा.स्टैं.टा.)

जुलाई, २०२५, अयनांश : २४:०९:११

तिथि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
०१	०२:२९	०४:२४	०६:३९	०८:५९	११:१६	१३:३३	१५:५२	१८:११	२०:१५	२१:५७	२३:२४	००:५३
०२	०२:२५	०४:२०	०६:३५	०८:५५	११:१२	१३:२९	१५:४८	१८:०७	२०:११	२१:५३	२३:२०	००:४९
०३	०२:२१	०४:१६	०६:३१	०८:५१	११:०८	१३:२५	१५:४४	१८:०३	२०:०७	२१:४९	२३:१७	००:४५
०४	०२:१७	०४:१२	०६:२७	०८:४७	११:०५	१३:२१	१५:४०	१७:५९	२०:०३	२१:४५	२३:१३	००:४१
०५	०२:१३	०४:०८	०६:२३	०८:४३	११:०१	१३:१७	१५:३६	१७:५५	१९:५९	२१:४१	२३:०९	००:३८
०६	०२:०९	०४:०४	०६:१९	०८:३९	१०:५७	१३:१३	१५:३३	१७:५१	१९:५५	२१:३७	२३:०५	००:३४
०७	०२:०५	०४:००	०६:१५	०८:३५	१०:५३	१३:०९	१५:२९	१७:४७	१९:५१	२१:३३	२३:०१	००:३०
०८	०२:०१	०३:५७	०६:११	०८:३२	१०:४९	१३:०५	१५:२५	१७:४३	१९:४७	२१:२९	२२:५७	००:२६
०९	०१:५७	०३:५३	०६:०७	०८:२८	१०:४५	१३:०१	१५:२१	१७:३९	१९:४३	२१:२६	२२:५३	००:२२
१०	०१:५३	०३:४९	०६:०३	०८:२४	१०:४१	१२:५७	१५:१७	१७:३५	१९:३९	२१:२२	२२:४९	००:१४
११	०१:४९	०३:४५	०५:५९	०८:२०	१०:३७	१२:५३	१५:१३	१७:३१	१९:३५	२१:१८	२२:४५	००:१०
१२	०१:४५	०३:४१	०५:५५	०८:१६	१०:३३	१२:४९	१५:०९	१७:२७	१९:३१	२१:१४	२२:४१	००:०६
१३	०१:४१	०३:३७	०५:५२	०८:१२	१०:२९	१२:४५	१५:०५	१७:२४	१९:२८	२१:१०	२२:३७	००:०२
१४	०१:३७	०३:३३	०५:४८	०८:०८	१०:२५	१२:४२	१५:०१	१७:२०	१९:२४	२१:०६	२२:३३	२३:५८
१५	०१:३३	०३:२९	०५:४४	०८:०४	१०:२१	१२:३८	१४:५७	१७:१६	१९:२०	२१:०२	२२:२९	२३:५४
१६	०१:३०	०३:२५	०५:४०	०८:००	१०:१७	१२:३४	१४:५३	१७:१२	१९:१६	२०:५८	२२:२५	२३:५०
१७	०१:२६	०३:२१	०५:३६	०७:५६	१०:१३	१२:३०	१४:४९	१७:०८	१९:१२	२०:५४	२२:२२	२३:४६
१८	०१:२२	०३:१७	०५:३२	०७:५२	१०:१०	१२:२६	१४:४५	१७:०४	१९:०८	२०:५०	२२:१८	२३:४३
१९/	०१:१८	०३:१३	०५:२८	०७:४८	१०:०६	१२:२२	१४:४१	१७:००	१९:०४	२०:४६	२२:१२	२३:३९
२०	०१:१४	०३:०९	०५:२४	०७:४४	१०:०२	१२:१८	१४:३७	१६:५६	१९:००	२०:४२	२२:१०	२३:३५
२१/	०१:१०	०३:०५	०५:२०	०७:४०	०९:५८	१२:१४	१४:३४	१६:५२	१८:५६	२०:३८	२२:०६	२३:३१
२२	०१:०६	०३:०२	०५:१६	०७:३६	०९:५४	१२:१०	१४:३०	१६:४८	१८:५२	२०:३४	२२:०२	२३:२७
२३	०१:०२	०२:५८	०५:१२	०७:३३	०९:५०	१२:०६	१४:२६	१६:४४	१८:४८	२०:३०	२१:५८	२३:२३
२४	००:५८	०२:५४	०५:०८	०७:२९	०९:४६	१२:०२	१४:२२	१६:४०	१८:४४	२०:२७	२१:५४	२३:१९
२५	००:५४	०२:५०	०५:०४	०७:२५	०९:४२	११:५८	१४:१८	१६:३६	१८:४०	२०:२३	२१:५०	२३:१५
२६	००:५०	०२:४६	०५:००	०७:२१	०९:३८	११:५४	१४:१४	१६:३२	१८:३६	२०:१९	२१:४६	२३:११
२७	००:४६	०२:४२	०४:५६	०७:१७	०९:३४	११:५०	१४:१०	१६:२९	१८:३२	२०:१५	२१:४२	२३:०७
२८	००:४२	०२:३८	०४:५३	०७:१३	०९:३०	११:४७	१४:०६	१६:२५	१८:२९	२०:११	२१:३८	२३:०३
२९	००:३८	०२:३४	०४:४९	०७:०९	०९:२६	११:४३	१४:०२	१६:२१	१८:२४	२०:०७	२१:३४	२२:५९
३०	००:३४	०२:३०	०४:४५	०७:०५	०९:२२	११:३९	१३:५८	१६:१७	१८:२१	२०:०३	२१:३०	२२:५५
३१	००:३१	०२:२६	०४:४१	०७:०१	०९:१८	११:३५	१३:५४	१६:१३	१८:१७	१९:५९	२१:२६	२२:५१

अगस्त, २०२५, अयनांश : २४:०९:१६

तिथि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
०१	००:२६	०२:२२	०४:३७	०६:५७	०९:१४	११:३१	१३:५०	१६:०९	१८:१३	१९:५५	२१:२३	२२:४७
०२	००:२३	०२:१८	०४:३३	०६:५३	०९:११	११:२७	१३:४६	१६:०५	१८:०९	१९:५१	२१:१९	२२:४४
०३	००:१५	०२:१४	०४:२९	०६:४९	०९:०७	११:२३	१३:४२	१६:०१	१८:०५	१९:४७	२१:१५	२२:४०
०४	००:११	०२:१०	०४:२५	०६:४५	०९:०३	११:१९	१३:३८	१५:५७	१८:०१	१९:४३	२१:११	२२:३६
०५	००:०७	०२:०६	०४:२१	०६:४१	०८:५९	११:१५	१३:३५	१५:५३	१७:५७	१९:३९	२१:०७	२२:३२
०६	००:०३	०२:०३	०४:१७	०६:३८	०८:५५	११:११	१३:३१	१५:४९	१७:५३	१९:३५	२१:०३	२२:२८
०७	२३:५९	०१:५९	०४:१३	०६:३४	०८:५१	११:०७	१३:२७	१५:४५	१७:४९	१९:३२	२०:५९	२२:२४
०८	२३:५५	०१:५५	०४:०९	०६:३०	०८:४७	११:०३	१३:२३	१५:४१	१७:४५	१९:२८	२०:५५	२२:२०
०९	२३:५१	०१:५१	०४:०५	०६:२६	०८:४३	१०:५९	१३:१९	१५:३७	१७:४१	१९:२४	२०:५१	२२:१६
१०	२३:४७	०१:४७	०४:०१	०६:२२	०८:३९	१०:५५	१३:१५	१५:३३	१७:३७	१९:२०	२०:४७	२२:१२
११	२३:४३	०१:४३	०३:५८	०६:१८	०८:३५	१०:५१	१३:११	१५:३०	१७:३४	१९:१६	२०:४३	२२:०८
१२	२३:३९	०१:३९	०३:५४	०६:१४	०८:३१	१०:४८	१३:०७	१५:२६	१७:३०	१९:१२	२०:३९	२२:०४
१३	२३:३६	०१:३५	०३:५०	०६:१०	०८:२७	१०:४४	१३:०३	१५:२२	१७:२६	१९:०८	२०:३५	२२:००
१४	२३:३२	०१:३१	०३:४६	०६:०६	०८:२३	१०:४०	१२:५९	१५:१८	१७:२२	१९:०४	२०:३१	२१:५६
१५	२३:२८	०१:२७	०३:४२	०६:०२	०८:१९	१०:३६	१२:५५	१५:१४	१७:१८	१९:००	२०:२७	२१:५२
१६	२३:२४	०१:२३	०३:३८	०५:५८	०८:१५	१०:३२	१२:५१	१५:१०	१७:१४	१८:५६	२०:२४	२१:४८
१७	२३:२०	०१:१९	०३:३४	०५:५४	०८:११	१०:२८	१२:४७	१५:०६	१७:१०	१८:५२	२०:२०	२१:४५
१८	२३:१६	०१:१५	०३:३०	०५:५०	०८:०७	१०:२४	१२:४३	१५:०२	१७:०६	१८:४८	२०:१६	२१:४१
१९	२३:१२	०१:११	०३:२६	०५:४६	०८:०४	१०:२०	१२:४०	१४:५८	१७:०२	१८:४४	२०:१२	२१:३७
२०	२३:०८	०१:०७	०३:२२	०५:४२	०८:००	१०:१६	१२:३६	१४:५४	१६:५८	१८:४०	२०:०८	२१:३३
२१	२३:०४	०१:०४	०३:१८	०५:३९	०७:५६	१०:१२	१२:३१	१४:५०	१६:५४	१८:३६	२०:०४	२१:२९
२२	२३:००	०१:००	०३:१४	०५:३५	०७:५२	१०:०८	१२:२८	१४:४६	१६:५०	१८:३३	२०:००	२१:२५
२३	२२:५६	००:५६	०३:१०	०५:३१	०७:४८	१०:०४	१२:२४	१४:४२	१६:४६	१८:२९	१९:५६	२१:२१
२४	२२:५२	००:५२	०३:०६	०५:२७	०७:४४	१०:००	१२:२०	१४:३८	१६:४२	१८:२५	१९:५२	२१:१७
२५	२२:४८	००:४८	०३:०२	०५:२३	०७:४०	०९:५६	१२:१६	१४:३४	१६:३८	१८:२१	१९:४८	२१:१३
२६	२२:४४	००:४४	०२:५९	०५:१९	०७:३६	०९:५२	१२:१२	१४:३१	१६:३५	१८:१७	१९:४४	२१:०९
२७	२२:४०	००:४०	०२:५५	०५:१५	०७:३२	०९:४९	१२:०८	१४:२७	१६:३१	१८:१३	१९:४०	२१:०५
२८	२२:३७	००:३६	०२:५१	०५:११	०७:२८	०९:४५	१२:०४	१४:२३	१६:२७	१८:०९	१९:३६	२१:०१
२९	२२:३३	००:३२	०२:४७	०५:०७	०७:२४	०९:४१	१२:००	१४:१९	१६:२३	१८:०५	१९:३२	२०:५७
३०	२२:२९	००:२८	०२:४३	०५:०३	०७:२०	०९:३७	११:५६	१४:१५	१६:१९	१८:०१	१९:२९	२०:५३
३१	२२:२५	००:२४	०२:३९	०४:५९	०७:१७	०९:३३	११:५२	१४:११	१६:१५	१७:५७	१९:२५	२०:५०

विक्रम सम्वत् २०२५-२६ की दैनिक लग्नसारिणी, नई दिल्ली में लग्नों का समाप्तिकाल (भा.स्टैं.टा.)

सितम्बर, २०२५, अयनांश : २४:०९:२०

तिथि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
०१	२२:२१	००:१६	०२:३५	०४:५५	०७:१३	०९:२९	११:४८	१४:०७	१६:११	१७:५३	१९:२१	२०:४६
०२	२२:१७	००:१२	०२:३१	०४:५१	०७:०९	०९:२५	११:४४	१४:०३	१६:०७	१७:४९	१९:१७	२०:४२
०३	२२:१३	००:०९	०२:२७	०४:४७	०७:०५	०९:२१	११:४१	१३:५९	१६:०३	१७:४५	१९:१३	२०:३८
०४	२२:०९	००:०५	०२:२३	०४:४३	०७:०१	०९:१७	११:३६	१३:५५	१५:५९	१७:४१	१९:०९	२०:३४
०५	२२:०५	००:०१	०२:१९	०४:४०	०६:५७	०९:१३	११:३३	१३:५१	१५:५५	१७:३७	१९:०५	२०:३०
०६	२२:०१	२३:५७	०२:१५	०४:३६	०६:५३	०९:०९	११:२९	१३:४७	१५:५१	१७:३४	१९:०१	२०:२६
०७	२१:५७	२३:५३	०२:११	०४:३२	०६:४९	०९:०५	११:२५	१३:४३	१५:४७	१७:३०	१८:५७	२०:२२
०८	२१:५३	२३:४९	०२:०७	०४:२८	०६:४५	०९:०१	११:२१	१३:३९	१५:४३	१७:२६	१८:५३	२०:१८
०९	२१:४९	२३:४५	०२:०३	०४:२४	०६:४१	०८:५७	११:१७	१३:३५	१५:३९	१७:२२	१८:४९	२०:१४
१०	२१:४५	२३:४१	०२:००	०४:२०	०६:३७	०८:५४	११:१३	१३:३२	१५:३६	१७:१८	१८:४५	२०:१०
११	२१:४१	२३:३७	०१:५५	०४:१६	०६:३३	०८:५०	११:०९	१३:२८	१५:३२	१७:१४	१८:४१	२०:०६
१२	२१:३८	२३:३३	०१:५२	०४:१२	०६:२९	०८:४६	११:०५	१३:२४	१५:२८	१७:१०	१८:३७	२०:०२
१३	२१:३४	२३:२९	०१:४८	०४:०८	०६:२५	०८:४२	११:०१	१३:२०	१५:२४	१७:०६	१८:३३	१९:५८
१४	२१:३०	२३:२५	०१:४४	०४:०४	०६:२१	०८:३८	१०:५७	१३:१६	१५:२०	१७:०२	१८:३०	१९:५४
१५	२१:२६	२३:२१	०१:४०	०४:००	०६:१८	०८:३४	१०:५३	१३:१२	१५:१६	१६:५८	१८:२६	१९:५१
१६	२१:२२	२३:१७	०१:३६	०३:५६	०६:१४	०८:३०	१०:४९	१३:०८	१५:१२	१६:५४	१८:२२	१९:४७
१७	२१:१८	२३:१३	०१:३२	०३:५२	०६:१०	०८:२६	१०:४५	१३:०४	१५:०८	१६:५०	१८:१८	१९:४३
१८	२१:१४	२३:१०	०१:२८	०३:४८	०६:०६	०८:२२	१०:४२	१३:००	१५:०४	१६:४६	१८:१४	१९:३९
१९	२१:१०	२३:०६	०१:२४	०३:४५	०६:०२	०८:१८	१०:३८	१२:५६	१५:००	१६:४२	१८:१०	१९:३५
२०	२१:०६	२३:०२	०१:२०	०३:४१	०५:५८	०८:१४	१०:३४	१२:५२	१४:५६	१६:३९	१८:०६	१९:३१
२१	२१:०२	२२:५८	०१:१६	०३:३७	०५:५४	०८:१०	१०:३०	१२:४८	१४:५२	१६:३४	१८:०२	१९:२७
२२	२०:५८	२२:५४	०१:१२	०३:३३	०५:५०	०८:०६	१०:२६	१२:४४	१४:४८	१६:३०	१७:५८	१९:२३
२३	२०:५४	२२:५०	०१:०८	०३:२९	०५:४६	०८:०२	१०:२२	१२:४०	१४:४४	१६:२७	१७:५४	१९:१९
२४	२०:५०	२२:४६	०१:०५	०३:२५	०५:४२	०७:५८	१०:१८	१२:३७	१४:४१	१६:२३	१७:५०	१९:१५
२५	२०:४६	२२:४२	०१:०१	०३:२१	०५:३८	०७:५५	१०:१४	१२:३३	१४:३७	१६:१९	१७:४६	१९:११
२६	२०:४३	२२:३८	००:५६	०३:१७	०५:३४	०७:५१	१०:१०	१२:२९	१४:३३	१६:१५	१७:४२	१९:०७
२७	२०:३९	२२:३४	००:५३	०३:१३	०५:३०	०७:४६	१०:०६	१२:२५	१४:२९	१६:११	१७:३८	१९:०३
२८	२०:३५	२२:३०	००:४९	०३:०९	०५:२६	०७:४३	१०:०२	१२:२१	१४:२५	१६:०७	१७:३४	१८:५९
२९	२०:३१	२२:२६	००:४५	०३:०५	०५:२२	०७:३९	०९:५८	१२:१७	१४:२१	१६:०३	१७:३१	१८:५५
३०	२०:२७	२२:२२	००:४१	०३:०१	०५:१९	०७:३५	०९:५४	१२:१३	१४:१७	१५:५९	१७:२७	१८:५२

अक्तूबर, २०२५, अयनांश : २४:०९:२३

तिथि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
०१	२०:२३	२२:१८	००:३७	०२:५७	०५:१५	०७:३१	०९:५०	१२:०९	१४:१३	१५:५५	१७:२३	१८:४८
०२	२०:१९	२२:१४	००:३३	०२:५३	०५:११	०७:२७	०९:४७	१२:०५	१४:०९	१५:५१	१७:१९	१८:४४
०३	२०:१५	२२:११	००:२९	०२:४९	०५:०७	०७:२३	०९:४३	१२:०१	१४:०५	१५:४७	१७:१५	१८:४०
०४	२०:११	२२:०७	००:२५	०२:४६	०५:०३	०७:१९	०९:३९	११:५७	१४:०१	१५:४३	१७:११	१८:३६
०५	२०:०७	२२:०३	००:२१	०२:४२	०४:५९	०७:१५	०९:३५	११:५३	१३:५७	१५:४०	१७:०७	१८:३२
०६	२०:०३	२१:५९	००:१३	०२:३८	०४:५५	०७:११	०९:३१	११:४९	१३:५३	१५:३६	१७:०३	१८:२८
०७	१९:५९	२१:५५	००:०९	०२:३४	०४:५१	०७:०७	०९:२७	११:४५	१३:४९	१५:३२	१६:५९	१८:२४
०८	१९:५५	२१:५१	००:०६	०२:३०	०४:४७	०७:०३	०९:२३	११:४१	१३:४५	१५:२८	१६:५५	१८:२०
०९	१९:५१	२१:४७	००:०२	०२:२६	०४:४३	०६:५९	०९:१९	११:३८	१३:४२	१५:२४	१६:५१	१८:१६
१०	१९:४७	२१:४३	२३:५८	०२:२२	०४:३९	०६:५६	०९:१५	११:३४	१३:३८	१५:२०	१६:४७	१८:१२
११	१९:४४	२१:३९	२३:५४	०२:१८	०४:३५	०६:५२	०९:११	११:३०	१३:३४	१५:१६	१६:४३	१८:०८
१२	१९:४०	२१:३५	२३:५०	०२:१४	०४:३१	०६:४८	०९:०७	११:२६	१३:३०	१५:१२	१६:३९	१८:०४
१३	१९:३६	२१:३१	२३:४६	०२:१०	०४:२७	०६:४४	०९:०३	११:२२	१३:२६	१५:०८	१६:३६	१८:००
१४	१९:३२	२१:२७	२३:४२	०२:०६	०४:२४	०६:४०	०८:५९	११:१८	१३:२२	१५:०४	१६:३२	१७:५७
१५	१९:२८	२१:२३	२३:३८	०२:०२	०४:२०	०६:३६	०८:५५	११:१४	१३:१८	१५:००	१६:२८	१७:५३
१६	१९:२४	२१:१९	२३:३४	०१:५८	०४:१६	०६:३२	०८:५१	११:१०	१३:१४	१४:५६	१६:२४	१७:४९
१७	१९:२०	२१:१६	२३:३०	०१:५४	०४:१२	०६:२८	०८:४८	११:०६	१३:१०	१४:५२	१६:२०	१७:४५
१८	१९:१६	२१:१२	२३:२६	०१:५०	०४:०८	०६:२४	०८:४४	११:०२	१३:०६	१४:४८	१६:१६	१७:४१
१९	१९:१२	२१:०८:	२३:२२	०१:४७	०४:०४	०६:२०	०८:४०	१०:५८	१३:०२	१४:४४	१६:१२	१७:३७
२०	१९:०८	२१:०४	२३:१८	०१:४३	०४:००	०६:१६	०८:३६	१०:५४	१२:५८	१४:४१	१६:०८	१७:३३
२१	१९:०४	२१:००	२३:१४	०१:३९	०३:५६	०६:१२	०८:३२	१०:५०	१२:५४	१४:३७	१६:०४	१७:२९
२२	१९:००	२०:५६	२३:१०	०१:३५	०३:५२	०६:०८	०८:२८	१०:४६	१२:५०	१४:३३	१६:००	१७:२५
२३	१८:५६	२०:५२	२३:०७	०१:३१	०३:४८	०६:०४	०८:२४	१०:४३	१२:४६	१४:२९	१५:५६	१७:२१
२४	१८:५२	२०:४८	२३:०३	०१:२७	०३:४४	०६:०१	०८:२०	१०:३९	१२:४३	१४:२५	१५:५२	१७:१७
२५	१८:४८	२०:४४	२२:५९	०१:२३	०३:४०	०५:५७	०८:१६	१०:३५	१२:३९	१४:२१	१५:४८	१७:१३
२६	१८:४५	२०:४०	२२:५५	०१:१९	०३:३६	०५:५३	०८:१२	१०:३१	१२:३५	१४:१७	१५:४४	१७:०९
२७	१८:४१	२०:३६	२२:५१	०१:१५	०३:३२	०५:४९	०८:०८	१०:२७	१२:३१	१४:१३	१५:४०	१७:०५
२८	१८:३७	२०:३२	२२:४७	०१:११	०३:२८	०५:४५	०८:०४	१०:२३	१२:२७	१४:०९	१५:३७	१७:०१
२९	१८:३३	२०:२८	२२:४३	०१:०७	०३:२५	०५:४१	०८:००	१०:१९	१२:२३	१४:०५	१५:३३	१६:५८
३०	१८:२९	२०:२४	२२:३९	०१:०३	०३:२१	०५:३७	०७:५६	१०:१५	१२:१९	१४:०१	१५:२९	१६:५४
३१	१८:२५	२०:२०	२२:३५	००:५९	०३:१७	०५:३३	०७:५२	१०:११	१२:१५	१३:५७	१५:२५	१६:५०

विक्रम सम्वत् २०२४-२५ की दैनिक लग्नसारिणी, नई दिल्ली में लग्नों का समाप्तिकाल (भा.स्टैं.टा.)

नवम्बर, २०२५, अयनांश : २४:०९:२७

तिथि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
०१	१८:२१	२०:१७	२२:३१	००:५५	०३:१३	०५:२९	०७:४९	१०:०७	१२:११	१३:५३	१५:२१	१६:४६
०२	१८:१७	२०:१३	२२:२७	००:५२	०३:०९	०५:२५	०७:४५	१०:०३	१२:०७	१३:४९	१५:१७	१६:४२
०३	१८:१३	२०:०९	२२:२३	००:४८	०३:०५	०५:२१	०७:४१	०९:५९	१२:०३	१३:४६	१५:१३	१६:३८
०४	१८:०९	२०:०५	२२:१९	००:४४	०३:०१	०५:१७	०७:३७	०९:५५	११:५९	१३:४२	१५:०९	१६:३४
०५	१८:०५	२०:०१	२२:१५	००:४०	०२:५७	०५:१३	०७:३३	०९:५१	११:५५	१३:३७	१५:०५	१६:३०
०६	१८:०१	१९:५७	२२:१२	००:३६	०२:५३	०५:०९	०७:२९	०९:४७	११:५१	१३:३४	१५:०१	१६:२६
०७	१७:५७	१९:५३	२२:०८	००:३२	०२:४९	०५:०५	०७:२५	०९:४४	११:४८	१३:३०	१४:५७	१६:२२
०८	१७:५३	१९:४९	२२:०४	००:२८	०२:४५	०५:०२	०७:२१	०९:४०	११:४४	१३:२६	१४:५३	१६:१८
०९	१७:५०	१९:४५	२२:००	००:२४	०२:४१	०४:५८	०७:१७	०९:३६	११:४०	१३:२२	१४:४९	१६:१४
१०	१७:४६	१९:४१	२१:५६	००:१६	०२:३७	०४:५४	०७:१३	०९:३२	११:३६	१३:१८	१४:४५	१६:१०
११	१७:४२	१९:३७	२१:५२	००:१२	०२:३३	०४:५०	०७:०९	०९:२८	११:३२	१३:१४	१४:४१	१६:०६
१२	१७:३८	१९:३३	२१:४८	००:०८	०२:२९	०४:४६	०७:०५	०९:२४	११:२८	१३:१०	१४:३८	१६:०२
१३	१७:३४	१९:२९	२१:४४	००:०४	०२:२६	०४:४२	०७:०१	०९:२०	११:२४	१३:०६	१४:३४	१५:५९
१४	१७:३०	१९:२५	२१:४०	००:००	०२:२२	०४:३८	०६:५७	०९:१६	११:२०	१३:०२	१४:३०	१५:५५
१५	१७:२६	१९:२१	२१:३६	२३:५६	०२:१८	०४:३४	०६:५४	०९:१२	११:१६	१२:५८	१४:२६	१५:५१
१६	१७:२२	१९:१८	२१:३२	२३:५२	०२:१४	०४:३०	०६:५०	०९:०८	११:१२	१२:५४	१४:२२	१५:४७
१७	१७:१८	१९:१४	२१:२८	२३:४८	०२:१०	०४:२६	०६:४६	०९:०४	११:०८	१२:५०	१४:१८	१५:४३
१८	१७:१४	१९:१०	२१:२४	२३:४४	०२:०६	०४:२२	०६:४२	०९:००	११:०४	१२:४७	१४:१४	१५:३९
१९	१७:१०	१९:०६	२१:२०	२३:४१	०२:०२	०४:१८	०६:३८	०८:५६	११:००	१२:४३	१४:१०	१५:३५
२०	१७:०६	१९:०२	२१:१६	२३:३७	०१:५८	०४:१४	०६:३४	०८:५२	१०:५६	१२:३९	१४:०६	१५:३१
२१	१७:०२	१८:५८	२१:१३	२३:३३	०१:५४	०४:१०	०६:३०	०८:४८	१०:५२	१२:३५	१४:०२	१५:२७
२२	१६:५८	१८:५४	२१:०९	२३:२९	०१:५०	०४:०६	०६:२६	०८:४५	१०:४९	१२:३१	१३:५८	१५:२३
२३	१६:५४	१८:५०	२१:०५	२३:२५	०१:४६	०४:०३	०६:२२	०८:४१	१०:४५	१२:२७	१३:५४	१५:१९
२४	१६:५१	१८:४६	२१:०१	२३:२१	०१:४२	०३:५९	०६:१८	०८:३७	१०:४१	१२:२३	१३:५०	१५:१५
२५	१६:४७	१८:४२	२०:५७	२३:१७	०१:३८	०३:५५	०६:१४	०८:३३	१०:३७	१२:१९	१३:४६	१५:११
२६	१६:४३	१८:३८	२०:५३	२३:१३	०१:३४	०३:५१	०६:१०	०८:२९	१०:३३	१२:१५	१३:४३	१५:०७
२७	१६:३९	१८:३४	२०:४९	२३:०९	०१:३१	०३:४७	०६:०६	०८:२५	१०:२९	१२:११	१३:३९	१५:०४
२८	१६:३५	१८:३०	२०:४५	२३:०५	०१:२७	०३:४३	०६:०२	०८:२१	१०:२५	१२:०७	१३:३५	१५:००
२९	१६:३१	१८:२६	२०:४१	२३:०१	०१:२३	०३:३९	०५:५८	०८:१७	१०:२१	१२:०३	१३:३१	१४:५६
३०/	१६:२७	१८:२३	२०:३७	२२:५७	०१:१९	०३:३५	०५:५५	०८:१३	१०:१७	११:५९	१३:२७	१४:५२

दिसम्बर, २०२५, अयनांश : २४:०९:३१

तिथि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
०१	१६:२३	१८:१९	२०:३३	२२:५४	०१:१५	०३:३१	०५:५१	०८:०९	१०:१३	११:५५	१३:२३	१४:४८
०२	१६:१९	१८:१५	२०:२९	२२:५०	०१:११	०३:२७	०५:४७	०८:०५	१०:०९	११:५१	१३:१९	१४:४४
०३	१६:१५	१८:११	२०:२५	२२:४६	०१:०७	०३:२३	०५:४३	०८:०१	१०:०५	११:४८	१३:१५	१४:४०
०४	१६:११	१८:०७	२०:२१	२२:४२	०१:०३	०३:१९	०५:३९	०७:५७	१०:०१	११:४४	१३:११	१४:३६
०५	१६:०७	१८:०३	२०:१७	२२:३८	००:५९	०३:१५	०५:३५	०७:५३	०९:५७	११:४०	१३:०७	१४:३२
०६	१६:०३	१७:५९	२०:१४	२२:३४	००:५५	०३:११	०५:३१	०७:५०	०९:५३	११:३६	१३:०३	१४:२८
०७	१५:५९	१७:५५	२०:१०	२२:३०	००:५१	०३:०८	०५:२७	०७:४६	०९:५०	११:३२	१२:५९	१४:२४
०८	१५:५५	१७:५१	२०:०६	२२:२६	००:४७	०३:०४	०५:२३	०७:४२	०९:४६	११:२८	१२:५५	१४:२०
०९	१५:५१	१७:४७	२०:०२	२२:२२	००:४३	०३:००	०५:१९	०७:३८	०९:४२	११:२४	१२:५१	१४:१६
१०	१५:४८	१७:४३	१९:५८	२२:१८	००:३९	०२:५६	०५:१५	०७:३४	०९:३८	११:२०	१२:४७	१४:१२
११	१५:४४	१७:३९	१९:५४	२२:१४	००:३५	०२:५२	०५:११	०७:३०	०९:३४	११:१६	१२:४४	१४:०८
१२	१५:४०	१७:३५	१९:५०	२२:१०	००:३२	०२:४८	०५:०७	०७:२६	०९:३०	११:१२	१२:४०	१४:०५
१३	१५:३६	१७:३१	१९:४६	२२:०६	००:२८	०२:४४	०५:०३	०७:२२	०९:२६	११:०८	१२:३६	१४:०१
१४	१५:३२	१७:२७	१९:४२	२२:०२	००:२४	०२:४०	०४:५९	०७:१८	०९:२२	११:०४	१२:३२	१३:५७
१५	१५:२८	१७:२४	१९:३८	२१:५९	००:१६	०२:३६	०४:५६	०७:१४	०९:१८	११:००	१२:२८	१३:५३
१६	१५:२४	१७:२०	१९:३४	२१:५५	००:१२	०२:३२	०४:५२	०७:१०	०९:१४	१०:५६	१२:२४	१३:४९
१७	१५:२०	१७:१६	१९:३०	२१:५०	००:०८	०२:२८	०४:४८	०७:०६	०९:१०	१०:५३	१२:२०	१३:४५
१८	१५:१६	१७:१२	१९:२६	२१:४७	००:०४	०२:२४	०४:४४	०७:०२	०९:०६	१०:४९	१२:१६	१३:४१
१९	१५:१२	१७:०८	१९:२२	२१:४३	००:००	०२:२०	०४:४०	०६:५८	०९:०२	१०:४५	१२:१२	१३:३७
२०	१५:०८	१७:०४	१९:१९	२१:३९	२३:५६	०२:१६	०४:३६	०६:५४	०८:५८	१०:४१	१२:०८	१३:३३
२१	१५:०४	१७:००	१९:१५	२१:३५	२३:५२	०२:१२	०४:३२	०६:५१	०८:५५	१०:३७	१२:०४	१३:२९
२२	१५:००	१६:५६	१९:११	२१:३१	२३:४८	०२:०९	०४:२८	०६:४७	०८:५१	१०:३३	१२:००	१३:२५
२३	१४:५७	१६:५२	१९:०७	२१:२७	२३:४४	०२:०५	०४:२४	०६:४३	०८:४७	१०:२९	११:५६	१३:२१
२४	१४:५३	१६:४८	१९:०३	२१:२३	२३:४०	०२:०१	०४:२०	०६:३९	०८:४३	१०:२५	११:५२	१३:१७
२५	१४:४९	१६:४४	१८:५९	२१:१९	२३:३६	०१:५७	०४:१६	०६:३५	०८:३९	१०:२१	११:४८	१३:१३
२६	१४:४५	१६:४०	१८:५५	२१:१५	२३:३३	०१:५३	०४:१२	०६:३१	०८:३५	१०:१७	११:४५	१३:०९
२७	१४:४१	१६:३६	१८:५१	२१:११	२३:२९	०१:४९	०४:०८	०६:२७	०८:३१	१०:१३	११:४१	१३:०६
२८	१४:३७	१६:३२	१८:४७	२१:०७	२३:२५	०१:४५	०४:०४	०६:२३	०८:२७	१०:०९	११:३७	१३:०२
२९	१४:३३	१६:२८	१८:४३	२१:०३	२३:२१	०१:४१	०४:०१	०६:१९	०८:२३	१०:०५	११:३३	१२:५८
३०	१४:२९	१६:२५	१८:३९	२१:००	२३:१७	०१:३७	०३:५७	०६:१५	०८:१९	१०:०१	११:२९	१२:५४
३१	१४:२५	१६:२१	१८:३५	२०:५६	२३:१३	०१:३३	०३:५३	०६:११	०८:१५	०९:५७	११:२५	१२:५०

विक्रम सम्वत् २०२५-२६ की दैनिक लग्नसारिणी, नई दिल्ली में लग्नों का समाप्तिकाल (भा.स्टैं.टा.)

जनवरी, २०२६, अयनांश : २४:०९:३७

तिथि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
०१	१४:२१	१६:१७	१८:३१	२०:५२	२३:०९	०१:२९	०३:४९	०६:०७	०८:११	०९:५४	११:२१	१२:४६
०२	१४:१७	१६:१३	१८:२७	२०:४८	२३:०५	०१:२५	०३:४५	०६:०३	०८:०७	०९:५०	११:१७	१२:४२
०३	१४:१३	१६:०९	१८:२३	२०:४४	२३:०१	०१:२१	०३:४१	०५:५९	०८:०३	०९:४६	११:१३	१२:३८
०४	१४:०९	१६:०५	१८:२०	२०:४०	२२:५७	०१:१७	०३:३७	०५:५६	०८:००	०९:४२	११:०९	१२:३४
०५	१४:०५	१६:०१	१८:१६	२०:३६	२२:५३	०१:१४	०३:३३	०५:५२	०७:५६	०९:३८	११:०५	१२:३०
०६	१४:०२	१५:५७	१८:१२	२०:३२	२२:४९	०१:१०	०३:२९	०५:४८	०७:५२	०९:३४	११:०१	१२:२६
०७	१३:५८	१५:५३	१८:०८	२०:२८	२२:४५	०१:०६	०३:२५	०५:४४	०७:४८	०९:३०	१०:५७	१२:२२
०८	१३:५४	१५:४९	१८:०४	२०:२४	२२:४२	०१:०२	०३:२१	०५:४०	०७:४४	०९:२६	१०:५३	१२:१८
०९	१३:५०	१५:४५	१८:००	२०:२०	२२:३८	००:५८	०३:१७	०५:३६	०७:४०	०९:२२	१०:५०	१२:१४
१०	१३:४६	१५:४१	१७:५६	२०:१६	२२:३४	००:५४	०३:१३	०५:३२	०७:३६	०९:१८	१०:४६	१२:११
११	१३:४२	१५:३७	१७:५२	२०:१२	२२:३०	००:५०	०३:०९	०५:२८	०७:३२	०९:१४	१०:४२	१२:०७
१२	१३:३८	१५:३४	१७:४८	२०:०८	२२:२६	००:४६	०३:०६	०५:२४	०७:२८	०९:१०	१०:३८	१२:०३
१३	१३:३४	१५:३०	१७:४४	२०:०५	२२:२२	००:४२	०३:०२	०५:२०	०७:२४	०९:०६	१०:३४	११:५९
१४	१३:३०	१५:२६	१७:४०	२०:०१	२२:१८	००:३८	०२:५८	०५:१६	०७:२०	०९:०२	१०:३०	११:५५
१५	१३:२६	१५:२२	१७:३६	१९:५७	२२:१४	००:३४	०२:५४	०५:१२	०७:१६	०८:५९	१०:२६	११:५१
१६	१३:२२	१५:१८	१७:३२	१९:५३	२२:१०	००:३०	०२:५०	०५:०८	०७:१२	०८:५५	१०:२२	११:४७
१७	१३:१८	१५:१४	१७:२८	१९:४९	२२:०६	००:२६	०२:४६	०५:०४	०७:०८	०८:५१	१०:१८	११:४३
१८	१३:१४	१५:१०	१७:२५	१९:४५	२२:०२	००:१९	०२:४२	०५:०१	०७:०४	०८:४७	१०:१४	११:३९
१९	१३:१०	१५:०६	१७:२१	१९:४१	२१:५८	००:१५	०२:३८	०४:५७	०७:०१	०८:४३	१०:१०	११:३५
२०	१३:०६	१५:०२	१७:१७	१९:३७	२१:५४	००:११	०२:३४	०४:५३	०६:५७	०८:३९	१०:०६	११:३१
२१	१३:०३	१४:५८	१७:१३	१९:३३	२१:५०	००:०७	०२:३०	०४:४९	०६:५३	०८:३५	१०:०२	११:२७
२२	१२:५९	१४:५४	१७:०९	१९:२९	२१:४६	००:०३	०२:२६	०४:४५	०६:४९	०८:३१	०९:५८	११:२३
२३	१२:५५	१४:५०	१७:०५	१९:२५	२१:४३	२३:५९	०२:२२	०४:४१	०६:४५	०८:२७	०९:५५	११:१९
२४	१२:५१	१४:४६	१७:०१	१९:२१	२१:३९	२३:५५	०२:१८	०४:३७	०६:४१	०८:२३	०९:५१	११:१६
२५	१२:४७	१४:४२	१६:५७	१९:१७	२१:३५	२३:५१	०२:१४	०४:३३	०६:३७	०८:१९	०९:४७	११:१२
२६	१२:४३	१४:३८	१६:५३	१९:१३	२१:३१	२३:४७	०२:१०	०४:२९	०६:३३	०८:१५	०९:४३	११:०८
२७	१२:३९	१४:३५	१६:४९	१९:१०	२१:२७	२३:४३	०२:०७	०४:२५	०६:२९	०८:११	०९:३९	११:०४
२८	१२:३५	१४:३१	१६:४५	१९:०६	२१:२३	२३:३९	०२:०३	०४:२१	०६:२५	०८:०७	०९:३५	११:००
२९/	१२:३१	१४:२७	१६:४१	१९:०२	२१:१९	२३:३५	०१:५९	०४:१७	०६:२१	०८:०३	०९:३१	१०:५६
३०/	१२:२७	१४:२३	१६:३७	१८:५८	२१:१५	२३:३१	०१:५५	०४:१३	०६:१७	०८:००	०९:२७	१०:५२
३१	१२:२३	१४:१९	१६:३३	१८:५४	२१:११	२३:२७	०१:५१	०४:०९	०६:१३	०७:५६	०९:२३	१०:४८

फरवरी, २०२६, अयनांश : २४:०९:४३

तिथि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
०१	१२:१९	१४:१५	१६:३०	१८:५०	२१:०७	२३:२३	०१:४७	०४:०५	०६:०९	०७:५२	०९:१९	१०:४४
०२	१२:१५	१४:११	१६:२६	१८:४६	२१:०३	२३:२०	०१:४३	०४:०२	०६:०५	०७:४८	०९:१५	१०:४०
०३	१२:११	१४:०७	१६:२२	१८:४२	२०:५९	२३:१६	०१:३९	०३:५८	०६:०२	०७:४४	०९:११	१०:३६
०४	१२:०८	१४:०३	१६:१८	१८:३८	२०:५५	२३:११	०१:३५	०३:५४	०५:५८	०७:४०	०९:०७	१०:३२
०५	१२:०४	१३:५९	१६:१४	१८:३४	२०:५१	२३:०८	०१:३१	०३:५०	०५:५४	०७:३६	०९:०३	१०:२८
०६	१२:००	१३:५५	१६:१०	१८:३०	२०:४७	२३:०४	०१:२७	०३:४६	०५:५०	०७:३२	०८:५९	१०:२४
०७	११:५६	१३:५१	१६:०६	१८:२६	२०:४४	२३:००	०१:२३	०३:४२	०५:४६	०७:२८	०८:५६	१०:२०
०८	११:५२	१३:४७	१६:०२	१८:२२	२०:४०	२२:५६	०१:१९	०३:३८	०५:४२	०७:२४	०८:५२	१०:१७
०९	११:४८	१३:४३	१५:५८	१८:१८	२०:३६	२२:५२	०१:१५	०३:३४	०५:३८	०७:२०	०८:४८	१०:१३
१०	११:४४	१३:३९	१५:५४	१८:१४	२०:३२	२२:४८	०१:१२	०३:३०	०५:३४	०७:१६	०८:४४	१०:०९
११	११:४०	१३:३६	१५:५०	१८:११	२०:२८	२२:४४	०१:०८	०३:२६	०५:३०	०७:१२	०८:४०	१०:०५
१२	११:३६	१३:३१	१५:४६	१८:०७	२०:२४	२२:४०	०१:०४	०३:२२	०५:२६	०७:०८	०८:३६	१०:०१
१३	११:३२	१३:२८	१५:४२	१८:०३	२०:२०	२२:३६	०१:००	०३:१८	०५:२२	०७:०५	०८:३२	०९:५७
१४	११:२८	१३:२४	१५:३८	१७:५९	२०:१६	२२:३२	००:५६	०३:१४	०५:१८	०७:०१	०८:२८	०९:५३
१५	११:२४	१३:२०	१५:३४	१७:५५	२०:१२	२२:२८	००:५२	०३:१०	०५:१४	०६:५७	०८:२४	०९:४९
१६	११:२०	१३:१६	१५:३१	१७:५१	२०:०८	२२:२४	००:४८	०३:०६	०५:१०	०६:५३	०८:२०	०९:४५
१७	११:१६	१३:१२	१५:२७	१७:४७	२०:०४	२२:२१	००:४४	०३:०३	०५:०७	०६:४९	०८:१६	०९:४१
१८	११:१२	१३:०८	१५:२३	१७:४३	२०:००	२२:१७	००:४०	०२:५९	०५:०३	०६:४५	०८:१२	०९:३७
१९	११:०९	१३:०४	१५:१९	१७:३९	१९:५६	२२:१३	००:३६	०२:५५	०४:५९	०६:४१	०८:०८	०९:३३
२०	११:०५	१३:००	१५:१५	१७:३५	१९:५२	२२:०९	००:३२	०२:५१	०४:५५	०६:३७	०८:०४	०९:२९
२१	११:००	१२:५६	१५:११	१७:३१	१९:४९	२२:०५	००:२८	०२:४७	०४:५१	०६:३३	०८:००	०९:२५
२२	१०:५७	१२:५२	१५:०७	१७:२७	१९:४५	२२:०१	००:२०	०२:४३	०४:४७	०६:२९	०७:५७	०९:२१
२३	१०:५३	१२:४८	१५:०३	१७:२३	१९:४१	२१:५७	००:१६	०२:३९	०४:४३	०६:२५	०७:५३	०९:१८
२४	१०:४९	१२:४४	१४:५९	१७:१९	१९:३७	२१:५३	००:१३	०२:३५	०४:३९	०६:२१	०७:४९	०९:१४
२५	१०:४५	१२:४१	१४:५५	१७:१५	१९:३३	२१:४९	००:०९	०२:३१	०४:३५	०६:१७	०७:४५	०९:१०
२६	१०:४१	१२:३७	१४:५१	१७:१२	१९:२९	२१:४५	००:०५	०२:२७	०४:३१	०६:१३	०७:४१	०९:०६
२७	१०:३७	१२:३३	१४:४७	१७:०८	१९:२५	२१:४१	००:०१	०२:२३	०४:२७	०६:०९	०७:३७	०९:०२
२८	१०:३३	१२:२९	१४:४३	१७:०४	१९:२१	२१:३७	२३:५७	०२:१९	०४:२३	०६:०६	०७:३३	०८:५८

विक्रम सम्वत् २०२५-२६ की दैनिक लग्नसारिणी, नई दिल्ली में लग्नों का समाप्तिकाल (भा.स्टैं.टा.)

मार्च, २०२६, अयनांश : २४:०९:४७

तिथि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
०१	१०:२९	१२:२५	१४:४९	१७:००	१९:१७	२१:४४	२४:५४	०२:१५	०४:१९	०६:०२	०७:२९	०८:५४
०२	१०:२५	१२:२१	१४:४५	१६:५६	१९:१४	२१:२९	२४:४९	०२:११	०४:१५	०५:५८	०७:२५	०८:५०
०४	१०:२१	१२:१७	१४:४२	१६:५२	१९:०९	२१:२६	२४:४५	०२:०८	०४:११	०५:५४	०७:२१	०८:४६
०४	१०:१७	१२:१४	१४:२८	१६:४८	१९:०५	२१:२२	२४:४१	०२:०४	०४:०८	०५:५०	०७:१७	०८:४२
०५	१०:१४	१२:०९	१४:२४	१६:४४	१९:०१	२१:१७	२४:४७	०२:००	०४:०४	०५:४६	०७:१४	०८:४८
०६	१०:१०	१२:०५	१४:२०	१६:४०	१८:५७	२१:१४	२४:४४	०१:५६	०४:००	०५:४२	०७:०९	०८:४४
०७	१०:०६	१२:०१	१४:१६	१६:४६	१८:५४	२१:१०	२४:२९	०१:५२	०४:५६	०५:४८	०७:०५	०८:४०
०८	१०:०२	११:५७	१४:१२	१६:४२	१८:५०	२१:०६	२४:२५	०१:४८	०४:५२	०५:४४	०७:०२	०८:२६
०९	०९:५८	११:५४	१४:०८	१६:२८	१८:४६	२१:०२	२४:२१	०१:४४	०४:४८	०५:४०	०६:५८	०८:२४
१०	०९:५४	११:४९	१४:०४	१६:२४	१८:४२	२०:५८	२४:१७	०१:४०	०४:४४	०५:२६	०६:५४	०८:१९
११	०९:५०	११:४५	१४:००	१६:२०	१८:४८	२०:५४	२४:१४	०१:४६	०४:४०	०५:२२	०६:५०	०८:१५
१२	०९:४६	११:४२	१४:५६	१६:१७	१८:४४	२०:५०	२४:१०	०१:४२	०४:४६	०५:१८	०६:४६	०८:११
१४	०९:४२	११:४८	१४:५२	१६:१४	१८:४०	२०:४६	२४:०६	०१:२८	०४:४२	०५:१४	०६:४२	०८:०७
१४	०९:४८	११:४४	१४:४८	१६:०९	१८:२६	२०:४२	२४:०२	०१:२४	०४:२८	०५:१०	०६:४८	०८:०४
१५	०९:४४	११:४०	१४:४४	१६:०५	१८:२२	२०:४८	२२:५८	०१:२०	०४:२४	०५:०७	०६:४४	०७:५९
१६	०९:४०	११:२६	१४:४०	१६:०१	१८:१८	२०:४४	२२:५४	०१:१६	०४:२०	०५:०४	०६:४०	०७:५५
१७	०९:२६	११:२२	१४:४७	१५:५७	१८:१४	२०:४०	२२:५०	०१:१२	०४:१६	०४:५९	०६:२६	०७:५१
१८	०९:२२	११:१८	१४:४२	१५:५४	१८:१०	२०:२७	२२:४६	०१:०९	०४:१२	०४:५५	०६:२२	०७:४७
१९	०९:१८	११:१४	१४:२९	१५:४९	१८:०६	२०:२४	२२:४२	०१:०५	०४:०८	०४:५१	०६:१८	०७:४४
२०	०९:१५	११:१०	१४:२५	१५:४५	१८:०२	२०:१९	२२:४८	०१:०१	०४:०५	०४:४७	०६:१४	०७:४९
२१	०९:११	११:०६	१४:२१	१५:४१	१७:५८	२०:१५	२२:४४	००:५७	०४:०१	०४:४४	०६:१०	०७:४५
२२	०९:०७	११:०२	१४:१७	१५:४७	१७:५४	२०:११	२२:४०	००:५४	०२:५७	०४:४९	०६:०६	०७:४१
२४	०९:०४	१०:५८	१४:१४	१५:४४	१७:५१	२०:०७	२२:२६	००:४९	०२:५४	०४:४५	०६:०४	०७:२७
२४	०८:५९	१०:५४	१४:०९	१५:२९	१७:४७	२०:०४	२२:२२	००:४५	०२:४९	०४:४१	०५:५९	०७:२४
२५	०८:५५	१०:५०	१४:०५	१५:२५	१७:४४	१९:५९	२२:१९	००:४१	०२:४५	०४:२७	०५:५५	०७:२०
२६	०८:५१	१०:४६	१४:०१	१५:२१	१७:४९	१९:५५	२२:१५	००:४७	०२:४१	०४:२४	०५:५१	०७:१६
२७	०८:४७	१०:४४	१२:५७	१५:१८	१७:४५	१९:५१	२२:११	००:४४	०२:४७	०४:१९	०५:४७	०७:१२
२८	०८:४४	१०:४९	१२:५४	१५:१४	१७:४१	१९:४७	२२:०७	००:२९	०२:४४	०४:१५	०५:४४	०७:०८
२९	०८:४९	१०:४५	१२:४९	१५:१०	१७:२७	१९:४४	२२:०४	००:२५	०२:२९	०४:१२	०५:४९	०७:०४
४०	०८:४५	१०:४१	१२:४५	१५:०६	१७:२४	१९:४९	२१:५९	००:१७	०२:२५	०४:०८	०५:४५	०७:००
४१	०८:४१	१०:२७	१२:४१	१५:०२	१७:१९	१९:४५	२१:५५	००:१४	०२:२१	०४:०४	०५:४१	०६:५६

अप्रैल, २०२६, अयनांश : २४:०९:५०

तिथि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
०१	०८:२७	१०:२३	१२:३८	१४:५८	१७:१५	१९:३१	२१:५१	००:१०	०२:१७	०४:००	०५:२७	०६:५२
०२	०८:२३	१०:१९	१२:३४	१४:५४	१७:११	१९:२८	२१:४७	००:०६	०२:१४	०३:५६	०५:२३	०६:४८
०३	०८:१९	१०:१५	१२:३०	१४:५०	१७:०७	१९:२४	२१:४३	००:०२	०२:१०	०३:५२	०५:१९	०६:४४
०४	०८:१६	१०:११	१२:२६	१४:४६	१७:०३	१९:२०	२१:३९	२३:५८	०२:०६	०३:४८	०५:१५	०६:४०
०५	०८:१२	१०:०७	१२:२२	१४:४२	१६:५९	१९:१६	२१:३५	२३:५४	०२:०२	०३:४४	०५:११	०६:३६
०६	०८:०८	१०:०३	१२:१८	१४:३८	१६:५६	१९:१२	२१:३१	२३:५०	०१:५८	०३:४०	०५:०७	०६:३२
०७	०८:०४	०९:५९	१२:१४	१४:३४	१६:५२	१९:०८	२१:२७	२३:४६	०१:५४	०३:३६	०५:०४	०६:२८
०८	०८:००	०९:५५	१२:१०	१४:३०	१६:४८	१९:०४	२१:२३	२३:४२	०१:५०	०३:३२	०५:००	०६:२५
०९	०७:५६	०९:५१	१२:०६	१४:२६	१६:४४	१९:००	२१:२०	२३:३८	०१:४६	०३:२८	०४:५६	०६:२१
१०	०७:५२	०९:४८	१२:०२	१४:२२	१६:४०	१८:५६	२१:१६	२३:३४	०१:४२	०३:२४	०४:५२	०६:१७
११	०७:४८	०९:४४	११:५८	१४:१९	१६:३६	१८:५२	२१:१२	२३:३०	०१:३८	०३:२०	०४:४८	०६:१३
१२	०७:४४	०९:४०	११:५४	१४:१५	१६:३२	१८:४८	२१:०८	२३:२६	०१:३४	०३:१६	०४:४४	०६:०९
१३	०७:४०	०९:३६	११:५०	१४:११	१६:२८	१८:४४	२१:०४	२३:२२	०१:३०	०३:१३	०४:४०	०६:०५
१४	०७:३६	०९:३२	११:४६	१४:०७	१६:२४	१८:४०	२१:००	२३:१८	०१:२६	०३:०९	०४:३६	०६:०१
१५	०७:३२	०९:२८	११:४२	१४:०३	१६:२०	१८:३६	२०:५६	२३:१५	०१:२२	०३:०५	०४:३२	०५:५७
१६	०७:२८	०९:२४	११:३९	१३:५९	१६:१६	१८:३३	२०:५२	२३:११	०१:१८	०३:०१	०४:२८	०५:५३
१७	०७:२४	०९:२०	११:३५	१३:५५	१६:१२	१८:२९	२०:४८	२३:०७	०१:१५	०२:५७	०४:२४	०५:४९
१८	०७:२०	०९:१६	११:३१	१३:५१	१६:०८	१८:२५	२०:४४	२३:०३	०१:११	०२:५३	०४:२०	०५:४५
१९	०७:१७	०९:१२	११:२७	१३:४७	१६:०४	१८:२१	२०:४०	२२:५९	०१:०७	०२:४९	०४:१६	०५:४१
२०	०७:१२	०९:०८	११:२३	१३:४३	१६:००	१८:१७	२०:३६	२२:५५	०१:०३	०२:४५	०४:१२	०५:३७
२१	०७:०९	०९:०४	११:१९	१३:३९	१५:५७	१८:१३	२०:३२	२२:५१	००:५९	०२:४१	०४:०९	०५:३३
२२	०७:०५	०९:००	११:१५	१३:३५	१५:५३	१८:०९	२०:२८	२२:४७	००:५५	०२:३७	०४:०५	०५:३०
२३	०७:०१	०८:५६	११:११	१३:३१	१५:४९	१८:०५	२०:२४	२२:४३	००:५१	०२:३३	०४:०१	०५:२६
२४	०६:५७	०८:५२	११:०७	१३:२७	१५:४५	१८:०१	२०:२१	२२:३९	००:४७	०२:२९	०३:५७	०५:२२
२५	०६:५३	०८:४९	११:०३	१३:२४	१५:४१	१७:५७	२०:१७	२२:३५	००:४३	०२:२५	०३:५३	०५:१८
२६	०६:४९	०८:४५	१०:५९	१३:२०	१५:३७	१७:५३	२०:१३	२२:३१	००:३९	०२:२१	०३:४९	०५:१४
२७	०६:४५	०८:४१	१०:५५	१३:१६	१५:३३	१७:४९	२०:०९	२२:२७	००:३५	०२:१७	०३:४५	०५:१०
२८	०६:४१	०८:३७	१०:५१	१३:१२	१५:२९	१७:४५	२०:०५	२२:२३	००:३१	०२:१४	०३:४१	०५:०६
२९	०६:३७	०८:३३	१०:४७	१३:०८	१५:२५	१७:४१	२०:०१	२२:१९	००:२७	०२:१०	०३:३७	०५:०२
३०	०६:३३	०८:२९	१०:४४	१३:०४	१५:२१	१७:३७	१९:५७	२२:१६	००:२३	०२:०६	०३:३३	०४:५८

ॐ षड्वर्ग-चक्र ॐ

अंश	२	३	४	५	६	७	८	१०	११	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२३	२३	२५	२५	२६	२७	३०
कला	३०	३०	१७	०	४०	३०	३४	०	०	३०	५१	२०	०	४०	८	३०	०	०	२५	३०	२०	०	४२	४०	३०	०
विफला	०	०	८	०	०	०	१७	०	०	०	२५	०	०	०	३४	०	०	०	४२	०	०	०	५१	०	०	०
मेष हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
द्रे.	१	१	१	१	१	१	१	१	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	९	९	९	९	९	९	९	९
स.	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७
न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
द्वा.	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११	१२
त्रिं.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
वृष हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
द्रे.	२	२	२	२	२	२	२	२	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
स.	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२
न.	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
द्वा.	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१
त्रिं.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
मि. हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
द्रे.	३	३	३	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	११	११	११	११	११	११	११	११
स.	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९
न.	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
द्वा.	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	१	२
त्रिं.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
क. हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
द्रे.	४	४	४	४	४	४	४	४	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२
स.	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४
न.	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
द्वा.	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	२	२	२	३
त्रिं.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
सिं. हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
द्रे.	५	५	५	५	५	५	५	५	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	१	१	१	१	१	१	१	१
स.	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११
न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
द्वा.	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१	१	२	२	३	३	३	४
त्रिं.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
कं. हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
द्रे.	६	६	६	६	६	६	६	६	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२	२	२	२	२
स.	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६
न.	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
द्वा.	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५
त्रिं.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८

ॐ षड्वर्ग-चक्र ॐ

अंश		२	३	४	५	६	७	८	१०	१२	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२३	२३	२५	२५	२६	२७	३०
कला		३०	३०	१७	०	४०	३०	३४	०	०	३०	५१	२०	०	४०	८	३०	०	०	२५	३०	२०	०	४२	४०	३०	०
विफला		०	०	८	०	०	०	१७	०	०	०	२५	०	०	०	३४	०	०	०	४२	०	०	०	५१	०	०	०
तुला	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	७	७	७	७	७	७	७	७	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	३	३	३	३	३	३	३	३	३
	स.	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१
	न.	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३	३
	द्वा.	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	५	६	६
	त्रिं.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७
वृ.	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	८	८	८	८	८	८	८	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	स.	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८
	न.	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२
	द्वा.	८	९	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७	७
	त्रिं.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८	८	८
धनु	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	९	९	९	९	९	९	९	९	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	स.	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३
	न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	९
	द्वा.	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८	८
	त्रिं.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७
मकर	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	६	६	६	६	६	६	६	६	६
	स.	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०
	न.	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६	६
	द्वा.	१०	११	११	११	१२	१२	१	१	२	२	३	३	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९	९
	त्रिं.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८	८	८
कुम्भ	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	११	११	११	११	११	११	११	११	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७	७	७	७
	स.	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५
	न.	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३	३
	द्वा.	११	१२	१२	१२	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०	१०	१०
	त्रिं.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७
मीन	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८
	स.	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२
	न.	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१२
	द्वा.	१२	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	११
	त्रिं.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८	८	८

विंशोत्तरीदशा-सारिणी

राशि	मे. सिं. ध.	वृ. कं. म.	मि. तु. कुं.	क. वृ. मी.	राशि	मे. सिं. ध.	वृ. कं. म.	मि. तु. कुं.	क. वृ. मी.	राशि	मे. सिं. ध.	वृ. कं. म.	मि. तु. कुं.	क. वृ. मी.
	भोग्यदशा	भोग्यदशा	भोग्यदशा	भोग्यदशा		भोग्यदशा	भोग्यदशा	भोग्यदशा	भोग्यदशा		भोग्यदशा	भोग्यदशा	भोग्यदशा	भोग्यदशा
स्प.चन्द्र	व. मा. दि.	व. मा. दि.	व. मा. दि.	व. मा. दि.	स्प.चन्द्र	व. मा. दि.	व. मा. दि.	व. मा. दि.	व. मा. दि.	स्प.चन्द्र	व. मा. दि.	व. मा. दि.	व. मा. दि.	व. मा. दि.
अं. क.	के.	सू.	भौ.	गु.	अं. क.	के.	चं	रा.	श.	अं. क.	शु.	चं.	गु.	बु.
० ००	७ ० ०	४ ६ ०	३ ६ ०	४ ० ०	१० २०	१ ६ २७	९ ९ ०	१३ ० १८	९ ० ९	२० २०	९ ६ ०	२ ३ ०	१५ ७ ६	१२ ३ २७
० २०	६ ९ २७	४ ४ ६	३ ३ २७	३ ७ ६	१० ४०	१ ४ २४	९ ६ ०	१२ ७ ६	८ ६ १८	२० ४०	९ ० ०	२ ० ०	१५ २ १२	११ १० २४
० ४०	६ ७ २४	४ २ १२	३ १ २४	३ २ १२	११ ००	१ २ २१	९ ३ ०	१२ १ २४	८ ० २७	२१ ००	८ ६ ०	१ ९ ०	१४ ९ १८	११ ५ २१
१ ००	६ ५ २१	४ ० १८	२ ११ २१	२ ९ १८	११ २०	१ ० १८	९ ० ०	११ ८ १२	७ ७ ६	२१ २०	८ ० ०	१ ६ ०	१४ ४ २४	११ ० १८
१ २०	६ ३ १८	३ १० २४	२ ९ १८	२ ४ २४	११ ४०	० १० १५	८ ९ ०	११ ३ ०	७ १ १५	२१ ४०	७ ६ ०	१ ३ ०	१४ ० ०	१० ७ १५
१ ४०	६ १ १५	३ ९ ०	२ ७ १५	२ ० ०	१२ ००	० ८ १२	८ ६ ०	१० ९ १८	६ ७ २४	२२ ००	७ ० ०	१ ० ०	१३ ७ ६	१० २ १२
२ ००	५ ११ १२	३ ७ ६	२ ५ १२	१ ७ ६	१२ २०	० ६ ९	८ ३ ०	१० ४ ६	६ २ ३	२२ २०	६ ६ ०	० ९ ०	१३ २ १२	९ ९ ९
२ २०	५ ९ ९	३ ५ १२	२ ३ ९	१ २ १२	१२ ४०	० ४ ६	८ ० ०	९ १० २४	५ ८ १२	२२ ४०	६ ० ०	० ६ ०	१२ ९ १८	९ ४ ६
२ ४०	५ ७ ६	३ ३ १८	२ १ ६	० ९ १८	१३ ००	० २ ३	७ ९ ०	९ ५ १२	५ २ २१	२३ ००	५ ६ ०	० ३ ०	१२ ४ २४	८ ११ ३
३ ००	५ ५ ३	३ १ २४	१ ११ ३	० ४ २४	१३ २०	शु. २० ० ०	७ ६ ०	९ ० ०	४ ९ ०	२३ २०	५ ० ०	भौ. ७ ० ०	१२ ० ०	८ ६ ०
३ २०	५ ३ ०	३ ० ०	१ ९ ०	श. १९ ० ०	१३ ४०	१९ ६ ०	७ ३ ०	८ ६ १८	४ ३ ९	२३ ४०	४ ६ ०	६ ९ २७	११ ७ ६	८ ० २७
३ ४०	५ ० २७	२ १० ६	१ ६ २७	१८ ६ ९	१४ ००	१९ ० ०	७ ० ०	८ १ ६	३ ९ १८	२४ ००	४ ० ०	६ ७ २४	११ २ १२	७ ७ २४
४ ००	४ १० २४	२ ८ १२	१ ४ २४	१८ ० १८	१४ २०	१८ ६ ०	६ ९ ०	७ ७ २४	३ ३ २७	२४ २०	३ ६ ०	६ ५ २१	१० ९ १८	७ २ २१
४ २०	४ ८ २१	२ ६ १८	१ २ २१	१७ ६ २७	१४ ४०	१८ ० ०	६ ६ ०	७ २ १२	२ १० ६	२४ ४०	३ ० ०	६ ३ १८	१० ४ २४	६ ९ १८
४ ४०	४ ६ १८	२ ४ २४	१ ० १८	१७ १ ६	१५ ००	१७ ६ ०	६ ३ ०	६ ९ ०	२ ४ १५	२५ ००	२ ६ ०	६ १ १५	१० ० ०	६ ४ १५
५ ००	४ ४ १५	२ ३ ०	० १० १५	१६ ७ १५	१५ २०	१७ ० ०	६ ० ०	६ ३ १८	१ १० २४	२५ २०	२ ० ०	५ ११ १२	९ ७ ६	५ ११ १२
५ २०	४ २ १२	२ १ ६	० ८ १२	१६ १ २४	१५ ४०	१६ ६ ०	५ ९ ०	५ १० ६	१ ५ ३	२५ ४०	१ ६ ०	५ ९ ९	९ २ १२	५ ६ ९
५ ४०	४ ० ९	१ ११ १२	० ६ ९	१५ ८ ३	१६ ००	१६ ० ०	५ ६ ०	५ ४ २४	० ११ १२	२६ ००	१ ० ०	५ ७ ६	८ ९ १८	५ १ ६
६ ००	३ १० ६	१ ९ १८	० ४ ६	१५ २ १२	१६ २०	१५ ६ ०	५ ३ ०	४ ११ १२	० ५ २१	२६ २०	० ६ ०	५ ५ ३	८ ४ २४	४ ८ ३
६ २०	३ ८ ३	१ ७ २४	० २ ३	१४ ८ २१	१६ ४०	१५ ० ०	५ ० ०	४ ६ ०	बु. १७ ० ०	२६ ४०	सू. ६ ० ०	५ ३ ०	८ ० ०	४ ३ ०
६ ४०	३ ६ ०	१ ६ ०	रा. १८ ० ०	१४ ३ ०	१७ ००	१४ ६ ०	४ ९ ०	४ ० १८	१६ ६ २७	२७ ००	५ १० ६	५ ० २७	७ ७ ६	३ ९ २७
७ ००	३ ३ २७	१ ४ ६	१७ ६ १८	१३ ९ ९	१७ २०	१४ ० ०	४ ६ ०	३ ७ ६	१६ १ २४	२७ २०	५ ८ १२	४ १० २४	७ २ १२	३ ४ २४
७ २०	३ १ २४	१ २ १२	१७ १ ६	१३ ३ ८	१७ ४०	१३ ६ ०	४ ३ ०	३ १ २४	१५ ८ २१	२७ ४०	५ ६ १८	४ ८ २१	६ ९ १८	२ ११ २१
७ ४०	२ ११ २१	१ ० १८	१६ ७ २४	१२ ९ २७	१८ ००	१३ ० ०	४ ० ०	२ ८ १२	१५ ३ १८	२८ ००	५ ४ २४	४ ६ १८	६ ४ २४	२ ६ १८
८ ००	२ ९ १८	० १० २४	१६ २ १२	१२ ४ ६	१८ २०	१२ ६ ०	३ ९ ०	२ ३ ०	१४ १० १५	२८ २०	५ ३ ०	४ ४ १५	६ ० ०	२ १ १५
८ २०	२ ७ १५	० ९ ०	१५ ९ ०	११ १० १५	१८ ४०	१२ ० ०	३ ६ ०	१ ९ १८	१४ ५ १२	२८ ४०	५ १ ६	४ २ १२	५ ७ ६	१ ८ १२
८ ४०	२ ५ १२	० ७ ६	१५ ३ १८	११ ४ २४	१९ ००	११ ६ ०	३ ३ ०	१ ४ ६	१३ ७ ६	२९ ००	४ ४ ११ १२	४ ० ९	५ २ १२	१ ३ ९
९ ००	२ ३ ९	० ५ १२	१४ ४ २४	१० ५ १२	१९ २०	११ ० ०	३ ० ०	१० २४	१३ २ ३	२९ २०	५ ९ १८	३ १० ३	४ ९ १८	० १० ६
९ २०	२ १ ६	० ३ १८	१४ ४ २४	१० ५ १२	१९ ४०	१० ६ ०	२ ९ ०	० ५ १२	१३ २ ३	२९ ४०	४ ७ २४	३ ८ ६	४ ४ २४	० ५ ३
९ ४०	१ ११ ३	० १ २४	१३ ११ १२	९ ११ २१	२० ००	१० ० ०	२ ६ ०	० ५ १२	गु. १६ ० ०	१२ ९ ०	३० ००	४ ६ ०	३ ६ ०	४ ० ०	० ० ०
१० ००	१ ९ ०	च. १० ० ०	१३ ६ ०	९ ६ ०										

विंशोत्तरीदशा-कलासारिणी

	केतु ७ वर्ष		शुक्र २० वर्ष		सूर्य ६ वर्ष		चन्द्र १० वर्ष		मंगल ७ वर्ष		राहु १८ वर्ष		गुरु १६ वर्ष		शनि १९ वर्ष		बुध १७ वर्ष		
क.	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	क.
१	०	३	०	९	०	३	०	५	०	३	०	८	०	७	०	९	०	८	१
२	०	६	०	१८	०	५	०	९	०	६	०	१६	०	१४	०	१७	०	१५	२
३	०	९	०	२७	०	८	०	१४	०	९	०	२४	०	२२	०	२६	०	२३	३
४	०	१३	१	६	०	११	०	१८	०	१३	१	२	०	२९	१	४	१	१	४
५	०	१६	१	१५	०	१४	०	२३	०	१६	१	११	१	६	१	१३	१	८	५
६	०	१९	१	२४	०	१६	०	२७	०	१९	१	१९	१	१३	१	२१	१	१६	६
७	०	२२	२	३	०	१९	१	२	०	२२	१	२७	१	२०	२	०	१	२४	७
८	०	२५	२	१२	०	२२	१	६	०	२५	२	५	१	२८	२	८	२	१	८
९	०	२८	२	२१	०	२४	१	११	०	२८	२	१३	२	५	२	१७	२	९	९
१०	१	१	३	०	०	२७	१	१५	१	१	२	२१	२	१२	२	२६	२	१७	१०
१५	१	१७	४	१५	१	११	२	८	१	१७	४	२	३	१८	४	८	३	२५	१५
२०	२	३	६	०	१	२४	३	०	२	३	५	१२	४	२४	५	२१	५	३	२०

दशासाधन-विधि

सर्वप्रथम स्पष्टचन्द्र बनाकर उसकी राशि के कोष्ठक में अंश एवं कलाओं के अनुसार विंशोत्तरी दशा का भोग्य निकालना चाहिए। यहाँ २०-२० कलाओं के अन्तर पर दशा भोग्यमान वर्ष, मास एवं दिन में दिया गया है, फिर २० कलाओं से जितनी कलायें अधिक या कम हों उनके अनुसार कला सारिणी से उस ग्रह के कोष्ठक से मासादि फल जानकर पूर्वानीत फल में घटाना या जोड़ना चाहिए। इस प्रकार स्पष्टचन्द्र के राशि अंश एवं कलाओं के आधार पर विंशोत्तरी दशा का भोग्यमान सुगमता से जाना जा सकता है।

विंशोत्तरीदशान्तर्दशा-चक्र

	सूर्य				चन्द्र				मंगल				राहु				गुरु				शनि				बुध				केतु				गुरु			
	कृ. उ.फा. उ.षा.				रोहि. ह. श्रवण				मृ. चि. ध.				आर्द्रा. स्वा. शत.				पुन. वि. पू. भा.				पुष्य. अनु. उ.भा.				आश्ले. ज्ये. रेवती				मघा. मू. अश्वि.				पू.फा. पू.षा. भ.			
	ग्रह	वर्ष	मास	दिन	ग्रह	वर्ष	मास	दिन	ग्रह	वर्ष	मास	दिन	ग्रह	वर्ष	मास	दिन	ग्रह	वर्ष	मास	दिन	ग्रह	वर्ष	मास	दिन	ग्रह	वर्ष	मास	दिन	ग्रह	वर्ष	मास	दिन	ग्रह	वर्ष	मास	दिन
अन्तर्दशामानानि	सू.	०	३	१८	चं.	०	१०	०	मं.	०	४	२७	रा.	२	८	१२	बृ.	२	१	१८	श.	३	०	३	बु.	२	४	२७	के.	०	४	२७	शु.	३	४	०
	चं.	०	६	०	मं.	०	७	०	रा.	१	०	१८	वृ.	२	४	२४	श.	२	६	१२	बु.	२	८	९	के.	०	११	२७	शु.	१	२	०	सू.	१	०	०
	मं.	०	४	६	रा.	१	६	०	बृ.	०	११	६	श.	२	१०	०६	बु.	२	३	६	के.	१	१	९	शु.	२	१०	०	सू.	०	४	६	चं.	१	८	०
	रा.	०	१०	२४	बृ.	१	४	०	श.	१	१	९	बु.	२	६	१८	के.	०	११	६	शु.	३	२	०	सू.	०	१०	६	चं.	०	७	०	मं.	१	२	०
	बृ.	०	९	१८	श.	१	७	०	बु.	०	११	२७	के.	१	०	१८	शु.	२	८	०	सू.	०	११	१२	चं.	१	५	०	मं.	०	४	२७	रा.	३	०	०
	श.	०	११	१२	बु.	१	५	०	के.	०	४	२७	शु.	३	०	०	सू.	०	९	१८	चं.	१	७	०	मं.	०	११	२७	रा.	१	०	१८	बृ.	२	८	०
	बु.	०	१०	६	के.	०	७	०	शु.	१	२	०	सू.	०	१०	२४	चं.	१	४	०	मं.	१	१	९	रा.	२	६	१८	बृ.	०	११	६	श.	३	२	०
	के.	०	४	६	शु.	१	८	०	सू.	०	४	६	चं.	१	६	०	मं.	०	११	६	रा.	२	१०	६	बृ.	२	३	६	श.	१	१	९	बु.	२	१०	०
	शु.	१	०	०	सू.	०	६	०	चं.	०	७	०	मं.	१	०	१८	रा.	२	४	२४	बृ.	२	६	१२	श.	२	८	९	बु.	०	११	२७	के.	१	२	०

वेधसिद्ध (नवीन) वर्षमानानुसारेण वर्षप्रवेशसारिणी

गताब्द संख्या	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१
घटी	१५	३०	४६	१	१६	३२	४७	३	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	६	२१	३६	५२	७	२३	३८	५३	९	२४	३९	५५	१०	२६	४१	५६	१२	२७	४३	५८	१३	२९	४४	५९	१५
पल	२२	४५	८	३१	५४	१७	४०	३	२६	४९	१२	३५	५८	२१	४४	७	३०	५३	१६	३९	१	२४	४७	१०	३३	५६	१९	४२	५	२८	५१	१४	३७	०	२३	४६	९	३२	५५	१८
विपल	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०
गताब्द संख्या	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
वार	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२
घटी	३०	४६	१	१६	३२	४७	२	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	६	२१	३६	५२	७	२२	३८	५३	९	२४	३९	५५	१०	२६	४१	५६	१२	२७	४३	५८	१३	२९	४४	५९	१५	३०
पल	४०	३	२६	४९	१२	३५	५८	२१	४४	७	३०	५३	१६	३९	२	२५	४८	११	३४	५७	१९	४२	५	२८	५१	१४	३७	०	२३	४६	९	३२	५५	१८	४१	४	२७	५०	१३	३६
विपल	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०

प्राचीनमानानुसारेण वर्षप्रवेश सारिणी

गताब्द संख्या	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	००	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	००	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१
घटी	१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५	५०	६	२१	३७	५२	८	२३	३९	५४	१०	२६	४१	५७	१२	२८	४३	५९	१४	३०	४५	१	१६	३२	४७	३	१८	३४	४९	५	२१
पल	३१	३	३४	६	३७	००	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	०
गताब्द संख्या	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
वार	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२
घटी	३६	५२	७	२३	३८	५४	९	२५	४०	५६	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	०	१५	३१	४७	२	१८	३३	४९	४	२०	३५	५१	६	२२	३७	५३	८	२४	३९	५५	१०	२६	४२
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	०

विं. मुद्दादशाचक्र

सूर्य	चन्द्र	मं.	राहु	गुरु	शनि	बुध	के.	शुक्र
०	१	०	१	१	१	१	०	२
१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१	०

योगिनीक्रमेण मुद्दादशाचक्र

यो.	मं.	पिं.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.
मा.	०	०	१	१	१	२	२	२
दि.	१०	२०	०	१०	२०	०	१०	२०

त्रिराशिपतिचक्र

लग्नम्	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.
दि.प.	सू.	शु.	श.	शु.	गु.	चं.	बु.	मं.	श.	मं.	गु.	चं.
लग्नम्	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.
रा.प.	गु.	चं.	बु.	मं.	सू.	शु.	श.	शु.	श.	मं.	गु.	चं.

वर्षफल निर्माण विधि

जिस वर्ष का वर्षफल् अभीष्ट हो, उस अभीष्ट संवत् में से जन्म सवंत् घटाने पर जो शेष बचे वे जन्म से गतवर्ष अर्थात् 'गताब्द' होते हैं उन गताब्दों से पृष्ट १३१ पर दी गई प्राचीन मतानुसार वर्ष प्रवेश सारिणी के नीचे दिए वार, घटी, पलादि फल लेकर उसमें जन्म वार इष्टवटी, पलादि जोड़ने पर वर्षप्रवेशकालिक वारादि इष्टकालज्ञात होता है। पल, घटी आदि यदि ६० से अधिक हों तो उन्हें सवर्ण करके तथा यदि वारादि संख्या ७ हो तो ७ अधिक का भाग देने पर एकादि शेष रहने पर रवि आदि क्रम से वार तथा आगे वर्षेष्ट घटी पलादि होते हैं। जन्मकालिक स्पष्ट सूर्य के राश्यंशादि की तरह वर्ष प्रवेशकालिक लग्न सिद्ध होता है। इस प्रकार वर्ष प्रवेश कालिक ग्रह स्थापित करने पर वर्ष कुण्डली बनती है।

मुन्थासाधन-

वर्ष कुण्डली में मुन्था भी लगाई जाती है। जन्म के प्रथम वर्ष में लग्न ही मुन्था होती है, यह प्रतिवर्ष एक-एक राशि बढ़ती है। अतः गतवर्ष संख्या में जन्म लग्न जोड़ने पर यदि १२ से अधिक हो तो १२ का भाग देने पर शेष मुन्था की राशि होती है।

मुद्दादशासाधन-

गत वर्ष संख्या में जन्म नक्षत्र संख्या जोड़कर जो संख्या उपलब्ध हो, उसमें २ घटाकर ९ का भाग देने पर एकादि शेष बचने पर सूर्य, चन्द्र, मंगल, राहु, गुरु, शनि, बुध, केतु, शुक्र की दशा होती है। सूर्यादि मुद्दादशा दिन पृ. सं. ९४ पर दिए गए मुद्दादशा चक्र से जानें।

हर्षबलसाधन-

वर्ष कुण्डली में स्थानबल, स्वोच्चबल, पुरुषस्त्रीबल तथा दिनरात्रिबल- ये चार हर्ष बल कहलाते हैं

स्थानबल-

वर्ष लग्न से ९ स्थान में सूर्य, ३ में चन्द्रमा, ६ में मंगल, १ में बुध, ११ में गुरु, ५ में शुक्र तथा १२ में शनि ५ हर्षबल होते हैं।

स्वोच्चबल-

प्रत्येक ग्रह अपनी तथा उच्च राशि में ५ हर्षबल देते हैं। अर्थात् सूर्य १।५ चन्द्र २।४, मंगल १।८।१०, बुध ३।६।, गुरु ४।९।१२, शुक्र २।७।१२, शनि १०।११।७ इन स्वोच्च राशियों में सूर्यादि ग्रह हर्षित होते हैं।

पुरुषस्त्रीबल-

स्त्रीग्रह (चं.बु.शु.श.) १।२।३।७।९ स्थानों में तथा पुरुषग्रह (सू. मं.गु) ४।५।६।१०।११।१२ स्थानों में ५ हर्षबल होते हैं।

दिनरात्रिबल-

दिन में वर्षप्रवेश हो तो पुरुषग्रह तथा रात्रि में हो तो स्त्री ग्रह ५ हर्षबल देते हैं। यहाँ यह ध्यान देना चाहिए जहाँ बल प्राप्त हो वहाँ ५ तथा जहाँ बल प्राप्त न हों वहाँ ० शून्य रखना चाहिए। इस प्रकार सूर्यादि ग्रहों के चारों स्थानादि बलों का योग हर्षबल कहलाता है।

वर्षेश-निर्णय -

जन्म लग्नपति, वर्ष लग्नपति, मुन्थाधिपति, त्रिराशिपति, दिन में वर्ष प्रवेश हो तो सूर्य जिस राशि पर हो उस राशि का स्वामी तथा रात्रि में वर्ष प्रवेश हो तो चन्द्रमा जिस राशि पर हो उस राशि का स्वामी में पञ्चाधिकारी कहलाते है। इन पञ्चाधिकारियों में जो बलवान् होकर लग्न को देखता हो, वह वर्षेश होता है। बलवान् होने पर भी यदि लग्न को न देखता हो तो वर्षेश नहीं होगा। समान बली होने पर जो लग्न को अधिक दृष्टि से देखता हो वह वर्षेश होगा। लग्न को देखने वाला ग्रह यदि अल्पबल हो तो मुन्थेश अर्थात् मुन्था जिस राशि में हो उस राशि का स्वामी वर्षेश होगा। यदि पञ्चाधिकारियों में कोई भी ग्रह लग्न को न देखता हो तो जो ग्रह सबसे बलवान हो वह वर्षेश होगा। यदि चन्द्र वर्षेश प्राप्त हो तो वह पञ्चाधिकारियों में जिससे इत्थशाल करे वह वर्षेश होगा। यदि इत्थाशाल न करे तो चन्द्र जिस राशि में बैठा हो वह वर्षेश होगा।

वर्ष दृष्टि-विचार-

वर्ष कुण्डली में जो ग्रह जिस स्थान में स्थित हो, उससे ५।९ स्थान को प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि से, ३।११ स्थान का गुप्त मित्र दृष्टि से १/७ स्थान को प्रम्यक्ष शत्रु दृष्टि से तथा ४।१० स्थान को गुप्त शत्रु दृष्टि से देखता है। प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि सभी कार्यों में शीघ्र सफलता देने वाली होती है, गुप्त मित्र दृष्टि कार्यों में कठिनता से सफलता देने वाली होती है। प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि शत्रुता उत्पन्न करने वाली, मित्र से शत्रुता कराने वाली, बनते काम बिगड़ने वाली हानिकारक होती है। गुप्त शत्रु दृष्टि कार्यों को कठिनता से सफल कराने वाली तथा गुप्त रूप से शत्रु उत्पन्न कराने वाली होती है।

❋ लग्नसारिणी ❋

अक्षांश २३° । ००", पलभा ५ । ५ । ३४, अयनांश २४° । ०५ स्वोदयपल (२२८, २५८, ३०५, ३३८, ३४०, ३३०)

इन्दौर, उज्जैन, कलकत्ता, जबलपुर, डाकोर, दाहोद, नड़ियाद, भोपाल, मोरवी, मांडवी, वीरमगाम आदि स्थानों के लिए-

	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
० मेष	३ २ २४	३ १० ००	३ १७ ३६	३ २५ १२	३ ३२ ४८	३ ४० २४	३ ४८ ००	३ ५६ ३६	४ ५ १२	४ १३ ४८	४ २२ २४	४ ३१ ००	४ ३९ ३६	४ ४८ १२	४ ५६ ४८	५ ५ २४	५ १४ ००	५ २२ ३६	५ ३१ १२	५ ३९ ४८	५ ४८ २४	५ ५७ ००	६ ५ ३६	६ १४ १२	६ २२ ४८	६ ३१ २४	६ ४० ००	६ ४८ ३६	६ ५७ १२	६ ५ ४८	७ ५ ४८
१ वृष	७ १४ २४	७ २३ ००	७ ३१ ३६	७ ४० १२	७ ४८ ४८	७ ५७ २४	८ ६ ०	८ १६ १०	८ २६ २०	८ ३६ ३०	८ ४६ ४०	८ ५६ ५०	९ ७ ०	९ १७ १०	९ २७ २०	९ ३७ ३०	९ ४७ ४०	९ ५७ ५०	१० ८ ०	१० १८ १०	१० २८ २०	१० ३८ ३०	१० ४८ ४०	१० ५८ ५०	१० ९ ०	११ १९ १०	११ २९ २०	११ ३९ ३०	११ ४९ ४०	११ ५९ ५०
२ मिथुन	१२ १० ०	१२ २० १०	१२ ३० २०	१२ ४० ३०	१२ ५० ४०	१३ ० ५०	१३ ११ ०	१३ २२ १८	१३ ३३ ३६	१३ ४४ ५४	१३ ५६ १२	१४ ७ ३०	१४ १८ ४८	१४ ३० ०६	१४ ४१ २४	१४ ५२ ४२	१५ ०४ ००	१५ १५ १८	१५ २६ ३६	१५ ३७ ५४	१५ ४९ १२	१६ ० ३०	१६ ११ ४८	१६ २३ ०६	१६ ३४ २४	१६ ४५ ४२	१६ ५७ ००	१७ ८ १८	१७ १९ ३६	१७ ३० ५४
३ कर्क	१७ ४२ १२	१७ ५३ ३०	१८ ४ ४८	१८ १६ ०६	१८ २७ २४	१८ ३८ ४२	१८ ५० ००	१९ १ २०	१९ १२ ४०	१९ २४ ००	१९ ३५ २०	१९ ४६ ४०	१९ ५८ ००	२० ९ २०	२० २० ४०	२० ३२ ००	२० ४३ २०	२० ५४ ४०	२० ०६ ००	२१ १७ २०	२१ २८ ४०	२१ ४० ००	२१ ५१ २०	२२ ०२ ४०	२२ १४ ००	२२ २५ २०	२२ ३६ ४०	२२ ४८ ००	२२ ५९ २०	२३ १० ४०
४ सिंह	२३ २२ ००	२३ ३३ २०	२३ ४४ ४०	२३ ५६ ००	२४ ७ २०	२४ १८ ४०	२४ ३० ०	२४ ४१ ०	२४ ५२ ०	२५ ०३ ०	२५ १४ ०	२५ २५ ०	२५ ३६ ०	२५ ४७ ०	२५ ५८ ०	२६ ९ ०	२६ २० ०	२६ ३१ ०	२६ ४२ ०	२६ ५३ ०	२७ ०४ ०	२७ १५ ०	२७ २६ ०	२७ ३७ ०	२७ ४८ ०	२७ ५९ ०	२८ १० ०	२८ २१ ०	२८ ३२ ०	२८ ४३ ०
५ कन्या	२८ ५४ ०	२९ ५ ०	२९ १६ ०	२९ २७ ०	२९ ३८ ०	२९ ४९ ०	३० ० ०	३० ११ ०	३० २२ ०	३० ३३ ०	३० ४४ ०	३० ५५ ०	३१ ६ ०	३१ १७ ०	३१ २८ ०	३१ ३९ ०	३१ ५० ०	३२ ०१ ०	३२ १२ ०	३२ २३ ०	३२ ३४ ०	३२ ४५ ०	३२ ५६ ०	३३ ७ ०	३३ १८ ०	३३ २९ ०	३३ ४० ०	३३ ५१ ०	३४ ०२ ०	३४ १३ ०
६ तुला	३४ २४ ०	३४ ३५ ०	३४ ४६ ०	३४ ५७ ०	३५ ०८ ०	३५ १९ ०	३५ ३० ०	३५ ४१ २०	३५ ५२ ४०	३६ ४ ०	३६ १५ २०	३६ २६ ४०	३६ ३८ ०	३६ ४९ २०	३७ ० ४०	३७ १२ ०	३७ २३ २०	३७ ३४ ४०	३७ ४६ ०	३७ ५७ २०	३८ ८ ४०	३८ २० ०	३८ ३१ २०	३८ ४२ ४०	३८ ५४ ०	३९ ०५ २०	३९ १६ ४०	३९ २८ ०	३९ ३९ २०	३९ ५० ४०
७ वृश्चिक	४० ०२ ००	४० १३ २०	४० २४ ४०	४० ३६ ०	४० ४७ २०	४० ५८ ४०	४१ १० ००	४१ २१ १८	४१ ३२ ३६	४१ ४३ ५४	४१ ५५ १२	४२ ०६ ३०	४२ १७ ४८	४२ २९ ०६	४२ ४० २४	४२ ५१ ४२	४३ ०३ ००	४३ १४ १८	४३ २५ ३६	४३ ३६ ५४	४३ ४८ १२	४३ ५९ ३०	४४ १० ४८	४४ २२ ०६	४४ ३३ २४	४४ ४४ ४२	४४ ५६ ००	४५ ७ १८	४५ १८ ३६	४५ २९ ५४
८ धनु	४५ ४० १२	४५ ५१ ३०	४६ ०३ ४८	४६ १५ ०६	४६ २६ २४	४६ ३७ ४२	४६ ४९ ००	४६ ५९ १०	४७ ९ २०	४७ १९ ३०	४७ २९ ४०	४७ ३९ ५०	४७ ५० ००	४८ ० १०	४८ १० २०	४८ २० ३०	४८ ३० ४०	४८ ४० ५०	४८ ५१ ०	४९ १ १०	४९ ११ २०	४९ २१ ३०	४९ ३१ ४०	४९ ४१ ५०	४९ ५२ ०	५० ०२ १०	५० १२ २०	५० २२ ३०	५० ३२ ४०	५० ४२ ५०
९ मकर	५० ५३ ००	५१ ०३ १०	५१ १३ २०	५१ २३ ३०	५१ ३३ ४०	५१ ४३ ५०	५१ ५४ ००	५२ ०२ ३६	५२ ११ १२	५२ १९ ४८	५२ २८ २४	५२ ३७ ०	५२ ४५ ३६	५२ ५४ १२	५३ ०२ ४८	५३ ११ २४	५३ २० ०	५३ २८ ३६	५३ ३७ १२	५३ ४५ ४८	५३ ५४ २४	५४ ०३ ००	५४ ११ ३६	५४ २० १२	५४ २८ ४८	५४ ३७ २४	५४ ४६ ००	५४ ५४ ३६	५५ ३ १२	५५ ११ ४८
१० कुम्भ	५५ २० २४	५५ २९ ०	५५ ३७ ३६	५५ ४६ १२	५५ ५४ ४८	५६ ०३ २४	५६ १२ ००	५६ १९ ३६	५६ २७ १२	५६ ३४ ४८	५६ ४२ २४	५६ ५० ००	५६ ५७ ३६	५७ ०५ १२	५७ १२ ४८	५७ २० २४	५७ २८ ००	५७ ३५ ३६	५७ ४३ १२	५७ ५० ४८	५७ ५८ २४	५८ ०६ ००	५८ १३ ३६	५८ २१ १२	५८ २८ ४८	५८ ३६ २४	५८ ४४ ००	५८ ५१ ३६	५८ ५९ १२	५९ ६ ४८
११ मीन	५९ १४ २४	५९ २२ ०	५९ २९ ३६	५९ ३७ १२	५९ ४४ ४८	५९ ५२ २४	० ० ०	० ७ ३६	० १५ १२	० २२ ४८	० ३० २४	० ३८ ०	० ४५ ३६	० ५३ १२	१ ० ४८	१ ८ २४	१ १६ ०	१ २३ ३६	१ ३१ १२	१ ३८ ४८	१ ४६ २४	१ ५४ ०	२ ०१ ३६	२ ९ १२	२ १६ ४८	२ २४ २४	२ ३२ ०	२ ३९ ३६	२ ४७ १२	२ ५४ ४८

❋ लग्नसारिणी ❋

अक्षांश २५° । ००", पलभा ५ । ३५ । ४४, अयनांश २४° । ०५ स्वोदयपल (२२३, २५४, ३०३, ३४१, ३४४, ३३५)

आबू, इलाहाबाद, उदयपुर, कराची, काशी, कोटा, जमालपुर, जालोर, झांसी, मालदा, मिर्जापुर, मुंगेर, मोकामा, बूंदी आदि स्थानों के लिए-

	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
० मेष	२ ५८ २४	३ ५ ५०	३ १३ १६	३ २० ४२	३ २८ ०८	३ ३५ ३४	३ ४३ ००	३ ५१ २८	३ ५९ ५६	४ ८ २४	४ १६ ५२	४ २५ २०	४ ३३ ४८	४ ४२ १६	४ ५० ४४	४ ५९ १२	५ ७ ४०	५ १६ ०८	५ २४ ३६	५ ३३ ०४	५ ४१ ३२	५ ५० ००	५ ५८ २८	६ ६ ५६	६ १५ २४	६ २३ ५२	६ ३२ २०	६ ४० ४८	६ ४९ १६	६ ५७ ४४
१ वृष	७ ६ १२	७ १४ ४०	७ २३ ०८	७ ३१ ३६	७ ४० ०४	७ ४८ ३२	७ ५७ ००	८ ०७ ०६	८ १७ १२	८ २७ १८	८ ३७ २४	८ ४७ ३०	८ ५७ ३६	९ ०७ ४२	९ १७ ४८	९ २७ ५४	९ ३८ ००	९ ४८ ०६	९ ५८ १२	१० ८ १८	१० १८ २४	१० २८ ३०	१० ३८ ३६	१० ४८ ४२	१० ५८ ४८	११ ८ ५४	११ १९ ००	११ २९ ०६	११ ३९ १२	११ ४९ १८
२ मिथुन	११ ५९ २४	१२ ९ ३०	१२ १९ ३६	१२ २९ ४२	१२ ३९ ४८	१२ ४९ ५४	१३ ०० ००	१३ ११ २२	१३ २२ ४४	१३ ३४ ०६	१३ ४५ २८	१३ ५६ ५०	१४ ८ १२	१४ १९ ३४	१४ ३० ५६	१४ ४२ १८	१४ ५३ ४०	१५ ०५ ०२	१५ १६ २४	१५ २७ ४६	१५ ३९ ०८	१५ ५० ३०	१६ १ ५२	१६ १३ १४	१६ २४ ३६	१६ ३५ ५८	१६ ४७ २०	१६ ५८ ४२	१७ १० ०४	१७ २१ २६
३ कर्क	१७ ३२ ४८	१७ ४४ १०	१७ ५५ ३२	१८ ०६ ५४	१८ १८ १६	१८ २९ ३८	१८ ४१ ००	१८ ५२ २८	१९ ३ ५६	१९ १५ २४	१९ २६ ५२	१९ ३८ २०	१९ ४९ ४८	२० १ १६	२० १२ ४४	२० २४ १२	२० ३५ ४०	२० ४७ ०८	२० ५८ ३६	२१ १० ०४	२१ २१ ३२	२१ ३३ ००	२१ ४४ २८	२१ ५५ ५६	२२ ०७ २४	२२ १८ ५२	२२ ३० २०	२२ ४१ ४८	२२ ५३ १६	२३ ०४ ४४
४ सिंह	२३ १६ १२	२३ २७ ४०	२३ ३९ ०८	२३ ५० ३६	२४ ०२ ४	२४ १३ ३२	२४ २५ ००	२४ ३६ १०	२४ ४७ २०	२५ ५८ ३०	२५ ०९ ४०	२५ २० ५०	२५ ३२ ००	२५ ४३ १०	२५ ५४ २०	२६ ०५ ३०	२६ १६ ४०	२६ २७ ५०	२६ ३९ ००	२६ ५० १०	२७ १ २०	२७ १२ ३०	२७ २३ ४०	२७ ३४ ५०	२७ ४६ ००	२७ ५७ १०	२८ ०८ २०	२८ १९ ३०	२८ ३० ४०	२८ ४१ ५०
५ कन्या	२८ ५३ ००	२९ ४ १०	२९ १५ २०	२९ २६ ३०	२९ ३७ ४०	३० ४८ ५०	३० ०० ००	३० ११ १०	३० २२ २०	३० ३३ ३०	३० ४४ ४०	३० ५५ ५०	३१ ०७ ००	३१ १८ १०	३१ २९ २०	३१ ४० ३०	३१ ५१ ४०	३२ ०२ ५०	३२ १४ ००	३२ २५ १०	३२ ३६ २०	३२ ४७ ३०	३२ ५८ ४०	३३ ९ ५०	३३ २१ ००	३३ ३२ १०	३३ ४३ २०	३३ ५४ ३०	३४ ०५ ४०	३४ १६ ५०
६ तुला	३४ २८ ००	३४ ३९ १०	३४ ५० २०	३५ १ ३०	३५ १२ ४०	३५ २३ ५०	३५ ३५ ००	३५ ४६ २८	३५ ५७ ५६	३६ ९ २४	३६ २० ४२	३६ ३२ २०	३६ ४३ ४८	३६ ५५ १६	३७ ६ ४४	३७ १८ १२	३७ २९ ४०	३७ ४१ ०८	३७ ५२ ३६	३८ ०४ ०४	३८ १५ ३२	३८ २७ ००	३८ ३८ २८	३८ ४९ ५६	३९ १ २४	३९ १२ ५२	३९ २४ २०	३९ ३५ ४८	३९ ४७ १६	३९ ५८ ४४
७ वृश्चिक	४० १० १२	४० २१ ४०	४० ३३ ०८	४० ४४ ३६	४० ५६ ०४	४१ ७ ३२	४१ १९ ००	४१ ३० २२	४१ ४१ ४४	४१ ५३ ०६	४२ ०४ २८	४२ १५ ५०	४२ २७ १२	४२ ३८ ३४	४२ ४९ ५६	४३ ०१ १८	४३ १२ ४०	४३ २४ ०२	४३ ३५ २४	४३ ४६ ४६	४३ ५८ ०८	४४ १० ३०	४४ २१ ५२	४४ ३३ १४	४४ ४४ ३६	४४ ५५ ५८	४५ ७ २०	४५ १८ ४२	४५ ३० ४	४५ ४१ २६
८ धनु	४५ ५२ ४८	४६ ४ १०	४६ १५ ३२	४६ २६ ५४	४६ ३८ १६	४६ ४९ ३८	४७ ०० ००	४७ १० ०६	४७ २० १२	४७ ३० १८	४७ ४० २४	४७ ५० ३०	४८ ०० ३६	४८ १० ४२	४८ २० ४८	४८ ३० ५४	४८ ४१ ००	४८ ५१ ०६	४९ ०१ १२	४९ ११ १८	४९ २१ २४	४९ ३१ ३०	४९ ४१ ३६	४९ ५१ ४२	५० ०१ ४८	५० ११ ५४	५० २२ ०	५० ३२ ०६	५० ४२ १२	५० ५२ १८
९ मकर	५१ २ २४	५१ १२ ३०	५१ २२ ३६	५१ ३२ ४२	५१ ४२ ४८	५१ ५२ ५४	५२ ०३ ००	५२ ११ २८	५२ १९ ५६	५२ २८ २४	५२ ३६ ५२	५२ ४५ २०	५२ ५३ ४८	५३ २ १६	५३ १० ४४	५३ १९ १२	५३ २७ ४०	५३ ३६ ०८	५३ ४४ ३६	५३ ५३ ०४	५४ ०१ ३२	५४ १० ००	५४ १८ २८	५४ २६ ५६	५४ ३५ २४	५४ ४३ ५२	५४ ५२ २०	५५ ०० ४८	५५ ०९ १६	५५ १७ ४४
१० कुम्भ	५५ २६ १२	५५ ३४ ४०	५५ ४३ ०८	५५ ५१ ३६	५६ ०० ०४	५६ ०८ ३२	५६ १७ ००	५६ २४ २६	५६ ३१ ५२	५६ ३९ १८	५६ ४६ ४४	५६ ५४ १०	५७ ०१ ३६	५७ ०९ ०२	५७ १६ २८	५७ २३ ५४	५७ ३१ २०	५७ ३८ ४६	५७ ४६ १२	५७ ५३ ३८	५८ ०१ ०४	५८ ०८ ३०	५८ १५ ५६	५८ २३ २२	५८ ३० ४८	५८ ३८ १४	५८ ४५ ४०	५९ ५३ ०६	५९ ०० ३२	५९ ०७ ५८
११ मीन	५९ १५ २४	५९ २२ ५०	५९ ३० १६	५९ ३७ ४२	५९ ४५ ०८	५९ ५२ ३४	०० ०० ००	० ७ २६	० १४ ५२	० २२ १८	० २९ ४४	० ३७ १०	० ४४ ३६	० ५२ ०२	० ५९ २८	१ ०६ ५४	१ १४ २०	१ २१ ४६	१ २९ १२	१ ३६ ३८	१ ४४ ०४	१ ५१ ३०	१ ५८ ५६	२ ०६ २२	२ १३ ४८	२ २१ १४	२ २८ ४०	२ ३६ ०६	२ ४३ ३२	२ ५० ५८

❋ लग्नसारिणी ❋

अक्षांश २७° । ००", पलभा ६ । ६ । ५२, अयनांश २४° । ०५ स्वोदयपल (२१७, २५०, ३०३, ३४३, ३४८, ३३९)

अयोध्या, अलीगढ़, आगरा, इटावा, उन्नाव, कन्नौज, गोरखपुर, फैजाबाद, आदि स्थानों के लिए-

	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
० मेष	२ ५३ ३६	३ ० ५०	३ ८ ४	३ १५ १८	३ २२ ३२	३ २९ ४६	३ ३७ ०	३ ४५ २०	३ ५३ ४०	४ २ ०	४ १० २०	४ १८ ४०	४ २७ ०	४ ३५ २०	४ ४३ ४०	४ ५२ ०	५ ० २०	५ ८ ४०	५ १७ ०	५ २५ २०	५ ३३ ४०	५ ४२ ०	५ ५० २०	५ ५८ ४०	६ ७ ०	६ १५ २०	६ २३ ४०	६ ३२ ०	६ ४० २०	६ ४८ ४०
१ वृष	६ ५७ ०	७ ५ २०	७ १३ ४०	७ २२ ०	७ ३० २०	७ ३८ ४०	७ ४७ ०	७ ५७ ६	८ ७ १२	८ १७ १८	८ २७ २४	८ ३७ ३०	८ ४७ ३६	८ ५७ ४२	९ ७ ४८	९ १७ ५४	९ २८ ०	९ ३८ ६	९ ४८ १२	९ ५८ १८	१० ८ २४	१० १८ ३०	१० २८ ३६	१० ३८ ४२	१० ४८ ४८	१० ५८ ५४	११ ९ ०	११ १९ ६	११ २९ १२	११ ३९ १८
२ मिथुन	११ ४९ २४	११ ५९ ३०	१२ ९ ३६	१२ १९ ४२	१२ २९ ४८	१२ ३९ ५४	१२ ५० ०	१३ १ २६	१३ १२ ५२	१३ २४ १८	१३ ३५ ४४	१३ ४७ १०	१३ ५८ ३६	१४ १० २	१४ २१ २८	१४ ३२ ५४	१४ ४४ २०	१४ ५५ ४६	१५ ७ १२	१५ १८ ३८	१५ ३० ४	१५ ४१ ३०	१५ ५२ ५६	१६ ४ २२	१६ १५ ४८	१६ २७ १४	१६ ३८ ४०	१६ ५० ६	१७ १ ३२	१७ १२ ५८
३ कर्क	१७ २४ २४	१७ ३५ ५०	१७ ४७ १६	१७ ५८ ४२	१८ १० ८	१८ २१ ३४	१८ ३३ ०	१८ ४४ ३६	१८ ५६ १२	१९ ७ ४८	१९ १९ २४	१९ ३१ ०	१९ ४२ ३६	१९ ५४ १२	२० ५ ४८	२० १७ २४	२० २९ ०	२० ४० ३६	२० ५२ १२	२१ ३ ४८	२१ १५ २४	२१ २७ ०	२१ ३८ ३६	२१ ५० १२	२२ १ ४८	२२ १३ २४	२२ २५ ०	२२ ३६ ३६	२२ ४८ १२	२२ ५९ ४८
४ सिंह	२३ ११ २४	२३ २३ ०	२३ ३४ ३६	२३ ४६ १२	२३ ५७ ४८	२४ ९ २४	२४ २१ ०	२४ ३२ १८	२४ ४३ ३६	२४ ५४ ५४	२५ ६ १२	२५ १७ ३०	२५ २८ ४८	२५ ४० ६	२५ ५१ २४	२६ २ ४२	२६ १४ ०	२६ २५ १८	२६ ३६ ३६	२६ ४७ ५४	२६ ५९ १२	२७ १० ३०	२७ २१ ४८	२७ ३३ ६	२७ ४४ २४	२७ ५५ ४२	२८ ७ ०	२८ १८ १८	२८ २९ ३६	२८ ४० ५४
५ कन्या	२८ ५२ १२	२९ ३ ३०	२९ १४ ४८	२९ २६ ६	२९ ३७ २४	२९ ४८ ४२	३० ० ०	३० ११ १८	३० २२ ३६	३० ३३ ५४	३० ४५ १२	३० ५६ ३०	३१ ७ ४८	३१ १९ ६	३१ ३० २४	३१ ४१ ४२	३१ ५३ ०	३२ ४ १८	३२ १५ ३६	३२ २६ ५४	३२ ३८ १२	३२ ४९ ३०	३३ ० ४८	३३ १२ ६	३३ २३ २४	३३ ३४ ४२	३३ ४६ ०	३३ ५७ १८	३४ ८ ३६	३४ १९ ५४
६ तुला	३४ ३१ १२	३४ ४२ ३०	३४ ५३ ४८	३५ ५ ६	३५ १६ २४	३५ २७ ४२	३५ ३९ ०	३५ ५० ३६	३६ २ १२	३६ १३ ४८	३६ २५ २४	३६ ३७ ०	३६ ४८ ३६	३७ ० १२	३७ ११ ४८	३७ २३ २४	३७ ३५ ०	३७ ४६ ३६	३७ ५८ १२	३८ ९ ४८	३८ २१ २४	३८ ३३ ०	३८ ४४ ३६	३८ ५६ १२	३९ ७ ४८	३९ १९ २४	३९ ३१ ०	३९ ४२ ३६	३९ ५४ १२	४० ५ ४८
७ वृश्चिक	४० १७ २४	४० २९ ०	४० ४० ३६	४० ५२ १२	४१ ३ ४८	४१ १५ २४	४१ २७ ०	४१ ३८ २६	४१ ४९ ५२	४२ १ १८	४२ १२ ४४	४२ २४ १०	४२ ३५ ३६	४२ ४७ २	४२ ५८ २८	४३ ९ ५४	४३ २१ २०	४३ ३२ ४६	४३ ४४ १२	४३ ५५ ३८	४४ ७ ४	४४ १८ ३०	४४ २९ ५६	४४ ४१ २२	४४ ५२ ४८	४५ ४ १४	४५ १५ ४०	४५ २७ ६	४५ ३८ ३२	४५ ४९ ५८
८ धनु	४६ १ २४	४६ १२ ५०	४६ २४ १६	४६ ३५ ४२	४६ ४७ ८	४६ ५८ ३४	४७ १० ०	४७ २० ६	४७ ३० १२	४७ ४० १८	४७ ५० २४	४८ ० ३०	४८ १० ३६	४८ २० ४२	४८ ३० ४८	४८ ४० ५४	४८ ५१ ०	४९ १ ६	४९ ११ १२	४९ २१ १८	४९ ३१ २४	४९ ४१ ३०	४९ ५१ ३६	५० १ ४२	५० ११ ४८	५० २१ ५४	५० ३२ ०	५० ४२ ६	५० ५२ १२	५१ २ १८
९ मकर	५१ १२ २४	५१ २२ ३०	५१ ३२ ३६	५१ ४२ ४२	५१ ५२ ४८	५२ २ ५४	५२ १३ ०	५२ २१ २०	५२ २९ ४०	५२ ३८ ०	५२ ४६ २०	५२ ५४ ४०	५३ ३ ०	५३ ११ २०	५३ १९ ४०	५३ २८ ०	५३ ३६ २०	५३ ४४ ४०	५३ ५३ ०	५४ १ २०	५४ ९ ४०	५४ १८ ०	५४ २६ २०	५४ ३४ ४०	५४ ४३ ०	५४ ५१ २०	५४ ५९ ४०	५५ ८ ०	५५ १६ २०	५५ २४ ४०
१० कुम्भ	५५ ३३ ०	५५ ४१ २०	५५ ४९ ४०	५५ ५८ ०	५६ ६ २०	५६ १४ ४०	५६ २३ ०	५६ ३० १४	५६ ३७ २८	५६ ४४ ४२	५६ ५१ ५६	५६ ५९ १०	५७ ६ २४	५७ १३ ३८	५७ २० ५२	५७ २८ ६	५७ ३५ २०	५७ ४२ ३४	५७ ४९ ४८	५७ ५७ २	५८ ४ १६	५८ ११ ३०	५८ १८ ४४	५८ २५ ५८	५८ ३३ १२	५८ ४० २६	५८ ४७ ४०	५८ ५४ ५४	५९ २ ८	५९ ९ २२
११ मीन	५९ १६ ३६	५९ २३ ५०	५९ ३१ ४	५९ ३८ १८	५९ ४५ ३२	५९ ५२ ४६	० ० ०	० ७ १४	० १४ २८	० २१ ४२	० २८ ५६	० ३६ १०	० ४३ २४	० ५० ३८	० ५७ ५२	१ ५ ६	१ १२ २०	१ १९ ३४	१ २६ ४८	१ ३४ २	१ ४१ १६	१ ४८ ३०	१ ५५ ४४	१ २ ५८	२ १० १२	२ १७ २६	२ २४ ४०	२ ३१ ५४	२ ३९ ८	२ ४६ २२

❋ लग्नसारिणी ❋

अक्षांश २८° । ३९", पलभा ६ । ३३ । ६, अयनांश २४° । ०५ स्वोदयपल (२१३, २४७, ३००, ३४४, ३५१, ३४५)

दिल्ली, गाजियाबाद, टनकपुर, नैनीताल, मुजफ्फरनगर, मेरठ, गुड़गाँव, रोहतक, मुक्तिनाथ आदि स्थानों के लिए-

	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
० मेष	२ ५० २४	२ ५७ ३०	३ ४ ३६	३ ११ ४२	३ १८ ४८	३ २५ ५४	३ ३३ ००	३ ४१ १४	३ ४९ २८	३ ५७ ४२	४ ५ ५६	४ १४ १०	४ २२ २४	४ ३० ३८	४ ३८ ५२	४ ४७ ०६	४ ५५ २०	५ ०३ ३४	५ ११ ४८	५ २० ०२	५ २८ १६	५ ३६ ३०	५ ४४ ४४	५ ५२ ५८	६ १ १२	६ ९ २६	६ १७ ४०	६ २५ ५४	६ ३४ ०८	६ ४२ २२
१ वृष	६ ५० ३६	६ ५८ ५०	७ ७ ४	७ १५ १८	७ २३ ३२	७ ३१ ४६	७ ४० ००	७ ५० ००	८ ०० ००	८ १० ००	८ २० ००	८ ३० ००	८ ४० ००	८ ५० ००	९ ० ००	९ १० ००	९ २० ००	९ ३० ००	९ ४० ००	१ ५० ००	१० ०० ००	१० १० ००	१० २० ००	१० ३० ००	१० ४० ००	१० ५० ००	११ ०० ००	११ १० ००	११ २० ००	११ ३० ००
२ मिथुन	११ ४० ००	११ ५० ००	१२ ०० ००	१२ १० ००	१२ २० ००	१२ ३० ००	१२ ४० ००	१२ ५१ २८	१३ २ ५६	१३ १४ २४	१३ २५ ५२	१३ ३७ २०	१३ ४८ ४८	१४ ० १६	१४ ११ ४४	१४ २३ १२	१४ ३४ ४०	१४ ४६ ०८	१४ ५७ ३६	१५ ०९ ०४	१५ २० ३२	१५ ३२ ००	१५ ४३ २८	१५ ५४ ५६	१६ ०६ २४	१६ १७ ५२	१६ २९ २०	१६ ४० ४८	१६ ५२ १६	१७ ०३ ४४
३ कर्क	१७ १५ १२	१७ २६ ४०	१७ ३८ ०८	१७ ४९ ३६	१८ १ ४	१८ १२ ३२	१८ २४ ००	१८ ३५ ४२	१८ ४७ २४	१८ ५९ ०६	१९ १० ४८	१९ २२ ३०	१९ ३४ १२	१९ ४५ ५४	१९ ५७ ३६	२० ०९ १८	२० २१ ००	२० ३२ ४२	२० ४४ २४	२० ५६ ०६	२१ ०७ ४८	२१ १९ ३०	२१ ३१ १२	२१ ४२ ५४	२१ ५४ ३६	२२ ०६ १८	२२ १८ ००	२२ २९ ४२	२२ ४१ २४	२२ ५३ ०६
४ सिंह	२३ ०४ ४८	२३ १६ ३०	२३ २८ १२	२३ ३९ ५४	२३ ५१ ३६	२४ ३ १८	२४ १५ ००	२४ २६ ३०	२४ ३८ ००	२४ ४९ ३०	२५ ०१ ००	२५ १२ ३०	२५ २४ ००	२५ ३५ ३०	२५ ४७ ००	२५ ५८ ३०	२६ १० ००	२६ २१ ३०	२६ ३३ ००	२६ ४४ ३०	२६ ५६ ००	२७ ०७ ३०	२७ १९ ००	२७ ३० ३०	२७ ४२ ००	२७ ५३ ३०	२८ ०५ ००	२८ १६ ३०	२८ २८ ००	२८ ३९ ३०
५ कन्या	२८ ५१ ००	२९ ०२ ३०	२९ १४ ००	२९ २५ ३०	२९ ३७ ००	२९ ४८ ३०	३० ०० ००	३० ११ ३०	३० २३ ००	३० ३४ ३०	३० ४६ ००	३० ५७ ३०	३१ ०९ ००	३१ २० ३०	३१ ३२ ००	३१ ४३ ३०	३१ ५५ ००	३२ ०६ ३०	३२ १८ ००	३२ २९ ३०	३२ ४१ ००	३२ ५२ ३०	३३ ०४ ००	३३ १५ ३०	३३ २७ ००	३३ ३८ ३०	३४ ५० ००	३४ ०१ ३०	३४ १३ ००	३४ २४ ३०
६ तुला	३४ ३६ ००	३४ ४७ ३०	३४ ५९ ००	३५ १० ३०	३५ २२ ००	३५ ३३ ३०	३५ ४५ ००	३५ ५६ ४२	३६ ८ २४	३६ २० ०६	३६ ३१ ४८	३६ ४३ ३०	३६ ५५ १२	३७ ०६ ५४	३७ १८ ३६	३७ ३० १८	३७ ४२ ००	३७ ५३ ४२	३८ ०५ २४	३८ १७ ०६	३८ २८ ४८	३८ ४० ३०	३८ ५२ १२	३९ ०३ ५४	३९ १५ ३६	३९ २७ १८	३९ ३९ ००	३९ ५० ४२	४० ०२ २४	४० १४ ०६
७ वृश्चिक	४० २५ ४८	४० ३७ ३०	४० ४९ १२	४१ ०० ५४	४१ १२ ३६	४१ २४ १८	४१ ३६ ००	४१ ४७ २८	४१ ५८ ५६	४२ १० २४	४२ २१ ५२	४२ ३३ २०	४२ ४४ ४८	४२ ५६ १६	४३ ०७ ४४	४३, १९' १२	४३ ३० ४०	४३ ४२ ०८	४३ ५३ ३६	४४ ०५ ०४	४४ १६ ३२	४४ २८ ००	४४ ३९ २८	४४ ५० ५६	४५ २ २४	४५ १३ ५२	४५ २५ २०	४५ ३६ ४८	४५ ४८ १६	४५ ५९ ४४
८ धनु	४६ ११ १२	४६ २२ ४०	४६ ३४ ८	४६ ४५ ३६	४६ ५७ ४	४७ ०८ ३२	४७ २० ००	४७ ३० ००	४७ ४० ०	४७ ५० ०	४८ ०० ०	४८ १० ०	४८ २० ००	४८ ३० ००	४८ ४० ००	४८ ५० ००	४९ ०० ००	४९ १० ००	४९ २० ००	४९ ३० ००	४९ ४० ००	४९ ५० ००	५० ०० ००	५० १० ००	५० २० ००	५० ३० ००	५० ४० ००	५० ५० ००	५१ ०० ००	५१ १० ००
९ मकर	५१ २० ००	५१ ३० ००	५१ ४० ००	५१ ५० ००	५२ ०० ००	५२ १० ००	५२ २० ००	५२ २८ १४	५२ ३६ २८	५२ ४४ ४२	५२ ५२ ५६	५३ ०१ १०	५३ ९ २४	५३ १७ ३८	५३ २५ ५२	५३ ३४ ०६	५३ ४२ २०	५३ ५० ३४	५३ ५८ ४८	५४ ०७ ०२	५४ १५ १६	५४ २३ ३०	५४ ३१ ४४	५४ ३९ ५८	५४ ४८ १२	५४ ५६ २६	५४ ४ ४०	५५ १२ ५४	५५ २१ ०८	५५ २९ २२
१० कुम्भ	५५ ३७ ३६	५५ ४५ ५०	५५ ५४ ०४	५६ ०२ १८	५६ १० ३२	५६ १८ ४६	५६ २७ ००	५६ ३४ ०६	५७ ४१ १२	५७ ४८ १८	५७ ५५ २४	५७ ०२ ३०	५७ ०९ ३६	५७ १६ ४२	५७ २३ ४८	५७ ३० ५४	५७ ३८ ००	५७ ४५ ०६	५७ ५२ १२	५७ ५९ १८	५८ ०६ २४	५८ १३ ३०	५८ २० ३६	५८ २७ ४२	५८ ३४ ४८	५८ ४१ ५४	५८ ४९ ००	५८ ५६ ०६	५९ ०३ १२	५९ १० १८
११ मीन	५९ १७ २४	५९ २४ ३०	५९ ३१ ३६	५९ ३८ ४२	५९ ४५ ४८	५९ ५२ ५४	० ० ०	० ७ ६	० १४ १२	० २१ १८	० २८ २४	० ३५ ३०	० ४२ ३६	० ४९ ४२	० ५६ ४८	१ ३ ५४	१ ११ ०	१ १८ ०६	१ २५ १२	१ ३२ १८	१ ३९ २४	१ ४६ ३०	१ ५३ ३६	१ ०० ४२	२ ०७ ४८	२ १४ ५४	२ २२ ००	२ २९ ०६	२ ३६ १२	२ ४३ १८

❋ लग्नसारिणी ❋

अक्षांश ३०° । ००" पलभा ६ । ५५ । ४२, अयनांश २४° । ०५ स्वोदयपल (२१०, २४४, २९९, ३४५, ३५४, ३४८)

अल्मोड़ा, सहारनपुर, हरिद्वार, पटियाला, फाजिल्का, भटिण्डा, शाहबाद, मुल्तान आदि स्थानों के लिए-

	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
० मेष	२ ४८ ०	२ ५५ ०	३ ०२ ०	३ ९ ०	३ १६ ०	३ २३ ०	३ ३० ०	३ ३८ ८	३ ४६ १६	३ ५४ २४	४ २ ३२	४ १० ४०	४ १८ ४८	४ २६ ५६	४ ३५ ०४	४ ४३ १२	४ ५१ २०	४ ५९ २८	५ ७ ३६	५ १५ ४४	५ २३ ५२	५ ३२ ००	५ ४० ८	५ ४८ १६	५ ५६ २४	६ ०४ ३२	६ १२ ४०	६ २० ४८	६ २८ ५६	६ ३७ ०४
१ वृष	६ ४५ १२	६ ५३ २०	७ १ २८	७ ०९ ३६	७ १७ ४४	७ २५ ५२	७ ३४ ००	७ ४३ ५८	७ ५३ ५६	८ ३ ५४	८ १३ ५२	८ २३ ५०	८ ३३ ४८	८ ४३ ४६	८ ५३ ४४	९ ३ ४२	९ १३ ४०	९ २३ ३८	९ ३३ ३६	९ ४३ ३४	९ ५३ ३२	१० ०३ ३०	१० १३ २८	१० २३ २६	१० ३३ २४	१० ४३ २२	१० ५३ २०	११ ३ १८	११ १३ १६	११ २३ १४
२ मिथुन	११ ३३ १२	११ ४३ १०	११ ५३ ०८	१२ ०३ ०६	१२ १३ ०४	१२ २३ ०२	१२ ३३ ००	१२ ४४ ३०	१२ ५६ ००	१३ ०७ ३०	१३ १९ ००	१३ ३० ३०	१३ ४२ ००	१३ ५३ ३०	१४ ५ ००	१४ १६ ३०	१४ २८ ००	१४ ३९ ३०	१४ ५१ ००	१५ ०२ ३०	१५ १४ ००	१५ २५ ३०	१५ ३७ ००	१५ ४८ ३०	१६ ०० ००	१६ ११ ३०	१६ २३ ००	१६ ३४ ३०	१६ ४६ ००	१६ ५७ ३०
३ कर्क	१७ ०९ ००	१७ २० ३०	१७ ३२ ००	१७ ४३ ३०	१७ ५५ ००	१८ ०६ ३०	१८ १८ ००	१८ २९ ४८	१८ ४१ ३६	१८ ५३ २४	१९ ०५ १२	१९ १७ ००	१९ २८ ४८	१९ ४० ३६	१९ ५२ २४	२० ०४ १२	२० १६ ००	२० २७ ४८	२० ३९ ३६	२० ५१ २४	२१ ३ १२	२१ १५ ००	२१ २६ ४८	२१ ३८ ३६	२१ ५० २४	२२ ०२ १२	२२ १४ ००	२२ २५ ४८	२२ ३७ ३६	२२ ४९ २४
४ सिंह	२३ १ १२	२३ १३ ००	२३ २४ ४८	२३ ३६ ३६	२३ ४८ २४	२४ ०० १२	२४ १२ ००	२४ २३ ३६	२४ ३५ १२	२४ ४६ ४८	२५ १० २४	२५ २१ ०	२५ ३३ ३६	२५ ४४ १२	२५ ५६ ४८	२५ ८ २४	२६ १९ ००	२६ ३१ ३६	२६ ४२ १२	२६ ५४ ४८	२६ ०६ २४	२७ १७ ००	२७ २८ ३६	२७ ४० १२	२७ ५२ ४८	२८ ०४ २४	२८ १५ ००	२८ २७ ३६	२८ ३८ १२	२८ ४८ ४८
५ कन्या	२८ ५० २४	२९ ०२ ००	२९ १३ ३६	२९ २५ १२	२९ ३६ ४८	२९ ४८ २४	३० ०० ००	३० ११ ३६	३० २३ १२	३० ३४ ४८	३० ४६ २४	३० ५८ ०	३१ ०९ ३६	३१ २१ १२	३१ ३२ ४८	३१ ४४ २४	३१ ५६ ००	३२ ०७ ३६	३२ १९ १२	३२ ३० ४८	३२ ४२ २४	३२ ५४ ००	३३ ५ ३६	३३ १७ १२	३३ २८ ४८	३३ ४० २४	३३ ५२ ००	३४ ३ ३६	३४ १५ १२	३४ २६ ४८
६ तुला	३४ ३८ २४	३४ ५० ००	३५ १ ३६	३५ १३ १२	३५ २४ ४८	३५ ३६ २४	३५ ४८ ००	३५ ५९ ४८	३६ ११ ३६	३६ २३ २४	३६ ३५ १२	३६ ४७ ००	३६ ५८ ४८	३७ १० ३६	३७ २२ २४	३७ ३४ १२	३७ ४६ ००	३७ ५७ ४८	३८ ०९ ३६	३८ २१ २४	३८ ३३ १२	३८ ४५ ००	३८ ५६ ४८	३९ ०८ ३६	३९ २० २४	३९ ३२ १२	३९ ४४ ००	३९ ५५ ४८	४० ०७ ३६	४० १९ २४
७ वृश्चिक	४० ३१ १२	४० ४३ ००	४० ५४ ४८	४१ ०६ ३६	४१ १८ २४	४१ ३० १२	४१ ४२ ००	४१ ५३ ३०	४२ ०५ ००	४२ १६ ३०	४२ २८ ००	४२ ३९ ३०	४२ ५१ ००	४३ ०२ ३०	४३ १४ ००	४३ २५ ३०	४३ ३७ ००	४३ ४८ ३०	४४ ०० ००	४४ ११ ३०	४४ २३ ००	४४ ३४ ३०	४४ ४६ ००	४५ ५७ ३०	४५ ९ ००	४५ २० ३०	४५ ३२ ००	४५ ४३ ३०	४६ ५५ ००	४६ ६ ३०
८ धनु	४६ १८ ००	४६ २९ ३०	४६ ४१ ००	४६ ५२ ३०	४७ ०४ ००	४७ १५ ३०	४७ २७ ००	४७ ३६ ५८	४७ ४६ ५६	४७ ५६ ५४	४८ ०६ ५२	४८ १६ ५०	४८ २६ ४८	४८ ३६ ४६	४८ ४६ ४४	४८ ५६ ४२	४९ ०६ ४०	४९ १६ ३८	४९ २६ ३६	४९ ३६ ३४	४९ ४६ ३२	४९ ५६ ३०	५० ६ २८	५० १६ २६	५० २६ २४	५० ३६ २२	५० ४६ २०	५० ५६ १८	५१ ६ १६	५१ १६ १४
९ मकर	५१ २६ १२	५१ ३६ १०	५१ ४६ ०८	५१ ५६ ०६	५२ ०६ ०४	५२ १६ ०२	५२ २६ ००	५२ ३४ ०८	५२ ४२ १६	५२ ५० २४	५२ ५८ ३२	५३ ६ ४०	५३ १४ ४८	५३ २२ ५६	५३ ३१ ०४	५३ ३९ १२	५३ ४७ २०	५३ ५५ २८	५४ ३ ३६	५४ ११ ४४	५४ १९ ५२	५४ २८ ००	५४ ३६ ०८	५४ ४४ १६	५४ ५२ २४	५५ ०० ३२	५५ ८ ४०	५५ १६ ४८	५५ २४ ५६	५५ ३३ ४
१० कुम्भ	५५ ४१ १२	५५ ४९ २०	५५ ५७ २८	५६ ५ ३६	५६ १३ ४४	५६ २१ ५२	५६ ३० ००	५६ ३७ ००	५६ ४४ ००	५६ ५१ ००	५६ ५८ ००	५७ ०५ ००	५७ १२ ००	५७ १९ ००	५७ २६ ००	५७ ३३ ००	५७ ४० ००	५७ ४७ ००	५७ ५४ ००	५८ १ ००	५८ ०८ ००	५८ १५ ००	५८ २२ ००	५८ २९ ००	५८ ३६ ००	५८ ४३ ००	५८ ५० ००	५८ ५७ ००	५९ ४ ००	५९ ११ ००
११ मीन	५९ १८ ००	५९ २५ ००	५९ ३२ ००	५९ ३९ ००	५९ ४६ ००	५९ ५३ ००	० ० ०	० ७ ०	० १४ ०	० २१ ०	० २८ ०	० ३५ ०	० ४२ ०	० ४९ ०	० ५६ ०	१ ३ ०	१ १० ०	१ १७ ०	१ २४ ०	१ ३१ ०	१ ३८ ०	१ ४५ ०	१ ५२ ०	१ ५९ ०	२ ०६ ०	२ १३ ०	२ २० ०	२ २७ ०	२ ३४ ०	२ ४१ ०

❁ लग्नसारिणी ❁

अक्षांश ३१° । ००", पलभा ७/१२/३९, अयनांश २४° । ०५ स्वोदयपल (२०७, २४१, २९८, ३४६, ३५७, ३५१)

सोलन, फिरोजपुर, उत्तरकाशी, लुधियाना, फरीदकोट, रोपड़, शिमला आदि स्थानों के लिए-

	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
० मेष	२ ४५ ३६	२ ५२ ३०	२ ५९ ३४	३ ६ २८	३ १३ २२	३ २० १६	३ २७ १०	३ ३५ १२	३ ४३ १४	३ ५१ १६	३ ५९ १८	४ ७ २०	४ १५ २२	४ २३ २४	४ ३१ २६	४ ३९ २८	४ ४७ ३०	४ ५५ ३२	५ ३ ३४	५ ११ ३६	५ १९ ३८	५ २७ ४०	५ ३५ ४२	५ ४३ ४४	५ ५१ ४६	५ ५९ ४८	६ ७ ५०	६ १५ ५२	६ २३ ५४	६ ३१ ५६
१ वृष	६ ३९ ५८	६ ४८ ००	६ ५६ ०२	७ ०४ ०४	७ १२ ०६	७ २० ०८	७ २८ १०	७ ३८ ०६	८ ४८ ०२	८ ५७ ५८	८ ७ ५४	८ १७ ५०	८ २७ ४६	८ ३७ ४२	८ ४७ ३८	८ ५७ ३४	९ ७ ३०	९ १७ २६	९ २७ २२	९ ३७ १८	९ ४७ १४	९ ५७ १०	१० ७ ६	१० १७ ०२	१० २६ ५८	१० ३६ ५४	१० ४६ ५०	१० ५६ ४६	११ ०६ ४२	११ १६ ३८
२ मिथुन	११ २६ ३४	११ ३६ ३०	११ ४६ २६	११ ५६ २२	१२ ०६ १८	१२ १६ १४	१२ २६ १०	१२ ३७ ४२	१२ ४९ १४	१३ ०० ४६	१३ १२ १८	१३ २३ ४०	१३ ३५ १२	१३ ४६ ४४	१३ ५८ १६	१४ ९ ४८	१४ २१ २०	१४ ३२ ५२	१४ ४४ २४	१४ ५५ ५६	१५ ७ २८	१५ १९ ००	१५ ३० ३२	१५ ४२ ४	१५ ५३ ३६	१६ ५ ८	१६ १६ ४०	१६ २८ १२	१६ ३९ ४४	१६ ९९ १६
३ कर्क	१७ ०२ ४८	१७ १४ २०	१७ २५ ५२	१७ ३७ २४	१७ ४८ ५६	१८ ०० २८	१८ १२ ००	१८ २३ ५४	१८ ३५ ४८	१८ ४७ ४२	१९ ११ ३६	१९ २३ ३०	१९ ३५ २४	१९ ४७ १८	१९ ५१ १२	२० ११ ०६	२० २२ ०	२० ३४ ५४	२० ४६ ४८	२० ५८ ४२	२१ १० ३६	२१ २२ ३०	२१ ३४ २४	२१ ४६ १८	२१ ५८ १२	२२ १० ०६	२२ २१ ०	२२ ३३ ५४	२२ ४५ ४८	२२ ४२
४ सिंह	२२ ५७ ३६	२३ ९ ३०	२३ २१ २४	२३ ३३ १८	२३ ४५ १२	२३ ५७ ०६	२४ ०९ ००	२४ २० ४२	२४ ३२ २४	२४ ४४ ०६	२४ ५५ ४८	२५ ०७ ३०	२५ १९ १२	२५ ३० ५४	२५ ४२ ३६	२५ ५४ १८	२६ ०६ ००	२६ १७ ४२	२६ २९ २४	२६ ४१ ०६	२६ ५२ ४८	२७ ०४ ३०	२७ १६ १२	२७ २७ ५४	२७ ३९ ३६	२७ ५१ १८	२८ ०३ ००	२८ १४ ४२	२८ २६ २४	२८ ३८ ०६
५ कन्या	२८ ४९ ४८	२९ १ ३०	२९ १३ १२	२९ २४ ५४	२९ ३६ ३६	२९ ४८ १८	३० ०० ००	३० ११ ४२	३० २३ २४	३० ३५ ०६	३० ४६ ४८	३० ५८ ३०	३१ १० १२	३१ २१ ५४	३१ ३३ ३६	३१ ४५ १८	३१ ५७ ००	३२ ८ ४२	३२ २० २४	३२ ३२ ०६	३२ ४३ ४८	३२ ५५ ३०	३३ ०७ १२	३३ १८ ५४	३३ ३० २३	३३ ४२ १८	३३ ५४ ००	३४ ०५ ४२	३४ १७ २४	३४ २९ ०६
६ तुला	३४ ४० ४८	३४ ५२ ३०	३५ ०४ १२	३५ १५ ५४	३५ २७ ३६	३५ ३९ १८	३५ ५१ ००	३६ २ ५४	३६ १४ ४८	३६ २६ ४२	३६ ३८ ३६	३६ ५० ३०	३७ २ २४	३७ १४ १८	३७ २६ १२	३७ ३८ ०६	३७ ५० ००	३८ १ ५४	३८ १३ ४८	३८ २५ ४२	३८ ३७ ३६	३८ ४९ ३०	३९ १ २४	३९ १३ १८	३९ २५ १२	३९ ३७ ०६	३९ ४९ ००	४० ०० ५४	४० १२ ४८	४० २४ ४२
७ वृश्चिक	४० ३६ ३६	४० ४८ ३०	४१ ०० २४	४१ १२ १८	४१ २४ १२	४१ ३६ ०६	४१ ४८ ००	४१ ५९ ३२	४२ ११ ०४	४२ २२ ३६	४२ ३४ ०८	४२ ४५ ४०	४२ ५७ १२	४३ ८ ४४	४३ २० १६	४३ ३१ ४८	४३ ४३ २०	४३ ५४ ५२	४४ ६ २४	४४ १७ ५६	४४ २९ २८	४४ ४१ ००	४४ ५२ ३२	४५ ४ ४	४५ १५ ३६	४५ २७ ०८	४५ ३८ ४०	४५ ५० १२	४६ ०१ ४४	४६ १३ १६
८ धनु	४६ २४ ४८	४६ ३६ २०	४६ ४७ ५२	४६ ५९ २४	४७ १० ५६	४७ २२ २८	४७ ३४ ००	४७ ४३ ५६	४८ ५३ ५२	४८ ३ ४८	४८ १३ ४४	४८ २३ ४०	४८ ३३ ३६	४८ ४३ ३२	४९ ५३ २८	४९ ०३ २४	४९ १३ २०	४९ २३ १६	४९ ३३ १२	४९ ४३ ०८	५० ५३ ०४	५० ०३ ००	५० १२ ५६	५० २२ ५२	५० ३२ ४८	५० ४२ ४४	५० ५२ ४०	५१ ०२ ३६	५१ १२ ३२	५१ २२ २८
९ मकर	५१ ३२ २४	५१ ४२ २०	५१ ५२ १६	५२ ०२ १२	५२ १२ ०८	५२ २२ ०४	५२ ३२ ००	५२ ४० ०२	५२ ४८ ०४	५२ ५६ ०६	५३ ४ ०८	५३ १२ १०	५३ २० १२	५३ २८ १४	५३ ३६ १६	५३ ४४ १८	५३ ५२ २०	५४ ० २२	५४ ८ २४	५४ १६ २६	५४ २४ २८	५४ ३२ ३०	५४ ४० ३२	५४ ४८ ३४	५४ ५६ ३६	५५ ०४ ३८	५५ १२ ४०	५५ २० ४२	५५ २८ ४४	५५ ३६ ४६
१० कुम्भ	५५ ४४ ४८	५५ ५२ ५०	५६ ०० ५२	५६ ०८ ५४	५६ १६ ५६	५६ २४ ५८	५६ ३३ ००	५६ ३९ ५४	५७ ४६ ४८	५७ ५३ ४२	५७ ०० ३६	५७ ०७ ३०	५७ १४ २४	५७ २१ १८	५७ २८ १२	५७ ३५ ०६	५७ ४२ ००	५७ ४८ ५४	५७ ५५ ४८	५७ ०२ ४२	५८ ९ ३६	५८ १६ ३०	५८ २३ २४	५८ ३० १८	५८ ३६ १२	५८ ४३ ०६	५८ ५० ००	५८ ५७ ५४	५९ ४ ४८	५९ ११ ४२
११ मीन	५९ १८ ३६	५९ २५ ३०	५९ ३२ २४	५९ ३९ १८	५९ ४६ १२	५९ ५३ ०६	० ० ०	० ६ ५४	० १३ ४८	० २० ४२	० २७ ३६	० ३४ ३०	० ४१ २४	० ४८ १८	१ ५५ १२	१ ०२ ०६	१ ०९ ००	१ १५ ५४	१ २२ ४८	१ २९ ४२	१ ३६ ३६	१ ४३ ३०	१ ५० २४	१ ५७ १८	२ ०४ १२	२ ११ ०६	२ १८ ००	२ २४ ५४	२ ३१ ४८	२ ३८ ४२

❋ दशम-लग्न-सारिणी ❋

विशेष : दशम लग्न निकालने के लिए अभीष्ट अक्षांश से सम्बन्धित लग्न-सारिणी से सूर्य के राशि अंश का फल लेकर इष्टकाल जोड़ना चाहिए। जुड़े हुए फल में से १५ घटी घटा कर शेष फल को दशम लग्न सारिणी में बाई ओर राशि एवं ऊपर अंश देखकर उसके तुल्य दशम लग्न होगा। सूक्ष्म फल हेतु अनुपात द्वारा कला विकला का आनयन करना चाहिए।

	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
० मेष	३ ४० ६	३ ४९ २४	३ ५८ ४२	४ ८ ०	४ १७ १८	४ २६ ३६	४ ३५ ५४	४ ४५ १२	४ ५५ १०	५ ५ ८	५ १५ ६	५ २५ ४	५ ३५ २	५ ४५ ०	५ ५४ ५८	६ ४ ५६	६ १४ ५४	६ २४ ५२	६ ३४ ५०	६ ४४ ४८	६ ५४ ४६	७ ४ ४४	७ १४ ४२	७ २४ ४०	७ ३४ ३८	७ ४४ ३६	७ ५४ ३४	८ ४ ३२	८ १४ ३०	८ २४ २८
१ वृष	८ ३४ २६	८ ४४ २४	८ ५४ २२	९ ४ २०	९ १४ १८	९ २४ १६	९ ३४ १४	९ ४४ १२	९ ५४ ५६	१० ५ ४०	१० १६ २४	१० २७ ८	१० ३७ ५२	१० ४८ ३६	१० ५९ २०	१० १० ४	११ २० ४८	११ ३१ ३२	११ ४२ १६	११ ५३ ०	१२ ३ ४४	१२ १४ २८	१२ २५ १२	१२ ३५ ५६	१२ ४६ ४०	१२ ५७ २४	१३ ८ ८	१३ १८ ५२	१३ २९ ३६	१३ ४० २०
२ मिथुन	१३ ५१ ४	१४ १ ४८	१४ १२ ३२	१४ २३ १६	१४ ३४ ०	१४ ४४ ४४	१४ ५५ २८	१५ ६ १२	१५ १६ ५६	१५ २७ ४०	१५ ३८ २४	१५ ४९ ८	१५ ५९ ५२	१६ १० ३६	१६ २१ २०	१६ ३२ ४	१६ ४२ ४८	१६ ५३ ३२	१७ ४ १६	१७ १५ ०	१७ २५ ४४	१७ ३६ २८	१७ ४७ १२	१७ ५७ ५६	१८ ८ ४०	१८ १९ २४	१८ ३० ८	१८ ४० ५२	१८ ५१ ३६	१८ २ २०
३ कर्क	१९ १३ ४	१९ २३ ४८	१९ ३४ ३२	१९ ४५ १६	१९ ५६ ०	२० ६ ४४	२० १७ २८	२० २८ १२	२० ३८ १०	२० ४८ ८	२० ५८ ६	२१ ८ ४	२१ १८ २	२१ २८ ०	२१ ३७ ५८	२१ ४७ ५६	२१ ५७ ५४	२२ ७ ५२	२२ १७ ५०	२२ २७ ४८	२२ ३७ ४६	२२ ४७ ४४	२२ ५७ ४२	२३ ७ ४०	२३ १७ ३८	२३ २७ ३६	२३ ३७ ३४	२३ ४७ ३२	२३ ५७ ३०	२४ ७ २८
४ सिंह	२४ १७ २६	२४ २७ २४	२४ ३७ २२	२४ ४७ २०	२४ ५७ १८	२५ ७ १६	२५ १७ १४	२५ २७ १२	२५ ३६ ३०	२५ ४५ ४८	२६ ५५ ६	२६ ४ २४	२६ १३ ४२	२६ २२ ०	२६ ३१ १८	२६ ४० ३६	२६ ४९ ५४	२६ ५९ १२	२७ ८ ३०	२७ १७ ४८	२७ २७ ६	२७ ३६ २४	२७ ४५ ४२	२७ ५५ ०	२८ ४ १८	२८ १३ ३६	२८ २२ ५४	२८ ३२ १२	२८ ४१ ३०	२८ ५० ४८
५ कन्या	२९ ० ६	२९ ९ २४	२९ १८ ४२	२९ २८ ०	२९ ३७ १८	२९ ४६ ३६	२९ ५५ ५४	३० ५ १२	३० १५ ३०	३० २४ ४८	३० ३४ ६	३० ४३ २४	३० ५२ ४२	३१ २ ०	३१ ११ १८	३१ २० ३६	३१ २९ ५४	३१ ३९ १२	३१ ४८ ३०	३१ ५७ ४८	३२ ७ ६	३२ १६ २४	३२ २५ ४२	३२ ३५ ०	३२ ४४ १८	३२ ५३ ३६	३३ २ ५४	३३ १२ १२	३३ २१ ३०	३३ ३० ४८
६ तुला	३३ ४० ६	३३ ४९ २४	३३ ५८ ४२	३४ ८ ०	३४ १७ १८	३४ २६ ३६	३४ ३५ ५४	३४ ४५ १२	३४ ५५ १०	३५ ५ ८	३५ १५ ६	३५ २५ ४	३५ ३५ २	३५ ४५ ०	३५ ५४ ५८	३६ ४ ५६	३६ १४ ५४	३६ २४ ५२	३६ ३४ ५०	३६ ४४ ४८	३६ ५४ ४६	३७ ४ ४४	३७ १४ ४२	३७ २४ ४०	३७ ३४ ३८	३७ ४४ ३६	३७ ५४ ३४	३८ ४ ३२	३८ १४ ३०	३८ २४ २८
७ वृश्चिक	३८ ३४ २६	३८ ४४ २४	३८ ५४ २२	३९ ४ २०	३९ १४ १८	३९ २४ १६	३९ ३४ १४	३९ ४४ १२	३९ ५४ ५६	४० ५ ४०	४० १६ २४	४० २७ ८	४० ३७ ५२	४० ४८ ३६	४० ५९ २०	४० १० ४	४१ २० ४८	४१ ३१ ३२	४१ ४२ १६	४१ ५३ ०	४२ ३ ४४	४२ १४ २८	४२ २५ १२	४२ ३५ ५६	४२ ४६ ४०	४२ ५७ २४	४३ ८ ८	४३ १८ ५२	४३ २९ ३६	४३ ४० २०
८ धनु	४३ ५१ ४	४४ १ ४८	४४ १२ ३२	४४ २३ १६	४४ ३४ ०	४४ ४४ ४४	४४ ५५ २८	४५ ६ १२	४५ १६ ५६	४५ २७ ४०	४५ ३८ २४	४५ ४९ ८	४५ ५९ ५२	४६ १० ३६	४६ २१ २०	४६ ३२ ४	४६ ४२ ४८	४६ ५३ ३२	४७ ४ १६	४७ १५ ०	४७ २५ ४४	४७ ३६ २८	४७ ४७ १२	४७ ५७ ५६	४८ ८ ४०	४८ १९ २४	४८ ३० ८	४८ ४० ५२	४८ ५१ ३६	४९ ०२ २०
९ मकर	४९ १३ ४	४९ २३ ४८	४९ ३४ ३२	४९ ४५ १६	४९ ५६ ०	५० ६ ४४	५० १७ २८	५० २८ १२	५० ३८ १०	५० ४८ ८	५० ५८ ६	५१ ८ ४	५१ १८ २	५१ २८ ०	५१ ३७ ५८	५१ ४७ ५६	५१ ५७ ५४	५२ ७ ५२	५२ १७ ५०	५२ २७ ४८	५२ ३७ ४६	५२ ४७ ४४	५२ ५७ ४२	५३ ७ ४०	५३ १७ ३८	५३ २७ ३६	५३ ३७ ३४	५३ ४७ ३२	५३ ५७ ३०	५४ ७ २८
१० कुम्भ	५४ १७ २६	५४ २७ २४	५४ ३७ २२	५४ ४७ २०	५४ ५७ १८	५५ ७ १६	५५ १७ १४	५५ २७ १२	५५ ३६ ३०	५५ ४५ ४८	५६ ५५ ६	५६ ४ २४	५६ १३ ४२	५६ २३ ०	५६ ३२ १८	५६ ४१ ३६	५६ ५० ५४	५७ ० १२	५७ ९ ३०	५७ १८ ४८	५७ २८ ६	५७ ३७ २४	५७ ४६ ४२	५७ ५६ ०	५८ १४ १८	५८ २३ ३६	५८ ३३ ५४	५८ ४२ १२	५८ ५१ ३०	५८ ५२ ४८
११ मीन	५९ १ ६	५९ १० २४	५९ १९ ४२	५९ २९ ०	५९ ३८ १८	५९ ४७ ३६	५९ ५६ ५४	० ६ १२	० १५ ३०	० २४ ४८	० ३४ ६	० ४३ २४	१ ५२ ४२	१ २ ०	१ ११ १८	१ २० ३६	१ २९ ५४	१ ३९ १२	१ ४८ ३०	१ ५७ ४८	१ ७ ६	२ १६ २४	२ २५ ४२	२ ३५ ०	२ ४४ १८	२ ५३ ३६	३ २ ५४	३ १२ १२	३ २१ ३०	३ ३० ४८

नैसर्गिक ग्रह-मैत्री चक्र

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु
मित्र	चं. मं. गु.	सू. बु.	सू. चं. गु.	सू. शु.	सू. चं. मं.	बु. श.	बु. शु.	बु. शु. श.
शत्रु	शु. श.	रा.	बु.	चं.	बु. शु.	सू. चं.	सू. चं. मं.	सू. चं. मं
सम	बु.	मं. गु. श.	शु. श.	मं. गु. श.	श.	मं. गु.	गु.	गु.

तात्कालिक-मैत्री

ग्रह स्थान से २, ३, ४, १०, ११, १२ स्थान में स्थित ग्रह मित्र तथा ग्रह स्थान से १, ५, ६, ७, ८, ९ स्थान में स्थित ग्रह शत्रु होते हैं।

नक्षत्रों की अन्धाक्ष-मन्दाक्ष-सुलोचनादि संज्ञा

अन्धाक्ष	रो., पु., उ.फा., वि., पू.षा., ध., रे.,	पूर्व	शीघ्र लाभ
मन्दाक्ष	मृ., आश्ले., ह., अनु., उ.षा., शत., अश्वि.,	दक्षिण	प्रयत्न से लाभ
मध्याक्ष	आ., म., चि., ज्ये., अभि., पू.भा., भ.	पश्चिम	दूरश्रवण, लाभ नहीं
सुलोचन	पुन., पू.फा., स्वा., मू., श्रव., उ.भा., कृ.	उत्तर	न श्रवण न लाभ

तिथि-वार-नक्षत्रदिवस सिद्ध्यादि योगचक्र

वार	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
सिद्धि योग	३।८।१३	१।६।११	३।८।१३	२।७।१२	५।१०।१५	१।६।११	४।९।१४
अमृत योग	५।१०।१५	५।१०।१५	२।७।१२	१।६।११	३।८।१३	४।९।१४	१।६।११
सर्वार्थ सिद्धि योग	अश्वि. पुष्य हस्त, मूल उ.फा., उ.षा. उ.भा.	रो.मृ. पुष्य श्रवण अनु.	अश्वि. उ.भा. कृ., आश्ले.	रो. मृ. ह. अनु.	अश्वि. पुष्य पुन. अनु. रे.	अश्वि. पुन. अनु. श्रव. रे.	रो. स्वा. श्रवण
मृत्यु योग	१।६।११	२।७।१२	१।६।११	३।८।१३	४।९।१४	२।७।१२	५।१०।१५
राज्यप्रद योग	x	x	४।९।१४	x	x	x	४।९।१४

शिव-वास

वर्तमान तिथि को दो से गुणा करके पाँच जोड़ने पर जो प्राप्त हो, उसको सात से भाग देने पर एक शेष रहने पर कैलाश में श्रेष्ठ, दो से गौरी पार्श्व में श्रेष्ठ, तीन से वृषोपरि श्रेष्ठ, चार से सभा में सामान्य, पाँच से ज्ञानलेवा में श्रेष्ठ, छः से क्रीड़ा में नेष्ट तथा शून्य से श्मशान में मृत्युकारक है।

विविध-मुहूर्त्तों का विचार

गर्भाधान के मुहूर्त्त का विचार-

रजोदर्शन प्रारम्भ से ४ रात्रि उपरान्त सम-रात्रियों में रो०, ह०, स्वा०, मृ०, अनु०, श्र०, ध०, शतभिषा तीनों उत्तरा इन नक्षत्रों में मेष, कर्क, सिंह, तुला, धनु, मकर इन लग्नों में तथा लग्न से ३-६-११वें स्थानों पर पाप ग्रह हो रवि, मंगल और गुरु की लग्न पर दृष्टि, नवांश विषम राशि का हो, (स्त्री को विशेष रूप से चन्द्र श्रेष्ठ हो) ऐसे समय का विचार कर गर्भाधान संस्कार करें। (पुन०, अश्वि०, पुष्य, चित्रा) इन नक्षत्रों में गर्भाधान मध्यम है।

गर्भाधान-मुहूर्त्त-चक्र

रो०, हस्त, स्वाती, मृग०, अनु०, श्र०, ध०, शत०, तीनों उत्तरा	श्रेष्ठ नक्षत्र
पुनर्वसु, अश्विनी, पुष्य, चित्रा	मध्यम नक्षत्र
१-४-५-७-९-१०	लग्न
लग्न से ३-६-११वें पापग्रह हों	
१-३-५-७-९-११	नवांश
रजोदर्शन से ६-८-१०-१२-१४-१६वीं	रात्रियाँ

पुंसवन तथा सीमन्त मुहूर्त्त विचार-

गर्भ के तृतीय मास में रवि, मंगल, गुरुवार को दम्पति के श्रेष्ठ चन्द्र में, तारा शुद्धि में, रो०, मृग०, पुष्य, पुन०, हस्त, मू०, श्रवण, ३ उत्तरा नक्षत्रों में जन्म को त्याग कर, शुक्ल पक्ष १-२-३-५-७-१०-११, १३ तथा कृष्ण पक्ष की में दशमी पर्यन्त तिथियों में दिन में पूर्व भाग में पुरूष संज्ञक नवमांश लग्न में होने पर तथा लग्न से १-४-५-७-९-१० स्थानों पर शुभ ग्रह तथा ३-६-११वें स्थानों पर पापग्रहों की स्थिति में एवं चन्द्र की १-६-८-१२वें स्थिति न होने पर पुंसवन व सीमन्त संस्कार शुभ हैं इस संस्कार में गुरु शुक्रास्त अविचारणीय है। (गर्भ से) ६-८ मासों में मासाधिपति बली होने पर शुभ है।

पुंसवन तथा सीमन्त मुहूर्त्त चक्र

गर्भ से तृतीय मास में तथा मासाधिपति बली होने पर ६, ८ मासों में	मास
शुक्ल पक्ष की १-२-३-५-७-१०-११- १३, कृष्ण पक्ष की १ से १० (जन्म नक्षत्र को छोड़कर)	तिथि
रो०, मृग०, पुष्य, पुन०, हस्त, मूल, श्रवण तीनों उत्तरा	नक्षत्र
१-३-५-७-११	लग्न
रवि, मंगल, गुरु मतान्तर से सोम, बुध, शुक्र	वार

स्तनपान कराने का मुहूर्त्त-

जन्म के पाँचवें दिन अथवा भद्रा, व्यतिपात, वैधृति ४-९-१४ तिथि को छोड़कर शुभ तिथि को सोम, बुध, गुरु, शुक्र वारों में पुन०, पुष्य, मृ०, म०, श्र०, रे० नक्षत्रों में बालक को प्रथम बार स्तनपान शुभ है।

स्तनपान मुहूर्त्त चक्र

२-३-५-८-१०-११-१३-१५	तिथि
सोम, बुध, गुरु, शुक्र	वार
पुन०, पुष्य, मृ०, म०, श्र०, रे०	नक्षत्र
भद्रा, व्यतिपात, वैधृति, रिक्ता तिथि	त्याज्य

जलपूजन करने का मुहूर्त्त-

जन्म के अनन्तर प्रथम मास की समाप्ति पर बुध, गुरु, चन्द्र वारों में ४-९-१४-३०

तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में मृ०, पुन०, पुष्य, हस्त, अनु०, मूल, श्रवण नक्षत्रों में प्रसूता स्त्री द्वारा जलपूजन करना (कुंआ-पूजना) श्रेष्ठ है।

चैत्र, पौष, अधिमास, गुरु-शुक्रास्त का विचार १ मास के बाद ही करें।

जल पूजन करने के लिए मुहूर्त्त-चक्र

१-२-३-५-६-८-१०-११-१२-१३-१	तिथि
बुध, गुरु, सोम	वार
मृग०, पुन०, पुष्य, हस्त, अनु०, मूल, श्रवण	नक्षत्र
प्रथममासोपरान्तचैत्र, पौष अधिक-मास, गु-शुक्रास्त, रिक्ता व अमा० तिथि	त्याज्य

जातकर्म और नामकरण संस्कार मुहूर्त्त-

जातकर्म अर्थात् शिशु के जन्म होने के बाद का कार्य नाल छेदन से पूर्व करना उचित है। नामकरण सूतक निवृत्ति के उपरान्त ब्राह्मण ११वें दिन, क्षत्रिय १३वें दिन, शूद्र २१वें दिन कुल की परम्परा के अनुसार करें। दस दिन से पूर्व कदापि शुद्धि के अभाव के कारण नामकरण संस्कार न करें। सूतक समाप्ति पर ११वें या १२वें दिन नाम संस्कार बिना मुहूर्त्त विचार कर लें। १२ दिन के बाद भद्रा, व्यतिपात, वैधृति, संक्रान्ति रहित दिनों में रिक्ता १-२-३-५-६-७-१०- ११-१२-१३ इन तिथियों में शुभ वार, अश्वि०, रो०, मृ०, पुन०, पुष्य, हस्त, चि०, स्वा०, अनु०, तीनों उत्तरा, अभि०, श्र०, ध०, श०, रे०, नक्षत्रों में लग्न नवांश बल का विचार कर नामकरण करें।

नामकरण संस्कार मुहूर्त्त चक्र

१-२-३-५-६-७-८-१०-११-१२-१३	तिथि
सोम, बुध, गुरु, शुक्र	वार
अश्वि०, रो०, मृ०, पुन०, पुष्य, ह०, चि०, स्वा०, अनु०, ३ उत्तरा, अभि०, श्रव०, धनि०, शत, रेवती	नक्षत्र
जन्म से १० दिन, भद्रा, व्यतिपात, वैधृति, संक्रान्ति रहित दिन, पर्व व रिक्ता तिथि।	त्याज्य

निष्क्रमण मुहूर्त्त अर्थात् बालक के प्रथम बार घर से निकलने का मुहूर्त्त-

जन्म से बारहवें दिन बिना मुहूर्त्त विचार के बालक का निष्क्रमण कर, सूर्य नक्षत्रों का पूजन करके सूर्य नक्षत्र व देवताओं का दर्शन करावें। यदि बारहवें दिन यह न हो पावें तब जन्म से ३ मास में मंगल शनि वर्जित वारों व रिक्ता, विष्टि, अमा० आदि अशुभ योग से भिन्न शुभ दिन में अश्वि०, रो०, पुन०, पुष्य, हस्त, अनुराधा, स्वाति, मूल, श्रवण, धनिष्ठा नक्षत्रों में प्रथम निष्क्रमण शुभ है।

बालक के प्रथम बार घर से निष्क्रमण के लिए मुहूर्त्त चक्र

तिथि	१-२-३-५-६-७-८-१०-११-१२-१३
वार	रवि, सोम, बुध, गुरु, शुक्र
नक्षत्र	अश्वि०, रो०, पुन०, पुष्य, हस्त, अनु०, स्वा०, मूल, श्र०, धनि०
त्याज्य	मंगल, शनिवार, रिक्ता, अमा०, विष्टि, अशुभ योग

भूमि पर प्रथमोपवेश का विचार-

जन्म से पंचम मास में रिक्ता, अमा०, रहित तिथि, शुभवार, अश्वि०, रो०, मृ०, पुष्य, हस्त, अनु०, ज्येष्ठा, अभि०, ३ उत्तरा नक्षत्रों में स्थिर लग्न का विचार कर बालक की कमर में काला सूत्र बांधकर पृथवी और वराह का पूजन कर 'पृथ्वी' पर बैठावें। इस समय बालक के सामने विविध वस्तुएँ रखें आजीविका की जिस वस्तु को वह उठावे उसी से आजीविका समझनी चाहिए।

भूमि पर पहली बार बैठाने के लिए मुहूर्त्त चक्र

तिथि	पंचममास में १-२-३-५-६-७-८-१० ११-१२-१३-१५
वार	सोम, बुध, गुरु, शुक्र
नक्षत्र	अश्वि०, रो०, मृ०, पुष्य, हस्त, अनु०, ज्ये०, ३ उत्तरा
लग्न	२-५-८-११

अन्नप्राशन कराने का विचार-

बालक के नामकरण, निष्क्रमण, भूमि उपवेशन के बाद ६, ८, १०, १२वें मास में पुत्र को और ५, ७, ९, ११वें मास में कन्या को अन्नप्राशन करावें।

विशेष-

उक्त मासों में भद्रा व्यतिपात दोष रहित १, ३, ५, ७, १०, १३, १५ तिथियों में शुभवार अश्वि०, रो०, मृ०, पुन०, पु०, हस्त, चि०, स्वा०, अनु०, श्र०, ध०, शत०, तीनों उत्तरा, रेवती नक्षत्रों में १, ३, ४, ५, ७, ९ स्थानों में शुभ ग्रह हों जन्म-लग्न व जन्म राशि से अष्टम लग्न या नवांश तथा १२, १, ८ लग्न को त्यागकर पाप शुद्ध दशम भाव इन सभी बातों का ध्यान कर अन्नप्राशन कराना श्रेष्ठ है।

अन्नप्राशन कराने के लिए मुहूर्त्त-चक्र

मास	पुत्र को - ६, ८, १०, १२
	कन्या को - ५, ७, ९, ११
तिथि	१, ३, ५, ७, १०, १३, १५
वार	सोम, बुध, गुरु, शुक्र
नक्षत्र	अश्वि०, रो०, मृ०, पुन०, पु०, हस्त, चि०, स्वा०, अनु०, श्र०, ध०, श०, तीनों उत्तरा, रेवती
लग्न	२, ३, ४, ५, ६, ७, ९, १०, ११
त्याज्य	जन्म लग्न से व जन्म राशि से अष्टम लग्न या नवांश तथा १२, १, ८ लग्न। दशम में पाप ग्रह, भद्राव्यतिपातादि दोष।

कर्ण-वेध करने का विचार-

समवर्ष, चैत्र, पौष, जन्ममास, देवशयन, जन्म नक्षत्र व तिथि, क्षयतिथि व रिक्ता को त्यागकर जन्म से १२वें या १६वें दिन अथवा ६, ७, ८वें मास में या विषम वर्षों में शुभवार, अश्वि०, मृ०, पुन०, पुष्य, हस्त, चि०, अनु०, श्र०, धनि०, रे० नक्षत्रों में लग्न से अष्टम शुद्ध समय में वृष, तुला, धनु, मीन, लग्न में तथा गुरु की लग्न में स्थिति होने पर कर्ण-वेध श्रेष्ठ होता है।

कर्णवेध-मुहूर्त्त चक्र

वर्षादि	विषम वर्ष । ६, ७, ८वें मास।
	जन्म से १२वें या १३वें दिन।
तिथि	१, २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १५
वार	सोम, बुध, गुरु, शुक्र
नक्षत्र	अश्वि०, मृ०, पुन०, पु०, हस्त, चि०, अनु०, श्र०, धनि०, रे०
लग्न	२, ७, ९, १२
वार	सोम, बुध, गुरु, शुक्र
त्याज्य	समवर्ष, देवशयन, (आषाढ़ शु० ११) से कार्तिक शु० ११ तक) चैत्र, पौष, जन्ममास-तिथि-नक्षत्र, क्षय तथा रिक्ता तिथि ।

चूडाकर्म (मुण्डन) संस्कार विचार-

अपने कुल की परम्परा के अनुसार इष्टदेव या तीर्थ स्थान पर मुण्डन संस्कार और कर्ण वेध किया जा सकता है। यह चौल कर्म विषम वर्ष, उत्तरायण, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ तिथियों में शुभ वारों में अश्वि०, मृ०, पुन०, पुष्य, हस्त, चि०, स्वा०, ज्ये०, श्र०, धनि०, शत०, रे० नक्षत्रों में करना श्रेष्ठ है। अष्टम भाव शुद्ध होना चाहिए। ज्येष्ठ, चैत्र मास में न करें। बालक की माता को ५ मास की गर्भ स्थिति होने पर ५ वर्ष से न्यून अवस्था के शिशु का मुण्डन न करें।

चूडाकर्म संस्कार के मुहूर्त्त के लिए चक्र

वर्ष	विषम । सूर्य उत्तरायण होने पर
तिथि	२, ३, ५, ७, १०, ११, १३
वार	सोम, बुध, गुरु, शुक्र
नक्षत्र	अश्वि०, मृग०, पुन०, पुष्य, हस्त, चि०, स्वा०, ज्ये०, श्रव०, धनि०, श०, रे०
त्याज्य	लग्न से अष्टम ग्रह, ज्येष्ठ, चैत्रमास समवर्ष, दक्षिणायन।

कन्या के नाक बिंधवाने का विचार-

शुक्ल पक्ष रिक्ता व अमा० रहित तिथि, सोम, बुध, गुरु, शुक्र, अशुभ योग रहित प्रथम प्रहर, अश्वि०, मृ०, पुन०, पुष्य, हस्त, चि०, अनु०, श्र०, धनि०, रे०, ३ उत्तरा, स्वाती, शत०, इन नक्षत्रों में कन्या की नाक बींधना शुभ है।

कन्या नासिकाछेदन-मुहूर्त्त-चक्र

पक्ष	शुक्ल पक्ष
तिथि	१, २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १५
वार	सोम-बुध-गुरु-शुक्र
प्रहर	प्रथम
नक्षत्र	अश्वि०, मृग०, पुन०, हस्त, चि०, स्वा०, अनु०, श्रव०, धनि०, शत०, तीनों उत्तरा, रेवती

अक्षरारम्भ करने का विचार-

बालक को विद्यारम्भ से पूर्व अक्षर अंक आदि ज्ञानार्थ अक्षरारम्भ का विचार होता है। सूर्य उत्तरायण हो, जन्म से ५, ७वें वर्ष में। १,२, ३, ५, ६, १०, ११,१२ तिथि, शुभवार, अश्वि०, आर्द्रा, पुन०, पुष्य, ह०, चि०, स्वा०, अनु०, श्रव०, रे०, इन नक्षत्रों में चरलग्नों को छोड़कर अन्य लग्नों में गणेश, विष्णु, सरस्वती, लक्ष्मी तथा अपने कुल देवताओं का पूजन कर अक्षरारम्भ मुहूर्त्त करें।

अक्षरारम्भ मुहूर्त्त-चक्र

अयन	उत्तरायण
वर्ष	५वां, ७वां
वार	सोम, बुध, गुरु, शुक्र
तिथि	२, ३, ५, ६, ८, ९, ११, १२
लग्न	२, ३, ५, ६, ८, ९, ११, १२
नक्षत्र	अश्वि०, आर्द्रा, पुन०, पुष्य, हस्त, चि०, स्वा०, अनु०, श्र०, रेवती।

विद्यारम्भ कराने का विचार-

अक्षरारम्भ के उपरान्त विशेष ज्ञान बढ़ाने वाली किसी भी भाषास्थ विद्या (विशेषत: संस्कृत भाषास्थ विद्या) का प्रारम्भ फाल्गुन मास छोड़कर उत्तरायण, २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथियों में, रवि बुध, गुरु, शुक्र वारों में और अश्वि०, आश्ले०, मृग०, आर्द्रा, पुन०, पुष्य, हस्त, चि०, स्वा०, अनु०, मूल, श्र०, ध०, श०, तीनों पूर्वा, रेवती इन नक्षत्रों में श्रेष्ठ है। अंग्रेजी, फारसी, उर्दू के विद्यारम्भ के लिए रवि, मंगल, शनिवार, रिक्ता तिथि, ज्ये०, आश्ले०, म०, ३ पूर्वा, भ०, कृ०, वि०, आर्द्रा, उ०षा०, शत०, इन नक्षत्रों में शुभ है।

विद्यारम्भ मुहूर्त्त-चक्र

अयन		उत्तरायण
तिथि		२, ३, ५, ६, १०, ११, १२
संस्कृत व हिंदी विद्यारम्भ त्याज्य		फाल्गुन मास, रिक्तादि तिथि अशुभवार
वार		रवि, बुध, गुरु, शुक्र
नक्षत्र		अश्वि०, रो०, मृ०
ग्राह्य		आर्द्रा, पुन०, पुष्य०, आ०, ह०, चि०, स्वा०, अनु, मू०, श्र०, ध०, श०, ३ पूर्वा, रे०
अंग्रेजी	वार	रवि, मंगल, शनि
फारसी	तिथि	४, ९, १४
उर्दू आदि	नक्षत्र	ज्ये०, आश्ले०, म०, ३ पूर्वा०, मू०, कृ०, वि०, आर्द्रा, उ०षा०, शत० ।

उपनयन संस्कार के मुहूर्त्त का विचार-

यज्ञोपवीतपरिधान (उपनयन संस्कार)

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तीनों को करना चाहिए। बालक के जन्म से या गर्भ से ब्राह्मण ८वें, क्षत्रिय ११वें, वैश्य १२वें वर्ष में यज्ञोपवीत संस्कार करे इस काल के व्यतीत हो जाने पर ब्राह्मण १६वें, क्षत्रिय २२वें, वैश्य २४वें वर्ष तक उपनयन करा सकते हैं। बालक (बटुक) का गुरुबल तथा चन्द्रबल विचारें। देवशयन से पूर्व तक उत्तरायण सूर्य में, रवि, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्रवारों में शुक्ल पक्ष की २, ३, ५, १०, ११, १२ तथा कृष्णपक्ष की २, ३, ५ तिथियों में अश्वि०, रो०, मृ०, आर्द्रा, पुन०, पुष्य, आश्ले०, तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, हस्त, चि०, स्वा०, अनु०, मूल, श्र०, ध०, शत०, रेवती इन नक्षत्रों के क्रूर तथा वेधरहित होने पर पूर्वाह्न में, अभिजित मुहूर्त्त में यज्ञोपवीत संस्कार करावें।

चैत्र मास, मीन के सूर्य में, वृष या कर्क के पूर्ण चन्द्रमा के लग्न में रहने पर विशेष श्रेष्ठतम होता है।

सामवेदियों को मंगलवार भी श्रेष्ठ है तथा भौमबल विचार भी आवश्यक है। उपनयन संस्कार में दक्षिणायन सूर्य, देवशयन, गुरु, शुक्र का बाल वृद्धास्त, अपराह्न, ज्ये०, शु० २, आषाढ़ शु० १०, पौष शु० ११, माघ शु० १२, संक्रान्ति दिन, रोगबाण, रवि के ८, १७, २६ गतांश, लग्नेश और चन्द्र, शुक्र, गुरु की ६, ८, १२ में स्थिति, १, ५, ८वें भावों में पापग्रह अशुभ है। अतः इन सब का परित्याग कर उपनयन संस्कार करें।

उपनयन मुहूर्त्त-चक्र

	ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य		
वर्ष	(८ या १६) (११ या २२) (१२ या २४)		
अयन	देवशयन से पूर्व उत्तरायण में,		
वार	रवि, चं.०, बुध, गुरु, शुक्र		
पक्ष	शुक्ल पक्ष की २, ३, ५, १०, ११,१२		
तिथि	कृष्ण पक्ष की २, ३, ५		
नक्षत्र	अश्वि०, रो०, मृग०, आर्द्रा०, पुन०, पुष्य,		
	आश्ले०, तीनों पूर्वा, ३ उत्तरा, ह०,		
	चि०, स्वा०, अनु०, मूल, श्र०,		
	ध०, शत०, रेवती		
गुरु	५, ११, ९ २, ७ श्रेष्ठ	१०, ६, ३, १ पूज्य	४, ८, १२, निन्दित
अन्य	पूर्वाह्न, अभिजित मुहूर्त्त		
ग्राह्य	(सामवेदियों को भौमबल व मंगलवार भी)		
त्याज्य	गुरु, शुक्र का बाल वृद्धास्त, दक्षिणायन, संक्रान्ति दिवस, रोगबाण तथा लग्नेश, चं०, शु०, गु०, की ६, ८, १२वें, पाप ग्रहों की १, ५, ८वें स्थिति।		

जन्मराशि से विवाह मुहूर्त्तोपयोगी त्रिबलशुद्धि

बल	गुरु	चन्द्र	सूर्य
श्रेष्ठ	२, ५, ७, ९, ११	१, २, ३, ५, ६, ७, ९, १०, ११	३, ६, १०,११
पूज्य	१, ३, ६, १०	१२	१, २, ५, ७, ९
नेष्ट	४, ८, १२	४, ८	४, ८, १२

यहाँ वर को सूर्यबल कन्या को गुरुबल तथा दोनों को चन्द्रबल देखना चाहिए।

वरस्य भास्करबलं कन्यायाश्च गुरोर्बलम्।
द्वयोश्चन्द्रबलं ग्राह्यं विवाहो नान्यथा भवेत्॥

विशेष- गुरु व सूर्य स्वोच्च, स्वमित्र स्वराशि, स्वनवांश, वर्गोत्तम नवांश में होने पर ४, ८, १२वें होने पर भी शुभ माने जाते हैं।

'स्वोच्चे स्वभे स्वमैत्रे वा स्वांशे वर्गोत्तमे गुरौ।
रिष्फाष्टतुर्यगोऽपीष्टो नीचारिस्थः शुभोऽप्यसत्॥'
(राम दैवज्ञ)

यदि गुरु नीच या शत्रु राशि का हो तो शुभ होने पर भी अशुभ फलप्रद होता है अतः नीच या शत्रु राशिस्थ गुरु, कन्या की राशि से २, ५, ७, ९, ११वें होने पर भी अशुभ माना गया है यह पूजा, (गुरु का दान व्रत जपादि आचरण) करने पर ही शुभफलप्रद होता है। ऐसे ही सूर्य के ४, ८, १२वें होने पर परिहार वाक्य-

'स्वोच्चे स्वमित्रसदने स्वगृहे स्ववर्गे।
स्वांशे ततश्च निधनव्ययतुर्यगोऽपि॥
श्रेयस्तनोति रिपुनीचगतोऽप्यनिष्टम्।
तुल्यं फलं निगदितं रविजीवयोश्च॥
(दैवज्ञ कल्पद्रुम)

सूर्य यदि तुला राशि वाले वर के लिए २, ५, ९वें में हो तो शुभफलप्रद होता है उसकी पूजा की आवश्यकता नहीं होती। यथा-

धर्मधीधनगतोदिवाकर-
स्तौलिराशिजनितस्य शोभनः॥

अन्य राशि वालों के लिए २, ५, ९वां रवि १३ अंश बीत जाने के उपरान्त शुभ माना जाता है। अर्थात् पूज्य नहीं होता यथा-

'गर्ग्याङ्गिरो वत्सवशिष्ठगौत-
मपराशराद्या मुनयो वदन्ति।
द्वितीयपंचाङ्गगतो दिवाकर
स्त्रयोदशाहात्परतः शुभावहः।'

वधू-प्रवेश मुहूर्त्त का विचार-

विवाह संस्कार हो जाने के बाद प्रथम बार वधू का पतिगृह में प्रवेश वधू-प्रवेश कहलाता है। विवाह से १६ दिन के अन्दर बिना तिथ्यादि का विचार किए भी स्थिर लग्न में वधू-प्रवेश शुभ है। एक मास तक विषम दिनों में, एक वर्ष के भीतर विषम मास में और एक वर्ष के उपरान्त स्थिर लग्न में । तीसरे, ५वें वर्ष में भी शुभ है। इसके उपरान्त शुभ मुहूर्त्त (तिथ्यादि का) विचार कभी हो सकता है। वधू -प्रवेश में रे०, अ०, रोहि०, मृ०, श्र०, ध०, ह०, चि०, स्वा०, म०, मू०, ३ उत्तरा, पुष्य, अनु०, इन नक्षत्रों में शुभ वारों में १, २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १५ तिथियों में स्थिर लग्नों में चतुर्थाष्टम् शुद्ध होने पर शुभ होता है।

व्यतिपात, क्षयतिथि, ग्रहण, वैधृति, अमा०, संक्रान्ति, रिक्ता तिथियों में वधू-प्रवेश वर्जित है।

वधू-प्रवेश मुहूर्त्त-चक्र

दिन	१६ दिन तक अथवा ७, ५, ९वें दिन
मास, वर्ष	विषम मास, विषम वर्ष।
तिथि	१, २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १५
नक्षत्र	रे०, अ०, रो०, मृ०, श्र०, ध०, हस्त, चि०, स्वा०, म०, मूल, पुष्य,
	अनु०, तीनों उत्तरा, अभि०
वार	चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र
लग्न	२, ५, ८, ११ लग्न ४, ८ भाव शुद्ध हो।
त्याज्य	व्यतीपात, क्षयतिथि, रिक्ता, अमा०, ग्रहण, वैधृति, संक्रान्ति दिन

विशेष-

वधूप्रवेशो न दिवा प्रशस्तः
राजप्रवेशो न निशि प्रशस्तः।
दिवा च रात्रौ च गृहप्रवेशः
सत्कीर्तिदः स्यात्त्रिविधः प्रवेशः॥

द्विरागमन-मुहूर्त्त-

वधूप्रवेशोपरान्त द्वितीय बार पिता के घर से पतिगृह में प्रवेश द्विरागमन कहलाता है। यह १-३-५ इन विषम वर्षों में १-८-११ राशि के सूर्य में सूर्य, गुरु की शुद्धि देखकर शुभ वार १, २, ३, ६, ७, १२ लग्नों में ह०, अ०, रे०, तीनों उत्तरा, रो०, मृग०, स्वा०, पुन०, पु०, श्र०, ध०, शत०, मू०, चि०, अनु० नक्षत्रों में शुभ माना गया है।

वर्ष	विषम (५ वर्ष तक)
मास	१, ८, ११वीं राशि के सूर्य में, सूर्य गुरु की शुद्धि
तिथि	१, २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १५
वार	सोम, बुध, गुरु एवं शुक्र
नक्षत्र	ह०, चि०, अ०, रे०, रो०, स्वा०, पुन०, पुष्य०, श्र०, ध०, श०, मृग०, मू० अनु०, ३ उत्तरा
त्याज्य	सम्मुख तथा दखिण शुक्र। (रवेती से मृगशिरा तक चन्द्र के रहने पर शुक्र शुभ हो जाता है। सामान्य अवस्था में त्याज्य)

विशेष-

रेवत्यादिमृगान्ते च यावत्तिष्ठति-
चन्द्रमा तावच्छुक्रो
भवेदन्धः सम्मुखे दक्षिणे शुभः॥

जन्माक्षर-चक्र

	मेष	वृष	मिथुन	कर्क
वर्ण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	विप्र
वश्य	चतुष्पद्	चतुष्पद्	मानव	जलचर, कीट
राशीश	मंगल	शुक्र	बुध	चन्द्र
घात मास	कार्तिक	मार्गशीर्ष	आषाढ़	पौष
घात तिथि	१-६-११	५-१०-१५	२-७-१२	२-७-१२
घात वार	रविवार	शनिवार	सोमवार	बुधवार
घात नक्षत्र	मघा	हस्त	स्वाती	अनुराधा
घात योग	विष्कुम्भ	सुकर्मा	परिध	व्याघात
घात करण	बव	शकुनी	चतुष्पाद्	नाग
घात प्रहर	प्रथम	चतुर्थ	तृतीय	प्रथम
स्त्री घा. चं.	१	८	७	९
पु. घा. चं.	१	५	९	२

नक्षत्र	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा
योनि	अश्व	गज	मेष	सर्प	सर्प	श्वान	मार्जार	मेष	मार्जार
गण	देव.	मनुष्य	राक्षस	मनुष्य	देव	मनुष्य	देव	देव	राक्षस
नाड़ी	आद्य	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आद्य	अन्त्य	मध्य	अन्त्य
युंजा	पूर्व	पूर्व	पूर्व	पूर्व	पूर्व	मध्य	मध्य	मध्य	मध्य
चरण	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४
अक्षर	चू चे चो ला	ली लू ले लो	आ इ उ ए	ओ वा वि वु	वे वो का की	कु घ ङ छ	के को हा ही	हू हे हो डा	डी डू डे डो
वर्ग	सिं. सिं. सिं. मृ.	मृ. मृ. मृ. मृ.	ग. ग. ग. ग.	ग. मृ. मृ. मृ.	मृ. मृ. मा. मा.	मा. मा. मा. सिं.	मा. मा. मे. मे.	मे. मे. मे. श्वा.	श्वा. श्वा. श्वा. श्वा.
नवांश	मे. वृ. मि. क.	सिं. कं. तु. वृ.	ध. म. कुं. मी.	मे. वृ. मि. क.	सिं. कं. तु. वृ.	ध. म. कुं. मी.	मे. वृ. मि. क.	सिं. कं. तु. वृ.	ध. मं. कुं. मी.
नवांशेश	मं. शु. बु. चं.	सू. बु. शु. मं.	गु. श. श. गु	मं. शु. बु. चं.	सू. बु. शु. मं.	गु. श. श. गु.	मं. शु. बु. चं.	सू. बु. शु. मं.	गु. श. श. गु.
स्प. चन्द्र रा.	० ० ० ०	० ० ० ०	१ १ १ १	१ १ १ १	१ २ २ २	२ २ २ २	२ २ ३ ३	३ ३ ३ ३	३ ३ ३ ४
स्प. चन्द्र अं.	३ ६ १० १३	१६ २० २३ २६	० ३ ६ १०	१३ १६ २० २३	२६ ०० ३ ६	१० १३ १६ २०	२३ २६ ० ३	६ १० १३ १६	२० २३ २६ ०
स्प. चन्द्र क.	२० ४० ० २०	४० ० २० ४०	० २० ४० ०	२० ४० ० २०	४० ० २० ४०	० २० ४० ०	२० ४० ० २०	४० ० २० ४०	० २० ४० ०
भो. वि. दशा. व.	५ ३ १ ०	१५ १० ५ ०	४ ३ १ ०	७ ५ २ ०	५ ३ १ ०	१३ ९ ४ ०	१२ ८ ४ ०	१४ ९ ४ ०	१२ ८ ४ ०
भो. वि. दशा. मा.	३ ६ ९ ०	० ० ० ०	६ ० ६ ०	६ ० ६ ०	३ ६ ९ ०	६ ० ६ ०	० ० ० ०	३ ६ ९ ०	९ ६ ३ ०
भो. वि. दशा. दि.	० ० ० ०	० ० ० ०	० ० ० ०	० ० ० ०	० ० ० ०	० ० ० ०	० ० ० ०	० ० ० ०	० ० ० ०
दशाधीश	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध

जन्माक्षर-चक्र

	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
वर्ण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	विप्र
वश्य	चतुष्पद्	मानव	मानव	कीट, सरीसृप
राशीश	सूर्य	बुध	शुक्र	मंगल
घात मास	ज्येष्ठ	भाद्रपद	माघ	आश्विन
घात तिथि	३-८-१३	५-१०-१५	४-९-१४	१-६-११
घात वार	शनिवार	शनिवार	गुरुवार	शुक्रवार
घात नक्षत्र	मूल	श्रवण	शतभिषा	रेवती
घात योग	धृति	शुभ	शुक्ल	व्यतिपात
घात करण	बव	कौलव	तैतिल	गर
घात प्रहर	प्रथम	प्रथम	चतुर्थ	प्रथम
स्त्री घा. चं.	४	३	६	२
पु. घा. चं.	६	१०	३	७

नक्षत्र	मघा				पूर्वा फाल्गुनी				उत्तरा फाल्गुनी				हस्त				चित्रा				स्वाती				विशाखा				अनुराधा				ज्येष्ठा			
योनि	मूषक				मूषक				गौ				महिषी				व्याघ्र				महिषी				व्याघ्र				मृग				मृग			
गण	राक्षस				मनुष्य				मनुष्य				देव				राक्षस				देव				राक्षस				देव				राक्षस			
नाड़ी	आद्य				मध्य				आद्य				आद्य				मध्य				अन्त्य				अन्त्य				मध्य				आद्य			
युंजा	मध्य				मध्य				मध्य				मध्य				मध्य				मध्य				मध्य				मध्य				अन्त्य			
चरण	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४
अक्षर	मा	मी	मु	मे	मो	टा	टी	टू	टे	टो	पा	पी	पू	ष	ण	ठ	पे	पो	रा	री	रु	रे	रो	ता	ती	तू	ते	तो	ना	नी	नू	ने	नो	या	यी	यू
वर्ग	मू.	मू.	मू.	मू.	मू.	श्वा.	श्वा.	श्वा.	श्वा.	श्वा.	मू.	मू.	मू.	मे.	श्वा.	श्वा.	मू.	मू.	मृ.	मृ.	मृ.	मृ.	मृ.	स.	स.	स.	स.	स.	स.	स.	स.	स.	स.	मृ.	मृ.	मृ.
नवांश	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
नवांशेश	मं.	शु.	बु.	चं.	सू.	बु.	शु.	मं.	गु.	श.	श.	गु.	मं.	शु.	बु.	चं.	सू.	बु.	शु.	मं.	गु.	श.	श.	गु.	मं.	शु.	बु.	चं.	सू.	बु.	शु.	मं.	गु.	श.	श.	गु.
इष्ट फल रा.	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	७	७	८
इष्ट फल अं.	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	००	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०
इष्ट फल क.	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
वि. दशा व.	५	३	१	०	१५	१०	५	०	४	३	१	०	७	५	२	०	५	३	१	०	१३	९	४	०	१२	८	४	०	१४	९	४	०	१२	८	४	०
वि. दशा मा.	३	६	९	०	०	०	०	०	६	०	६	०	६	०	६	०	३	६	९	०	६	०	६	०	०	०	०	०	३	६	९	०	९	६	३	०
वि. दशा दि.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दशाधीश	केतु				शुक्र				सूर्य				चन्द्रमा				मंगल				राहु				गुरु				शनि				बुध			

जन्माक्षर-चक्र

	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
वर्ण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	विप्र
वश्य	मानव १५ चतु. १५	चतु. १५ जलचर १५	मानव	जलचर
राशीश	गुरु	शनि	शनि	गुरु
घात मास	श्रावण	वैशाख	चैत्र	फाल्गुन
घात तिथि	३-८-१३	४-९-१४	३-८-१३	५-१०-१५
घात वार	शुक्रवार	मंगलवार	गुरुवार	शुक्रवार
घात नक्षत्र	भरणी	रोहिणी	आर्द्रा	आश्लेषा
घात योग	वज्र	वैधृति	गंड	वज्र
घात करण	तैतिल	शकुनी	वणिज	विष्टि
घात प्रहर	प्रथम	चतुर्थ	तृतीय	चतुर्थ
स्त्री घा. चं.	१०	११	५	१२
पु. घा. चं.	४	८	११	१२

नक्षत्र	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्रपदा	उत्तराभाद्रपदा	रेवती
योनि	श्वान	वानर	नकुल	वानर	सिंह	अश्व	सिंह	गौ	गज
गण	राक्षस	मनुष्य	मनुष्य	देव	राक्षस	राक्षस	मनुष्य	मनुष्य	देव
नाड़ी	आद्य	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आद्य	आद्य	मध्य	अन्त्य
युंजा	आन्त्य	अन्त्य	अन्त्य	अन्त्य	अन्त्य	अन्त्य	अन्त्य	अन्त्य	पूर्व
चरण	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४
अक्षर	ये यो भा भी	भू धा फा ढ़ा	भे भो जा जी	खी खू खे खो	गा गी गू गे	गो सा सी सू	से सो दा दी	दू थ झ ञ	दे दो चा ची
वर्ग	मृ. मृ. मू. मू.	मू. सर्प मू. श्वा	मू. मू. सिं. सिं	मा. मा. मा. मा.	मा. मा. मा. मा.	मा. मे. मे. मे.	मे. मे. स. स.	स. स. सिं. सिं.	स. स. सिं. सिं.
नवांश	मे. वृ. मि. क.	सिं. कं. तु. वृ.	ध. म. कुं. मी.	मे. वृ. मि. क.	सिं. कं. तु. वृ.	ध. म. कु. मी.	मे. वृ. मि. क.	सिं. कं. तु. वृ.	ध. म. कुं. मी.
नवांशेश	मं. शु. बु. च.	सू. बु. शु. मं.	गु. श. श. गु.	मं. शु. बु. चं.	सू. बु. शु. मं.	गु. श. श. गु.	मं. शु. बु. चं.	स. वु. शु. मं.	गु. श. श. गु.
इष्ट रा.	८ ८ ८ ८	८ ८ ८ ८	९ ९ ९ ९	९ ९ ९ ९	९ १० १० १०	१० १० १० १०	१० १ ११ ११	११ ११ ११ ११	११ ११ ११ ११
इष्ट अं.	३ ६ १० १३	१६ २० २३ २६	० ३ ६ १०	१३ १६ २० २३	२६ ०० ३ ६	१० १३ १६ २०	२३ २६ ० ३	६ १० १३ १६	२० २३ २६ ०
इष्ट क.	२० ४० ० २०	४० ० २० ४०	० २० ४० ०	२० ४० ० २०	४० ० २० ४०	० २० ४० ०	२० ४० ० २०	४० ० २० ४०	० २० ४० ०
घात व.	५ ३ १ ०	१५ १० ५ ०	४ ३ १ ०	७ ५ २ ०	५ ३ १ ०	१३ ९ ४ ०	१२ ८ ४ ०	१४ ९ ४ ०	१२ ८ ४ ०
घात मा.	३ ६ ९ ०	० ० ० ०	६ ० ६ ०	६ ० ६ ०	३ ६ ९ ०	६ ० ६ ०	० ० ० ०	३ ६ ९ ०	९ ६ ३ ०
घात दि.	० ० ० ०	० ० ० ०	० ० ० ०	० ० ० ०	० ० ० ०	० ० ० ०	० ० ० ०	० ० ० ०	० ० ० ०
दशाधीश	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध

मेलापक सारिणी

ऊर्ध्वाधरस्थान्यपि भानि पुंसां पार्श्वद्वयस्थानि तथा वधूनाम्॥ संपातकोष्ठे शुभयोर्गुणैक्यं सर्वं शुभं तत्स्मृतितोऽधिकं यत्॥

वर / कन्या		मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
		अश्वि. १,२,३,४	भर. १,२,३,४	कृत्ति. १	कृत्ति. २,३,४	रोहि. १,२,३,४	मृग. १,२	मृग. ३,४	आर्द्रा १,२,३,४	पुन. १,२,३	पुन. ४	पुष्य १,२,३,४	आश्ले. १,२,३,४	मघा १,२,३,४	पू.फा. १,२,३,४	उ.फा. १	उ.फा. २,३,४	हस्त १,२,३,४	चित्रा १,२
मेष	अश्वि. १,२,३,४	२८ न	३३	२८।। त	१८।। बभ त	२१।। बभ त	२२।। बभ त	२६ बत र	१७ बन तर	१६ बन तर	२३।। नत	३१।। त	२८ ग	२१ वभ ग	२५ वभ	१५।। वभ नत	११ बभ नतर	६ तबभ यनर	१३ वभ तर
	भर. १,२,३,४	३४	२८ न	२६ ग	१६ बग भ	२१।। बभ त	१४।। बभ तन	१८ नब तर	२६ बत र	२७ बत र	३१।। त	२३।। न त	२५।। ग त	२० गव भ	१८ वभ न	२६ वभ	२१।। बभ र	२० बभब रत	४ भग नतर
	कृति. १	२७।। गत	२६ ग	२८ न	१८ बभ न	१० गब नभ	१६।। गब भत	२० गब त	२० गब त	२१ गब तर	२५।। गत	२६।। गत	२३।। नत	१६।। वभ नत	२० गव भ	२० गव भ	१५।। गव भ	१५।। गव भर	१८ ब भत
वृष	कृति. २,३,४	१८।। गभ त	२० गभ	१६ भन	२८ न	२० गन	२६।। गत	१७।। गब भत	१७।। बग भत	१८।। गब भत	२२ गत र	२३ गत र	२० नत र	१८।। नव तर	२२ रव ग	२२ रव ग	२१ गभ	२१ गभ	२३।। भत
	रोहि. १,२,३,४	२३।। भत	२३।। भत	११ गभ न	२० गन	२८ न	३६	२७।। बभ	२३।। बभ त	२२।। भब तय	२६ तर य	२७ त र	१२ गन तरय	१०।। रवग नतय	२४।। रव तय	२७ रव	२६ भ	२६ भ	२० गभ
	मृग. १,२	२३।। भत	१४।। भन त	१८।। भत ग	२७।। तग	३५	२८ न	१६ बभ न	२४ बभ	२२।। बभ तय	२६ तय र	१६ तर न	२१ तर यग	१६।। गरव तय	१५।। रव तनय	२४।। रव त	२३।। भत	२६ भ	१३ भन ग
मिथुन	मृग. ३,४	२७ तर	१८ नत र	२२ तर ग	१६।। भग त	२७ भ	२० भन	२८ न	३३	३१।। तय	१६ भव तयर	१२ भन वतर	१४ भवत यगर	२३।। वत यग	१६।। वन तय	२८।। व त	३१।। त	३४	२१ नग
	आर्द्रा १,२,३,४	१६ तर न	२७ तर	२१ तर ग	१८।। गभ त	२४।। भ त	२६ भ	३४	२८ न	२५ न य	१२।। भन तयर	२० भव तर	१३ गभर वतय	२३।। गत व	२६।। वत	२१।। नव त	२४।। नत	२४।। नत	२७ गय
	पुन. १,२,३,	२० नत र	२७ तर	२३ तर	२०।। भत ग	२२।। भत	२३।। भत य	३१।। तय	२४ नय	२८ न	१५।। नभ वर	२२।। भ वर	१७।। भव तरग	२२।। यव तग	२६।। यव त	२१।। नव त	२४।। नत	२५।। नत	२७।। तग
कर्क	पुन. ४	२२।। बन त	२६।। बत	२५।। बत ग	२२ बग तर	२४ बत यर	२५ बत यर	१८ बभव रतय	१०।। बभव नयर	१४।। बभ रनत	२८ न	३५	२६।। तग गत	१६।। बभय तय	२०।। बभ नत	१५।। बभ तर	१८ नभ वतर	१६ नब वतर	२१ बग
	पुष्य १,२,३,४	३०।। बत	२१।। बन त	२६।। बत ग	२३ बत रग	२५ बत र	१८ बन तर	११ बभन वतर	१८ बभ वतर	२१।। बभ वर	३५	२८ न	३० ग	१६।। बभ गत	१५।। बभ नत	२३।। बभ त	२६ बव तर	२७ बव तर	१२ नबवय तरग
	आश्ले. १,२,३,४	२६ बग	२४।। बग त	२२।। नब त	१६ नब तर	११ गबत नयर	१६ गब तयर	१२ गबत भवयर	१२ गबभ वतयर	१५ गबत भवर	२८।। गत	२६ ग	२८ न	१५ यब भन	१५।। गबय भत	१८।। गब भत	२१ गब वतर	२१ गब वतर	२६ बव तर
सिंह	मघा १,२,३,४	२० गव भ	२० गव भ	१६।। भव नत	१७।। वब रनत	६।। वबत गरनय	१७।। वबत गरय	२१।। वब गतय	२२।। वब गत	२०।। वब गयत	१६।। गभ यत	१६।। गभ त	१६ नभ य	२८ न	३० ग	२७।। गत	१६।। वभ गभत	१६।। वभ गभत	२१।। वब भत
	पू.फा. १,२,३,४	२६ वभ	१८ वभ न	२० गव भ	२१ बव रग	२३।। वब रतय	१५।। वबन रतय	१६।। वब नतय	२८।। वब त	२६।। वब तय	२२।। यभ त	१७।। भन त	१६।। गभ यत	३० ग	२८ न	३५	२४ वब भ	२२।। वब भत	७।। वबत गनभ
	उ.फा. १	१६।। वभ तन	२६ वभ	२० वग भ	२१ वब गर	२६ वब र	२४।। वब रत	२८।। वब त	२०।। वब नत	२१।। वब नत	१७।। भन त	२५।। भत	१६।। गभ त	२७।। गत	३५	२८ न	१७ वब भन	१६ वब भन	१३।। वयब तगभ
कन्या	उ.फा. २,३,४	१३ भन तर	२२।। भर	१६।। गभ र	२१ गभ	२६ भ	२४।। भत	३१।। बत	२३।। नब त	२४।। नब त	२० नव तर	२८ वत र	२२ गव तर	१७।। गव भत	२५ भव	१८ वभ न	२८ न	२७ न	२४।। यग त
	हस्त १,२,३,४	१० यभ नतर	२० भत र	१७।। भर ग	२२ भग	२५ भ	२६ भ	३३ ब	२२।। नब त	२४।। नब त	२० नव तर	२८ व तर	२३ वत रग	१८।। वभ तग	२२।। वभ त	१६ वभ न	२६ न	२८ न	२८ यग
	चित्रा १,२	१३ गभत यर	५ गभन तयर	१६ भत यर	२३।। भत य	२० गभ	१२ गभ न	१६ गब न	२६ गब य	२५।। गब त	२१ गव तर	१२ गनव तयर	२७ वत र	२२।। वभ त	८।। गव भनत	१४।। वय गभत	२४।। गय त	२७ गय	२८ न

(ब = वर्णदोष । व वश्यदोष । त = तारादोष । य = योनिदोष । र = राशिदोष । ग = गणदोष । भ = भकूट दोष । न = नाडी दोष।)

मेलापक सारिणी

ऊर्ध्वाधरस्थान्यपि भानि पुंसां पार्श्वद्वयस्थानि तथा वधूनाम्॥ संपातकोष्ठे शुभयोर्गुणैक्यं सर्वं शुभं तत्स्मृतितोऽधिकं यत्॥

कन्या \ वर		तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
		चित्रा ३,४	स्वाती १,२ ३,४	विशा. १,२,३	विशा. ४	अनु. १,२ ३,४	ज्ये. १,२ ३,४	मूल १,२ ३,४	पू.षा. १,२ ३,४	उ.षा. १	उ.षा. २,३,४	श्रव. १,२ ३,४	धनि. १,२	धनि. ३,४	शत. १,२ ३,४	पू.भा. १,२,३	पू.भा. ४	उ.भा. १,२ ३,४	रेव. १,२ ३,४
मेष	अश्वि. १,२ ३,४	२२।। बय तग	२६।। बय त	२२।। तब यग	१८।। गभ तय	२५।। भत	१४ भन ग	१३।। भन ग	२५ भ	२३।। भत	२५ ब तर	२६ बत र	२० बत यरग	२० बत यरग	१५ बन तरग	१६ बन तयर	१४।। नभ तय	२४।। भ त	२६ भ
	भर. १,२ ३,४	१३।। बगन तय	२६।। बत	२१।। गब तय	१७।। गभ तय	१७।। नभ त	१६।। गभ त	२०। गभ	१८ नभ	२६ भ	२७।। बर	२६ ब तर	१० बय गनतर	१० बयग नतर	२० गब तर	२४ बय तर	२२।। तभ	१७।। नभ त	२६।। भत
	कृत्ति. १	२७।। बत य	१५।। बग नत	१६।। बन तय	१५।। भन तय	१६।। गभ त	२५।। भत	२४।। भत	१८ गभ य	१२ गभ न	१३।। बग नर	११।। बय रगन	२५ बत यर	२५ बत यर	२७ बत र	१६ बग तयर	१७।। गभ तय	१६।। गभ त	११।। गभ तन
वृष	कृत्ति. २,३,४	२२।। बभ तय	१०।। गब भनत	१४।। बभ तनय	२०।। न तय	२४।। गत	३०।। त	२०। भ तर	१३।। यग भर	७।। गभ नर	१२ गभ न	१० यग भन	२३।। भत य	२६।। बत य	३१।। बत	२३।। गब तय	२० गत यर	२२ गग तर	१४ न तर
	रोहि. १,२,३,४	१६ गब भ	१५।। बभ नत	६।। तबग नभ	१५।। गन त	२६।। त	२३।। ग त	१४ गभ तर	१६ रभ तय	११।। यभ नर	१६ भय न	१७ नभ य	२० गभ	२६।। गब	२४।। गब त	३०।। बत	२७ तर	२७ तर	१६ र नत
	मृग. १,२	१२ बभ नग	२५ बभ	१८।। बभ तग	२४।। तग	२१।। नत	२४।। तग	१५ भत रग	१० नभ तयर	१७ यभ तर	२१।। भय त	२५ भय	१३ नभ ग	१६ बग न	२७ बग	२६।। बत	२६ तर	१८ न तर	२७ तर
मिथुन	मृग. ३,४	१४ नभ ग	२७ भ	२०।। भत ग	१४ भव तरग	११ भवन तर	१४ भव तरग	२३ तर ग	१८ नत यर	२५ यत र	२० भय वत	२३।। भव य	११।। नभ वग	१३ भनग	२१ भग	२३।। भत	२५।। तव र	१७।। नव तर	२६।। वत र
	आर्द्रा १,२,३,४	२० गभ य	२७ भ	२० गभ य	१३।। रगव भय	१७ तभ वयर	३ यतगव भनर	१६ गन तर	२८ तर	२८ तर	२३ भव त	२३ भव त	१७।। गभ वय	१६ गभ य	१२ गभ न	१७ नभ य	१६ नर वय	२६।। वत र	२६।। वत र
	पुन. १,२,३	२०।। भत ग	२८ भ	२२ भग	१५।। वभ रग	२१।। वभ र	७ रगव भनत	१४ यरत नग	२७ तर	२७ तर	२२ वत भ	२३ वत भ	१७ वतभ यग	१८।। भग तय	१४ नभ ग	१६ नभ य	१८ रन यव	२८ रव	२७।। वत र
कर्क	पुन. ४	२०।। बत रग	२८ वर ब	२२ वर बग	२० गभ	२६ भ भन	११।। तग भगनय	८ वतब वत	२१ बभ वत	२१ बभ र	२६ बत र	२७ बत यर	२१ बगत तयगर	१२।। बभव नगर	८ बभव नवय	१० बभर य	१६ नभ	२० भ	२५।। भत
	पुष्य १,२,३,४	११।। गनबव तयर	२६।। बव तर	२१ रबग वय	१६ भ यग	१८ भन	२१ भग	१७ गबभ वत	११ यबभ तनव	२१ बभ वत	२६ बत र	२५ बय तर	१३ गबन तयर	४।। भबगय वनतर	१४।। बवत रगभ	१८ बभव यर	२४ भय	१८ नभ	२७ भ
	आश्ले. १,२,३,४	२५।। बव तर	१२।। गबव तरन	१७।। नबव तर	१५।। नभ त	२० गभ	२६ भ	२२।। बभ वय	१६ गबव भत	८ गबव भनत	१३ गबर नत	१३ बगत नर	२६ बत यर	१७।। बभव तरय	१६।। बभव तर	११।। गबभ वतयर	१७।। गभ तय	२१ गभ	१३ गभ न
सिंह	मघा. १,२,३,४	२४।। बव तर	११।। बवत रगन	१६।। बवत रन	२२।। नव त	२५।। गव त	३३ व	२५ भव	१६ गव भ	८।। वगभ नतय	३।। बरतय गभन	४।। बरत गभन	१८।। बर तभ	२४।। बव तर	२५।। बव तर	१८।। बवर गत	१८।। गभ त	१६।। गभ त	१३ गभ न
	पू.फा. १,२,३,४	१०।। बवत रगन	२५।। बव तर	१८।। बवर गत	२४।। गव त	२३।। नव त	२५।। गव त	१६ गव भ	१७ भव न	२४ भव न	१७ बर भय	१८।। बत भत	४।। बरत गभन	१०।। बवत रगन	१६।। बवर गत	२४।। बव रत	२४।। भत	१७।। नभ त	२५।। भत
	उ.फा. १	१६।। बवत यगर	२५।। बव तर	१६।। बवय गतर	२२।। यव गत	३१।। वत	१७।। गव तन	६।। गव नभत	२५ भव	२५ भव	२० बर भ	२० बर भ	११।। बरत गभय	१७।। बवत गरय	११।। बवत गनर	१५।। बवत नरय	१५।। नभ तय	२६।। भत	२५।। भत
कन्या	उ.फा. २,३,४	१६।। गबय भत	२५।। बभ त	१६।। गबय भत	१८ यवत गर	२७ वत र	१३ गवत नर	१४ गन तर	२६।। र	२६।। र	२४।। भव	२४।। भव	१६ गभ वतय	१६।। गबभ तय	१०।। गबन भत	१४।। बभन तय	१७।। तनव यर	२८।। वत र	२७।। वत र
	हस्त १,२,३,४	२० बभ यग	२६।। बभ त	१८।। बभ तयग	२० वग तयर	२६ वत र	१३ नव तरग	१५ नत रग	२७ तर	२८।। र	२३।। भव	२४।। भव	१८।। भग वय	१६ बभ यग	८।। बयभ नतग	१३।। बभ नतय	१६।। वनत यर	२६।। वत र	२७।। वत र
	चित्रा १,२	२० बभ न	१६ गब भय	२६।। बभ त	२८ वत र	११ गवन तयर	२५ वत यर	२७ तय र	१४ गन तर	२२ गत र	१७ गभ त	१८।। गभ व	१५।। भव नय	१६ बय भन	२४ बभ य	१६।। गबत भय	१६।। गवत यर	१०।। गयव नतर	१६।। वगत यर

(ब = वर्णदोष । व वश्यदोष । त = तारादोष । य = योनिदोष । र = राशिदोष । ग = गणदोष । भ = भकूट दोष । न = नाडी दोष।)

मेलापक सारिणी

ऊर्ध्वाधरस्थान्यपि भानि पुंसां पार्श्वद्वयस्थानि तथा वधूनाम्॥ संपातकोष्ठे शुभयोर्गुणैक्यं सर्वं शुभं तत्स्मृतितोऽधिकं यत्॥

वर / कन्या		मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
		अश्वि. १,२,३,४	भर. १,२,३,४	कृत्ति. १	कृत्ति. २,३,४	रोहि. १,२,३,४	मृग. १,२	मृग. ३,४	आर्द्रा १,२,३,४	पुन. १,२,३	पुन. ४	पुष्य १,२,३,४	आश्ले. १,२,३,४	मघा १,२,३,४	पू.फा. १,२,३,४	उ.फा. १	उ.फा. २,३,४	हस्त १,२,३,४	चित्रा १,२
तुला	चित्रा ३,४	२२।। गतय	१४।। गनतय	२८।। तय	२३।। भतय	२० गभन	१२ गभन	१३ गभ	२१ गभत	१६।। गभवत	२०।। गरवरत	११।। गनयर	२६।। वतत	२५।। वरनत	११।। वरगगरत	१७।। वयभत	१७।। यगय	२० गभ	२१ भन
	स्वाती १,२,३,४	२७।। यत	२६।। त	१७।। नत	१२।। भनत	१५।। भनत	२६ भ	२७ भ	२६ भ	२८ भ	२६ वर	२७।। वतर	१४।। नवतर	१३।। वनतग	२५।। वरत	२५।। वरत	२५। भत	२७।। भत	२१ भयग
	विशा. १,२,३	२२।। तयग	२२।। तयग	२०।। तयन	१५।। तभनय	१०।। गभतन	१८।। गभत	१६।। गभत	२० गभय	२१ गभ	२२ गवर	२१ गतर	१८।। नवतर	१७।। वरतन	१६।। वरतग	१७।। वयरगत	१७।। यगतभ	१८।। गभतय	२७।। भत
वृश्चिक	विशा. ४	१६।। बगभयत	१६।। बगभयत	१४।। बभनयत	१६।। बनयत	१४।। बगनत	२२।। बगतग	१२ बवरभत	१२।। वबयगभर	१३।। बवगभर	१६ गभ	१८ गभय	१५।। भनत	२१।। बवनत	२३।। बवगत	२१।। बवगयत	१७ तबवगयर	१८ बवगतयर	२७ बवतर
	अनु. १,२,३,४	२४।। बभत	१५।। बभनत	१६।। बभगत	२४।। बतग	२७।। बत	२०।। बनत	१० बवतनभर	१५।। तबवरभय	२०।। बवभर	२६ भ	१८ भन	२१ भग	२४।। बवतग	२०।। बवतन	२६।। बवत	२५ बवतर	२६ बवत	११ बरवतनय
	ज्येष्ठा १,२,३,४	१२ बगभन	१८।। बगतभ	२४।। बभत	२६।। बततं	२२।। बगत	२२।। बगगभर	१२ तबवगभनर	२ तवबयगभन	५ तबवरभन	१०।। तग	२० गभ	२६ भ	३१ बव	२३।। बवगत	१६।। तबवगन	१२ तबवगनर	१२ तबवगनर	२४ बवतयर
धनु	मूल १,२,३,४	१२ गभन	२० गभ	२४।। भत	१६ बभतर	१३ बगतभर	१३ रबगतभ	२१ बगतर	१५ बगनतर	१२ रबगतनय	८ यगभवनत	१७ गभवत	२३।। भवय	२५ वभ	१६ वगभ	६।। तवगभन	१३ तरबगन	१३ तरबगन	२६ रबतय
	पू.षा. १,२,३,४	२६ भ	१८ भन	१८ गभय	१२।। बयगभर	१८ बभतयर	१० रबभतनय	१८ बनतयर	२७ बतर	२७ बतर	२३ भवत	१३ यभनवत	१७ गभवत	१६ वगभ	१७ वभन	२५ वभ	२८।। बर	२७ बतर	१३ तबगनर
	उ.षा. १	२४।। भत	२६ भ	१२ गभन	६।। रबयभन	१०।। बयरभन	१७ बयतभर	२५ बयतर	२७ बतर	२७ बतर	२३ भवत	२३ भवत	६ गभवनत	८।। तगवयभन	२४ वभय	२५ वभ	२८।। बर	२८।। बर	२१ गबतर
मकर	उ.षा. २,३,४	२७ तर	२८।। र	१४।। गनर	१२ गभन	१६ भनय	२२।। यभत	२० बयतभ	२२ बभत	२२ बभवत	२८ तर	२८ तर	१४ गनतर	४।। तयरगभन	२० रभय	२१ रभ	२४।। भत	२४।। वभ	१७ गभवत
	श्रव. १,२,३,४	२७ तर	२६ तर	१३।। यनर	११ यभगन	१६ भनय	२५ भय	२२।। बभवय	२१ बभवत	२२ बभवत	२८ त	२६ यतर	१५ नत	६।। तगररभन	१८।। रभत	२० भर	२३।। भव	२४।। भव	१६।। भव
	धनि. १,२,३,४	२० गतयर	११ यगनतर	२६ तयर	२३।। भतय	२० गभ	१२ गभन	६।। वबगभन	१६।। वयबगभ	१६ बगवतभ	२२ गतर	१३ रगनतय	२८ तर	१६।। रभत	५।। तगरभन	१२।। तयरगभ	१६ गभवतयव	१७।। गभव	१५।। भनय
कुम्भ	धनि. ३,४	२० गतयर	११ यगतनर	२६ तयर	३०।। तय	२७ ग	१६ गनन	१२ गभय	१६ गभत	१८।। गभवतर	१३।। गभगभनव	४।। तयरतर	१६।। भवर	२५।। वतगन	११।। वतरतय	१८।। वरगतय	१७।। गभय	१६ गभन	१७ यभ
	शत. १,२,३,४	१५ गनतर	२१ गतर	२८ तर	३२।। त	२५।। गत	२७ ग	२० गभ	१२ गभन	१३ गभन	८ गभवनर	१४।। गभवतर	२०।। वभतर	२६।। वरत	२०।। वरगत	१२।। वरतगन	११।। तगनभ	८।। तयगनभ	२५ भय
	पू.भा. १,२,३	१८ नतयर	२५ यतर	२० गरतय	२४।। गतय	३१।। त	३१।। त	२४।। भत	१७ भनय	१८ भन	१३ भनव	२० भरवय	१३।। गभवतर	१६।। वरतग	२५।। वरत	१६।। वरयनत	१५।। भनत	१५।। भनत	१७।। गभयतय
मीन	पू.भा. ४	१४।। बभतनय	२१।। बयतभ	१६।। गबतभय	१६ गबतयर	२६ बतर	२६ बतर	२५।। बवतर	१८ बनवयर	१६ नबवर	१८ नभ	२५ भय	१८।। गभत	१७।। बगतभ	२३।। बभत	१४।। बभतनय	१६।। रबनवतय	१६।। रबनवतय	१८।। रबगवतय
	उ.भा. १,२,३,४	२४।। बभत	१६।। बभतन	१८।। गबतभ	२१ गबतर	२६ बतर	१८ नबतर	१७।। नबवतर	२५।। बरवत	२८ बवर	२७ भ	१६ भन	२१ गभ	१८।। गबतभ	१६।। बभन	२५।। बभत	२७।। बवतर	२६।। बवतर	६।। बतरवयगन
	रेव. १,२,३,४	२५ बभ	२४।। बभत	११।। तगबभन	१४ गबनतर	१७ वनतर	२६ बतर	२५।। बरवत	२४।। रबवत	२६।। रबवत	२५।। भत	२७ भ	१४ भनग	१३ बभगन	२३।। बभत	२३।। बभत	२५।। बरवत	२६।। बरवत	१६।। बयरवतग

(ब = वर्णदोष । व वश्यदोष । त = तारादोष । य = योनिदोष । र = राशिदोष । ग = गणदोष । भ = भकूट दोष । न = नाडी दोष।)

मेलापक सारिणी

ऊर्ध्वाधरस्थान्यपि भानि पुंसां पार्श्वद्वयस्थानि तथा वधूनाम्॥ संपातकोष्ठे शुभयोर्गुणैक्यं सर्वं शुभं तत्स्मृतितोऽधिकं यत्॥

वर / कन्या		तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
		चित्रा ३,४	स्वाती १,२ ३,४	विशा. १,२,३	विशा. ४	अनु. १,२ ३,४	ज्ये. १,२ ३,४	मूल १,२ ३,४	पू.षा. १,२ ३,४	उ.षा. १	उ.षा. २,३,४	श्रव. १,२ ३,४	धनि. १,२	धनि. ३,४	शत. १,२ ३,४	पू.भा. १,२,३	पू.भा. ४	उ.भा. १,२ ३,४	रेव. १,२ ३,४
तुला	चित्रा ३,४	२८ न	२७ गय	३४।। त	२३।। भव त	६।। यगव तनभ	२०।। भव तय	२७ तय र	१४ गभ तर	२२ गत र	२५ गत व	२६।। गव	२३।। नव य	१८ नभ य	२६ भय	१८।। गभ तय	१२।। गभव तयर	३।। वतयग भनर	१२।। यगर भवत
	स्वाती १,२,३,४	२८ यग	२८ न	२० नय ग	६ भवय नग	२१।। भव त	१६।। भव तग	२३ तर ग	२७ तर ग	१६ तन र	२२ नव त	२३ नव त	२६।। वय ग	२१ यग भ	२० गय भ	२५ यभ	१६ वभ यर	१६।। वत भर	१२।। वतभ नर
	विशा. १,२,३,	३४।। त	१६ गन य	२८ न	१७ भव न	१६ गव भय	२०।। भव तय	२७ तय र	२२ गत र	१४ गन तर	१७ गन वत	१७ गन वत	३० वत य	२४।। भत य	२६ भय	२० गभ य	१४ गभव यर	१३ गयभ तर	४।। गभव नयतर
वृश्चिक	विशा. ४	२२।। बव भत	७ बवग नभय	१६ बव नभ	२८ न	२७ गय	३१।। तय	२१।। बवत यभ	१६।। बवग भत	८।। बवग नभत	१२ गबन तर	१२ बनग तर	२५ बत यर	२४ बवत यर	२५।। बव यर	१६।। बवग यर	१६ गभ य	१८ गय भ	६।। गभन तय
	अनु. १,२,३,४	६।। बवतभ यगन	२१।। बव भत	१६ बवभ यग	२८ यग	२८ न	३१ ग	१५।। बवत गयभ	१३।। तबव नभ	२१।। बव तभ	२५ बत र	२६ बत र	१२ तयब नरग	११ तयबव नरग	२१ बवत रग	२४।। बव यर	२४ भय	१८ नभ	२७ भ
	ज्येष्ठा १,२,३,४	१६।। बवत भय	१५।। तबव गभ	१६।। बवभ तय	३१।। तय	३० ग	२८ न	१४ बवन भय	१६।। बवत गभ	१६।। बवत गभ	२० व तर	२० व तर	२५ बत यर	२४ बवत यर	१८ बवन रत	१० तबवय गनर	६।। गभत नय	२१ गभ	२१ गभ
धनु	मूल १,२,३,४	२६ तब यर	२१ गब तर	२६ तब यर	२२।। भव तय	१५।। गवभ यत	१५ यव नभ	२८ न	२८ ग	२६।। गत	१५ गबभ वत	१५ गबभ वत	२० बभव तय	२८।। बव य	२१।। बन त	१४।। गनब तय	१६ गनव तय	२५ गव त	२६ गव
	पू.षा. १,२,३,४	१३ गबत नर	२७ बत र	२१ गब तर	१७।। गव भत	१५।। भव नत	१७।। गव भत	२८ ग	२८ न	३४	२२।। बभ व	२३ बभ वत	६ गबवभ नतय	१४।। गबत नय	२३।। गब त	२८।। बत य	३० वत यत	२३ नव	३१ वत
	उ.षा. १	२१ गब तर	१६ नब तर	१३ गबन तर	६।। गवभ नत	२३।। भव त	१७।। गव भत	२६।। गत	३४	२८ न	१६।। बभ वन	१४।। बभ वन	१५ गबव भत	२३।। गब त	२३।। गब त	२६।। बत त	३१ वत	३१ वत	२३ नव
मकर	उ.षा. २,३,४	२४ गब त	२२ नब वत	१६ गब नत	१३ गन तर	२७ तर	२१ गत र	१६ गभ वत	२३।। भव	१७।। न भव	२८ न	२६ न	२६।। गत	१७ गबभ वत	१७ गबव भत	२३ बभ वत	३०।। त	३०।। त	२२।। नत
	श्रव. १,२,३,४	२६।। बव ग	२२ नब वत	१७ नबग वत	१४ नत र	२७ तर	२२ तर	१७ भव तग	२३ भवत	१४।। नभ व	२५ न	२८ न	२८ यग	१८।। बभव तय	१८ बभव तग	२१ बभव तय	२८।। तय	२६।। त	२२।। नत
	धनि. १,२	२२।। नब वय	२४।। गब वय	२६ बव तय	२६ तय र	१२ गनत यर	२६ तय र	२१ भव तय	७ गभय वनत	१६ गभ वत	२६।। गत	२७ गय	२८ न	१८।। बभ नव	२३।। बभ वय	१६ गबव तभ	२६।। गत	१५।। गन तय	२२।। गय त
कुम्भ	धनि. ३,४	१८ नभ य	२० गभ य	२४।। भत य	२५ तव यर	११ गवय तनर	२५ तव यर	२६।। तय	१५।। गत नय	२४।। तग	१८ गभ वत	१८।। गभ वय	१६।। भव न	२८ न	३३ य	२८।। गत	१८ गभ वत	७ तगभ वनय	१४ गयव भत
	शत. १,२,३,४	२६ भय	१६ भय ग	२६ भय	२६।। यव र	२१ गव तर	१६ नव तर	२२।। नत	२४।। गत	२४।। गत	१८ गभ वत	१८ गभ वत	२४।। भव य	३३ य	२८ न	१६ गन य	८।। गभव नय	१७ गभ वत	१६ गभ वत
	पू.भा. १,२,३	१८।। गभ तय	२६ भय	२० गभ य	२०।। गव यर	२६।। वय र	११ गवत यनर	१५।। नग तय	२६।। तय	३०।। त	२४ भव त	२३ भव तय	२० भग वत	२८।। गत	१६ नग य	२८ न	१७।। नभ व	२२।। भव य	२० भय वत
मीन	पू.भा. ४	११।। गबभव तयर	१६ बभव यर	१३ गबव भयर	१६ गभ य	२५ भय	६।। गभन तय	१५ गबत नय	२६ बव तय	३० बव त	२६।। बत	२८।। बत य	२५।। गब त	१७ गब भत	७।। गबय भतन	१६।। बभ तन	२८ न	३३ य	३०।। यत
	उ.भा. १,२,३,४	२।। यवबर गभनत	१६।। भवब तर	१२ गवर भयब	१८ गय भ	१६ नभ	२१ गभ	२४ गब वत	२२ नब वत	३० बव त	२६।। बत	२६।। बत	१४।। गबत नय	६ गबवन भतय	१६ गबव भत	२१।। बभ तय	३३ य	२८ न	३५
	रेव. १,२,३,४	१२।। बभव तयर	११।। बभत वनर	४।। बभवन तगयर	१०।। नभत यग	२७ भ	२२ भग	२६।। बग व	२६ बव त	२१ नब वत	२०।। नब त	२१।। नब त	२२।। बय तग	१४ बवय भतग	१६ बभव तग	१८ बयभ वत	२६।। यत	३४	२८ न

(ब = वर्णदोष । व वश्यदोष । त = तारादोष । य = योनिदोष । र = राशिदोष । ग = गणदोष । भ = भकूट दोष । न = नाडी दोष।)

मंगली दोष विचार

ज्योतिषशास्त्र मेलापक द्वारा दम्पत्ति के आगामी जीवन के सुख-दु:ख, सम्पत्ति, विपत्ति, आय-व्यय तथा आने वाली घटनाओं का मनोवैज्ञानिक एवं तात्त्विक विवेचन करता है। अत: वर-कन्या के शुभ-अशुभ ग्रह योगों की सामञ्जस्यता एवं मित्रता होगी, तो आगामी जीवन सुखमय तथा आनन्दमय होगा। यदि ग्रहों में परस्पर शत्रुता एवं एक की कुण्डली में सौम्यग्रह तथा एक की कुण्डली में अरिष्टकारक ग्रह बैठे हों तो संघर्षमय जीवन के साथ-साथ एक-दूसरे को घातक सिद्ध हो सकते हैं। अत: कुण्डली मिलान के समय अरिष्ट योगों का विशेष रूप से विचार किया जाता है। यदि वर या कन्या किसी एक की जन्मकुण्डली या चन्द्रकुण्डली से लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम या व्यय स्थान में मंगल स्थित हो तो इस प्रकार की कुण्डली मंगली कही जाती है। यदि वर की कुण्डली में उपरोक्त स्थानों में मंगल हो तो कन्या को तथा यदि कन्या की कुण्डली में हो तो वर के लिए नेष्ट होता है।

'लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
कन्याभर्तृविनाशाय भर्ताकन्याविनाशद:॥'

(मुहूर्त्त-संग्रह-दर्पण)

मंगली दोष परिहार-

उपरोक्त कथनानुसार यदि वर-कन्या में से किसी एक की कुण्डली में मंगलीयोगकारक ग्रह स्थित हो तो परस्पर अरिष्टकारक होते हैं, किन्तु 'लोहा लोहे को काटता है' इस तथ्य के अनुसारयदि वर-कन्या दोनों की कुण्डली में समान मंगली योगकारक ग्रह स्थित हों तो दोनों का मंगली दोष कट जाता है, यह ध्यान रहे कि वर के मंगली योग का कन्या से प्रबल होना आवश्यक है। इसी प्रकार यदि एक की कुण्डली में मंगल योगकारक स्थानों 1, 4, 7, 8, 12 में हो तथा दूसरे की कुण्डली में इन्हीं स्थानों में मंगल अरिष्ट योगकारक शनि, राहु, केतु आदि पापग्रह स्थित हों तो एक-दूसरे के दोष को नष्ट कर देते हैं-

'शनिभौमोऽथवा कश्चित्-
पापो वा तादृशो भवेत्।
तेष्वेवभवनेष्वेवभौमदोषविनाशकृत्॥'

(फलित नवरत्न संग्रह)

'यामित्रे च यदा सौरिर्लग्ने वा हिबुके तथा ।
अष्टमे द्वादशे चैव भौमदोषो न विद्यते ॥''

यदि मेष राशि का मंगल लग्न में, वृश्चिक राशि का चतुर्थ में, मकर राशि का सप्तम में, कर्क राशि का अष्टम में तथा धनु राशि का व्यय स्थान में हो तो मंगल का दोष नहीं होता-

अजे लग्ने व्यये चापे पाताले वृश्चिके कुजे ।
द्यूने मृगे कर्कि चाष्टौ भौम दोषो न विद्यते ॥

अन्य आचार्य के मत में वृष राशि के मंगल को सप्तम भाव तथा कुम्भ राशि के भौम को अष्टम भाव में होने पर भौम दोष नहीं होता-

अजे लग्ने व्यये चापे पाताले वृश्चिके कुजे।
वृषे जाये घटे रन्ध्रे भौमदोषो न विद्यते ॥

बली गुरु शुक्र के लग्न या सप्तम भाव मे होने पर तथा मंगल के वक्री, नीचस्थ, शत्रुगृही तथा अस्तंगत होने पर भी मंगल का दोष समाप्त हो जाता है।

सबले गुरौ भृगौ वा लग्ने द्यूनेऽथवा भौमे ।
वक्रनीचारिगृहस्थे वाऽस्तेऽपि न कुजदोष: ॥

द्वितीय भाव में चन्द्र और शुक्र स्थित हो, मंगल पर गुरु की दृष्टि हो तथा केन्द्र स्थित राहु मंगल की युति हो, तो मंगली का दोष नहीं होता।

न मंगली चन्द्रभृगुर्द्वितीये,
न मंगली पश्यति यस्य जीव:।
न मंगली केन्द्रगते च राहुर्न-
मंगली मंगलराहुयोगे॥

केन्द्र त्रिकोण में शुभग्रह तथा 3, 6, 11वें भाव में अशुभ ग्रह सप्तमेश स्वगृही हो तो भौम का दोष नहीं होता-

'केन्द्रकोणे शुभाढ्ये च त्रिषडायेऽप्यसद्ग्रहाः।
तदा भौमस्य दोषो न मदने मदनपस्तथा ॥'

राशि की मित्रता, गण की ऐक्यता तथा गुणों की बहुलता मंगली दोष को नष्ट कर देती है–

'राशिमैत्रं यदायाति गणैक्यं वा यदा भवेत्।
अथवा गुणबाहुल्ये भौमदोषो न विद्यते॥'

उपरोक्त मंगली दोष परिहार से स्पष्ट है कि रामाचार्य ने बालवैधव्य का विचार करके सावित्री या पीपल के वृक्ष का व्रत कराकर विष्णु की प्रतिमा (शालिग्राम) पीपल वृक्ष या कुम्भ से विवाह के अनन्तर चिरंजीवी वर के साथ विवाह का जो विधान किया है, उसका भी यही तात्पर्य है–

"जन्मोत्थं च विलोक्य बालविधवायोगं विधाय व्रतं, सावित्र्या उत पैप्पलं हि सुतया दद्यादिमां वा रहः। सल्लग्नेऽच्युतमूर्तिपिप्पलघटैः कृत्वा विवाह स्फुटं दद्यातां चिरंजीविनेऽत्र न भवेद्दोषः पुनर्भूभवः॥"

विवाहादिकार्यों में सूर्य, गुरु व चन्द्र का अष्टक वर्ग विचार– विवाहादि शुभ कार्यों में यदि नाम राशि या जन्म राशि से गोचरीय ग्रह शुद्धि प्राप्त न हो तो अष्टकवर्गशुद्धि का विचार करना चाहिए, क्योंकि अष्टकवर्ग द्वारा शुद्ध गुरु, चन्द्र व सूर्य गोचर के अशुद्ध होने पर भी ग्राह्य माने जाते हैं। कहा भी है–

"अष्टकवर्गविशुद्धेषु गुरुशीतांशुभानुषु ।
व्रतोद्वाहौ च कर्त्तव्यौ गोचरेण कदाचन ॥"

क्योंकि.....

"अष्टकवर्गेण ये शुद्धास्ते शुद्धाः सर्वकर्मसु सूक्ष्माष्टवर्गसंशुद्धिः स्थूलाशुद्धिस्तु गोचरे"

सूर्याष्टकवर्ग रेखा - ४८

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
१	३	१	३	५	६	१	३
२	६	२	५	६	७	२	४
४	१०	४	६	९	१२	४	६
७	११	७	९	११		७	१०
८		८	१०			८	११
९		९	११			९	१२
१०		१०	१२			१०	
११		११				११	

गुरु का अष्टकवर्ग रेखा - ४९

गु.	शु.	श.	सू.	चं.	मं.	बु.	ल.
१	२	३	१	२	१	१	१
२	५	५	२	५	२	२	२
३	६	६	३	७	४	४	४
४	९	१२	४	९	७	५	५
७	१०		७	११	८	६	६
८	११		८		१०	९	७
१०			९		११	१०	९
११			१०			११	१०
			११				११

चन्द्राष्टकवर्ग रेखा - ५६

च.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	सू.	ल.
१	२	१	१	३	३	३	३
३	३	३	४	४	५	६	६
६	५	४	७	५	६	७	१०
७	६	५	८	७	११	८	११
१०	९	७	१०	९		१०	
११	१०	८	११	१०		११	
	११	१०	१२	११			
		११					

यात्रा मुहूर्त्त का विचार– यात्रा करने में चन्द्रवास, दिक्शूल, योगिनी, चन्द्रबल ये ४ बातें मुख्य विचारणीय हैं, साथ ही तिथि नक्षत्र आदि का भी विचार है। ह०, श्र०, अश्वि०, मृ०, पुष्य, पुन०, ध०, अनु०, रे० नक्षत्र सर्वश्रेष्ठ हैं अत्यावश्यकता में निन्द्य नक्षत्रों (भ०, कृ०, आर्द्रा, आश्ले०, म०, चि०, स्वा०, वि०, ज्ये०) की प्रारम्भ की क्रमश ७-२१-१०-१४-११-४०-१४-१४-१४ घटियां यात्रा में त्याज्य हैं। रो०, तीनों उत्तरा, तीनों पूर्वा, मूल ये नक्षत्र मध्यम माने हैं। कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा, शुक्ल पक्ष की द्वितीया तिथि में यात्रा शुभ है। जन्मलग्न और जन्म राशि से अष्टम लग्न व नवांश में, कुम्भ लग्न या कुम्भ के नवांश में यात्रा सर्वथा निषिद्ध है।

चन्द्रवास का विचार-

मेषे च सिंहे धनुपूर्वभागे वृषे च-
कन्यामकरे च याम्ये ।
युग्मे तुलायां च घटे प्रतीच्यां-
कर्कालिमीने दिशि चोत्तरस्याम् ॥१॥

दिशा	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क
राशि	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
राशि	धनु	मकर	कुम्भ	मीन

यात्राफल- यात्रा काल में चन्द्रमा सम्मुख होने पर अर्थलाभ, दक्षिण होने पर सुख-सम्पत्ति, पृष्ठ होने पर मरण तुल्य कष्ट या मरण, वाम होने पर धन की हानि करता है।

'सर्वे दोषाः लयं यान्ति पूर्णचन्द्रे ही सम्मुखे।'

दिशा	सम्मुख	दक्षिण	पृष्ठ	वाम
फल	अर्थलाभ	सुख-सम्पत्ति	मरण	धनक्षय

(महाकष्ट)

यथा-

सम्मुखे अर्थलाभाय दक्षिणे सुखसम्पदः।
पृष्ठतो मरणं चैव वामे चन्द्रे धनक्षयः॥२॥

योगिनी विचार- प्रतिपदा से प्रारम्भ कर पूर्व, उत्तर अग्नि, नैऋत्य, दक्षिण, पश्चिम, वायव्य, ईशान इन दिशाओं में क्रमशः योगिनी का भ्रमण होता है। यह योगिनी यात्रा करने वालों के लिए सम्मुख तथा वाम शुभ नहीं होती। दक्षिण तथा पृष्ठ में रहने पर शुभ होती है।

योगिनीवासचक्र	
तिथियाँ	दिशा
१-९	पूर्व
२-१०	उत्तर
३-११	अग्नि
४-१२	नैऋत्य
५-१३	दक्षिण
६-१४	पश्चिम
७-१५	वायव्य
८-३०	ईशान
योगिनीवासचक्रम्	

योगिनी का विशेष-विचार- योगिनी के शुभा-शुभत्व के विषय में ज्योतिष ग्रन्थों में दोनों प्रकार के वाक्य उपलब्ध होते हैं। यथा-

योगिनी सम्मुखे द्यूते गमे युद्धे च मृत्युदा ।
अशुभा वामभागस्था पृष्ठे दक्षे जयप्रदा ॥२॥

(मुहूर्त्त गणपति)

इसके विपरीत शीघ्रबोध में निम्नवाक्य मिलता है।

योगिनी सुखदा वामे पृष्ठे वांछितदायिनी।
दक्षिणे धनहन्त्री च सम्मुखे मरणप्रदा ॥२॥

(शीघ्रबोध)

तथा **जयदा पृष्ठदक्षस्था भंगदा वामसम्मुखी ।**
त्रिविधंयोगिनीचक्रम् इत्युक्तं ब्रह्मयामले ॥३॥

(स्वरोदय)

मुहूर्त्त चिन्तामणिकार द्वारा-

'सम्मुखवामगा न शस्ता' यह कहा गया है॥४॥

तथा च-

पृष्ठतो दक्षिणे वापि योगिनी गमने हिता ।
वामसम्मुखयोर्नेष्टा वायुमेवं विचिन्तयेत् ॥५॥

(विजय कल्पलता)

तथा-

वामे शुभकरीदेवी पृष्ठेसर्वार्धदायिनी ।
वंशबन्धकरी चाग्रे दक्षिणे मृत्युदायिनी ॥७॥

(ज्योतिस्तत्त्व)

इस प्रकार के विरोधी वचनों को देखते हुए मुहूर्त्तचिन्तामणि, मुहूर्त्तगणपति, स्वरोदय एवं विजय कल्पलता के वचनों के आधार पर दक्षिण तथा पृष्ठस्थ योगिनी शुभ एवं वाम और सम्मुखस्य योगिनी को अशुभ माना है।

दिक्शूल-विचार

वार	दिशा
सोम, शनि	पूर्व
सोम, गुरु	आग्नेय
गुरु	दक्षिण
रवि, शुक्र	नैऋत्य
रवि, शुक्र	पश्चिम
मंगल	वायव्य
मंगल, बुध	उत्तर
बुध, शनि	ईशान

आवश्यक कार्य में रविवार में घृतपान, सोम को दूध, मंगल को गुड़, बुध को तिल, गुरु को दधि, शुक्र को यवान्न, शनि को उड़द तेल या तेल की वस्तु का सेवन करके जाना शुभ है।

पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	दिशा
ज्येष्ठा	पू.भा.	रोहिणी	उ.फा.	नक्षत्र

विशेष- यात्रा में घातचन्द्र, शुक्रास्त, जन्मराशीश, जन्मदशेश के अस्त होने पर शुभफल नहीं होता है।

पहली तीर्थ यात्रा गुरु, शुक्र होने पर वर्ज्य है। सिंह राशि का गुरु एवं नीच राशि का गुरुवर्ज्य है।

समयशूल-विचार

पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
प्रात:काल	मध्याह्न	सायंकाल	अर्धरात्रि

दिक्शूल परिहार-

'न वारदोषा: प्रभवन्ति रात्रौ
देवेज्यदैत्येज्यदिवाकराणाम्।
दिवा शशांकार्कजभूसुतानां
सर्वत्र निन्द्यो बुधवारदोष:॥'

दिशाओं के विभाग से लग्न-विचार

दिशा	शुभ लग्न	मध्यम	भय	महाभय
पूर्व	१-५-९	२-६-१०	४-८-१२	३-७-११
दक्षिण	२-१०-६	३-७-११	१-५-९	४-८-१२
पश्चिम	३-७-११	४-८-१२	२-६-१०	१-५-९
उत्तर	४-८-१२	१-५-९	३-७-११	२-६-१०

प्रस्थान-विचार- यात्रा मुहूर्त्त में विलम्ब होने पर यात्रा के तीन दिन के अन्दर वर्णानुसार यज्ञोपवीतादि वस्तु या मन की सबसे प्रियवस्तु को किसी के यहां रख दें। पुन: यात्रा में जाते समय ले जायें।

गृहारम्भ विचार- नवीन गृहनिर्माण के पूर्व नींव खोदने के उपरान्त इष्टिका स्थापना का विचार करना चाहिए। नींव खनन करते समय राहुमुख का विचार कर राहुमुख के पीछे वाली दिशा से खात (नींव) खनन प्रारम्भ करें।

राहुमुख एवं खातदिशा ज्ञान के लिए चक्र

कोण	ईशा	वायव्य	नैऋत्य	अग्नि
गृहारम्भ	सिंह, कन्या, तुला	वृश्चि., धनु, मकर	कुम्भ, मीन, मेष	वृष, मिथुन, कर्क
देवालया-रम्भ	मीन, मेष, वृष	मिथुन, कर्क, सिंह	कन्या, तुला, वृश्चिक	धनु, मकर, कुम्भ
जलाशया-रम्भ	मकर, कुम्भ, मीन	मेष, वृष, मिथुन	कर्क, सिंह, कन्या	तुला, वृष, धनु
खातदिशा	आग्नेय	ईशान	वायव्य	नैऋत्य

गृहारम्भ से पूर्व भूमि के शुभाशुभत्व की भी परीक्षा कर लेनी चाहिए। भूमि में एक हाथ चौड़ा एक हाथ लम्बा, एक हाथ गहरा गड्ढा बनाकर रात्रि में उसे जल से भरकर प्रात:काल देखें की यदि जलयुक्त हो तो शुभ, निर्जल हो तो मध्यम, जलहीन के साथ फटी हो तो भूमि अशुभ समझें।

गृहारम्भ मुहूर्त्त-चक्र		वार	बुध, गुरु, शुक्र, सोम, शनि	त्याज्य	भद्रा, अशुभ योग, अष्टमचन्द्र, चक्र अशुद्धि।
नक्षत्र	तीनों उत्तरा, मृग०, पुष्य, अनु०, ध०, श०, चि०, ह०, स्वा०, रे०, रो०	तिथियाँ लग्न	२, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५ २, ३, ५, ६, ८, ११, १२		
मास	वै०, श्रा०, मार्ग०, माघ, फाल्गुन इन मासों में। सूर्य क्रमशः १, ४, ५, ८, १०, ११ राशियों में स्थित होने पर।	लग्न शुद्धि	स्वामी की दृष्टि हो, लग्न से १, ४, ७, १०, ५, ९वें शुभ ग्रह, ३, ६, ११वें, पाप ग्रह तथा ८, १२ स्थान शुभ पाप से रहित।	विशेष :- शुक्ल पक्ष, गुरु-शुक्र के उदय में गृहराम्भ विशेष शुभ है। यात्रा में दिन में दिनमान अष्टमांश से, रात्रि में रात्रि के अष्टमांश से वेलाफल बोधक चक्र-	

चतुर्घटिका (चौघड़िया) मुहूर्त्त

घटी	रवि	रवि	सोम	सोम	मंगल	मंगल	बुध	बुध	गुरु	गुरु	शुक्र	शुक्र	शनि	शनि
	दिन	रात्रि	दिन	रात्रि	दिन	रात्रि	दिन	रात्रि	दिन	रात्रि	दिन	रात्रि	दिन	रात्रि
४	उद्वेग	शुभ	अमृत	चर	रोग	काल	लाभ	उद्वेग	शुभ	अमृत	चर	रोग	काल	लाभ
४	चर	अमृत	काल	रोग	उद्वेग	लाभ	अमृत	शुभ	रोग	चर	लाभ	काल	शुभ	उद्वेग
४	लाभ	चर	शुभ	काल	चर	उद्वेग	काल	अमृत	उद्वेग	रोग	अमृत	लाभ	रोग	शुभ
४	अमृत	रोग	रोग	लाभ	लाभ	शुभ	शुभ	चर	चर	काल	काल	उद्वेग	उद्वेग	अमृत
४	काल	काल	उद्वेग	उद्वेग	अमृत	अमृत	रोग	रोग	लाभ	लाभ	शुभ	शुभ	चर	चर
४	शुभ	लाभ	चर	शुभ	काल	चर	उद्वेग	काल	अमृत	उद्वेग	रोग	अमृत	लाभ	रोग
४	रोग	उद्वेग	लाभ	अमृत	शुभ	रोग	चर	लाभ	काल	शुभ	उद्वेग	चर	अमृत	काल
४	उद्वेग	शुभ	अमृत	चर	रोग	काल	लाभ	उद्वेग	शुभ	अमृत	चर	रोग	काल	लाभ

विशेष - विजयदशमी को बिना मुहूर्त्त के भी यात्रा शुभ है वाम स्वर चलने पर पूर्व व ईशान, दक्षिण स्वर चलते समय दक्षिण व नैर्ऋत्य कोण में जाना अशुभ है।

मन की तीव्र इच्छा भी एक मुहूर्त्त है। मन के निषेध करने पर न जावें। मन के कहने पर बिना मुहूर्त्त भी यात्रा शुभ है। श्वास ग्रहण करते समय वाहन पर पैर रखें तो यात्रा सुरक्षित कहलाती है।

चैत्रादि मास में गृहारम्भ का मास के अनुसार फल

मास	फल
चैत्र	शोक
वैशाख	धान्य
ज्येष्ठ	पशु मरण
आषाढ़	हानि
श्रावण	द्रव्य वृद्धि
भाद्रपद	नाश
आश्विन	शुभ
कार्तिक	मृत्यु
माघ	धन
पौष	श्री प्राप्ति
मार्गशीर्ष	वह्निभय
फाल्गुन	लक्ष्मी लाभ

गृहारम्भ में शिलान्यास (प्रथम इष्टिका स्थापना) पूर्व दक्षिण कोण (अग्निकोण) में करें।

'क्षेत्रभित्तिशिलान्यासस्तम्भस्यारोपणं तथा।
पूर्वदक्षिणयोर्मध्ये कुर्यादित्याह कश्यपः॥'

वत्स चक्र विचार– सूर्य जिस नक्षत्र पर हो उससे गृहारम्भ नक्षत्र तक अभिजित् सहित गणना करें पुनः चक्रानुसार फल विचारें।

वत्स-चक्र

नक्षत्र	स्थान	फल
३	शीर्ष	वह्निभय
४	अग्रिमपाद	रिक्त, अशुभ
४	पृष्ठपाद	स्थिरता
३	पृष्ठ	श्रीलाभ
४	दक्षिण कुक्षि	शुभ लाभ
३	पुच्छ	स्वामिनाश
४	वाम कुक्षि	निर्धनता
३	मुख	अशुभ, कष्ट

अन्य विशेष– पुष्य, 3 उत्तरा, रो०, म०, आश्ले०, पू०षा०, इन नक्षत्रों में, गुरु जिस नक्षत्र पर हो उस नक्षत्र में, गुरुवार को गृहारम्भ पुत्र और लक्ष्मीदायक माना गया है। रो०, ह०, श्र०, उ०फा०, चि०, इनमें बुधाधिष्ठित नक्षत्र में बुध वार को गृहारम्भ पुत्र और सुखप्रद है। वि०, चि०, आ०, आश्ले०, ध०, श० इनमें शुक्राधिष्ठित नक्षत्र में शुक्रवार को गृहारम्भ धनधान्यप्रद होता है।

भूमि शयन– नींव खनन में भूमि शयन का भी विचार करें। सूर्य नक्षत्र से 5, 7, 9, १२, १९, २६ संख्यक नक्षत्रों में भूमि खनन अशुभ है। अत्यावश्यकता में इन नक्षत्रों की ५, ११, ७, ६, २, १० ये घड़ी वर्जित करें।

कुँआ या नल लगाने के लिए– गृह में उत्तर, ईशान, पूर्व व पश्चिम दिशायें श्रेष्ठ है अन्य शुभ हैं।

कुँआ खोदने व नल लगाने के लिए चक्र

दिशा	फल
पूर्व	ऐश्वर्य
अग्नि	सुत हानि
दक्षिण	स्त्री नाश
नैर्ऋत्य	गृहपति नाश
पश्चिम	सम्पत्ति
वायव्य	शत्रुभय
उत्तर	सुख
ईशान	पुष्टि
मध्य	अर्थ हानि

द्वार शाखा (द्वारस्थापन) विचार

द्वार चक्र– सूर्य नक्षत्र से गणना करके चक्र देखकर शुभ फलदायक नक्षत्र में चक्रबल शुद्धि में द्वार (मुख्यद्वार) की स्थापना करें।

द्वारस्थापन-चक्र

नक्षत्र	स्थान	फल
४	शिर	श्री प्राप्ति
८	कोण	उद्वसन
८	शाखा	सौख्य
३	देहली	गृहेशनाश
४	मध्य	सौख्य

जीर्ण व नूतन गृह-प्रवेश मुहूर्त्त-चक्र

मास	वै०, ज्ये०, माघ, फाल्गुन
नक्षत्र	तीनों उत्तरा, अनु०, रो०, मृ०, चि०, रे०, इन नक्षत्रों में कुम्भ चक्र शुद्धि होने पर ।
वार	चं०, बु, गु०, शु०, श०
तिथियाँ	१, २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३
लग्न	(२, ५, ८, ११) शुभ (३, ६, ९, १२) मध्यम
लग्न शुद्धि	लग्न से १, २, ३, ५, ७, ९, १०, ११वें स्थानों पर शुभ ग्रह ३, ६, ११ पाप तथा ४, ८ स्थान ग्रह रहित श्रेष्ठ हैं।
जीर्ण	उपरोक्त मास तथा श्रा०, मार्ग०, कार्तिक भी ग्राह्य है। गुरु शुक्रास्त में भी।
गृह-प्रवेश	शत०, पुष्य, स्वाती और धनिष्ठा नक्षत्रों में शुभ है।

जीर्ण व नूतन गृह–

प्रवेश मुहूर्त्त विचार- गृह निर्माण के बाद मास, तिथि, वार नक्षत्र, लग्न व चन्द्र तारा शुद्धि में कुम्भचक्रशुद्धि तथा जन्म लग्न व जन्म राशि से प्रवेश लग्न अष्टम से अन्य होने पर दम्पत्ति जलपूर्ण कलश पर पुष्पमाला, पञ्चपल्लव तथा नारिकेल रखकर, गीत-वाद्य ब्राह्मण, कन्या व गौ के सहित गृहप्रवेश करें।

कुम्भ–चक्र– कुम्भ-चक्र- सूर्य नक्षत्र से गणना कर विचार करें।

५	८	८	६
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ

सूर्य नक्षत्र से गृह–

प्रवेश तक उक्त चक्रानुसार गणना कर शुभफल के समय में ही प्रवेश करना चाहिए।

स्पष्ट फल ज्ञान के लिए अन्य कुम्भ-चक्र

नक्षत्र	स्थान	फल
१	मुख	अनिग्दाह
४	पूर्व	उद्वसन
४	दक्षिण	लाभ
४	पश्चिम	लक्ष्मीप्राप्ति
४	उत्तर	कलह
४	गर्भ	विनाश
३	अधः	स्थिरता
३	कण्ठ	स्थिरता

दुकान (विपणि) करने का मुहूर्त्त

नक्षत्र	रो०, तीनों उत्तरा, ह०, पुष्य, चि०, रे०, अनु०, मृ०, अश्वि०
वार	सोम, बुध, गुरु, शुक्र
तिथि	२, ३, ५, ७, १०, १२, १३
अन्य	चन्द्रशुद्धि, शुभलग्न

क्रय नक्षत्र– क्रय नक्षत्र- रे०, अ०, शत०, स्वा०, श्र०, चित्रा नक्षत्र बुध तथा रविवार श्रेष्ठ हैं।

विक्रय नक्षत्र– पू०, फा०, पू०षा०, पू०भा०, वि०, चि०, कृ०, आश्ले०, भर० ये सात नक्षत्र गुरुवार और सोमवार श्रेष्ठ हैं।

विशेष- बेचने के नक्षत्रों में खरीदना तथा खरीदने के नक्षत्रों में बेचना हानिप्रद है।

बड़ा व्यापार करने का मुहूर्त्त

नक्षत्र	हस्त, पुष्य, तीनों उत्तरा, चित्रा।
वार	बुध, गुरु, शुक्र
तिथि	२, ३, ५, ७, ११, १३

नौकरी करने का मुहूर्त्त- हस्त, चित्रा, अनु०, रे०, अ०, मृ०, पुष्य नक्षत्रों में बुध, गुरु, शुक्र, रवि इन वारों में रिक्ता, अमा०, रहित तिथियों में नौकरी प्रारम्भ करनी श्रेष्ठ है

मुकद्दमा दायर करने का मुहूर्त्त

नक्षत्र	ज्ये०, आर्द्रा०, म०, तीनों उत्तरा, मृ०, आश्ले०, भ०
वार	रवि, बुध, गुरु, शुक्र
तिथि	३, ५, ८, १०, १५
लग्न	३, ६, ७, ८, १२
लग्नशुद्धि	सूर्य, बुध, गुरु, शुक्र, चन्द्र ये ग्रह १, ४, ७, १० इन स्थानों में, पापग्रह ३, ६, ११ स्थानों पर शुभ हैं। अष्टम स्थान में कोई ग्रह न हो।

विशेष- लग्न में कोई प्रबल पाप ग्रह हो ऐसे लग्न में मुकदमा दायर करना अत्यन्त शुभ है।

मशीनरी चालू करने का मुहूर्त्त

वार	बुधवार, अत्युत्तम है अन्य शुभ वार
नक्षत्र	धनि०, अश्वि०, ह०, चि०, अनु०, पु०, पुष्य, ज्ये०, एवं रेवती।
लग्नशुद्धि	श०, मं०, शु०, श० शुभ स्थानों में हों।
अन्य	शनि की होरा, चन लग्न

गाय बैल आदि पशु लेने का मुहूर्त- गाय खरीदने के लिए उ.फा. नक्षत्र से वर्तमान नक्षत्र तक (खरीदने के नक्षत्र तक) गणना करें, वह नक्षत्र ४, ५, २६ या २७वाँ हो तो गाय लेना अशुभ है। शेष सभी नक्षत्रों में गाय खरीदना शुभ है। भैंस लेने के लिए नक्षत्र से गणना करने पर ४, ५, २६, २७वाँ नक्षत्रों को त्याग कर शेष श्रेष्ठ हैं। बैल लेने के लिए उ.फा. से ३-४-२६-२७वें नक्षत्रों को छोड़कर शेष नक्षत्र लाभपद हैं। तिथियों में ९-१४-४ (रिक्ता) तथा मंगलवार को कभी भी पशु न लें।

मन्दिर निर्माण का मुहूर्त्त

मास	माघ, फा०, वै०, ज्ये, मार्ग, पौष
नक्षत्र	पुष्य, तीनों उत्तरा, मृग०, श्र०, अश्वि०, चि०, पुन०, आर्द्रा, ह०, ध०, रो०।
वार	सो०, बु, गुरु, शुक्र
तिथि	२, ३, ५, ७, ११, १२, १३

जलाशयारामसुरप्रतिष्ठामुहूर्त्त

समय	उत्तरायण, गुरु, शुक्र व मंगल के बली होने पर
तिथि	शुक्ल पक्ष की १-२-५-१०-१३-१५ कृष्ण पक्ष की १-२-५ मतान्तर से शुक्लपक्ष की ७-११ ।
नक्षत्र	पुष्य, तीनों उत्तरा, ह०, रे०, रो०, अश्वि०, मृ०, श्र०, ध०, पुन०, (मतान्तर से चि०, स्वा०, भ०, मू०, अत्यावश्यक होने पर।)
वार	सोम, बुध, गुरु, शुक्र ।
लग्न शुद्धि	२,३,५,९,११,१२ (लग्न राशियाँ) केन्द्र त्रिकोण में शुभ ग्रह ३, ६, ११वें पापग्रह, अष्टम शुद्ध हो।
अन्य	पूर्वाह्न, अपने-अपने मास तिथि, नक्षत्र में दक्षिणायन में प्रतिष्ठा के लिए शास्त्राज्ञा। (यथा चतुर्दशी में शंकर चतुर्थी में गणेश) इत्यादि।

प्रतिष्ठामुहूर्त्त- देवतारामवाप्यादिप्रतिष्ठामुत्तरायणे। माघादिपञ्च-मासेषु कृष्णेऽप्यापंचमीदिने। मातृभैरववाहारनारसिंहत्रिविक्रमाः। महिषासुरहन्त्री च स्थाप्या च वै दक्षिणायने।

चुल्लिचक्र विचार

सूर्य जिस नक्षत्र पर हो उस से चन्द्र नक्षत्र (दिन नक्षत्र) तक गणना करके पुनः चक्रानुसार फल का विचार करें।

नक्षत्र संख्या	६	४	८	३	६
फल	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ

हल प्रवहण मुहूर्त्त

मृगशीर्ष, रेवती, चित्रा, अनुराधा, रोहिणी, तीनों उत्तरा, हस्त, अश्विनी, पुष्य, अभिजित्, स्वाती, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, मूल, मघा और विशाखा इन नक्षत्रों में रिक्ता, अमावस्या, षष्ठी और अष्टमी तिथियों को छोड़कर शेष तिथियों में १, ५, ७, १०, ११ इन लग्नों को छोड़कर भूमिशयन एवं भद्रादि का विचार कर हलचक्र शुद्धि होने पर प्रथम बार हल प्रवहण करना श्रेयस्कर होता है।

हल चक्र – सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र (चन्द्र नक्षत्र) तक गणना करके निम्न चक्रानुसार शुभाशुभ फल का विचार करें।

नक्षत्र संख्या	३	७	९	८	६
फल	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	शुभ

बीजवपन मुहूर्त्त

हस्त, अश्विनी, पुष्य, तीनों उत्तरा, रोहिणी, चित्रा, अनुराधा, मृगशीर्ष, रेवती, स्वाती, धनिष्ठा, मघा एवं मूल इन नक्षत्रों में, रिक्ता तिथि, अष्टमी, अमा, भद्रा, क्षीण चन्द्र, तिथिक्षय, सूर्य, मंगल और शनिवार, रात्रि एवं दोनों सन्ध्याओं को छोड़कर राहु नक्षत्र से बीजोप्ति चक्र के अनुसार बीजवपन शुभ होता है।

राहु नक्षत्र से बीजोत्पति चक्र

नक्षत्र	स्थान	फल
३	शिर	धान्यनाश
३	गला	कालिमा युक्त
१२	उदर	वृद्धि
४	पुच्छ	तुष
५	बाह्य	नाश

औषधसेवन मुहूर्त्त

हस्त, चित्रा, स्वाती पुनर्वसु, पुष्य, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, अश्विनी, रेवती, अनुराधा, मृगशीर्ष मूल नक्षत्र तथा रविवार व शुभ दिनों (चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र) में रिक्ता, अष्टमी, अमा एवं भद्रा तिथियों को छोड़कर, शुभ ग्रहों के बली होने पर तथा लग्न से ६, ७, ८, १२ भावों के शुद्ध (ग्रहरहित) होने पर औषध निर्माण व सेवन आयुष्यवर्धक एवं शुभ होता है।

वाहन आरोहण मुहूर्त्त

रेवती, अश्विनी, शतभिषा, स्वाती, मृगशीर्ष, चित्रा, पुनर्वसु, श्रवण, हस्त, पुष्य व धनिष्ठा नक्षत्र तथा सूर्य, चन्द्र, बुध, गुरु व शुक्र वारों में, रिक्ता, अमा एवं भद्रा रहित तिथियों में तथा चर लग्नों में प्रथम बार वाहन की सवारी करना शुभ होता है।

वास्तु मुहूर्त विचार

वसन्त्यस्मिन् इति वास्तु अर्थात् जिस भूमि अथवा भवन में निवास करने वाले लोगों को समुचित सुरक्षा, सुविधा एवं प्राकृतिक शक्तियों तथा पंचमहाभूतों के सामने वाले स्वास्थ्य लाभ मिलता रहे, उस भवन को "वास्तु" कहा जाता है। वास्तु सम्बन्धी नियमादि का वर्णन जिस शास्त्र में मिलता हो उसको "वास्तुशास्त्र" कहते हैं। ऋषियों, मनीषियों, आचार्यों ने सतत मनन-चिन्तन तथा अनुभवों के आधार पर इस शास्त्र को समृद्धशाली बनाया है। यद्यपि यह शास्त्र बहुत विस्तृत है, तथापि वास्तुशास्त्र के अन्तर्गत भूमि एवं भवन के विधिसम्मत निर्माण में जिन कारकों का समावेश होता है, उसे "गृहवास्तु" कहा जा सकता है। गृहवास्तु के आधार पर भवन निर्माण में क्रमिक रूप से जो कार्य सम्पन्न किए जाते हैं उनमें भूमि पूजन से प्रारम्भ कर गृह प्रवेश पर्यन्त तक के सभी कृत्यों का वर्णन शास्त्रों में प्राप्त होता है।

प्रत्येक कार्य को सम्पन्न करने में "काल" का विशेष महत्त्व होता है। यदि उचित समय पर बीजारोपण किया जाए, तो कृषि भी उन्नत एवं पैदावार अधिक होती है। समय पर बीजारोपण न करने पर पैदावार भी न्यूनतम होने की सम्भावना रहती है। अतः भवन निर्माण भी समय सापेक्ष अनिवार्य माना जाता है। यदि शुभ समय पर भवन निर्माण की प्रक्रिया प्रारम्भ की जाए तो भवन का निर्माण निर्विघ्न समाप्त होगा, अशुभ समय में प्रारम्भ प्रक्रिया से पग-पग पर विघ्न-बाधाओं के चलते भवन निर्माण की सम्भावना क्षीण एवं सन्देहास्पद ही रहेगी। ज्योतिष एवं वास्तुशास्त्र के अनुसार शुभ-समय का चयन करना ही "मुहूर्त" कहलाता है। मुहूर्त पंचांग शुद्धि एवं लग्नादि के आधार पर निश्चित होता है। कार्य की प्रवृत्ति, देश-काल का सम्यक् बोध करके ही, पूर्वाचार्यों ने मुहूर्तों के लिए शास्त्रों में निर्देश दिए हैं। "गृहवास्तु" में भूमि पूजन से प्रारम्भ कर गृह-प्रवेश पर्यन्त तक के विविध कृत्यों में मुहूर्तों का महत्वपूर्ण स्थान है।

भूमि पूजन मुहूर्त विचार

गृहारम्भ में सर्वप्रथम भूमि पूजन होता है। बाद में शिलान्यास किया जाता है। कुछ लोग भ्रान्तिवश भूमि पूजन एवं शिलान्यास को एक ही कार्य मान लेते हैं और दोनों कार्य एक साथ ही सम्पन्न करते एवं कराते हैं। भूमि पूजन में शिलान्यास से पूर्व नींव के लिए खुदाई का कार्य होता है। शिलान्यास में नींव में प्रथम शिला स्थापित करके भवन की नींव भरी जाती है। भूमि पूजन हेतु मुहूर्त के लिए मास शुद्धि, पक्ष शुद्धि, पंचांग शुद्धि एवं लग्न का विचार विशेष रूप से किया जाता है किन्तु इन सब के विचार करने के पूर्व भूमि को शयनावस्था का विचार करना चाहिए। भूमि शयन में भूमि पूजन न करके जाग्रत भूमि में ही भूमि पूजन करना श्रेयस्कर होता है।

प्रद्योतनात्यंचनगांकसूर्यनवेन्दुषड्विंशतिमितेषु भेषु।
शेते मही नैव गृहं विधेयं तडागवापी खननं न शस्तम्॥

– बृहद्वास्तुमाला प्रयोग मिश्रप्रकरण श्लोक ९६

अर्थात् सूर्य नक्षत्र से चन्द्र नक्षत्र तक (जिस दिन भूमि-पूजन अभीष्ट हो) ५, ७, ९, १२, १९ एवं २६ वाँ नक्षत्र हो तो, भूमि खनन अर्थात् नींव खोदने का कार्य नहीं करना चाहिए। मतान्तर से सूर्य संक्रान्ति के दिन से ५, ७, ९, ११, १५, २०, २२, २३ एवं २८ वें दिन भूमि शयन होता है। इसको विचार कर ही भूमि पूजन का मुहूर्त निश्चय करें। अन्य विचारणीय विषय निम्न प्रकार हैं –

१. गुरु-शुक्र तथा चन्द्रमा के अस्त होने पर भूमि पूजन नहीं होता।

२. रविवार एवं मंगलवार भूमि खनन में वर्जित हैं।

३. रिक्ता (४, ७, ९, १४) एवं अमावस्या तिथि त्याज्य हैं।

प्रशस्त मास - वैशाख, श्रावण, मार्गशीर्ष, पौष एवं फाल्गुन मास द्वारदिक्परक से ग्राह्य हैं। इनमें चान्द्र एवं सौरमासों का ग्रहण किया गया है।(मुहूर्तचिन्तामणि वास्तुप्रकरण श्लोक १५)-

स्पष्टार्थ चक्र

मास (चान्द्र)	सूर्यराशि	द्वारदिशा
वैशाख	मेष, वृष	उत्तर-दक्षिण
श्रावण	कर्क, सिंह	पूर्व-पश्चिम
मार्गशीर्ष	तुला, वृश्चिक	उत्तर-दक्षिण
पौष	मकर	पूर्व-पश्चिम
फाल्गुन	कुम्भ	पूर्व-पश्चिम

मतान्तर से कार्तिक एवं माघ मास भी ग्राह्य हैं। शुभ मुहूर्त में यथोपलब्धोपचार से भूमि पूजन कर यथाशक्ति ग्रहों एवं वास्तु देवताओं का भी पूजन स्मरण करके नींव खनन का कार्य प्रारम्भ करना चाहिए।

नींव खनन का कार्य विदिशाओं से ही प्रारम्भ किया जाता है। मुख्य दिशा अर्थात् पूर्व-पश्चिम-उत्तर एवं दक्षिण दिशाओं में खनन प्रारम्भ नहीं होता है। राहु मुख का विचार पूर्वको विविध कार्यों में कोण दिशा से खनन प्रारम्भ किया जाता है। राहु मुख का विचार करके पृष्ठविदिशा में नींव खनन का कार्य प्रारम्भ करके चारों तरफ खनन कार्य सम्पन्न करना चाहिए।

देवालये गेहविधौ जलाशये
राहोर्मुखं शम्भुविशो विलोमतः।
मीनार्कसिंहार्कमृगार्कतस्त्रिभे खाते
मुखात् पृष्ठविविक् शुभा भवेत्।।

- मुहूर्तचिन्तामणि वास्तुप्रकरण श्लोक १९

खातदिक् ज्ञापक चक्र (राहु मुख-पृष्ठ चक्र)

कार्य	राहु मुख दिशा (ईशान)	राहु मुख दिशा (वायव्य)	राहु मुख विशा नैर्ऋत्य कोण	राहु मुख विशा अग्निकोण
देवालय	१२, १, २ राशि के सूर्य में	३, ४, ५ राशि के सूर्य में	६, ७, ८ राशि के सूर्य में	९, १०, ११ राशि के सूर्य में
गृहारम्भ	५,६,७ राशि के सूर्य में	८, ९, १० राशि के सूर्य में	११, १२, १ राशि के सूर्य में	२, ३, ४ राशि के सूर्य में
जलाशय	१०,११,१२ राशि के सूर्य में	१, २, ३ राशि के सूर्य में	४, ५, ६ राशि के सूर्य में	७.८.९ राशि के सूर्य में
खनन दिशा	**अग्निकोण**	**ईशान**	**वायव्य**	**नैर्ऋत्य**

अभीष्ट कोण से प्रारम्भ करके दक्षिणावर्तीक्रम से नींव का खनन करना उचित होता है।

शिलान्यास (गृहारम्भ) मुहूर्त -

नींव खनन हो जाने के पश्चात् नींव को भरने का कार्य प्रारम्भ होता है। प्रारम्भिक इंट अथवा पत्थर की प्रथम शिला रखने को ही शिलान्यास कहते हैं। तत्पश्चात् गृह निर्माण करने की प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती है। फिर निरन्तर कार्य चालू रखना ही उचित होता है। शिलान्यास (प्रथम इष्टिका न्यास) सर्वदा अग्निकोण में ही करना चाहिए। खात (खनन) का प्रारम्भ तो यम इष्टिका न्यास) सर्वदा अस्तिकता है किन्तु शिलान्यास सदैव अग्निकोण में ही किए जाने का बहुसम्मत मत शास्त्रों में उपलब्ध होता है।

यथा शारंगधरः –

दक्षिणपूर्वे कोणे कृत्वा पूजां शिलां न्यसेत्प्रथमम् ।
शेषाः प्रदक्षिणेन स्तम्भाश्च प्रतिस्थाप्या।
प्रासादेषु हर्येषु गृहेष्वन्येषु सर्वदा।
आग्नेय्यां प्रथमं स्थापयेत्तद्विधानतः ॥

– बृहद्वास्तुमालाप्रयोग मिश्रप्रकरण श्लोक १२३-१२४

कश्यप ऋषि का मत

सूत्रभित्तिशिलान्यासं स्तम्भस्यारोपणं तथा।
पूर्वदक्षिणयोर्मध्ये कुर्यादित्याह कश्यपः॥

– हद्वास्तुमालाप्रयोग मिश्रप्रकरण श्लोक १२५

अग्निकोण में शिलान्यास करके ताम्र कलश की स्थापना करनी चाहिए। ताम्रपात्र (कलश) में तीर्थों की मिट्टी, ईंट, स्वर्ण, पंचरत्न, सप्तधन्य, शैवाल (काई) रख कर अग्निकोण में खुदे हुए गड्ढे में स्थापित करना अभीष्ट होता है। वह भवन निर्माण के समय का खातपात्र होता है।

मृदिष्टिका स्वर्णरत्नधान्यशैवालसंयुतम् ।
ताम्रपात्रस्थितं सर्वं खातमध्ये नियोजयेत् ॥[1]

गृहारम्भ में मास विचार गृहारम्भ में वैशाख, श्रावण, मार्गशीर्ष एवं फाल्गुन ये चार माह श्रेष्ठ हैं, मकर के सूर्य होने पर पौष मास में भी गृहारम्भ किया जा सकता है। मतान्तर से कार्तिक मास भी ग्राह्य है। वृद्ध नारद के मतानुसार विष्णु के जाग्रतावस्था के मासों में ही गृहारम्भ करना चाहिए।

तिथि – शुक्ल पक्ष की २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तथा १५ (पूर्णिमा) तिथियाँ शुभ हैं। मतान्तर से सप्तमी तिथि भी ग्राह्य है। कुछ विद्वानों के अनुसार कृष्ण पक्ष की २, ३, ५ तिथियाँ भी प्रशस्त हैं। वार – सोम, बुध, गुरु, शुक्र एवं शनिवार शुभ हैं।

शुभ नक्षत्र – रोहिणी, मृगशीर्ष, हस्त, चिचा, स्वाति, अनुराधा, तीनों उत्तरा, धनिष्ठा, शतभिषा एवं रेवती[2] नक्षत्र प्रशस्त माने गए हैं। मतान्तर से पुनर्वसु तथा पुष्य भी ग्राह्य हैं।[3] उपर्युक्त शुभ नक्षत्रों में **वृषवास्तुचक्र** के अनुसार लाभप्रद होने पर ही गृहारम्भ करना उचित होता है, अन्यथा नहीं।

वृषवास्तु चक्र

सूर्यनक्षत्र से चन्द्र			
नक्षत्र सं.	**नक्षत्र फल**	**वत्स (वृष) का स्थान**	**गृहारम्भ करने पर फल**
३	अशुभ	शिर	अग्नि भय
४	अशुभ	अग्रिम पाद	शून्य (रिक्त-अशुभ)
४	शुभ	पीछे के पाद	स्थिरता
३	शुभ	पीठ	लक्ष्मी प्राप्ति
४	शुभ	दक्षिण कुक्षि (कोख)	लाभ
३	अशुभ	पुच्छ (पूँछ)	स्वामी नाश
४	अशुभ	वाम कुछि (कोख)	निर्धनता
३	अशुभ	मुख	पीड़ा

वृषवास्तु चक्र में अभिजित नक्षत्र सहित २८ नक्षत्रों की गणना की जाती है।[4]

1. बृहद्वास्तुमालाप्रयोग मिश्रप्रकरण श्लोक १४२
2. बृहद्वास्तुमालाप्रयोग गणनाप्रकरण श्लोक ६५
3. मुहूर्त विज्ञान – प्रो. शुकदेव चतुर्वेदी पृष्ठ १२९
4. मुहूर्तचिन्तामणि वास्तुप्रकरण श्लोक १४

गेहारम्भ में प्रशस्त नक्षत्रों में से जिस चान्द्र नक्षत्र में मुहूर्त अभीष्ट हो, उस नक्षत्र का वृषवास्तु चक्र में अवलोकन करने के ही बाद मुहूर्त का निश्चय करना चाहिए। सूर्य जिस नक्षत्र में चल रहा हो उस नक्षत्र से अभीष्ट नक्षत्र की गणना करें, वह नक्षत्र वृषवास्तु चक्र में शुभ फलदायक हो, तभी उस नक्षत्र में गेहारम्भ-मुहूर्त करना चाहिए, अन्यथा नहीं। सारांश में वृषवास्तु चक्र में सूर्य नक्षत्र से ७ नक्षत्र अशुभ तथा बाद के ११ नक्षत्र शुभ, अन्तिम १० नक्षत्र अशुभ फल देने वाले होते हैं। अतः सम्यक् रूप से विचार करके ही मुहूर्त का निश्चय किया जाए।

लग्न शुद्धि - भवन की स्थिरता के लिए स्थिर लग्न विशेष शुभ माने गए है। द्विस्वभाव लग्न भी ग्राह्य है। लग्न से छठें एवं आठवें भाव में शुभ ग्रह न हों, अन्य भावों में हों, तृतीय, षष्ठ एवं एकादश भाव में पाप ग्रहों की स्थिति होने पर लग्न शुद्धि होती है। बृहद्वास्तुमाला प्रयोग ग्रन्थ में लग्न शुद्धि इस प्रकार है शुभ ग्रहों से युक्त अथवा इष्ट स्थिर या द्विस्वभाव लग्न में वास्तुकर्म (गृहारम्भ) शुभ होता है। लग्न से केन्द्र अथवा त्रिकोण स्थान में शुभ ग्रह तथा त्रिषडाय स्थानों में पाप ग्रहों की स्थिति को शुभ माना गया है। अष्टम स्थान में यदि क्रूर ग्रह हो तो, गृहकर्ता की मृत्यु हो जाती है। श्रीपति का कथन भी इसी प्रकार प्राप्त होता है।[5]

रामदैवज्ञ ने मुहूर्तचिन्तामणि के वास्तु प्रकरण में पञ्चाङ्ग शुद्धि एवं लग्न शुद्धि के विषय में लिखा है-

भौमार्करिक्तामाद्यूने चरोनगे विपंचके।
व्यष्टान्त्यस्थैः शुभैर्गेहारम्भत्र्यायारिगैः खलैः ॥[6]

अर्थात् मंगलवार, रविवार, रिक्ता तिथि (४, ९, १४), अमावस्या, सप्तमी, चर लग्न (१, ४, ७, १० लग्न) एवं पंचक को त्याग दें। विपंचके का अर्थ कुछ लोग पंचक के नक्षत्र को छोड़कर ऐसा करते हैं, किन्तु, ध निष्ठा, शतभिषा का गृहवास्तु में उल्लेख होने से यह अर्थ उचित नहीं, कुछ विद्वान बाण पंचक ग्रहण करते हैं, वह भी उचित नहीं, अतः पांचवी राशि सिंह राशि के सूर्य को छोड़कर, अर्थ ग्रहण करना उचित प्रतीत होता है। इनको त्याग कर लग्न से १२ एवं ८ स्थान के अतिरिक्त स्थानों में शभ ग्रहों की स्थिति तथा ३, ६, ११ स्थानों में पाप ग्रहों के रहने पर स्थिर (वृष, सिंह, वृश्चिक, कुम्भ) एवं द्विस्वभाव (मिथुन, कन्या, धनु, मीन) लग्नों में वास्तु अर्थात् गेहारम्भ शुभ माना है। त्याज्य-गुरु-शुक्र के अस्त एवं बाल-वृद्धत्व के दिनों में गृहारम्भ नहीं किया जा सकता है।

द्वार स्थापन मुहूर्त - भवन निर्माण के समय द्वार स्थापना के समय भी मुहूर्त विचार किया जाता है। द्वार चक्र की शुद्धि देखना अभीष्ट होता है। अतः निम्नलिखित द्वार चक्र के आधार पर नक्षत्र शुद्धि के उपरान्त ही मुहूर्त विचारणीय होता है -

द्वार चक्र					
स्थान	शिर	कोण	शाखा	देहली	मध्य
सूर्य नक्षत्र से चन्द्र नक्षत्र तक संख्या	४	८	८	३	४
फल	लक्ष्मीपति	उद्वास	सौख्य	मृत्यु	सौख्य

उपर्युक्त चक्रानुसार नक्षत्र शुद्धि विचार कर निम्न नक्षत्रों में द्वार की स्थापना करना शुभ होता है। अश्विनी, तीनों उत्तरा, स्वाति, रेवती, रोहिणी नक्षत्रों में द्वार स्थापना शुभ होती है।[7] मतान्तर से मृगशीर्ष, पुष्य, हस्त एवं श्रवण नक्षत्र भी द्वार स्थापना में ग्राह्य हैं।[8]

5. बृहद्वास्तुमाला गणनाप्रकरण श्लोक ७३
6. मुहूर्त चिन्तामणि वास्तु प्रकरण श्लोक १८
7. मुहूर्त चिन्तामणि वास्तु प्रकरण श्लोक २९
8. बृहद्वास्तुमाला प्रयोग गणनाप्रकरण श्लोक १६५ टीका

- **शुभ-वार**[9] - द्वार स्थापना में बुध, गुरु, शुक्र एवं सोमवार शुभ माने गए हैं। मतान्तर से रविवार भी ग्राह्य है।
- **शुभ तिथि**[10] - बृहद्वास्तुमाला प्रयोग में ५, ७, ८ एवं ९ तिथियाँ शुभ मानी गई हैं तथा १, २, ३, ४, ६, १०, १५ एवं ३० तिथियाँ अशुभ मानी गई हैं। किन्तु मतान्तर से मुहूर्त मुक्तावलि में नन्दा (१, ६, ११), पूर्णा (५, १०, १५) एवं जया (३, ८, १३) तिथियों में द्वार स्थापना शुभ बतलाया गया है।
- **शुभ लग्न** - स्थिर लग्न अर्थात् वृष, सिंह, वृश्चिक एवं कुम्भ लग्न में ही द्वार स्थापना करना शुभ होता है।[11]

गृह-प्रवेश मुहूर्त

गृह प्रवेश शास्त्रों में तीन प्रकार का बतलाया गया है- १. अपूर्व, २. सपूर्व, ३. द्वन्द्व। नव निर्मित भवन में निवास हेतु प्रथम बार प्रवेश करने को अपूर्व प्रवेश कहा जाता है। अधिक दिनों से बन्द अथवा लम्बी यात्रा के बाद जिस मकान में प्रवेश किया जाए उसको सपूर्व प्रवेश की संज्ञा दी गई है। अग्नि आदि उत्पात से अथवा जीर्ण होने पर पुनः मरम्मत कराकर प्रवेश किया जाए, उसे द्वन्द्व प्रवेश बतलाया गया है।[12] नूतन गृह प्रवेश दिन अथवा रात्रि में किसी भी समय शुभ माना गया है, सपूर्व एवं द्वन्द्व प्रवेश को दिन में विशेष प्रशस्त माना जाता है।[13]

त्याज्य - गुरु-शुक्र के अस्त एवं अधिकमास क्षयमास, गुरु एवं शुक्र के अतिचारी या नीच राशि में जाने पर, तेरह दिन का पक्ष होने पर भी गृह प्रवेश वर्जित है। होलिका दाह से पूर्व आठ दिनों (होलाष्टक) में भी गृह प्रवेश शुभ नहीं होता है। जिन नक्षत्रों में पापग्रह (सूर्य, मंगल, शनि) स्थित हों एवं जो नक्षत्र पापविद्ध हों, वे नक्षत्र भी तीनों गृह प्रवेश में त्याज्य हैं।[14]

ग्राह्य मास नारदीय वचनानुसार तीनों प्रकार के गृह प्रवेश केवल उत्तरायण सूर्य में ही करने चाहिए।[15] माघ, फाल्गुन, वैशाख एवं ज्येष्ठ मास ही गृह प्रवेश में प्रशस्त (शुभ) माने गए हैं। कार्तिक एवं मार्गशीर्ष मास मध्यम माने गए हैं।[16]

वशिष्ठ के मतानुसार माघ मास में नूतन गृह प्रवेश में धनलाभ तथा फाल्गुन मास में निश्चित ही पुत्रलाभ एवं धनलाभ भी होता है। वैशाख में प्रथम प्रवेश करने से सभी प्रकार का अर्थात् धन-धान्य, पशु एवं पुत्र का लाभ होता है। हर्म्य अर्थात् ईंट, पत्थर आदि से निर्मित पक्के मकानों में उत्तरायण सूर्य (माघ, फाल्गुन, वैशाख, ज्येष्ठ, चौत्र को त्याग कर) में ही गृहारम्भ में प्रशस्त नक्षत्रवार आदि में गृह प्रवेश करना चाहिए। घास-फूस से निर्मित मकानों में किसी भी समय प्रवेश किया जा सकता है।[17]

पक्ष एवं तिथि - शुक्ल पक्ष में रिक्ता (४, ९, १५) तिथियों एवं अमावस्या को छोड़कर सभी तिथियों (१, २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १५) में प्रवेश शुभ होता है।

वारः- चन्द्र, बुध, गुरु एवं शुक्रवार श्रेष्ठ होते हैं। मतान्तर से शनिवार भी ग्राह्य है।

---

9. तत्रैव १६८
10. बृहद्वास्तुमाला, प्रयोग श्लोक १६६-१६८
11. बृहद्वास्तुमाला, प्रयोग श्लोक १६९
12. बृहद्वास्तुमाला प्रयोग गृहप्रवेशप्रकरण श्लोक १
13. तत्रैव श्लोक २
14. तत्रैव श्लोक ६ का पूर्वार्ध।
15. तत्रैव श्लोक सं. ३
16. तत्रैव श्लोक सं. ४
17. तत्रैव श्लोक सं. ५

नक्षत्र:- चित्रा, तीनों उत्तरा, रोहिणी, मृगशीर्ष, अनुराधा, धनिष्ठा, रेवती तथा शतभिषा नक्षत्रों में त्रिविध प्रवेश करने से आयु, धन, आरोग्यता, सुपुत्र-पौत्रादि एवं सुकीर्ति की वृद्धि होती है।[18] मुहूर्त चिन्तामणि में हस्त, अश्विनी, पुष्य, स्वाति एवं श्रवण नक्षत्र भी, उपर्युक्त नक्षत्रों सहित प्रशस्त माने गए हैं। इन नक्षत्रों में कुम्भ (कलश) चक्र की शुद्धि देखकर ही मुहूर्त का विचार करना अभीष्ट होता है, बगैर कुम्भ चक्र के गृह प्रवेश का निर्णय करना सर्वथा निषिद्ध माना गया है।[19]

कुम्भ चक्र - सूर्याधिष्ठित नक्षत्र से मुहूर्त वाले दिन के चन्द्र नक्षत्र तक गणना करके निम्नलिखित चक्र में नक्षत्र शुद्धि देखकर ही मुहूर्त का निश्चय करना अभीष्ट होता है।

कुम्भ (कलश) चक्र[20]

स्थान दिशा	मुख	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	गर्भ	नीचे (तल)	कंठ
नक्षत्र संख्या	१	४	४	४	४	४	३	३
फल	अग्निदाह	शून्य	लाभ	धनलाभ	कलह	विनाश	स्थिति	चिरस्थिति
निष्कर्ष	अशुभ	शुभ	शुभ	शुभ	अशुभ	अशुभ	अशुभ	अशुभ

इसके अतिरिक्त वाम रवि का विचार किया जाता है। वाम रवि का विचार गृह प्रवेश लग्न से सूर्य स्थित भाव से विचार किया जाता है। यह भवन के द्वार (मुख्य) के अनुसार किया जाता है।

18. बृहद्वास्तुमाला प्रयोग गृह प्रवेश श्लोक ७
19. मु. चि. गृह प्रवेश प्रकरण श्लोक ३
20. मु. चि. गृह प्रवेश श्लोक ६

वामरविचक्र

पूर्वाभिमुख	दक्षिणाभिमुख	पश्चिमाभिमुख	उत्तराभिमुख
गृह	गृह	गृह	गृह
८	५	२	११
९	६	३	१२
१०	७	४	१
११	८	५	२
१२	९	६	३

गृह प्रवेश लग्न से सूर्य जिस भाव (राशि) में स्थित हो, उससे विचार किया जाता है। प्रवेश लग्न से वामरवि होने पर गृह प्रवेश विशेष शुभ माना जाता है।[21]

लग्न शुद्धि - सामान्य रूप से स्थिर एवं द्विस्वभाव राशि वाली लगन को गृह प्रवेश में शुभ माना जाता है। चर लग्न सर्वथा त्याज्य हैं।[22] मतान्तर से कुम्भ लग्न को भी अशुभ माना गया है। गृह स्वामी की जन्म लग्न से अष्टम राशि की लग्न को भी त्याज्य माना गया है। दैवज्ञवल्लभ के अनुसार निन्दित अर्थात् चर लग्न भी शुभ (स्थिर-द्विस्वभाव) नवांश में हों, अथवा चर राशि के लग्न में भी यदि गृह स्वामी की राशि से उपचय (३. ६, १०, ११) स्थानों में प्रवेश लग्न हो तो चर लग्न भी शुभ फल देने वाला होता है।[23] स्थिर एवं द्विस्वभाव लग्न से १, २, ३, ५, ७, ९, १० एवं ११वें भाव में शुभ ग्रह (बुध, गुरु, शुक्र) तथा ३, ६, ११ भावों में पाप ग्रह शुभ फल देने वाले होते हैं। लग्न से चतुर्थ एवं अष्टम भाव ग्रह रहित होना ही शुभ माना गया है।

21. मु. चि. गृह प्रवेश श्लोक ६
22. बृहद्वास्तुमाला प्रयोग गृह प्रवेश श्लोक ११
23. तत्रैव श्लोक १२

पृष्ठस्थ शुक्र विचार - यात्रा में जिस प्रकार सम्मुख चन्द्र देखा जाता है, उसी प्रकार शुक्र का परिभ्रमण भी चारों दिशाओं में माना गया है। गृह प्रवेश के समय गृहस्वामी जिस दिशा के द्वार से प्रवेश करता है उससे विप. रीत (गृहस्वामी के पृष्ठ भाग वाली) दिशा में शुक्र पृष्ठस्थ होता है। पृष्ठस्थ शुक्र में गृह प्रवेश करना शुभ फल कारक होता है।[24]

पृष्ठस्थ शुक्र विचार

द्वार दिशा	शुक्र स्थित राशि
पूर्व	मेष, सिंह, धनु
दक्षिण	वृष, कन्या, मकर
पश्चिम	मिथुन, तुला, कुम्भ
उत्तर	कर्क, वृश्चिक, मीन

गृह प्रवेश करते समय सपत्नीक गृहस्वामी जलपूर्ण कलश पर पंच पल्लव तथा नारियल रखकर गीत-वाद्य, घण्टा ध्वनि सहित, ब्राह्मण, गाय व कन्या सहित गृह प्रवेश का कार्य सम्पन्न करें।

जीर्ण गृह प्रवेश - जीर्ण गृह प्रवेश नवीन गृह प्रवेश के सभी मुहूर्तों में होता है किन्तु श्रावण, कार्तिक एवं मार्गशीर्ष मास भी ग्राह्य हैं। शतभिषा, पुष्य, स्वाति और धनिष्ठा नक्षत्रों को भी शुभ माना गया है। गुर्वस्त-शुक्रास्त में भी गृह प्रवेश शुभ होता है।

डॉ. खेमराज रेग्मी
ज्योतिष-विभाग

24. बृहद्वास्तुमाला प्रयोग गृह प्रवेश श्लोक १

जन्मोत्सव-पूजा-विधिः

जन्मोत्सवविधिः -

जन्मतिथिरौदयिकी ग्राह्या।

जन्मदिने कर्ता ब्राह्म-मुहूर्ते उत्थाय तिलतण्डुलचूर्णसर्वोषधि-मिश्रितङ्गोदकेनस्नानपूर्वकं सन्ध्यादिनित्यक्रियां कुर्यात्। ततः सामग्रीं सम्पाद्य अहतवाससीं भूषणानि च धृत्वा गृहान्तः शुभासने प्राङ्मुख उदङ्मुखो वा उपविश्याचम्य प्राणयामं च विधाय प्रतिज्ञासङ्कल्पं कुर्यात्।

युगाद्यावर्षवृद्धिश्च सप्तमी पार्वतीप्रिया।
रवेरुदयमिच्छन्ति न तत्र तिथियुग्मता॥

-कृत्यतत्वार्णववचनात्

मृते जन्मनि सङ्क्रान्तौ श्राद्धे जन्मदिने तथा।
अस्पृश्यस्पर्शने चैव न स्नायादुष्णवारिणा॥

-तिथितत्वे

खण्डनं नखरोमाणां मैथुनाध्वगमौ तथा।
आमिषं कलहं हिंसां वर्षवृद्धौ विवर्जयेत्॥
नवाम्बरधरो भूत्वा पूजयेच्च चिरायुषम्।
मार्कण्डेय नरो भक्त्या पूजयेत् प्रययस्तथा॥
तथा दीर्घायुषं व्यासं रामं द्रौणिं कृपं बलिम्।
प्रह्लादञ्च हनूमन्तं विभीषणमथार्चयेत्॥
स्वनक्षत्रं जन्मतिथिं राशिं वारञ्च पूजयेत्।
षष्ठीं च दधिभक्तेन वर्षे पुनः पुनः॥

-तिथितत्वे

सर्वैश्च जन्मदिवसे स्नात्वा मङ्गलवारिभिः।
गुरुदेवाग्निविप्राश्च पूजनीयाः प्रयत्नतः॥

स्वनक्षत्रं च पितरं तथा देवं प्रजापतिम।
प्रतिसंवत्सरं यत्नात् कर्तव्यश्च महोत्सवः॥

-कृत्यचिन्तामणौ

प्रतिज्ञासङ्कल्पः- ॐ अद्येत्यादि देशकालादीन् सङ्कृत्य (अमुक) गोत्रस्य (अमुक) शर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य मम जन्मदिवसे वर्षवृद्धौ वर्धापनाख्यं जन्मोत्सवकर्मणि दीर्घायुरारोग्यैश्वर्योदयाद्यभिवृद्ध्यर्थं दीप- कलश-गणेश-पूजनपूर्वकं मार्कण्डेयाद्यष्टचिरञ्जीविनां षष्ठिकायाश्च यथामिलितोपचारैः पूजनमहं करिष्ये। इति सङ्कल्प्य ब्राह्मणवरणं पुण्याहवाचनं च विधाय दीपकलश-गणेशान् यथाविधिपूजनं कुर्यात्। तत्र मङ्गलाभिधानकलशो-परिगणपत्यादीन् पूजयेत्। यथा-

श्री गणपतये नमः, ब्रह्मणे नमः, विष्णवे नमः, महेश्वराय नमः, कुलदेव्यै/देवतायै नमः, ईष्ट देवतायै नमः, ग्रामदेवताभ्यो नमः, स्थानदेवताभ्यो नमः, सूर्यादिनवग्रहेभ्यो नमः, गुरवे नमः, अग्नये नमः, जन्म-संवत्सर-तिथि-वार-नक्षत्र-योग-करण-राशि-लग्नाधिपतिभ्यो नमः, पितृगणेभ्यो नमः, वास्तुदेवाय नमः, क्षेत्रपालाय नमः इत्यावाह्य सम्पूजयेत्।

अष्टचिरञ्जीविनां पूजनम्

पूर्वे- ॐ मार्कण्डेयाय नमः, मार्कण्डेयम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। भो मार्कण्डेय इहागच्छ, इह तिष्ठ, यावत्पूजां करोमि तावत्त्वं सुस्थिरो भव, सुप्रसन्नो भव, सुवरदो भव। इत्यावाह्य आसनम्, पाद्यम्, अर्घ्यम्, आचमनीयम्, स्नानीयम्, पञ्चामृतम्, पुनराचमनीयम्, चन्दनम्, अक्षतान्, पुष्पाणि/पुष्पमाल्यं समर्पयामि मार्कण्डेयाय नमः।

प्रार्थनाः- **ॐ शरदिन्दुनिभं शान्तं द्विभुजं तं वरप्रदम्।**
छत्राभयकरं ध्याये मार्कण्डेयं महामुनिम् ॥
वटवृक्षसमारूढं सच्छत्रं ब्रह्मचिन्तकम्।
ऋषिवृन्दशतैस्तुत्यं मार्कण्डेयं नमाम्यहम् ॥

आग्नेयाम्- ॐ व्यासाय नमः, व्यासम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। भो व्यास! इहागच्छ, इह तिष्ठ, यावत्पूजां करोमि, तावत्त्वं सुस्थिरो भव, सुप्रसन्नो भव, सुवरदो भव। इत्यावाह्य पूर्ववत् सम्पूज्य प्रार्थयेत्-

प्रार्थनाः- **ॐ सर्वशास्त्रार्थतत्वज्ञं वेदवेदाङ्गपारगम्।**
शास्त्रमूलप्रपक्तारं पराशरसुतं भजे ॥

दक्षिणे- ॐ परशुरामाय नमः, परशुरामम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। भो परशुराम! इहागच्छ, इहतिष्ठ, यावत्पूजां करोमि तावत्त्वं सुस्थिरो भव, सुप्रसन्नो भव, सुवरदो भव। इत्यावाह्य पूर्ववत् सम्पूज्य प्रार्थयेत्-

प्रार्थनाः- **ॐ कार्तवीर्यस्य हन्तारं पर्शुहस्तं महाबलम्।**
एकविंशतिनिःक्षत्रं कुर्वन्तं त्वां नमाम्यहम् ॥

नैऋत्याम्- ॐ अश्वत्थाम्ने नमः, अश्वत्थामानम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। भो अश्वत्थामन्! इहागच्छ, इह तिष्ठ, यावत्पूजां करामि तावत्त्वं सुस्थिरो भव, सुप्रसन्नो भव, सुवरदो भव। इत्यावाह्य पूर्ववत् सम्पूज्य प्रार्थयेत्-

प्रार्थनाः - **ॐ ब्राह्मणाय नमस्तुभ्यं द्रोणाचार्यसुताय वै।**
वेदवेदाङ्गपूर्णाय अश्वत्थाम्ने नमो नमः॥

पश्चिमे- ॐ कृपाचार्याय नमः, कृपाचार्यम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। भो कृपाचार्य! इहागच्छ, इह तिष्ठ, यावत्पूजां करोमि तावत्त्वं सुस्थिरो भव, सुप्रसन्नो भव, सुवरदो भव। इत्यावाह्य पूर्ववत् सम्पूज्य प्रार्थयेत्-

प्रार्थनाः- **धनुर्बाणधरं वीरं श्वेतपीतद्युतिं परम् ।**
भारद्वाजकुलोत्पन्नं कृपं ध्याये मलापहम् ॥

वायव्याम्- ॐ बलये नमः, बलिम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। भो बले! इहागच्छ, इह तिष्ठ, यावत्पूजां करोमि, तावत्त्वं सुस्थिरो भव, सुप्रसन्नो भव, सुवरदो भव। इत्यावाह्य पूर्ववत् सम्पूज्य प्रार्थयेत्-

प्रार्थनाः - **दैत्येन्द्रकुलसम्भूत दानयज्ञक्रियारतः।**
प्रपन्नः शरणं त्वाहं दीर्घमायुः प्रयच्छ मे॥

उत्तरे- ॐ हनुमते नमः, हनुमन्तम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। भो हनुमन्! इहागच्छ, इह तिष्ठ, यावत्पूजां करोमि, तावत्त्वं सुस्थिरो भव, सुप्रसन्नो भव, सुवरदो भव। इत्यावाह्य पूर्ववत् सम्पूज्य प्रार्थयेत्-

प्रार्थनाः - **ॐ वायुपुत्रं महावीरं रक्तवर्णं त्रिलोचनम्।**
कन्दमूलफलप्रीतं हनूमन्तं नमाम्यहम्॥

ऐशान्याम्- ॐ विभीषणाय नमः, विभीषणम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। भो विभीषण! इहागच्छ, इह तिष्ठ, यावत्पूजां करोमि तावत्त्वं सुस्थिरो भव, सुप्रसन्नो भव, सुवरदो भव। इत्यावाहय पूर्ववत् सम्पूज्य प्रार्थयेत्-

प्रार्थनाः - **ॐ लङ्कावासनमस्तुभ्यं पौलस्त्य कुलसम्भव।**
राक्षसाधिपते देव नमस्तेऽस्तु विभीषण॥

मध्ये- ॐ षष्ठिकायै नमः, षष्ठिकाम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। भो षष्ठिके! इहागच्छ, इह तिष्ठ, यावत्पूजां करोमि तावत्त्वं सुस्थिरा भव, सुप्रसन्ना भव, सुवरदा भव। इत्यावाह्य पूर्ववत् सम्पूज्य प्रार्थयेत्-

प्रार्थनाः - **ॐ जगन्मातर्जगद्धात्रि जगदानन्दकारिणि ।**
प्रसीद मम कल्याणि महाषष्ठि नमोऽस्तुते ॥

तत्समीपे- ॐ कार्तिकेयाय नमः कार्तिकेयम् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। इत्यावाह्य पूर्ववत् सम्पूज्य प्रार्थयेत्-

ॐ कार्तिकेय महाबाहो गौरीहृदयनन्दन।
कुमारं रक्ष मे भीतेः कार्तिकेय नमोऽस्तुते ॥

तदनन्तरं वस्त्रं यज्ञोपवीतं धूपं दीपं नैवेद्यं फलं ताम्बूलं पूजायाः साद्गुण्यार्थद्रव्यञ्च समर्पयेत्। षष्ठिकायै दधिभक्तवलिं दद्यात् -

ममायुरारोग्यवृद्धये षष्ठिकायै एष दधिभक्तबलिस्तुभ्यं नमः। पोटलिकानिर्माणः पीतवस्त्रे गुग्गुलनिम्बपत्रसिद्धार्थ दूर्वागोरोचनादिकञ्च संस्थाप्य तत्र गणशं भाष्करञ्च पूजयेत्। पश्चात् मार्कण्डेयाय गुडतिलमिश्र दुग्धं समर्प्य, गन्धपुष्पादिकं गृहीत्वा प्रार्थयेत् -

मार्कण्डेयप्रार्थनाः

ॐ मार्कण्डेय महाभाग सप्तकल्पान्तजीविनः।
आयुरारोग्यसिद्ध्यर्थमस्माकं वरदो भव॥
चिरञ्जीवी यथा त्वं तु मुनीनां प्रवर द्विज।
कुरुष्व मुनिशार्दूल तथा मां चिरजीविनम्॥

(ततो होमादिकं करणे तु अग्निस्थापनविधिनां कुर्यात्)

पोटलिका/ रक्षाबन्धनम् (मन्त्रं पठित्वा पोटलिकां दक्षहस्ते धारयेत्)

ॐ मार्कण्डेय महाभाग आयुरारोग्यदायक ।
शुभदौ विघ्नहर्तारौ भानु विघ्नेश एव तु॥
धारयामि भुजे दक्षे मम कल्याणहेतवे।
पूरयध्वं सदास्माकं कामनाश्च मनोरथान्॥

तिलगुडयुतं पयःपानम्॥ (पयोऽञ्जलीनाऽऽदाय तदर्द्धं पिबेत्, शेषं पशचभागे त्यजेत्)

ॐ सतिलं गुडसंमिश्रमञ्जल्यर्धमिदं पयः।
मार्कण्डेयाद्वरं लब्ध्वा पिबाम्यायुर्विवृद्धये॥

विसर्जनम् - ततः ब्राह्मणेभ्यो पूर्णपात्रं, दक्षिणाञ्च दत्वा देवान् विसृज्य, 'कायेन वाचा' इति पठित्वा अभिषेकं कृत्वा, कर्म समापयेत् ।

- डॉ. खेमराज रेग्मी
ज्योतिष-विभाग

ग्रहों के दान, दान समय, जप-संख्या, जपनीय-मन्त्र एवं हवनसमिधा ज्ञानार्थ-चक्र

दान-पदार्थ													दान समय	जप संख्या	जपनीय मन्त्र	हवन समिधा
सूर्य	माणिक	सुवर्ण	ताम्र	गेहूँ	गुड़	घी	रक्तपुष्प	केशर	मूंग	रक्तगी	र.वस्त्र	र. चन्दन	सूर्योदय	७०००	ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः	अर्क
चन्द्र	मोती	सुवर्ण	रजत	चावल	मिश्री	दही	श्वेतपुष्प	शंख	कर्पूर	श्वेतबैल	श्वे.वस्त्र	श्वे. चन्दन	सन्ध्या	११०००	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्राय नमः	पलाश
भौम	मूंगा	सुवर्ण	ताम्र	मसूर	गुड़	घी	रक्तकेशर	केशर	कस्तूरी	रक्तबैल	रक्तवस्त्र	र.चन्दन	घ.२ शेष दिन	१००००	ॐ क्रां क्रीं कौं सः भौमाय नमः	खदिर
बुध	पन्ना	सुवर्ण	कांसी	मूंग	खांड	घी	सर्वपुष्प	हाथीदांत	कर्पूर	शस्त्र	ह.वस्त्र	फल	घ.5 शेष दिन	१९०००	ॐ ब्रां ब्रीं बौं सः बुधाय नमः	अ.मार्ग
गुरु	पुखराज	सुवर्ण	कांसी	दा.चना	खांड	घी	पीतपुष्प	हल्दी	पुस्तक	घोड़ा	पीतवस्त्र	पीतफल	सन्ध्या	२९०००	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः	अश्वत्थ
शुक्र	हीरा	सुवर्ण	रजत	चावल	मिश्री	दूध	श्वेतपुष्प	सुगन्ध	दधि	श्वे.घोड़ा	श्वे.वस्त्र	श्वे. चन्दन	सूर्योदय	१६०००	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	उदुंबर
शनि	नीलम	सुवर्ण	लोहा	उड़द	कुलथी	तेल	कृष्णपुष्प	कस्तूरी	कृष्णांग	भैंस	कृ.वस्त्र	उपानह	मध्याह्न	२३०००	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः	शमी
राहु	गोमेद	सुवर्ण	सीसा	तिल	सरसों	तेल	कृष्णपुष्प	खड्ग	कम्बल	घोड़ा	नी.वस्त्र	शस्त्र	रात्रि	१८०००	ॐ भ्रां भ्रीं भौं सः राहवे नमः	दूर्वा
केतु	लसन	सुवर्ण	लोहा	तिल	सप्तथा	तेल	धूम्रपुष्प	नारियल	कम्बल	बकरा	धूम्रवस्त्र	शस्त्र	रात्रि	१७०००	ॐ स्रां स्रीं सौं सः केतवे नमः	कुशा
मुन्था	भौम	सुवर्ण	चाँदी	चावल	सुवर्ण	घी	श्वेतपुष्प	कपूर	मिश्री	श्वेतवस्त्र	श्वे.चन्दन	हाथीदांत	मुं.काल	मुन्थेशवत्	मुन्थेशमन्त्रवत्	

भारत के प्रमुख नगरों के पलभा, अक्षांश, रेखांश, एवं देशान्तर

(नोट- यहाँ (+) चिह्न का अर्थ दिल्ली से पूर्व तथा (-) चिह्न का अर्थ दिल्ली से पश्चिम समझना चाहिए)

नगर	पलभा	अक्षांश	रेखांश	देशान्तर	नगर	पलभा	अक्षांश	रेखांश	देशान्तर
अजमेर	५।५८।१२	२६.२७	७४.४२	-१०.००	गोरखपुर	६।२।५५	२६.४२	८३.२४	+२४.४८
अम्बाला	७।१।२५	३०.२१	७६.५२	-१.२०	गोंडल	४।४९।४१	२१.५५	७०.५३	-२५.२०
अमरावती	४।३५।२५	२०.५६	७७.४८	+२.२४	गौंडा	६।१४।१७	२७.२८	८२.१	+१९.१६
अमृतसर	७।२३।१४	३१.३७	७४.५५	-९.०८	गोहाटी	५।५४।१	२६.११	९१.४७	+५८.२०
अयोध्या	६।३।४२	२६.४८	८२.१४	+२०.०८	चण्डीगढ़	७।८।४	३०।४४	७६।२५	-३.४८
अलवर	६।१५।५२	२७.३४	७६.३८	-२.१६	चितौड़गढ़	५।३४।१३	२४.५४	७४.४२	-१०.००
अलीगढ़	६।२१।१३	२७.५४	७८.०६	+३.३६	छत्तीसगढ़	४।४३।३७	२१.३०	८२.००	+१९.१२
अलीपुर (उ.प्र.)	४।५८।४३	२२.३२	८८.२४	+४४.४८	छपरा	५।४७।४८	२५.४७	८४.११	+२९.५६
अल्मोड़ा	६।४९।१८	२९.३७	७९.४०	+९.५२	जम्मू	७।४२।४९	३२.४४	७४.५४	-९.१२
अहमदनगर	४।९।५	१९.५	७४.४८	-९.३६	जबलपुर	५।८।६	२३.१०	७९.५९	+११.०८
अहमदाबाद	५।६।७	२३.२	७२.३७	-१८.२०	जयपुर	६।५।३२	२६.५५	७५.५२	-५.२०
आगरा	६।९।३०	२७.१०	७८.५	+३.३२	जालन्धर	७।१८।३	३१.१९	७५.१८	-७.३६
आजमगढ़	५।५१।५७	२६.३	८३.१३	+२४.४	जामनगर	४।५७।३०	२२.२७	७०.५	-२८.२८
आबू	५।३०।३९	२४.४०	७२.४५	-१७.४८	जूनागढ़	४।४३।५१	२१.३१	७०.३६	-२६.२४
आसनसोल	५।१६।३	२३.४२	८७.१	+३९.१६	जोधपुर	५।५५।५१	२६.१८	७३.४	-१६.३२
आनन्द	४।४९।२८	२२.३५	७२.५८	-१६.५६	जौनपुर	५।४७।३३	२५.४६	८२.४४	+२२.८
इटारसी	४।५८।१४	२२.३०	७७.५५	+२.५२	झालावाड़	५।२९।३९	२४.३६	७४.९	-१२.१२
इटावा	६।३।२६	२६.४७	७९.२	+७.२०	झांसी	५।४२।३९	२५.२७	७८.३७	+५.४०
इन्द्रगढ़	५/४७/२	२५.४४	७६.१२	-४.००	टोंक	५।५४।१	२६.११	७५.५०	-५.२८
इन्दौर	५।१।४०	२२.४४	७५.५४	-५.१२	डूंगरपुर	५।१८।३	२३.५०	७३.५०	-१३.२८
इलाहाबाद	५।४२।५५	२५.२८	८१.५४	+१८.४८	तिरुपति	२।५५।४	१३.४०	७९.२०	+८.३२
उज्जैन	५।७।५१	२३.९	७५.४३	-५.५६	तूतीकोरिन	१।५०।४९	८.४५	७८.११	+३.५६
उदयपुर	५।३१।१०	२४.४२	७३.३३	-१४.३६	त्रिवेन्द्रम	१।४७।२३	८.२९	७६.५९	-०.५२
उदयगिरि	३।११।०८	१४.५२	७९.१९	+८.२८	त्रिनेवल्ली	१।५०।२३	८.५३	७७.५७	+३.००
उन्नाव	६।३।४२	२६.४८	८०.४३	+१४.०४	थानेसर	६।५८।८	२९.२५	७६.५६	-१.४
एकलिंगजी	५।३१।२५	२४.४३	७३.४३	-१३.५६	दरभंगा	५।५३।४६	२६.१०	८५.५१	+३४.३६
औरंगाबाद	४।२०।२४	१९.५३	७५.२३	-७.१६	दिल्ली	६।३३।६	२८.३८	७७.१२	०.००
कटक	४।२८।४३	२०.२८	८५.५४	+३४.४८	द्वारका	४।५४।१९	२२.१४	६९.०१	-३२.४४
कन्नौज	६।७।३९	२७.३	७९.५८	+११.०४	देवास	५।५।८	२२.५८	७६.०६	-४.२४
कलकत्ता	४।४९।१३	२२.३४	८८.२४	+४४.४८	देहरादून	७।०१।०१	३०.१९	७८.४	+३.२८
करनाल	६।५०।५१	२९.४२	७७.२	-०.४०	धर्मशाला	७।३४।३५	३२.१६	७६.२३	-३.१६
कानपुर	५।५८।२७	२६.२८	८०.२०	+१२.३२	धार	४।५९।२८	२२.३५	७५.२०	-७.२८
किशनगढ़	६।०।१७	२६.३५	७४.५६	-९.४	धरमपुर (गुजरात)	४।२९।४०	२०.३२	७३.१३	-१५.५६
कोटा	५।३८।१८	२५.१०	७५.५२	-५.२०	धौलपुर	६।२।७	२६.४२	७७.५३	+२.४४
कोल्हापुर	३।३६।१	१६.४२	७४.१६	-११.४४	धांगड़ा	५।५।२२	२२.५६	७१.३१	-२२.४४
कांगड़ा	७।३१।२२	३२.०५	७६.१८	-३.३६	नडीआद	५।०।५६	२२.४१	७२.५५	-७.८
खंडवा	४।४८।२८	२१.५०	७६.२३	-३.१६	नवसारी	४।३८।४	२१.७	७२.५५	-१७.८
गया	५।३२।५६	२४.४९	८५.१	+३१.१६	नवलगढ़	६।२०।२५	२७.५१	७५.१६	-७.४४
गढ़वाल	५।५९।५३	३०.१५	७९.३०	+९.१२	नसीराबाद	५।५५।५१	२६.१८	७४.४६	-९.४४
ग्वालियर	५।५४।४८	२६.१४	७८.१०	+३.५२	नागपुर	४।३८।३३	२१.९	७९.९	+७.४८
गाजियाबाद	६।३२।३९	२८.४०	७७.२८	+१.४	नाथद्वार	५।३४।४३	२४.५६	७३.४८	-१३.३६
गाजीपुर	५।४४।२७	२५.३४	८३.३५	+२५.३२	नालंदा	५।३८२	२५.९	८५.२४	+३२.४८
गंगापुर	५।५८।४३	२६.२९	७६.४५	-१.४८	नासिक	४।२२।३२	२०.२	७३.५०	-१३.२८
गुड़गांव	६।३२।५०	२८.३७	७७.४	-०.३२	नीमच	५।२७।२२	२४.२७	७४.५२	-९.२०
गुरुदासपुर	७।३०।४७	३२.०३	७५.२७	-७.००	नैनीताल	६।४५।२५	२९.२३	७९.३०	+९.१२
गोवा	३।१९।४०	१५.३०	७३.५७	-१३.००	पजिम	३।१९।४०	१५.३०	७३.५५	-१३.८

नगर	पलभा	अक्षांश	रेखांश	देशान्तर	नगर	पलभा	अक्षांश	रेखांश	देशान्तर
पन्ना	५।३१।२५	२४.४३	८०.१२	+१२.००	मथुरा	६।१४।१७	२७.२८	७७.४१	+१.५६
पटना	५।४५।१३	२५.३७	८५.१३	+३२.०४	एटा (कासगंज)	६।१६।०८	२७.३५	७८.४१	+५.५६
पठानकोट	७।३४।५२	३२.१७	७५.४२	-६.००	मद्रास	२।४७।०६	१३.४	८०.१७	+१२.२०
प्रतापगढ़ (राज०)	५।२१।४	२४.२	७४.४५	-९.४८	माणसा	५।१२।४	२३.२६	७२.४०	-१८.८
प्रतापगढ़ (यूपी)	५।४९।२१	२५.५३	८१.५८	+१९.४	मिर्जापुर	५।३८।१८	२५.१०	८२.३७	+२१.४०
पटियाला	७।१।१८	३०.२०	७६.२५	-३.८	मुगलसराय	५।४०।५	२५.१७	८३.११	+२३.५६
प्रयाग	५।४३।२५	२५.३०	८१.५६	+१८.५६	मेरठ	६।३९।२३	२९.१	७७।४५	+२.१२
पानीपत	६।४५।२५	२९.२३	७७.१	-०.४४	राँची	५।११।१९	२३.२३	८५.२३	+३२.४४
पांडिचेरी	२।३२।१०	११.५६	७९.५३	-१०.४४	रायबरेली	५।५४।४८	२६.१४	८१.१६	+१६.१६
पीलीभीत	६।३३।०६	२८.३८	७५.५१	-५.२४	रेवाड़ी	६।२६।४	२८.१२	७६.३६	-२.२४
पुरी जगन्नाथ	४।१९।१३	१९.४८	८५.५२	+३४.४०	रोहतक	६।३७।२८	२८।५४	७६.३८	-२.१६
पूना	४।०।५५	१८.३०	७३.५८५	-१३.०८	लखनऊ	६।५।३२	२६.५५	८०.५९	+१५.०८
पोर्टब्लेवर	२।२८।५३	११.४१	९२.४३	+६२.४	लद्दाख	७।२९।५४	३२.००	८०.०	+११.०
पोरबन्दर	४।४५।१९	२१.३७	६९.४९	-२९.३२	लुधियाना	७।११।२९	३०.५६	७५.५२	-५.२०
फतेहगढ़	६।१२।५७	२७.२३	७९.४०	+९.५२	वाराणसी	५।४०।३६	२५.१९	८३.१	+२३.१६
फतेहपुर	५।४९।५२	२५.५५	८०.५२	+१४.४०	वृन्दावन	६।१५।३६	२७.३३	७७.४४	+२.०८
फतेहाबाद	६।४७।३८	२९.३१	७५.२०	-७.२८	शिमला	७।१४।२०	३१.०६	७७.१०	-०.०८
फार्रुखाबाद	६।१३।१३	२७.२४	७९.३७	+९.४०	शिलांग	५।४४।२७	२५.३८	९१.५६	+५८.५६
फैजाबाद	६।३।२६	२६.४७	८२.१२	+२०.००	श्रीगंगानगर	६।५४।३५	२९.५६	७३.५२	-१३.२०
बक्सर	५।४४।२७	२५.३४	८४.१	+२७.१६	श्रीनगर	८।७।२९	३४.६	७४.५१	-९.२४
बड़ौदा	४।५५।१८	२२.१८	७३.१६	-१५.४४	सतना	५।२९।२८	२४.३४	८०.५५	+१४.५२
बद्रीनाथ	७।८।४	३०.४४	७९.३२	+९.२०	सागर	५।१८।३	२३.५०	७८.५०	+६.३२
बम्बई	४।६।४५	१८.५५	७२.५०	-१७.२८	सहारनपुर	६।५५।८	१९.५८	७७.२३	+०.४४
बरेली	६।२८।७६	२८.२२	७९.२७	+९.००	सूरत	४।३९।१६	२१.१२	७२.५२	-१७.२०
बीकानेर	६।२३।६	२८.१	७३.२२	+१५.२०	सोमनाथ	४।३७।२१	२१.४	७०.२६	-२७.०४
बीजापुर	३।३७।५०	१६.५०	७५.४७	-५.४०	हरिद्वार	६।५५।८	२९.५८	७८.१३	+४.०४
बैंगलोर	२।४५।४७	१२.५८	७७.३८	+१.४४	हावड़ा (प०बं०)	४।५९।२८	२२.३५	८८.२३	+४४.४४
भरतपुर	६।१०।४९	२७.१५	७७.३०	+१.१२	हैदराबाद	३।४४।४३	१७.२०	७८.३०	+५.१२
भीलवाड़ा	५।४१।७	२५.२१	७४.३८	-१०.१६	होशियापुर	७।२१।४८	३१.३२	७५.५७	-५.००
भोपाल	५।०९।३५	२३.१६	७७.३६	+१.३६	होशंगाबाद	५।२।१०	२२.४६	७७.४५	+२.१२

लग्नसाधन के लिए पलभा से चरखण्ड तथा स्वदेशीय उदयमान बनाने की विधि:

विद्यापीठ पञ्चाङ्ग में अक्षांश रेखांश सारिणी में दी गई पलभा अथवा पलभा के ज्ञान से पलभा को क्रम से १०।९।१०/३ से गुणा करके अभीष्ट स्थानीय चरखण्ड सिद्ध होगें।

उदाहरण- दिल्ली की पलभ ६।३३।०६

६।३३।०६ × १०=६०।३३०।६०=६६ प्रथम चरखण्ड स्वल्पान्तरात्

६।३३।०६ × ९=४९।२६४।४९=५२ द्वितीय चरखण्ड स्वल्पान्तरात्

प्रथम चरखण्ड ६६/३=२२ तृतीय चरखण्ड।

इस प्रकार चरखण्ड का साधन करके केतकर के मत से मेषादि द्वादश राशियों के लंकोदयमान २७९।२९९।३२२, ३२२।२९९।२७९, २७९।२९९।३२२, ३२२।२९९।२७९ तीन-तीन राशियों में मेषादि क्रमोत्क्रम से चरखण्ड का ऋण-धन, धन-ऋण, संस्कार करने पर स्वदेशीय उदयमान सिद्ध होंगे।

लङ्कोदयमान		चरखण्ड		स्वदेशीय उदयमान
मे. २७९ मी.	-	६६	=	मे. २१३ मी.
वृ. २९९ कुं	-	५२	=	वृ. २४७ कुं.
मि. ३२२ म.	-	२२	=	मि. ३०० म.
क. ३२२ ध.	+	२२	=	क. ३४४ ध.
सि. २९९ वृ.	+	५२	=	सिं. ३५१ वृ.
क. २७९ तु.	+	६६	=	क. ३४५ तु.

इस प्रकारस्वदेशीय उदयमान द्वारा "तत्कालार्कः सायनः स्वोदयघ्ना भोग्यांशाः" इत्यादि विधि द्वारा लग्न साधन किया जा सकता है।

लघुरित्थ सारिणी

मि.क्र.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	मि.क्र.
↓ ००		१.३८०२	१.०७९२	९०३१	७७८१	६८१२	६०२१	५३५१	४७७१	४२६०	३८०२	३३८८	३०१०	↓ ००
१	३.०१५८४	१.३७३०	१.०७५६	९००७	७७६३	६७९८	६००९	५३४१	४७६२	४२५२	३७७५	३३८२	३००४	१
२	२.८५७३	१.३६६०	१.०७२०	८९८३	७७४५	६७८४	५९९८	५३३०	४७५३	४२४४	३७८८	३३७५	२९९८	२
३	२.६८१२	१.३५९०	१.०६८५	८९५९	७७२८	६७६९	५९८५	५३२०	४७४४	५३३६	३७८०	३३६८	२९९२	३
४	२.५५६३	१.३५२२	१.०६४९	८९३५	७७१०	६७५५	५९७३	५३१०	४७३५	४२२८	३७७३	३३६२	२९५६	४
५	२.४५९४	१.३४५४	१.०६१४	८९१२५	७६९२	६७४१	५९४१	५३००	४७२६	४२२०	३७६६	३३५५	२९८०	५
६	२.३८०२	१.३३८८	१०.०५८०	८८८८	७६७४	६७२६	५९४९	५२८९	४७१७	४२१२	३७५९	३३४९	२९७४	६
७	२.३१३३	१.३२२३	१.०५४६	८८६५	७६५७	६७१२	५९३७	५२७९	४७०८	४२०४	३७५२	३३४२	२९६८	७
८	२.२५५३	१.३२५८	१.०५११	८८४२	७६३८	६६९८	५९२५	५२६९	४६९९	४१९६	३७४५	३३३६	२९६२	८
९	२.२०४१	१३१९५	१.०४७८	८८१९	७६२२	६६८४	५९१३	५२५९	४६९०	४१८८	३७३७	३३२९	२९५६	९
१०	२.१५८४	१.३१३३	१.०४४४	८७९६	७६०४	६६७०	५९०२	५२४९	४६८२	४१८०	३७३०	३३२३	२९५०	१०
११	२.११७०	१.३०७१	१.०४११	८७७३	७५८७	६६५६	५८९०	५२३९	४६७३	४१७२५	३७२३	३३१६	२९४४	११
१२	२.०७९२	१.३०१०	१.०३७८	५७५१	७५७०	६६४२	५८७८	५२२९	४६६४	४१६४	३७१६	३३१०	२९३८	१२
१३	२.०४४४	१.२९५०	१.०३४५	८७२८	७५५२	६६२८	५८६६	५२१९	४६५५	४१५६	३७०९	३३०३	२९३३	१३
१४	२.०१२२	१.२८९१	१.०३१३	८७०६	७५१८	६६००	८५४३	५१९९	४६३८	४१४१	६३९५	३२९१	२९२१	१४
१५	१.९५४२	१.२७७५	१.०२४८	८६६१	७५०१	६५८७	५८३२	५१८९	४६२९	४१३३	३६८८	३२८४	२९१५	१५
१६	१.९५४२	१.२७७५	१.०२४८	८६६१	७५०१	६५८७	५८३२	५१८९	४६२९	४१३३	३६८८	३२८४	२९१५	१६
१७	१.९२७९	१.२७१९	१.०२१६	८६३९	७४८४	६५७३	५८२०	५१७९	४६२०	४१२५	३६८१	१२७८	२९०८	१७
१८	१.९०३१	१.२६६३	१.०१८५	७६१७	७४६७	६५५९	५८०९	५१६९	५६११	४११७	३६७४	३२७१	२९०३	१८
१९	१.८७९६	१.२६०७	१.०१५३	८५९५	७४५१	६५४६	५७९७	५१५९	४६०३	४१०९	३६६७	३२६५	२८९७	१९
२०	१.८५७३	१.२५५३	१.०१२२	८५७३	७४३४	६५३२	५७८६	५१४९	४१०२	४१०२	३६६०	३२५८	२८९१	२०
२१	१.८३६१	१.२४९९	१.००९१	८५५२	७४१७	६५१९	५७७४	५१३९	४५८५	४०९४	३६५३	३२५२	२८८५	२१
२२	१.८१५९	१.२४४५	१.००६१	८५३०	७४०१	६५०५	५७६३	५१२९	४५७७	४०८६	३६४६	३२४६	२८८०	२२
२३	१.७९६६	१.२३९३	१.०४३०	८५०९	७३८४	६४९२	५७५२	५१२०	४५६८	४०७९	३६३९	३२३९	२८७४	२३
२४	१.७७८१	१.२३४१	१.००००	८४८७	७३६८	६४७८	५७४०	५११०	४५५९	४०७१	३६३२	३२३३	२८६८	२४
२५	१.७६०४	१.२२८९	०.९९७०	८४६६	७३५१	६४६५	५७२९	५१००	४५५१	४०६३	३६२५	३२२७	२८६३	२५
२६	१.७४३४	१.२२३९	०.९९४०	८४४५	७३३५	६४५१	५७१८	५०९०	४५४२	४०५५	३६१८	३२२०	२८५६	२६
२७	१.७२७०	१.२१८८	०.९९१०	८४२४	७३१८	६४३८	५७०६	५०८१	४५३४	४०४८	३६११	३२१४	२८५०	२७
२८	१.७११२	१.२१३९	०.९८८१	८४०३	७३०२	६४२५	५६९५	५०७१	४५२५	४०४०	३६०४	३२०८	२८४५	२८
२९	१.६९६०	१.२०९०	०.९८५२	८३८२	७२८६	६४१२	५६८४	५०६१	४५१६	४०३२	३५९७	३१०१	२८३९	२९
३०	१.६८१२	१.२०४१	०.९८२३	८३६१	७२७०	६३९८	५६७३	५०५१	४५०८	४०२५	३५९०	३१९५	२८३३	३०
३१	१.६६७०	१.१९९३	०.९७९४	८३४१	७२५४	६३८५	५६६२	५०४२	४४९९	४०१७	३५८३	३१८९	२८२७	३१
३२	१.९५३२	१.१९४६	०.९७६५	८३२०	७२३८	६३७२	५६५१	५०३२	४४९१	४०१०	३५७६	३१८३	२८२१	३२
३३	१.६३९८	१.१८९९	०.९७३७	८३००	७२२२	६३५९	५६४०	५०२३	४४८२	४००२	३५७०	३१७६	२८१६	३३
३४	१.६२६९	१.१८५२	०.९७०८	८२७९	७२०६	६३४६	५६२९	५०१३	४४६६	३९९४	३५६३	३१७०	२८१०	३४
३५	१.६१४३	१.१८०६	०.९६८०	८२५९	७१९०	६३३३	५६१८	५००३	४४६६	३९८७	३५५६	३१६४	२८०४	३५
३६	१.६०२१	१.१७६१	०.५६५२	८२३९	७१७४	६३२०	५६०७	४९९४	४४५७	३९७९	३५४९	३१५७	२७९८	३६
३७	१.५९०२	१.१७१६	०.९६२५	८२६९	७१५९	६३०७	५५९६	४९८४	४४४९	३९७२	३५४२	३१५१	२७९३	३७
३८	१.५७८६	१.१६७१	०.९५९७	८१९९	७१४३	६२९४	५५८५	४९७५	४४३०	३९६४	३५३५	३१४५	२७८७	३८
३९	१.५६७३	१.१६२७	०.९५७०	८१७९	७१२८	६२८२	५५७४	४९६५	४४३२	३९५७	३५२९	३१३९	२७८१	३९
४०	१.५५६३	१.१५८४	०.९५४२	८१५९	७११२	६२६९	५५६३	४९५६	४४२४	३९४९	३५२२	३१३३	२७७५	४०
४१	१.५४५६	१.१५४०	०.९५१५	८१४०	७३९७	६२५६	५५५२	४९४७	३९४२	३९४२	३५१५	३१२६	२७७०	४१
४२	१.५३५१	१.१४९८	०.९४८८	८१२०	७०८१	६२४३	५५४१	४९३७	४४०७	३९३४	३५०८	३१२०	२७६४	४२
४३	१.५२४९	१.१४५५	०.९४६२	८१०१	७०६६	६२३१	५५३१	४९२८	४३९९	३९२७	३५०१	३११४	२७५८	४३
४४	१.५१४९	१.१४१३	०.९४३५	८०८१	७०५०	६२१८	५५२०	४९१८	४२९०	३९१९	३४९५	३१०८	२७५३	४४
४५	१.५०५१	१.१३७२	०.९४०९	८०६३	७०३५	६२०५	५५०९	४९०९	४३८२	३९१२	३४८८	३१०२	२७४७	४५
४६	१.४९५६	१.१३३१	०.९३८३	८०४३	७०२०	६१९३	५४९८	४९००	४३७४	३९०५	३४८१	३०९६	२७४१	४६
४७	१.४८६३	१.१२९०	०.९३५६	८०२३	७००५	६१८०	५४८८	४८९०	४३६५	३८९७	३४७५	३०८९	२७३६	४७
४८	१.४७७१	१.१२४९	०.९३३०	८००४	६९९०	६१६८	५४७७	४८८१	५३५७	३८९०	३४६८	३०८३	२७३०	४८
४९	१.४६८२	१.१२०८	०.९३०५	७९८५	६९७५	६१५५	५४६६	४८७२	४३४९	३८८२	३४६१	३०७७	२७२४	४९
५०	१.४५९४	१.११७०	०.९२७९	७९६६	६९६०	६१४३	५४५६	४८६३	४३४१	३८७५	३४५४	३०७१	२७१९	५०
५१	१.४५०८	१.११३०	०.९२५४	७९४७	६९४५	६१३१	५४४५	४८५३	५३३३	३८६८	३४४८	३०६५	२७१३	५१
५२	१.४४२४	१.१०९१	०.९२२८	७९२९	६९३०	४११८	५४३५	४८४४	४३२४	३८६०	३४४१	३०५९	२७०७	५२
५३	१.४३४१	१.१०५३	०.९२०३	७९१०	६९१५	६१०६	५४२४	४८३५	४३१६	३८५३	३४३४	३०५३	२७०२	५३
५४	१.४२६०	१.१०१५	०.९१७८	७८९१	६९००	६०९४	५४१४	४८२६	४३०८	३८४६	३४२८	३०४७	२६९६	५४
५५	१.४१८०	१.०९७७	०.९१५३	७८७३	६८८५	६०८१	५४०३	४८१७	४३००	३८३८	३४२१	३०४१	२६९१	५५
५६	१.४१०२	१.०९३९	०.९१२८	७८५४	६८७१	६०६९	५३९३	४८०८	४२९२	३८३१	३४१५	३०३४	२६८५	५६
५७	१.४०२५	१०.९०२	०.९१०४	७८३६	४८५६	६०५७	५३८२	४७९८	४२८४	३८२४	३४०८	३०२८	२६७९	५७
५८	१.३९४९	१.०८६५	०.९०७९	७८१८	६८४१	६०४५	५३७२	४७८९	४२७६	३८१७	३४०१	३०२२	२६७४	५८
५९	१.३८७५	१.०८२८	०.९०५५	७८००६	६८२७	६०३३	५३६१	४७८०	४२६८	३८०९	३३९५	३०१६	२६६८	५९

लघुरित्थ सारिणी

मि.क्र.	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	मि.क्र.
००	२६६३	२३४१	२०४१	१७६१	१४९८	१२४९	१०१५	०७९२	०५८०	०३७८	०१८५	००
१	२६५२	२३३०	२०३६	१७५६	१४९३	१२४५	१०११	०७८८	०५७७	०३७५	०१८२	१
२	२६५२	२३३०	२०३२	१७५२	१४८९	१२४१	१००७	०७८५	०५७३	०३७१	०१७९	२
३	२६४६	२३२५	२०२७	१७४७	१४८५	१२३७	१००३	०७८१	०५७०	०३६८	०१७५	३
४	२६४०	२३२०	२०२२	१७४४३	१४८१	१२३३	०९९९	०७७७	०५६६	०३६५	०१७२	४
५	२६३५	२३१५	२०१७	१७३८	१४७६	१२२९	०९९६	०७७४	०५६३	०३६१	०१६९	५
६	२६२९	२३१०	२०१२	१७३४	१४७२	१२२५	०९९२	०७७०	०५५९	०३५८	०१६६	६
७	२६२४	२३०५	२००८	१७२९	१४६८	१२२१	०९८८	०७६७	०५५६	०३५५	०१६३	७
८	२६१८	२३००	२००३	१७२५	१४६४	१२१७	०९८४	०७६३	०५५२	०३५२	०१६०	८
९	२६१३	२२९५	१९९८	१७२०	१४५९	१२१३	०९८०	०७५९	०५४९	०३४८	०१५७	९
१०	२६०७	२२८९	१९९३	१७१६	१४५५	१२०९	०९७७	०७५६	०५४६	०३४५	०१५४	१०
११	२६०२	२२८४	१९८८	१७११	१४५१	१२०५	०९७३	०७५२	०५४२	०३४२	०१५०	११
१२	२५९६	२२७९	१९८४	१७०७	१४४७	१२०१	०९६९	०७४९	०५३९	०३३९	०१४७	१२
१३	२५९१	२२७४	१९७४	१६९८	१४३८	११९३	०९६२	०७४१	०५३२	०३३२	०१४१	१३
१४	२५८५	२२६९	१९७४	१६९८	१४३८	११९३	०९६२	०७४१	०५३२	०३३२	०१४१	१४
१५	२५८०	२२६४	१९६९	१६९४	१४३४	११९०	०९५८	०७३८	०५२५	०३२९	०१३८	१५
१६	२५७४	२२५९	१९६५	१६८९	१४३०	११८६	०९५४	०७३४	०५२५	०३२६	०१३५	१६
१७	२५६९	२२५४	१९६०	१६८५	१४२६	११८२	०९५०	०७३१	०५२२	०३२२	०१३२	१७
१८	२५६४	२२४९	१९५५	१६८०	१४२२	११७८	०९४७	०७२७	०५१८	०३१९	०१२९	१८
१९	२५५८	२२४४	१९५०	१६७६	१४१७	११७४	०९४३	०७२४	०५१५	०३१६	०१२६	१९
२०	२५५३	२२३९	१९४६	१६७१	१४१३	११७०	०९३९	०७२०	०५१२	०३१३	०१२२	२०
२१	२५४७	२२३४	१९४१	१६६७	१४०९	११६६	०९३५	०७१६	०५०८	०३०९	०११९	२१
२२	२५४२	२२२९	१९३६	१६६२	१४०५	११२२	०९३२	०७१३	०५०५	०३०६	०११६	२२
२३	२५३६	२२२३	१९३२	१६५८	१४०१	११५८	०९२८	०७०९	०५०१	०३०३	०११३	२३
२४	२५३१	२२१८	१९२७	१६५४	१३९७	११५४	०९२४	०७०६	०४९८	०३००	०११०	२४
२५	२५२६	२२१३	१९२२	१६४९	१३९२	११५०	०९२०	०७०२	०४९५	०२९६	०१०७	२५
२६	२५२०	२२०८	१९१७	१६४५	१३८८	११४६	०९१७	०६९९	०४९१	०२९३	०१०४	२६
२७	२५१५	२२०३	१९१३	१६४०	१३८४	११४२	०९१३	०६९५	०४८८	०२९०	०१०१	२७
२८	२५०९	२१९८	१९०८	१६३६	१६८०	११३८	०९०९	०६९२	०४८४	०२८७	००९८	२८
२९	२५०४	२१९३	१९०३	१६३२	१३७६	११३४	०९०६	०६८८	०४८१	०२८४	००९५	२९
३०	२४९९	२१८८	१८९९	१६२७	१३७२	११३०	०९०२	०६८५	०४७८	०२८०	००९१	३०
३१	२४९३	२१८३	१८९८	१६२३	१३६८	११२७	०८९८	०६८१	०४७४	०२७७	००८८	३१
३२	२४८८	२१७८	१८८९	१६१८	१३६४	११२२	०८९४	०६७८	०४७१	०२७४	००८५	३२
३३	३४८३	२१७३	१८८५	१६१४	११५९	१११९	०८९१	०६७४	०४६८	०२७१	००८२	३३
३४	२४७७	२१६८	१८८०	१६१०	१३५५	१११५	०८८७	०६७१	०४६४	०२६७	००७९	३४
३५	२४७२	२१६४	१८७५	१६०५	१३५१	११११	०८८३	०६६७	०४६१	०२६४	००७६	३५
३६	२४६७	२१५९	१८७१	१६०१	१३४७	११०७	०८८०	०६४३	०४५८	०२६१	००७३	३६
३७	२४६१	२१५४	१८६६	१५९८	१३४३	११०३	०८७६	०६६०	०४५४	०२५८	००७०	३७
३८	२४५६	२१४९	१८६२	१५९२	१३३९	१०९९	०८७२	०६५६	०४५१	०२५५	००६७	३८
३९	२४५१	२१४४	१८५७	१५८८	१३३५	१०९५	०८६९	०६५३	०४४८	०२५१	००६४	३९
४०	२४४५	२१३९	१८५२	१५८४	१३३१	१०९१	०८६५	०६४९	०४४४	०२४८	००६१	४०
४१	२४४०	२१३४	१८४८	१५७९	१३२६	१०८८	०८६१	०६४६	०४४१	०२४५	००५८	४१
४२	२४३५	२१२९	१८४३	१५७५	१३२२	१०८४	०८५७	०६४२	०६३८	०२४२	००५५	४२
४३	२४३०	२१२४	१८३८	१५७१	१३१८	१०८०	०८५४	०६३९	०४३४	०२३९	००५२	४३
४४	२४२४	२११९	१८३४	१५६६	१३१४	१०७६	०८५०	०६३५	०४३१	०२३६	००४९	४४
४५	२४१६	२११४	१८२९	१५६२	१३१०	१०७२	०८४७	०६३२	०४२८	०२३२	००४६	४५
४६	२४१४	२१०९	१८२५	१५५८	१३०६	१०६८	०८४३	०६२८	०४२४	०२२९	००४२	४६
४७	२४०९	२१०४	१८३०	१५५३	१३०२	१०६४	०८३९	०६२५	०४२१	०२२६	००३९	४७
४८	२४०३	२०९९	१८१६	१५४९	१२९८	१०६१	०८३५	०६२२	०४१८	०२२३	००३६	४८
४९	२३९८	२०९५	१८११	१५४५	१२९४	१०५	०८३२	०६१८	०४१४	०२२०	००३३	४९
५०	२३९३	२०९०	१८०६	१५४०	१२९०	१०५३	०८२८	०६१५	०४११	०२१६	००३०	५०
५१	२३८८	२०८५	१८०२	१५३६	१२८६	१०४९	०८२५	०६११	०४०८	०२१३	००२७	५१
५२	२३८३	२०८०	१७९७	१५३२	१२८२	१०४५	०८२१	०६०८	०४०४	०२१०	००२४	५२
५३	२३७७	२०७५	१७९३	१५२८	१२७८	१०४१	०८१७	०६०४	०४०१	०२०७	००२१	५३
५४	२३७२	२०७०	१७८८	१५२३	१२७४	१०३८	०८१४	०६०१	०३९८	०२०४	००४८	५४
५५	२३६७	२०६५	१७८४	१५१९	१२७०	१०३४	०८१०	०५९७	०३९४	०२०१	००१५	५५
५६	२३६२	२०६१	१७७९	१५१५	१२६६	१०३०	०८०६	०५९४	०३९१	०१९७	००१२	५६
५७	२३५६	२०५६	१७४	१५१०	१२६१	१०२६	०८०३	०५९०	०३८८	०१९४	०००९	५७
५८	२३५१	२०५१	१७७०	१५०६	१२५७	१०२२	०७९९	०५८७	०३८४	०१९१	०००६	५८
५९	२३४६	२०४६	१७६५	१५०२	१२५३	१०१८	०७९५	०५८३	०३८१	०१८८	०००३	५९

लघुरित्थ सारिणी द्वारा ग्रह स्पष्ट करने की विधि- लघुरित्थ से ग्रह स्पष्ट करने के लिए पञ्चाङ्ग में दिए गए ग्रह स्पष्ट के भारतीय स्टैण्डर्ड समय तथा जन्म समय के भारतीय स्टैण्डर्ड समय का अन्तर करने पर घण्टों मिनिटों में चालन आता है। यदि जन्म समय पञ्चाङ्ग में दिए गए ग्रह स्पष्ट समय से कम हो तो चालन ऋण, अधिक होने पर धन होता है। इस प्रकार सारिणी में घण्टे के नीचे तथा मिनिटों के सामने का चालन दशमलवात्मकलघुरित्थ लेकर तथा अभीष्ट ग्रह की दैनिक गति यदि अंशात्मक हो तो अंश के नीचे तथा कला के सामने के दशमलवात्मक लघुरित्थ को लेकर चालन में लघुरित्थ में जोड़ने पर जो प्राप्त हो, वह सारिणी में जिस अंश के नीचे तथा जिस कला के सामने मिले वही चालन फल होगा। यदि चालन ऋण हो तो पञ्चाङ्ग के ग्रह स्पष्ट में ऋण तथा यदि धन हो धन करने पर जन्मकालीन ग्रह स्पष्ट होगा। यह ध्यान रहे, कि सारिणी में घण्टे या अंश तथा मिनिट या कला का लघुरित्थ एक ही आता है, तथा जहाँ (३ अंश के नीचे से अन्त तक) लघुरित्थ के आगे दशमलव नहीं दिए गए हैं वहाँ दशमलव सहित लेना चाहिए, जैसे ९०३१ के स्थान पर ०९०३१ इत्यादि।

अभीष्ट स्थान के सूर्योदय तथा इष्टकाल बनाने की विधि

अभीष्ट स्थान का इष्टकाल बनाने के लिए वहाँ के सूर्योदयकाल की आवश्यकता होती है, क्योंकि सूर्योदय से जन्मकाल तक के समय को इष्टकाल कहते है, या यूं कहिए कि जन्मकालीन स्टैण्डर्ड समय में से वहां का स्टैण्डर्ड सूर्योदय घटाने पर इष्टकाल बनता है, अतः किसी भी स्थान के स्टैण्डर्ड बनाने की विधि यहां दी जा रही है।

मान लीजिए १९ दिसम्बर १९८५ को स्टैण्डर्ड समय प्रातः १० बजकर २० मिनट पर दिल्ली का इष्टकाल निकालने के लिए यहाँ का स्टैण्डर्ड सूर्योदय बनाना है-

किसी भी स्थान का सूर्योदय बनाने के लिए वहां के अक्षांस उस दिन की क्रान्ति, वेलान्तर, रेखांश तथा रेखान्तर की आश्वयकता होती है। छः घण्टे में चर का संस्कार करने पर स्थानीय सूर्योदय, तथा पञ्चाङ्ग की सारिणी से वेलान्तर तथा रेखान्तर का विपरीत संस्कार अर्थात् यदि दोनों की ऋण हों तो धन, तथा धन हो तो ऋण करने पर वहां का स्टैण्डर्ड सूर्योदय बनता है।

दिल्ली का अक्षांश=२८०।३८', १९ दिसम्बर की क्रान्ति दक्षिणा=२३०।२५', वेलान्तर+३ मिनट, रेखांश ७७०।१२', रेखान्तर मि० २१ से. १२ ऋणात्मक है।

चरसाधन- उपरोक्त उपकरणों द्वारा पञ्चाङ्ग की चर सारिणी से अक्षांश तथा क्रान्ति के संस्कार से चर मिनिट लाने हैं। दिल्ली के अक्षांश २८०।३८' के सामने तथा कान्त्यंश २२० के नीचे चर मिनिट ५१ एवं २४० के नीचे मि० ५६ से. १८ लिखे हैं, किन्तु अभीष्ट चर क्रान्ति २३०।२५' का लाना है, अतः चर मिनिटादि दो अंशों के अन्तर पर होने के कारण अभीष्ट चर मिनिटादि लाने के लिए अनुपात कियाः-

यदि दो क्रान्त्यंशो के अन्तर में चर ५ मिनिट १८ से. मिलते हैं तो क्रान्त्यंशान्तर २३०।२५'-२२०।००=१०।२५' में क्या ?

$$\frac{\text{मि० ५ से० } 18\times1^{\circ}।२५'}{2^{\circ}}$$ स्वल्पान्तरात् ४ मिनिट

इसको २२० क्रान्त्यंश के चर मिनिट ५१, में जोड़ने पर ५५ मिनिट अभीष्ट चर हुआ।

चर संस्कार विधि-

चर का साधन करके यदि उत्तरा क्रान्ति तथा उत्तरी अक्षांश हो, तो चर मिनिटादि ६ घण्टे में ऋण करने पर एवं दक्षिणा क्रान्ति व उत्तरी अक्षांश हो, तो ६ घण्टे में चर मिनिटादि धन करने पर, इसी प्रकार उत्तरा क्रान्ति दक्षिण अक्षांश हो तो ६ घण्टे में चर मिनिटादि धन करने पर स्थानीय सूर्योदय होगा। भारतवर्ष में सर्वत्र अक्षांश उत्तर दिशा के ही हैं। अतः भारतवर्ष में २१ मार्च से २२ सितम्बर तक चर मिनिटों का ६ घण्टे में घटाने पर तथा २३ सितम्बर से २० मार्च तक चर मिनिटों को ६ घण्टे में जोड़ने पर स्थानीय समय अर्थात् धूप घड़ी (स्थानीय) का सूर्योदय काल ज्ञात होता है। उसमें मध्यमान्तर और वेलान्तर का विपरीत संस्कार करने पर स्टैण्डर्ड समय में सूर्योदय काल प्राप्त होता है। अभीष्ट स्थानीय सूर्योदय साधन हेतु चर संस्कार ज्ञान के लिए चक्रः-

उत्तरी अक्षांश		दक्षिणी अक्षांश	
उत्तरा क्रान्ति	दक्षिणा क्रान्ति	उत्तरा क्रान्ति	दक्षिणा क्रान्ति
घं. 6- चर मि.	घं. 6+चर मि.	घं. 6+चर मि.घं.	६- चर मि.
= स्था. सूर्योदय	= स्था. सूर्योदय	= स्था. सूर्योदय	= स्था. सूर्योदय

१९ दिसम्बर को क्रान्ति दक्षिणा है, तथा अक्षांश उत्तरी है, अतः घं. ६+मि. ५५= घं. ६ मि. ५५=स्थानीय सूर्योदय।

इस दिन वेलान्तर+ ३ मिनट हैं, अतः स्थानीय सूर्योदय में वेलान्तर का विपरीत संस्कार करने पर घं. ६ मि. ५५ - मि.३ । = घं. ६ मि. ५२ = स्था. मध्यम सूर्योदय तथा रेखान्तर- मि. २१ सें. १२ का विपरीत संस्कार करने पर घं. ६ मि. ५२+मि. २१ सें. १२= घं. ७ मि. १३ से. १२ = स्टैं. सूर्योदय होगा।

स्थानीय सूर्योदय	= ६/५५/००		मि./सें.
स्पष्टान्तर	= +१८/१२	मध्यमान्तर	= -२१/१२
स्टैं० समय सूर्योदय काल का	= ७/१३/१२	वेलान्तर	= + ३/००
		सपष्टान्तर	= -१८/१२

स्पष्टान्तर द्वारा स्थानीय सूर्योदय से स्टैं. सूर्योदय, स्टै. सूर्योदय से स्थानीय सूर्योदय तथा स्टैं० समय से स्थानीय समय बनाने की विधि :-

स्पष्टान्तर साधन-

यदि रेखान्तर तथा वेलान्तर दोनों ऋण हो तो दोनों का योग करने पर ऋण (-) स्पष्टान्तर एवं दोनों धन हो तो दोनो का योग करने पर धन (+) स्पष्टान्तर तथा यदि एक संख्या धन एक ऋण हो तो अधिक संख्या में से घटाने पर अधिक संख्या वाला चिह्न लगाने पर स्पष्टान्तर होता हैं।

जैसे :- रेखान्तर-मि० २१ से० १२, वेलान्तर + मि० ३

अतः स्पष्टान्तर = -मि० २१ से० १२+मि० ३ = -मि० १८ से० १२

इस स्पष्टान्तर का स्टैं. सूर्योदय में यथावत् संस्कार करने पर स्थानीय सूर्योदय होगा।

स्टैं. सूर्योदय घं. ७ मि. १३ से. १२ - स्पष्टान्तर मि. १८ से. १२ = स्थानीय सूर्योदय घं. ६ मि. ५५

इसी प्रकार स्टैं. समय में स्पष्टान्तर का संस्कार करने पर स्थानीय समय होगा।स्टैं. समय घं. 10 मि. 20-मि. 18 से. 12= घं. 10 मि. 1 से. 48 = स्थानीय समय ।

इसके विपरीत स्थानीय सूर्योदय में स्पष्टान्तर का विपरीत संस्कार करने पर स्टैं० सूर्योदय तथा स्थानीय समय में संस्कार विपरीत करने पर स्टैं० समय होगा।

स्था. सूर्योदय घं० ६ मि. ५५+मि. १८ से. १२ = स्टैं. सूर्योदय घं. ७ मि. १३ से. १२

स्था. समय घं. १० मि. १ से. ४८+मि. १८ से. १२ = स्टैं. समय घं १० मि. २०

इस प्रकार स्टैं. जन्म समय में स्टैं. सूर्योदय अथवा स्थानीय समय में स्थानीय सूर्योदय घटाने पर घण्टा मिनट में इष्टकाल तथा उसे २॥ से गुणा करने पर घटीपलात्मक इष्टकाल होता है।

यह ध्यान रहे कि यदि जन्म समय स्टैण्डर्ड हो तो सूर्योदय भी स्टैण्डर्ड तथा यदि जन्म समय स्थानीय हो तो सूर्योदय भी स्थानीय होना चाहिए।

स्थानीय समय तथा स्थानीय सूर्योदय से एवं स्टैं. समय तथा स्टैं. सूर्योदय से इष्टकाल साधन- घं. । मि. । से. घं. । मि. । से.

स्टैं. जन्म समय	= १०।१२।००	स्थानीय जन्म समय	= १०।०१।४८
स्टैं. सूर्योदय	= -७।१३।१२	स्थानीय सूर्योदय	= -६।५५।००
घण्टा मिनटात्मक इष्टकाल	= ३ । ०६ । ४८		
घण्टा मिनटात्मक इष्टकाल	= ३ । ०६ । ४८		

अढ़ाई से गुणा करने पर = × २ ॥ अढ़ाई से गुणा करने पर = ग २ ॥

घं. । प. । वि.	घं. । प. । वि.
७ । ३० । ००	७ । ३०। ००
१५ । ००	१५ । ००
७ । ४५ । ००	७ । ४५ । ००

घटीपलात्मक इष्टकाल = ७/४५/०० घटीपलात्मक इष्टकाल = ७/४५/००

❁ विभिन्न अंगों पर पल्ली (छिपकली/किरली) गिरने का फल एवं उपचार ❁

शरीर पर पल्ली (छिपकली/किरली) गिरने पर उस समय जो वस्त्र पहने हो उन वस्त्रों सहित स्नान करना चाहिए। जन्म नक्षत्र, दग्धा-तिथि, मृत्युयोग, पापग्रहयुक्त लग्न एवं अष्टम चन्द्रमा में पल्ली पतन अरिष्ट फलदायक होता है, अतः उसकी शान्ति के लिए पञ्चगव्य से स्नान कर छायापात्रदान, महामृत्युञ्जय का जाप, होमादि करना श्रेयस्कर होता है।

पल्ली-पतन के शुभ तिथि, वार एवं नक्षत्र :-

❁ अङ्ग विभागवश पल्ली-पतनफल जानने के लिए चक्र ❁

अङ्ग	फल	अङ्ग	फल	अङ्ग	फल	अङ्ग	फल
मस्तक	राज्यलाभ	कण्ठ	शत्रुनाशक	पृष्ठ मध्य	झगड़ा	कटिप्रदेश	रोग-भय
कपाल	ऐश्वर्य प्राप्ति	दक्षिण-भुज	मान-सम्मान	दक्षिण-पृष्ठ	सुखलाभ	दक्षिण जङ्घा	धन हानि
नासिकाग्र	व्याधि	वाम-भुज	राज-भय	वाम-पृष्ठ	रोग-भय	वाम जङ्घा	पुत्र-लाभ
मुख-प्रदेश	मिष्ठान-भोजन	दक्षिण-स्कन्ध	सफलता	दक्षिण-हस्त	धन-लाभ	गुदा	रोग-भय
दक्षिण-कर्ण	आयु-वृद्धि	वाम-स्कन्ध	शत्रुभय	वाम-हस्त	धन-हानि	गुप्ताङ्ग	मित्र-प्राप्ति
वाम-कर्ण	भूषण लाभ	स्तन-प्रदेश	दौर्भाग्य	नाभि-प्रदेश	पुत्र-प्राप्ति	दक्षिण-पाद	यात्रा
				हृदय	यश-प्रप्ति	वाम-पाद	रोग भय

अङ्ग स्फुरण फलः-

शकुन की दृष्टि से शरीर के किसी भी भाग में अचानक स्फुरण हो जाता है। यह स्फुरण यदि निरन्तर लम्बे समय तक होता रहे तो वह वायु विकार से सम्बन्धित होता है। वह स्फुरण निष्फल होता है। यदि क्षणिक अंग स्फुरण हो, तो वा शुभाशुभ फल बोधक होता है। सामान्यतया स्त्री का वामाङ्ग एवं पूरूष का दक्षिणाङ्ग स्फुरण शुभ माना गया ह। विस्तृत फल निम्न प्रकार ज्ञात करें।

स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल
मस्तक (सिर)	भूमिलाभ	भृकुटि	धन प्राप्ति	कण्ठ	भूषण प्राप्ति	पृष्ठ	पराजय	बाहु-प्रदेश	प्रिय-प्राप्ति
ललाट	स्थान लाभ	नासिका	सुगन्ध लाभ	ग्रीवा	शत्रु भय	नाभि	स्त्रीनाश	गुप्ताङ्ग	प्रिय-प्राप्ति
नेत्र	प्रियदर्शनलाभ	दक्षिण कर्ण	आयु-वृद्धि	स्कन्ध	मित्र-समागम	कुक्षि	सुप्रीति	जङ्घा	हानिप्रद
कपोल	स्त्री सुख	वाम-कर्ण	भूषण लाभ	वक्षः स्थल	विजय	कटि प्रदेश	प्रिय-प्राप्ति	घुटना	शत्रुसन्धि
भ्रूमध्य	सुख-प्राप्ति	अधर	प्रिय प्राप्ति	हृदय	इष्ट सिद्धि	हस्त	धन-प्राप्ति	पाद	स्थान-प्राप्ति

छींक (छिक्का) विचारः-

कोई शुभ कार्य प्रारम्भ करते समय अथवा यात्रा करते समय छींक आने पर अपशकुन माना जाता है। इसका विचार भारत वर्ष में प्रायः सभी प्रदेशों में होता है इसके विषय में अनेक लोकोक्ति अथवा घाघ, भड्डुली इत्यादि की किवदन्तियाँ मुहावरों के रूप में प्रचलित हैं। संकेत में सारांश यह है, कि सूँघनी आदि पदार्थो के द्वारा ली गई बनावटी छींक निष्फल होती है। पीछे की छींक कुशलक्षेमकारक है। बाई ओर की छींक सभी कार्य को सिद्ध करने वाली सामने की छींक लड़ाई कराने वाली, दाहिनी ओर की छींक धन-नाश करने वाली, ऊँची छींक विजय देने वाली, नीची छींक भय करने वाली तथा अपनी अपनी छींक बहुत दुःख देने वाली होती है। कन्या, विधवा, मालिन, धोविन, रजस्वला, वैश्या की छींक बहुत अशुभफल देने वाली होती है। यदि भोजन के अन्त में छींक आए तो दूसरे दिन प्रिय भोजन प्राप्त होता है।

सन्ध्यावन्दनादि, शयन के समय, शौच के समय, दानकाल, भोजन के समय बाई ओर तथा पीछे की छींक शुभफल करने वाली होती है। छींक के विषय में अनेक किंवदन्तियाँ प्रचलित हैं, उनमें से प्रचलित उक्ति यहाँ दी जा रही हैं-

छींकत न्हइयै छींकत खइयै, छींकत जइयै सोय। छींकत पर घर कबहूँ न जइयै सब सोने की होय। एक नाक दो छींका। इनसे सगुन होत है नीका।

ॐ गण्ड-मूलादि-जन्म विचार ॐ

अश्विनी, आश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा, मूल एवं रेवती - ये ६ नक्षत्र गण्डमूल कहलाते हैं। इन नक्षत्रों में उत्पन्न बालक, माता, पिता, कुल या स्वयं को अरिष्टदायक होता है। यदि यह अरिष्ट से बच जाये तो अपने बल-बुद्धि से संसार में सुखपूर्व दीर्घायु प्राप्त करता है। इसलिए गण्डमूल में उत्पन्न शिशु के पिता को २७ दिन तक उसका मुख नहीं देखना चाहिए। और फिर प्रसूति-स्नान के बाद गण्डमूल की शान्ति गौदान आदि देकर बालक का मुख देखना चाहिए।

मूलनिवास-चक्र

मास के अनुसार	वैशा. ज्ये. मार्ग. फा.	चै.श्रा.का.पौ.	आषा. आश्वि.भाद्र. माघ
लग्न के अनुसार	२, ५, ८, ११	३, ६, ९, १२	१, ४, ७, १०
मूल निवास स्थान	पाताल	भूमि	स्वर्ग
फल	शुभ	कुलनाश	शुभ

मूल-आश्लेषा चरण-फल

मूल चरण-फल		आश्लेषा चरण-फल		समय-फल	
१	पितृनाश	१	शांति से शुभ	दिन में	पिता को भय
२	मातृनाश	२	धन नाश	सन्ध्या में	स्वशरीर भय
३	धननाश	३	मातृनाश	रात्रि में	माता को भय
४	शान्ति से शुभ	४	पितृनाश		

मूलजन्म में वृक्ष विभाग

विभाग	मूल	स्तम्भ	त्वचा	शाखा	पत्र	पुष्प	फल	शिखा
घटी	७	८	१०	११	१२	५	४	३
फल	मूल नाश	वंशनाश	मातृ-क्लेश	मातुल-कष्ट	राज्य लाभ	मन्त्री	प्रचुर लक्ष्मी	अल्पाय

मूल-पुरुष-चक्र

विभाग	शिर	मुख	स्कन्ध	बाहु	हाथ	हृदय	नाभि	गुप्तांग	जानु	पैर
घटी	५	७	४	८	३	९	२	१०	६	६
फल	राजा	पितृ-नाश	बली	बली	दानी	मन्त्री	ज्ञानी	कामी	बुद्धि-मान	बुद्धि-मान

मूल-कन्या-चक्र

विभाग	शिर	मुख	कण्ठ	हृदय	भुजा	हाथ	गुप्तांग	जंघा	जानु	पैर
घटी	४	६	५	५	१०	८	४	४	४	१०
फल	पशु-नाश	धन-नाश	धन-लाभ	कुटिलता	धन लाभ	धर्म-नाश	कामिनी	ज्ये.मातुल-नाश	भ्रातृ-नाश	विधवा

आश्लेषा नक्षत्रोत्पन्न पुत्र/कन्या-अङ्गविभाग

विभाग	शिर	मुख	नेत्र	ग्रीवा	स्कन्ध	हाथ	हृदय	नाभि	गुह्य	पैर
घटी	५	७	२	३	४	८	११	६	९	५
फल	पुत्र प्राप्ति	पितृ-नाश	मातृ-नाश	स्त्री-लम्पट	गुरु भक्ति	बली	आत्म-घाती	भ्रम	तपस्वी हानि	धन

आश्लेषा-वृक्ष-चक्र

विभाग	फल	पुष्प	पत्ता	शाखा	त्वचा	लता	स्कन्ध
घटी	१०	५	९	७	१३	१२	४
फल	धन	धन	राजभय	हानि	भ्रातृहानि	पितृहानि	अल्पायु

अभुक्त मूल-विचार-

ज्येष्ठा नक्षत्र के अन्त की ४ घटी मतान्तर से १ घटी और मूल नक्षत्र के प्रारम्भ की ४ घटी मतान्तर से आधी घटी अभुक्त मूल होता है। इस समय में कदाचित् बालक का जन्म हो, तो बालक के पिता को ८ वर्ष तक मतान्तर से ६ मास तक उसका मुख नहीं देखना चाहिए। इसकी शान्ति के लिए रुद्रार्चन अभिषेक एवं महामृत्युञ्जय की विधि सहित अभुक्त मूल शान्ति कर शुभ मुहूर्त में बालक का मुख देखना चाहिए ।

❋ जन्म-कुण्डली में द्वादशभावस्थ सूर्यादिग्रहों का फल ❋

ग्रह	तनु 1	धन 2	सहज 3	सुख 4	पुत्र 5	शुत्र 6	स्त्री 7	मृत्यु 8	धर्म 9	कर्म 10	लाभ 11	व्यय 12
सूर्य	उच्च-शरीर प्रवासी, रोग	भाग्यवान, मितव्ययी	पराक्रमी, अशान्तिचित	बन्धुवैरी, अशान्तचित	बुद्धिमान, वञ्चक	चतुष्पदकष्ठ राज्यव्यय	स्त्रीकष्ट, व्यापारी	कार्यशी, व्यसनी	भ्रातृपीड़ित, चिन्तायुक्त	परिश्रमी, मातृपीड़क	सन्ततिहीन, राज्यभोगी	नेत्रकष्ट युद्धविजयी
चन्द्र	धनी, सुखी दुर्बल, मूर्ख	विलासी, कुटम्बस्नेही	परिश्रमी, भ्रातृकष्ट	उच्चाधिकारी, स्त्रीपुत्रादिसुख	निर्मलबुद्धि, व्यापारी	शत्रुजित्, मातृकष्टप्रद	स्त्रीसुख, शत्रुकष्ट	संघर्षशील, व्याधियुक्त	साहसी, सुखी	धर्मात्मा, ऐश्वर्यशील	राज्यप्रतिष्ठा, कन्यासन्तति	नेत्ररोगी, अपूणमनोरथ
भौम	लौहाग्निकष्ट, स्त्रीपुत्रनाश	अल्पपरिवार, धनी	पराक्रमी, भ्रातृकष्ट	कुटुम्बकष्ट, राज्यलाभ	तीव्रजठराग्नि, सन्ततिनाशक	शत्रुजित्, बुद्धिमान्	स्त्रीनाशक, कर्त्तव्यहीन	दुर्भाग्यशीली, महाकष्ट	धनी, तेजस्वी	मंगलकार्यहीन, पराक्रमी	शत्रुनाशक, सन्ततिकष्ट	धर्मभ्रष्ट, वृथापवाद
बुध	अरिष्टनाश, श्रेष्ठबुद्धि	बुद्धिमान्, काव्यप्रेमी	नम्रस्वभाव, व्यापारवृत्ति	प्रधानधिकारी, पितृधनहीन	स्वार्थी, कपटी	मनुष्यविरोधी, शत्रुवशी	स्त्रीसुखदायक, सौन्दर्यशीली	दीर्घायु, व्यापारी	बुद्धिमान, प्रतापी	पितृधनभोगी, नीतिज्ञ	धनी, सौन्दर्यप्रमी	शत्रुजित्, अतिथिपूजक
गुरु	सुखी स्वल्पवीर्यवान्	कवि, मुखरोगी	सहोदरयुत, कृतघ्नी	अनुष्ठानकता, शत्रुसेवित	लेखक,वक्ता, विलासी	मातृरोग, स्त्रीसुख	विभूतिमान, सौन्दर्यशीली	प्रवासी, ईर्ष्यालु	ब्राह्मणप्रेमी, आलसी	पुत्रचिन्ता, ज्ञानी	आभूषणप्रेमी, परमार्थी	अपयशी, वञ्चक
शुक्र	सौन्दर्यवान्, सुखी	बुद्धिमान्, काव्यप्रेमी	बन्धुहीन, कायर	मातृसेवक, महान्	सुपुत्रवान्, कवि	प्रबलशत्रु, दुःखी	कटिरोग, विलासी	चतुष्पदव्यय, प्रवासी	व्यापारी, पाखण्डी	वंशावरोधक, विप्रवृत्ति	कीर्तिवान्, गुणी	क्रीडक, बन्धुवैरी
शनि	तृष्णावान् चिन्तित	कटुभाषी, प्रवासी	युक्तभाषी, विघ्नयुक्त	चतुष्पदहीन, वातरोगी	पुत्रहीन, मित्रद्रोही	शत्रुजित्, पशुसुख	चञ्चलस्त्री, वाद-विवादी	बन्धुवियोग, रोगी	संन्यासी, कपटबुद्धि	बन्धुहीन, युद्धविजय	स्थिरवृद्धि, अस्थिरसंपत्ति	निर्लज्ज, शत्रुनाशक
राहु	शत्रुबलहन्ता स्त्रीचिन्ता	कुटुम्बनाशक, निर्भय	पराक्रमी, सम्मानित	मातृरोगी, क्रोधी	पुत्रवान्, स्त्रीचिन्तित	शत्रुनाशक, स्थिरधनी	स्त्रीहीन, लोकनिन्दित	कुटुम्बत्यागी, पण्डित	तीर्थसेवी, दयालु	व्यसनी, लोकनिन्दित	पुत्रवान्, दृष्टात्मा	सिद्धमनोरथ, दीनमैत्री
केतु	दुर्जन-संतप्त स्त्रीपुत्रकष्ट	मुखरोगी, कुटुम्बविरोधी	बाहुरोगी, शत्रुनाशक	मातृसुखहीन, पितृधननाशक	भ्रातृरोग, कष्ट	व्याधिनाश, शत्रुनाश	धननाश, जलभय	गुदारोग, निजगृहसेवी	क्लेशनाशक, म्लेच्छमैत्री	पितृसुखहीन, चतुष्पदपतन	भाग्यवान्, विद्वान	सद्व्ययी, नेत्ररोगी

❋ वर्ष-कुण्डली में द्वादशभावस्थ सूर्यादिग्रहों का फल ❋

ग्रह	तनु १	धन २	सहज ३	सुख ४	पुत्र ५	शुत्र ६	स्त्री ७	मृत्यु ८	धर्म ९	कर्म १०	लाभ ११	व्यय १२
सूर्य	त्रिदोषपीड़ा	कुटुम्बविरोधी	भ्रातृपीड़ा	कृषि-पशुहानि	पित्तप्रकोप	शत्रुनाश	स्त्रीकष्ट	भ्रातृकष्ट	भ्रातृकष्ट	धनमानलाभ	धनी,विलासी	उद्विग्नता
चन्द्र	कफरोगी	कुटुम्बपरप्रभाव	भ्रातृसुख-धनी	व्यापारलाभ	प्रबुद्धमित्र	वाद-विवाद	खांसी,वातरोग	मूत्ररोग	भाग्योदय	वेरीनाश,धनी	व्यापारलाभ	नेत्ररोग
भौम	नेत्ररोगी	धनहानि	वाहनसुख	अग्निकष्ट,व्रण	सन्तानकष्ट	शत्रुनाश	स्त्रीरोग	शत्रुकष्ट	भाग्ययशवृद्धि	धनवृद्धि	राज्यधनलाभ	व्यय,व्याधि
बुध	स्त्रीसुखवृद्धि	वाहनलाभ	धनयशपुत्रसुख	भूमिलाभ	धनपुत्रलाभ	स्वीकष्ट	विलासी	कफ,ज्वर	धनपुत्रलाभ	पुत्रधनवृद्धि	धनयशवृद्धि	वैरीविवाद
गुरु	यशस्वी	धनलाभ	कीर्तिलाभ	वाहनसुख	सन्ततिसुख	शत्रु-स्त्रीकष्ट	दाम्पम्यसुख	ज्वरवृद्धि	धनलाभ	राज्यलाभ	विजयलाभ	रोगी,शत्रुवृद्धि
शुक्र	यशस्वी	धन-मानलाभ	सहोदरसुख	कृषिवाहनसुख	सन्तानवृद्धि	उदरविकार	स्त्रीसुख	शरीरकष्ट	धर्मशील	व्यापारी,धनी	सन्तानवृद्धि	नेत्र, चर्मरोग
शनि	वातरोगी	भ्रातृनाश	पराक्रमी	अग्निपीड़ा	पुत्रहानि	कीर्तिवृद्धि	स्त्रीकष्ट	ज्वरपीड़ा	भाग्योदय	कृषिहानि	कीर्तिवृद्धि	विशेषव्यय
राहु	स्त्रीकष्ट	बन्धुविवाद	धन-यशवृद्धि	वाहनकष्ट	बुद्धिनाश	शत्रुनाश	गुप्तरोग	मृत्युतुल्यकष्ट	धर्मवृद्धि	यशवृद्धि	शत्रुनाश	स्थानभ्रंश
केतु	चिन्ता	परिवारक्लेश	वंशवृद्धि	वाहनपीड़ा	कुबुद्धि	रोगनाश	विवाद	अरिष्टप्राप्ति	भाग्यनाश	अर्थप्राप्ति	विविधलाभ	रोग, शोक
मुन्था	शरीरपुष्टि	उत्साही	पराक्रमी,धनी	शरीरपीड़ा	पुत्रयशलाभ	दुर्बलता	धन-धर्मनाश	व्यसनी	भाग्योदय	राज्यसुख	ऐश्वर्यप्राप्ति	दृष्टसंगति









विक्रम सम्वत् २०८२ पञ्चाङ्ग कार्यशाला में उपस्थित ज्योतिष एवं धर्मशास्त्र के महानुभाव

स्वर्णजयन्तीसदनम्
(ज्योतिष-विभाग)



१. **ज्योतिष–प्रवेशिका** यह षाण्मासिक प्रमाणपत्रीय पाठ्यक्रम वैदिक ज्योतिष की मूल संकल्पना एवं प्राथमिक जानकारी पर आधारित है।

२. **ज्योतिष–प्राज्ञ** यह एक वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम ज्योतिष शास्त्र के आधारभूत सिद्धान्त और उनकी प्रयोग विधि द्वारा जन–जीवन की घटनाओं के पूर्वानुमान की विधि पर आधारित है।

३. **ज्योतिष–भूषण** यह द्विवर्षीय एडवान्स डिप्लोमा पाठ्यक्रम ज्योतिष शास्त्र की विशिष्ट जानकारी पर आधारित है।

४. **शास्त्री** यह तीन वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम है, जो सिद्धान्त ज्योतिष एवं फलित ज्योतिष दोनों विषयों में चलाया जाता है।

५. **आचार्य** यह द्विवर्षीय स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम है, जो सिद्धान्त ज्योतिष एवं फलित ज्योतिष दोनों विषयों में चलाया जाता है।

६. **पी–एच.डी.** ज्योतिष शास्त्र के गम्भीर, जटिल एवं लोकोपयोगी पहलुओं पर शोध के माध्यम से नवीन तथ्यों की जानकारी के लिए यह अनुसन्धानमूलक पाठ्यक्रम चलाया जाता है।

७. **मेडिकल एस्ट्रोलॉजी** 'ज्योतिर्वेद्यो निरन्तरौ' इस आप्त उक्ति के अनुसार ज्योतिर्विद् को आयुर्वेद एवं वैद्य को ज्योतिष, इन दोनों विषयों की जानकारी हेतु भैषज्य ज्योतिष में एक वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम का सञ्चालन किया जाता है।

नोट – सभी पाठ्यक्रमों की प्रवेश प्रक्रिया प्रतिवर्ष जून–जुलाई में विद्यापीठ के निर्धारित नियमों के अनुरूप सम्पन्न होती है।
प्रमाणपत्रीय एवं डिप्लोमा पाठ्यक्रमों की कक्षायें शनिवार एवं रविवार को सञ्चालित की जाती हैं।

मुद्रक : गणेश प्रिंटिंग प्रेस- नई दिल्ली 110016